अंध, अंधक—अन्धा, मूर्ख ।
अंधकार—पु० अन्धेरा ।
अंधकूप—पु० अन्धेरा, सूखा कुँआ ।
अंधखोपड़ी—स्त्री० मूर्ख, नासमझ ।
अंधतमस—पु० घोर अन्धेरा ।
अंधपरंपरा—पु० बिना समझे-बूझे पुरानी चाल का अनुकरण ।
अंधविश्वास—पु० बिना समझे का विश्वास ।
अंजर-पंजर—पु० शरीर का जोड़ ।
अंजलि, अंजली—स्त्री० दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा ।
अंजलिबद्ध—हाथ जोड़े हुए ।
अंजाम—पु० पूरा करना, समाप्ति ।
अंजित—अंजन लगाये हुए ।
अँजोरा—उजाला ।
अंटा—पु० खेलने की गोली, गोला, सूत या रेशम का लच्छा, बिलियर्ड—एक खेल जिसे अँगरेज हाथीदाँत की गोलियों से मेज पर खेला करते हैं ।
अंटाघर—पु० वह घर जिसमें गोली का खेल अर्थात् बिलियर्ड खेला जाय ।
अंटा चित—पीठ के बल ।
अंटी—स्त्री० उँगलियों के बीच का स्थान, सूत का लच्छा, विरोध, लड़ाई ।
अंड—पु० अंडा, फोता, ब्रह्माण्ड, वीर्य्य, शरीर, कामदेव ।
अंडकोश—पु० फोता, ब्रह्माण्ड, सीमा, फल का छिलका ।

अचारी—पु० —अकथनीय ।
अचिंत—चिंतार... , हवा ।
अचिंतित—बिना ... न जा सके । बेफिक्र, आकस्मिक ... । पु० बुराई,
अचिंत्य—जिसका चि... [ग्लानि । कल्पनातीत, आकस्मिक ... दल, सेना
...चित्—... अन्त...
...रुहे—... कमल ।
... पु० बादल ।
अंतक—पु० अन्त करनेवाला, ईश्वर, शिव, मौत, यमराज । [मृत्यु ।
अंतकाल—पु० मरने का समय,
अंतक्रिया—स्त्री० मरने के बाद की क्रिया ।
अंततः—अन्त में ।
अँतड़ी—स्त्री० आँत । मु० अँतड़ी जलना = बहुत भूख लगना ।
अंतपाल—पु० द्वारपाल, दरवान, राज्य की सीमा पर का पहरेदार ।
अंतरंग—भीतरी, नजदीकी, दिली । पु० मित्र ।
अंतर—दूसरा, भीतर । पु० भेद, बीच, दूरी, ओट, परदा, छेद, हृदय ।
अंतरयामी—पु० दे० "अन्तर्यामी" ।
अंतरदिशा—स्त्री० दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण ।
अंतरपट—पु० परदा, ओट, भीतर पहनने का कपड़ा ।
अंतरस्थ—भीतर का ।
अंतरा—बीच, निकट, सिवाय, अलग,

अंत

गुप्त, भी...

अंतरीप—पु० ... ...प। [धोती।

अंतरीय—भीतरी। पु० अधोवस्त्र,

अँतरौटा—पु० महीन साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा। [पु० हृदय।

अंतर्गत—भीतर गया हुआ। भीतरी।

अंतर्गति—स्त्री० मन का भाव।

अंतर्दाह—पु० हृदय की ज्वाला।

अंतर्द्धान—गुप्त, अदृश्य। पु० लोप, छिपना।

अंतर्बोध—पु० आत्मज्ञान।

अंतर्भाव—पु० भीतरी समावेश, नाश, भीतरी मतलब। [जीवात्मा।

अंतर्भूत—अन्तर्गत, शामिल। पु०

अंतर्यामी—भीतर की बात जानने वाला। पु० ईश्वर। [में हो।

अंतर्लापिका—स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों

अंतर्लीन—विलीन, डूबा हुआ।

अंतर्वती—भीतरी। स्त्री० गर्भवती।

अंतर्वेद—पु० दो नदियों के बीच का देश, दोआब, गंगा-यमुना के

अं...

अंतस्... ... जल-प्रवाह बाहर न... ... पड़े। स्त्री० सरस्वती नदी, फल्गू नदी।

अंतिम—आखिरी।

अंतेवासी—पु० गुरु के समीप रहनेवाला शिष्य, अन्त्यज।

अंतःकरण—पु० मन, विवेक।

अंतःपुर—पु० रनिवास।

अंतःराष्ट्रीय—दे० "सार्वराष्ट्रीय"।

अंत्य—अन्तिम। पु० शूद्र।

अंत्य कर्म—पु० अन्त्येष्टि क्रिया।

अंत्यज—पु० शूद्र।

अंत्याक्षरी—स्त्री० किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाले दूसरे पद्य का पाठ।

अंत्यानुप्रास—पु० पद्य के चरणों के अन्तिम अक्षरों का मेल, तुक।

अंत्येष्टि—पु० मृतक का क्रिया-कर्म।

अंदरूनी—भीतरी।

अंदाज—पु० अटकल, अनुमान।

अंदाजन—अन्दाज से।

अंदेशा—पु० सोच, संशय।

अंध, अंधक—अन्धा, मूर्ख।
अंधकार—पु० अन्धेरा।
अंधकूप—पु० अन्धेरा, सूखा कुँआ।
अंधखोपड़ी—स्त्री० मूर्ख, नासमझ।
अंधतमस—पु० घोर अन्धेरा।
अंधपरंपरा—पु० बिना समझे-बूझे पुरानी चाल का अनुकरण।
अंधविश्वास—पु० बिना समझे-बूझे किसी बात का विश्वास।
अंधा—पु० बिना आँख का। मु० अन्धे की लकड़ी = एक मात्र आधार।
अंधाधुंध-विचाररहित। स्त्री० घोर अन्धकार।
अंधेर—पु० अन्याय।
अंधेर खाता—पु० कुप्रबन्ध, हिसाब-किताब में गड़बड़ी। [कुलदीपक।
अंधेरा—पु० अन्धकार। मु० अंधेरे घर का उजाला = अत्यन्त सुन्दर,
अंब—स्त्री० माता, देवी, दुर्गा, पार्वती। पु० आम।
अंबर—पु० वस्त्र, आकाश, कपास, अबरक, अमृत। [की लाली।
अंबर-डंबर—पु० सूर्य्यास्त के समय
अंबरबेलि—स्त्री० आकाश-बेल।
अंबा—स्त्री० माता, देवी, दुर्गा, पार्वती।
अंबारी—स्त्री० हाथी का हौदा।
अंबिका-स्त्री० माता, देवी, पार्वती, दुर्गा।
अंबिया—स्त्री० टिकोरा।
अंबु—पु० जल, पानी।

अचारी—पु० —अकथनीय।
अचित—चितार॰॰ख, हवा।
अचिंतित—बिना ... न जा सके।
बेफिक्र, आकस्मिक ा। पु० बुराई,
अचिंत्य-जिसका चि... [ग्लानि।
कल्पनातीत, आकस्मि... । दल, सेना,
...चित—पु० अन्त, ...
अंबुरुह—पु० कमल।
अंबुवाह—पु० बादल। [देव, असुर।
अंभ पु० जल, पितर, पितरलोक,
अंभोज—जल से उत्पन्न वस्तु। पु० कमल, सारस पक्षी, चन्द्रमा, कपूर, शंख।
अंभोधर—पु० बादल, मोथा।
अंभोनिधि—पु० समुद्र।
अंश—पु० भाग, हिस्सा, भाज्य अंक, भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या, चौथा हिस्सा, कला, सोलहवाँ भाग, वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग, कंधा। [दिन, हिस्सेदार।
अंशक—बाँटनेवाला। पु० भाग,
अंशी—अंशधारी, अवतारी। पुं० हिस्सेदार। [भाग, सूर्य।
अंशु—पु० किरण, तागा, सूक्ष्म
अंशुक—पु० महीन कपड़ा, रेशमी कपड़ा, दुपट्टा, तेजपात।
अंशुमान, अंशुमाली—पु० सूर्य।
अँसुवा—पु० आँसू।
अकंटक—बाधारहित, शत्रुरहित।
अकड़—स्त्री० ऐंठ, घमंड, हठ।

श..

अकबाल—पु० दे० "...बाल"।

अकर्तृक—पु० बिना कर्त्ता का।

अकर्म—पु० बुरा काम।

अकर्मक—पु० वह क्रिया जिसे कर्म की आवश्यकता न हो।

अकर्मण्य—आलसी।

अकलंक—निर्दोष।

अकवन—पु० आक।

अकस—पु० वैर, द्वेष।

अकसर—प्रायः, अकेले।

अकसीर-अव्यर्थ, अत्यन्त गुणकारी।

अकस्मात्—अचानक।

अकह—अकथ।

अकांडतांडव-पु० व्यर्थ की उछल-कूद। वितंडावाद।

अकाज—बिना काम, व्यर्थ। पु० कार्य की हानि, नुकसान, बुरा काम।

अकाट्य—जो काटा न जा सके।

अकार—पु० "अ" अक्षर।

अकारण—बिना कारण।

अकारथ—वृथा, निष्फल।

अकाल—पु० कुसमय, दुर्भिक्ष।

अकाल मृत्यु-स्त्री० बेवक्त की मौत।

अकिंचन—निर्धन, कंगाल।

अकीर्ति—स्त्री० अयश, बदनामी।

अकुंठ—तीक्ष्ण, चोखा।

अकुलाना—घबड़ाना।

अकृतज्ञ—कृतघ्न, किये हुए उपकार को न मानने वाला।

अकृत्रिम—स्वाभाविक, बिना बना-[वट का।

अकेला-दूकेला—एक या दो।

अक्खड़—किसी का कहना न मानने वाला, निडर, उजड्ड।

अक्रिय—निश्चेष्ट।

अक़्ल—स्त्री० बुद्धि, समझ। मु० अक़्ल का दुश्मन = मूर्ख।

अक़्लमंद—पु० बुद्धिमान।

अक्ष—पु० पासा, चौसर, गाड़ी का जुआ, धूरी, तराजू की डंडी, आँख, रुद्राक्ष, साँप, गरुड़, आत्मा, इन्द्रिय, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के भीतर बीच होकर दोनों ध्रुवों तक गयी है और जिसपर पृथ्वी घूमती हुई मानी जाती है।

अक्षक्रीड़ा—स्त्री० पासे का खेल।

अक्षत—अखंडित। पु० पूजा का चावल, जौ।

अक्षतयोनि—स्त्री० वह कन्या जिस का पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षम—क्षमारहित, असहिष्णु। असमर्थ।

अक्षय, अक्षय्य—जिसका क्षय न हो, अविनाशी । [मोक्ष, जल ।

अक्षर—अविनाशी । पु० हरफ, आत्मा, ब्रह्म, आकाश, धर्म, तपस्या,

अक्षरन्यास—पु० लिखावट ।

अक्षरशः—एक एक अक्षर, सब ।

अक्षरेखा—स्त्री० वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के भीतर बीच से होकर दोनों ध्रुवों तक गयी है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी जाती है।

अक्षरौटी—स्त्री० वर्णमाला, लेख ।

अक्षांश—पु० भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अन्तर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूरब-पच्छिम मानी जाती हैं ।

अक्षि—पु० आँख, नेत्र ।

अक्षितारा—स्त्री० आँख की पुतली ।

अक्षुण्ण—बिना टूटा हुआ, समूचा ।

अक्षौहिणी—स्त्री० वह चतुरंगिनी सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ६५ ६१० घोड़े, २१८७० रथ और २१ ८७० हाथी हों ।

अक्स—पु० प्रतिबिंब, छाया, चित्र ।

अक्सर—प्रायः ।

अखंड—जिसके टुकड़े न हों, संपूर्ण। लगातार, बिना बीच में रुके ।

अखंडनीय—जो तोड़ा न जा सके। जिसका खंडन न हो सके, युक्तियुक्त ।

अखारी—पु० —अकथनीय ।

अचिंत—चिंतार... हवा ।

अचिंतित—बिना ... न जा सके । बेफिक्र, आकस्मिक ... । पु० बुराई,

अचिंत्य—जिसका चि... [ग्लानि । कल्पनातीत, आकस्मि... । दल, सेना,

अ...—पु० अन्त, समाप्ति ।

अख्तियार—पु० दे० "इख्तियार"।

अग—न चलने वाला, स्थावर । पु० वृक्ष, पर्वत, सूर्य, साँप । [पूरा ।

अगड़धत्त—लंबा-चौड़ा, बड़ा, पक्का,

अगणित—अनगिनत, असंख्य ।

अगण्य—न गिनने योग्य, तुच्छ, असंख्य, नगण्य ।

अगति—स्त्री० दुर्गति, नरक ।

अगतिक—पु० जिसकी कहीं गति या ठिकाना नहीं हो, निराश्रय ।

अगती—पापी, पेशगी ।

अगम—जहाँ कोई जा न सके, दुर्गम, कठिन, दुर्लभ, बहुत, बुद्धि के परे । पु० दे० "आगम" ।

अगमानी—स्त्री० अगवानी, आगे जाकर स्वागत । पु० अगुआ ।

अगम्य—जहाँ कोई न जा सके, कठिन, बहुत, दुर्बोध, अथाह ।

अगर—यदि । पु० एक सुगंधित लकड़ी । मु० अगर मगर करना = आगापीछा करना ।

अगरचे—यद्यपि ।

अग्निक्रिया—स्त्री० मुर्दा जलाना।
अग्निक्रीड़ा—स्त्री० आतिशबाजी।
अग्निजिह्वा—स्त्री० आग की लपट।
अग्निदाह—पु० जलाना, मुर्दा जलाना।
अग्निदीपक-जठराग्नि को बढ़ानेवाला।
अग्निपरीक्षा—स्त्री० अग्नि द्वारा सच झूठ की परीक्षा, कठिन परीक्षा।
अग्निबाण—पु० वह बाण जिसके चलाने से आग प्रकट हो। [मंदाग्नि।
अग्निमांद्य—पु० भूख न लगना,
अग्निमुख—पु० देवता, प्रेत, ब्राह्मण।
अग्निशिखा—स्त्री० आग की लपट।
अग्निसंस्कार-पु० मृतकदाह, जलाना।
अग्निहोत्र—पु० आहुति।
अग्निहोत्री—पु० आहुति देने वाला।
अग्र—आगे, प्रथम, श्रेष्ठ। पु० अगला हिस्सा।
अग्रगण्य—जिसकी गिनती पहले हो।
अग्रगामी—पु० आगे चलनेवाला, अगुआ।
अग्रज—पु० बड़ा भाई, नेता, ब्राह्मण।
अग्रजन्मा—पु० बड़ा भाई, ब्राह्मण, ब्रह्मा।
अग्रणी—अगुआ, श्रेष्ठ।
अग्रशोची—पु० आगे सोचनेवाला, दूरदर्शी, दूरन्देश।
अग्रसर—पु० आगे जानेवाला व्यक्ति, अगुआ, आरम्भ करनेवाला।
अग्रहायण—पु० अगहन।

अ... —स्त्री० अगहन ... की फसल।
अगाऊ-पेशगी, अग्रिम, आगे, अगला।
अगाड़ी—भविष्य में, सामने, पहले।
अगाध—अथाह, अपार, दुर्बोध।
अगाह—अथाह, अत्यन्त, विदित।
अगिन—अनगिनत। स्त्री० आग।
अगिया-बैताल—पु० बहुत क्रोधी आदमी। [मुखिया।
अगुआ—पु० आगे चलनेवाला, नेता,
अगुण—गुण रहित, निर्गुण, निर्गुणी।
अगुरु—जो भारी न हो, हलका, जिसे गुरु न हो।
अगुसरना—आगे बढ़ना।
अगोचर—जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो सके, अव्यक्त। [देखना।
अगोरना—रखवाली करना, राह
अगोरिया—पु० रखवाला।
अग्नि—स्त्री० आग, जठराग्नि पित्त, सोना।
अग्निकर्म—पु० हवन, शवदाह।
अग्निकुमार—पु० कार्त्तिकेय।
अग्निकोण—पु० पूरब-दक्षिण कोन।

अग्राशन—पु० देवता के लिये पहले निकाला गया भोजन। [श्रेष्ठ ।
अग्रिम—पेशगी, आगामी, प्रधान,
अघ—पु० पाप, दुःख, व्यसन ।
अघट न होने योग्य, जो न घटे, स्थिर।
अघटित—जो न हुआ हो, बहुत ।
अघात—पु० दे० "आघात" ।
अघाना—तृप्त होना ।
अघी—पापी ।
अघोर—सुहावना, बहुत भयंकर। पु० शिव का एक रूप, एक सम्प्रदाय जो मद्यमांस, मल-मूत्र आदि किसी चीज से घृणा नहीं करता ।
अघोरनाथ—पु० शिव ।
अघोरी—पु० अघोरपंथी ।
अघोष—पु० व्याकरण का एक वर्ण-समूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला दूसरा अक्षर और श ष स वर्ण हैं।
अचंभा—पु० अचरज, आश्चर्य्य ।
अचंभित—चकित, आश्चर्य्यित ।
अचक्का—पु० अनजान ।
अचर—न चलनेवाला, स्थावर ।
अचरज—पु० अचंभा ।
अचल—जो न चले, स्थिर, चिरस्थायी, पक्का । पु० पर्वत, पहाड़ ।
अचला—जो न चले, स्थिर। स्त्री० पृथ्वी ।
अचवन—पु० आचमन ।
अचानक—सहसा, अकस्मात् ।

अचारी—पु० -अकथनीय ।
अचित—चिंतार... हवा ।
अचिंतित—बिना ... न जा सके । बेफिक्र, आकस्मिक ...ा। पु० बुराई,
अचिंत्य—जिसका चि... [ग्लानि । कल्पनातीत, आकस्मिक. दल, सेना,
अचित्—पु० जड़, प्रकृति
अचिर—शीघ्र ।
अचिरात्—जल्दी ।
अचीता—जिसका पहले से अनुमान न हो, आकस्मिक, निश्चिन्त ।
अचूक—जो न चूके, पक्का, चतुराई से, जरूर ।
अचेत—चेतना रहित, बेसुध, व्याकुल बेखबर, ना समझ, जड़ ।
अचेतन—चेतनारहित । मूर्च्छित ।
अचैतन्य—पु० ज्ञानशून्य ।
अचैन—पु० बेचैनी, विकलता ।
अच्छत—पु० अक्षत । [अविनाशी ।
अच्युत—जो गिरा न हो, स्थिर,
अच्युतानन्द — जिसका आनन्द स्थायी हो ।
अछत—रहते हुए ।
अछरोटी—स्त्री० वर्णमाला ।
अछूत—जो न छुआ गया हो, नया पवित्र, अस्पृश्य ।
अछूता—न छुआ गया, नया, कोरा।
अछेद—अछेद्य, जिसका छेद न हो सके, अभेद्य, अखण्ड्य, अविनाशी

हो, स्वयंभू।
शिव, कामदेव,
, शक्ति। [साँप।
हुत मोटी जाति का
शिवका धनुष।
प्यंजनक। पु० युक्ति,
—ा, अचम्भे की बात।
अजदहा—पु० अजगर साँप।
अजनवी—अनजान।
अजन्म, अजन्मा—जन्म-बन्धन से रहित। अनादि, नित्य।
अजब—अनूठा, विचित्र।
अजमत—स्त्री० प्रताप, चमत्कार।
अजमाइश—स्त्री० दे० "आजमाइश"
अजय—अजेय, जो जीता न जा सके। पु० पराजय।
अजर—जरारहित, जो बूढ़ा न हो।
अजस—पु० अपयश, बदनामी।
अजस्र—सदा।
अजहद—हद से ज्यादा। [माया, शक्ति।
अजा—जन्म रहित। स्त्री० बकरी,
अजाचक—पु० दे० "अयाचक"।
अजात—जो पैदा नहीं हुआ हो।
अजातशत्रु—जिसका कोई शत्रु नहीं हो, शत्रुरहित। [नमाज की पुकार।
अजान—अनजान, अबोध। पु०
अजायब—पु० अद्भुत वस्तु।
अजायब खाना, अजायब घर—अद्भुतवस्तु सग्रहालय, म्यूजियम।

अजित—जो जीता न गया हो।
अजितेंद्रिय—जिसने इन्द्रिय को न जीता हो, विषयासक्त। [इन्द्रियों का विषय।
अजिर—पु० आँगन, हवा, शरीर,
अजीज—प्यारा, मित्र, सम्बन्धी।
अजीब—विचित्र, अनोखा। [लायक।
अजीर्ण—पु० अपच, बदहजमी, बहु-
अजूबा—अद्भुत।
अजेय—जो जीता न जाय।
अजौं—अब भी।
अज्ञ - मूर्ख, नासमझ।
अज्ञात—बिना जाना हुआ।
अज्ञातनामा—अविख्यात।
अज्ञातवास—पु० छिपकर रहना।
अज्ञातयौवना—स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो।
अज्ञान—मूर्ख। पु० मूर्खता, अविद्या।
अज्ञानी—मूर्ख, नासमझ।
अज्ञेय—न जानने योग्य, ज्ञान के परे।
अटकना—रुकना, फँसना।
अटकल—स्त्री० अनुमान।
अटकलपच्चू—खयाली। अन्दाज से। पु० मोटा, अंदाज।
अटका—पु० जगन्नाथ जी को भोग लगाया हुआ भात।
अटकाव—पु० रुकावट, बाधा।
अटन—पु० घूमना-फिरना।
अटल—जो न टले, स्थिर, पक्का।

अटवी—स्त्री० जंगल, वन ।
अटा, अटारी—स्त्री० कोठा ।
अटाल—पु० धरहरा, ढेर ।
अटूट—अखंड, मजबूत ।
अट्टहास—पु० ठठाकर हँसना ।
अट्टालिका—स्त्री० अटारी ।
अठखेली—स्त्री० क्रीड़ा, विनोद, चुलबुलापन, मस्तानी चाल ।
अठलाना—इतराना ।
अठवारा—पु० सप्ताह, हफ्ता ।
अठोतरी-स्त्री० १०८ दाने की माला ।
अड़ंगा—पु० अड़चन, बाधा ।
अड़चन—स्त्री० रुकावट, बाधा ।
अड़ना—रुकना, ठहरना ।
अड़ियल—हठी, जिद्दी, चलते चलते रुक जाने वाला ।
अड़ोस-पड़ोस—पु० आसपास ।
अड़ोसी-पड़ोसी—पु० आसपास का रहनेवाला ।
अड्डा—पु० टिकने की जगह, छावनी ।
अढ़तिया—पु० आढ़त करनेवाला, दलाल ।
अणिमा—स्त्री० अष्ट सिद्धियों में से पहली सिद्धि । इस सिद्धि को प्राप्त करनेवाले अपना ऐसा सूक्ष्म रूप धारण कर सकते हैं जिससे कोई उन्हें न देख सके । [कण या टुकड़ा ।
अणु—बहुत छोटा । पु० बहुत छोटा
अणुवीक्षण—पु० सूक्ष्मदर्शक यन्त्र, छिद्रान्वेषण । —अकथनीय ।
अतंद्रित—आलस्य, हवा ।
अतः, अतएव—इस न जा सके ।
अतनु—शरीर-रहित । । पु० बुराई,
अतर—पु० इत्र, पुष्प [ग्लानि ।
अतरदान—पु० इत्र रख दल, सेना,
अतरसों—परसों के आगे
अतर्कित—जिसका पहले से अनुमान न हो, आकस्मिक । [सके ।
अतर्क्य—जिस पर तर्कवितर्क न हो
अतल—पु० सात पातालों में दूसरा पाताल ।
अतवार—पु० रविवार ।
अति—बहुत, अधिक । स्त्री० अधिकता, ज्यादती ।
अतिकाय—स्थूल, मोटा ।
अतिकाल—पु० देर, कुसमय ।
अतिक्रम—पु० नियम का उल्लंघन, उलटा व्यवहार । [जाना ।
अतिक्रमण—पु० हद से बाहर
अतिक्रान्त—हद से बाहर गया हुआ, बीता हुआ ।
अतिथि—घर में आया हुआ, अज्ञातपूर्व व्यक्ति, अभ्यागत, अग्नि ।
अतिपात—पु० अतिक्रम, गड़बड़ी, बाधा, विघ्न । [पतोहू के साथ गमन ।
अतिपातक—पु० माता, पुत्री और
अतिरञ्जन—पु० बढ़ा चढ़ा कर कहने की रीति, अत्युक्ति ।

, शेष, बचा हुआ।
अखबार के साथ
ा, क्रोड़पत्र।
शय, अधिक। [वाला।
सत्य वक्ता, डींग हाँकने
--स्त्री० किसी लक्षण या
अन्दर लक्ष्य के आलावे
दूसरी वस्तुके आजाने का दोष।

अतिशय--बहुत ज्यादा। [कहना।

अतिशयोक्ति—स्त्री० बढ़ाचढ़ा कर

अतिसंधान-पु० अतिक्रमण, विश्वास-घात, धोखा।

अतिसार—पु० संग्रहणी रोग।

अतिहसित—पु० खूब जोर से हँसना।

अतींद्रिय--जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न हो, अव्यक्त, अगोचर।

अतीत--बीता हुआ। परे, बाहर। पु० संन्यासी।

अतीव--बहुत।

अतुल-जिसकी तुलना या अन्दाज न हो सके, अपार, बहुत अधिक।

अतुलनीय—जिसकी तुलना न हो सके, अनुपम। [अपरिमित।

अतुलित--बिना तौला हुआ,

अतृप्ति—स्त्री० मन न भरने की हालत।

अत्तार—पु० इत्र या तेल बेचनेवाला, गंधी। [अधिक।

अत्यन्त—हद से ज्यादा, बहुत

अत्यंतिक—नजदीकी, समीपी।

अत्यय—पु० मृत्यु, दंड, दोष, कष्ट।

अत्याचार—पु० ज्यादती, जुल्म।

अत्याचारी—अन्यायी, पाखंडी।

अत्युक्ति—स्त्री० बढ़ा चढ़ा वर्णन।

अत्र-यहाँ।

अत्रक—यहाँ का, इस लोक का।

अत्रभवान्--पु० पूज्य।

अथ--अब, अनंतर।

अथक--जो न थके, बिना रुके हुए।

अथ च-और, और भी।

अथना--अस्त होना, डूबना।

अथर्व—पु० चौथा वेद।

अथवा--या, वा।

अथाई—स्त्री० बैठकखाना, मंडली।

अथाह—जिसका थाह न हो, बहुत गहरा, गम्भीर, अगाध।

अथोर--थोड़ा नहीं, बहुत।

अदंडनीय, अदंड्य--जो दंड पाने योग्य न हो।

अदंत--जिसे दाँत न हो, दुधमुँहा।

अदत्ता—न दी हुई अर्थात् अविवाहिता कन्या।

अदद—पु० संख्या, गिनती।

अदना—तुच्छ।

अदब—पु० शिष्टाचार।

अदम पैरवी-स्त्री० मुकद्दमें में जरूरी कारवाई न करना।

अदम्य—जिसका दमन न हो, प्रचंड, प्रबल।

अदर्शन—पु० लोप।
अदर्शनीय—जो देखने लायक न हो, कुरूप।
अदल—पु० न्याय, इन्साफ।
अदल बदल—पु० हेरफेर।
अदांत—जो इंन्द्रियों का दमन न कर सके, विषयासक्त, उद्दंड।
अदा—चुकता, बेबाक। स्त्री० हाव भाव, नखरा, ढंग। मु० अदा करना = पूरा करना।
अदालत—स्त्री० कचहरी।
अदालती—अदालतका, मुकदमाबाज।
अदावत—स्त्री० दुश्मनी, वैर।
अदिति—स्त्री० प्रकृति, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, माता पिता।
अदितिसुत—पु० देवता, सूर्य।
अदिन—पु० बुरा दिन, अभाग्य।
अदिव्य—लौकिक, बुरा।
अदीठ—बिना देखा, गुप्त।
अदृश्य—जो दिखाई न दे, अगोचर, गायब। [भाग्य, भावी।
अदृष्ट—न देखा हुआ, लुप्त, पु०
अदृष्टवाद—पु० परलोक आदि सम्बन्धी सिद्धान्त।
अदेय—न देने योग्य।
अदेह—बिना देहका। पु० कामदेव।
अद्धा—प० आधा नाप।
अद्भुत—विचित्र, अनोखा।
अद्भुतालय—पु० अजायबघर।
अद्य—अभी। -अकथनीय।
अद्यापि—अभी तक हवा।
अद्यावधि—अब तक न जा सके।
अद्रि—पु० पहाड़। ।। पु० बुराई,
अद्रि तनया—स्त्री० प [ग्लानि।
अद्वितीय—अकेला, बेज दल, सेना, विलक्षण।
अद्वैत—अकेला, अनुपम। पु० ब्रह्म,
अद्वैतवाद—पु० एक सिद्धान्त जिसमें जगत में एक ब्रह्म की ही सत्ता मानी जाती है और आत्मा तथा परमात्मा में भी भेद नहीं समझा जाता है, वेदान्त मत।
अद्वैतवादी—पु० वेदान्ती, अद्वैत मत को माननेवाला।
अधः—नीचे। [गिरना, अवनति।
अधः पतन, अधः पात—पु० नीचे
अधकचरा—अधूरा, अपूर्ण। [दर्द।
अधकपारी स्त्री० आधे सिर का
अधन—निर्धन।
अधम—नीच, पापी।
अधमई—स्त्री० अधमता, नीचता।
अधमर्ण—पु० ऋणी, कर्जदार।
अधमुआ—अधमरा।
अधर—पु० ओठ, नीचे का ओठ, बिना आधार का स्थान, अन्तरिक्ष।
अधरपान—पु० ओठों का चुंबन।
अधर्म—पु० कुकर्म, दुराचार।
अधस्तल—पु० तहखाना।

, शेष "आधार" ।
अ... जो शब्दों के पहले
अर्थ बोध कराता
...ा, व्
ऊंचा, प्रधान, अधिक,
...शय,
।
सत्य
...ई ...हुत, फालतू ।
... अ... —स्त्री० बढ़ती, बहुतायत।
अधिक मास—पु० मल मास ।
अधिकरण—पुं० आधार, व्याकरण में सातवाँ कारक, प्रकरण, शीर्षक ।
अधिकांश—बहुत, विशेष कर, अक्सर। पु० अधिक भाग ।
अधिकाई—स्त्री० अधिकता, महिमा ।
अधिकार—पु० प्रभुत्व, अख्तियार, हक, कब्जा, शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता ।
अधिकारी—पु० स्वामी, मालिक ।
अधिकृत—अधिकार में आया हुआ । पु० अधिकारी ।
अधिगत—पाया हुआ, जाना हुआ ।
अधिगम—पु० पहुँच, ज्ञान ।
अधित्यका—स्त्री० ऊँचा पहाड़ी मैदान ।
अधिदेव—पु० इष्ट देव ।
अधिदैवत—देवता सम्बन्धी ।
अधिनायक—पु० मुखिया ।
अधिप, अधिपति—पु० स्वामी, मुखिया, राजा ।
अधिमास—पु० अधिक मास ।
अधिरथ—पु० रथ हाँकने वाला ।
अधिराज—पु० महाराज ।
अधिराज्य—पु० साम्राज्य ।
अधिरोहण—पु० चढ़ना ।
अधिवास—पु० रहने की जगह, सुगंधित वस्तु ।
अधिवासी—पु० निवासी ।
अधिवेशन—पु० बैठक, जलसा ।
अधिष्ठाता—पु० अध्यक्ष, मुखिया, ईश्वर ।
अधिष्ठान—पु० वासस्थान, नगर, स्थिति, पड़ाव, अधिकार ।
अधिष्ठित—स्थापित, नियुक्त ।
अधीन—मातहत, आश्रित, विवश । पु० सेवक ।
अधीनता—स्त्री० मातहती, लाचारी, [गरीबी ।
अधीर-धीरज रहित, घबराया हुआ, व्याकुल ।
अधीश, अधीश्वर—पु० मालिक, [राजा ।
अधुना—अब, आजकल ।
अधूरा—अपूर्ण ।
अधेड़—अधबैसू ।
अधेला—पु० आधा पैसा ।
अधेली—स्त्री० अठन्नी ।
अधे—अधः, नीचे ।
अधोगति—स्त्री० पतन, दुर्दशा ।
अधोमुख—औंधा, उलटा ।
अधोवायु—पु० गुदा की वायु ।
अध्यक्ष—पु० स्वामी, मुखिया ।
अध्ययन—पु० पठनपाठन, पढ़ाई ।
अध्यवसाय—पु० लगातार उद्योग ।

अध्यात्म—पु०ब्रह्म विचार, आत्मज्ञान।
अध्यापक—पु० शिक्षक।
अध्यापकी–स्त्री० अध्यापक का काम।
अध्यापन—पु०पढ़ाने का काम।
अध्याय—पु०परिच्छेद,सर्ग, प्रकरण।
अध्यारोप—पु० मिथ्या कलंक, झूठी कल्पना, मिथ्या ज्ञान।
अध्यारोही—पु० चढ़ने वाला।
अध्यास—पु०दे० "अध्यारोप।"
अध्यासन—पु०बैठना, आरोपण।
अध्याहार—पु०विचार, बहस, पूर्ति के लिये शब्द ढूँढ़ना।
अध्यूढ़ा—स्त्री० वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले।
अध्रुव–अस्थिर, अनिश्चित, डाँवाडोल।
अन्—अभाव या निषेध - सूचक अव्यय।
अनंग—देह रहित। पु०कामदेव।
अनंगक्रीड़ा—स्त्री० संभोग।
अनंगारि—पु० शिव।
अनंगी–पु०अगंरहित, ईश्वर, कामदेव।
अनंत—जिसका अन्त न हो, बेहद। पु० विष्णु, शेषनाग, आकाश, बाहुका एक गहना।
अनंतर—पीछे, बाद, लगातार।
अनंतवीर्य—अपार बलशाली।
अनंभ—बिना पानी का, निर्विघ्न।
अन—दूसरा, बिना, बगैर।
अनकना—चुपचाप सुनना।

अनख—क्रोध,—अकथनीय। डिठौना, बिना न[ा]र, हवा।
अनखाना–क्रोध कर[ना], न जा सके।
अनखौंहा—क्रोधित, [?]। पु० बुराई, [ग्लानि।
अनगढ़—बिना गढ़ा
उजड्ड, बेतुका। [?], दल, सेना,
अनगना, अनगिनत — [ज]सकी गिनती न हो, असंख्य।
अनघ—निष्पाप, निर्मल।
अनचाहत—न चाहने वाला।
अनजान—अपरिचित, अज्ञानी।
अनट—पु० उपद्रव, अन्याय।
अनडीठ—विना देखे। [जगह।
अनत—न झुका हुआ, सीधा, दूसरी
अनति—कम, थोड़ा। स्त्री० नम्रता का अभाव, अहंकार।
अनधिकार—अधिकार रहित पु० अधिकार का अभाव, लाचारी।
अनधिकारी—जिसे अधिकार न हो, अयोग्य, अपात्र।
अनध्यवसाय—पु० अध्यवसाय का अभाव, ढिलाई।
अनध्याय—पु० छुट्टी का दिन।
अनन्य—अन्य नहीं, एक ही, अभिन्न।
अनन्वित—पृथक, अयुक्त।
अनपच—पु०बदहजमी, अजीर्ण।
अनपेक्ष—बेपरवाह। [जाय।
अनपेक्षित—जिस की परवाह न की

, शेष किसीकी परवाह
... अ
...ा, बिगाड़, खटपट।
...शय... बुराई, हानि।
...सत्य... नजान, मूर्ख।
...जिसने अभ्यास न किया
हो, अ... का अभ्यास न किया गया हो।
अनभ्यास—पु० अभ्यास का अभाव।
अनमन, अनमना—उदास, सुस्त, अस्वस्थ, बीमार।
अनमोल—अमूल्य, बहुमूल्य, कीमती।
अनय—पु० अमंगल, अन्याय।
अनरस—पु० रसहीनता, शुष्कता, रुखाई, अनबन, दुःख।
अनराता—बिना रँगा, सादा, प्रम में न पड़ा हुआ।
अनरीति—स्त्री० कुरीति, कुचाल।
अनरूप—कुरूप, असदृश।
अनर्गल—व्यर्थ, अंडबंड, बेधड़क।
अनर्घ—कीमती, सस्ता।
अनर्घ्य—अपूज्य, अमूल्य। [अर्थ।
अनर्थ—पु० अनिष्ट, नुकसान, विरुद्ध
अनर्थक—व्यर्थ, निरर्थक।
अनल—पु० आग, तीन की संख्या।
अनल्प—बहुत।
अनल मुख—पु० देवता, ब्राह्मण।
अनलस—आलस्य रहित।
अनवच्छिन्न—अखंडित।
अनवद्य—निर्दोष।

अनवधान—पु० असावधानी।
अनवधि—असीम, बेहद, हमेशा।
अनवरत—निरन्तर, लगातार।
अनवसर—पु० कुसमय, बेमौका।
अनवस्था—स्त्री० अव्यवस्था, अधीरता।
अनवस्थित — चंचल, अशान्त, निरवलम्ब।
अनशन—पु० उपवास।
अनश्वर—नष्ट न होने वाला।
अनसुना—बेसुना।
अनहदनाद—पु० वह शब्द जो कान बन्द करनेपर भीतर सुनाई दे।
अनहित—शत्रु। पु० बुराई।
अनहोनी—न होने वाली।
अनाकानी—स्त्री० टालमटोल।
अनागत—न आया हुआ, भावी, अज्ञात, अनादि, अद्भुत, अचानक।
अनाचार—पु० दुराचार, कुरीति।
अनाज—पु० अन्न, दाना।
अनाड़ी—नासमझ, अकुशल।
अनात्म—आत्मरहित, जड़।
अनाथ—असहाय।
अनाथालय, अनाथाश्रय—पु० जहाँ असहायों का पालन हो।
अनादर—प० अपमान।
अनादि—जिसका आदि न हो।
अनादृत—अपमानित।
अनाप शनाप—पु० अंडबंड।

अनाप्त—अप्राप्त, अविश्वस्त, अकुशल असत्य, अबन्धु, अनात्मीय।
अनाम—बिना नाम का, अप्रसिद्ध।
अनामय—नीरोग, निर्दोष। पु० तन्दुरुस्ती, कुशलक्षेम।
अनामा, अनामिका—स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की अंगुली।
अनायास—बिना प्रयास, अचानक।
अनार्य—पु० जो आर्य न हो, अश्रेष्ठ, म्लेच्छ। [खुला।
अनावृत—जो ढका या घिरा न हो,
अनावृष्टि—स्त्री० अवर्षा।
अनाश्रमी—आश्रमभ्रष्ट, पतित।
अनाश्रय—निरवलम्ब।
अनाश्रित—बेसहारा।
अनास्था—स्त्री० अश्रद्धा।
अनाहार—भूखा। पु० उपास।
अनिच्छा—स्त्री० अरुचि।
अनिच्छुक—इच्छा न रखनेवाला।
अनिंद्य—जो निंदा के योग्य न हो, उत्तम। [असत्य।
अनित्य-अस्थायी, क्षणभंगुर, नश्वर,
अनिद्र - निद्रारहित।
अनिप- पु० सेनापति।
अनिमिष, अनिमेष—स्थिर दृष्टि, एक टक, निरन्तर।
अनियारा—नुकीला, तीक्ष्ण।
अनिरुद्ध—अबाध, बेरोक। [सके।
अनिर्देश्य—जो ठीक बताया न जा
अनिर्वचनीय—अकथनीय।
अनिल—पु० वायु, हवा।
अनिवार्य—जो टाला न जा सके।
अनिष्ट—अवांछित, बुरा। पु० बुराई, अमंगल। [ग्लानि।
अनी—स्त्री० नोक, सिरा, दल, सेना,
अनीक—बुरा। पु० सेना, समूह, युद्ध।
अनीठ—अप्रिय, बुरा।
अनीति—स्त्री० अन्याय, अन्धेर।
अनीश—अनाथ, सर्वश्रेष्ठ। पु० विष्णु, जीव।
अनीश्वरवाद—पु० ईश्वर न मानना, नास्तिकता। मीमांसा।
अनु—एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगने से इन अर्थों का बोध कराता है—पीछे, सदृश, साथ, अनुक्षण, बारंबार।
अनुकंपा—स्त्री० दया, सहानुभूति।
अनुकरण—पु० नकल।
अनुकर्त्ता—पु० नकल करनेवाला, आज्ञाकारी।
अनुकूल—मुताबिक, सहायक, प्रसन्न।
अनुकृति—स्त्री० देखादेखी, नकल।
अनुक्त—अकथित।
अनुक्रम—पु० सिलसिला, क्रम।
अनुक्रमणिका-स्त्री० क्रम, सूची।
अनुक्रोश—पु० कृपा, दया।
अनुक्षण—प्रतिक्षण, लगातार।

अनुग, अनुगत—अनुकूल, अनुगामी। पु० सेवक, नौकर। [भृत्य।
अनुगति—स्त्री० अनुगमन, अनुकरण,
अनुगमन—पु० पीछे चलना, समान आचरण, सती होना।
अनुगामी—पीछे चलनेवाला, समान आचरणवाला, आज्ञाकारी।
अनुगृहीत—जिसपर अनुग्रह किया गया हो, कृतज्ञ।
अनुग्रह-पु० कृपा, अनिष्ट निवारण।
अनुग्राहक, अनुग्राही—अनुग्रह करने वाला, कृपालु, उपकारी।
अनुचर—पु० साथी, नौकर, दास।
अनुचित—नामुनासिब, बुरा।
अनुज—पु० छोटा भाई।
अनुज्ञा—स्त्री० आज्ञा, हुक्म।
अनुताप—पु० दाह, दुःख, पछतावा।
अनुत्तर—निरुत्तर, कायल।
अनुदात्त—छोटा, तुच्छ।
अनुदिन—प्रति दिन। [अव्याकुल।
अनुद्विग्न—उद्वेगरहित, निश्चिन्त,
अनुद्यमी-आलसी, सुस्त। [अनुसंधान।
अनुधावन—पु० अनुसरण, अनुकरण,
अनुनय—पु० विनय, मनाना।
अनुनाद—पु० प्रतिध्वनि।
अनुनासिक—जो मुँह और नाक से बोला जाय; जैसे ङ, ञ, ण, न, म।
अनुपम, अनुपमेय—उपमा रहित, बेजोड़।
अनुपयुक्त—अयोग्य।
अनुपयोगी—बेकाम, व्यर्थ।
अनुपलब्ध—अप्राप्त।
अनुपस्थित—गैरहाजिर।
अनुपस्थिति—स्त्री० गैरहाजिरी।
अनुपात-पु० त्रैराशिक, सम, समान भाव।
अनुपान—पु० औषध के साथ खायी जाने वाली वस्तु। [बारबार आवे।
अनुप्रास—पु० वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर
अनुबंध—पु० बंधन, आरम्भ, आगा-पीछा, मित्र, संबंध।
अनुभव—पु० तजरबा, ज्ञान।
अनुभवी—अनुभव रखने वाला।
अनुभाव—पु० महिमा, भावसूचक कटाक्ष-रोमांच आदि।
अनुभूत—जिसका अनुभव किया गया हो, परीक्षित।
अनुभूति—स्त्री० अनुभव, ज्ञान।
अनुमति—स्त्री० आज्ञा, सम्मति।
अनुमान- पु० अन्दाज।
अनुमित—अनुमान किया हुआ।
अनुमिति—स्त्री० अनुमान।
अनुमेय—अनुमान योग्य। [प्रकाश।
अनुमोदन—पु० समर्थन, प्रसन्नता-
अनुयायी—पु० अनुगामी, सेवक।
अनुरंजन—पु० अनुराग, प्रीति।
अनुरक्त, अनुरत—आसक्त, लीन।

अनुराग—पु० प्रीति, प्रेम ।
अनुरागी—प्रेमी ।
अनुरूप—समान, उपयुक्त ।
अनुरोध-पु० प्रेरणा, आग्रह, रुकावट ।
अनुलोम—पु० ऊपर से नीचे की ओर आने का क्रम ।
अनुलोम विवाह—पु० ऊँचे वर्ण के पुरुष का नीच वर्ण की स्त्री से विवाह ।
अनुवर्तन—पु० अनुकरण, अनुगमन, समान आचरण ।
अनुवर्ती—अनुयायी, अनुगामी ।
अनुवाद—पु० उलथा, दोहराना ।
अनुवादक—पु० उलथा करनेवाला ।
अनुवादित—अनुवाद किया हुआ ।
अनुशासन—पु० आज्ञा, उपदेश ।
अनुशीलन—पु० चिंतन, मनन ।
अनुषंग—पु० दया, संबंध ।
अनुष्ठान—पु० नियमपूर्वक कोई काम करना, पुरश्चरण ।
अनुसंधान—पु० पीछे लगना, खोज ।
अनुसरण-पु० पीछे या साथ चलना, अनुकरण ।
अनुसार—मुताबिक, अनुकूल ।
अनुस्वार—पु० बिंदी वर्ण ।
अनुहार—तुल्य, अनुकूल । स्त्री० भेद, सादृश्य, आकृति ।
अनुहारी—अनुकरण करनेवाला ।
अनूठा—अनोखा, विचित्र ।
अनूढ़ा—स्त्री० किसी पुरुष से प्रेम रखनेवाली बिना ब्याही स्त्री ।
अनूदित—कहा हुआ, उलथा किया हुआ ।
अनूप—उपमारहित ।
अनृत—पु० मिथ्या, झूठ, अन्यथा ।
अनेक—एक से अधिक, बहुत ।
अनेरा—झूठ, व्यर्थ ।
अनैक्य—पु० मतभेद, फूट ।
अनैस—पु० बुराई ।
अनोखा—अनूठा, निराला ।
अनौचित्य—पु० उचित न होना, अनुपयुक्तता ।
अन्न—पु० अनाज, सूर्य, पृथ्वी, प्राण ।
अन्नजल—पु० दानापानी ।
अन्नदाता—पु० पोषक, स्वामी ।
अन्नपूर्णा—स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी ।
अन्नप्राशन—पु० बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाने का संस्कार ।
अन्नसत्र-पु० भूखों को मुफ्त भोजन देने का स्थान ।
अन्ना—स्त्री० दाई, धाय ।
अन्य—दूसरा, भिन्न ।
अन्यतः—किसी और से, दूसरे स्थान से ।
अन्यत्र—दूसरी जगह ।
अन्यथा—विपरीत, उल्टा, असत्य, नहीं तो ।
अन्यपुरुष—पु० दूसरा आदमी, व्याकरण में वह पुरुष जिसके विषय में कुछ कहा जाय ।
अन्यमनस्क—उदास, अनमना ।
अन्याय—पु० बेइन्साफी, जुल्म ।

अन्योक्ति--स्त्री० वह उक्ति या कथन जिसका मतलब कथित वस्तु के अलावे अन्य वस्तु पर घटाया जाय।
अन्योन्य—परस्पर।
अन्वय—पु० परस्पर सम्बन्ध, मेल। वंश, पद्यों के शब्दों को वाक्य रचना के अनुसार यथा स्थान रखना।
अन्वित—युक्त, शामिल।
अन्वीक्षण—पु० विचार, खोज।
अन्वीक्षा—स्त्री० ध्यानपूर्वक देखना, खोज, तलाश।
अन्वेषक—खोजनेवाला।
अन्वेषण—पु० खोज।
अन्वेषी—खोजने वाला।
अन्हवाना—स्नान कराना।
अप्—पु० पानी, जल।
अपंग—अंगहीन, विवश।
अप—उलटा, बुरा, एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगने से निषेध, दूषण आदि अर्थ प्रकट करता है।
अपकर्ता—पु० पापी, अपकारी।
अपकर्म—पु० बुरा काम, पाप।
अपकर्ष—पु० पतन, अपमान।
अपकाजी—स्वार्थी, मतलबी।
अपकार—पु० बुराई, अपमान।
अपकारी—अपकार करनेवाला।
अपकीर्ति--स्त्री० अयश।
अपकृत—जिसका अपकार हुआ हो।
अपकृति—स्त्री० अपकार।
अपकृष्ट—पतित, नीच, बुरा।
अपक्व--विना पका, कच्चा।
अपगा—स्त्री० नदी। [विश्वासघात।
अपघात--पु० हत्या, आत्महत्या,
अपच--पु० अजीर्ण।
अपचार--पु० बुरा वर्ताव, बुराई, निंदा, कुपथ्य।
अपढ़--बिना पढ़ा, मूर्ख।
अपत--बिना पत्ते का, नीच, निर्लज्ज।
अपत्य--पु० संतान।
अपथ--पु० बीहड़ राह, कुपथ।
अपथ्य--पथ्य नहीं, अहितकर।
अपद--पु० विना पैर वाला जन्तु; जैसे साँप।
अपद्रव--पु० बुरी चीज।
अपन—अपना।
अपनपौ—पु० अपनायत, आत्मभाव, ज्ञान, अहंकार, मर्यादा।
अपनयन—पु० हटाना, खंडन।
अपना—निजका। पु० स्वजन। मु० अपना सा मुँह लेकर रह जाना = असफलता पर लज्जित होना।
अपनायत—स्त्री० अपनापन।
अपभय—पु० निर्भयता, भय।
अपभ्रंश-पु० पतन, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द। [बेइज्जती।
अपमान—पु० तिरस्कार, अनादर,
अपमानित--बेइज्जत।
अपमृत्यु—स्त्री० कुमृत्यु जैसे साँप

आदि काटने से।
अपयश—पु० बदनामी, कलंक।
अपरंच—फिर भी, पुनः।
अपरंपार—जिसका पारावार न हो, असीम, बेहद।
अपर—पहला, पिछला, दूसरा।
अपरस—पु० एक चर्मरोग।
अपरा—स्त्री० लौकिक विद्या, पश्चिम दिशा। [कोयल, दुर्गा।
अपराजिता-स्त्री० कौआ ठुटी,
अपराध—पु० कसूर, दोष।
अपराधी—दोषी।
अपराह्न—पु० तीसरा पहर।
अपरिग्रह-पु० दान न लेना, विराग।
अपरिचित—अनजान।
अपरिमेय—बे अन्दाज, असंख्य।
अपरिहार्य—जो दूर न हो सके, अत्याज्य।
अपरूप—भद्दा, अद्भुत।
अपर्णा—स्त्री० पार्वती, दुर्गा।
अपवर्ग—पु० मुक्ति, त्याग, दान।
अपवाद—पु० खंडन, निन्दा, दोष, राय, आज्ञा, व्यापक नियम के विरुद्ध बात।
अपवारण—पु० रोक, आड़।
अपविद्ध—त्यागा हुआ, वेधा हुआ।
अपव्यय—पु० फजूलखर्ची।
अपव्ययी—फजूलखर्च।
अपशकुन—पु० बुरा सगुन।

अपशब्द—पु० गाली, अशुद्ध शब्द, पाद।
अपस्मार—पु० मिरगी।
अपस्वार्थी—खुदगरज।
अपहत—मारा हुआ।
अपहरण—पु० छीनना, लूट, चोरी।
अपहर्त्ता—पु० अपहरण करने वाला।
अपहास-पु० उपहास, अकारण हँसी।
अपहृत—छीना हुआ।
अपह्नुति—स्त्री० दुराव, बहाना।
अपांग—पु० आँख की कोर, कटाक्ष, अंगहीन।
अपात्र—अयोग्य, मूर्ख। [कारक।
अपादान-पु० हटाना, अलगाव, पाँचवाँ
अपान—पु० पाँच प्राणों में से एक, गुदा वायु, गुदा, आत्मभाव।
अपाय-पु० अलगाव, पीछे हटना, नाश, अनरीति, लँगड़ा, निरुपाय।
अपार—बेहद, बहुत।
अपाहिज—लूला लँगड़ा, आलसी।
अपि—भी, ही, निश्चय।
अपितु—किन्तु, बल्कि।
अपिधान-पु० आवरण, ढक्कन।
अपील-स्त्री० निवेदन, ऊँची अदालत में नीचे की अदालत के फैसले के विरुद्ध निवेदन।
अपूत—अशुद्ध, पुत्रहीन।
अपूर्णभूत—पु० क्रिया का वह भूत-काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न

पायी जाय। [उत्तम।
अपूर्व—जो पहले न रहा हो, अनोखा,
अपेक्षा—स्त्री०, बनिस्बत, तुलना, चाह, आवश्यकता, भरोसा।
अपेक्षाकृत—मुकाबले में, तुलना में।
अपेक्षित—आवश्यक, इच्छित।
अपेय—न पीने योग्य।
अपेल—अटल। [उदास, लजीला।
अप्रतिभ-प्रतिभाहीन, निर्बुद्धि, सुस्त,
अप्रतिम—अनुपम।
अप्रत्यक्ष—छिपा, गुप्त। [हो सके।
अप्रमेय—जो नापा न जा सके, अपार, अनंत, जो प्रमाण से सिद्ध न
अप्रयुक्त—अव्यवहृत।
अप्रसन्नता—स्त्री० नाराजगी।
अप्राप्त—जो प्राप्त न हो।
अप्राप्त व्यवहार—नाबालिग।
अप्राप्य—अलभ्य।
अप्रासंगिक—प्रसंगविरुद्ध।
अप्रिय—प्रिय नहीं। [वाष्पकण।
अप्सरा—स्त्री० स्वर्ग की वेश्या, परी,
अफ़ग़ान-पु० अफ़गानिस्तान वासी।
अफ़्यून-स्त्री० अफीम। [पेट फूलना।
अफरना—इच्छा से अधिक खाना;
अफ़वाह—स्त्री० उड़ती खबर।
अफ़सर—पु० हाकिम, मुखिया।
अफ़साना—पु० कहानी, किस्सा।
अफ़सोस-स्त्री० शोक, दुःख, पछतावा।
अफ़ीमची—पु० अफीम खाने वाला।

अब—इस समय। मु० अब तब होना = मरने पर होना।
अबतर—बुरा, खराब।
अबद्ध—बँधा नहीं, मुक्त।
अबध्य—जिसे मारना अनुचित है।
अबरू—स्त्री० भौंह, भ्रू।
अबल—निर्बल, कमजोर।
अबलख—दोरंगा।
अबला—स्त्री० स्त्री।
अबवाब—पु० वह ज्यादा कर जो सरकार मालगुजारी पर लगाती है।
अबाध—बेरोक, निर्विघ्न, अपार।
अबाधित—बाधारहित।
अबूझ—नासमझ, अबोध।
अबेर—स्त्री० देर।
अबोध—पु० अज्ञान, मूर्ख।
अब्ज—पु० जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, शंख, चन्द्रमा, धन्वंतरि, कपूर, ईजड़, अरब।
अब्जा—स्त्री० लक्ष्मी।
अब्द—पु० वर्ष, मेघ, आकाश।
अब्धि—पु० समुद्र, ताल।
अब्र—पु० मेघ। [न हो।
अब्रह्मण्य-वह कार्य जो ब्राह्मणोचित
अभंग—अखंड, लगातार।
अभंजन—अटूट, अखंड।
अभक्ष्य—अखाद्य।
अभद्र—अशुभ, अशिष्ट, कमीना।
अभय—निर्भय, बेडर।

अभयदान—पु० भय से बचाने का वचन देना, रक्षा करना।
अभयपद—पु० मुक्ति।
अभल—बुरा। [अशुभ।
अभव्य—न होने योग्य, अद्भुत,
अभागा—भाग्यहीन।
अभाग्य—पु० बदकिस्मती [दुर्भाव।
अभाव—पु० न होना, त्रुटि, कमी,
अभि—एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाने से सामने, बुरा, इच्छा, समीप, दूर, ऊपर, बारबार, अच्छी तरह आदि बोध कराता है।
अभिक्रमण—पु० चढ़ाई।
अभिगमन—पु० पास जाना, सहवास।
अभिघात—पु० प्रहार, मार।
अभिचार—पु० मंत्रयंत्र द्वारा मारण-उच्चाटन आदि, पुरश्चरण।
अभिजन—पु० वंश, परिवार, परिवार में बड़ा व्यक्ति, जन्मभूमि, ख्याति।
अभिजात—कुलीन, बुद्धिमान, मान्य, सुन्दर।
अभिजित—विजयी। पु० एक नक्षत्र।
अभिज्ञ—जानकार, निपुण। [निशानी।
अभिज्ञान—पु० स्मृति, पहचान,
अभिधा—स्त्री० शब्दों की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने नियत अर्थ को व्यक्त करता है।
अभिधान—पु० नाम, कथन, कोश।
अभिधायक—नाम रखनेवाला, कहने वाला, सूचक।
अभिधेय—प्रतिपाद्य, जिसका बोध नाम लेने से हो जाय। पु० नाम।
अभिनंदन—पु० आनंद, संतोष, प्रशंसा, उत्तेजन, प्रार्थना।
अभिनंदनपत्र—पु० मानपत्र।
अभिनंदनीय—वंदनीय।
अभिनय—पु० नाटक, नकल।
अभिनव—नया, नवीन।
अभिनिविष्ट—धँसा हुआ, बैठा हुआ लिप्त, मग्न।
अभिनिवेश—पु० प्रवेश, गति, मनोयोग, दृढ़संकल्प, मृत्यु-शंका।
अभिनीत—निकट लाया हुआ, सुसज्जित, उचित, खेला हुआ।
अभिनेता—पु० अभिनय करनेवाला।
अभिन्न—अपृथक्, संबद्ध।
अभिप्राय—पु० मतलब, अर्थ।
अभिप्रेत—इष्ट, अभिलषित।
अभिभावक—वशीभूत करनेवाला, रक्षक। [विचलित।
अभिभूत—पराजित, पीड़ित, वशीभूत,
अभिमंत्रण—पु० मंत्रद्वारा संस्कार, आवाहन। [मनचाही बात।
अभिमत—वांछित। पु० राय, विचार,
अभिमान—पु० घमंड।
अभिमुख—सामने।
अभियुक्त—जिसपर अभियोग लगाया गया हो, मुद्दालह।

अभियोक्ता—अभियोग लानेवाला, मुद्दई। [उद्योग।

अभियोग-पु० दोष, मुकदमा, चढ़ाई,

अभिराम—मनोहर, सुन्दर।

अभिरुचि—स्त्री० चाह, पसन्द।

अभिलषित—वांछित।

अभिलाष—पु० इच्छा।

अभिलाषा—स्त्री० आकांक्षा।

अभिलाषी—इच्छा करनेवाला।

अभिवंदन, अभिवादन-पु० प्रणाम, स्तुति।

अभिव्यंजक—सूचक, बोधक।

अभिव्यक्त—स्पष्ट किया हुआ।

अभिव्यक्ति—स्त्री० स्पष्टीकरण।

अभिशप्त—जिसपर शाप पड़ा हो या मिथ्या दोष लगा हो। [रोपण।

अभिशाप—पु० शाप, मिथ्या दोषा-

अभिशापित—दे० "अभिशप्त"।

अभिषंग-पु० पराजय, निंदा, मिथ्या-पवाद, आलिंगन, शपथ, शोक, भूत-प्रेत का आवेश।

अभिषिक्त—जिसका अभिषेक हुआ हो, जिसपर मंत्रजल छिड़का गया हो।

अभिषेक—पु० जलसे सिंचन, मंत्र से विधि-पूर्वक जल छिड़क कर राज-पद पर निर्वाचन।

अभिसंधि—स्त्री० धोखा, कुचक्र।

अभिसरण—पु० आगे जाना।

अभिसार—पु० सहारा, युद्ध, नायक या नायिका का मिलन के लिये संकेत स्थान (पूर्वनिर्दिष्ट स्थान) में गमन।

अभिसारिका, अभिसारिणी-स्त्री० नायक के सहवासार्थ संकेत किये हुए स्थान में जानेवाली नायिका।

अभिसारी--साधक, सहायक, प्रिय से मिलने के लिये संकेत स्थान पर जाने वाला।

अभिहित--कहा हुआ।

अभीक--निडर, निष्ठुर, उत्सुक।

अभीर—पु० अहीर।

अभीप्सित—अभीष्ट, वांछित।

अभीष्ट—वांछित, चाहा हुआ, आशय के अनुकूल। पु० मनोरथ।

अभुक्त—न खाया हुआ, बिना बर्ता हुआ, अव्यवहृत।

अभूत—जो न हुआ हो, अपूर्व।

अभूतपूर्व—जो पहले न हुआ हो, अपूर्व, अनोखा।

अभेद—भेदरहित। पु० अभिन्नता, एकत्व।

अभेदनीय, अभेद्य—जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

अभेव--दे० "अभेद"।

अभ्यंग—पु० लेपन। [हृदय।

अभ्यंतर—भीतर। पु० बीच, मध्य,

अभ्यर्थना—स्त्री० विनय, सत्कार, अगवानी।

अभ्यस्त—जिसका अभ्यास किया

गया हो, जिसने अभ्यास किया हो।
अभ्यागत—पु० अतिथि, मेहमान।
अभ्यास—पु० साधन, आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार, मश्क, आदत।
अभ्युत्थान—पु० उन्नति, उत्पत्ति।
अभ्युदय—पु० उदय, वृद्धि, ऐश्वर्य, उत्पत्ति।
अभ्र—पु० मेघ, आकाश, सोना।
अभ्रक—पु० अबरक।
अभ्रांत—भ्रमरहित, स्थिर।
अमंगल—पु० अशुभ।
अमंद—तेज, उत्तम, उद्योगी।
अमत्त—मदरहित, शांत।
अमन—पु० शांति, चैन, रक्षा।
अमनस्क—अनमना, उदासीन।
अमर—जो मरे नहीं, चिरजीवी। पु० देवता, पारा।
अमरख—पु० अमर्ष, क्रोध, दुःख।
अमरता—स्त्री० मृत्यु का अभाव, चिर-जीवन, देवत्व।
अमरत्व—पु० अमरता।
अमरपख—पु० पितृपक्ष।
अमरपद—पु० मुक्ति।
अमरपुर—पु० स्वर्ग।
अमरबेल—स्त्री० अमरलता।
अमरलोक—पु० इंद्रपुरी, स्वर्ग।
अमरबल्ली—स्त्री० अमरलता।
अमरस—पु० अमावट।
अमराई—स्त्री० आमका बाग।

अमरालय—पु० स्वर्ग।
अमरावती—स्त्री० इंद्रपुरी।
अमरी—स्त्री० देवकन्या।
अमरेश—पु० इंद्र।
अमर्ष—पु० क्रोध, असहिष्णुता।
अमर्षण—पु० क्रोध।
अमर्षी—क्रोधी। [समय।
अमल—निर्मल, निर्दोष। पु० व्यवहार, शासन, हुकूमत, नशा, आदत, असर,
अमलता—स्त्री० स्वच्छता।
अमलदारी—स्त्री० अधिकार।
अमला—स्त्री० लक्ष्मी। पु० कर्मचारी।
अमलाफैला—पु० कर्मचारी।
अमली—व्यावहारिक, नशेबाज।
अमा—स्त्री० अमावस्या की कला, घर, मर्त्यलोक।
अमात्य—पु० मंत्री, वजीर।
अमान-अपरिमित, निरभिमान, अप्रतिष्ठित। पु० रक्षा, शरण।
अमानत—स्त्री० थाती, धरोहर।
अमानतदार—पु० जिसके पास अमानत रखी जाय।
अमाना - अँटना, गर्व करना।
अमानी—घमंडरहित।
अमानुष—मनुष्यस्वभाव के विरुद्ध, मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर, पैशाचिक। पु० मनुष्य से भिन्न प्राणी, देवता, राक्षस।
अमानुषी—मनुष्यस्वभाव के विरुद्ध,

मानवी शक्ति के बाहर, पैशाचिक।
अमाया—स्त्री० मायारहित, निष्कपट
अमारी--स्त्री० दे० "अंबरी"।
अमावस, अमावस्या स्त्री० कृष्ण-पक्ष की अंतिम तिथि।
अमिट— जो न मिटे।
अमित--असीम, बहुत।
अमिताभ—पु० बुद्धदेव।
अमिय--पु० अमृत।
अमियमूरि--स्त्री० संजीवनी बूटी।
अमिष—निश्छल। पु० दे० 'आमिष'।
अमी—पु० अमृत।
अमीकर—पु० चंद्रमा।
अमीत—पु० शत्रु।
अमीर—पु० सरदार, धनी।
अमीराना—अमीरों जैसा। [ढ्यता।
अमीरी-अमीरों का सा। स्त्री० धना-
अमुक—फलाँ।
अमूर्त-निराकार। पु० ईश्वर, आत्मा, जीव, काल, दिशा, आकाश, वायु।
अमूर्त्ति--निराकार।
अमूर्तिमान—निराकार, अप्रत्यक्ष।
अमूलक-- निर्मूल, असत्य।
अमूल्य—अनमोल, बेशकीमत।
अमृत—पु० वह वस्तु जिसके पीने से जीव न मरे; जल, घी, अन्न, मुक्ति, दूध, औषध, पारा, धन, सोना, मीठी चीज़।
अमृतकर - पु० चंद्रमा।
अमृतत्व—पु० मुक्ति।
अमृतांशु—पु० चन्द्रमा।
अमेय--असीम, अज्ञेय।
अमोघ—अचूक, अव्यर्थ।
अमोल—अमूल्य, कीमती।
अमोही--निष्ठुर, निर्मोही।
अम्माँ—स्त्री० माता।
अम्मारी—स्त्री० दे० "अंबारी"।
अम्ल—पु० खटाई, तेजाब।
अम्लजन—पु० दे० "आक्सिजन"।
अम्लान - निर्मल, स्वच्छ।
अयथा—झूठ, अयोग्य।
अयन—पु० गति, चाल, स्थान, घर, समय, अंश।
अयश - पु० निंदा, अपकीर्ति।
अयस्कांत— पु० चुम्बक।
अयाचित - बिना माँगा हुआ।
अयाची—अयाचक, धनी।
अयान—अजान, पैदल।
अयानप—पु० अज्ञानता, सीधापन।
अयाल—पु० घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल।
अयि—अरे, अरी। [असंबद्ध।
अयुक्त-- अयोग्य, अलग, अनमना,
अयुग, अयुग्म—विषम, अकेला।
अयुत-अयुक्त पु० दस हजार।
अयोग-अयोग्य, बुरा। पु० कुसमय, विच्छेद।
अयोग्य—निकम्मा, अनुचित।

अयोनि—अजन्मा, नित्य।
अरंड—पु० दे० "एरंड"।
अरक—पु० रस, पसीना।
अरकाटी—पु० कुली भर्ती कर टापुओं में भेजने वाला।
अरगजा—पु० एक सुगंधित द्रव्य।
अरगट—अलग, निराला।
अरघ—पु० दे० "अर्घ"।
अरघा—एक पात्र जिसमें अरघ का जल रखा जाता है।
अरघान—पु० गंध।
अरचना—पूजा करना
अरज—स्त्री० विनय, चौड़ाई।
अरजी—स्त्री० प्रार्थना-पत्र। [सूर्य।
अरणि—स्त्री० एक काष्ठ जिसे घिस कर यज्ञ में आग निकाली जाती है,
अरण्य—पु० वन, जंगल।
अरण्यरोदन—पु० निष्फल रोना।
अरथी—स्त्री० मुर्दा ले जाने की रंथी।
अरदली—पु० चपरासी।
अरदास—स्त्री० भेंट, नजर।
अरधगी—पु० दे० "अर्द्धांगी"।
अरध—आधा, भीतर।
अरना—पु० जंगली भैंसा।
अरब—पु० सौ करोड़, घोड़ा, इन्द्र।
अरबीला—भोलाभाला।
अरमान—पु० लालसा, हौसला।
अरविंद—पु० कमल, सारस।
अरस—नीरस, अनाड़ी। पु० आलस्य छत, धरहरा, महल।
अरसा—पु० समय, देर।
अरसिक—अरसज्ञ।
अरसीला—आलस्यपूर्ण, रसीला नहीं।
अरसौंहें—दे० "अलसौंहा"
अरहर—स्त्री० रहर।
अराजक—राजहीन।
अराजकता स्त्री० शासन का अभाव, अशांति। [विकार।
अराति—पु० शत्रु, काम क्रोधादि
अरि—पु० शत्रु, चक्र।
अरिंदम—शत्रुजयी, योधा।
अरिष्ट—पु० दुःख, अमंगल, काढ़ा, सूतिकागृह।
अरिहन—पु० शत्रुघ्न।
अरिहा—शत्रुनाशक।
अरु—और।
अरुचि—स्त्री० अनिच्छा, घृणा।
अरुचिकर—जो न रुचे।
अरुज—नीरोग, रोगरहित।
अरुझना—उलझना।
अरुण—लाल। पु० सूर्य, गुड़, ललाई, एक कुष्ट रोग।
अरुणचूड़—पु० मुर्गा।
अरुणप्रिया—स्त्री० अप्सरा।
अरुणशिखा—पु० मुर्गा।
अरुणाई, अरुणिमा—स्त्री० ललाई।
अरुणोदय—पु० उषाकाल, भोर।
अरुणोपल—पु० पद्मराग मणि।

अरोचक—अरुचिकर
आरोहना—चढ़ना ।
अर्क-पु० सूर्य, इन्द्र, ताँबा, स्फटिक, विष्णु, पण्डित, आक ।
अर्कज—पु० सूर्य के पुत्र, यम, शनि, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।
अर्कजा—सूर्य की पुत्री, यमुना, तापती । [लेना ।
अर्कव्रत-पु० सूर्य के जलग्रहण समान राजा का प्रजा की वृद्धि के लिये कर
अर्कोपल-पु० सूर्यकान्त मणि, लाल, पद्मराग मणि ।
अर्गल—पु० किवाड़, सिटकिनी, अवरोध, कल्लोल, मांस, सुबह शाम का रंग-बिरंगा बादल ।
अर्घ—पु० जलदान, पूजा का द्रव्य, मूल्य, भेंट, घोड़ा, मधु ।
अर्घा—पु० अर्घपात्र । [योग्य ।
अर्घ्य—पूज्य, बहुमूल्य, पूजा में देने
अर्चन—पु० पूजा, सत्कार ।
अर्चा—स्त्री० पूजा, प्रतिमा ।
अर्चित—पूजित ।
अर्ज—स्त्री० विनय, चौड़ाई ।
अर्जन—पु० कमाई, संग्रह ।
अर्जित—कमाया हुआ ।
अर्जी—स्त्री० प्रार्थनापत्र ।
अर्णव—पु० समुद्र, सूर्य्य, इंद्र, तरिक्ष । [धन, इन्द्रियों के विषय ।
अर्थ—पु० मानी, मतलब, काम, हेतु,

अर्थदण्ड—पु० जुर्माना ।
अर्थपति—पु० कुबेर, राजा ।
अर्थपिशाच—धनलोलुप, कंजूस ।
अर्थमंत्री—पु० दे० "अर्थसचिव" ।
अर्थशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें धन के उत्पादन, विनिमय, वितरण और उपभोग की बातें बतायी गयी हों ।
अर्थसचिव—पु० वह सचिव जिस के हाथ में राज्य-शासन का धन-सम्बन्धी विभाग हो ।
अर्थात्—मतलब यह कि, यानी ।
अर्थालंकार—पु० काव्य में वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखलाया गया हो ।
अर्थी—पु० प्रयोजनवाला, धनी, सेवक, मुद्दई ।
अर्द्ध—आधा ।
अर्द्धचंद्र—पु० आधा चाँद, नखक्षत, चंद्रबिन्दु, एक त्रिपुण्ड, गरदनिया, मोरपंख की आँख ।
अर्द्धनारीश्वर—पु० शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप ।
अर्द्धांग—पु० आधा अंग, लकवा ।
अर्द्धांगिनी—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
अर्द्धांगी—शिव, लकवाग्रस्त ।
अर्पण—पु० दान, भेंट, नजर ।
अर्बुद—पु० दशकोटि, मेघ, बतौरी, दो मास का गर्भ ।

अर्भक—छोटा, मूर्ख, दुबला। पु० बालक।
अर्यमा—पु० सूर्य।
अर्वाचीन—आधुनिक, नवीन।
अर्श—पु० बवासीर।
अर्हंत—पु० बुद्ध, जिन।
अर्ह—पूज्य, योग्य। पु०ईश्वर,इन्द्र।
अर्हणा—स्त्री० पूजा।
अर्ह्य—पूज्य, मान्य। [आवे।
अलंकार—पु० भूषण, वर्णन करने की रीति जिससे चमत्कार और रोचकता
अलंकृत—विभूषित, अलंकारयुक्त।
अलंग—पु० ओर, तरफ।
अलंघनीय, अलंघ्य—जो लाँघने या टालने योग्य न हो।
अलक—पु० मस्तक के इधर उधर लटकते हुए बाल, लट, केश।
अलक लड़ैता—दुलारा।
अलका—स्त्री० कुबेर की पुरी।
अलकावलि—स्त्री० बालों की लटें।
अलक्त, अलक्तक—पु० लाख, लाख का रंग जिससे स्त्रियाँ पैर रँगती हैं।
अलक्षित—अप्रगट, अदृश्य।
अलक्ष्य—अदृश्य। [माँगना।
अलख—अदृश्य, अगोचर, ईश्वर का एक विशेषण। मु० अलख जगाना = पुकार कर परमात्मा का स्मरण कराना, परमात्मा के नाम पर भिक्षा
अलगरजी—बेगरज, बेपरवाह। स्त्री० बेपरवाही।
अलज्ज—निर्लज्ज।
अलता—पु० महावर।
अलबत्ता—बेशक, निस्सन्देह। [अल्हड़।
अलबेला—बना ठना, छैला, अनूठा,
अलभ्य—अप्राप्य, दुर्लभ, अमूल्य।
अलम्—यथेष्ट, निरर्थक।
अलमस्त—मतवाला, बेफिक्र।
अललटप्पू—अटकल पच्चू।
अललबछेड़ा—पु० अल्हड़ आदमी।
अलवान—पु० ऊनी चादर।
अलस—आलसी, सुस्त।
अलसान—स्त्री० आलस्य, सुस्ती।
अलसी—स्त्री० तीसी। [भरा
अलसौहाँ—आलस्ययुक्त, नींद से
अलहदा—अलग, जुदा।
अलान—पु० बंधन, खूँटा, लता चढ़ाने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी। [गाना।
अलापना—बोलना, तान लगाना,
अलावा—सिवाय, अतिरिक्त। [ब्रह्मा।
अलिंग—लिंगरहित, चिह्नरहित,
अलि—पु० भौंरा, कोयल, कौवा, बिच्छू, वृश्चिक राशि, मदिरा, कुत्ता। स्त्री० दे० "अली"।
अली—स्त्री० सखी, पंक्ति, भौंरा।
अलीक—मिथ्या, अप्रतिष्ठित। पु० अप्रतिष्ठा।
अलील—बीमार, रुग्ण। [अदृश्य।
अलेख—दुर्बोध, अज्ञेय, अनिश्चित,

अलोक—अदृश्य, निर्जन, पुण्यहीन। पु० परलोक, कलंक। [फीका।
अलोना—जिसमें नमक न पड़ा हो,
अलोप—दे० 'लोप"। [लुप्त।
अलौकिक—लोकोत्तर, अद्भुत, अमा-
अल्प-थोड़ा, छोटा।
अल्पज्ञ—थोड़ा ज्ञान रखनेवाला, नासमझ।
अल्पवयस्क—कमसिन।
अल्पशः—धीरे धीरे, क्रमशः।
अल्पायु—थोड़ी आयुवाला।
अल्हड़—मनमौजी, उजड्ड। [है।
अव—एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगने से निश्चय, अनादर, न्यूनता, गहराई और व्याप्ति आदि बोध कराता
अवकाश—पु० छुट्टी, अवसर, समय, दूरी, खाली जगह, आकाश। [हुआ।
अवकीर्ण—फैलाया हुआ, नाश किया
अवगत-विदित, गिरा हुआ। [गति।
अवगति—स्त्री० बुद्धि, धारणा, बुरी
अवगाह—अथाह, कठिन।
अवगाहन—पु० जल में पैठ कर स्नान, निमज्जन, डुबकी, प्रवेश, मथन, खोज, चित्त लगाना। [घूँघट।
अवगुंठन-पु० छिपाना, रेखा से घेरना,
अवगुण—पु० दोष, बुराई।
अवग्रह—पु० बाधा, बाँध, अनावृष्टि संधि-विच्छेद, स्वभाव, शाप।
अवघट—दुर्गम, कठिन।

अवच्छिन्न-पृथक्, युक्त, विशेषण युक्त।
अवच्छेद-पु० अलगाव, भेद, सीमा, परिच्छेद, विभाग, छानबीन। [हार।
अवज्ञा—स्त्री०, अनादर, अवहेला
अवज्ञात-अपमानित।
अवज्ञेय-अपमान योग्य।
अवतंस—पु० भूषण, शिरोभूषण, कर्णफूल, माला, मुकुट।
अवतरण—पु० अवतार, उतरना, भाषान्तर, प्रादुर्भाव, नकल, सीढ़ी, घाट, उद्धरण। [परिपाटी।
अवतरणिका-प्रस्तावना, भूमिका,
अवतार—पु० जन्म, उतरना, विष्णु आदि का मनुष्य-शरीर धारण।
अवतीर्ण-उत्पन्न।
अवदशा-स्त्री० दुर्दशा।
अवदात-उज्ज्वल, गौर, निर्मल, पीला।
अवदान-पु० शुद्ध आचरण, खंडन, बल, उल्लंघन, पवित्र करना। [कारी।
अवदान्य-बली, कंजूस, अतिक्रमण-
अवदारण-पु० विदारण करना, तोड़ना। [सावधानी, गर्भ।
अवधान-पु० मनोयोग, समाधि,
अवधारण-पु० निश्चय, ग्रहण।
अवधि-तक, पर्यंत। स्त्री० सीमा, मियाद, अन्त समय।
अवधिमान—पु० समुद्र।
अवधूत-पु० साधु, योगी। [कम।
अवनत-नीचा, झुका हुआ, पतित,

अवनति–स्त्री० कमी, हीन दशा, झुकाव, नम्रता।
अवनि–स्त्री० पृथ्वी।
अवनिप–राजा।
अवम–पु० मलमास।
अवम तिथि–स्त्री० क्षय तिथि।
अवमान–पु० अपमान।
अवयव—पु० अंग, अंश।
अवर—दूसरा, और, नीच।
अवरत–विरत, स्थिर, पृथक्।
अवराधन—पु० आराधन, पूजा।
अवरुद्ध—रुका हुआ, गुप्त।
अवरूढ़—उतरा हुआ।
अवरेखना—उरेहना, चित्रित करना, देखना, अनुमान करना, मानना।
अवरोध–पु० रुकावट, दबाव, बन्द करना, अन्तःपुर।
अवरोधित—रोका हुआ।
अवरोहण—पु० पतन।
अवर्ण—वर्णरहित, बदरंग, अन्त्यज।
अवर्ण्य—वर्णन योग्य नहीं।
अवर्षण—पु० अनावृष्टि।
अवलंब—पु० सहारा। [ग्रहण।
अवलंबन—पु० आश्रय, आधार,
अवली—स्त्री० पंक्ति, समूह।
अवलेखना—खुरचना, चिह्न करना।
अवलेह—पु० चटनी, वह औषध जो चाटी जाय।
अवलोकन—पु० देखना, देखभाल।

अवलोकनि—स्त्री० दृष्टि, चितवन।
अवशिष्ट—शेष, बाकी।
अवशेष—शेष, समाप्त।
अवश्यंभावी—जो अवश्य हो।
अवश्य—जरूर, जो वश में न हो।
अवश्यमेव–अवश्य ही। [सुस्त।
अवसन्न—दुःखी, नष्ट होनेवाला,
अवसर–पु० समय, अवकाश, मौका।
अवसाद–पु० नाश, विषाद, दीनता, थकावट, कमजोरी।
अवसान—पु० अंत, सीमा, मरण, ठहराव, सायंकाल।
अवसि—अवश्य।
अवसेचन—पु० सींचना, पसीजना।
अवस्था—स्त्री० दशा, समय, उम्र, स्थिति।
अवस्थान–पु० स्थान, स्थिति।
अवस्थान्तर—पु० दूसरी अवस्था।
अवस्थापन—पु० स्थापन।
अवस्थित—उपस्थित।
अवस्थिति स्त्री० स्थिति, सत्ता।
अवहेलना–स्त्री० अवज्ञा, तिरस्कार।
अवांतर—पु० अन्तर्गत, बीच।
अवाई—स्त्री० आगमन।
अवाक्–चुप, चकित।
अवाङ्मुख—अधोमुख, लज्जित।
अवाची—स्त्री० दक्षिण दिशा।
अवाच्य—जो कहने योग्य न हो। पु० कुवाच्य, गाली।

अविकल—ज्योंका त्यों, पूरा, निश्चल।
अविकल्प—निश्चित, निस्संदेह ।
अविकार विकाररहित।
अविगत—जो जाना न जाय, अज्ञात, जिसका नाश न हो
अविचल-अचल, स्थिर।
अविच्छिन्न-अटूट।
अविज्ञात—अनजाना, बेसमझा।
अविज्ञेय—न जानने योग्य।
अविद्य-मूर्ख, अनभिज्ञ। [जड़।
अविद्या—स्त्री० मिथ्या ज्ञान, मोह,
अविनश्वर-जिसका नाश न हो।
अविनाशी—जिसका विनाश न हो।
अविनीत-उद्धत, ढीठ।
अविमुक्त-बद्ध। पु० कनपटी, काशी।
अविरत-निरंतर, नित्य।
अविरति-स्त्री० लीनता, अशांति।
अविरल-मिला हुआ, घना।
अविराम-बिना विश्राम लिये, निरंतर।
अविशेष-तुल्य, समान। [नहीं।
अविश्रांत-जो रुके या थके नहीं।
अवेक्षण-पु० अवलोकन।
अवैतनिक—विना वेतन का।
अव्यक्त-अज्ञात, अप्रत्यक्ष, अगोचर। पु० विष्णु, कामदेव, शिव, प्रधान, प्रकृति, जीव, ब्रह्म, सूक्ष्म शरीर, सुषुप्ति अवस्था।
अव्यक्त गणित—पु० बीजगणित।
अव्यक्तलिंग-पु० संन्यासी, पहचान में न आनेवाला रोग।
अव्यय—जिसमें विकार न हो, अक्षय, नित्य। पु० व्याकरण में वह शब्द जिसमें लिंग आदि का विकार न हो, परब्रह्म, शिव, विष्णु।
अव्याप्ति—स्त्री० व्याप्ति का अभाव, न्याय में संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।
अव्याहत-अप्रतिरुद्ध, सत्य, युक्ति-युक्त।
अव्युत्पन्न—अनभिज्ञ, वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति न हो सके।
अव्वल-पहला, श्रेष्ठ।
अशंक—निर्भय।
अशकुन—पु० बुरा शकुन।
अशक्त—निर्बल, कमजोर।
अशक्य—असाध्य।
अशन—पु० भोजन, खाना।
अशरण—शरणरहित, अनाथ।
अशरफी—स्त्री० मोहर।
अशराफ—शरीफ, भद्र।
अशांत—अस्थिर, चंचल।
अशिष्ट—उजड्ड।
अशुचि—अपवित्र, गंदा।
अशुद्ध—अपवित्र, गलत।
अशुभ—अमंगल, बुरा।
अशेष—अनंत, पूरा, समाप्त।
अशोक-शोकरहित। एक पेड़, पारा।
अशोच्य—अशोचनीय।
अशौच—पु० अशुद्धता।

अश्म—पु० पर्वत, पत्थर, मेघ।
अश्रद्धा—स्त्री० घृणा।
अश्रांत—थका नहीं, निरंतर।
अश्राव्य—सुनने के अयोग्य।
अश्रु—पु० आँसू।
अश्रुत—जो सुना न गया हो, जिसने कुछ देखा सुना न हो।
अश्रुतपूर्व—जो पहले न सुना गया हो, अद्भुत।
अश्रेयस्—अधम, अमंगल।
अश्लिष्ट—श्लेषशून्य, असंबद्ध।
अश्लील—भद्दा, लज्जाजनक।
अश्लेषा—स्त्री० एक नक्षत्र।
अश्व—पु० घोड़ा।
अश्वतर—पु० नागराज, खच्चर।
अश्वपति—पु० घुड़सवार, घोड़ों का मालिक।
अश्वपाल—पु० साईस।
अश्वमेध— एक यज्ञ।
अश्वशाला—स्त्री० घुड़सार।
अश्वारोहण—पु० घोड़े पर चढ़ना।
अश्वारोही—पु० घुड़सवार।
अश्विनी—स्त्री० घोड़ी, एक नक्षत्र।
अष्ट—आठ।
अष्टक—पु० आठ चीजों का संग्रह।
अष्टधातु—स्त्री० आठ धातुएँ-सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा।
अष्टपदी—स्त्री० आठ पद का छंद।
अष्टपाद—पु० शार्दूल, मकड़ी।
अष्टभुजा—स्त्री० दुर्गा।
अष्टम—पु० आठवाँ।
अष्टसिद्धि—स्त्री० योग की आठ सिद्धियाँ—अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, [वशित्व।
अष्टांग—पु० शरीर के आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि जिनसे प्रणाम करने की विधि है।
अष्टादश—अठारह।
अष्टावक्र—पु० टेढ़ेमेढ़े अंगवाला।
असंख्य—अनगिनत।
असंगत—अयुक्त, अनुचित।
असंगति—स्त्री० बेसिलसिलापन, अनुपयुक्तता।
असंत—खल, दुष्ट।
असंतोष—पु० अप्रसन्नता, अतृप्ति।
असंबद्ध—बेमेल, पृथक्।
असंभव—जो न हो सके।
असंभाव्य—जिसकी संभावना न हो।
असंयत—संयमरहित।
असंस्कृत—बिना सुधारा हुआ।
अस—ऐसा।
असगुन—पु० बुरा सगुन।
असज्जन—दुष्ट, खल।
असती—स्त्री० कुलटा।
असत्—सत्तारहित, बुरा, असाधु।
असत्य—झूठ।

असबाब—पु०चीज, सामना।
असभ्य—अशिष्ट, गँवार।
असमंजस—पु० दुविधा, कठिनाई।
असम—विषम, असदृश।
असमय—पु० बेमौका, बुरा समय।
असमर्थ—अशक्त, अयोग्य।
असम्मति—स्त्री० विरुद्ध मत।
असर—पु० प्रभाव। [धन।
असल—सच्चा, शुद्ध, बुनियाद, मूल
असलियत—स्त्री० तथ्य, वास्तविकता, मूल, सार।
असली—सच्चा, मूल, शुद्ध।
असवार—पु० सवार।
असह—दे० "असह्य"।
असहनीय—असह्य। [करना।
असहयोग—पु० मिल कर काम न
असहाय—अनाथ, निराश्रय।
असह्य—न सहने योग्य।
असाध्य—दुष्कर, कठिन।
असामयिक—जो ठीक समय के पहले या पीछे हो।
असामर्थ्य—स्त्री० निर्बलता।
असामी—पु० व्यक्ति, रैयत, देनदार, अपराधी।
असार—सारहीन, खाली, तुच्छ।
असि—स्त्री० तलवार।
असित—काला, दुष्ट, टेढ़ा।
असीम—सीमारहित, अनंत।
असीस—स्त्री० आशिष।

असुर—पु० दैत्य, रात्रि, पृथ्वी, सूर्य, बादल, राहु।
असुरारि—पु० देवता, विष्णु।
असूया—स्त्री० ईर्ष्या, डाह।
असूर्यंपश्या—स्त्री० जिसको सूर्य भी न देखे, पर्दानशीन। [सर।
असेसर—पु० जज को फौजदारी मुकदमे में राय देने को चुना जाने वाला व्यक्ति तथा कर आदि बैठानेवाले अफ-
असोसियेशन—पु० समिति।
अस्तंगत—अस्त को प्राप्त, नष्ट, हीन, अवनत।
अस्त—डूबा हुआ, अदृश्य, नष्ट। पु० लोप।
अस्तबल—पु० घुड़साल।
अस्तमित—डूबा हुआ, नष्ट, तिरोहित, छिपा हुआ।
अस्तर—पु० नीचे की तह।
अस्तरकारी—स्त्री० सफेदी, कलई, पलस्तर। [बितर।
अस्तव्यस्त—उलटा पुलटा, तितर-
अस्ताचल—पु० वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है।
अस्ति—स्त्री० सत्ता, वर्तमानता।
अस्तित्व—पु० सत्ता, वर्तमानता।
अस्तु—जो हो, खैर, अच्छा।
अस्तेय—चोरी न करना।
अस्त्र—पु० हथियार। [चिकित्सा।
अस्त्रचिकित्सा—स्त्री० चीरफाड़ द्वारा

अस्थि—स्त्री० हड्डी ।
अस्पताल—पु० दवाखाना ।
अस्पृश्य—नहीं छूने योग्य ।
अस्फुट—बेखिला, अस्पष्ट ।
अस्मिता—स्त्री० अहंकार, मोह ।
अस्र—पु० कोना, जल, आँसू, केसर, रुधिर ।
अस्वस्थ—बीमार, अनमना ।
अस्वीकार—पु० इनकार ।
अस्वीकृत—नामंजूर ।
अहं, अहंकार—पु० अभिमान ।
अह—खेदसूचक शब्द । पु० दिन, विष्णु, सूर्य ।
अहदी—पु० आलसी ।
अहन्—पु० दिन ।
अहमक—बेवकूफ, मूर्ख ।
अहम्मति—स्त्री० अहंकार ।
अहर्निश—रात दिन, सदा ।
अहर्मुख-पु० प्रातःकाल ।
अहवाल—पु० दशा, समाचार ।
अहसान-पु० उपकार, कृपा, कृतज्ञता
अहह—आश्चर्य आदि सूचक शब्द ।
अहा—आह्लादसूचक शब्द ।
अहाता—पु० हाता, घेरा । [देना ।
अहिंसा—स्त्री० किसीको दुख न
अहिंस्र—अहिंसक । [सूर्य ।
अहि—पु० साँप, राहु, दुष्ट, पृथ्वी,
अहित—पु० बुराई, शत्रु । [का फेन ।
अहिफेन—पु० अफीम, साँप के मुँह
अहिबेल—स्त्री० पान ।
अहिवात—पु० सोहाग ।
अहिवाती—स्त्री० सधवा ।
अहीर—पु० ग्वाला ।
अहीश—पु० शेषनाग ।
अहेतु, अहेतुक—बेवजह ।
अहेर—पु० शिकार ।
अहेरी—पु० शिकारी ।
अहो—करुणा, खेद, हर्ष, विस्मय आदि सूचक शब्द ।
अहोरात्र—पु० दिनरात ।

आ

आँक—एक अक्षर । पु० अंक, चिह्न, अदद, अक्षर, अंश, लकीर, गोद ।
आँकड़ा—पु० अंक, पेंच । [करना ।
आँकना—चिह्न करना, अन्दाज
आँख—स्त्री० नेत्र, नजर, परख, पहचान, विवेक, कृपादृष्टि, संतान, आँख के आकार का चिह्न या छेद । मु०—आँख आना या उठना = आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना । आँख का तारा = बहुत प्यारा । आँख खुलना = नींद टूटना, ज्ञान होना । आँख चार होना =

देखादेखी होना। आँख चुराना = सामने न होना। आँख दिखाना = कोप जनाना। आँख नीची होना = लज्जित होना। आँखों पर परदा पड़ना = भ्रम होना। आँख फेरना = प्रतिकूल होना। आँख मूँद कर = विना विचारे। आँख बचाना = कतराना। आँखें बिछाना = प्रेम से स्वागत करना। आँखों में खून उतरना = क्रोध से आँखें लाल करना। आँख में चर्बी छाना = मदांध होना। आँखों में धूल डालना = सरासर धोखा देना। आँखों में समाना = हृदय में बसना। आँख रखना = चौकसी करना। आँख लगना या लड़ना = प्रीति होना। आँख लाल करना = क्रोध करना। आँख सेंकना = देखने का सुख उठाना।

आँखड़ी—स्त्री० आँख। [एक खेल।

आँखमिचौनी—स्त्री० लड़कों का

आंगिक—अङ्ग का। पु० चित्त के भाव को प्रगट करनेवाली चेष्टा।

अंगुरी—स्त्री० उँगली।

आँच—स्त्री० गरमी, लौ, आग, तेज, आघात, हानि, संकट, प्रेम, कामताप।

आँचल—पु० साड़ी का वह भाग जो छाती पर रहता है।

आँजना—अंजन लगाना। [हनुमान।

आंजनेय—पु० अंजना के पुत्र,

आँट—स्त्री० तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान, दाव, बैर, गिरह, गट्ठा।

आँट साँट—स्त्री० साजिश, मेलजोल।

आँत—स्त्री० अँतड़ी। मु० आँत कुलकुलाना या सूखना-भूख से विकल होना।

आंदोलन—पु० हलचल, हिलना।

आँधी—स्त्री० अंधड़।

आँव—पु० सफेद, चिकना, लसदार मल जो अन्न न पचने पर बनता है।

आँवा—पु० कुम्हार की भट्ठी।

आंशिक—अंश संबंधी।

आँसू—पु० आँख का जल। मु० आँसू पीकर रह जाना = भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पोंछना = ढाढ़स देना। [उपसर्ग।

आ—एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अतिक्रमण के अर्थों में होता है। एक

आइंदा—आनेवाला, आगे, भविष्य में, भविष्य काल।

आईन—पु० नियम, कानून। [वाला।

आईनासाज—पु० आईना बनाने

आईनी—कानूनी।

आकंपन—पु० थरथराहट।

आक—पु० अकवन, मदार।

आकबत—स्त्री० मरने के पीछे की अवस्था, परलोक।

आकर—पु० खान, खजाना, भेद,

आकर्ण—कान तक। [अभ्यास।
आकर्ष—पु० खिँचाव, चौपड़, इंद्रिय, कसौटी, चुंबक, धनुष चलाने का
आकर्षक—खींचनेवाला।
आकर्षण—खिँचाव।
आकलन—पु० ग्रहण, संग्रह, अनुष्ठान, अनुसंधान, गिनना।
आकस्मिक—जो अचानक हो।
आकांक्षा—स्त्री० इच्छा, अपेक्षा, अनुसंधान।
आकांक्षी—इच्छुक। [चेष्टा, बुलावा।
आकार—पु० सूरत, बनावट, चिह्न
आकाश—पु० आसमान, अबरक। मु० आकाश चूमना = ऊँचा होना।
आकाश-कुसुम—पु० अनहोनी बात।
आकाशगंगा—स्त्री० छोटे छोटे तारों की एक लम्बी पंक्ति जो आकाश में नदी सी मालूम पड़ती है, मंदाकिनी।
आकाशचारी—आकाश में चलने वाला। पु० ग्रह, नक्षत्र, वायु, पक्षी, देवता।
आकाशदीप—पु० वह दीप जो एक ऊँचे बाँस के ऊपर जलाया जाता है।
आकाशपुष्प—पु० अनहोनी बात।
आकाशबेल—स्त्री० अमरलता।
आकाशभाषित—पु० नाटक में वक्ता का आकाश की ओर देख कर बोलना।
आकाशलोचन—पु० वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति देखी जाती है।
आकाशवाणी—स्त्री० वह शब्द जो आकाश से देवता लोग बोलें।
आकाशवृत्ति—स्त्री० अनिश्चित जीविका।
आकाशीय—आकाश संबंधी।
आकिंचन—पु० दरिद्रता।
आकीर्ण—व्याप्त, पूर्ण।
आकुंचन—पु० सिकुड़ना।
आकुंठन—पु० गुठला होना, लज्जा।
आकुल—व्यग्र, विह्वल, व्याप्त।
आकृति—स्त्री० बनावट, मूर्ति, मुख, मुखका भाव।
आकृष्ट—खींचा हुआ।
आक्रंदन—पु० रोना। [घेरना।
आक्रमण—पु० चढ़ाई, हमला, आक्षेप,
आक्रांत—जिसपर हमला हो, घिरा हुआ, वशीभूत, व्याप्त।
आक्रीड़न—पु० शिकार।
आक्रोश—पु० कोसना, शाप देना।
आक्लांत—खिन्न।
आक्षिप्त—फेंका हुआ, दूषित, निंदित।
आक्षेप—पु० फेंकना, दोष लगाना, ताना, ध्वनि।
आखंड—संपूर्ण।
आखर—पु० अक्षर।
आखिर—अंतिम, अंत में। पु० अंत।
आखिरकार—अंत में।
आखेट—पु० शिकार।
आख्या—स्त्री० नाम, यश, व्याख्या।
आख्यात—प्रसिद्ध, कहा हुआ।

आख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि, कथन ।
आख्यान—पु० वर्णन, कहानी ।
आख्यायिका—स्त्री० कथा, कहानी ।
आगंतुक—आया हुआ । पु० अतिथि ।
आग—स्त्री० अग्नि, जलन, कामाग्नि, प्रेम, डाह । मु० आग का पुतला = महाक्रोधी । आग बबूला = क्रोधित । पानी में आग लगाना = असम्भव बात कहना या करना ।
आगत—आया हुआ ।
आगम—पु० आगमन, भविष्यकाल, होनहार, समागम, आमदनी, उत्पत्ति, शब्दप्रमाण, वेद, शास्त्र, नीति ।
आगमन—पु० आना, प्राप्ति ।
आगमी—पु० आगम विचारनेवाला, ज्योतिषी ।
आगर—पु० खान, समूह, कोष, चतुर ।
आगा—पु० आगे का भाग, भविष्य, सरदार, काबुली । [परिणाम ।
आगापीछा—पु० हिचक, दुविधा,
आगामी—आनेवाला ।
आगार—पु० घर, स्थान, खजाना ।
आगाह—वाकिफ । पु० होनहार ।
आगाही—स्त्री० जानकारी ।
आग्नेय—अग्निसंबंधी, अग्नि से उत्पन्न । पु० सोना, लहू, प्रतिपदा, ज्वालामुखी पर्वत, बारूद, ब्राह्मण, अग्निकोण, रक्त, पाचक ।
आग्रह—पु० हठ, जोर ।
आग्रहायण—पु० अगहन, मृगशिरा नक्षत्र ।
आघात—पु० धक्का, चोट ।
आघूर्णित—चकराया हुआ ।
आघ्राण—पु० सूँघना, बास, अघाना ।
आघ्रात—सूँघा हुआ ।
आचमन—पु० जल पीना । [चम्मच ।
आचमनी—स्त्री० आचमन करने का
आचरण—पु० अनुष्ठान, व्यवहार, चालचलन, आचार, रथ, चिह्न ।
आचरित—किया हुआ । [शुद्धि ।
आचार—पु० व्यवहार, चरित्र, शील,
आचारी—आचारवान् ।
आचार्य्य—पु० गुरु, अध्यापक, पुरोहित ।
आचार्य्या—स्त्री० स्त्री आचार्य्य ।
आचार्य्याणी—स्त्री० आचार्य की पत्नी ।
आच्छन्न—ढका हुआ, छिपा हुआ ।
आच्छादक—पु० ढाँकनेवाला ।
आच्छादन—पु० ढकना, वस्त्र ।
आछत—होते हुए, सिवाय ।
आजकल—इन दिनों ।
आजन्म—जीवन भर ।
आजमाइश—स्त्री० परीक्षा ।
आजमाना—परीक्षा करना ।
आजमूदा—परीक्षित ।
आजा—पु० पितामह, दादा ।
आजाद—मुक्त, बेफिक्र, स्वतंत्र, निर्भय ।
आजादी—स्त्री० स्वतन्त्रता, छुटकारा ।
आजानु—घुटने तक ।

आजार—पु० बीमारी।
आजिज—हैरान, दीन।
आजीवन—जीवन भर।
आजीविका—स्त्री० वृत्ति, रोजी।
आज्ञा—स्त्री० हुक्म, अनुमति।
आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती—पु० आज्ञा माननेवाला, सेवक।
आज्ञापक—आज्ञा देनेवाला, प्रभु।
आज्ञापत्र—पु० हुक्मनामा।
आज्ञापन—पु० जताना।
आटा—पु० अन्न का चूर्ण। मु० आटे दाल का भाव मालूम होना = संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल की फिक्र = जीविका की चिन्ता।
आटोप—पु० आच्छादन, आडंबर।
आठ—एक संख्या। मु० आठ आठ आँसू रोना = बहुत रोना।
आडंबर—पु० गंभीर शब्द, ऊपरी बनावट, तड़क भड़क, ढोंग, तंबू।
आड़—स्त्री० ओट, परदा, शरण, रोक, टेक, स्त्री के मस्तक का टीका।
आढ़—स्त्री० ओट।
आढ़त—स्त्री० किसी व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय, वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो, आढ़त का माल बेचने का मेहनताना
आढ़तिया—पु० दे० "अढ़तिया"।
आढ्य—सम्पन्न, युक्त।
आणक—पु० आना।
आतंक—पु० रोब, दबदबा, भय, रोग।
आततायी—पु० आग लगाने वाला, विष देनेवाला, बधोद्यत, शस्त्रधारी, जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला।
आतप—पु० धूप, गरमी।
आतपत्र—पु० छाता।
आतपी—पु० सूर्य, धूप का।
आतश—स्त्री० आग।
आतशक—पु० उपदंश, गर्मी।
आतशबाजी—स्त्री० अग्निक्रीड़ा, बारूद का खेल।
आतिथेय—पु० अतिथिसेवक, अतिथि-सेवा की सामग्री।
आतिथ्य—पु० मेहमानदारी।
आतिश—स्त्री० आग।
आतुर—व्याकुल, अधीर, उत्सुक, दुःखी, रोगी, शीघ्र।
आतुरी—स्त्री० व्याकुलता, शीघ्रता।
आत्म—अपना।
आत्मक—मय, युक्त।
आत्मघात—पु० आत्महत्या।
आत्मज—पु० पुत्र, कामदेव।
आत्मज्ञ—अपने को जाननेवाला।
आत्मज्ञान—पु० आत्मा और परमात्मा का ज्ञान।
आत्मत्याग—पु० स्वार्थत्याग।
आत्मनिवेदन—पु० आत्मसमर्पण।

आत्मनीय—पु० पुत्र, साला, विदूषक। [बड़ाई।
आत्मप्रशंसा-स्त्री० अपने मुँह अपनी
आत्मबोध —पु० आत्म ज्ञान।
आत्मभू—अपने शरीर से या आप ही आप उत्पन्न। पु० पुत्र, कामदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। [कामदेव।
आत्मयोनि-स्त्री० ब्रह्मा, विष्णु, महेश,
आत्मरक्षा—स्त्री० अपनी रक्षा।
आत्मरति—स्त्री० ब्रह्मज्ञान।
आत्मविद्या—स्त्री० ब्रह्मविद्या।
आत्मविस्मृति—स्त्री० अपने को भूल जाना।
आत्मश्लाघा - स्त्री० आत्मप्रशंसा।
आत्मसंभव—पु० पुत्र।
आत्मसंयम—पु० मन को रोकना।
आत्मसात्—अपने अधीन।
आत्महत्या—स्त्री० अपने को मार डालना, आत्मघात। [धर्म।
आत्मा-स्त्री० जीव, रुह, मन, चित्त, हृदय, देह, सूर्य, अग्नि, वायु, स्वभाव,
आत्मानंद—पु० आत्मा में लीन होने का सुख, आत्मज्ञान। [का खयाल।
आत्माभिमान—पु० अपनी प्रतिष्ठा
आत्माराम—पु० आत्मज्ञान से तृप्त योगी, जीव, ब्रह्म, तोता, सुग्गा, (प्यार का शब्द)। [करनेवाला।
आत्मावलंबी —अपना सब काम खुद
आत्मिक—अपना, आत्मसंबंधी।

आत्मीय—अपना, रिश्तेदार।
आत्मोद्धार-पु० मोक्ष, अपना उद्धार।
आत्मोद्भव—पु० पुत्र।
आदत—स्त्री० स्वभाव, अभ्यास।
आदम—पु० इबरानी और अरबी मतों के मुताबिक मनुष्यों का आदि प्रजापति। [मनुष्य।
आदमजाद—पु० आदम की संतान,
आदमी-आदम की संतान, मनुष्य। सेवक। [नियत।
आदमीयत—स्त्री० मनुष्यत्व, इंसा-
आदर--पु० सम्मान।
आदर्श - पु० नमूना, दर्पण, व्याख्या।
आदान-प्रदान--पु० लेना-देना।
आदाब—पु० प्रणाम, नियम, लिहाज।
आदि—पहला, बिल्कुल, वगैरह। पु० आरंभ, परमेश्वर।
आदिक--आदि, वगैरह।
आदित्य-पु० अदिति के पुत्र, देवता, सूर्य, इन्द्र, वामन, वसु, विश्वेदेवा।
आदित्यवार--पु० रविवार।
आदिपुरुष—पु० परमेश्वर।
आदिम--पहला।
आदी—अभ्यस्त। स्त्री० अदरक।
आदृत--सम्मानित।
आदेय--लेने योग्य।
आदेश—पु० आज्ञा, उपदेश, प्रणाम, अक्षर-परिवर्तन।
आद्यंत—आदि से अन्त तक।

आद्य--पहला।
आद्या—स्त्री० दुर्गा।
आद्योपान्त-आदिसे अन्ततक। [नींव।
आधार--पु० अवलंब, थाला, पात्र,
आधि-स्त्री० मानसिक व्यथा, बंधक।
आधिक्य—पु० अधिकता।
आधिदैविक देवता, भूत आदि द्वारा होने वाला (दुःख)।
आधिपत्य—पु० प्रभुत्व।
आधिभौतिक— व्याघ्र-सर्पादि जीवों द्वारा प्राप्त (दुःख)।
आधीन—अधीन।
आधुनिक--आज कल का।
आधेय किसी सहारे पर रखी हुई चीज, रखने योग्य, गिरों रखने योग्य।
आध्यात्मिक—आत्मासंबंधी।
आनंद—पु० हर्ष, सुख।
आनंदबधाई—स्त्री० मंगल-उत्सव।
आनंदबन—पु० काशी।
आनंदी—प्रसन्न। [शीघ्र ही।
आन—स्त्री० मर्य्यादा, शपथ, दुहाई, ढंग, अकड़, अदब, प्रग, दूसरा, क्षग। मु० आन की आन में=
आनक—पु० डंका, गरजता बादल।
आनन—पु० मुख, चेहरा।
आनन फानन—फौरन।
आन बान—स्त्री० ठाटबाट, अदा।
आनरेरी—अवैतनिक।
आनाकानी—स्त्री० हीलाहवाला, कानाफूसी।
आनुमानिक—खयाली।
आनुषंगिक—प्रासंगिक, गौण।
आन्वीक्षिकी—स्त्री० आत्मविद्या, तर्कविद्या, न्याय। [पु० जल।
आप—तुम और वे के स्थान में आदरार्थक प्रयोग, ईश्वर, स्वयं।
आपगा—स्त्री० नदी।
आपत्काल—पु० विपत्ति, कुसमय।
आपत्ति—स्त्री० दुःख, विघ्न, विपत्ति, कष्ट का समय, जीविका-कष्ट, उज्र, दोषारोपण।
आपद्—स्त्री० विपत्ति, कष्ट।
आपदा—स्त्री० दुःख, विपत्ति।
आपद्धर्म—पु० आपत्काल का धर्म।
आपन्न—आपद्ग्रस्त, प्राप्त।
आपरूप—मूर्तिमान, साक्षात् आप।
आपस—स्त्री० संबंध, परस्पर।
आपा—पु० अपना अस्तित्व, अहंकार, सुधबुध। स्त्री० बड़ी बहन।
आपात—पु० पतन, अचानक कोई घटना होना, आरंभ, अंत।
आपाततः—अकस्मात्, अन्त को।
आपादमस्तक—सिर से पैर तक।
आपीड़—पु० शिरोभूषण।
आपुस—पु० आपस, परस्पर।
आपेक्षिक—अपेक्षा रखनेवाला, निर्भर रहनेवाला।
आप्त—...कुशल, ...प्रामाणिक।

पु० ऋषि, शब्दप्रमाण, भाग की लब्धि।

आप्तकाम—पूर्णकाम।

आप्लावन—पु० डुबाना।

आफत—स्त्री० आपत्ति, विपत्ति, कष्ट, मुसीबत का दिन। मु० आफत का परकाला = किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला, घोर उद्योगी, आकाश-पाताल एक करनेवाला।

आफताब—पु० सूर्य्य। [स्त्री० पानी।

आफियत—स्त्री० कुशल-क्षेम।

आफिस—पु० कार्यालय।

आब—पु० चमक, कांति, रौनक।

आबकारी—स्त्री० शराबखाना, मादक वस्तु संबंधी सरकारी महकमा।

आबदस्त—पु० मलत्याग के बाद गुदा धोना।

आबदाना—पु० दाना-पानी।

आबदार—चमकीला।

आबद्ध—बँधा हुआ।

आबपाशी—स्त्री० सिँचाई।

आबरू—स्त्री० इज्जत। [गरमी।

आबहवा—स्त्री० जलवायु, सरदी-

आबाद—बसा हुआ, प्रसन्न, उपजाऊ।

आबादी—स्त्री० बस्ती, जनसंख्या, उपजाऊ जमीन।

आभरण—पु० आभूषण, पालन।

आभा—स्त्री० चमक, झलक।

आभार—पु० बोझ, एहसान, उपकार।

आभारी—उपकार माननेवाला, उपकृत।

आभास—पु० झलक, पता, मिथ्या ज्ञान।

आभीर—पु० ग्वाला।

आभूषण—पु० गहना, जेवर।

आभ्यंतर—भीतरी।

आमंत्रण—पु० बुलावा, न्योता।

आमंत्रित—निमंत्रित।

आम—साधारण, जनता, प्रसिद्ध। पु० एक फल।

आमद—स्त्री० आगमन, आमदनी।

आमदरफ्त—पु० आनाजाना।

आमदनी—स्त्री० आय, आयात।

आमय—पु० रोग, बीमारी।

आमरण—मरणकाल तक।

आमर्दन—पु० जोर से मलना।

आमर्श—पु० परामर्श, सलाह।

आमर्ष—पु० क्रोध, असहनशीलता।

आमलक, आमला—पु० आँवला।

आमात्य—पु० दे० "अमात्य"।

आमादा—उद्यत, तत्पर। [रहती हैं।

आमाशय—पु० पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खायी हुई चीजें

आमिल—खट्टा। पु० काम करनेवाला, कर्त्तव्य-परायण, अमला, हाकिम, ओझा, सिद्ध। [लोभ।

आमिष—पु० मांस, भोग्य वस्तु,

आमुख—पु० नाटक की प्रस्तावना।

आमूल—जड़ तक। [दिल-बहलाव।
आमोद—पु० तीव्र गंध, आनंद,
आमोद-प्रमोद—पु० आनंद-मंगल, भोग-विलास।
आम्र—पु० आम।
आय—स्त्री० आमदनी।
आयत—लंबा-चौड़ा, विशाल। स्त्री० इंजील या कुरान का वाक्य।
आयतन—पु० घर, स्थान।
आयत्त—अधीन।
आयत्ति—स्त्री० अधीनता।
आयसु—स्त्री० आज्ञा। [माल।
आयात—पु० देश में बाहर से आया
आयास—पु० परिश्रम।
आयु—स्त्री० उम्र।
आयुध—पु० हथियार।
आयुर्वेद—पु० चिकित्सा-शास्त्र।
आयुष्कर—आयुवर्द्धक।
आयुष्काम—आयुप्रार्थी।
आयुष्मान्—चिरंजीवी।
आयुष्य—आयुवर्द्धक। पु० आयु।
आयोजन—पु० प्रबंध, उद्योग, नियुक्ति, सामग्री।
आरंभ—पु० शुरू, आदि, उत्पत्ति।
आरजू—स्त्री० विनय, इच्छा।
आरण्य, आरण्यक-जंगली, बन का।
आरत—दे० "आर्त"।
आरती—स्त्री० देवता को दीपक आदि दिखाना।
आरपार—पु० एक किनारे से दूसरे किनारे तक।
आरब्ध—आरंभ किया हुआ।
आरव-पु० शब्द, आहट।
आरसी—स्त्री० आईना, शीशा।
आराजी—स्त्री० जमीन, खेत।
आराति—पु० शत्रु।
आराधक—उपासक।
आराधन—पु० पूजा, उपासना।
आराधना—पूजना। स्त्री० पूजा।
आराम—पु० उपवन, सुख-चैन, विश्राम, स्वास्थ्य।
आरामतलब—आराम चाहनेवाला, सुकुमार, आलसी।
आरि—स्त्री० हठ, जिद्द। [तत्पर।
आरूढ़—चढ़ा हुआ, सवार, स्थिर,
आरोग्य—स्वस्थ।
आरोप, आरोपण—पु० स्थापित करना, मढ़ना, लगाना। [नितंब।
आरोह—पु० चढ़ाव, आक्रमण, सवारी,
आरोहण—पु० चढ़ना।
आरोही—चढ़ने वाला, सवार।
आर्डर—पु० माँग, शांति, सिलसिला।
आर्डिनेन्स—आज्ञा। पु० अस्थायी कानून।
आर्त—पीड़ित, दुखी, अस्वस्थ।
आर्तनाद—पु० दुःखसूचक शब्द।
आर्त्तव—मौसिमी, सामयिक। पु० स्त्री-रज, स्त्रियों का ऋतु-काल।

आर्थिक—धन संबंधी।
आर्द्र—गीला। [एक जाति।
आर्य—श्रेष्ठ, पूज्य। पु० श्रेष्ठ पुरुष,
आर्य्यपुत्र—पु० पति के लिये सम्बोधन का शब्द।
आर्य्या—स्त्री० पार्वती, दादी, सास।
आर्य्यावर्त—पु० उत्तरीय भारत।
आर्ष-ऋषि संबंधी, ऋषिकृत, वैदिक।
आर्षप्रयोग-पु० शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियमों के विरुद्ध हो, परन्तु प्राचीन ग्रन्थों में मिले।
आलंब—पु० सहारा, शरण।
आलंबन पु० आश्रय, सहारा, साधन।
आल औलाद—स्त्री० बाल-बच्चा, वंश। [जनसमूह।
आलम—पु० दुनिया, अवस्था,
आलय—पु० घर, स्थान।
आलबाल—पु० थाला।
आलस—सुस्त। पु० सुस्ती।
आलसी—सुस्त, काहिल।
आला—सबसे बढिया, गीला। पु० ताखा, औजार।
आलाइश—स्त्री० गंदी चीज।
आलान—पु० बंधन, जंजीर।
आलाप—पु० बातचीत. तान।
आलापक, आलापी—बात करने वाला, गानेवाला।
आलिंगन—पु० गले लगाना।
आलि—स्त्री० सखी, भ्रमरी, पंक्ति।

आलिम—विद्वान्।
आली—स्त्री० सखी।
आलीशान—विशाल।
आलेख—पु० लिखावट।
आलेख्य—लिखने योग्य। पु० चित्र।
आलोक—पु० रोशनी, दर्शन।
आलोचक—देखनेवाला, आलोचना करनेवाला।
आलोचन—पु० गुणदोष-विचार।
आलोचना-स्त्री० दे० "आलोचन"।
आलोड़न—पु० मंथन, विचार।
आलोल - चंचल।
आवभगत—स्त्री० आदर-सत्कार।
आवरण—पु० आच्छादन, ढकना, परदा, ढाल, घेरा।
आवरणपत्र—पु० पुस्तक की जिल्द पर का कागज। [एक रत्न, चिंता।
आवर्त्त—मुड़ा हुआ। पु० पानी का भँवर, फेर, चक्र, न बरसनेवाला बादल,
आवर्त्तन—पु० घुमाव, मंथन।
आवलि, आवली—स्त्री० पंक्ति, श्रेणी।
आवश्यक—जरूरी।
आवश्यकता-स्त्री० जरूरत। [मरण।
आवागमन—पु० आना जाना, जन्म-
आवाज—स्त्री० शब्द, स्वर।
आवारगी—स्त्री० आवारापन।
आवारा—व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला, निकम्मा, उठल्लू, लुच्चा।

आवारागर्द—आवारा ।
आवास—पु० घर, निवासस्थान ।
आवाहन—पु० मंत्र द्वारा देवता को बुलाना ।
आविद्ध—छेदा हुआ । [प्रकाश ।
आविर्भाव—पु० उत्पत्ति, संचार,
आविर्भूत—उत्पन्न, प्रकटित ।
आविष्कर्ता—आविष्कार करनेवाला ।
आविष्कार—पु० ऐसी चीज तैयार करना जिसे पहले किसी ने तैयार न किया हो, पहले पहल पता लगाना, प्रकाश, ईजाद ।
आविष्कारक—आविष्कर्त्ता ।
आविष्कृत—प्रगटित ।
आवृत—ढका हुआ ।
आवृत्ति—स्त्री० दोहराना । [वृत्ति ।
आवेग—पु० जोश, चित्त की प्रबल
आवेदन—पु० निवेदन, प्रार्थना ।
आवेदनपत्र—पु० अरजी । [रोग ।
आवेश—पु० संचार, व्याप्ति, प्रवेश, उदय, जोश, भूतप्रेत की बाधा, मृगी
आवेष्ठन—पु० छिपाना, छिपाने की चीज । [की भावना ।
आशंका—स्त्री० डर, संदेह, अनिष्ट
आशना—प्रेमी ।
आशनाई—स्त्री० प्रीति, प्रेम ।
आशय—पु० मतलब, इच्छा, उद्देश्य ।
आशा—स्त्री० उमीद, दिशा ।
आशातीत—आशा से अधिक ।

आशिक—पु० आसक्त ।
आशिष—स्त्री० आशीर्वाद, दुआ ।
आशी—भक्षक ।
आशीर्वाद—पु० आशिष ।
आशु—शीघ्र, जल्द । [वाला ।
आशुकवि-पु० तत्क्षण कविता करने-
आशुतोष—शीघ्र प्रसन्न होनेवाला । पु० शिव ।
आश्चर्य—पु० अचंभा, विस्मय ।
आश्चर्यित—चकित ।
आश्रय—पु० निवासस्थान, जीवन की चार अवस्थाएँ-ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास । [शरण ।
आश्रय—पु० सहारा, घर, आधार,
आश्रयी—आश्रय लेनेवाला ।
आश्रित—टिका हुआ, अधीन, सेवक ।
आश्लेषण—पु० मिलावट ।
आश्वासन—पु० दिलासा, तसल्ली ।
आसंग—पु० साथ, संबंध आसक्ति ।
आसक्त—अनुरक्त, मोहित ।
आसक्ति—स्त्री० अनुरक्ति, प्रेम ।
आस्ते—धीरे धीरे ।
आसत्ति—स्त्री० निकटता ।
आसन—पु० बैठने की विधि, बैठने की चीज, डेरा, चूतड़ । मु० आसन डोलना = मन का चंचल होना ।
आसन्न—समीपस्थ, प्राप्त ।
आसपास—इधर उधर ।
आसमान-पु० आकाश, स्वर्ग । मु०

आसमान के तारे तोड़ना = असंभव कार्य करना । आसमान टूट पड़ना = अचानक विपत्ति आना । आसमान पर उड़ना = ऊँचे ऊँचे संकल्प बाँधना ।
आसमानी—आकाश संबंधी, आकाश के रंग का, दैवी । स्त्री० ताड़ी ।
आसमुद्र—समुद्र तक ।
आसरा–पु० सहारा, अवलंब, भरोसा, शरण, इंतजार, आशा ।
आसव—पु० अर्क, मदिरा । [डंडा ।
आसा—स्त्री० आशा । पु० चाँदी का
आसाबरदार--पु० चोबदार ।
आसान—सहज ।
आसानी--स्त्री० सरलता ।
आसार–पु० चिह्न, लक्षण ।
आसीन--बैठा हुआ ।
आसुरी—राक्षसी ।
आसुरी चिकित्सा–स्त्री० चीरफाड़ ।
आसूदा—संतुष्ट, भरा पूरा ।
आस्तिक—वेद, ईश्वर और परलोक आदि पर विश्वास रखनेवाला । [वाला ।
आस्तीन–स्त्री० बाँही । मु० आस्तीन का साँप = मित्र होकर शत्रुता करने-
आस्था–स्त्री० श्रद्धा, सभा, आलंबन ।
आस्पद—पु० स्थान, कार्य, पद, वंश ।
आस्वाद–पु० स्वाद, जायका ।
आस्वादन–पु० चखना ।
आस्वादु–स्वादिष्ट ।
आह–खेद-सूचक अव्यय । स्त्री० कराहना । पु० साहस बल ।
आहट—स्त्री० आने का शब्द, पता ।
आहत–घायल, गुण्य ।
आहरण--पु० छीनना, लेना ।
आहा आश्चर्य और हर्षसूचक अव्यय ।
आहार–पु० भोजन ।
आहार्य्य–ग्रहण किया हुआ, बनावटी, खाने योग्य ।
आहि--है ।
आहिस्ता—धीरे धीरे ।
आहुति--स्त्री० हवन, हव्य ।
आहूत—निमंत्रित ।
आह्निक--रोजाना, दैनिक ।
आह्लाद—पु० आनंद, खुशी ।
आह्वान--पु० बुलावा, यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना ।

इ

इ--एक अक्षर । भेद, अनुकंपा, खेद, भावना, कामदेव, गणेश ।
इंगला—स्त्री० एक नाड़ी ।
इंगलिस्तान--पु० इंगलैंड ।
इंगित—हिलता हुआ, इशारा किया हुआ । पु० इशारा, चेष्टा ।

इँचना—पु० खिंचना। [वाला यंत्र।
इंजन—पु० भाप या बिजली से चलने
इंजीनियर—पु० यंत्र की विद्या जानने वाला। [पुस्तक।
इंजील—स्त्री० ईसाइयों की धर्म-
इंतकाल—पु० मृत्यु।
इंतजाम—पु० प्रबंध।
इंतजारी—पु० प्रतीक्षा
इंदिरा—स्त्री० लक्ष्मी।
इंदीवर—पु० कमल, नील-कमल।
इंदु—पु० चंद्रमा, कपूर।
इंद्र—ऐश्वर्य्यवान्, श्रेष्ठ। पु० देवताओं का राजा, सूर्य, बिजली, मालिक, प्राण।
इंद्रगोप—पु० बीरबहूटी कीड़ा।
इंद्रजाल—पु० जादूगरी।
इंद्रजाली—प० जादूगर। [वाला।
इंद्रजित्, इंद्रजीत—इंद्र को जीतने
इंद्रधनुष-पु० सात रंगों का बना अर्द्धवृत्त जो वर्षाकाल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।
इंद्रलोक—पु० स्वर्ग।
इंद्रवधू—स्त्री० बीरबहूटी।
इंद्राणी—स्त्री० इंद्र की पत्नी, बड़ी इलायची, दुर्गा।
इंद्रिय—स्त्री० वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। शरीर के दस अवयव जिनके द्वारा विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय और वाणी, हाथ, पैर, गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। [ज्ञानगम्य।
इंद्रियगोचर—इंन्द्रियों का विषय,
इंद्रियजित्—जिसने इंन्द्रियों को जीता हो। [का दमन।
इंद्रियनिग्रह—पु० इन्द्रियों के वेग
इंसाफ—पु० न्याय, निर्णय।
इंस्पेक्टर—पु० निरीक्षक।
इंस्योरेन्स—पु० बीमा।
इक—एक।
इकंग—दे० "एकांग"।
इकंत—"एकांत"।
इकतारा—स्त्री० दे० "एकतारा"
इकत्र—दे० "एकत्र"।
इकबाल—पु० दे० "एकबाल"।
इकरार—पु० वादा, प्रतिज्ञा।
इकलौता—पु० अपने मा-बाप का अकेला लड़का।
इकौंज—स्त्री० काकवन्ध्या।
इक्का—अकेला, बेजोड़। पु० ताश का एक पत्ता, एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।
इक्का-दुक्का—अकेला दूकेला।
इक्षु—पु० ईख, गन्ना। [प्रभुत्व।
इख्तियार—पु० अधिकार, सामर्थ्य,
इच्छा—स्त्री० चाह।
इच्छित—चाहा हुआ।
इच्छुक—चाहनेवाला।

इजमाल--पु० कुल, साझा।
इजमाली--साझे का। [अमल।
इजराय--पु० जारी करना, व्यवहार,
इजलास--पु० बैठक, कचहरी।
इजहार--पु० बयान, गवाही।
इजाजत—स्त्री० आज्ञा, मंजूरी।
इजाफा--पु० बढ़ती, बचत। [डोरी।
इजारबंद--पु० पायजामा बाँधने की
इजारा—पु० ठेका, अधिकार।
इज्जत--स्त्री० मान, प्रतिष्ठा।
इज्जतदार--प्रतिष्ठित।
इठलाना--इतराना।
इत—इधर, यहाँ।
इतमीनान--पु० विश्वास, संतोष।
इतर-दूसरा, नीच, साधारण, अतर।
इतराज--पु० आपत्ति, उज्र।
इतराना--इठलाना।
इतरेतर--परस्पर।
इतवार—पु० रविवार।
इतस्ततः—इधर उधर। [समाप्ति।
इति—समाप्तिसूचक अव्यय। स्त्री०
इतिवृत्त—पु० पुरानी कथा।
इतिहास—पु० पूर्व वृत्तान्त।
इतेक—इतना।
इतो—इतना।
इत्तफाक—पु० मौका, संयोग, मेल।
इत्तला—स्त्री० सूचना, खबर।
इत्यादि, इत्यादिक—इसी प्रकार
और, वगैरह।

इत्र—पु० अतर।
इदानींतन—आधुनिक।
इधर—इस तरफ। मु० इधर उधर
करना = टालमटूल करना।
इनकार—पु० नामंजूर।
इनसान—पु० मनुष्य। [भलमनसी।
इनसानियत—स्त्री० आदमीयत,
इनाम—पु० पुरस्कार।
इनायत—स्त्री० कृपा, एहसान।
इनेगिने—थोड़े से।
इप्सु—ईप्सित, इच्छुक।
इफरात—स्त्री० अधिकता, प्रचुरता।
इबरानी—यहूदी। स्त्री० पैलिस्तान
देशकी प्राचीन भाषा।
इबादत—स्त्री० पूजा।
इमाम--पु० अगुआ, मुसलमानों में
धार्मिक कृत्य करने वाला व्यक्ति।
इमामबाड़ा—पु० ताजिया रखने और
दफनाने की जगह।
इमारत—स्त्री० भवन।
इमि—इस प्रकार।
इम्तहान—पु० परीक्षा।
इयत्ता--स्त्री० सीमा, हद।
इरादा—पु० विचार, संकल्प।
इर्दगिर्द—आस पास।
इलजाम—पु० दोष, अभियोग।
इलाका--पु० संबंध, हलका।
इलाज—पु० दवा, चिकित्सा, उपाय।
इलाही--पु० ईश्वर, ईश्वरीय।

इल्जाम—पु० दोषारोपण।
इल्म—पु० ज्ञान, विद्या।
इल्लत—स्त्री० रोग, बखेड़ा, दोष।
इव—समान, तरह।
इशरत—पु० सुख, भोग।
इशारा—पु० संकेत, गुप्तप्रेरणा।
इश्क—पु० प्रेम, चाह।
इश्तहार—पु० विज्ञापन।
इष्ट—अभिलषित, चाहा हुआ, पूजित। पु० शुभकर्म, इष्टदेव, अधिकार, मित्र।
इष्टदेव—पु० पूज्यदेव।
इस्लाम—पु० मुसलमानी धर्म।
इस्तमरारी—स्थायी।
इस्तिजा—पु० पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय की शुद्धि।
इस्तिरी—स्त्री० कपड़े की तह बैठाने के लिये धोबी आदि का औजार।
इस्तीफा—पु० त्यागपत्र।
इस्तेमाल—पु० प्रयोग, उपयोग।
इस्पात—पु० पक्का लोहा।
इस्पंज—पु० एक सामुद्रिक पदार्थ जो पानी खूब सोखता है।
इह—इस जगह, यह।
इहि—यहाँ।

ई

ई—एक अक्षर। स्त्री० विषाद, अनुकंपा, क्रोध, भावना, प्रत्यक्ष, कामदेव, लक्ष्मी।
ईंचना—खींचना।
ईंट—स्त्री० साँचे में ढला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा। मु० ईंट चुनना = दीवार उठाने के लिये ईंट पर ईंट रखना। ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना = सब लोगों के विरुद्ध अपना अलग कुछ करना।
ईंधन—पु० जलावन। स्त्री० लक्ष्मी।
ईक्षण—पु० दर्शन, आँख, विवेचन।
ईख—स्त्री० गन्ना, ऊख।
ईजाद—स्त्री० आविष्कार।
ईति—स्त्री० बाधा, पीड़ा, खेती को हानि पहुँचानेवाले ये छः उपद्रव—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी लगना, चूहा लगना, पक्षियों की अधिकता, दूसरे राजा की चढ़ाई।
ईथर—पु० एक अति सुक्ष्म पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है।
ईद—स्त्री० मुसलमानों का एक त्यौहार।
ईदृश—इस प्रकार।
ईप्सा—स्त्री० इच्छा।
ईप्सित—चाहा हुआ। [अच्छी नीयत।
ईमान—पु० धर्मविश्वास, धर्म, सत्य,
ईमानदार—अच्छी नीयतवाला, लेन देन में सच्चा।
ईर्षा, ईर्ष्या—स्त्री० डाह।
ईर्ष्यालु—ईर्षा करने वाला। [पार।
ईश—पु० स्वामी, राजा, ईश्वर, शिव,
ईशान—पु० स्वामी, शिव, उत्तर-पूरब कोना।

ईशिता—स्त्री०आठ प्रकार की सिद्धियों में एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।
ईशित्व—पु० दे० "ईशिता"। [शिव।
ईश्वर—पु० स्वामी, समर्थ, भगवान,
ईषत्—थोड़ा।
ईषणा—स्त्री० प्रबल इच्छा।
ईसवी सन्—पु० ईसा मसीह के जन्मकाल से चला हुआ संवत्। [मसीह
ईसा—पु० ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा
ईसाई—ईसा के बताये धर्म को मानने वाला।

उ

उ—एक अक्षर। पु० ब्रह्मा,नर, शेषोक्ति, अनुकंपा, नियोग, प्रश्न, अङ्गीकार।
उँगली—स्त्री० अँगुलि। मु० उँगली उठना = बदनामी होना। उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना = थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष प्राप्ति के लिये उत्साहित होना। पाँचों उँगली घी में होना = सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना। [का कर्म।
उंछवृत्ति—स्त्री० खेत में गिरे दानों को चुन कर जीवन निर्वाह करने
उंछशील—खेत में उपेक्षित अन्न से जीविका चलाने वाला।
उऋण—ऋणमुक्त।
उकटना—दबी बात को उभाड़ना।
उकटापैंची—स्त्री० उलाहना।
उकताना—ऊबना, जल्दी मचाना।
उकसाना—उभाड़ना, ऊपर को उठाना, बढ़ाना।
उकसावा—पु० बढ़ावा।
उकसौंहाँ—उभड़ता हुआ।
उकौना—पु० दोहद।
उक्त—कथित, कहा हुआ।
उक्ति—स्त्री० कथन, अनोखा वाक्य।
उखम—पु० गरमी।
उखमज—पु० दे० "उष्मज"।
उखाड़ना—गड़ी वस्तु को अलग करना। मु० गड़े मुर्दे उखाड़ना = गयी बीती बात को फिर से छेड़ना।
उगाल—पु० थूक।
उगालदान—पु० पीकदान।
उगाहना—वसूल करना। [सूर्य।
उग्र—उत्कट, प्रचंड। पु० महादेव,
उचकाना—उठाना, ऊपर करना।
उचक्का—पु० ठग, बदमाश।
उचटना—उखड़ना, भड़कना।
उचनि—स्त्री० उभाड़।
उचरना—बोलना। [सीनता।
उचाट—पु० मन न लगना, उदा-
उचाटन—दे० "उच्चाटन"।
उचित—ठीक, वाजिब।
उचौहाँ—ऊँचा उठा हुआ।
उच्च—ऊँचा, श्रेष्ठ।
उच्चतम—सबसे ऊंचा।

Bachcha Bihari Tiwari Pre Arts M.S. College Motihari R.N. 703

उच्चाट, उच्चाटन—पु० अनमनापन, किसी के चित्त को कहीं से हटाना, अलग करना। [मूत्र।
उच्चार—पु० कथन, विष्ठा, मल-
उच्चारण—पु० मुँह से शब्द निकालना।
उच्छिन्न—कटा हुआ, नष्ट, उखाड़ा हुआ। [शहद।
उच्छिष्ट—जूठा। पु० जूठी वस्तु,
उच्छृंखल—जो श्रृंखलावद्ध न हो, निरंकुश, उद्दंड। [खंडन, नाश।
उच्छेद, उच्छेदन—पु० उखाड़ पखाड़,
उच्छ्वसित—उच्छ्वासयुक्त, विकसित, जीवित। [परिच्छेद।
उच्छ्वास—पु० ऊपर को खींची हुई साँस, उसास, साँस, प्रकरण,
उछंग—पु० गोद, छाती।
उछलकूद—स्त्री० खेलकूद, हलचल।
उछाल—स्त्री० सहसा ऊपर उठाने की क्रिया, कुदान, वमन। [इच्छा।
उछाह—पु० उत्साह, उमंग, उत्सव,
उछाला—पु० जोश, कै, उलटी।
उछाही—आनंद मनानेवाला।
उजड्ड—उद्दंड, वज्रमूर्ख।
उजबक—उजड्ड, मूर्ख।
उजरत—स्त्री० मजदूरी, किराया।
उजलत—स्त्री० जल्दी।
उजला—सफेद, साफ। [प्रसिद्ध।
उजागर—प्रकाशित, जगमगाता हुआ,
उजाड़—ध्वस्त, निर्जन। पु० गिरी पड़ी जगह, बयाबान।
उजान—पु० नदी का चढ़ाव।
उजाला—प्रकाशवान। पु० प्रकाश।
उजाली—स्त्री० चाँदनी।
उजास—पु० चमक, उजाला।
उजियाला—पु० उजाला।
उजेला—पु० प्रकाश।
उज्र—पु० विरोध, आपत्ति।
उज्ज्वल—प्रकाशमान, निर्मल, सफेद।
उझकना—उचकना, ऊपर उठना, ताकने के लिये ऊँचा होना।
उटज—पु० झोपड़ी।
उठल्लू—आवारा। [खर्च।
उठान—स्त्री० उठना, बाढ़, आरंभ,
उड़ंकू—उड़नेवाला।
उड़—पु० दे० "उड़"।
उड़न—स्त्री० उड़ने की क्रिया।
उड़न खटोला—पु० विमान।
उड़नछू—चंपत, गायब।
उड़न झाँई—स्त्री० चकमा।
उड़ाऊ—उड़नेवाला, खरचीला।
उड़ाका, उड़ाकू—उड़नेवाला।
उड़ान—स्त्री० उड़ने की क्रिया, कलाई, पहुँचा।
उड़ायक—उड़ानेवाला।
उड़िया—उड़ीसा-निवासी।
उडुंबर—पु० गूलर। [मल्लाह, जल।
उडु—स्त्री० नक्षत्र, तारा, पक्षी,

उड़ुप—पु० चंद्रमा, नाव, बड़ा गरुड़, एक नृत्य ।

उड़ुपति—पु० चंद्रमा ।

उड़ूराज—पु० चंद्रमा ।

उड़ेलना—ढालना ।

उड़ौहाँ—उड़नेवाला ।

उड्डयन—पु० उड़ना ।

उड्डीयमान—उड़नेवाला ।

उढ़कना—अड़ना, रुकना, सहारा लेना ।

उढ़रना—किसी स्त्री का परपुरुष के साथ निकल भागना ।

उढ़री—स्त्री० रखेली स्त्री ।

उढ़ारना—दूसरे की स्त्री को ले भागना ।

उत—वहाँ, उधर ।

उतरन—स्त्री० उतरे हुए कपड़े ।

उतराई—स्त्री० ढालू जमीन, नीचे आने की क्रिया, नदी पार होने का महसूल ।

उतराना—पानी पर तैरना, उबलना, प्रकट होना ।

उतला—उतावला ।

उतलाना—जल्दी करना ।

उतान--चित ।

उतार—पु० उतरने की क्रिया, कमी, उतरने योग्य स्थान, समुद्र का भाटा, उतारन, न्योछावर ।

उतारन--स्त्री० उतारा हुआ पुराना वस्त्र, निछावर, निकृष्ट वस्तु ।

उतारा—डेरा डालने का कार्य, पड़ाव, नदी पार करने की क्रिया ।

उतारू--उद्यत, तत्पर ।

उताल—शीघ्र । स्त्री० शीघ्रता ।

उताली—शीघ्रता से । स्त्री० शीघ्रता ।

उतावला—जल्दी मचानेवाला ।

उतावली—स्त्री० शीघ्रता, व्यग्रता ।

उतृण—उऋण ।

उत्कंठा—स्त्री० प्रबल इच्छा ।

उत्कंठित—उत्कंठायुक्त ।

उत्कट—तीव्र, उग्र, मत्त, कठिन, दुस्सह, दुःसाध्य ।

उत्कर्ष—पु० बड़ाई, श्रेष्ठता, समृद्धि ।

उत्कल—पु० उड़ीसा देश ।

उत्कलिका—स्त्री० उत्कंठा, तरंग, फूल की कली ।

उत्कीर्ण—खुदा हुआ ।

उत्कृष्ट—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कोच--पु० घूस, रिशवत

उत्क्रांति--स्त्री० क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति ।

उत्क्रोश—पु० कुररी, टिट्टिभ ।

उत्तंग—ऊँचा ।

उत्तप्त--खूब गर्म, दुखी ।

उत्तम--श्रेष्ठ ।

उत्तमतया—अच्छी तरह ।

उत्तम पुरुष--वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है।

उत्तमर्ण—पु० ऋणदाता ।

उत्तमांग--पु० मस्तक ।
उत्तमोत्तम--अच्छे से अच्छा ।
उत्तर—पिछला, ऊपर का, बढ़कर, बाद। पु० एक दिशा, जवाब, बदला।
उत्तर क्रिया--स्त्री० अंत्येष्टि क्रिया ।
उत्तरदाता--पु० जिम्मेदार ।
उत्तरदायित्व—पु० जवाबदेही ।
उत्तरदायी—जवाबदेह ।
उत्तर पक्ष—पु० सिद्धांत, समाधान ।
उत्तर पद—पु० यौगिक शब्द का अंतिम शब्द ।
उत्तरमीमांसा—स्त्री० वेदांत दर्शन ।
उत्तराखंड—पु० भारतवर्ष का हिमालय के पास का भाग ।
उत्तराधिकार--पु० किसी के मरने के बाद उसके धन आदि का अधिकार, वरासत ।
उत्तराधिकारी--पु० मृत व्यक्ति की संपत्ति का अधिकारी ।
उत्तरा फाल्गुनी--स्त्री० एक नक्षत्र।
उत्तरा भाद्रपद—स्त्री० एक नक्षत्र ।
उत्तरायण--पु० मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर सूर्य की गति, वह छः मास का समय जब सूर्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की तरफ रहता है ।
उत्तरार्द्ध—पु० पिछला आधा ।
उत्तराषाढ़—स्त्री० एक नक्षत्र ।
उत्तरीय—ऊपर का, उत्तर दिशा का । पु० दुपट्टा । [क्रमशः, लगातार ।
उत्तरोत्तर--एक के बाद एक,
उत्तान--चित । [क्षोभ ।
उत्ताप--पु० गर्मी, कष्ट, दुःख,
उत्ताल—उत्कट, महत्, श्रेष्ठ, भयानक ।
उत्तीर्ण—पारंगत, मुक्त ।
उत्तुंग—बहुत ऊँचा ।
उत्तेजक – उभाड़ने, बढ़ाने या उसकाने वाला ।
उत्तेजन--पु० दे० "उत्तेजना" ।
उत्तेजना—स्त्री० प्रेरणा, बढ़ावा, प्रोत्साहन ।
उत्तोलन—पु० तानना, तौलना ।
उत्थान—पु० उन्नति, आरंभ ।
उत्थापन—पु० ऊपर उठाना, जगाना, हिलाना ।
उत्थित--उत्पन्न, उठा हुआ ।
उत्पतन--पु० ऊपर जाना ।
उत्पत्ति--स्त्री० जन्म, सृष्टि, आरंभ ।
उत्पथ--कुमार्ग ।
उत्पन्न—जन्मा हुआ, पैदा ।
उत्पल--पु० कमल ।
उत्पाटन—पु० उखाड़ना ।
उत्पात--पु० उपद्रव, ऊधम ।
उत्पादक--उत्पन्न करनेवाला ।
उत्पादन—पु० उत्पन्न करना ।
उत्पीड़न—पु० सताना ।
उत्प्रेक्षा—स्त्री० आरोप, उपेक्षा ।
उत्फुल्ल—खिला हुआ, उत्तान ।

उत्संग--विरक्त । पु० गोद, बीच, ऊपरी भाग ।
उत्सर्ग—पु० त्याग, दान, समाप्ति ।
उत्सर्जन—पु० त्याग, दान ।
उत्सव—पु० उछाह, मंगल कार्य, त्यौहार, आनंद ।
उत्साह—पु० उमंग, हिम्मत ।
उत्सुक—अत्यंत इच्छुक ।
उत्सुकता—स्त्री० आकुल इच्छा ।
उथल पुथल—स्त्री० उलट पलट ।
उथला—छिछला ।
उदंत—जिसे दाँत न जमे हों ।
उद्—एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लग कर ऊपर, अतिक्रमण, उत्कर्ष, प्राबल्य, प्राधान्य, अभाव, प्रकाश, दोष आदि का बोध कराता है ।
उदक—पु० जल ।
उदक क्रिया—स्त्री० जल-तर्पण ।
उदगरना—निकलना ।
उदथ—पु० सूर्य ।
उदधि—पु० समुद्र, मेघ ।
उदधिसुत—पु० समुद्र से उत्पन्न पदार्थ, चन्द्रमा, शंख, कमल, अमृत ।
उदधिसुता—स्त्री० लक्ष्मी, सीप ।
उदन्वान्—पु० समुद्र ।
उदय-पु० वृद्धि, उद्गम, प्रकट होना । मु० उदय से अस्त तक = पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक ।
उदयगिरि, उदयाचल, उदयाद्रि—पु० पूर्व दिशा का वह कल्पित पर्वत जहाँ से सूर्य निकलता है ।
उदर—पु० पेट, मध्य या भीतरी भाग ।
उदात्त—ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, कृपालु, दाता, उदार, बड़ा, स्पष्ट, योग्य ।
उदान—पु० एक प्राणवायु । [सरल ।
उदार—दानशील, श्रेष्ठ, ऊँचे दिल का,
उदास—दुःखी, विरक्त, तटस्थ ।
उदासी—पु० वैरागी, साधुओं का एक सम्प्रदाय । स्त्री० खिन्नता, दुख ।
उदासीन—विरक्त, निष्पक्ष ।
उदाहरण--पु० मिसाल, दृष्टांत ।
उदित—उदय हुआ, प्रकट, प्रफुल्लित, उज्ज्वल, कहा हुआ ।
उदीची—स्त्री० उत्तर दिशा ।
उदीच्य—उत्तर दिशा का ।
उदुंबर-पु० गूलर, ड्योढ़ी, नपुंसक ।
उदूल हुक्मी—स्त्री० आज्ञा-उल्लंघन ।
उदोत—पु० प्रकाश ।
उद्गत—उदित ।
उद्गम—पु० उदय, उत्पत्ति-स्थान ।
उद्गार-पु० उफान, बमन, थूक, डकार, मन में जमी हुई बात प्रगट करना ।
उद्घाटन-पु० खोलना, प्रगट करना ।
उद्दंड—उद्धत । [गम्भीर ।
उद्दाम—निरंकुश, उद्दंड, स्वतन्त्र,
उद्दिष्ट—दिखाया हुआ, लक्ष्य ।
उद्दीपक—उत्तेजक ।

उद्दीपन—पु० उत्तेजन, उभाड़ना।
उद्देश्य—पु० लक्ष्य, मतलब।
उद्धत—उग्र, उद्दंड। [रखना, उन्मूलन।
उद्धरण—पु० ऊपर उठना, मुक्ति, उद्धार, आवृत्ति, किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में ज्यों का त्यों
उद्धार—पु० मुक्ति, छुटकारा, सुधार, नेहाल, ऋण मुक्ति।
उद्धारक—उद्धार करने वाला।
उद्धृत—उगला हुआ, ऊपर उठाया हुआ, अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ।
उद्बुद्ध—विकसित, चैतन्य, जगा हुआ।
उद्बोधन—पु० बोध कराना, जगाना।
उद्भट—प्रबल, प्रचंड।
उद्भव—पु० उत्पत्ति, वृद्धि।
उद्भावना—स्त्री० कल्पना, उत्पत्ति।
उद्भास—पु० प्रकाश, उदय।
उद्भिज, उद्भिद—पु० पेड़पौधा, वनस्पति, वृक्ष, लता आदि।
उद्भूत—उत्पन्न।
उद्भेद—फोड़कर निकलना।
उद्भ्रांत—भ्रांतियुक्त, घूमता हुआ, भूला हुआ, चकित।
उद्यत—तैयार, उठाया हुआ।
उद्यम—पु० परिश्रम, कामधंधा।
उद्यान—पु० बगीचा।
उद्यापन—पु० व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कर्म।
उद्योग—पु० कोशिश, कामधंधा।
उद्योत—प्रकाश, चमक।
उद्रेक—पु० वृद्धि।
उद्वह—पु० पुत्र, एक वायु।
उद्वासन—पु० भगाना, मारना।
उद्विग्न—व्याकुल, व्यग्र।
उद्वेग—पु० घबराहट, मनोवेग।
उधार—पु० कर्ज, ऋण।
उधेड़बुन—स्त्री० सोच-विचार।
उनींदा—अलसाया हुआ, नींदसे भरा।
उन्नत—ऊँचा, समृद्ध, श्रेष्ठ।
उन्नति—वृद्धि, समृद्धि।
उन्नायक—उन्नत करनेवाला।
उन्निद्र—निद्रारहित, विकसित।
उन्नीस—एक संख्या। मु० उन्नीस बीस होना = सिर्फ थोड़ा फर्क होना।
उन्मत्त—पागल, मतवाला।
उन्मद—उन्मादयुक्त।
उन्मना—चिंतित।
उन्माद—पु० पागलपन, चित्तविभ्रम।
उन्मादक—पागल या नशा करने वाला।
उन्मादी—पागल।
उन्मार्ग—पु० कुमार्ग।
उन्मीलन—पु० खुलना, खिलना।
उन्मुख—ऊपर मुँह किये, उत्सुक, उद्यत।
उन्मूलक—नष्ट करनेवाला।
उन्मूलन—पु० जड़ से उखाड़ना।

उन्मेष--पु० आँख खुलना, विकाश, थोड़ा प्रकाश ।
उप--एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगने से समीपता, सामर्थ्य, न्यूनता, व्याप्ति आदि बोध कराता है ।
उपकरण--पु० सामग्री ।
उपकार--पु० भलाई, लाभ ।
उपकारिता--स्त्री० भलाई ।
उपकृत—कृतज्ञ, जिसके साथ उपकार किया गया हो ।
उपक्रम--पु० कार्यारम्भ की अवस्था, अनुष्ठान, आयोजन, भूमिका ।
उपक्रमणिका—स्त्री० विषयसूची ।
उपक्रोश—पु० निन्दा ।
उपक्षेप—पु० अभिनय के आरंभ में नाटक के पूरे वृत्तान्त का संक्षेप में कथन, आक्षेप ।
उपगत-उपस्थित, प्राप्त, ज्ञात, स्वीकृत।
उपगूहन—पु० आलिंगन ।
उपग्रह—पु० कैद, कैदी, छोटा ग्रह, वह छोटा ग्रह जो ग्रह के चारो ओर घूमता है, राहु और केतु ।
उपघात—नाश, अशक्ति, रोग, पातकसमूह ।
उपचय—पु० उन्नति, संचय ।
उपचार—पु० प्रयोग, इलाज, सेवा, धर्मानुष्ठान, पूजन-विधान, खुशामद, घूस ।
उपज—स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार, सूझ ।
उपजाऊ—उपजवाला ।
उपजीवन—पु० जीविका ।
उपजीवी—दूसरे के सहारे पर गुजर करने वाला ।
उपटन—पु० निशान, उबटन ।
उपत्यका--स्त्री० पर्वत के पास की भूमि, तराई ।
उपदंश--पु० गरमी, सुजाक ।
उपदल—पु० पुष्पदल, पत्ता ।
उपदिशा—स्त्री० कोण ।
उपदिष्ट—उपदेशप्राप्त ।
उपदेश—पु० शिक्षा, दीक्षा ।
उपदेश्य—उपदेश योग्य ।
उपदेष्टा—उपदेशक ।
उपद्रव—पु० उत्पात, ऊधम ।
उपधा—स्त्री० छल, उपाधि, शब्द के अन्तिम अक्षर के पहले का अक्षर ।
उपधातु--स्त्री० अप्रधान धातु ।
उपधान—पु० ऊपर रखना, सहारे की चीज, तकिया ।
उपनयन—पु० (बालक को गुरु के) समीप ले जाना, यज्ञोपवीत संस्कार ।
उपनाम—पु० दूसरा नाम, पदवी ।
उपनायक—पु० अप्रधान नायक ।
उपनिधि-स्त्री० धरोहर ।
उपनिविष्ट—दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ ।
उपनिवेश—एक स्थान से दूसरे स्थान में जा बसना, दूसरे स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती ।

उपनिषद् — स्त्री० पास बैठना, वेदान्त, ब्रह्मविद्या ।
उपनीत-लाया हुआ, जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो । [करानेवाला ।
उपनेता—पु० लानेवाला, उपनयन
उपनेत्र—पु० चश्मा ।
उपन्यास—पु० प्रस्तावना, उपकथा ।
उपपति-पु० वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे, जार । [युक्ति ।
उपपत्ति-स्त्री० हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय, मेल मिलाना,
उपपत्नी—स्त्री० रखेली, वेश्या ।
उपपन्न—शरण आया हुआ, मिला हुआ, संपन्न, उपयुक्त ।
उपपातक—पु० छोटा पाप ।
उपपुराण—पु० छोटा पुराण ।
उपभुक्त—जूठा ।
उपभोक्ता—उपभोग करनेवाला ।
उपभोग—पु० किसी वस्तु के व्यवहार का सुख ।
उपमंत्री—पु० सहायक मंत्री ।
उपमा—स्त्री० तुलना, काव्य में एक अर्थालंकार । [धाई ।
उपमाता—पु० उपमा देनेवाला । स्त्री०
उपमान—पु० वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय ।
उपमित—जिसकी उपमा दी जाय ।
उपमिति—स्त्री० उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान ।
उपमेय—जिसकी उपमा दी जाय ।
उपयुक्त—योग्य ।
उपयुक्तता—औचित्य । [प्रयोजन ।
उपयोग—पु० प्रयोग, योग्यता, लाभ,
उपयोगिता—स्त्री० काम में आने की योग्यता । [मंद, अनुकूल ।
उपयोगी—काम में आनेवाला, फायदे-
उपरति—स्त्री० उदासी, मौत ।
उपरना-उखड़ना । पु० दुपट्टा, चादर ।
उपरांत—बाद ।
उपराग—पु० रंग, वासना, ग्रहण ।
उपराज—पु० राजप्रतिनिधि, वाइसराय ।
उपरि—ऊपर ।
उपरूपक—पु० छोटा नाटक ।
उपरोक्त—ऊपर कहा हुआ ।
उपरोहित—पुरोहित ।
उपर्युक्त—ऊपर कहा हुआ ।
उपल—पु० पत्थर, ओला, रत्न, मेघ ।
उपलक्षक—अनुमान करनेवाला ।
उपलक्षण—पु० बोध कराने वाला । चिह्न, संकेत ।
उपलक्ष्य—पु० संकेत, उद्देश्य ।
उपलब्ध—प्राप्त ।
उपलब्धि—स्त्री० प्राप्ति, बुद्धि ।
उपला—पु० गोयठा, कंडा । [वस्तु ।
उपलेप—पु० लेप लगाना, लेप की
उपवन—पु० फुलवारी, छोटा वन ।
उपवास—पु० भोजन न करना ।

उपविष--पु० हलका विष।
उपविष्ट—बैठा हुआ।
उपवीत—पु० जनेऊ।
उपवेद—पु० वेद से निकली विद्या, जैसे आयुर्वेद। [इलाज।
उपशम—पु० इंद्रियनिग्रह, शांति,
उपशमन--पु० दबाना।
उपशिष्य--पु० शिष्य का शिष्य।
उपसंपादक—पु० सहायक संपादक।
उपसंहार--पु० हरण, समाप्ति, निराकरण, सारांश।
उपसर्ग--पु० अशकुन, दैवी उत्पात। किसी शब्द के पहले लगनेवाला शब्द, जैसे अनु, अव आदि।
उपसागर—पु० खाड़ी।
उपस्त्री—स्त्री० उपपत्नी।
उपस्थ—पु० नीचे या मध्य का भाग, गोद, पेड़, लिंग, योनि।
उपस्थित—समीप बैठा हुआ, हाजिर,
उपस्थिति-स्त्री० मौजूदगी, हाजिरी।
उपस्वत्व--पु० जायदाद की आमदनी का हक।
उपहत—नष्ट, दूषित।
उपहसित--पु० हास का एक भेद।
उपहार—पु० भेंट।
उपहास—पु० हँसी, निंदा।
उपहासास्पद--उपहास योग्य।
उपहित—स्थापित। [तिलक।
उपांग—पु० अंग का भाग, अवयव,
उपांत—पु० अंत के समीप का भाग, आसपास का हिस्सा।
उपांत्य--अंतिम से पहले का।
उपाख्यान--पु० पुरानी कथा।
उपादान--पु० प्राप्ति, ज्ञान, विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति, वह कारण जो स्वयं कार्य्यरूप में परिणत हो जाय, सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार हो।
उपादेय—लेने योग्य, श्रेष्ठ।
उपाधि--स्त्री० उपद्रव, कपट, धर्म-चिंता, खिताब।
उपाध्याय—पु० अध्यापक।
उपाध्याया--स्त्री० अध्यापिका।
उपाध्यायनी—स्त्री० उपाध्याय की पत्नी।
उपाध्यायी—स्त्री० उपाध्याय की पत्नी, अध्यापिका।
उपाय--पु० पास आना, साधन।
उपायन—पु० भेंट, उपहार।
उपारना—उखाड़ना।
उपार्जन—पु० कमाना।
उपार्जित--कमाया हुआ।
उपालंभ—पु० उलाहना। [क्रिया।
उपासना—पूजा करना, भजना। स्त्री० पूजा, आराधना, पास बैठने की
उपासक—उपासना करनेवाला।
उपासी—उपासना करनेवाला।
उपास्य—उपासना योग्य।
उपेंद्र—पु० इंद्र का छोटा भाई, विष्णु।

उपेक्षण—पु० उदासीन होना, तिरस्कार करना।
उपेक्षा—स्त्री० लापरवाही, तिरस्कार।
उपेक्ष्य—उपेक्षा योग्य।
उपोद्घात—पु० प्रस्तावना।
उफ—आह।
उफान—पु० गरमी से दूध आदि का ऊपर फेंकना।
उबकाई—स्त्री० मतली, कै।
उबटन—पु० शरीर का लेप।
उबटना—उबटन लगाना।
उबलना—गरमी पाकर ऊपर उठना।
उबार—पु० उद्धार।
उबालना—खौलाना, उसनना।
उभड़ना—फूलना, ऊँचा होना, बढ़ना, चल देना, पैदा होना, खुलना, जवानी पर आना, गाय आदि का मस्त होना।
उभय—दोनों।
उभयतः—दोनों ओर से।
उभयत्र—दोनों तरफ।
उभाड़ना—उसकाना।
उमंग—स्त्री० मौज, उल्लास।
उमगना—हुलसना।
उमड़ना—उतरा कर बह चलना, घिरना, जोश में आना।
उमर—स्त्री० आयु।
उमरा—पु० अमीर लोग, सरदार।
उमराव—पु० दे० "उमरा"।
उमस—स्त्री० गरमी।
उमा—स्त्री० पार्वती, दुर्गा, कीर्ति, कांति, हल्दी, अलसी।
उमेश—पु० महादेव।
उम्दगी—स्त्री० अच्छापन।
उम्दा—अच्छा, भला।
उम्मीद, उम्मेद—स्त्री० आशा।
उम्मेदवार—पु० आसरा रखनेवाला, काम पाने की या किसी पद पर चुने जाने की आशा रखने वाला व्यक्ति।
उम्र—स्त्री० आयु, अवस्था।
उर—पु० हृदय, छाती।
उरग—पु० साँप।
उरगिनी—स्त्री० सर्पिणी।
उरज, उरजात—पु० दे० "उरोज"।
उरझना—उलझना।
उरस—फीका। पु० छाती, हृदय।
उरसिज—पु० स्तन।
उरु—विशाल। पु० जाँघ।
उरूज—पु० बढ़ती, वृद्धि।
उरेह—पु० चित्रकारी।
उरेहना—(चित्र) रचना, खींचना।
उरोज—पु० स्तन।
उर्दपर्णी—स्त्री० बन उरद।
उर्फ—पु० चालू नाम, उपनाम।
उर्मि—स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
उर्वरा—स्त्री० उपजाऊ भूमि, पृथ्वी।
उर्वशी—स्त्री० एक अप्सरा।
उर्वी—स्त्री० पृथ्वी।
उर्वीज—पु० मंगल ग्रह।

उर्वीजा—स्त्री० सीता ।
उर्वीधर—पु० पर्वत, शेष ।
उलंघना—नाँघना, न मानना ।
उलझन—स्त्री० अटकाव, गिरह, बाधा, फेर, तरदुद ।
उलट-पुलट—स्त्री० अदल बदल, अव्यवस्था, गड़बड़ी ।
उलटफेर—पु० हेर फेर ।
उलटा—औंधा, क्रम विरुद्ध, खिलाफ । मु० उलटी गंगा बहना = अनहोनी बात होना । उलटे छुरे से मूड़ना = उल्लू बनाकर काम निकालना । उलटी खोपड़ी का = मूर्ख । उलटी सीधी सुनाना = खरी खोटी सुनाना ।
उलटी—स्त्री० वमन ।
उलहना – हुलसना, वंचित होना ।
उलाहना—पु० शिकायत ।
उलीचना–पानी उछाल कर फेंकना ।
उलूक—पु० उल्लू, इंद्र ।
उल्का—स्त्री० प्रकाश, लूक, मशाल, चिराग, तारकपींड ।
उल्कापात—पु० तारा टूटना, उत्पात ।
उल्था—पु० अनुवाद ।
उल्फत–स्त्री० प्रेम, प्रीति ।
उल्लंघन—पु० लाँघना, न मानना ।
उल्लसन—पु० हर्ष करना ।
उल्लास—पु० प्रकाश, हर्ष, परिच्छेद ।
उल्लिखित—चित्रित, लिखा हुआ, ऊपर लिखा हुआ, खोदा हुआ ।

उल्लू—पु० एक पक्षी, मूर्ख ।
उल्लेख—पु० लेख, चर्चा, चित्रांकण ।
उल्लोल—पु० ऊँची तरंग ।
उशीर—पु० खस ।
उषा—स्त्री० प्रभात ।
उषाकाल—पु० प्रभात ।
उष्ट्र—पु० ऊँट । [ब्याज ।
उष्ण—गर्म, तेज । पु० ग्रीष्म ऋतु,
उष्णक—गरम, ज्वरयुक्त, फुर्तीला । पु० ग्रीष्मकाल, ज्वर, सूर्य ।
उष्ण कटिबंध—पु० पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है ।
ऊष्म—पु० गर्मी, धूप । [मच्छड़ ।
उष्मज—पु० पसीने और मैल आदि से उत्पन्न होनेवाले कीड़े जैसे खटमल,
उष्मा—स्त्री० गरमी, धूप, क्रोध ।
उसकाना—उभाड़ना ।
उसाँस, उसास–पु० लंबी साँस, ठंडी साँस ।
उसीसा—पु० तकिया ।
उसूल—पु० सिद्धांत । [शिक्षक ।
उस्ताद—चालाक, धूर्त, निपुण । पु०
उस्तादी–स्त्री० चतुराई, धूर्तता, निपुणता, गुरुआई । [स्त्री ।
उस्तानी—स्त्री० गुरुआनी, चालाक
उस्तुरा—पु० छुरा ।
उहार—पु० परदा ।
उहै—वही ।

ऊ

ऊ—एक अक्षर, वह, भी। पु० महादेव, चन्द्रमा।
ऊँघना—नींद में झूमना, झपकी लेना।
ऊँचा-उठा हुआ, श्रेष्ठ, बड़ा, तीव्र। मु०ऊँचा नीचा सुनाना = भला बुरा कहना।
ऊकना—चूकना, भूल करना, छोड़ देना, जलाना।
ऊख--पु० ईख, गन्ना, गरमी।
ऊखम--पु० दे० "उष्म"
ऊखल—पु० ओखली।
ऊजड़—उजाड़।
ऊटपटाँग—अटपट, निरर्थक।
ऊढ़ा-स्त्री० विवाहिता स्त्री, परपुरुषगामिनी विवाहिता स्त्री।
ऊधम—पु० उपद्रव।
ऊन--कम, थोड़ा, तुच्छ। पु० भेड़ आदि का रोंआ।
ऊना--कम, तुच्छ। पु० खेद।
ऊनी—कम, ऊन का। स्त्री० उदासी।
ऊपर—ऊँचे स्थान पर, आधार पर, पहले, अधिक, प्रकट में, तट पर, अतिरिक्त।
ऊपरी—ऊपर का, बाहरी, दिखौआ।
ऊबट-ऊँचा नीचा। पु० कठिन मार्ग।
ऊबड़ खाबड़—ऊँचा नीचा।
ऊबना—घबराना।
ऊरु—पु० जंघा।
ऊर्ज-बलवान। पु० बल, कार्तिकमास।
ऊर्जस्वी--बलवान, तेजस्वी।
ऊर्ण—पु० ऊन।
ऊर्द्ध्व--ऊपर, ऊँचा, खड़ा।
ऊर्द्ध्वगति—स्त्री० मुक्ति। [मुक्त।
उर्द्ध्वगामी--ऊपर को जाने वाला,
उर्द्ध्वद्वार--पु० ब्रह्मरंध्र।
उर्द्ध्वपुंड्र--पु० खड़ा तिलक।
उर्द्ध्वरेता—जो अपने वीर्य को गिरने न दे, ब्रह्मचारी। पु० महादेव, हनुमान, सनकादि, भीष्म।
ऊर्द्ध्वलोक-पु० स्वर्ग। [हुई साँस।
ऊर्द्ध्वश्वास--पु० ऊपर को चढ़ती
ऊर्ध्व—दे० 'ऊर्द्ध्व'।
ऊर्मि, ऊर्मी—स्त्री० लहर, तरंग, पीड़ा, छः की संख्या।
ऊलजलूल-अंडबंड, अनाड़ी, बेअदब।
ऊषा--स्त्री० प्रभात।
ऊषाकाल--पु० प्रभात।
ऊष्म--गरम। पु० गरमी, भाप, गरमी का मौसम।
ऊष्मवर्ण-पु० श, ष, स, ह अक्षर।
ऊष्मा--स्त्री० ग्रीष्म काल, गरमी, भाप।
ऊसर—पु० वह जमीन जिसमें उपज न हो।
ऊहापोह—पु० तर्क-वितर्क।

ऋ

ऋ—एक अक्षर। स्त्री० देवमाता, निंदा।

ऋक्—स्त्री० ऋचा वेदमंत्र। [राशियाँ।

ऋक्ष—पु० भालू, तारा, मेष आदि

ऋक्षपति—पु० चन्द्रमा, जामवंत।

ऋग्वेद—पु० एक वेद।

ऋग्वेदी—ऋग्वेदज्ञाता।

ऋचा—स्त्री० वेदमंत्र, स्तोत्र।

ऋच्छ—पु० दे० "ऋक्ष"। [कूल।

ऋजु—सीधा, सरल, सज्जन, अनु-

ऋण—पु० कर्ज।

ऋणी—कर्जदार, अनुगृहीत।

ऋतु—स्त्री० प्राकृतिक अवस्थानुसार वर्ष के छः भाग—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर। रजोदर्शन के बाद वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ धारण करने योग्य रहती हैं।

ऋतुचर्य्या—स्त्री० ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

ऋतुमती—स्त्री० रजस्वला, वह स्त्री जिसके रजोदर्शन के बाद सोलह दिन न बीते हों।

ऋतुराज—पु० वसंत ऋतु।

ऋतुवती—स्त्री० दे० "ऋतुमती"।

ऋतुस्नान—पु० रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

ऋत्विज—पु० यज्ञकर्ता।

ऋद्ध—समृद्ध, सम्पन्न।

ऋद्धि—स्त्री० समृद्धि। [मानी जाती हैं।

ऋद्धि सिद्धि—स्त्री० समृद्धि और सफलता जो गणेशजी की दासियाँ

ऋषभ—पु० बैल।

ऋषि—पु० मंत्रद्रष्टा, मुनि, तपस्वी।

ऋषीक—पु० ऋषि का पुत्र।

ए

ए—एक अक्षर। पु० विष्णु।

एँड़ी—स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, अंडी, मूगा।

एक—सबसे छोटी संख्या, बेजोड़, कोई, समान। मु० एक आध = थोड़ा। एक आँख से देखना = समान भाव से देखना। एक एक = प्रत्येक। एक दूसरे का = परस्पर। एक न चलना = कोई युक्ति सफल न होना। एक-ब-एक = अचानक। एक से एक = एक से एक बढ़ कर। [रथ, सूर्य्य।

एकचक्र—चक्रवर्ती। पु० सूर्य का

एक छत्र—बिना और किसी के आधिपत्य का। [राजा।

एकज—पु० जो द्विज न हो, शूद्र।

एकड़—अंगरेजी में जमीन का एक

माप जो १$\frac{3}{4}$ बीवे के बराबर होता है।
एकत—एकत्र।
एकतंत्र—पु० एकाधिपत्य। [पूर्ण।
एकतरफा—एक तरफ का, पक्षपात-
एकता—स्त्री० मेल, बराबरी।
एकतारा—पु० एक, तार का सितार।
एकत्र—इकट्ठा।
एकदंत—पु० गणेश।
एकदा—एक बार।
एकदेशीय—जो सर्वत्र न घटे।
एकनयन—काना। पु० कौआ, कुबेर।
एकबारगी—एक ही दफे में, अचानक, बिलकुल।
एकबाल—पु० प्रताप, भाग्य।
एकभुक्त—जो रात दिन में एक बार भोजन करे।
एकमुश्त—एक साथ।
एकरंग—समान, कपटशून्य।
एकरदन—पु० गणेश।
एकरस—समान।
एकरार—पु० वादा, मंजूरी
एकरारनामा—पु० प्रतिज्ञापत्र।
एकरूपता—स्त्री० समानता, सायुज्य मुक्ति।
एकलिंग—पु० शिव। [ही।
एकलौता—अपने मा बाप का एक
एकसाँ—बराबर।
एकहरा—एक परत का।
एकांगी—एकतरफा, जिद्दी।
एकांत—अत्यंत, अकेला, निर्जन। पु० सूना स्थान।
एकांतिक—एक देशीय।
एका—स्त्री० दुर्गा। पु० एकता।
एकाई—स्त्री० एक का भाव, अंकों की गिनती में पहला अंक या उसका स्थान।
एकाएक—अचानक।
एकाएकी—एक एक कर।
एकाकी—अकेला। [चार्य।
एकाक्ष—काना। पु० कौआ, शुक्रा-
एकाग्र—एक ओर ध्यानस्थ।
एकात्मता—स्त्री० एकता।
एकादश—ग्यारह।
एकादशाह—पु० हिन्दुओं में मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य।
एकादशी—स्त्री० पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो पर्व का दिन होती है।
एकाधिपत्य—पु० एक मात्र अधिकार।
एकार्थक—समानार्थक।
एकाह—एक दिन वाला।
एकीकरण—पु० एक करना।
एकीभूत—मिश्रित।
एकेंद्रिय—पु० इंद्रियों को अपने मन में लीन करनेवाला, एक इंद्रिय अर्थात् केवल त्वचा वाला जंतु—जैसे जोंक।
एकडेमी—स्त्री० शिक्षालय, सभा।
एकोदिष्ट—पु० वह श्राद्ध जो एक के उद्देश्य से किया जाय।

एक्का—एक से संबंध रखनेवाला, अकेला। पु० एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी। एक ताश।
एक्कादुक्का—अकेला दुकेला।
एक्सपर्ट—पु० विशेषज्ञ।
एजेंट—पु० मुख्तार, प्रतिनिधि, किसी कारखाने आदि की ओर से माल खरीदने या बेचने वाला।
एजेंसी—स्त्री० आढ़त, वह स्थान जहाँ एजेंट काम करता हो। [पत्र।
एड्रेस—पु० पता, भाषण, अभिनंदन
एतमाद—पु० भरोसा, विश्वास।
एतद्—यह।
एतबार—पु० विश्वास, रविवार।
एतराज—पु० आपत्ति।
एतादृश—ऐसा।
एतिक—इतनी। [गवाह।
एप्रूवर—पु० सरकारी गवाह, इकबाली
एम्बुलेंसकार—पु० घायलों या बीमारों को अस्पताल ले जाने वाला मोटर।
एरोप्लेन—पु० हवाई जहाज।
एरंड—पु० रेंड़ी।
एलची—पु० राजदूत।
एवं—इस प्रकार।
एवमस्तु—ऐसा ही हो।
एव—ही, भी। [पन्न पुरुष।
एवज—पु० बदला, प्रतिफल, स्थाना-
एस्टिमेट—पु० अंदाज, अनुमान।
एहसान—पु० उपकार, कृतज्ञता।
एहसानमंद—कृतज्ञ।
एहि—इसको।
एहो—हे, ऐ।

ऐ

ऐ—एक अक्षर। एक संबोधन। पु० शिव।
ऐं—आश्चर्यसूचक एक अव्यय।
ऐंचना—खींचना।
ऐंचाताना—जिसकी पुतली देखने में दूसरी ओर को खिंचती हो।
ऐंचातानी—स्त्री० खींचाखींची।
ऐंठ—स्त्री० अकड़, गर्व, द्वेष।
ऐंठन—स्त्री० घुमाव, खिंचाव।
ऐंठना—घुमाव देना, झूसना, बल खाना, तनना, घमंड करना, मरना।
ऐंद्रजालिक—इंद्रजाल करनेवाला।
ऐक्ट=पु० कानून, नाट्यकला।
ऐक्टर=पु० नाटक का कोई पात्र।
ऐक्टिंग=पु० रूप या चरित्र का अभिनय।
ऐक्य—पु० एकता।
ऐगुण—पु० दे० "अवगुण"।
ऐच्छिक—जो अपनी इच्छा पर हो।
ऐजन—तथैव, वही।

एडवोकेट—पु० वकील ।
एडमिरल—पु० जलसेनापति ।
ऐतिहासिक—इतिहास संबंधी, इतिहासज्ञ ।
ऐन—ठीक, बिलकुल ।
ऐनक—स्त्री० चश्मा ।
ऐब—पु० दोष, कलंक ।
ऐयाम—पु० मौसम, वक्त ।
ऐयाश—विषयी, लंपट ।
ऐयाशी—स्त्री० भोगविलास ।
ऐरा गैरा—अजनबी, तुच्छ ।
ऐरापति, ऐरावत—पु० बिजली से चमकता बादल, इन्द्रधनुष, बिजली, इंद्र का हाथी ।
ऐश—पु० भोगविलास ।
ऐश्वर्य—पु० विभूति, धन, संपत्ति, अणिमादिक सिद्धियाँ, प्रभुत्व ।
ऐहिक—सांसारिक ।

ओ

ओ—एक अक्षर । संबोधन, विस्मय और स्मरण सूचक शब्द । पु० ब्रह्मा ।
ओं—परब्रह्म सूचक शब्द ।
ओंकार—ओं शब्द ।
ओंठ—पु० ओष्ठ, लब । मु० ओंठ चबाना = क्रोध या दुःख करना ।
ओक—पु० घर, आश्रय, नक्षत्रों या ग्रहों का समूह, अंजली । स्त्री० कै ।
ओकना—कै करना ।
ओकपति—पु० सूर्य, चंद्रमा ।
ओकाई—स्त्री० कै ।
ओखली—स्त्री० ऊखल । मु० ओखली में सिर देना = कष्ट सहने पर उतारू होना ।
ओघ—पु० समूह, धारा । [छोटा ।
ओछा—तुच्छ, छिछला, हलका,
ओज—पु० बल, प्रकाश, काव्य का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश हो ।
ओजस्विता—स्त्री० तेज, कांति ।
ओजस्वी—प्रभावशाली ।
ओझल—पु० ओट, आड़ ।
ओझा—पु० भूतप्रेत 'झाड़नेवाला' । ब्राह्मणों की एक पदवी ।
ओट—स्त्री० आड़, शरण ।
ओटना—रूई से बिनौला निकालने के लिये चरखी चलाना, अपनी ही बात कहते जाना । [चरखी ।
ओटनी—स्त्री० कपास ओटने की
ओतप्रोत—बहुत मिला जुला । पु० ताना बाना ।
ओदन—पु० भात ।
ओदा—गीला ।
ओनामासी—स्त्री० (सं० ऊँ नमः

सिद्धम्) अक्षरारंभ, आरंभ ।
ओप--स्त्री० चमक, कांति, पालिश ।
ओफ--ओह ।
ओम्--पु० प्रणव मंत्र ।
ओर--स्त्री० तरफ, किनारा, आरंभ ।
ओराना--खतम होना ।
ओलना--परदा करना, रोकना, सहना, घुसाना । [गुप्त बात ।
ओला--पु० पत्थर, बिनौली, ओट,
ओवर कोट--पु० ऊपरी कोट, वह लंबा कोट जो जाड़े में सब कपड़ों के ऊपर पहना जाता है ।
ओवर सियर--पु० इंजिनियरी के महकमे का एक कार्यकर्त्ता ।
ओषधि--स्त्री० दवा, वनस्पति ।
ओषधिपति, ओषधीश -- पु० चंद्रमा, कपूर ।
ओष्ठ--पु० ओंठ ।
ओष्ठ्य--ओंठ संबंधी, जिसका उच्चारण ओंठ से हो ।
ओस--स्त्री० शीत, शबनम ।
ओह-आश्चर्य और दुःख सूचक शब्द ।
ओहदा--पु० पद, स्थान [शब्द ।
ओ हो--आश्चर्य या आनंद सूचक

औ

औ--एक अक्षर, और ।
औंधा--उलटा ।
औंस--पु० एक अंगरेजी तौल ।
औकात--स्त्री० वक्त, हैसियत ।
औगुण--पु० दे० "अवगुण" ।
औघट--दे० "अवघट" ।
औघड़--पु० अघोरी ।
औचक--अचानक ।
औचित्य--पु० उपयुक्तता ।
औजार--पु० हथियार । [ढलनेवाला ।
औढर--जिधर मनमें हो उधर ही
औतसुक्य--पु० उत्सुकता ।
औदार्य--पु० उदारता ।
औदुंबर--उदुंबर का ।
औद्धत्य--पु० उद्धतपन ।
औद्योगिक--उद्योग संबंधी ।
औपचारिक--उपचार संबंधी ।
औपनिवेशिक--उपनिवेश संबंधी ।
औपनिषदिक--उपनिषद् संबंधी ।
औपन्यासिक--उपन्यास विषयक, अद्भुत । पु० उपन्यास लेखक ।
औपसर्गिक--उपसर्ग संबंधी ।
और-एक संयोजक शब्द, दूसरा, अधिक ।
औरत-स्त्री० स्त्री, पत्नी । [उत्पन्न पुत्र ।
औरस, औरस्य--पु० धर्मपत्नी से
औलाद--स्त्री० संतान ।
औलिया-पहुँचा हुआ फकीर । [आरंभ ।
औवल-पहला, मुख्य, सर्वश्रेष्ठ । पु०
औषध--पु० दवा । [illegible]
औसत--माध्यमिक । पु० बराबर का

क

क—एक अक्षर। पु० ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, कामदेव, दक्ष, प्रजापति, अग्नि, प्रकाश, राजा, वायु, यम, आत्मा, मन, शरीर, काल, धन, शब्द।

कं—पु० जल, मस्तक, सुख, अग्नि, काम। [सेंका हुआ तमाकू।

कंकड़—पु० पत्थर का छोटा टुकड़ा,

कंकण—पु० हाथ का एक गहना, विवाह के अवसर पर वर कन्या के हाथ में बाँधा जाने वाला धागा।

कंकाल—पु० अस्थि पंजर।

कंगन—पु० दे० "कंकण"।

कंगाल—भुक्खड़, दरिद्र।

कंगूरा—पु० चोटी, बुर्ज।

कंचन—पु० सोना, धन, धतूरा।

कंचनी—स्त्री० वेश्या। [कवच, केंचुल।

कंचुक—पु० चपकन, चोली, वस्त्र,

कंचुकी—स्त्री० चोली। पु० अंतःपुर रक्षक, द्वारपाल, साँप।

कंज—पु० ब्रह्मा, कमल, अमृत, केश।

कंजूस—कृपण, सूम। [रोमांच।

कंटक—पु० काँटा, सूई की नोक, क्षुद्र, शत्रु, विघ्न, बाधक, कवच,

कंटकित—रोमांचित, काँटेदार।

कंटकी—काँटेदार।

कँटीला—काँटेदार।

कंटूनमेंट—पु० छावनी।

कंठ—पु० गला, स्वर, किनारा। मु० कंठ फूटना=मुँह से शब्द निकलना।

कंठ तालव्य—जो कंठ और तालु के सहारे बोला जाय।

कंठस्थ—कंठगत, जबानी।

कंठाग्र—कंठस्थ। [बोला जाय।

कंठौष्ठ्य—जो कंठ और ओष्ठ के सहारे

कंठ्य—जिसका उच्चारण कंठ से हो।

कंडा—पु० गोयठा।

कंडु—स्त्री० खुजली।

कंत—पु० दे० "कांत"।

कंथा—स्त्री० गुदड़ी।

कंथी—पु० गुदड़ीवाला, जोगी।

कंद—पु० गुदेदार और बिना रेशे की जड़, मेघ।

कंदन—पु० नाश, ध्वंस।

कंदरा—स्त्री० गुफा।

कंदर्प—पु० कामदेव। [सुपारी।

कंदुक—पु० गेंद, गोल तकिया,

कंधर—पु० गरदन, मेघ।

कंप—पु० कँपकँपी, पड़ाव।

कँपकँपी—स्त्री० थरथराहट।

कंपन—पु० थरथराहट।

कंपनी—स्त्री० व्यापारियों का वह समूह जो अपने संयुक्त धन से नियमानुसार व्यापार करता हो, व्यवसाय-संघ, मंडली।

कंपाउंड—पु० घेरा, अहाता।
कंपायमान--हिलता हुआ।
कंपास-पु० दिशासूचक यंत्र, परकार।
कंपू—पु० छावनी, डेरा।
कंपौंडर—दवा बनाने वाला।
कंबु, कंबुक—पु० शंख, घोंघा, हाथी।
कंस—पु० काँसा, काँस का वर्तन, प्याला, सुराही, मँजीरा।
कंसर्ट—पु० कई एक बाजों का एक साथ मिलकर बजाना, कई गवैयों का मिल कर गाना बजाना।
कई—एक से अधिक।
ककरेजा—पु० बैगनी रंग।
ककहरा—पु० क से ह तक का वर्णमाला। [राज चिह्न।
ककुद्--पु० बैल के कंधे का कुब्बड़,
ककुभ—पु० दिशा, एक पेड़।
ककुभा—स्त्री० दिशा।
कक्का—पु० नगाड़ा, काका।
कक्ष—पु० काँख, काछ, कछार, कास, जंगल, सूखी घास, भूमि, घर, पाप, श्रेणी, कमरबंद, सेना के अगल बगल का भाग।
कक्षा—स्त्री०, परिधि, तुलना, श्रेणी, देहली, काँख, काँख का फोड़ा, कांछ, घर की दीवार। [फोड़ा।
कखौरी—स्त्री० कांख, कांख का
कगर—किनारे पर, समीप। पु० ऊंचा किनारा, बाढ़, मेंड़, कारनिस।
कगार—पु० ऊँचा किनारा, नदी का करारा, टीला।
कच—पु० बाल, सूखा फोड़ा, झुंड, बादल, कुचलने का शब्द।
कचक—स्त्री० दबने की चोट।
कचकच—स्त्री० बकबाद।
कचकचाना—कच कच शब्द करना, दाँत पीसना।
कचनार—पु० एक वृक्ष।
कचपची—स्त्री० कृतिका नक्षत्र।
कचर कूट—पु० खूब पीटना, इच्छा भोजन।
कचरा--पु० ककड़ी, कूड़ा करकट, समुद्र का सेवार। [अदालत, दफ़्तर।
कचहरी—स्त्री० गोष्ठी, दरबार,
कचूमर—पु० कुचल कर बनाया हुआ अचार, कुचली हुई वस्तु। मु० कचूमर निकालना = खूब कूटना, चूर चूर करना।
कच्चा चिट्ठा--पु० वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय, गुप्त भेद।
कच्चा माल—वे चीजें जिनसे व्यवहार की चीजें बनती हों जैसे रूई,सामग्री।
कच्चा हाथ—पु० अनभ्यस्त हाथ।
कच्ची बही—वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।
कच्ची रसोई—स्त्री० विना घी की बनी रसोई जैसे भात दाल आदि।

कच्ची सड़क—स्त्री० वह सड़क जिसमें रोड़ा पीटा न हो।
कच्ची सिलाई—स्त्री० केवल लंगर की सिलाई।
कच्चेबच्चे—पु० छोटे छोटे बच्चे।
कच्छ—पु० जलप्रायदेश, कछार, कछुआ।
कच्छप—स्त्री० कछुआ।
कच्छपी—स्त्री० कछुई, सरस्वती की वीणा।
कछनी—स्त्री० छोटी धोती।
कछार—पु० समुद्र या नदी किनारे की तर और नीची भूमि।
कछुक—कुछ।
कछोटी—स्त्री० लँगोटी, कछनी।
कज—पु० टेढ़ापन, ऐब।
कजरारा—काजल वाला, काला।
कजली—स्त्री० कालिख, एक गीत।
कजा—स्त्री० मौत, मृत्यु।
कज्जल—पु० कालिख, अंजन, मेघ।
कटक—पु० सेना, राजसिविर, कंकण नितंब, समूह।
कटकटाना—दाँत पीसना।
कटघरा—पु० काठ का घर।
कटना—टुकड़ा होना, लड़ाई में मरना, बीतना, झेंपना, मोहित होना, रद्द होना।
कटनि—स्त्री० प्रीति, आसक्ति।
कटरा—पु० छोटा चौकोर बाजार।
कटाक्ष—पु० तिरछी नजर, आक्षेप।
कटार—पु० एक छोटा तिकोना और दुधारा हथियार।
कटाव—काट छाँट।

कटि—स्त्री० कमर, हाथी का गंडस्थल।
कटि तट—पु० नितंब।
कटि वस्त्र—पु० धोती।
कटिबंध—पु० कमरबंद, गरमी सर्दी के विचार से किये हुए पृथ्वी के पाँच भाग।
कटिबद्ध—कमर बांधे हुए, तैयार।
कटिसूत्र—पु० कमर की डोरी।
कटीला—झट करने वाला, तीक्ष्ण, काँटेदार, नुकीला, मोहित करने वाला।
कटु, कटुक—कड़ुआ।
कटूक्ति—स्त्री० अप्रिय बात।
कट्टर—अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहने वाला, हठी।
कठपुतली—स्त्री० काठ की पुतली, केवल दूसरे के कहने पर काम करने वाला व्यक्ति।
कठबाप—पु० सौतेला बाप।
कठमलिया—पु० काठ की माला पहननेवाला वैष्णव, बनावटी साधु।
कठमस्ती—मुसंडापन।
कठ हँसी—स्त्री० शुष्क हास्य।
कठिन—कड़ा, दुष्कर।
कठिनता, कठिनाई—स्त्री० कड़ाई, मुशकिल, निर्दयता, मजबूती।
कठियाना—कड़ा होना।
कठुवाना—कड़ा होना, ठिठुरना, लज्जित होना।
कठोर—कठिन, निर्दय। [वज्र, कृपण।
कड़क—स्त्री० कठोर शब्द, तड़प,

कड़कना—कड़ कड़ शब्द होना, चिटकना, डाँटना।

कड़खा—पु० लड़ाई का एक गीत।

कड़खैत-पु० कड़खा गानेवाला, भाट।

कड़ा—कठोर, रूखा, उग्र, चुस्त, शख्त, मजबूत, प्रचंड, धीर, दुष्कर, तेज, असह्य, कर्कश। पु० हाथ पाँव का एक गहना। [शब्द, उपवास।

कड़ाका—पु० कड़ी वस्तु के टूटने का

कड़ी—स्त्री० जंजीर का एक छल्ला, लगाम, गीत का एक पद। स्त्री० मुसीवत।

कड़ुआ—कटु, तीखा, अप्रिय।

कड़ुआ तेल—पु० सरसो का तेल।

कड़ुआना—कड़ुआ लगना, बिगड़ना, आँख में दर्द होना। [जाना।

कढ़ना—निकलना, उदय होना, बढ़

कढ़ाव—पु० कशीदे का काम।

कण—पु० अत्यंत छोटा टुकड़ा, चावल का छोटा टुकड़ा, भिक्षा।

कणिका—स्त्री० टुकड़ा।

कत—क्यों। पु० देशी कलम की नोक की आड़ी काट।

कतई—बिलकुल।

कतरन—स्त्री० कटे टुकड़े।

कतरनी—स्त्री० कैंची।

कतरव्योंत—स्त्री० काट छाँट, उलट फेर, उधेड़बुन, युक्ति।

कतरा—पु० टुकड़ा, बूँद।

कतराना—बचाकर किनारे से निकलना, काटना।

कतवार—पु० कूड़ा करकट।

कतहुँ—कहीं। [मजदूरी।

कताई— स्त्री० कातने की क्रिया या

कतार—स्त्री० पंक्ति, समूह।

कति, कतिक—कितने, किस कदर, कौन, अगणित।

कतिपय—कुछ।

कत्थक—पु० नाचने गानेवाली जाति।

कत्था—पु० खैर जो पान के साथ खाया जाता है।

कत्ल—पु० हत्या, मार डालना।

कत्लआम—पु० सब लोगों की हत्या।

कथंचित—शायद।

कथक—पु० कथावाचक।

कथक्कड़—पु० बहुत कथा कहने वाला।

कथन—पु० वर्णन, उक्ति।

कथनी—स्त्री० कथन, हुज्जत।

कथनीय—कहने योग्य

कथरी—स्त्री० गुदड़ी। [चार।

कथा—स्त्री० कहानी, चर्चा, समा-

कथानक—पु० कथा, छोटी कथा।

कथामुख—पु० कथाग्रंथ की भूमिका।

कथावस्तु—स्त्री० कहानी का ढाँचा, प्लाट।

कथावार्ता—स्त्री० बात-चीत।

कथित—कहा हुआ।

कथितव्य—वक्तव्य।

कथोद्घात–पु० प्रस्तावना ।[विवाद ।
कथोपकथन--पु० बातचीत, वाद-
कदंब—पु० एक वृक्ष, समूह ।
कदंबक--पु० समूह ।
कद—पु०ऊँचाई । स्त्री० शत्रुता, हठ ।
कदन--पु० विनाश, हिंसा, युद्ध, पाप, दुःख ।
कदन्न—पु० बुरा अन्न । [चाल ।
कदम—पु० पाँव, डेग, घोड़े की एक
कदर—स्त्री० प्रतिष्ठा, मात्रा, तौर ।
कदरदान—गुणग्राही ।
कदरदानी--स्त्री० गुणग्राहकता ।
कदराई--स्त्री० कायरता ।
कदराना—कायर होना, डरना ।
कदर्थ—कुत्सित । पु० कूड़ा करकट ।
कदर्थना--स्त्री० दुर्गति ।
कदर्थित--दुर्गति प्राप्त ।
कदर्य—कंजूस, कुत्सित ।
कदली—स्त्री० केला ।
कदा--कब ।
कदाच, कदाचन--कभी ।
कदाचार—पु० बदचलनी ।
कदाचित—शायद, कभी ।
कदापि—कभी ।
कदीम—पुराना, प्राचीन ।
कधी—कभी ।
कन--पु० दे० "कण" ।
कनक—पु० सोना, धतूरा, पलाश, नागकेशर, खजूर, गेहूँ ।

कनककशिपु—हिरण्यकशिपु ।
कनकक्षार--पु० सुहागा ।
कनकनाहट—स्त्री० कनकनी ।
कनकफल—पु० धतूरे का फल, जमालगोटा ।　[सुमेरु पर्वत ।
कनकाचल--पु० सोने का पर्वत,
कनकौआ—पु० गुड्डी ।
कनखी—स्त्री० आँख का इशारा, तिरछी नजर, दूसरों की दृष्टि बचाकर देखने की क्रिया ।
कनछेदन—पु० कर्णवेध ।
कनटोप—पु० कान ढकने की टोपी ।
कनफटा—पु० गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फड़वा कर उनमें स्फटिक की मुद्राएं पहनते
कनवासर—पु० वोट आडर आदि माँगने वाला ।
कनवोकेशन—पु० युनिवर्सिटी का उपाधि वितरणोत्सव ।
कनसुई—स्त्री० आहाट । मु० कनसुई लेना=छिप कर किसी की बात सुनना ।
कनात—स्त्री० मोटे कपड़े की दीवार जिससे किसी स्थान को घेरा जाता है ।　[निकृष्ट ।
कनिष्ठ—सब से छोटा, उम्र में छोटा,
कनिष्ठिका-स्त्री०सबसे छोटी उँगली ।
कनी—स्त्री० छोटा टुकड़ा, बूँद, हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा ।
कनीनिका—स्त्री० आँख की पुतली,

कन्या, छोटी अंगुली ।
कनौजिया—कन्नौज निवासी ।
कनौड़ा—काना, अपंग, निंदित, लज्जित, क्रीत दास, कृतज्ञ मनुष्य, तुच्छ आदमी ।
कन्यका—स्त्री० क्वारी लड़की, पुत्री
कन्या—स्त्री० क्वारी लड़की, पुत्री, एक राशि, बड़ी इलांयची, घीकुमार ।
कन्यादान—विवाह में वर को कन्या देने की रीति ।
कन्सरवेटिव—अनुदार ।[प्यारा नाम ।
कन्हाई, कन्हैया—पु० श्री कृष्ण का
कपट—पु० छल, दुराव । [से होना ।
कपड़ा—पु० वस्त्र, पोशाक । मु० कपड़ों से होना=मासिक धर्म
कपर्द, कपर्दक—पु० जटाजूट, कौड़ी ।
कपर्दिका—स्त्री० कौड़ी ।
कपर्दिनी—स्त्री० दुर्गा ।
कपर्दी—पु० शिव ।
कपाट—पु० किवाड़ । [खप्पर ।
कपाल—पु० खोपड़ा, ललाट, भाग्य,
कपाल क्रिया—स्त्री० जलते हुए शव की खोपड़ी को फोड़ने की क्रिया ।
कपालिका—स्त्री० खोपड़ी, काली ।
कपालिनी—स्त्री० दुर्गा ।
कपाली—पु० शिव, भैरव, ठीकरा लेकर भीख माँगने वाला ।
कपास—स्त्री० रूई का पौधा ।
कपि—पु० बंदर, हाथी, सूर्य ।
कपिकेतु—पु० अर्जुन ।
कपिध्वज—पु० अर्जुन ।
कपिल—भूरा, मटमैला, सफेद । पु० अग्नि, कुत्ता, चूहा, शिलाजीत, महादेव, सूर्य, विष्णु, एक मुनि ।
कपिला—भूरा रंग की, सफेद रंग की, भोलीभाली । स्त्री० सफेद रंग की गाय, सीधी गाय ।
कपूती—स्त्री० पुत्र के अयोग्य आचरण, नालायकी ।
कपोत—पु० कबूतर, पक्षी ।
कपोतवृत्ति—स्त्री० रोज कमाना रोज खाना ।
कपोत व्रत—पु० चुपचाप दूसरे के अत्याचारों को सहना ।
कपोल—पु० गाल ।
कपोलकल्पना—स्त्री० मनगढ़ंत या बनावटी बात ।
कपोलकल्पित—बनावटी, झूठ ।
कप्तान—पु० जहाज या सेना का अफसर, दल का नायक ।
कफ—पु० बलगम, फेन, कमीज के हत्थे की दोहरी पट्टी ।
कफन—पु० मुर्दे का कपड़ा ।
कफन खसोट—कंजूस ।
कफन खसोटी—स्त्री० डोमों का कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफन फाड़ कर लेते हैं, ऐसे बुरे ढंग से धन एकत्र करने की वृत्ति, कंजूसी ।

कफनाना—मुर्दे को कफन में लपेटना ।
कबंध—पु० पीपा, मेघ, पेट, जल, मस्तक हीन देह, राहु ।
कबरा—चितकबरा ।
कबल—पहले ।
कबाड़िया—पु० टूटी फूटी चीजें बेचने वाला व्यक्ति, झगड़ालू आदमी ।
कबाला—पु० वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय ।
कबाहत—स्त्री० तरद्दुद, खराबी ।
कबीला—स्त्री० स्त्री, औरत ।
कबूल—पु० स्वीकार, मंजूर । [है ।
कबूलियत—स्त्री० वह दस्तावेज जो पट्टा लेने वाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा लेने वाले को लिख देता
कब्ज—पु० ग्रहण, दस्त साफ न होना ।
कब्जा—पु० मूँठ, दखल, किवाड़ आदि में लगाने की लोहे या पीतल की एक चीज । [होना ।
कब्जियत—स्त्री० पैखाना साफ न
कब्र—स्त्री० मुर्दा गाड़ने का गड्ढा । मु० कब्र में पैर लटकना = मरने मरने को होना । [स्थान ।
कब्रिस्तान—पु० मुर्दा गाड़ने का
कमंडल, कमंडलु—पु० संन्यासियों का जलपात्र ।
कमंडली—साधु, पाखंडी ।
कम—थोड़ा, बुरा ।

कम असल—वर्णसंकर ।
कमखाब—पु० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसपर कला बत्तू के बेल बूटे बने रहते हैं ।
कमची—स्त्री० पतली लचदार छड़ी ।
कमजोर—निर्बल । [बाँस ।
कमठ—पु० कछुआ, साधुओं का तुंबा,
कमतर—बहुत कम ।
कमनीय—कामना करने योग्य, सुंदर ।
कमनैत—पु० कमान चलाने वाला, तीरंदाज ।
कमनैती—स्त्री० तीरंदाजी ।
कमबख्त—अभागा ।
कमबख्ती—स्त्री० दुर्भाग्य ।
कमर—स्त्री० शरीर का मध्य भाग ।
कमरा—पु० कोठरी, फोटो खींचने का औजार ।
कमल—पु० जल का एक प्रसिद्ध फूल, जल, ताँबा, आँख का कोया, सारस, कमला रोग, मूत्राशय ।
कमलगट्टा—पु० कमल का बीज ।
कमलज—पु० ब्रह्मा । [कृष्ण ।
कमलनयन—जिसकी आखें कमल की तरह सुन्दर हों । पु० विष्णु, राम,
कमलनाभ—पु० विष्णु ।
कमलनाल—स्त्री० कमल की डंडी ।
कमलयोनि—पु० ब्रह्मा ।
कमला—स्त्री० लक्ष्मी, धन, संतरा ।
कमलाक्ष—पु० कमल का बीज,

कमलनयन ।

कमलापति--पु० विष्णु । [आसन ।

कमलासन—पु० ब्रह्मा, योग का एक

कमलिनी—स्त्री० छोटा कमल, कमल वाला तालाब ।

कमसरियट—पु० फौज के मोदी खाने का मुहकमा ।

कमसिन-कम उम्र का । [सेनापति ।

कमांडर इन चीफ- पु० प्रधान

कमाच—पु० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

कमान—स्त्री० धनुष, इंद्रधनुष, मेह-राव, तोप, बंदूक । स्त्री० कमांड, हुक्म, फौजी नौकरी ।

कमानिया—मेहरावदार, तीरंदाज ।

कमाल—पूरा, सर्वोत्तम, अत्यंत । पु० परिपूर्णता, निपुणता, अनोखा कार्य, कारीगरी ।

कमालियत--परिपूर्णता, निपुणता ।

कमिटी--स्त्री० सभा, समिति ।

कमिश्नर—पु० वह अफसर जिसके अधिकार में कई जिले हों ।

कमी—स्त्री० न्यूनता, हानि ।

कमीना—नीच, शुद्र ।

कमीशन—पु० वह समिति जो किसी गूढ़ विषय पर विचार करने के लिये नियत की जाती है, दलाली ।

कमोड—पु० पैखाना फिरने का वर्तन ।

कम्युनिक—पु० सरकारी विज्ञप्ति या सूचना ।

कम्युनिज्म--पु० वह सिद्धांत जिसमें संपत्ति का अधिकार समाज का माना जाता है व्यक्ति का नहीं ।

कम्युनिस्ट-पु०कम्युनिज्म का सिद्धांत मानने वाला ।

कय—पु० वमन ।

कयाम---पु० ठहराव, विश्राम स्थान, ठौर ठिकाना ।

कयामत--स्त्री० प्रलय, खलबली ।

कयास—पु० अनुमान । [छल ।

कर---पु० हाथ, हाथी का सूँड, सूर्य चंद्र की किरण, ओला, मालगुजारी,

करकट—पु० कूड़ा ।

करगह—पु० करघा ।

करग्रह—पु० ब्याह ।

करज—प० नख, उँगली,

करण--पु० औजार, इंद्रिय, देह, क्रिया, स्थान, हेतु, व्याकरण में एक कारक, ज्योतिष में तिथियों का एक विभाग ।

करणीय—करने योग्य ।

करतब—पु० कार्य, कला, करामत ।

करतल—पु० हथेली ।

करतार--पु० ईश्वर ।

करताल--पु० ताली, झाँझ, मँजीरा, लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा ।

करतूत—स्त्री० करनी, कृत्य ।

करद-कर देने वाला, सहारा देनेवाला ।

करधनी — स्त्री० कमर में पहनने का एक गहना, किंकिणी ।
करनी --स्त्री० करतूत, अंत्येष्टि क्रिया ।
करनैल -पु० फौज का बड़ा अफसर ।
करपीड़न--पु० प्राणी ग्रहण, ब्याह ।
करपृष्ठ — पु० हथेली का पिछला भाग ।
करबला — पु० अरब का वह उजाड़ मैदान जहां हुसैन मारे गये थे, तजिया दफनाने की जगह ।
करभ — पु० करपृष्ट, ऊँट का बच्चा, हाथी का बच्चा, कमर ।
करभोरु — हाथी की सूँड के ऐसा जंघावाली ।
करभीर — सिंह ।
करम---पु० काम, भाग्य ।
करमठ--कर्मनिष्ठ ।
करमाली—पु० सूर्य ।
कररुह—नाखून, दुःख ।
करवट--स्त्री० बगल के बल लेटने की मुद्रा ।
करवाल — पु० नख, तलवार ।
करवीर—पु० तलवार, श्मशान, कनेर का पेड़ ।
करश्मा--पु० करामात ।
करामात—स्त्री० चमत्कार [वादा ।
करार—पु० स्थिरता, धीरज, आराम,
करारा--कड़ा, दृढचित्त, तीक्ष्ण, चोखा, घोर, हट्टाकट्टा । पु० नदी का ऊँचा किनारा ।
कराल—बड़दंता, भयावना ।
करावत—स्त्री० संबंध, समीपता ।
कराह--पु० पीड़ा का शब्द ।
कराहना—आह करना !
करिंद--पुं० बड़ा हाथी, ऐरावत ।
करि — पु० हाथी ।
करिणी—स्त्री० हथिनी ।
करिवदन--पु० गणेश ।
करी—पु० हाथी । स्त्री० शहतीर ।
करीना—पु० दे० "केराना" ।
करीब--निकट, लगभग ।
करीम--कृपालु । पु० ईश्वर ।
करीर — पु० करील, घड़ा ।
करील--पु० एक कँटीली झाड़ी जिस में पत्तियां नहीं होतीं ।
करीश—पु० गजराज ।
करुण—करुणायुक्त, दयार्द्र । पु० नव रसों में एक रस, करुणा, परमेश्वर ।
करुणा—स्त्री० दया, शोक ।
करुणादृष्टि— स्त्री० दया दृष्टि ।
करुणानिधान, करुणानिधि-जिस का हृदय करुणा से भरा हो ।
करुणामय — दयामय ।
करुणायतन—पु० दया के घर ।
करुणार्द्र --दयालु । [वाला नोट ।
करेंसी--स्त्री० हाथोंहाथ चलने
करेणु—पु० हाथी ।
करेणुका—स्त्री० हथनी ।

करेर--कठोर।

करोड़पती—जिसके पास करोड़ों रुपये हों, बहुत धनी।

करोड़ी—पु० तहबीलदार।

करौंट—स्त्री० करवट। [दर्पण।

कर्क—पु० केकड़ा, एक राशि, अग्नि,

कर्कट—पु० केकड़ा, कर्क राशि, एक पक्षी, लौकी, कमल की मोटी जड़।

कर्कटी—स्त्री० कछुई, ककड़ी, सेमल का फल, साँप।

कर्कश-कठोर, खुरखुरा, तीव्र, अधिक, क्रूर। पु० ऊख, तलवार।

कर्कशा—स्त्री० झगड़ालू, लड़ाकी।

कर्ज—पु० ऋण। [की रेखा।

कर्ण—पु० कान, नाव की पतवार, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने

कर्णकटु—कान को अप्रिय।

कर्णकुहर—पु० कान का छेद।

कर्णगोचर—सुनना। [पतवार।

कर्णधार—पु० पतवार पकड़ने वाला,

कर्णवेध—पु० कनछेदन। [डंठल।

कर्णिका—स्त्री० करनफूल, हाथ की बिचली ऊँगली, हाथी की सूँड की नोक, कमल का छत्ता, सफेद गुलाब, कलम,

कर्त्तन—पु० कतरना, कातना।

कर्त्तनी—स्त्री० कैंची। [कटारी।

कर्त्तरिका, कर्त्तरी—स्त्री० कैंची,

कर्त्तव्य-करने योग्य। पु० करने योग्य काम, फर्ज, धर्म।

कर्त्तव्यता—स्त्री० कर्तव्य का भाव।

कर्त्तव्यमूढ़-जिसे यह न सूझे कि क्या करना चाहिये, भौचक्का।

कर्त्ता-पु० करने वाला, रचनेवाला, ईश्वर, एक कारक।

कर्त्तार—पु० करने वाला, ईश्वर।

कर्त्तृक—किया हुआ।

कर्त्तृत्व—पु० कर्त्ता का धर्म

कर्त्तृप्रधान--जिसमें कर्ता प्रधान हो।

कर्त्तृवाचक-कर्त्ता का बोध करानेवाला।

कर्त्तृवाच्यक्रिया--वह क्रिया जिसमें कर्ता का बोध प्रधान रूप से हो।

कर्दम—पु० कीचड़, मांस, पाप।

कर्नल-पु० एक फौजी अफसर।

कर्पटी-चिथड़ा पहननेवाला भिखारी।

कर्पर—पु० कपाल, खप्पर, कड़ाह, गूलर, एक शस्त्र।

कर्पास--पु० कपास।

कर्पूर--पु० कपूर।

कर्म-पु० काम, भाग्य, मृतक संस्कार, व्याकरणमें वह शब्द जिसपर क्रिया का प्रभाव पड़े। [विधान हो।

कर्मकांड--पु० कर्म सम्बन्धी कृत्य, वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का

कर्मकांडी-पु० कर्मकांड करानेवाला।

कर्मकार--पु० लोहा या सोने का काम करनेवाला, बैल, नौकर, बेगार।

कर्मक्षेत्र—पु० कार्य करने का स्थान, भारतवर्ष।

कर्मचारी—पु० कार्यकर्ता, अमला ।
कर्मठ—काम में चतुर, कर्मनिष्ठ ।
कर्मणा—कर्म से ।
कर्मण्य—उद्योगी । [वाला ।
कर्मनिष्ठ—धर्म सम्बन्धी कृत्य करने
कर्मभोग—पु० कर्मफल ।
कर्मयुग—पु० कलियुग । [कर्म ।
कर्मयोग—पु० चित्त शुद्ध करने वाला
कर्मरेख—स्त्री० भाग्य की रेखा, तकदीर ।
कर्मवाच्य क्रिया—स्त्री० वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य हो कर कर्त्ता के रूप में आया हो ।
कर्मवाद—पु० मीमांसा जिसमें कर्म प्रधान माना गया है, कर्मयोग ।
कर्मविपाक—पु० कर्मफल ।
कर्मशील—पु० उद्योगी ।
कर्मसंन्यास—पु० कर्मफल का त्याग ।
कर्महीन—शुभ कर्म से रहित, अभागा ।
कर्मिष्ठ—काम में चतुर, कर्मनिष्ठ ।
कर्मी—काम करने वाला ।
कर्मेंद्रिय—पु० वह अंग जिससे क्रिया की जाती है । ये पाँच हैं—हाथ, पैर वाणी, गुदा, उपस्थ । [तौल ।
कर्ष—पु० खिंचाव, जोताई, जोश, एक पुराना सिक्का, सोलह मासा की एक
कर्षक—पु० खींचने वाला, हलवाहा ।
कर्षण—पु० खींचना, जोतना, कृषि कर्म ।

कलंक—पु० धब्बा, लांछन, ऐब, कालिख ।
कलंकी—दोषी । पु० कल्कि अवतार ।
कलंदर—पु० एक मुसलमान फकीर, बंदर भालू नचाने वाला ।
कलेंडर—पु० अंगरेजी तिथिपत्र ।
कल—सुन्दर, मधुर, अगला दिन, पिछला दिन । पु० मधुर ध्वनि, वीर्य । स्त्री० तन्दुरुस्ती, आराम, संतोष, पहलू, अंग, युक्ति, यंत्र, पेच, पुरजा । [असली भेद खुलना ।
कलई—स्त्री० राँगा, लेप, मुलम्मा, तड़क-भड़क । मु० कलई खुलना =
कलकंठी—मीठी ध्वनि करने वाला ।
कलक—पु० बेचैनी, दुःख ।
कलकल—पु० झरने आदि के जल के गिरने का शब्द, कोलाहल । स्त्री० झगड़ा । [वाली ।
कलकूजिका—स्त्री० मधुर ध्वनि करने
कलक्टर—पु० जिलेका प्रधान अफसर ।
कलक्टरी—स्त्री० कलक्टर का पद, जिले में माल के मुकद्दमे की कचहरी ।
कलगी—स्त्री० पक्षियों के सुन्दर पंख जो पगड़ी ताज आदि में लगाये जाते हैं, चिड़ियोंके सर पर की चोटी, इमारत का शिखर ।
कलत्र—पु० स्त्री, पत्नी । [ध्वनि ।
कलधौत—पु० सोना, चाँदी, सुन्दर
कलन—पु० उत्पन्न करना, धारण

करना, आचरण, सम्बंध, गणित की क्रिया जैसे संकलन, व्यवकलन, ग्रास, ग्रहण ।

कलप-पु० कलफ, खिजाब, कल्प ।

कलबल-पु० दाँव पेंच, शोर गुल ।

कलभ-पु०-ऊँट या हाथीका बच्चा ।

कलम-पु० स्त्री० लेखनी, चित्र रंगने की कूची, पेड़ की डाली जो अन्यत्र लगाने या किसी दूसरे वृक्ष में बाँधने को काटी जाय । मु० कलम तोड़ना = अनूठी उक्ति करना ।

कलमकसाई—पु० कुछ लिख पढ़ कर लोगों की हानि करनेवाला ।

कलमकारी—स्त्री० नक्काशी ।

कलमतराश—पु० चाकू ।

कलमदान—पु० कलम दवात रखने का छोटा बक्स ।

कलमलना—कुलबुलाना ।

कलमा—पु० वाक्य, वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है ।

कलमी—लिखित, कलम का ।

कलरव—पु० मधुर शब्द, कोकिल, कबूतर ।

कलश—पु० घड़ा, चोटी, मंदिर आदि का शिखर या कंगूरा ।

कलहंस—पु० हंस, राजहंस, श्रेष्ठ, राजा, ब्रह्म, परमात्मा ।

कलह—पु० झगड़ा ।

कलाँ—बड़ा, दीर्घाकार ।

कला—स्त्री० भाग, अंश, चंद्रमा का सोलहवाँ भाग, राशि के तीसवें अंश का ६० वां भाग, वृत्त का १८००वाँ भाग, राशिचक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग, समय का एक विभाग, मात्रा, जिह्वा, स्त्रीरज, विभूति, छटा, तेज, कौतुक, छल, युक्ति, कसरत,

कलाई—स्त्री० पहुँचा ।

कलाकौशल—पु० कारीगरी, शिल्प ।

कलाधर—पु० चंद्रमा, शिव, कलाओं का ज्ञाता ।

कलानाथ, कलानिधि—पु० चाँद ।

कलाप—पु० समूह, मोर की पूँछ, तरकश, कमरबंद, करधनी, चन्द्रमा, भूषण, व्यापार । [श्लोकों का समूह।

कलापक—पु० समूह, मुट्ठा, चार

कलापिनी—स्त्री० रात्रि, मयूरी ।

कलापी—तरकशबंद, झुण्ड में रहने वाला । पु० मोर, कोकिल ।

कलाबत्तू—पु० सोने चाँदी आदि का तार ।

कलावाज—नट ।

कलाभृत्—पु० चन्द्रमा । [उज् ।

कलाम—वाक्य, कथन, वादा,

कलावान—कलाकुशल, गुणी ।

कलिंग—कुलंग पक्षी, कुटज, इंद्र जौ, सिरिस का पेड़, पाकर का पेड़, तरबूज ।

कलिंद—पु० बहेड़ा, सूर्य, एक पर्वत

जिससे यमुना नदी निकलती है।
कलि—काला। पु० कलह, पाप, दुःख युद्ध, वीर, एक युग।
कलिका—स्त्री० कली, वीणा का मूल, एक बाजा, एक छंद।
कलिकाल—पु० कलियुग [सुंदर।
कलित—विदित, प्राप्त, सुसज्जित,
कलिमल—पु० पाप।
कलियुग—पु० चार युगों में चौथा युग जो वर्तमान है।
कली—स्त्री० विना फूला फूल।
कलील—थोड़ा।
कलुष—मलिन, निंदित, दोषी। पु० मलिनता, पाप, क्रोध।
कलुषित—दूषित, मलिन, पापी, दुःखित, असमर्थ, क्षुब्ध, काला।
कलूटा—पु० काला।
कलेऊ—पु० कलेवा।
कलेजा—पु० हृदय, दिल, हिम्मत। मु० कलेजा जलाना = दुःख देना। कलेजा टूक टूक होना = अत्यन्त शोक होना। कलेजा ठण्ढा होना = संतोष होना। कलेजा पत्थर करना = दुःख झेलने के लिये चित्त को दबाना। कलेजा मुँह को आना = दुःख से व्याकुल होना। कलेजा पर साँप लोटना = एकबारगी शोक छा जाना।
कलेवर—पु० शरीर, ढाँचा।
कलेवा—पु० जलपान, पाथेय।
कलोल—स्त्री० आमोद प्रमोद।
कल्क—पु० चूर्ण, पीठी, गूदा, दंभ, शठता, मैल, विष्ठा, पाप, अवलेह, बहेड़ा। [अवतार।
कल्कि—पु० विष्णु का दसवाँ
कल्प—तुल्य। पु० विधान, एक शास्त्र, प्रातःकाल, उपाय, विभाग, ब्रह्मा का एक दिन। [पु० नाई।
कल्पक—रचनेवाला, काटनेवाला।
कल्पकार—पु० कल्प शास्त्र रचयिता।
कल्पतरु, कल्पद्रुम—पु० कल्पवृक्ष।
कल्पना—स्त्री० बनावट, अनुमान, अध्यारोप, मानलेना, मनगढंत बात।
कल्पवास—पु० माघ में गंगासेवन।
कल्पवृक्ष—पु० पुराणानुसार देवलोक में वह अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला समझा जाता है।
कल्पसूत्र—पु० वैदिक कर्मकांड, सृष्टि के आरम्भ का समय।
कल्पांत—पु० प्रलय।
कल्पित—जिसकी कल्पना की गयी हो, मनगढंत, बनावटी।
कल्मष—पु० पाप, मल।
कल्य—पु० प्रातःकाल, मधु, शराब।
कल्यपाल—पु० कलवार।
कल्याण—पु० मंगल, सोना।
कल्याणी—कल्याण करनेवाली, सुंदरी।
कल्लातोड़—मुँहतोड़।
कल्लादराज—मुँहजोर।

कल्लोल—पु० तरंग, आमोद प्रमोद।
कल्लोलिनी—स्त्री० नदी। [डंका।
कवच—पु० आवरण, बकतर, तावीज,
कवर—पु० ग्रास, कौर, केशपाश, गुच्छ, पुस्तकों के अक्षर का कागज।
कवरी—स्त्री० चोटी, जूड़ा।
कवर्ग-क से ङ तक का अक्षर समूह।
कवल--पु० कौर, कुल्ली।
कवलित--भक्षित।
कवायद--स्त्री० नियम, व्याकरण, युद्ध नियमों का अभ्यास।
कवि—पु० काव्य रचनेवाला, ऋषि, ब्रह्मा, शुक्राचार्य, सूर्य।
कविता--स्त्री० रमणीय पद्यमय वर्णन।
कवित्त—पु० एक छंद। [काव्यगुण।
कवित्व--पु० काव्य रचना, शक्ति,
कविराज-पु० श्रेष्ठ कवि, भाट, बंगाली वैद्यों की उपाधि।
कविराय—पु० कविराज।
कशमकश—स्त्री० खींचातानी, धकम धक्का, आगापीछा।
कशीदा—पु० बेलबूटा।
कश्चित—कोई।
कश्ती—स्त्री० नौका।
कश्मल—पु० मूर्च्छा।
कश्यप—पु० कछुआ।
कष—सान, कसौटी, जाँच।
कषाय—कसैला, सुगंधित, रँगा हुआ, गेरू के रंग का।
कष्ट--पु० पीड़ा, संकट।
कष्ट कल्पना--स्त्री० बहुत कठिनता से ठीक घटने वाली युक्ति।
कष्टसाध्य--कष्ट से होनेवाला।
कस--कैसे। पु० बल, काबू, रोक, अर्क, तत्व। [हौसला, सहानुभूति।
कसक--स्त्री० टीस, पुराना बैर,
कसना--बाँधना, खींचना, परखना, भरना। [परख।
कसनी—स्त्री० रस्सी, अँगिया, कसौटी,
कसब—पु० मेहनत, रोजगार, वेश्या-वृत्ति।
कसबा--पु० बड़ा गाँव।
कसबी--स्त्री० वेश्या।
कसम—स्त्री० शपथ। [बेचैनी।
कसमसाहट—स्त्री० कुलबुलाहट,
कसर--स्त्री० कमी, बैर, नुक्स।
कसरत--स्त्री० व्यायाम, अधिकता।
कसाई—निर्दय। पु० वधिक, बूचड़।
कसाला--पु० कष्ट, मेहनत।
कसूर—पु० अपराध, दोष।
कसूरमंद, कसूरवार—दोषी।
कसेरा--पु० काँसे आदि का बरतन बनाने और बेचने वाला। [आँवला।
कसैला--कषाय स्वाद वाला जैसे
कसौटी—स्त्री० एक तरह का काला पत्थर जिसपर रगड़ कर सोने की परख की जाती है, परीक्षा।
कस्टम ड्यूटी—स्त्री० कर, चुंगी।

कस्टम हाउस—वह स्थान जहाँ विदेश से आने वाले माल का महसूल देना पड़ता है।
कस्तूर—पु० कस्तूरी मृग।
कस्तूरिका—स्त्री० कस्तूरी।
कस्तूरिया—कस्तूरी के रंग का, कस्तूरी वाला। पु०कस्तूरी मृग।
कस्तूरी—स्त्री० वह प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।
कस्तूरीमृग—पु० वह मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलता है।
कस्द—पु० इरादा।
कहँ—को, के लिये, कहाँ।
कह कहा—जोर की हँसी।
क़हत—पु० अकाल, दुर्भिक्ष।
कहनावत—स्त्री० कथन, कहावत।
कहर—भयंकर। पु० विपत्ति।
कहरी—आफत ढाने वाला। [होना।
कहलना—अकुलाना, गरमी से व्याकुल
कहलाना—कहना का प्रेरणार्थक रूप, गरमी से व्याकुल होना।
कहवा—पु० एक मादक द्रव्य।
कहा—कैसे ,क्या। पु० कथन।
कहाकही—स्त्री० झगड़ा।
कहानी—स्त्री० किस्सा, गढ़ी बात।
कहावत—स्त्री० ऐसा बँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की बात संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गयी हो, लोकोक्ति, मसल, उक्ति।
कहा सुना—पु० भूल चूक।
कहा सुनी—स्त्री० झगड़ा।
कहीं—किसी अनिश्चित स्थान में, कभी नहीं, कदाचित्, नहीं, अगर, बहुत अधिक।
कहुँ—कहीं।
काँइयाँ—चालाक, धूर्त।
काँकरी—स्त्री० छोटा कंकड़।
कांक्षनीय—चाहने लायक।
कांक्षा—स्त्री० इच्छा, चाह।
कांक्षी—चाहने वाला।
कांचन—पु० सोना, कचनार, चंपा, नागकेशर, धतूरा।
कांची—स्त्री० करधनी, गोटा, गुंजा।
कांचीपद—पु० जाँघ, नितंब।
काँजी—स्त्री० छाछ, मट्ठा। [हाउस"।
काँजी हाउस—पु० दे० "कानी
कांड—पु० घटना, पोर, सरकंडा, वृक्ष का तना, शाखा, गुच्छा, विभाग, समूह।
काँड़ना—रौंदना, कूटना, मारना।
कांडर्षि—पु० वह ऋषि जिसने वेद के किसी कांड पर विचार किया हो।
कांत—पु० पति, चन्द्रमा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, श्रीकृष्ण, वसंत ऋतु, कुंकुम, एक प्रकार का लोहा।
कांतसार—पु० कांत लोहा।
कांता—स्त्री० प्रिया, पत्नी।

कांतार—भयानक स्थान, गहन वन, बाँस, छेद, ईख।
कांति—स्त्री० आभा, तेज, छवि।
काँथरि—स्त्री० दे० "कथरी"।
काँधना—उठाना, ठानना, सकार
काँधर, काँधा—पु० दे० "कान्ह"।
काँवरू—पु० दे० "कामरूप"।
कांस्टेबिल-पु० पुलिस का सिपाही।
कांस्य—पु० काँसा, कसकूट।
काई—स्त्री० मुर्चा, मैल।
काऊ—कभी, कोई, कुछ।
काक—पु० कौआ, काग।
काक गोलक—पु० कौवे की आँख की पुतली जो एक ही दोनों आँखों में घूमती हुई कही जाती है।
काकतालीय-संयोगवश होने वाला।
काकदंत—पु० असंभव बात।
काकपक्ष—पु० जुल्फ।
काकपद—पु० वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिये पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।
काकबंध्या—स्त्री० वह स्त्री जो एक संतान उत्पन्न करने के बाद बंध्या हो गयी हो।
काकबलि—स्त्री० श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं को दिया जाता है।
काकली—स्त्री० मधुर ध्वनि।
काकाक्षिगोलक न्याय—पु० एक शब्द या वाक्य को उलट फेर कर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना।
काकु—पु० व्यंग्य।
काकुल—पु० जुल्फ। [ढेंपी।
काग—पु० कौआ, शीशी या बोतल की
कागजात—पु० कागज का बहुवचन, कागजपत्र।
कागजी—कागज का, लिखित।
कागद, कागर—पु० कागज।
काच लवण—पु० काला नोन।
काछ—पु० जांघ के जोर पर का स्थान, धोती का पीछे खोंसा जाने वाला भाग, नटवेश धारण।
काछनी—स्त्री० दे० "कछनी"।
काछे—निकट, पहने हुए।
काज—कार्य, रोजगार, मतलब, विवाह, बटन के लिये छेद।
काजल—पु० अंजन। [कारी।
काजी—पु० मुसलमानों में न्यायाधि-
काट—स्त्री० तराश, जख्म, कपट।
काटना—खंड करना, कम करना, खेपना, रद्द करना। मु० काटो तो खून नहीं = स्तब्ध होना।
काठ—पु० लकड़ी। मु० काठ का उल्लू =वज्र मूर्ख। काठ होना=स्तब्ध होना।
काठिन्य—पु० कठिनता। [लेना।
काढ़ना—निकालना, उरेहना, ऋण
काढ़ा—पु० जल में औंटी हुई औषधि का रस।

मुंशी सिंह

कातर—अधीर, भयभीत, डरपोक, दुःखित ।

कातिब—पु० लिखने वाला ।

कातिल—हत्यारा ।

कात्यायनी—स्त्री० दुर्गा, कषाय वस्त्र धारिणी अधेड़ विधवा स्त्री ।

कादंबरी—स्त्री० कोयल, वाणी, मदिरा, मैना ।

कादंबिनी—स्त्री० मेघमाला ।

कादर—डरपोक, अधीर ।

कान—श्रवण, कर्ण । मु० कान काटना= मात करना । कान खड़ा करना = सचेत होना । कान धरना = ध्यान देना । कान पर जू न रेंगना = परवा न करना । कान भरना = शिकायत करना या उभाड़ना ।

कानन—पु० जंगल, घर ।

काना—एक आँखवाला ।

कानाकानी—स्त्री० कानाफूसी, एक कान से दूसरे कान तक फैलना ।

कानाफूसी—स्त्री० कान में कहना ।

कानि—स्त्री० लोकलाज, संकोच ।

कानी उँगली—स्त्री० सब से छोटी उँगली ।

कानी कौड़ी—स्त्री० फूटी कौड़ी ।

कानी हाउस—पु० वह घर जहाँ हानि पहुँचानेवाला पशु बंद किया जाता है, फाटक, अड़गला ।

कानून—पु० राजनियम ।

कानूनगो—पु० पटवारियों के कागज देखनेवाला कर्मचारी ।

कानूनदां—जो कानून जाने ।

कानूनन्—कानून से ।

कानूनी—कानून जाननेवाला, कानून सम्बन्धी, कानून के मुताबिक, हुज्जती ।

कान्ह, कान्हर—पु० श्रीकृष्ण ।

कापालिक—पु० शैव मत के तांत्रिक साधु ।

कापाली—पु० शिव ।

कापी—स्त्री० नकल, लिखने की बही ।

कापी नवीश—लेखक, कापी लिखनेवाला ।

कापुरुष—पु० कायर, डरपोक ।

काफिया—पु० तुक ।

काफिर—मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म माननेवाला, ईश्वर को न माननेवाला, निर्दय, दुष्ट ।

काफिला—पु० यात्रियों का झुंड ।

काफी—पर्य्याप्त, पूरा ।

काफूर—पु० कपूर । मु० काफूर होना = गायब होना ।

काबर—चितकबरा ।

काबा—पु० अरब में मुसलमानों का तीर्थ स्थान ।

काबिज—अधिकारी, दस्त रोकने वाला ।

काबिल—योग्य, विद्वान् ।

काबिलियत—स्त्री० योग्यता, विद्वत्ता ।

काबू—पु० इख्तियार ।

काम—पु० इच्छा, कामदेव, शिव, विषय वासना, कार्य, कारबार, उपयोग, प्रयोजन, सरोकार। मु० लड़ाई में काम आना = लड़ाई में मारा जाना। काम तमाम करना = मार डालना।

कामकला—स्त्री० रति, मैथुन।

कामजित—काम को जीतनेवाला, शिव, कार्तिकेय।

कामज्वर—पु० वासना से उत्पन्न या वासना रूपी ज्वर।

कामतरु—पु० कल्पवृक्ष।

कामता—पु० चित्रकूट।

कामद—मनोरथ पूरा करनेवाला।

कामदमणि—स्त्री० चिंतामणि।

कामदहन—पु० शिव।

कामदा—स्त्री० कामधेनु। [वाला।

कामदार—पु० अमला, बेल बूटा

कामदुहा—कामधेनु।

कामदेव—पु० स्त्री-पुरुष-संयोग की इच्छा उत्पन्न करनेवाला देवता, संभोग लालसा।

कामधुक, कामधेनु—स्त्री० पुराणानुसार वह गाय, जिससे जो कुछ माँगा जाय दे दे।

कामना—स्त्री० मनोरथ।

कामयाब—सफल।

कामरी—स्त्री० छोटा कम्बल।

कामरूप—पु० आसाम का एक स्थान जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है, इच्छानुसार रूप धारण करने वाला, सुन्दर।

कामवती—काम वासना वाली।

कामवान्—पु० कामेच्छा वाला।

काम-शास्त्र—पु० काम संबंधी विद्या।

कामसखा—पु० वसंत।

कामिनी—स्त्री० कामवती, सुन्दरी।

कामिल—पूरा, योग्य।

कामी—इच्छुक, विषयी। पु० चकवा, कबूतर, सारस, चन्द्रमा।

कामुक—चाहनेवाला, विषयी।

काम्य—जिसकी इच्छा हो, जिससे कामना सिद्ध हो।

काम्येष्टि—स्त्री० वह यज्ञ जो कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

काम्रेड—पु० सहयोगी, साथी।

काय—प्रजापति संबंधी। स्त्री० शरीर, पूंजी, समुदाय।

कायक—शरीर संबंधी। [व्यवस्था।

कायदा—पु० नियम, चाल, विधि,

कायम—स्थिर, स्थापित, निश्चित।

कायम-मुकाम—स्थानापन्न।

कायर—डरपोक।

कायल—कबूल करनेवाला।

कायस्थ—काय में स्थित। पु० जीवात्मा, परमात्मा, एक जाति।

कायाकल्प—पु० औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त

करने की क्रिया।

कायापलट—स्त्री० भारी हेरफेर, एक शरीर का दूसरे शरीर में पलटना।

कायिक—शरीर संबंधी, शरीर से किया हुआ, संघ संबंधी।

कार—पु० क्रिया, कार्य, बनानेवाला, एक शब्द जो किसी अक्षर में लगकर उसी अक्षर का बोध कराता है।

कारक—करनेवाला, व्याकरण में क्रिया से संबंध रखनेवाला संज्ञा या सर्वनाम शब्द।

कारकुन—पु० प्रबन्ध-कर्त्ता।

कारखाना—पु० फैक्टरी, कारबार, घटना, क्रिया।

कारगर—प्रभावजनक, उपयोगी।

कारगुजार—कर्त्तव्यपालक।

कारगुजारी—स्त्री० कर्तव्य-पालन, कार्यपटुता, कर्मण्यता। [करनेवाला।

कारचोब—पु० जिसपर कपड़ा तान कर जरदोजी का काम किया जाता है, जरदोजी या कसीदे का काम

कारटून—पु० व्यंग चित्र।

कारण—पु० वजह, निमित्त, आदि, साधन, कर्म, प्रमाण। [परमेश्वर।

कारण करण—पु० कारण का कारण,

कारण-शरीर—पु० सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इन्द्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है पर अहंकार आदि का संस्कार रह जाता है। [नली।

कारतूस—पु० गोली-बारूद भरी एक

कारनिस—स्त्री० दीवार की कँगनी।

कारपरदाज—पु० प्रबन्धकर्त्ता।

कारपोरेशन—पु० बड़े शहरों की म्युनिसिपैलिटी।

कारबार—पु० व्यवसाय।

काररवाई—स्त्री० कर्मण्यता, चाल।

कारवाँ—पु० यात्रियों का झुंड।

कारसाजी—स्त्री० काम पूरा करने की युक्ति, चालबाजी।

कारस्तानी—स्त्री०कार्रवाई, चालबाजी।

कारा—स्त्री० बंधन, कैद, पीड़ा।

कारागार, कारागृह—पु० कैदखाना।

कारावास—पु० कैद।

कारिंदा—पु० कर्मचारी।

कारिका—स्त्री० किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या, नटी।

कारित—कराया हुआ।

कारी—पु० करनेवाला, बनानेवाला।

कारीगर—निपुण। पु० शिल्पकार।

कारुणिक—कृपालु। [करता था।

कारूँ—हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था पर खैरात नहीं

कारूँका खजाना—अनंत संपत्ति।

कार्क-पु० बोतल आदि की एक ठेपी।

कार्ड—पु० मोटा कागज।

कार्पण्य—पु० कृपणता।

कार्मुक—पु० धनुष, चाप, इंद्रधनुष,

बाँस, सफेद खैर, बकायन, धनुराशि।
कार्य—पु० काम, धंधा, फल।
कार्यवाही—स्त्री० काम, कारवाई।
कार्यालय—पु० आफिस, दफ्तर।
काल—पु० समय, मृत्यु, यमराज, मौका, अकाल, शिव का एक नाम।
कालकूट—पु० एक अत्यंत भयंकर विष।
कालकोठरी—स्त्री० जेल के अन्दर बहुत तंग और अंधेरी कोठरी।
कालक्षेप—पु० दिन काटना।
कालखंड—पु० परमेश्वर।
कालचक्र—पु० जमाने की गर्दिश, एक अस्त्र।
कालज्ञ—पु० ज्योतिषी।
कालदंड—पु० यम का दंड। [धर्म।
कालधर्म—पु० मृत्यु, समयानुसार
कालनिशा—स्त्री०, दे० "कालरात्रि"।
कालपाश—पु० यमराज का बंधन।
कालपुरुष—पु० परमेश्वर, काल।
कालबूत—पु० वह कच्चा भराव जिस पर मेहराब बनायी जाती है, जूता बनाने का साँचा। [गण।
कालभैरव—पु० शिव का एक मुख्य
कालम—पु० अखबार आदि में पृष्ट की चौड़ाई में किये हुए विभाग।
कालरा—पु० हैजा।
कालयापन—पु० समय बिताना।
कालरात्रि—स्त्री० अंधेरी और भयावनी रात, प्रलय की रात, मृत्यु की रात, दिवाली की रात, दुर्गा की एक मूर्ति।
कालाग्नि—पु० प्रलय कीआग, रुद्र।
काला चोर—पु० भारी चोर।
काला पहाड़—भारी और भयानक।
कालापानी—ऐंडमन और निकोबर आदि द्वीप जहाँ समुद्र का पानी काला दिखाई पड़ता है और जहाँ देश निकाले के कैदी भेजे जाते हैं, देश निकाले का दंड, शराब।
कालास्त्र—पु० एक बाण जिससे मृत्यु निश्चित मानी जाती है।
कालिंदी—स्त्री० कलिंद पर्वत से निकली यमुना नदी।
कालिक—समय सबंधी, जिसका समय नियत हो।
कालिका—स्त्री० काली, कालापन, स्याही, मेघ, मदुरा, आँख की काली पुतली, रणचंडी।
कालिब—पु० टीन आदि का ढाँचा जिसपर चढ़ाकर टोपियाँ ठीक की जाती हैं।
कालिमा—स्त्री० कालापन, कालिख, अंधेरा, कलंक, दोष।
काली-स्त्री० दुर्गा, कालिका, पार्वती।
कालीन-काल संबंधी, पु० मोटे तागों का बना बेल बूटेदार बिछावन, गलीचा।
काल्पनिक—मनगढंत, पु० कल्पना

करने वाला ।
काव्य—पु० रसात्मक रचना ।
कालोनी—स्त्री० उपनिवेश ।
काश—ईश्वर करे, इच्छा यह है ।
काशिका—प्रकाशिका, प्रकाशित । स्त्री० काशी पुरी ।
काशी करवट—पु० काशी में एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर मरना बहुत पुण्य मानते थे ।
काश्त—स्त्री० खेती ।
काश्तकार—पु० किसान । [कपड़ा ।
काश्मीरा—पु० एक मोटा ऊन ।
काषाय—हर्रे बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं से रंगा गेरुआ ।
काष्ठ—पु० लकड़ी, जलावन ।
काष्ठा—स्त्री० अवधि, सीमा, उत्कर्ष, चंद्रकला, दिशा, अठारह पल का समय ।
कासिद—पु० संदेशा-वाहक ।
काह—क्या ।
काहि—किसको, किससे ।
काहिल—आलसी ।
काहू—किसी ।
किंकर—पु० दास । [हक्कबक्का ।
किं कर्त्तव्य विमूढ़—जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिये,
किंकिणी—स्त्री० करधनी, क्षुद्रघंटिका ।
किंचित—कुछ ।
किंजल्क—पु० पद्मकेशी, कमल, कमल का पराग, नागकेशर ।
किंतु—लेकिन, बल्कि ।
किं पुरुष—पु० किन्नर, दोगला ।
किंवदंती—स्त्री० अफवाह ।
किंवा—या तो, अथवा ।
किंशुक—पु० पलाश ।
कि—क्या, किस प्रकार, इतने में, या, एक संयोजक शब्द ।
कित—कहाँ, किस ओर ।
किता—पु० भूभाग, चाल, सँख्या ।
किताब—स्त्री० पुस्तक, बही । मु० किताबी कीड़ा = सदा पढ़ने वाला ।
कितेक—कितना, बहुत ।
कितै—कहाँ, किस ओर ।
कितो—कितना ।
किधौं—अथवा, या तो, न जाने ।
किन—क्यों न, चाहे, 'किस' का बहुवचन, पु० दाग । [एक जाति ।
किन्नर—पु० एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है, गाने-बजाने का पेशा करनेवाली
किन्नरी—स्त्री० किन्नर को स्त्री, एक तरह का तंबूरा, सारंगी ।
किफायत—स्त्री० कमखर्ची ।
किबला—पु० पच्छिम दिशा, मक्का, पूज्य व्यक्ति, पिता ।
किबलानुमा—पु० पच्छिम दिशा को बतलानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार

अरब के मल्लाह जहाजों पर करते थे।
किम— क्या, कौन सा।
किमि—कैसे।
कियत्— कितना।
किरकिरा—कँकरीला। मु॰ किरकिरा हो जाना = रंग में भंग हो जाना।
किरकिरी—स्त्री॰ धूल आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है।
किरच—स्त्री॰ एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। [रेखाएं।
किरण—स्त्री॰ ज्योति की अति सूक्ष्म
किरणमाली—पु॰सूर्य। [जाति।
किरात—स्त्री॰ एक प्राचीन जंगली
किराया—पु॰ भाड़ा।
किरिच—स्त्री॰ देखो "किरच"।
किरीट—पु॰ एक प्रकार का शिरो-भूषण।
किल—निश्चय, सचमुच।
किलक,किलकारी, किलकिला—स्त्री॰ हर्षध्वनि।
किलना—वश में होना, गति रुकना।
किला—पु॰ दुर्ग, गढ़। [रचना।
किलाबंदी—स्त्री॰ दुर्गनिर्माण, व्यूह
किल्लत—स्त्री॰ कमी, तंगी।
किल्विष—पु॰ पाप, रोग।
किशलय—पु॰ नया पत्ता।
किशोर—पु॰ ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का बालक, पुत्र।
किश्त—स्त्री॰ शह।
किश्ती—स्त्री॰ नाव, तश्तरी।
किश्तीनुमा—नाव के आकार का।
किष्किंधा—स्त्री॰ किष्किंध पर्वत श्रेणी, किष्किंधा पर्वत की गुफा।
किसलय—पु॰ दे॰ "किशलय"।
किस्त—स्त्री॰ कई बार करके ऋण चुकाने का ढंग, किसी ऋण का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय। [चुकाने का ढंग।
किस्तबंदी—स्त्री॰ थोड़ा थोड़ा ऋण
किस्तवार—किस्त करके, हर किस्त पर।
किस्म—स्त्री॰ प्रकार, ढंग।
किस्मत—स्त्री॰ भाग्य।
किस्मतवर—भाग्यवान।
किस्सा—पु॰ कहानी, वृतांत, कांड।
कीकर—पु॰ बबूल। [सफेद मल।
कीच, कीचड़—पु॰ पंक, आँख का
कीट—पु॰ कीड़ा। स्त्री॰ मल।
कीटभृंग—पु॰ एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब कई वस्तुएँ बिलकुल एक रूप हो जाती हैं।
कीमत—स्त्री॰ दाम, मूल्य।
कीमती—बहुमूल्य।
कीमिया—स्त्री॰ रसायन।
कीमियागार—रसायन बनानेवाला।
कीर—पु॰ सुग्गा, व्याध, कश्मीर देश, कश्मीरवासी।

कीरति—स्त्री० दे० "कीर्ति"।
कीर्तन—पु० गुण-कथन।
कीर्त्ति—स्त्री० पुण्य, यश, प्रसाद।
कीर्त्तिमान्——यशस्वी।
कीर्त्तिस्तंभ—पु० कीर्त्ति के लिये बनाया गया स्तंभ।
कीदृक्—कैसा।
कीर्ण—आच्छन्न, व्याप्त।
कील—स्त्री० खूँटी।
कीलन—पु० बंधन, रुकावट।
कीलना—कील लगाना, किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना, आधीन करना।
कीश—पु० बंदर, चिड़िया, सूर्य।
कीशध्वज—पु० अर्जुन।
कुँअर—पु० लड़का, राजपुत्र।
कुईं—स्त्री० कुमुदिनी।
कुंकुम—पु० केसर, रोली, कुंकुमा।
कुंकुमा—पु० झिल्ली की कुप्पी जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में एक दूसरे पर फेंकते हैं।
कुंचन—पु० सिकुड़ना।
कुंचित—टेढ़ा, घुंघराला (बाल)।
कुंची—स्त्री० कुंजी।
कुंज—पु० वह स्थान जो वृक्ष लता आदि से मण्डप की तरह ढका हो।
कुंज कुटीर—पु० कुंज-गृह।
कुंज गली—स्त्री० बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ।

कुंजर—श्रेष्ठ। पु० हाथी, बाल।
कुंजविहारी—पु० श्रीकृष्ण।
कुंजिका—स्त्री० कुंजी।
कुंजी—स्त्री० ताली, टीका।
कुंठ—जो चोखा न हो, कुंद, मूर्ख।
कुंठित—भोथ, मंद।
कुंड—पु० छोटा तालाब, अग्निहोत्र का गड्ढा, कुंडा, बटलोई, लोहे का टोप।
कुंडल—पु० एक कर्णभूषण।
कुंडलिका—स्त्री० कुंडलाकार रेखा।
कुंडलिया—स्त्री० एक छंद।
कुंडली—स्त्री० जलेबी, जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला चक्र, गेंडुरी, साँप के बैठने की मुद्रा, साँप, वरुण, मोर।
कुंडा—पु० बड़ा मटका, जंजीर की [कड़ी।
कुंत—पु० भाला, जूँ, क्रूर भाव।
कुंतल—पु० केश, प्याला, जौ, हल, बहुरूपिया। [का पेड़।
कुंद—फा० कुंठित, मंद। पु० जुही की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगता है, कमल, कनेर।
कुंदन—स्वच्छ, नीरोग। पु० बढ़िया सोना।
कुँदरू—पु० बिंबा फल, तिलकोर।
कुंदा—पु० कड़ी और मोटी लकड़ी। बेंट, डैना, खोवा।
कुंभ—पु० घड़ा, एक राशि, हाथी का मस्तक, २० सेर की एक प्राचीन तौल

कुंभक, एक पर्व, गुग्गुल, वेश्यापति ।
कुंभक--पु० प्राणायाम का एक अंग जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के अंदर रोका जाता है ।
कुंभकार--पु० कुम्हार, मुर्गा ।
कुंभज-पु० अगस्त्य,वशिष्ट,द्रोणाचार्य ।
कुंभिका--स्त्री० कुंभी, वेश्या ।
कुंभी--पु० हाथी, मगर, गुग्गुल, एक कीड़ा । स्त्री० छोटा घड़ा, जायफल का पेड़, एक नरक ।
कुंभीपाक--पु० एक नरक ।
कुंवर--पु० लड़का, राजपुत्र ।
कु--स्त्री० पृथ्वी । 'कुत्सित' बोधक एक उपसर्ग ।
कुआँ--पु० कूप । मु० कुआँ खोदना= हानि पहुँचाने का यत्न करना ।
कुआर--पु० आश्विन महीना ।
कुकड़ी--स्त्री० सूत का लच्छा ।
कुकर्म--पु० खोटा काम ।
कुकुर--पु० कुत्ता ।
कुकुर खाँसी--स्त्री० सूखी खाँसी ।
कुकुर दंत--पु० अतिरिक्त दाँत ।
कुक्कुट--पु० मुर्गा, लुक, जटाधारी पौधा ।
कुक्कुर--पु० कुत्ता ।
कुक्ष--पु० पेट ।
कुक्षि--स्त्री० पेट, कोख ।
कुखेत--पु० बुरा स्थान ।
कुख्यात--बदनाम ।
कुघात--पु० बे मौका, छलकपट ।
कुच--पु० स्तन, छाती ।
कुचक्र--षड्यंत्र ।
कुचाग्र--पु० स्तन का अग्रभाग ।
कुजंत्र--पु० टोना ।
कुज--पु० मंगल ग्रह, वृक्ष ।
कुजा--स्त्री० जानकी ।
कुट--पु० घर, गढ़, कलश ।
कुटनपन--पु० दूती कर्म, झगड़ा लगाने का काम ।
कुटना--पु० दूत,चुगलखोर । [वाली ।
कुटनी--स्त्री० दूती, झगड़ा लगाने
कुटिआ--स्त्री० झोपड़ी । [कपटी ।
कुटिल--टेढ़ा, कुंचित, घुघराला,
कुटिला--स्त्री० सरस्वती नदी ।
कुटिलाई--स्त्री० कुटिलता ।
कुटी--स्त्री० झोपड़ी ।
कुटीर--पु० कुटी ।
कुटुंब--पु० परिवार ।
कुट्टमित--पु० एक हाव जिसमें संयोग के समय स्त्रियाँ मिथ्या दुःख-चेष्टा करती है ।
कुठार--पु० कुल्हाड़ी, फरसा ।
कुठारी-स्त्री० कुल्हाड़ी । [मसोसना ।
कुढ़ना--बुरा मानना, डाह करना,
कुतरना--दाँत से छोटा छोटा टुकड़ा करना । [बकवादी ।
कुतर्की--पु० व्यर्थ तर्क करनेवाला,
कुतुब--पु० ध्रुवतारा ।

कुतुबखाना—पु० पुस्तकालय ।

कुतुबनुमा—पु० दिग्दर्शक यंत्र ।

कुतूहल—पु० उत्कंठा, कौतुहल, क्रीड़ा, अचंभा ।

कुत्सा—स्त्री० निंदा ।

कुत्सित—नीच, निंदित ।

कुदरत—स्त्री० प्रकृति, माया, शक्ति, इख्तियार, कारीगरी ।

कुदरती—प्राकृतिक, दैवी ।

कुदर्शन—कुरूप ।

कुदाँव—पु० कुघात, दगा, बुरी स्थिति, बुरा स्थान, मर्मस्थान ।

कुदान—पु० बुरा दान, कूदना ।

कुदिन—पु० बुरा दिन, एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय ।

कुदेव—पु० भूदेव, ब्राह्मण, राक्षस ।

कुधर—पु० पहाड़, शेषनाग ।

कुधातु—स्त्री० बुरी धातु, लोहा ।

कुनकुना—कुछ गरम ।

कुनह—स्त्री० द्वेष, पुराना वैर ।

कुपाठ—पु० बुरी सलाह ।

कुपात्र—अनधिकारी ।

कुपित—क्रोधित ।

कुफ्र—पु० मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत, मुसलमानी धर्म के विरुद्ध [बात ।

कुबड़ा—जिसकी पीठ झुकी हो ।

कुबुद्धि—मूर्ख । स्त्री० मूर्खता, बुरी सलाह ।

कुब्ज—कुबड़ा ।

कुब्जा—स्त्री० कुबरी ।

कुब्बा—कूबड़ ।

कुमकुम—पु० दे० "कुंकुम" ।

कुमकुमा—पु० दे० "कुंकुमा" ।

कुमार—पु० पाँच वर्ष का बालक, पुत्र, युवराज, कार्तिकेय, सिंधु नद, तोता, खरा सोना, सनकादि ऋषि, मंगल ग्रह ।

कुमार तंत्र—पु० वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोग का निदान और चिकित्सा है ।

कुमारभृत्य—पु० गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या, गर्भिणी या नवप्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा, धातृविद्या ।

कुमारिका—स्त्री० कुमारी ।

कुमारी—विना ब्याही । स्त्री० बारह बरस तक की कन्या, घीकुँवार, नवमल्लिका, बड़ी इलायची, पार्वती, दुर्गा, सीता, एक अंतरीप, पृथ्वी का मध्य भाग ।

कुमुद—पु० कुईं, लाल कमल, चाँदी, विष्णु, कपूर, दक्षिण पश्चिम कोण का दिग्गज ।

कुमुदबंधु—पु० चंद्रमा ।

कुमुदिनी—स्त्री० जल में होनेवाला एक फूल जिसका चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है ।

कुमेरु—पु० दक्षिण ध्रुव ।

कुम्हलाना—मुरझाना।
कुयोगी—विषयभोगी।
कुरंग—बुरे रंग का, बदरंग। पु० मृग, बदामी रंग का मृग, बुरा लक्षण।
कुरंगिन—स्त्री० हिरनी।
कुरता—पु० अँगरखा।
कुरबान—जो निछावर या बलिदान किया गया हो।
कुरबानी—स्त्री० बलिदान।
कुरर, कुररा—पु० क्रौंच, टिटिहरी।
कुरसी—स्त्री० पीढ़ी, पुश्त, वह चबूतरा जिसपर मकान उठाया जाता है, उठंग कर बैठने के लिये लकड़ी की चीज।
कुरसीनामा-पु० पुश्तनामा, वंशवृक्ष।
कुरान-पु० मुसलमानों का धर्मग्रन्थ।
कुराह—स्त्री० खराब रास्ता।
कुरूप—बदसूरत।
कुर्क—जब्त। [अफसर।
कुर्क अमीन—पु० कुर्की करानेवाला
कुर्की—स्त्री० जप्ती।
कुलंग—पु० मुर्गा। [घर।
कुल—सब। पु० वंश, जाति, समूह,
कुलकना—आनंदित होना।
कुलकानि—स्त्री० कुल की मर्य्यादा, कुल की लाज।
कुलज—व्यभिचारी, औरस के अतिरिक्त और तरह का पुत्र, जैसे-क्षेत्रज, दत्तक। [गामिनी।
कुलटा—स्त्री० छिनाल, बहु पुरुष
कुलतारन—पु० कुल को तारनेवाला।
कुलपति—पु० घर का मालिक, वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे, दश हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा देनेवाला ऋषि।
कुलफत—स्त्री० चिंता।
कुलबोरन—कुल की मर्य्यादा नष्ट करनेवाला।
कुलवधू—स्त्री० कुलवती स्त्री।
कुलवंत—कुलीन।
कुलह—स्त्री० टोपी, शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन।
कुलही—स्त्री० कनटोप।
कुलाँगना—स्त्री० कुलीन स्त्री।
कुलाँगार—कुलनाशक।
कुलाँच—स्त्री० छलाँग, चौकड़ी।
कुलिश—वज्र, हीरा, कुठार।
कुलीन—उत्तम कुल का, पवित्र।
कुलेल—स्त्री० क्रीड़ा, कलोल।
कुल्ला—पु० मुँह में पानी लेकर फेंकना, जुल्फ। [कमल, भूमंडल।
कुवलय—पु० नीली कोईं, नील
कुवाच्य—न कहने योग्य। पु० दुर्वचन।
कुवार—पु० आश्विन महीना।
कुवेर—पु० यक्षों के राजा।
कुव्वत—पु० ताकत, बल।

कुश—पु० एक घास, जल। [एक।
कुशद्वीप—पु० सात द्वीपों में से
कुशल—चतुर, श्रेष्ठ, कल्याण, मंगल, पुण्यशील।
कुशल क्षेम—पु० खैर-आफियत।
कुशा-स्त्री० कुश नामक घास।[तीव्र।
कुशाग्र-कुश की नोक की तरह तीखा,
कुशासन—पु० कुश का आसन, बुरा शासन।
कुशीलव—पु० कवि, चारण, नट, गवैया, बाल्मीकि मुनि।
कुशोदक—तर्पण।
कुश्ती—स्त्री० मल्ल युद्ध।
कुष्ठी—पु० कोढ़ी।
कुष्माँड—पु० कुम्हड़ा।
कुसाइत—स्त्री० बुरा मुहूर्त।
कुसीद—पु० ब्याज, ब्याज पर दिया हुआ धन।
कुसुंभ—पु० कुसुम, केसर।
कुसुंभी—कुसुम के रंग का, लाल।
कुसुम—पु० पुष्प, रजोदर्शन, वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों।
कुसुमपुर—पु० पटना का एक प्राचीन नाम।
कुसुमवाण—पु० कामदेव।
कुसुमशर—पु० कामदेव।
कुसुमांजलि—स्त्री० अंजुली में फूल भरकर चढ़ाना, पुष्पांजलि।
कुसुमाकर—पु० वसंत।

कुसुमायुध—पु० कामदेव।
कुसुमित—पु० फूला हुआ।
कुहक—पु० धोखा, धूर्त,मुर्गे की कूक, इंद्रजाली। [बोलना।
कुहकना—पक्षी का मधुर स्वर से
कुहर—पु० छेद।
कुहरा—पु० कुहासा।
कुहराम—पु० रोना पीटना, हलचल।
कुहुकना—दे० "कुहकना"।
कुहू—स्त्री० अमावस्या, मोर या कोयल की बोली।
कूँचा—पु० झाड़ू।
कूँची—स्त्री० छोटा झाड़, चित्रकार की रंग भरने की कलम।
कूईं—स्त्री० कुमुदिनी [बोली।
कूक—स्त्री० मोर या कोयल की मधुर
कूकर—पु० कुत्ता।
कूच—पु० प्रस्थान, रवानगी।
कूचा—पु० गली, झाड़।
कूचिका—स्त्री० तूलिका, कूँची।
कूजत—मधुर शब्द करना।
कूजित—ध्वनित, ध्वनिपूर्ण।
कूट—झूठा, नकली, प्रधान। पु० पहाड़ की ऊँची चोटी, ढेरी, दो मानी बात, छल, मिथ्या, गुप्त रहस्य, वह जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो।
कूटता—स्त्री० कठिनाई, झुठाई, छल।
कूटनीति—स्त्री० दाँव पेंच की नीति।
कूटयुद्ध—पु० वह लड़ाई जिसमें

शत्रु को धोखा दिया जाय ।
कूटसाक्षी—पु० झूठा गवाह ।
कूटस्थ—सर्वोपरि स्थित, अटल, अविनाशी, गुप्त ।
कूत—स्त्री० अंदाज ।
कूतना—अंदाज लगाना ।
कूप—पु० कुआँ, छेद, गड्ढा ।
कूपन—पु० मनीआर्डर फार्म का वह भाग जिसपर रुपया भेजनेवाला कुछ समाचार आदि लिखता है ।
कूपमंडूक—पु० कुएँ का बेंग जो अपना स्थान छोड़कर कहीं न गया हो, थोड़ी जानकारी का आदमी ।
कूबड़—पु० पीठ का टेढ़ापन ।
कूर—निर्दय, भयंकर, मनहूस, दुष्ट, मूर्ख, अकर्मण्य ।
कूरा—पु० ढेर, अंश । [सूई ।
कूर्चिका—स्त्री० कूँची, कली, कुँजी,
कूर्म—पु० कछुआ, पृथ्वी ।
कूल—पु० किनारा, सेना का पिछला भाग, समीप, नहर, तालाब ।
कूवत—स्त्री० शक्ति, बल ।
कृच्छ्र—कष्टसाध्य । पु० कष्ट, पाप, मूत्रकृच्छ्र रोग ।
कृत—किया हुआ, रचित, सतयुग ।
कृतकार्य—सफल मनोरथ ।
कृतकृत्य—सफल मनोरथ ।
कृतघ्न—उपकार को न माननेवाला ।
कृतघ्नता—स्त्री० उपकार को न मानने का भाव । [वाला, एहसानमंद ।
कृतज्ञ—किये हुए उपकार को माननने
कृतज्ञता—स्त्री० एहसानमंदी ।
कृतयुग—पु० सतयुग ।
कृतविद्य—जिसे किसी विद्या का अभ्यास हो, पंडित ।
कृतांत—पु० अन्त करनेवाला, कर्मफल, मृत्यु, यम, पाप, देवता ।
कृतात्यय—पु० भोगद्वारा कर्मों का नाश । [हो, कृतकृत्य, संतुष्ट, निपुण ।
कृतार्थ—जिसका काम सिद्ध हो गया
कृति—स्त्री० करतूत, काम, रचना, क्षति, जादू ।
कृती—कुशल, साधु ।
कृत्तिवास—पु० महादेव ।
कृत्य—पु० कर्त्तव्य कर्म ।
कृत्या—स्त्री० अभिचार, कर्कशा स्त्री ।
कृदंत—पु० वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने ।
कृपण—प० कंजूस, नीच ।
कृपया—कृपा पूर्वक ।
कृपा—स्त्री० दया, क्षमा ।
कृपाण—पु० तलवार, कटार ।
कृपापात्र—पु० कृपा का अधिकारी ।
कृपायतन—पु० अत्यंत दयालु ।
कृपालु—कृपा करनेवाला ।
कृमि—पु० कीड़ा, लाह । [अगर ।
कृमिज—कीड़ों से उत्पन्न । पु० रेशम,
कृश—दुबला, अल्प ।

कृशांगी—स्त्री० पतली स्त्री ।
कृशानु—पु० अग्नि ।
कृशित—दुबला पतला ।
कृशोदरी—पतली कमरवाली ।
कृषक—पु० किसान ।
कृषि—स्त्री० खेती ।
कृष्ण—काला । पु० विष्णु के एक अवतार, वेदव्यास, अर्जुन, कोयल, कौआ, कदम का पेड़, अंधेरा पक्ष, कलियुग, चन्द्रमा का धब्बा ।
कृष्णपक्ष—पु० अँधेरा पक्ष ।
कृष्णसार—पु० काला हिरन, सेंहुड़।
कृष्णा—स्त्री० द्रौपदी, पीपल, काली, काली दाख, काला जीरा ।
कृष्णाभिसारिका—स्त्री० वह नायिका जो अंधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत स्थान में जाय ।
कृष्य—खेती करने योग्य ।
केंद्र—पु० वृत्त का मध्य विंदु, बीच का स्थान, प्रधान स्थान, रहने का स्थान ।
केंद्री—केंद्रस्थित ।
केका—स्त्री० मोर की बोली ।
केकी—पु० मोर, मयूर ।
केचित्—कोई कोई ।
केत—पु० घर, स्थान, केतु ।
केतक—कितने । पु० केवड़ा ।
केतकी—स्त्री० केवड़ा । [स्थान, घर ।
केतन—पु० निमंत्रण, ध्वजा, चिन्ह,
केतिक—कितना ।
केतु—पु० ज्ञान, प्रकाश, पताका, चिह्न, पुच्छल तारा । [वाला ।
केतुमान—तेजस्वी, बुद्धिमान, ध्वजा
केदली—पु० दे० "कदली" ।[पर्वत ।
केदार—पु० कियारी, थाला, एक
केदारनाथ—पु० केदार पर्वत के स्वामी, शिव ।
केन—पु० एक उपनिषद् ।
केमरा—पु० फोटो खींचने का यंत्र।
केयूर—पु० बाजुबंद ।
केर—का । [चीजें ।
केराना—पु० नमक मसाला आदि
केरानी— पु० मुहर्रिर ।
केरी—की । [पृथ्वी ।
केली-स्त्री० क्रीड़ा, रति, हँसी, ठट्ठा,
केलिकला—स्त्री० सरस्वती की वीणा, रति ।
केवट—मल्लाह ।
केवल—एक मात्र, पवित्र, उत्तम, सिर्फ । पु० भ्रांति शून्य और विशुद्ध ज्ञान । [का मनुष्य ।
केवलात्मा—पु० ईश्वर, शुद्ध स्वभाव
केवली—पु० मुक्ति का अधिकारी साधु । [विष्णु, सूर्य ।
केश—पु० बाल, किरण, वरुण, विश्व,
केशकर्म-पु० बाल सभाँलने का काम ।
केशपाश—पु० बालों की लट ।
केशरंजन—पु० भँगरैया ।
केशर—पु० दे० "केसर" ।

केशराज--भँगरैया ।
केशरी—पु० दे० "केसरी" ।
केशव—पु० विष्णु, कृष्णचंद्र, ब्रह्म ।
केशविन्यास-पु० बालों की सजावट ।
केशांत—पु० मुंडन । [बाल वाली ।
केशिनी—स्त्री० बड़ा और सुंदर
केशी-प्रकाशवाला, अच्छे बालों वाला । पु० एक असुर, घोड़ा, सिंह ।
केस—पु० मामला, हालत, घटना ।
केसर-पु० बाल की तरह पतले पतले सींकें जो फूलों के बीच रहते हैं, एक पौधा जिसका केसर स्थायी सुगंध के लिये प्रसिद्ध है, अयाल, नागकेसर, मौलसिरी, स्वर्ग ।
केसरिया—केसर के रंग का, पीला ।
केसरी, केहरि--पु० सिंह, घोड़ा, नागकेसर ।
केहि—किसको ।
केहूँ--किसी भाँति ।
केहू—कोई ।
कैम्प—पु० छावनी, पड़ाव ।
कै—कितना, अथवा । स्त्री० वमन ।
कैटभारि—पु० विष्णु ।
कैद—स्त्री० बंधन, कारावास ।
कैदखाना—पु० जेलखाना ।
कैदी—पु० बंदी ।
कैधौं—अथवा, वा ।
कैफियत—स्त्री० ब्यौरा, विवरण, वर्णन । आश्चर्य जनक या हर्षोत्पादक घटना । [एक आकार ।
कैबिनेट—पु० मंत्रिमंडल, फोटो का
कैरव—पु० कुमुद, सफेद कमल, शत्रु । [है, शिवलोक ।
कैलास—पु० हिमालय की एक चोटी जहाँ शिव का निवास माना जाता
कैलासपति--पु० शिव ।
कैलासवास--पु० मरण ।
कैवर्त-पु० केवट ।
कैवल्य—पु० शुद्धता, मुक्ति ।
कैसर—पु० सम्राट ।
कोंपल—स्त्री० अंकुर, मुलायम पत्ती ।
को—कौन ।
कोआ—पु० रेशम के कीड़े का घर, कटहल का बीज-कोष ।
कोक—पु० चकवा पक्षी ।
कोक कला—स्त्री० रतिविद्या ।
कोकनद—पु० लाल कमल, लाल कुसुद ।
कोकशास्त्र—पु० कामशास्त्र ।
कोकिल—स्त्री० कोयल, कोयला ।
कोकिला—स्त्री० कोयल ।
कोकी—स्त्री० चकई पक्षी ।
कोख—स्त्री० उदर, पँजरा, गर्भाशय ।
कोचमैन—पु० घोड़ा गाड़ी हाँकनेवाला ।
कोजागर—पु० आश्विन की पूर्णिमा ।
कोट—पु० दुर्ग, गढ़, शहर पनाह, महल, समूह, अँगरेजी ढंग का एक अंगरखा ।

कोटपाल—पु० किलेदार।

कोटर—पु० पेड़ का खोखला भाग, दुर्ग के आस पास रक्षा के लिये लगाया गया कृत्रिम वन।

कोटि—करोड़। पु० धनुष का सिरा, अस्त्र की नोक या धार, श्रेणी, किसी वादविवाद का पूर्वपक्ष, उत्तमता, समूह, त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा।

कोटिक—करोड़, अनगिनत।

कोटिशः—बहुत तरह से, अनेकानेक।

कोटेशन—पु० उद्धृत अंश।

कोठा—पु० बड़ी कोठरी, भंडार, अटारी, पेट, घर, गर्भाशय।

कोठार—पु० भंडार।

कोठारी—पु० भंडारी।

कोठी—स्त्री० बड़ा पक्का मकान, बड़ी दूकान, अनाज रखने का कुठला, गर्भाशय। [अक्षर।

कोठीवाल—पु० साहूकार, महाजनी

कोठीवाली—स्त्री० महाजनी अक्षर।

कोड़ा—पु० चाबुक, उत्तेजक बात।

कोड़ी—स्त्री० बीस का समूह।

कोढ़—पु० कुष्ट रोग।

कोण—पु० कोना। [कर्मचारी।

कोतवाल-पु० पुलिस का एक प्रधान

कोतवाली—स्त्री० कोतवाल का कार्यालय, कोतवाल का पद।

कोताही—स्त्री० त्रुटि, कमी।

कोदंड—पु० धनुष, भौंह, धनुराशि।

कोदो—पु० एक खराब अन्न। मु० छाती पर कोदो दलना = सामने ही किसी की बुराई करना।

कोप—पु० क्रोध। [रूठकर जा रहे।

कोप-भवन—पु० वह घर जहाँ कोई

कोपल—पु० मुलायम पत्ती।

कोपीन—पु० दे० "कौपीन"।

कोफ्त—पु० रंज, परेशानी।

कोमल—मुलायम, सुकुमार, मधुर।

कोया—पु० आँख का कोना, आँख का ढेला।

कोर—स्त्री० किनारा, कोना, द्वेष, ऐब, पंक्ति, गोद, हथियार की धार।

कोरक—पु० कली, कली के आधार के रूपमें हरी पत्तियाँ, कमल की डंडी। [और त्रुटि।

कोर-कसर—स्त्री० कमी-बेशी, दोष

कोरट—पु० कोर्ट आफ वार्ड्स।

कोरम—पु० कार्यनिर्वाहक सदस्य-संख्या, निश्चित संख्या।

कोरस—पु० कइयों का मिलकर एक स्वर में गाना-बजाना।

कोर्ट—पु० अदालत।

कोर्ट आफ वार्ड्स—पु० वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा अनाथ और विधवा आदि की भारी जायदाद का प्रबंध होता है।

कोर्ट मार्शल—पु० फौजी अदालत।

कोर्स—पु० पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक ।
कोरा—अछूता, नया, सादा, बेधोया । खाली, बेदाग, मूर्ख, धनहीन, सिर्फ । पु० गोद ।
कोलाहल—पु० शोर ।
कोविद—पंडित ।
कोश—पु० अंड, डिब्बा, कली, म्यान, खोल, आवरण, थैली, संचित धन, समूह, अंडकोश, रेशम का कोया, कटहल का कोया, वह ग्रन्थ जिसमें शब्दों के अर्थ दिये जाते हैं ।
कोशकार—पु० म्यान बनाने वाला, शब्द-कोश बनाने वाला, रेशम का कीड़ा ।
कोशपाल—पु० खजाने की रक्षा [करने वाला ।
कोशल—पु० अयोध्या नगर, इस नगर के आसपास का देश ।
कोशागार—पु० खजाना ।
कोशिश—स्त्री० चेष्टा ।
कोष—पु० दे० "कोश" ।
कोषाध्यक्ष—पु० खजानची ।
कोष्ठ—पु० उदर का मध्य भाग, पक्वाशय, गर्भाशय, कोठा, गोला, कोश, चहारदिवारी ।
कोष्ठक—पु० घिरा स्थान, किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से कोने या घर हों, जिनके जोड़ जिनके अन्दर कुछ लिखा जाता है जैसे— [] { } ()।
कोष्ठबद्ध—पु० कब्जियत ।
कोष्ठागार—पु० भंडार, खजाना ।
कोष्ठी—स्त्री० जन्मपत्री ।
कोसना—शाप देना, बुराभला कहना । मु० पानी पी-पी कर कोसना = बहुत अधिक कोसना ।
कोह—पु० पर्वत, क्रोध ।
कोहिस्तान—पु० पहाड़ी देश ।
कोही—क्रोधी, पहाड़ी ।
कौंतेय—पु० कुंती-पुत्र ।
कौंध—स्त्री० बिजली की चमक ।
कौंसल—पु० राजदूत, वाणिज्य-दूत ।
कौंसिल—स्त्री० व्यवस्थापिका सभा ।
कौटिल्य—पु० टेढ़ापन, कपट, चाणक्य का एक नाम ।
कौटुंबिक—कुटुंब का, कुटुंब संबंधी ।
कौड़ी—स्त्री० समुद्री कीड़े का अस्थि-कोश, धन, गिल्टी, छाती की एक हड्डी, कटार की नोक । मु० कौड़ी काम का नहीं, दो कौड़ी का=निकम्मा, तुच्छ । कौड़ी का तीन = बहुत सस्ता ।
कौतुक—पु० कुतूहल, आश्चर्य, विनोद, आनंद, खेलतमाशा ।
कौतुकिया, कौतुकी—पु० कौतुक करनेवाला, विवाह संबंध करानेवाला ।
कौपीन—पु० लँगोटी ।
कौम—स्त्री० जाति, वर्ण ।

कौमार—पु० कुमार अवस्था।
कौमारभृत्य-पु० दे० "कुमारभृत्य"।
कौमारी—स्त्री० किसी पुरुष की पहली स्त्री, पार्वती।
कौमी—जातीय। [कुमुदिनी।
कौमुदी—स्त्री० चाँदनी, शरद ऋतु की पूर्णिमा, दीपोत्सव की तिथि,
कौर—पु० ग्रास।
कौरव—पु० कुरु वंशज, कुरु संबंधी।
कौरवपति—पु० दुर्योधन।
कौल—पु० कुलीन, बाममार्गी, कौर, कथन, प्रतिज्ञा।
कौलिक—कुल-परंपरा-प्राप्त, तांती, पाखंडी, बाममार्गी।
कौशल—पु० कुशलता, चतुराई, कोशल देशवासी।
कौशलेय—पु० रामचन्द्र।
कौशिक—पु० इन्द्र, विश्वामित्र, कोशाध्यक्ष, कोशकार, रेशमी कपड़ा, शृङ्गार रस।
कौशिकी—स्त्री० चंडिका, काव्य या नाटक में वह वृत्ति जिसमें करुणा, हास्य, शृङ्गार रस का वर्णन हो और सरल वर्ण आवें।
कौशेय—रेशमी।
कौषिकी—स्त्री० दे० 'कौशिकी'।
कौसुम्भ—पु० वनकुसुम।
कौस्तुभ—पु० पुराणानुसार समुद्र से निकला एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर पहनते हैं।
क्योंकि—इसलिये कि।
क्रंदन—पु० रोना, युद्ध काल में वीरों का आह्वान।
क्रतु—पु० निश्चय, इच्छा, जीव, विष्णु, यज्ञ, आषाढ़ मास।
क्रतुध्वंसी—पु० शिव।
क्रम—पु० सिलसिला, रीति, डग भरने की क्रिया।
क्रमशः—धीरे धीरे, सिलसिलेवार।
क्रम सन्यास—पु० क्रम से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ के बाद लिया गया संन्यास।
क्रमागत—क्रमशः किसी रूप को प्राप्त, परंपरागत।
क्रमिक—क्रमागत, परंपरागत।
क्रय—पु० खरीद।
क्रयी—पु० खरीदनेवाला। [ग्रस्त।
क्रांत—ढका हुआ, आगे बढ़ा हुआ,
क्रांति—स्त्री० गति, उलटफेर, क्रांति-वृत्त।
क्रांति-मंडल, क्रांतिवृत्त—पु० वह कल्पित वृत्त जिसपर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।
क्राइस्ट—पु० ईसामसीह।
क्राउन कालोनी—स्त्री० वह उप-निवेश जो किसी राज्य के अधीन हो।
क्रिकेट—पु० गेंद का एक खेल।
क्रिमि—पु० दे० 'कृमि'।

क्रियमाण—पु० वह जो किया जा रहा हो ।

क्रिया—स्त्री० कर्म, प्रयत्न, गति, अनुष्ठान, नित्यकर्म, श्राद्ध, उपचार, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय ।

क्रियानिष्ठ—क्रियावान् । [हो ।

क्रिया विशेषण—पु० व्याकरण में वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध

क्रिश्चियन, क्रिस्तान—पु० ईसाई ।

क्रीट—पु० दे० "किरीट" ।

क्रीड़ा—स्त्री० खेलकूद ।

क्रीत—खरीदा हुआ ।

क्रीतक—पु० खरीदा लड़का ।

क्रुद्ध—क्रोध से भरा । [तीक्ष्ण ।

क्रूर—निर्दय, परपीड़क, कठिन,

क्रूरात्मा—क्रूर प्रकृतिवाला ।

क्रेता—पु० खरीददार ।

क्रोड़—पु० गोद, अँकवार ।

क्रोड़पत्र—पु० किसी पुस्तक या समाचार-पत्र में उसकी पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जानेवाला पत्र ।

क्रोध—पु० रोष, गुस्सा ।

क्रोधित—क्रुद्ध ।

क्रोधी—क्रोध करनेवाला ।

क्रोश—पु० कोस । [अस्त्र

क्रौंच—पु० बगुला, एक द्वीप, एक

क्लब—पु० समिति ।

क्लर्क—पु० मुंशी, मुहर्रिर ।

क्लांत—थका हुआ, श्रांत ।

क्लांति—स्त्री० परिश्रम, थकावट ।

क्लाकटावर—पु० घंटाघर ।

क्लास—पु० दरजा, श्रेणी, वर्ग ।

क्लिष्ट—क्लेशयुक्त, कठिन, बेमेल ।

क्लीव—नपुंसक, कायर ।

क्लेद—पु० गीलापन, पसीना ।

क्लेदक—पु० पसीना लानेवाला, शरीर की एक अग्नि ।

क्लेश—पु० दुःख, कष्ट ।

क्लैब्य—पु० क्लीवता ।

क्वचित—कोई ही, कभी ।

क्वणित—ध्वनित ।

क्वाथ—पु० काढ़ा ।

क्वारा—बे-ब्याहा ।

क्वार्टर—पु० डेरा, मुकाम ।

क्षंतव्य—क्षमा करने योग्य । [उत्सव ।

क्षण—पु० समय का सबसे छोटा भाग, पल का चतुर्थांश, समय, अवसर,

क्षणक—पु० क्षण, काल ।

क्षणप्रभा—स्त्री० बिजली ।

क्षणभंगुर—शीघ्र नष्ट होनेवाला ।

क्षणिक—क्षण भर रहनेवाला ।

क्षत—जिसे क्षति पहुँचा हो । पु० घाव, फोड़ा, मार । [खून ।

क्षतज—क्षत से उत्पन्न, लाल । पु०

क्षतयोनि—वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो ।

क्षतविक्षत—घायल ।

क्षता—स्त्री० विवाह से पूर्व पर पुरुष से भोगी हुई कन्या ।

क्षति—स्त्री० हानि, क्षय ।

क्षत्र—पु० बल, राष्ट्र, धन, शरीर, जल, क्षत्रिय ।

क्षत्रकर्म—पु० क्षत्रियोचित कर्म ।

क्षत्रपति—पु० राजा ।

क्षत्रयोग—पु० राजयोग ।

क्षत्री, क्षत्रिय—पु० एक जाति ।

क्षपणक—निर्लज्ज । पु० दिगंबर यती, बौद्ध संन्यासी ।

क्षपा—स्त्री० रात्रि ।

क्षपाकर—पु० चन्द्रमा, कपूर ।

क्षपानाथ—पु० चंद्रमा ।

क्षम—समर्थ । पु० शक्ति ।

क्षमणीय—क्षमा योग्य ।

क्षमता—स्त्री० योग्यता ।

क्षमा—स्त्री० माफी, सहिष्णुता, दुर्गा, पृथ्वी, एक की संख्या ।

क्षमावान्—पु० क्षमा करनेवाला ।

क्षमाशील—क्षमावान् ।

क्षमितव्य—क्षमा करने योग्य ।

क्षम्य—क्षमा करने योग्य ।

क्षय—पु० ह्रास, प्रलय, नाश, घर, अन्त, एक रोग ।

क्षयिष्णु—क्षय होनेवाला ।

क्षयी—क्षय होनेवाला, क्षयरोग ग्रस्त । पु० चंद्रमा, यक्ष्मा या क्षय रोग ।

क्षय्य—क्षय होने योग्य ।

क्षर—नाशवान् । पु० जल, मेघ, जीवात्मा, शरीर, अज्ञान ।

क्षरण—पु० धीरे धीरे चूना, झगड़ा, नाश होना, छूटना ।

क्षांत—क्षमाशील, सहनशील ।

क्षांति—स्त्री० क्षमा, सहिष्णुता ।

क्षात्र—क्षत्रिय संबंधी, क्षत्रियत्व ।

क्षार—पु० भस्म, नमक, सज्जी, शोरा, सुहागा ।

क्षारलवण—पु० खारी नमक ।

क्षिति—स्त्री० पृथ्वी, स्थान, गोरोचन, क्षय, प्रलयकाल ।

क्षितिज—पु० मंगल ग्रह, नरकासुर, केंचुआ, वृक्ष, दृष्टि की पहुँच पर वह स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं ।

क्षार—पु० भस्म, नमक, सज्जी, शोरा, सुहागा ।

क्षारलवण—पु० खारी नमक ।

क्षिति—स्त्री० पृथ्वी, स्थान, गोरोचन, क्षय, प्रलयकाल ।

क्षितिज—पु० मंगल ग्रह, नरकासुर, केंचुआ, वृक्ष, दृष्टि की पहुँच का वह स्थान जहाँ अकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं ।

क्षितीश—पु० राजा ।

क्षिप्त—फेंका हुआ, विकीर्ण, अपमानित, पतित, वातरोग ग्रस्त, चंचल ।

क्षिप्र—शीघ्र, तत्क्षण । पु० तेज, चंचल ।

क्षिप्रहस्त—शीघ्र काम करने वाला ।

क्षीण—दुबला पतला, सुक्ष्म, क्षयशील, घटा हुआ ।

क्षीणचंद्र—पु० कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा । [खीर ।

क्षीर—पु० दूध, तरल पदार्थ, जल,

क्षीरज—पु० चंद्रमा, शंख, कमल, दही ।

क्षीरजा—स्त्री० लक्ष्मी ।

क्षीरधि—पु० समुद्र ।

क्षीरनिधि—पु० समुद्र । [का व्रत ।

क्षीरव्रत—पु० केवल दूध पीकर रहने

क्षीरसागर — पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक जो दूध से भरा हुआ समझा जाता है ।

क्षीरसार—पु० मक्खन ।

क्षीरोद—पु० क्षीर समुद्र ।

क्षुण्ण—अभ्यस्त, दलित, खंडित ।

क्षुद्र—नीच, अल्प, क्रूर, कृपण, दरिद्र ।

क्षुद्रघंटिका—स्त्री० घुंघरूदार करधनी, घुंघरू । [हिचकी ।

क्षुद्रा—स्त्री० वेश्या, नोनी, मधुमक्खी,

क्षुद्रावली—स्त्री० क्षुद्रघंटिका ।

क्षुद्राशय—नीच प्रकृति ।

क्षुधा—स्त्री० भूख ।

क्षुधातुर, क्षुधित,—भूखा ।

क्षुब्ध—चंचल, व्याकुल, भयभीत, क्रुद्ध ।

क्षुभित—क्षुब्ध ।

क्षुर—पु० छुरा, खुर ।

क्षुरिका—स्त्री० छुरी । [पशु ।

क्षुरी—पु० हज्जाम, छुरी, खुरवाला

क्षेत्र-पु० खेत, समतल भूमि, उत्पत्ति स्थान, स्थान, तीर्थस्थान, स्त्री, शरीर, अंतः करण, रेखाओं से घिरा स्थान ।

क्षेत्रगणित—पु० क्षेत्र संबंधी गणित ।

क्षेत्रज—क्षेत्र से उत्पन्न । अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पन्न पुत्र ।

क्षेत्रज्ञ-ज्ञाता । पु० जीवात्मा, परमात्मा, किसान । [परमात्मा ।

क्षेत्रपति—पु० खेतिहर, जीवात्मा,

क्षेत्रपाल—पु० क्षेत्र रक्षक, द्वारपाल, प्रधान प्रबंध कर्त्ता । [माण, रकबा ।

क्षेत्रफल—पु० क्षेत्रका वर्गात्मक परि-

क्षेत्रविद्—पु० क्षेत्रज्ञ ।

क्षेत्री—पु० खेत का मालिक, स्वामी, स्त्री का विवाहित पति ।

क्षेप—पु० फेंकना, घात, शर, निंदा, दूरी, बिताना ।

क्षेपक—फेंकने वाला, निंदनीय, मिश्रित । पु० मिलाया हुआ अंश ।

क्षेपण-पु० फेंकना, गिराना, बिताना ।

क्षेमकरी-स्त्री० एक प्रकार की चील, एक देवी । [सुख, मुक्ति ।

क्षेम—पु० सुरक्षा, कुशल, अभ्युदय,

क्षोणि—स्त्री० पृथ्वी, एक की संख्या।
क्षोणिप—पु० राजा।
क्षौणी—स्त्री० दे० "क्षोणि"।
क्षोभ—पु० खलबली, व्याकुलता, भय, शोक, क्रोध।
क्षोभित—विचलित, व्याकुल, भयभीत, क्रुद्ध।
क्षौद्र—पु० क्षुद्रता, मधु, जल।
क्षौम—पु० वस्त्र।
क्षौर—पु० हजामत।
क्षौरिक—पु० नाई।
क्ष्मा—स्त्री० पृथ्वी, एक की संख्या।

ख

ख—एक अक्षर। पु० गड्ढा, खाली स्थान, निकास, छेद, इंद्रिय, गले की नाली, कुआँ, तीर का घाव, आकाश, स्वर्ग, सुख, कर्म, बिंदु, ब्रह्म, शब्द।
खं—पु० शून्य स्थान, छेद, आकाश, इंद्रिय, निकलने का मार्ग, बिंदु, शून्य, स्वर्ग, सुख, ब्रह्म, मोक्ष।
खंख—खाली, उजाड़।
खंग—पु० तलवार, गैंड़ा। [खंजन पक्षी
खंज—पु० एक रोग, लंगड़ा। पु०
खंजन—पु० एक पक्षी जो शरत् से शीत काल तक दिखायी देता है।
खंजर—पु० कटार।
खंड—पु० खंडित, टुकड़ा, छोभ। देश, खाँड़, समीकरण की एक क्रिया, नौ की संख्या, तलवार।
खंडकाव्य—पु० छोटा कथात्मक प्रबंध-काव्य। [प्रमाणित करना।
खंडन—पु० तोड़ना, अयथार्थ
खंडप्रलय—पु० वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।
खंडहर—पु० गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।
खंडित—टूटा हुआ, अपूर्ण।
खंदक—स्त्री० खाई, गड्ढा।
खंभ—पु० खंभा। [चंद्रमा, वायु।
खग—पु० आकाशचारी, पक्षी, गंधर्व, तीर, ग्रह, बादल, देवता, सूर्य,
खगपति—पु० सूर्य, गरुड़।
खगेश—पु० गरुड़। [विद्या।
खगोल—पु० आकाश-मंडल, खगोल
खगोल विद्या—पु० ज्योतिष।
खग्ग—पु० तलवार।
खग्रास—पु० पूर्ण ग्रहण।
खचर—आकाशचारी। पु० सूर्य, मेघ, ग्रह, नक्षत्र, वायु, पक्षी, बाण,
खचरा—वर्णसंकर, पाजी।
खचाखच—ठसाठस।
खचित—मिश्रित।

खच्चर—पु० गधी और घोड़े के संयोग से उत्पन्न एक पशु।
खजानची—पु० कोशाध्यक्ष।
खजाना—पु० धनागार, कर।
खटकना—टकराने का शब्द होना, रह रह कर पीड़ा होना, खलना, उचटना, डरना, आशंका होना, ठीक न जान पड़ना, चिंता होना।
खटका—पु० ठकराने का शब्द, डर, चिंता, सिटकिनी।
खटना—कामधंधे में लगना।
खटपट—स्त्री० अनबन, लड़ाई।
खटपद—पु० दे० "षट्पद"।
खटमुख—पु० दे० "षटमुख"।
खटराग—पु० झंझट, अनावश्यक चीजें, दे० "षट राग"।
खटाई—स्त्री० खट्टापन, खट्टी चीज। मु० खटाई में डालना = कुछ निर्णय न करना।
खट्टा—अम्ल। मु० जी खट्टा होना = चित्त अप्रसन्न होना।
खट्वाँग—पु० चारपाई का पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित करते समय भिक्षा माँगने का पात्र।
खट्वा—स्त्री० खटिया
खड़ग—पु० दे० "खड्ग"।
खड़मंडल—पु० गड़बड़।
खड़ी बोली—स्त्री० पश्चिमी हिन्दी का वह भेद जो दिल्ली के आसपास बोला जाता है और जिसमें उर्दू और वर्तमान हिन्दी गद्य लिखा जाता है।
खड्ग—पु० तलवार।
खत—पु० चिट्ठी, लिखावट, रेखा, दाढ़ी के बाल, हजामत। [सुन्नत।
खतना—पु० लिंग के अगले भाग का चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म,
खतम—समाप्त।
खतरा—पु० डर, आशंका।
खता—स्त्री० कसूर, धोखा, भूल।
खतावार—दोषी, अपराधी।
खतियाना—खाते में अलग अलग मद में लिखना।
खतियौनी—स्त्री० खाता, खतियाने का काम।
खत्म—समाप्त।
खद्दर—पु० हाथ का कता और हाथ का बिना कपड़ा।
खद्योत—पु० जुगनू, सूर्य।
खनक—पु० खान, भूतत्व शास्त्र जाननेवाला, जमीन खोदनेवाला। स्त्री० धातु-खंडों के टकराने का शब्द।
खनिज—खान से उत्पन्न।
खपत—स्त्री० बिक्री, गुंजाइश।
खपना—लगना, निभना, नष्ट होना, तंग होना।
खपुर—पु० गंधर्व-नगर, पुराणानुसार एक नगर जो आकाश में है।

खपुष्प—पु० आकाश-कुसुम, असंभव बात।

खफ़गी—स्त्री० नाराजगी, क्रोध।

खफ़ा—नाराज, क्रुद्ध। [लज्जित।

खफ़ीफ़—थोड़ा, हलका, तुच्छ,

खबर—स्त्री० समाचार, सूचना, संदेशा, सुधि, पता।

खबरदार—सावधान, सचेत।

खब्त—पु० पागल, सनकी।

खब्ती—स्त्री० पागलपन।

खयानत—स्त्री० धरोहर रखी हुई वस्तु न देना या कम देना, गबन, बेईमानी, चोरी।

खर—कड़ा, तीक्ष्ण, अमांगलिक। पु० गधा, खच्चर, बगुला, कौवा, तृण।

खरकना—खटकना, सरकना।

खरखशा—पु० झगड़ा, भय, झंझट।

खरग—पु० दे० "खड्ग"।

खरगोश—पु० खरहा।

खरधार—पु० तेज धारवाला अस्त्र।

खरब—पु० सौ अरब की संख्या।

खरभर—पु० शोरगुल, हलचल।

खरमस्ती—स्त्री० पाजीपन। [महीना।

खरमास—पु० पूस और चैत का

खरा—तीखा, विशुद्ध, कड़ा, साफ, नकद, स्पष्ट वक्ता, सच्चा, अधिक।

खराद—पु० खरादने का औजार। स्त्री० खरादने की क्रिया, गढ़न।

खराबी—स्त्री० बुराई, दुर्दशा।

खरारि—पु० राम, कृष्ण, विष्णु।

खरी—अच्छी। [भेजे जाते हैं।

खरीता—पु० थैली, जेब, वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि

खरीदार—पु० ग्राहक।

खरीफ़—स्त्री० वह फसल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।

खरोंच, खरोंट—स्त्री० छिलने का चिन्ह।

खर्चीला—बहुत खर्च करनेवाला।

खर्पर—पु० खप्पर, भिक्षापात्र, खोपड़ा।

खर्व—न्यूनांग, छोटा, बौना। पु० खरब, कुबेरकी नौ निधियों में से एक।

खर्रा—पु० वह लंबा कागज जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो।

खर्राटा—पु० सोते समय नाक से निकलने वाला शब्द।

खल—दुष्ट, नीच। पु० सूर्य, तमाल का पेड़, धतूरा, खलियान, पृथ्वी, स्थान, औषधि कूटने का पत्थर का बर्तन।

खलक़—पु० प्राणी, दुनिया।

खलना—बुरा लगना।

खलबली—स्त्री० हलचल, व्याकुलता।

खलल—पु० रोक, बाधा। [समाप्त।

खलास—छूटा हुआ, गिरा हुआ,

खलासी—स्त्री० छुटकारा। पु० माल उतारनेवाला नौकर।

खलित—स्खलित, गिरा हुआ, चंचल ।

खलिश—स्त्री॰ कसक, पीड़ा ।

खलीता—पु॰ दे॰ "खरीता" ।

खलीफा—पु॰ अध्यक्ष, बूढ़ा व्यक्ति, बाबर्ची, नाई, दर्जी, पहलवान ।

खलु—प्रश्न, प्रार्थना, नियम, निषेध, निश्चय । का रोग ।

खल्व—पु॰ सिर का बाल झड़ने

खल्वाट—पु॰ जिसके सर पर बाल नहीं हो ।

खवास—पु॰ खिदमतगार । [जड़ ।

खस—पु॰ एक घास की सुगंधित

खसखाना—पु॰ घास का घर ।

खसम—पु॰ पति, स्वामी ।

खसरा—पटवारी का एक कागज जिसमें खेत का नंबर रकबा आदि लिखा रहता है, हिसाब किताब का कच्चा चिट्ठा ।

खसलत—स्त्री॰ स्वभाव, आदत ।

खसोटना—नोचना, छीनना ।

खस्ता—भुरभुरा ।

खस्सी—बधिया, नपुंसक । पु॰ बकरा । [जिसका हर शून्य हो ।

खहर—पु॰ गणित में वह राशि

खाँखर—सूराखदार, खोखला ।

खाँड़—स्त्री॰ शक्कर । [का खंदक ।

खाई—स्त्री॰ रक्षा के लिये खोदा हुआ नगर या महल के चारों ओर

खाक—स्त्री॰ धूल, मिट्टी ।

खाकसार—पु॰ तुच्छ ।

खाका—पु॰ ढाँचा, चिट्ठा, तखमीना, मसौदा ।

खाकी—मिट्टी के रंग का, बिना सींची हुई भूमि ।

खाज—स्त्री॰ खुजली । मु॰ कोढ़ की खाज = दुःख में दुःख बढ़ानेवाली चीज ।

खाड़ी—स्त्री॰ समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो ।

खातमा—पु॰ अंत, मृत्यु । [मद ।

खाता—पु॰ बखार, हिसाब की बही,

खातिर—वास्ते । स्त्री॰ आदर ।

खातिरजमा—स्त्री॰ संतोष, तसल्ली ।

खातिरदारी—स्त्री॰ आवभगत ।

खातिरी—स्त्री॰ सम्मान ।

खाद—स्त्री॰ वह पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिये डाला जाता है ।

खादक—खानेवाला ।

खादित—खाया हुआ ।

खादिम—सेवक । [खद्दर ।

खादी खानेवाला, कँटीला । स्त्री॰

खाद्य—खाने योग्य । पु॰ भोजन ।

खान—पु॰ भोजन, सरदार, पठानों की उपाधि । स्त्री॰ वह स्थान जहाँ से धातु, पत्थर आदि खोद कर निकाले जाय । [बेलदार ।

खानक—पु॰ खान खोदनेवाला,

खानकाह—स्त्री॰ मुसलमान साधुओं

के रहने का स्थान ।

खानगी—निजी । स्त्री० कसबी ।

खानदान—पु० वंश, कुल ।

खानदानी—कुलीन, पुश्तैनी ।

खानसामाँ—पु० मुसलमानों या अंगरेजों का रसोइया ।

खाना—भोजन करना । पु० घर, विभाग, कोष्ठक, भोजन ।

खानातलाशी—स्त्री० कोई चीज ढूँढ़ निकालने के लिये घर के अंदर छानबीन करना ।

खानाबदोश—जिसका घरबार न हो ।

खाति—स्त्री० खान, तरफ, तरह ।

खामखाह—दे० "ख्वाहमख्वाह" ।

खामोश—मौन, चुप ।

खामोशी—स्त्री० चुप्पी ।

खार—पु० क्षार, सज्जी, नमकीन मिट्टी, राख, काँटा, डाह ।

खारा—क्षार, नमकीन, अरुचिकर । पु० जालीदार थैला ।

खारिज—निकाला हुआ ।

खाल—पु० चमड़ा, धौंकनी, मृत शरीर । स्त्री० नीची भूमि, खाड़ी, खाली जगह । [की एक मंडली ।

खालसा—जिस पर केवल एक का अधिकार हो, सरकारी । पु० सिक्खों

खाला—नीचा । स्त्री० मौसी । मु० खालाजी का घर = सहज काम ।

खालिस—शुद्ध ।

खाली—रिक्त, रहित, बैठाठाला, व्यर्थ, बिना काम का । सिर्फ । मु० हाथ खाली होना = रुपया पैसा न रहना ।

खाविंद—पु० पति, स्वामी ।

खास—विशेष, निज का, खुद, विशुद्ध ।

खासा—अच्छा, स्वस्थ, सुन्दर, भरपूर, पूरा पूरा । पु० राजा का भोजन, राजा की सवारी ।

खासियत—स्त्री० सिफ़त, आदत ।

खाहिश—स्त्री० इच्छा ।

खिंचना—निकल जाना, तनना, आकर्षित होना, खपना, चित्रित होना, रुकना ।

खिचड़ी—मिलाजुला, गड़बड़ । स्त्री० साथ पकाया हुआ दाल भात । मु० ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना = सब से अलग होकर कोई कार्य करना ।

खिड़की—स्त्री० झरोखा ।

खिताब—पु० पदवी ।

खिदमत—स्त्री० सेवा ।

खिदमतगार—पु० सेवक ।

खिन्न—नाराज, उदासीन, असहाय ।

खिराज—पु० राजस्व, कर ।

खिलअत—स्त्री० राजा की ओर से सम्मानार्थ दी हुई चीजें ।

खिलना—विकसित होना, प्रसन्न

होना, शोभित होना।
खिलाफ—उलटा, विरुद्ध।
खिल्ली—स्त्री० हँसी-मजाक, पान का बीड़ा, कील।
खिसारा—पु० घाटा, हानि।
खिसियाना—रिसाना, शरमाना।
खींचना — घसीटना, तानना, आकर्षित करना, चूसना, चित्रित करना।
खीजना, खीझना—झुंझलाना।
खीर—स्त्री० दूध, दूध में पकाया चावल। [क्रोध, लज्जा।
खीस—बरबाद। स्त्री० नाराजगी,
खुआरी—स्त्री० नाश, खराबी।
खुगीर—पु० वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के जीन के नोचे लगाया जाता है, जीन। मु० खुगीर की भरती = व्यर्थ के लोगों या चीजों की भरती।
खुजलाहट—स्त्री० खुजली।
खुतवा—पु० तारीफ, सामयिक राजा की प्रशंसा या घोषणा।
खुद—स्वयं, आप।
खुदकाश्त—वह जमीन जिसे उसका मालिक खुद जोते बोये।
खुदगरज—स्वार्थी।
खुदगरजी—स्त्री० स्वार्थपरता।
खुदमुखतार—स्वतंत्र।
खुदरा—फुटकर।
खुदा—पु० ईश्वर।
खुदाई—स्त्री० ईश्वरता, सृष्टि।
खुदावंद—पु० ईश्वर, मालिक, हुजूर।
खुदी—पु० अहंकार, घमंड।
खुनस—स्त्री० क्रोध।
खुफिया—गुप्त, छिपा हुआ।
खुफिया पुलीस—जासूस।
खुमार, खुमारी—नशा, नशा उतरने के समय की हलकी थकावट, वह शिथिलता जो रात भर जागने से से होती है।
खुराक—स्त्री० भोजन। [गलौज।
खुराफात—स्त्री० उपद्रव, गाली-
खुर्द—छोटा।
खुर्दबीन—पु० सूक्ष्मदर्शक यंत्र।
खुर्राट—बूढ़ा, अनुभवी, चालाक।
खुलासा—पु० खुला हुआ, स्पष्ट, अवरोध रहित। पु० सारांश।
खुलेआम—सबके सामने।
खुल्लमखुल्ला—प्रकट रूपसे।
खुश—प्रसन्न, आनन्दित अच्छा।
खुशकिस्मत—भाग्यवान।
खुशखबरी—अच्छी खबर। [हँसोड़।
खुशदिल—सदा प्रसन्न रहनेवाला,
खुशनुमा—सुंदर।
खुशनसीब—भाग्यवान।
खुशबू—स्त्री० सुगंधि।
खुशबूदार—उत्तम गंधवाला।

खुशहाल--सुखी, संपन्न ।

खुशामद—स्त्री० प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशंसा, चापलूसी ।

खुशामदी टट्टू—पु० वह जिसका काम खुशामद करना हो ।

खुशी—स्त्री० आनंद । [का ।

खुश्क—शुष्क, सूखा, रूखे स्वभाव

खुश्की—स्त्री० रूखापन, नीरसता, स्थल । [क्रूर ।

खूंखार-- खून पीनेवाला, भयंकर,

खूंट--पु० छोर, तरफ, हिस्सा ।

खून—पु० रुधिर, हत्या । मु० खून उबलना = गुस्सा चढ़ना । खून का प्यासा = वध का इच्छुक । सिर पर खून सवार होना = मार डालने को उद्यत होना । खून पीना = मार डालना ।

खूनखराबी--स्त्री० मारकाट ।

खूनी—हत्यारा, अत्याचारी ।

खूब—अच्छा, अच्छी तरह से ।

खूबसूरत--सुंदर ।

खूबी—स्त्री० भलाई, विशेषता ।

खूसट—अरसिक । पु० उल्लू ।

खृष्टीय--ईसाई ।

खेचर—पु० आकाशचारी, सूर्य आदि ग्रह, तारागण, वायु, देवता, विमान, पक्षी, बादल, भूत-प्रेत, राक्षस । [एक मुद्रा

खेचरी मुद्रा--स्त्री० योगसाधन की

खेत—पु० जोती बोयी जानेवाली जमीन, समरभूमि । मु० खेत आना या रहना = युद्ध में मारा जाना । खेत रखना = समर में विजय प्राप्त करना ।

खेतल—पु० आकाशमंडल ।

खेतीबारी—स्त्री० कृषिकर्म ।

खेद--पु० दुःख, शिथिलता ।

खेदना—खदेरना ।

खेना--नाव चलाना, समय काटना ।

खेप —स्त्री० एक बार का बोझ ।

खेपना--बिताना ।

खेमा--पु० तंबू, डेरा ।

खेलवाड़--पु० खेल, दिल्लगी ।

खेलाड़ी--पु० खेलनेवाला, विनोदी, ईश्वर ।

खेवा--पु० नाव का किराया, नाव से नदी पार करना, बार ।

खेह--स्त्री० धूल, राख । मु० खेह खाना = धूल फाँकना, व्यर्थ समय खोना, दुर्दशा ग्रस्त होना ।

खैर--कुछ चिन्ता नहीं, अस्तु । पु० कत्था । स्त्री० कुशल ।

खैर आफियत--स्त्री० कुशल-मंगल ।

खैरखाह--शुभचिन्तक ।

खैरात--स्त्री० दान, पुण्य ।

खैरियत—स्त्री० कुशल-क्षेम ।

खोगीर—पु० दे० "खुगीर" ।

खोज--स्त्री० अनुसंधान, तलाश, चिह्न ।

खोटा--बुरा । मु० खोटी खरी सुनाना = फटकारना ।
खोदाई-स्त्री० खोदने का काम, खोदने की मजदूरी ।
खोना--गँवाना ।
खोपड़ी—पु० सिर की हड्डी, सिर । मु० औंधी खोपड़ी = नासमझ ।
खोरि—स्त्री० तंग गली, ऐब, बुराई ।
खोह—स्त्री० गुफा ।
खौफ--पु० डर, भय ।
खौर--स्त्री० टीका, स्त्रियों के सिर का एक गहना ।
ख्यात--प्रसिद्ध ।
ख्याति--स्त्री० प्रसिद्धि ।
ख्याल—पु० ध्यान, आदर, विचार,
ख्याली-कल्पित । मु० ख्याली पुलाव पकाना = असंभव बात करना ।
खिष्टान—पु० ईसाई ।
खिष्टीय-ईसाई, ईसाई धर्म संबंधी ।
खीष्ट—पु० ईसा मसीह । [मृत्यु ।
ख्वाजा--पु० मालिक, सरदार, ऊंचे दरजे का फकीर, रनिवास का नपुंसक
ख्वाब--पु० नींद, स्वप्न ।
ख्वार--खराब, तिरस्कृत ।
ख्वाह--या, अथवा ।
ख्वाहमख्वाह—चाहे कोई चाहे या न चाहे, जबरदस्ती, जरूर ।
ख्वाहिश--स्त्री० इच्छा, आकांक्षा ।

ग

ग--एक अक्षर । पु० गीत, गंधर्व, गुरुमात्रा, गणेश, गानेवाला, जानेवाला ।
गंग--स्त्री० गंगा नदी ।
गंग बरार—पु० नदी के हटने से निकली हुई जमीन । [जमीन ।
गंगशिकस्त—पु० नदी में कटी हुई
गंगा-जमुनी—मिलाजुला, दो रंगा, काला-उजला ।
गंगाजली--स्त्री० वह सुराही जिसमें गंगाजल भर कर ले जाते हैं, धातु की सुराही ।
गंगाधर--पु० शिव ।
गंगालाभ--पु० मृत्यु ।
गंगासागर—पु०—वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र से मिलती है ।
गंज—पु० सिर के बाल उड़ने का रोग । स्त्री० खजाना, ढेर, समूह, गल्ले की मंडी ।
गंजा--जिसको सर का बाल उड़ने का रोग हो, चँदला । पु० गंज रोग ।
गंजन—पु० अवज्ञा, पीड़ा, नाश ।

गंड—पु० गाल, कनपटी, फोड़ा, गाँठ चिह्न ।

गंडस्थल—पु० कनपटी ।

गंदगी—स्त्री० मैलापन, मैला ।

गंध—स्त्री० महक, सुगंध, सुगंधित द्रव्य, लेश, अनुमात्र । [पीला ।

गंधकी—गंधक के रंग का हल्का

गंधमादन—पु० भौंरा, एक पुराण प्रसिद्ध पर्वत ।

गंधर्व—पु० एक देवयोनि जो संगीत निपुण मानी जाती है, एक जाति जिस की कन्याएँ गाती और वेश्या वृत्ति करती हैं, विधवा स्त्री का दूसरा पति, प्रेत ।

गंधर्व नगर—पु० नगर ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि दोष से मालूम पड़ता है, चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है, संध्या के समय पच्छिम की ओर रंग बिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली ।

गंधर्व विद्या—स्त्री० संगीत विद्या ।

गंधर्व विवाह—पु० वह विवाह जो वरवधू अपने मन से कर लेते हैं ।

गंधर्ववेद—पु० संगीत शास्त्र ।

गंधवाह—पु० पवन, नाक ।

गंधी—पु० सुगंधित तेल आदि बेचने वाला, एक कीड़ा ।

गंभीर—गहरा, घना, गूढ़, घोर, शांत ।

गँवई—स्त्री० बस्ती । [कहावत ।

गँवार मसला—पु० गँवारों की

गँवाना—बिताना, खोना ।

गँसीला—चुभनेवाला ।

गईबहोर—खोयी चीज को फिर देने या बिगड़े काम को बनाने वाला ।

गगन—पु० आकाश, शून्य स्थान ।

गगनचर—पु० पक्षी । [धूल ।

गगनधूल—पु० केतकी के फूल की

गगनभेदी—अकाश को छेदने वाला, बहुत ऊँचा ।

गच—पु० पक्का फर्श ।

गचना—कस कर भरना ।

गज—पु० हाथी, आठ की संख्या, दो हाथ की माप ।

गजक—पु० चटपटी और नमकीन खाने की चीज जो शराब पीते समय खाया जाता है ।

गजगामिनी—हाथी के समान मंद गति से चलने वाली ।

गजट—पु० अखबार, वह विशेष सामयिक पत्र जो सरकार प्रकाशित करती है । [का दान ।

गजदान—पु० हाथी का मद, हाथी

गजनाल—स्त्री० बड़ी तोप जिसे हाथी खींचता था ।

गजपति—पु० हाथियों के झुंड का सरदार, राजा ।

गजब—विलक्षण बात, गुस्सा, आफत, अंधेर।
गजबाग—पु० हाथी का अंकुश।
गजमुक्ता—स्त्री० एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।
गजरा—पु० फूलों की घनी गुथी [हुई माला।
गजराज—पु० बड़ा हाथी।
गजवदन—पु० गणेश।
गजशाला—स्त्री० वह घर जिसमें हाथी बाँधा जाता है, हथिशाल।
गजानन—पु० गणेश।
गजेन्द्र—पु० गजराज, ऐरावत।
गजेटियर—पु० वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान का ऐतिहासिक और भौगौलिक आदि वर्णन हो।
गट्ठा—पु० कलाई, गाँठ, बीज।
गठन—स्त्री० बनावट। [मेल होना।
गठना—जुड़ना, बुनावट का दृढ़ होना,
गठित—गठा हुआ।
गठिया—स्त्री० थैला, एक रोग।
गठीला—गठा हुआ, सुडौल, दृढ़।
गठौती—स्त्री० मेलमिलाप।
गड़ना—चुभना, दुखना। मु० गड़ जाना = लज्जित होना। गड़े मुर्दे उखाड़ना = दबी हुई बात उठाना।
गड़पना—निगलना।
गड़बड़ झाला—पु० गोलमाल।
गड़ेरिया—पु० भेड़ पालने वाली एक जाति।
गड्डी—स्त्री० ढेरी।
गड्ढा—पु० गड़हा। मु० किसी के लिये गड्ढा खोदना = बुराई के लिये यत्न करना।
गढंत—कल्पित।
गढ़—पु० खाई, किला।
गढ़न—स्त्री० बनावट।
गढ़ना—रचना, सुडौल करना, बात-बनाना, मारना।
गढ़पति—पु० किलेदार, राजा।
गढ़वाल—पु० गढ़रक्षक।
गढ़ी—स्त्री० छोटा किला।
गण—पु० समूह, श्रेणी, छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह, दूत, सेवक।
गणक—पु० ज्योतिषी।
गणन—पु० गिनना, गिनती।
गणना—स्त्री० गिनती, हिसाब, संख्या।
गणनायक—पु० गणेश।
गणपति—पु० गणेश, शिव।
गणतंत्र—पु० वह शासन जो जन प्रतिनिधि द्वारा चल रहा हो।
गणाधिप—पु० गणेश।
गणिका—स्त्री० वेश्या।
गणित—पु० हिसाब।
गण्य—गिनने योग्य।
गण्यमान्य—प्रतिष्ठित।
गत—बीता हुआ, मरा हुआ, रहित। स्त्री० दशा, रूप, उपयोग, दुर्गति।

गति—स्त्री० चाल, गमन, हरकत, दशा, रूपरंग, प्रवेश, सहारा, प्रयत्न, लीला, ढंग, पैतरा, मोक्ष ।
गत्ताल खाता--पु० बट्टाखाता ।
गद—पु० विष, रोग ।
गदर—पु० उपद्रव, बलवा ।
गदह पचीसी—स्त्री० १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है ।
गदहपन—पु० मूर्खता ।
गदहा—पु० चिकित्सक, एक पशु ।
गदा—स्त्री० एक प्राचीन अस्त्र ।
गदाधर—पु० विष्णु ।
गदित—कथित ।
गद्गद—पुलकित, प्रसन्न ।
गद्दा--पु० मोटा गुदगुदा बिछौना ।
गद्दी—स्त्री० छोटा गद्दा, व्यवसायियों के बैठने का स्थान, किसी बड़े अधिकारी का पद, सिंहासन ।
गद्दीनशीन—सिंहासनारूढ़, उत्तराधिकारी ।
गद्य--पु० वार्तिक, पद्य का उलटा ।
गनीमत--स्त्री० संतोष की बात ।
गन्तव्य--गमन योग्य ।
गन्ना—पु० ऊख ।
गप--स्त्री० इधर उधर की बात, झूठी खबर, डींग, निगलने की क्रिया ।
गपड़ चौथ--स्त्री० व्यर्थ की बात, लोपपोत ।
गपशप--स्त्री० गप ।
गफ—घना, गाढ़ा ।
गफलत-स्त्री० असावधानी, बेखबरी, भूल ।
गबन—पु० खयानत, दूसरे के सौंपे माल को खा जाना ।
गब्बर--घमंडी, मंद ।
गभस्तिमान--पु० सूर्य, एक द्वीप, एक पाताल ।
गम—पु० प्रवेश, दुःख, शोक, चिन्ता । मु० गम खाना = क्षमा करना, ध्यान न देना ।
गमक—पु० जानेवाला, बोधक, तबले की आवाज, सुगंध ।
गमकना--महकना ।
गमखोर--सहनशील ।
गमगीन--उदास ।
गमन--पु० जाना, चलना, रास्ता, संयोग ।
गमी--स्त्री० शोक, शोक की अवस्था, मरनी ।
गम्य—जाने योग्य, प्राप्य, संभोग करने योग्य, साध्य ।
गयंद--पु० दे० "गजेंद्र" ।
गयावाल--पु० गया का पण्डा ।
गर--अगर, बनाने या करनेवाला । पु० गला, रोग, विष ।
गरक--डूबा हुआ, बरबाद ।
गरज--आखिरकार, मतलब यह कि, स्त्री० मतलब, जरूरत, चाह, गंभीर, शब्द ।

गरजमंद, गरजी, गरजू—जरूरत-वाला, इच्छुक।

गरदन—स्त्री० ग्रीवा।

गरदनियाँ—स्त्री० गरदन पकड़ कर निकालना।

गरब—पु० गर्व, हाथी का मद।

गरबीला—अभिमानी।

गरम—तप्त, उग्र, प्रबल उत्साहपूर्ण। जिसके सेवन से गर्मी बढ़े। मु० गरम होना = क्रुद्ध होना।

गरमागरमी—स्त्री०जोश, कहासुनी।

गरमी—स्त्री० ताप, तेजी, क्रोध, उमंग, ग्रीष्म ऋतु।

गरल—पु० विष, जहर।

गरिमा—स्त्री० गुरुत्व, भारीपन, महिमा, गर्व, शेखी, आठ सिद्धियों में एक सिद्धि जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरिष्ठ—बहुत भारी, जो जल्दी न पचे।

गरीब—नम्र, दीन, निर्धन।

गरीब नवाज—गरीबों पर दया करने वाला।

गरीबपरवर—दीनप्रतिपालक।

गरीबी—स्त्री० दीनता, दरिद्रता।

गरीयस—भारी, महान।

गरु—भारी, गौरवशाली।

गरुड़गामी—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज—पु० विष्णु।

गरूर—पु० घमंड।

गरोह—पु० झुंड, जत्था।

गर्ज—स्त्री० दे० "गरज"।

गर्जन—पु० भीषण ध्वनि।

गर्त—पु० गड्ढा, दरार, घर, रथ।

गर्द—स्त्री० धूल, मिट्टी।

गर्दखोर—जो धूल आदि पड़ने से मैला मलूम न पड़े।

गर्दगुबार—पु० धूल मिट्टी।

गर्दभ—पु० गधा, गदहा।

गर्दिश—स्त्री० चक्कर, विपत्ति।

गर्भ—पु० हमल, गर्भाशय।

गर्भ केसर—पु० फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के भीतर होते हैं।

गर्भगृह—पु० बीच की कोठरी, आँगन, मंदिर में वह कोठरी जहाँ प्रतिमा हो।

गर्भनाल—पु० फूलों के अंदर वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर होता है।

गर्भपात—पु० गर्भ गिरना।

गर्भवती—स्त्री० गर्भिणी।

गर्भस्थ—जो गर्भ में हो।

गर्भस्राव—पु० चार महीने के भीतर का गर्भपात।

गर्भांक—पु० नाटक के अंक का एक [दृश्य।

गर्भाधान—पु० गर्भधारण।

गर्भाशय—पु० स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

गर्भिणी—स्त्री० जिसे गर्भ हो।

गर्भित—गर्भयुक्त, भरा हुआ।
गर्व—पु० अहंकार, घमंड।
गर्विता—स्त्री० वह नायिका जिसे अपने रूप गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।
गर्वीला—घमंडी।
गर्हण—पु० निंदा।
गर्हित—निंदित, बुरा।
गर्ह्य—गर्हणीय, निंदा करने योग्य।
गल—पु० गला, कंठ।
गलगंड—पु० घेघा।
गलग्रह—पु० कंठरोध, मछली का काँटा, वह विपत्ति जो कठिनता से दूर की जा सके।
गलत—अशुद्ध, झूठ।
गलतफहमी—स्त्री० भ्रम।
गलती—स्त्री० भूल, अशुद्धि।
गलफाँसी—स्त्री० गले की फाँसी, जंजाल।
गलबाँही—स्त्री० गले में बाँह [डालना।
गलवा—पु० हल्ला, धींगाधींगी।
गलमुद्रा—स्त्री० शिव-पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा।
गलसुई—स्त्री० दे० गल तकिया।
गलस्तन—पु० वे थैलियाँ जो कुछ बकरियों का गर्दन में दोनों ओर लटकती रहती हैं।
गला—पु० गरदन, कंठ, गले का स्वर। मु० गला घुटना = दम रुकना। गला घोंटना = गला दबा कर मार डालना। गला छूटना = पीछा छूटना। गला दबाना = दबाव डालना। गले का हार = अत्यंत प्यारा।
गलित—गला हुआ, जीर्णशीर्ण, च्युत, नष्टभ्रष्ट, परिपक्व, गिरा हुआ।
गलितकुष्ठ—पु० वह कोढ़ जिसमें अंग गल गल कर गिरे।
गलितयौवना—स्त्री० वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।
गली—स्त्री० घरों के बीच तंग रास्ता, कूचा।
गलीचा—पु० कालीन।
गलीज—मैला, नापाक। पु० पाखाना, गंदी वस्तु।
गलीत—मैला कुचैला।
गल्प—पु० छोटी कहानी, गप्प, डींग।
गल्ला—पु० फसल, अनाज।
गवन—पु० प्रस्थान, गौना।
गवर्नमेंट—स्त्री० राज्य।
गवर्नर—पु० शासक, लाट साहब।
गवर्नर जेनरल—पु० बड़ा लाट।
गवाक्ष—पु० झरोखा।
गवारा—सह्य, पसंद।
गवाह—पु० साक्षी।
गवाही—स्त्री० गवाह का बयान।
गवेषणा—स्त्री० खोज।
गवेषी—खोजनेवाला।

गव्य—गौ से प्राप्त दूध दही आदि । पु० गौओं का झुंड ।
गश—पु० मूर्छा ।
गश्त—पु० भ्रमण, दौरा, रौंद ।
गश्ती—घूमनेवाला । स्त्री० कुलटा ।
गसीला—गठा हुआ ।
गह—स्त्री० पकड़, मूठ ।
गहगहा—प्रफुल्लित ।
गहन—गंभीर, गहरा, घना, कठिन । पु० गहराई, दुर्गम स्थान, ग्रहण, दोष, दुःख, बंधन । स्त्री० पकड़, हठ ।
गहना—पकड़ना । पु० जेवर, रेहन ।
गहवर—दुर्गम, व्याकुल ।
गहरा—बहुत नीचा, बहुत, भारी, गाढ़ा । मु० गहरा हाथ = हथियार का भरपूर वार । गहरी छनना = गाढ़ी मित्रता होना ।
गहराई—स्त्री० गहरापन ।
गहीला—घमंडी, पागल ।
गहेला—हठी, घमंडी, पागल, गँवार ।
गह्वर—पु० गुफा, बिल, निकुंज, झाड़ी, वन, दुर्भेद्य स्थान ।
गांगेय—पु० भीष्म, कार्तिकेय, कसेरू ।
गाँज—पु० राशि, ढेर ।
गाँठ—स्त्री० गिरह, गठरी, अंग का जोड़, गट्टा । मु० मन की गाँठ खोलना = जी खोल कर कोई बात करना । मन में गाँठ पड़ना = मनमोटाव होना । गाँठ का पूरा = धनी ।
गाँठना—गाँठ लगाना, मरम्मत करना, जोड़ना, पक्ष में करना, जोर से पकड़ना । मु० मतलब गाँठना = काम निकालना ।
गाँथना—गूँथना ।
गांधर्व—गंधर्व संबंधी, गंधर्व देशोत्पन्न, गंधर्व जाति का । पु० गांधर्व वेद, गंधर्व-विवाह ।
गांधर्ववेद—पु० सामवेद का उपवेद, संगीत शास्त्र ।
गांधारी—स्त्री० गांधार देश की स्त्री [या राजकन्या ।
गांभीर्य—पु० गंभीरता, गहराई, स्थिरता, धीरता, गूढ़ता
गाँस—स्त्री० बंधन, बैर, रहस्य, गाँठ, तीर या बर्छी का फल, अधिकार, निगरानी, कठिनता ।
गाँसी—स्त्री० हथियार की नोक, गिरह, कपट, मनमुटाव ।
गाइड—पु० पथप्रदर्शक ।
गाउन—पु० यूरोप अमेरिका आदि की स्त्रियों की एक पोशाक ।
गागर—पु० कलस, घड़ा ।
गाज—स्त्री० गर्जन, वज्र, वज्रपात-ध्वनि । मु० गाज पड़ना = आफत आना, ध्वंस होना ।
गाजना—गरजना, प्रसन्न होना ।
गाजी—पु० मुसलमानों में धर्म के लिये विधर्मियों से लड़नेवाला वीर

पुरुष, वीर।

गाढ़—अधिक, दृढ़, घना, गहरा, विकट। पु० संकट।

गाढ़ा—जिसमें जल के सिवा ठोस अंश भी मिला हो, मोटा, घनिष्ट, कठिन। पु० मोटा कपड़ा, मस्त हाथी। मु० गाढ़े की कमाई = बहुत मेहनत का धन। गाढ़े का साथी = विपत्ति में सहायक। गाढ़े दिन = संकट के दिन।

गाणपत्य—पु० गणेश का उपासक।

गात, गात्र—पु० देह, अंग।

गाथा—स्त्री० स्तुति, श्लोक, गीत, कथा, एक प्राचीन भाषा।

गाद—स्त्री० तलछट, गाढ़ी चीज।

गादा—पु० कच्ची फसल।

गाधेय—पु० विश्वामित्र।

गाफिल—बेखबर, असावधान।

गाभ—पु० पशुओं का गर्भ।[लिये)।

गाभिन—स्त्री० गर्भिणी (चौपायों के

गामी-चलने वाला, संभोग करनेवाला।

गायक—पु० गवैया।[खैर, दुर्गा, गंगा।

गायत्री—स्त्री० एक वैदिक मंत्र,

गायन—पु० गान, गायक, कार्तिकेय।

गायब—लुप्त।

गायिनी—स्त्री० गाने वाली।

गारत—नष्ट, बरबाद।

गारद—स्त्री० सिपाहियों का समूह

जो रक्षा के लिये नियत हो, पहरा।

गार्ड—पु० रक्षक, निरीक्षक।

गार्हस्थ्य—पु० गृहस्थाश्रम, गृहस्थ के मुख्य कर्म।

गाल—पु० कपोल, ग्रास, मुँहजोरी, बीच। मु० गाल फुलाना = रूठना। गाल बजाना = डींग मारना।

गाली गुफ्ता—पु० गाली गलौज।

गालू—पु० गाल बजाने वाला, गप्पी।

गावकुशी—स्त्री० गोवध।

गावतकिया—पु० मसनद।

गावदी—बेवकूफ, नासमझ।

गावदुम—जो ऊपर से पतला होता आया हो। [खरीददार, चाहनेवाला।

गाहक—पु० अवगाहन करने वाला,

गाहकी—स्त्री० बिक्री, गाहक।

गाहन—पु० स्नान, गोता लगाना।

गाही—स्त्री० पाँच की एक गिनती।

गिजा-स्त्री० भोजन, खुराक। [करना।

गिड़गिड़ाना-अत्यंत नम्र होकर बात

गिद्धराज—पु० जटायु।

गिनी—स्त्री० सोने का एक सिक्का।

गिर—पु० गिरि, पहाड़। [मंदिर।

गिरजा—पु० ईसाइयों का प्रार्थना-

गिरफ्तार—जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो, ग्रस्त।

गिरफ्तारी—स्त्री० गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया।

गिरमिट—पु० (अं० एग्रीमेंट) इकरारनामा, इकरार।

गिरवी—बंधन, रेहन ।

गिरवीदार—पु० जिसके यहाँ गिरवी रखी जाय ।

गिरह—स्त्री० गाँठ, जेब, एक गज का सोलहवाँ भाग, कलाबाजी ।

गिराँ—महँगा, भारी, अप्रिय ।

गिरा—स्त्री० वाणी, बोलने की शक्ति, जिह्वा, सरस्वती देवी ।

गिरानी—स्त्री० महँगी, अकाल, कमी, पेट का भारीपन ।

गिरापति, गिरापितु—पु० ब्रह्मा ।

गिरि—पु० पहाड़, एक प्रकार के संन्यासी, परिव्राजकों की एक उपाधि ।

गिरिजा—स्त्री० पार्वती, गंगा ।

गिरिधर, गिरिधारण, गिरिधारी—पु० श्रीकृष्ण ।

गिरिनंदिनी—स्त्री० पार्वती, गंगा [नदी ।

गिरिनाथ—पु० महादेव ।

गिरिराज—प० हिमालय, गोवर्द्धन पर्वत, मेरु, बड़ा पर्वत ।

गिरिव्रज—पु० राजगृह का परम प्राचीन नाम ।

गिरिसुता—स्त्री० पार्वती । [शिव ।

गिरींद्र—पु० बड़ा पर्वत, हिमालय,

गिरीश—पु० शिव, हिमालय, सुमेरु पर्वत, गोवर्द्धन पर्वत, कैलाश पर्वत, कोई बड़ा पहाड़ ।

गिरो—रेहन, बंधक ।

गिर्द—आसपास, चारो ओर ।

गिलटी—स्त्री० शरीर में जोड़ की जगह पर की गोल छोटी गाँठ, इस गाँठ के सूजने का रोग ।

गिलाफ—पु० कपड़े की खोल, म्यान, बड़ी रजाई ।

गिलौरी—स्त्री० पानों का बीड़ा ।

गी—स्त्री० वाणी, सरस्वती ।

गीत—पु० गाना, यश । मु० गीत गाना = बड़ाई करना । अपना ही गीत गाना = अपनी ही बात कहते जाना, दूसरे की न सुनना ।

गीता—स्त्री० वह ज्ञानमय उपदेश जो किसी बड़े से माँगने पर मिले, भगवद्गीता, कथा ।

गीति, गीतिका—स्त्री० गान ।

गीदड़भबकी—स्त्री० मन में डरते हुए ऊपर से बिगड़ना या क्रोध प्रकट करना ।

गीर—वाला । स्त्री० वाणी ।

गीर्देवी—स्त्री० सरस्वती ।

गीर्पति—पु० बृहस्पति, विद्वान ।

गीर्वाण—पु० देवता ।

गीस्पति—पु० दे० "गीर्पति" ।

गुंचा—पु० कली, नाच-रंग ।

गुंज—स्त्री० भौंरों के भनभनाने का शब्द, कलरव, गुंजा ।

गुंजन—स्त्री० भनभनाहट ।

गुंजना—भनभनाना ।

गुंजनिकेतन—पु॰ भौंरा ।
गुंजरना—गुंजार करना, भनभनाना ।
गुंजा—स्त्री॰ घुँघची ।
गुंजाइश—स्त्री॰ अटने की जगह, [समाई ।
गुंजायमान—गूँजता हुआ ।
गुंजार—पु॰ भौंरों की गूँज ।
गुंडा—बदचलन, छैला ।
गुंथना—सानना, गूँथना ।
गुंफ—पु॰ ग्रंथन, उलझन, गूँथना, गुच्छा, दाढ़ी ।
गुंफन—पु॰ उलझाव, गूँथना ।
गुंबज, गुंबद—पु॰ गोल और ऊँची [छत ।
गुआ—पु॰ सुपारी ।
गुइयाँ—स्त्री॰ साथी, सखी ।
गुच्छ, गुच्छक—पु॰ एक में बँधे फूलों या पत्तियों का समूह, गुच्छा, झाड़, मोर की पूँछ ।
गुच्छा—एक में लगे कई पत्तों या फूलों का समूह, फुदना, झब्बा ।
गुजर—पु॰ निर्वाह, गति, प्रवेश ।
गुजरना—बीतना, किसी स्थान से होकर आना या जाना, निभना । मु॰ गुजर जाना = मर जाना ।
गुजर, बसर—पु॰ निर्वाह ।
गुजरी—स्त्री॰ ग्वालिन, पहुँची ।
गुजरेटी—स्त्री॰ ग्वालिन ।
गुजश्ता—बीता हुआ ।
गुजारना—बिताना, पहुँचाना ।
गुजारा—पु॰ निर्वाह, महसूल लेने का स्थान ।
गुजारिश—स्त्री॰ निवेदन ।
गुज्जरी—स्त्री॰ दे॰ "गुजरी" ।
गुटका—पु॰ छोटे आकार की पुस्तक, लट्टू ।
गुटिका—स्त्री॰ गोली ।
गुट्ट—पु॰ दल, झुंड ।
गुड़ाकेश—पु॰ शिव, अर्जुन ।
गुड़िया—स्त्री॰ लड़कियों के खेलने की कपड़ों की बनी पुतली ।
गुण—पु॰ सिफत; प्रकृति के तीन भाव सत्त्व, रज, तम; हुनर, असर, निपुणता, सद्वृत्ति, खासियत, प्रकृति, तीन की संख्या, रस्सी, धनुष की प्रत्यंचा, एक प्रत्यय जो संख्या वाचक शब्दों के आगे लग कर उतनी ही बार होना सूचित करता है । जैसे द्विगुण ।
गुणक—पु॰ वह अंक जिससे गुणा किया जाय ।
गुणग्राहक, गुणग्राही—कदरदान ।
गुणज्ञ—पु॰ गुणी, गुण का पारखी ।
गुणन—पु॰ गुणा करना, गिनना, रटना, मनन करना ।
गुणनफल—पु॰ गुणा करने से प्राप्त [अंक ।
गुणवंत—गुणवान ।
गुणवाचक—गुण सूचक ।
गुणवान—गुणी ।
गुणांक—पु॰ वह अंक जिसे गुणा [करना हो ।

गुणाढ्य—गुणी।
गुणानुवाद—पु० गुण-कथन।
गुणी—गुणवाला, हुनरमंद, ओझा।
गुण्य—पु० वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुत्थमगुत्था-पु० उलझाव, हाथापाई।
गुत्थी—स्त्री० उलझन। [लिपट जाना।
गुथना-लड़ी या गुच्छे में नाथा जाना, गाँथा जाना, टाँका लगाना, लड़ने को
गुदगुदी—स्त्री० वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर ऊँगली आदि छू जाने से होती है, उत्कंठा, उमंग।
गुदड़ी—स्त्री० फटा-पुराना कपड़ा। मु० गुदड़ी के लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु। [बिकती हैं।
गुदरी बाजार-पु० वह बाजार जहाँ फटे-पुराने कपड़े या टुटी-फुटी चीजें
गुदा—स्त्री० मलद्वार, गाँड।
गुनना-गुणा करना, गिनना, रटना, सोचना।
गुनहगार—पापी, दोषी।
गुनाह—पु० पाप, कसूर।
गुनाही—पु० गुनहगार।
गुपचुप—छिपाकर।
गुप्त—छिपा हुआ, गूढ़।
गुप्तचर—पु० भेदिया, जासूस।
गुप्ति—स्त्री० छिपाना, रक्षा करना, कैदखाना, गुफा, अहिंसा आदि योग के नियम। [हो।
गुप्ती—स्त्री० वह छड़ी जिसके अंदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार
गुफा—स्त्री० कंदरा, खोह।
गुफ़्तगू—स्त्री० बातचीत।
गुफ्तार—बातचीत।
ग़ुबार—पु० धूल, मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि।
गुब्बारा—पु० वह थैली जिसमें गरम या हलकी गैस भर कर आकाश में उड़ाते हैं।
गुम—पु० गुप्त, खोया हुआ।
गुमटी—स्त्री० लाट, कलस, शिखर, छोटी कोठरी। [हो।
गुमनाम—अज्ञात, जिसमें नाम न
गुमराह—बुरे मार्ग में चलने वाला, भूला भटका।
गुमसना—सड़ना, दुर्गंध होना।
गुमान—पु० घमंड, अनुमान, बुरी धारणा।
गुमानी—घमंडी।
गुमाश्ता—पु० बड़े व्यापारी की ओर से खरिदने बेचने पर नियुक्त व्यक्ति।
गुरदा—पु० कलेजे के निकट का एक अंग, हिम्मत, छोटी तोप।
गुरु—बड़ा, भारी, कठिनता से पचने वाला, देवगुरु, बृहस्पति, बृहस्पति ग्रह, पुष्प नक्षत्र, आचार्य, उस्ताद, मन्त्र का उपदेष्टा, दो मात्राओं वाला

अक्षर, ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
गुरुआनी–स्त्री० गुरुपत्नी, शिक्षिका।
गुरुआई–स्त्री० गुरु का काम, चालाकी।
गुरुकुल—पु० गुरु के रहने का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रख कर शिक्षा देता हो।
गुरुजन—पु० बड़े लोग।
गुरुता—स्त्री० गुरुत्व, बड़प्पन।
गुरुत्वाकर्षण—पु० वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
गुरुदक्षिणा—स्त्री० वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।
गुरुद्वार—पु० गुरु के रहने की जगह, सिक्खों का मंदिर।
गुरु भाई—पु० एक ही गुरु के शिष्य।
गुरुमुख—जिसने गुरु से मंत्र लिया हो।
गुरुमुखी–स्त्री० पंजाब की एक लिपि।
गुरुवार—पु० बृहस्पति वार।
गुरुघंटाल—भारी चालाक।
गुरूर—पु० घमंड
गुरेरना—आँखे फाड़ कर देखना।
गुर्जर—पु० गुजरात देश, गुजरात वासी।
गुर्जरी—स्त्री० गुजरात की स्त्री।
गुर्विणी—स्त्री० गर्भवती।
गुल—पु० फूल, गुलाब का फूल, जलता कोयला, दीपक की बत्ती का जल कर उभरा अंश, कनपटी। मु० गुल खिलना = विचित्र घटना होना। चिराग गुल करना = चिराग बुझाना।
गुल, गुलगपाड़ा—पु० शोरगुल।
गुलगुल—मुलायम। [विलास।
गुलछर्रा—पु० स्वच्छंदता पूर्वक भोग
गुलजार–हराभरा, अनंद और शोभायुक्त। पु० वाटिका।
गुलदस्ता—पु० सुंदर फूलों और पत्तियों का गुच्छा। [पात्र।
गुलदान—पु० गुलदस्ता रखने का
गुलनार—पु० अनार का फूल, अनार के फूल सा गहरा लाल रंग।
गुलशन—पु० वाटिका, बाग।
गुलाबपाश—पु० झारी के आकार का वह पात्र जिससे गुलाब जल भर कर छिड़कते हैं।
गुलाबी—गुलाब के रंग का। पु० एक हलका लाल रंग।
गुलाम—पु० दास, नौकर।
गुलामी—स्त्री० दासता, नौकरी, पराधीनता।
गुलाल—पु० अबीर।
गुलिस्ताँ—पु० बाग, वाटिका।
गुल्म—पु० ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले जैसे ईख। पीलहा रोग। सेना का एक समुदाय।
गुस्ताख–धृष्ट, अशिष्ट।
गुस्ताखी—स्त्री० ढिठाई, बेअदबी।

गुस्लखाना--पु० नहाने का घर ।

गुस्सा—पु० क्रोध ।

गुह--पु० घोड़ा, गुफा, हृदय, कार्त्तिकेय, विष्णु का एक नाम, मैला ।

गुहना—गूँथना ।

गुह्य--गुप्त, गोपनीय, गूढ़ ।

गुह्यपति--पु० कुबेर। [प्रतिध्वनि,

गूँज—स्त्री० भौरों का गुंजन शब्द,

गूजरी--स्त्री० ग्वालिन ।

गूढ़—गंभीर, कठिन, गुप्त ।

गून--स्त्री० नाव खींचने की रस्सी ।

गूलर--पु० एक पेड़। मु० गूलर का फूल = जो कभी देखने में न आवे ।

गूह--पु० गलीज, विष्ठा ।

गृध्र—पु० गिद्ध ।

गृह--पु० घर, वंश

गृहयुद्ध—पु० घरेलू झगड़े, किसी देश के भीतर आपस की लड़ाई ।

गृहस्थ--पु० ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति, बालबच्चों वाला आदमी, वह जिसे खेती होती हो ।

गृहस्थाश्रम—पु० चार आश्रमों में दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते हैं और घर का कामकाज देखते हैं ।

गृहस्थी—स्त्री० गृहस्थाश्रम, घर-बार, लड़केवाले, माल असबाब, खेती बारी ।

गृहिणी—स्त्री० घर की मालिकिन, भार्य्या ।

गृही—पु० गृहस्थ ।

गृह्य—गृह संबंधी ।

गृहसूत्र--पु० वह वैदिक पद्धति जिसके मुताबिक गृहस्थ लोग मुंडन, विवाह आदि संस्कार करते हैं ।

गेय—गाने लायक ।

गेरुआ--गेरू के रंग का, मटमैलापन लिये लाल रंग का, गेरू के रंग में रंगा हुआ ।

गेरू—स्त्री० एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खान से निकलती है ।

गेह—पु० घर, मकान ।

गेहनी--स्त्री० गृहणी ।

गेही--पु० गृहस्थ ।

गेहुँआ—गेहूँ के रंग का, बादामी ।

गैर--दूसरा, पराया, विरुद्ध अर्थवाची या निषेध सूचक शब्द जैसे गैर मुमकिन ।

गैरमनकूला--स्थिर, अचल ।

गैर मामूली—असाधारण ।

गैर मुनासिब--अनुचित ।

गैर मुमकिन--असंभव ।

गैर वाजिब—अनुचित ।

गैर हाजिर--अनुपस्थित ।

गैल—स्त्री० गली, रास्ता ।

गैलरी—स्त्री० नीचे ऊपर बैठने का सीढ़ीनुमा स्थान ।

गो—यद्यपि, कहनेवाला (यौगिक में)। स्त्री० गाय, किरण, वृष राशि, इंद्रिय, वाणी, सरस्वती, दृष्टि, बिजली, पृथ्वी, दिशा, माता, दूध देने वाले पशु, जीभ। पु० बैल, घोड़ा, सूर्य, चंद्रमा, बाण, आकाश, स्वर्ग, जल, वज्र, शब्द, नौ का अंक।

गोइंदा—पु० जासूस, भेदिया।

गोइयाँ—पु० स्त्री० साथी।

गोकि—यद्यपि।

गोकुल—पु० गौओं का झुण्ड, गोशाला, मथुरा के पास एक प्राचीन गांव।

गोकोस—पु० उतनी दूरी जहाँ तक गाय की बोली सुन पड़े, छोटा कोस।

गोग्रास—पु० पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादि के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है।

गोचर—पु० वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके, चरागाह, प्रत्यक्ष, सामने।

गोज—पु० अपान वायु, पाद।

गोटा—पु० पतला फीता जो कपड़े के किनारे पर लगाया जाता है।

गोटी—स्त्री० पत्थर आदि का छोटा गोल टुकड़ा, लाभ का आयोजन। मु० गोटी जमना = युक्ति सफल होना।

गोड़इत—पु० चौकीदार।

गोत—पु० वंश, समूह।

गोता—पु० डुबकी।

गोताखोर—पु० डुबकी लगानेवाला।

गोत्र—पु० संतान, नाम, क्षेत्र, समूह, छत्र, बंधु, वंश, कुल या वंश का नाम जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होता है।

गोद—स्त्री० गोदी, कोरा, अंचल। मु० गोद लेना = गोद में बठाना, दत्तक पुत्र बनाना। गोद भरना = संतान होना।

गोदना—चुभाना। पु० शरीर पर सूई चुभाकर बनाया जानेवाला काला चिन्ह विशेष।

गोदान—पु० विधिपूर्वक गाय का दान, केशांत संस्कार।

गोदाम—पु० वह बड़ा स्थान जहाँ बिक्री का माल रखा जाता हो।

गोधन—पु० गौओं का समूह, गौ रूपी संपत्ति।

गोधूलि, गोधूली—वह समय जब गौओं के चर कर लौटने पर उनके खुरों से धूल उड़े अर्थात् संध्या समय।

गोना—छिपाना।

गोप—पु० गोरक्षक, ग्वाला, गोशालाध्यक्ष, राजा, गाँव का मुखिया।

गोपद—पु० जमीन पर गाय के खुर का चिन्ह या प्रमाण, गौओं के रहने का स्थान।

गोपन--पु० छिपाव, छिपाना, रक्षा।
गोपनीय—छिपाने लायक।
गोपांगना—स्त्री० ग्वालिन।
गोपा—स्त्री० ग्वालिन। [श्रीकृष्ण।
गोपाल—पु० गोपालक, ग्वाला,
गोपिका, गोपी—स्त्री० ग्वालिन, श्रीकृष्ण की प्रेमिका ब्रज की गोपी।
गोपीनाथ—पु० श्रीकृष्ण।
गोपुर--पु० नगर का द्वार, किले का फाटक, फाटक, स्वर्ग। [नंद।
गोपेंद्र--पु० श्रीकृष्ण, गोपों में श्रेष्ट,
गोबर गणेश—बेवकूफ, भद्दा।
गोमय--पु० गोबर।
गोमुखी—स्त्री० एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला जपते हैं, गौ के मुख के आकार का वह स्थान जहाँ से गंगा नदी निकली है।
गोमेध--पु० एक यज्ञ।
गोया--मानो।
गोरखधंधा--पु० ऐसी चीज या काम जिसमें बहुत उलझन हो।
गोरखपंथी—गोरखनाथ के चलाये संप्रदाय का।
गोरखा—पु० नेपाल का एक प्रदेश, वहाँ का निवासी।
गोरज—पु० गौ के खुरों से उड़ी हुई धूल। [का सुख।
गोरस—पु० दूध, दही, मट्ठा, इन्द्रियों
गोरा—सफेद वर्ण का। गोरे वर्ग की जाति का आदमी जैसे यूरोपियन।
गोरू—पु० चौपाया, मवेशी।
गोलंदाज--पु० तोप में गोला रख कर चलानेवाला।
गोल—वृत्ताकार। पु० वृत्त, गोलाकार पिण्ड, मंडली, झुण्ड। मु० गोल गोल = मोटे हिसाब से, अस्पष्ट रूप से। गोल बात = अस्पष्ट बात।
गोलक—पु० गोलोक, गोल पिंड, विधवा का जारज पुत्र, मिट्टी का बड़ा कुण्डा, आँख का डेला, आँख की पुतली, गुंबद, वह डिब्बा जिसमें पैसा जमा किया जाय, गल्ला, फंड।
गोलमाल--पु० गड़बड़।
गोल योग-पु० ज्योतिष में एक बुरा योग, गडबड़।
गोला--पु० गोलाकार पिंड, वह बाजार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों।
गोलाध्याय—पु० ज्योतिष विद्या।
गोली—छोटा गोलाकार पिंड।
गोलोक—पु० श्रीकृष्ण का निवास स्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है।
गोविंद--पु० श्रीकृष्ण, तत्वज्ञ।
गोशा—पु० कोना, एकांत स्थान, तरफ, धनुष की दोनों नोकें।
गोशाला—स्त्री० पशुओं के रहने का स्थान।

गोश्त—पु० मांस ।

गोष्ठी—स्त्री० मंडली, बातचीत, सलाह, एक ही अंक का एक रूपक ।

गोष्पद—पु० दे० "गोपद" ।

गोसाईं—पु० गौओं का स्वामी, ईश्वर, संन्यासियों का एक संप्रदाय, विरक्त साधु, मालिक ।

गोस्वामी—पु० जितेंद्रिय ।

गोहार—स्त्री० पुकार, दुहाई, रक्षा के लिये पुकार, हल्ला गुल्ला । [पक्ष ।

गौं—स्त्री० मौका, घात, मतलब, ढंग,

गौ—स्त्री० गाय ।

गौड़—पु० बंग देश का एक प्राचीन हिस्सा, ब्राह्मणों का एक वर्ग, ब्राह्मण और कायस्थ की एक उपजाति ।

गौण—अप्रधान, सहायक ।

गौतमी—स्त्री० गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या, गोदावरी नदी, दुर्गा ।

गौर—गोरे चमड़ेवाला, श्वेत । पु० लाल रंग, पीला रंग, चंद्रमा, सोना, केसर । ख्याल, चिंतन ।

गौरव—पु० बड़प्पन, गुरुता, आदर, उत्कर्ष, अभ्युत्थान ।

गौरांग—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण, चैतन्य महापुरुष ।

गौरा—स्त्री० गोरी स्त्री, पार्वती, हल्दी, आठ वर्ष की कन्या, गोरोचन, तुलसी, पृथ्वी, गंगा नदी, सफेद दूब, सफेद रंग की गाय ।

गौरीशंकर—पु० महादेव, हिमालय की सबसे ऊँची चोटी का नाम ।

गौहर—पु० मोती ।

ग्रंथ—पु० पुस्तक, गाँथ देना, धन ।

ग्रंथ कर्त्ता, ग्रंथकार—ग्रंथ बनाने वाला । [तौर पर पढ़ना ।

ग्रंथचुंबन—पु० किताब को सरसरी

ग्रंथन—पु० जोड़ना, गूँथना ।

ग्रंथसंधि—स्त्री० ग्रंथ का विभाग जैसे सर्ग, अध्याय आदि । [पुस्तक ।

ग्रंथ साहब—पु० सिक्खों का धर्म

ग्रंथि—स्त्री० गाँठ, मायाजाल ।

ग्रंथित—गूँथा हुआ, गाँठ दिया हुआ।

ग्रंथिबंधन—गँठबंधन ।

ग्रंथिल—गाँठदार ।

ग्रसन—पु० भक्षण, ग्रहण, ग्रास ।

ग्रसना—सताना, बुरी तरह पकड़ना ।

ग्रसित, ग्रस्त—पीड़ित, पकड़ा हुआ, खाया हुआ ।

ग्रह—पु० सूर्यादि नवग्रह, नौ की संख्या, ग्रहण करना, अनुग्रह, चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण, राहु, छोटे बच्चों का शकुनी आदि रोग ।

ग्रहण—पु० सूर्य, चन्द्र या दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का बीच में आये पिंड या छाया से छिप जाना, पकड़ना या लेना, मंजूरी ।

ग्रहपति—पु० सूर्य, शनि, आक का पेड़ ।

ग्रहवेध—पु० ग्रह की स्थिति आदि जानना।

ग्राम—पु० गाँव, समूह, शिव।

ग्रामणी-पु० गाँव का मालिक, प्रधान।

ग्रामीण—देहाती, गँवार।

ग्राम्य--ग्राम संबंधी, बेवकूफ, असली प्रसंग। पु० काव्य में गँवारू शब्द आने का दोष, अश्लील शब्द या वाक्य, स्त्री-प्रसंग।

ग्राम्य धर्म—पु० स्त्रीप्रसंग।

ग्रास-पु० कौर पकड़ना, गहण लगना।

ग्रासक--पकड़नेवाला, छिपानेवाला।

ग्राह—पु० घड़ियाल, ग्रहण, पकड़ना।

ग्राहक--पु० खरीददार, चाहक।

ग्राही--ग्रहण करनेवाला, मल रोकने वाला। [योग्य, जानने योग्य।

ग्राह्य—लेने योग्य, स्वीकार करने

ग्रीवा--स्त्री० गर्दन, गला।

ग्रोस—पु० बारह दर्जन

ग्रीष्म—स्त्री० गरमी की ऋतु, गरम।

ग्लान—खिन्न, कमजोर, रोगी।

ग्लानि—स्त्री० खेद, मानसिक व्यथा, अनुत्साह।

ग्वाल-पु० अहीर।

घ

घ—एक अक्षर। पु० घंटा, घर्घर शब्द, मेघ, धूप।

घँघरा—पु० लहँगा।

घंट—पु० घड़ा, मृतक क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।

घंटा--पु० धातु का एक बाजा, दिन रात का चौबीसवाँ भाग।

घंटाघर—पु० वह ऊँचा धौरहर जिस में एक ऐसी बड़ी घड़ी लगी हो जिस का घंटा दूर तक सुनाई दे। [घुँघरू।

घंटिका—स्त्री० बहुत छोटा घंटा,

घंटी-स्त्री० छोटा लोटा, छोटा घंटा।

घट—घटा हुआ। पु० घड़ा, शरीर।

घटक—पु० मध्यस्थ, दलाल, चतुर व्यक्ति, विवाह संबंध तय कराने वाला, वंश परंपरा बताने वाला।

घटकर्ण—पु० कुंभकर्ण।

घटती--स्त्री० कमी, हीनता।

घटना—होना, लगना, ठीक उतरना, कम होना। स्त्री० वाकया।

घटबढ़—स्त्री० कमी बेशी।

घटयोनि--पु० अगस्त्य मुनि।

घटवार—पु० मल्लाह, घाट का महसूल लेने वाला।

घटसंभव--पु० अगस्त्य मुनि।

घटा--स्त्री० मेघमाला।

घटाकाश—पु० घड़े के अंदर की खाली जगह।

घटाटोप--पु० चारों ओर से घिरा बादल ।

घटाव--पु० न्यूनता, अवनति ।

घटिका--स्त्री० छोटा घड़ा, घड़ी, एक घड़ी या २४ मिनट का समय ।

घटित--रचित, जो हो चुका हो ।

घटिया--खराब, तुच्छ । [दुष्ट ।

घटिहा--चालाक, धोखेबाज, लंपट,

घटी--स्त्री० घड़ी अर्थात् २४ मिनट का समय, समय सूचक यंत्र, कमी, हानि । [चिह्न ।

घट्ठा—पु० शरीर के किसी हिस्से पर रगड़ लगने से उभड़ा हुआ कड़ा

घड़ा—पु० गगरा । मु०घड़ों पानी पड़ जाना = अत्यंत लज्जित होना ।

घड़ी--स्त्री० २४ मिनट का समय, समय, अवसर, समय सूचक यंत्र । मु० घड़ी घड़ी = बारबार । घड़ी गिनना = उत्सुकता से आसरा देखना, मरने के निकट होना । [वाला ।

घड़ीसाज--पु० घड़ी मरम्मत करने

घन--घना, ठोस, दृढ़, ज्यादा । पु० मेघ, लोहारों का बड़ा हथौड़ा, समूह, कपूर, घंटा, वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से लब्ध हो; लंबाई और चौड़ाई तथा मोटाई तीनों का विस्तार ।

घनघोर—बहुत घना, भीषण । पु० भीषण ध्वनि, बादल की गरज ।

घन चक्कर—पु० चंचल बुद्धि का व्यक्ति, व्यर्थ इधर उधर भटकने वाला मूर्ख ।

घनत्व—पु० सघनता । ठोसपन । लंबाई,चौड़ाई,मोटाई तीनोंका भाव ।

घननाद--पु० मेघनाद ।

घनफल—पु० लंबाई, चौड़ाई, मोटाई तीनों का गुणन फल । किसी संख्या को उस संख्या से दो बार गुणा करने का फल ।

घनमूल--पु० गणित में किसी घन का मूल अङ्क जैसे ६४ का ४ ।

घनश्याम—पु० काला बादल,श्रीकृष्ण, रामचंद्र ।

घनसार--पु० कपूर ।

घना--सघन, नजदीकी, बहुत ।

घनात्मक--जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई बराबर हो । जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो ।

घनिष्ठ—गाढ़ा, पास का ।

घनेरा--बहुत अधिक ।

घपला--पु० गड़बड़ ।

घबराहट--स्त्री० व्याकुलता, उतावली, किंकर्त्तव्य विमूढ़ता ।

घमंड—पु० अभिमान, भरोसा ।

घमासान--पु० भयंकर लड़ाई ।

घर—पु० मकान, रहने का स्थान, जन्मस्थान, वंश, कोठरी, घिरा स्थान,

ख़ाना, कार्य्यालय, कारखाना, छेद, मूल कारण, गृहस्थी । मु० घर करना = बसना । घर का न घाट का = कहीं का नहीं ।

घरघालन--घर बिगाड़ने वाला ।

घरजाया--पु० घर का गुलाम ।

घरदासी—स्त्री० पत्नी ।

घरद्वार--पु० घरबार ।

घरनी--स्त्री० गृहणी ।

घरबार-पु० रहने का स्थान, गृहस्थी, निज की संपत्ति । [गृहस्थ ।

घरबारी--पु० बालबच्चों वाला,

घराऊ—घरका, आपस का । [लोग ।

घराती—पु० विवाह में कन्यापक्ष के

घराना--पु० खानदान, वंश ।

घरीक--एक घरी भर ।

घरेलू—घरका, पालतू ।

घर्म—पु० धूप ।

घर्राटा—घर घर शब्द ।

घर्षण--पु० रगड़ ।

घसियारा—पु० घास छीलने या बेंचने वाला ।

घहरना = गरजने सा शब्द करना ।

घा—स्त्री० ओर, तरफ ।

घाघ—पु० बहुत दिन पहले गोंडा के पास रहने वाले एक बड़े चतुर व्यक्ति जिनकी बहुत सी कहावतें प्रसिद्ध हैं, [illegible]

घाट—पु० किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते धोते या नाव पर चढ़ते हैं, पहाड़, चढ़ाव उतार का पहाड़ी मार्ग, ओर, रंग ढंग, तलवार की धार । मु० घाट घाट का पानी पीना = देश देशांतर घूम कर अनुभव प्राप्त करना, मारे मारे फिरना ।

घाटा--पु० हानि । [सँकरा मार्ग ।

घाटी--स्त्री० पर्वतों के बीच का

घात--पु० चोट, वध, बुराई, गुनन-फल । स्त्री० सुयोग, ताक, दाँवपेच, रंगढंग ।

घातक, घातकी, घाती, घातुक—पु० हत्यारा । [जाय ।

घानी—स्त्री० उतनी वस्तु जितनी एक बार में कोल्हू या चक्की में डाली

घाम—पु० धूप, पसीना ।

घायल - आहत, जख्मी ।

घालक—नाशक ।

घालना—डालना, रखना, फेंकना, बिगाड़ना, मार डालना । [देना ।

घाव-पु० जख्म । मु० घाव पर नमक छिड़कना = दुःख के समय और दुःख

घास—स्त्री० तृण, चारा ।

घिग्घी—स्त्री० साँस लेने में वह रुकावट जो रोते रोते पड़ने लगती है, हिचकी, बोलने में वह रुकावट जो [illegible] के कारण होती है ।

घिघियाना—स्त्री० गिड़गिड़ाना ।

घिन—स्त्री० घृणा।
घिनाना—घृणा करना।
घिनौना—घृणित।
घिरना—घेरे में आना, चारों ओर से इकट्ठा होना।
घिरनी—स्त्री० चरखी, चक्कर।
घिसघिस—स्त्री० कार्य में शिथिलता, अनुचित विलंब। [होना।
घिसना—रगड़ना, रगड़ खाकर कम
घिसपिस—स्त्री० घिसघिस, मेलजोल।
घी—पु० घृत। मु० घी के दिये जलना = आनंद मंगल होना। पाँचो ऊँगली घी में होना = खूब लाभ होना।
घुँघराले—घूमे हुए (बाल)।
घुँघरू—पु० एक गहना जिसमें बहुत ऐसे गोलक रहते हैं जिनमें घन घन बजने के लिये कंकड़ भरे जाते हैं।
घुंडी—स्त्री० कपड़े का गोल बटन, गोल गांठ।
घुग्घी—स्त्री० ओढ़ने के लिये तिकोना बनाया हुआ कंबल आदि।
घुग्घू—पु० उल्लू पक्षी।
घुटना—साँस का भीतर ही दब जाना, फँसना, घोटा जाना, रगड़ खाकर चिकना होना। पु० ठेहुना।
घुटरूँ—पु० ठेहुना, घुटना।
घुड़कना—कड़क कर बोलना।
घुड़की—स्त्री० फटकार।
घुड़दौड़—स्त्री० घोड़े की दौड़।
घुड़साल—स्त्री० घोड़ों के बाँधने का स्थान।
घुणाक्षरन्याय—पु० ऐसी रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुणों से खाते खाते लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं।
घुन—पु० एक छोटा कीड़ा जो लकडी या अनाज में लगता है। मु० घुन लगना = अंदर ही अंदर क्षीण होना।
घुन्ना—जो अपने क्रोध द्वेष आदि भावों को मन ही मन रखे।
घुमड़—स्त्री० बरसने वाले बादलों का घेरघार। [रास्ते का मोड़।
घुमाव—पु० घूमने का भाव, फेर,
घुर्मित—घूमता हुआ।
घुलना—खूब मिलजाना, गलना, खूब पक जाना, दुर्बल होना, बीतना। मु० घुल घुल कर बातें करना = खूब मिल जुल कर बातें करना।
घूंघट—पु० वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है।
घूँट—पु० तरल पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में पिया जाय।
घूरना—बार बार आँख गड़ाकर बुरे भाव से देखना, क्रोध पूर्वक एक टक देखना, घूमना।
घूर्णित—भ्रमित, घुमाया गया।
घूस—स्त्री० अपने अनुकूल काम कराने के लिये अनुचित रूप से दिया

गया द्रव्य, रिशवत, उत्कोच ।
घूसखोर—पु० घूस खाने वाला ।
घृणा—स्त्री० नफरत ।
घृत—पु० घी ।
घृष्ट—पिसा हुआ ।
घेरघार—स्त्री० चारों ओर से घेरना या छाजाना, विस्तार, खुशामद ।
घेरना—चारों ओर से छेंकना, खुशामद करना ।
घेरा—पु० हाता, परिधि, परिधि का मान, घेरने का काम ।
घोंसला—पु० खोता ।
घोखना—रटना ।
घोट, घोटक—पु० घोड़ा ।
घोटाला—पु० घपला, गड़बड़ ।
घोर—भयंकर, सघन, कठिन, गहरा, बुरा, बहुत ज्यादा । स्त्री० शब्द, गरजन ।
घोष—पु० अहीरों की बस्ती, अहीर, गोशाला, किनारा, शब्द, गरजने का शब्द, शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न । [प्रचार, गर्जन, ध्वनि ।
घोषणा—स्त्री० उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, राजाज्ञा आदि का
घोषणापत्र—पु० वह पत्र जिसपर कोई घोषणा लिखी हो ।
घोसी—पु० अहीर, ग्वाला ।
घौद—पु० गुच्छा । [सुगंध
घ्राण—स्त्री० नाक, सूँघने की शक्ति,
घ्राणेंद्रिय—पु० नाक ।

ङ

ङ—एक अक्षर । पु० सूँघने की शक्ति, गंध, भैरव ।

च

च—एक अक्षर । पु० कच्छप, चंद्रमा, चोर, दुर्जन ।
चंग—स्त्री० एक बाजा, गुड्डी ।
चंगा—स्वस्थ, अच्छा, निर्मल ।
चंगु, चंगुल—पु० पंजा, वश । मु० चंगुल में फँसना = वश में हो जाना ।
चंगेरी—स्त्री० टोकरी ।
चंचरी—स्त्री० भ्रमरी ।
चंचरीक—पु० भ्रमर, भौंरा ।
चंचल—अस्थिर, अधीर, उद्विग्न, चुलबुला । [पीपल ।
चंचला—स्त्री० लक्ष्मी, बिजली,
चंचु—पु० हरिन, रेंड का पेड़ । स्त्री० चिड़ियों की चोंच ।
चंट—चालाक, धूर्त ।
चंड—तेज, तीक्ष्ण, उग्र, दुर्दमनीय,

विकट, क्रोधी । पु० गरमी, कार्तिकेय ।
चंडकर, चंडांशु—पु० सूर्य ।
चंडाल—पु० चांडाल, श्वपच ।
चंडालिका—स्त्री० दुर्गा ।
चंडालिनी—स्त्री० चंडाल वर्णकी स्त्री, दुष्टा स्त्री ।
चंडावल—पु० सेना के पीछे का भाग, हरावल का उलटा, बहादुर सिपाही, संतरी । [गायत्री देवी ।
चंडिका—स्त्री० दुर्गा, लड़ाकी स्त्री,
चंडी—स्त्री० दुर्गा, लड़ाकी स्त्री ।
चंडू—अफीम की बनी एक चीज जिसका धूआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं ।
चंडूखाना—पु० वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं । मु० चंडू खाने की गप = मतवालों की झूठी बकवाद ।
चंद—थोड़े से, कुछ । पु० चाँद ।
चंदक—पु० चंद्रमा, चाँदनी ।
चंदन—पु० एक सुगंधित लकड़ी, घिसे हुए चंदन का लेप ।
चंदनगिरि—पु० मलयाचल ।
चँदला—गंजा, जिसके सिर के बाल उड़े हों ।
चँदवा—पु० एक प्रकार का छोटा मंडप, चँदोवा, मोर की पुच्छ पर का अर्द्ध चन्द्राकार चिह्न ।
चंदा—पु० चंद्रमा, बेहरी, सदस्य-ओं का वार्षिक मूल्य ।

चँदिया—स्त्री० सिर का मध्य भाग, खोपड़ी ।
चंदिर—पु० चंद्रमा ।
चंद्र—आनंद दायक, सुंदर । पु० चंद्रमा, एक की संख्या, मोर की पूँछ की चंद्रिका, कपूर, जल, सोना, हीरा, कोई आनंद दायक वस्तु, अर्द्ध अनुस्वार का चिन्ह ।
चंद्रकला—स्त्री० चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश, चंद्र किरण,
चंद्रकांत—पु० एक मणि जिसके बारे में कहते हैं कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसीजता है । [रात्रि ।
चंद्रकांता—स्त्री० चंद्रमा की स्त्री,
चंद्रचूड़—पु० शिव । [देता है ।
चंद्रधनु—पु० इंद्र धनुष जो रात को चंद्रमा का प्रकाश पड़ने से दिखाई
चंद्रधर—पु० शिव ।
चंद्रप्रभा—स्त्री० चाँदनी । [बिंदी ।
चंद्रबिन्दु—पु० अर्द्ध अनुस्वार की
चंद्रबिंब—पु० चंद्रमंडल ।
चंद्रभागा—स्त्री० चनाव नदी ।
चंद्रभाल—पु० शिव ।
चंद्रभूषण—पु० शिव ।
चंद्रमणि—पु० चंद्रकांत मणि ।
चंद्रमा—पु० चाँद ।
चंद्रमाललाम, चंद्रमौलि—पु० शिव ।
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा—स्त्री० चंद्र की कला, चाँदनी, द्वितीया का चाँद ।

चंद्रलोक—पु० चंद्रमा का लोक ।
चंद्रवार—पु० सोमवार ।
चंद्रशेखर—पु० शिव । [तलवार ।
चंद्रहास—पु० तलवार, रावण की
चंद्रा--स्त्री० मरने के समय टकटकी लगने की अवस्था ।
चंद्रातप—पु० चाँदनी, चँदोवा ।
चंद्रिका--स्त्री० चाँदनी, मोर की पूँछ पर का गोल चिन्ह, इलायची, जूही, चमेली, बेंदी, एक देवी ।
चंद्रोपल—पु० चंद्रकांत मणि ।
चंपई—चंपा के फूल के रंग का, पीले रंग का । [में एक सिद्धि ।
चंपक--पु० चंपा, चंपा केला, सांख्य
चंपत—गायब ।
चँपना--दबना ।
चंपा--पु० एक फूल, अंग देश की प्राचीन राजधानी, एक प्रकार का केला, रेशम का कीड़ा ।
चंपू--पु० गद्य-पद्यमय काव्य ।
चंबल—स्त्री० नदी, वह लकड़ी जिससे सिंचाई के लिये पानी ऊपर चढ़ाते हैं । पु० भिक्षापात्र, पानी की बाढ़ ।
चँवर—पु० सुरा गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देव-मूर्तियों पर डुलाया जाता है, झालर, फुदना, घोड़े-हाथी के सर पर लगाने की कलगी ।
चँवरढार—पु० चँवर डुलाने वाला सेवक । [अधिकार ।
चक—भरपूर, चकपकाया हुआ, भ्रांत । पु० चक्रवाक पक्षी, चक्र, पहिया, जमीन का बड़ा टुकड़ा, छोटा गाँव,
चकई—स्त्री० मादा चकवा ।
चकचौंध—स्त्री० दे० "चकाचौंध" ।
चकत्ता—पु० चमड़े पर का गोल दाग, चिपटी सूजन, मुगल अमीर चगताई खाँ । चगताई खाँ के वंशज ।
चकनाचूर—चूर चूर, बहुत थका हुआ ।
चकबंदी—स्त्री० जमीन का बटवारा ।
चकमक—पु० एक पत्थर जिसपर चोट पड़ने से बहुत जल्द आग निकलती है ।
चकमा—पु० धोखा, हानि ।
चकराना—चक्कर खाना, चकित होना, घबराना ।
चकरी—चंचल । स्त्री० चक्की ।
चकला—चौड़ा । पु० रोटी बेलने का चौका, चक्की, इलाका, जिला, वेश्याओं का अड्डा, कसबीखाना ।
चकवा—पु० एक जल-पक्षी जिसके विषय में कहा जाता है कि वह रात में जोड़े से अलग हो जाता है, सुरखाव ।
चकाचौंध—स्त्री० तिलमिलाहट ।
चकित—विस्मित, हैरान, चौकन्ना ।

चकोटना—चुटकी या चुट्टी काटना।

चकोर—पु० एक पहाड़ी पक्षी जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खाने वाला प्रसिद्ध है।

चक्क—पु० चकवा पक्षी।

चक्कर—पु० पहिया, गोलाकार घेरा, फेरा, परिक्रमण, पहिये के ऐसा भ्रमण, फेर, हैरानी, जटिलता, सिर घूमना, भँवर। मु० चक्कर काटना = परिक्रमा करना। चकरखाना = पहिये की तरह घूमना, भटकना। चक्कर में आना = धोखा में आना।

चक्कवई—दे० "चक्रवर्ती"।

चक्का—पु० पहिया, पहिये के आकार की कोई गोल वस्तु।

चक्की—स्त्री० जाँता, बिजली।

चक्र—पु० पहिया, कुम्हार का चाक, चक्की, कोल्हू, पहिये के आकार का कोई गोल वस्तु, एक अस्त्र, भँवर, बवंडर, समूह, एक प्रकार का व्यूह, प्रदेश, आसमुद्रांत भूमि, चक्रवाक पक्षी। भ्रमण, दिशा।

चक्रधर, चक्रधारी—चक्रधारण करने-वाला। पु० विष्णु, श्रीकृष्ण, बाजीगर।

चक्रपाणि—पु० विष्णु।

चक्रवर्ती—आसमुद्रांत भूमि पर राज्य करनेवाला।

चक्रवाक—पु० चकवा पक्षी।

चक्रवाक बंधु—पु० सूर्य।

चक्रवात—पु० बवंडर।

चक्रवृद्धि—स्त्री० सूद दर सूद।

चक्र व्यूह—पु० सेना की कई घेरों में मंडलाकार स्थिति।

चक्रायुध—पु० विष्णु।

चक्रित—चकित।

चक्री—पु० चक्रधारी, विष्णु, गाँव का पुरोहित, चक्रवाक, कुम्हार, सर्प, जासूस, तेली, चक्रवर्ती।

चक्षु—पु० आँख।

चख—पु० आँख, झगड़ा।

चख-चख—पु० कहासुनी, झगड़ा।

चखना—स्वाद लेना।

चग़ताई—पु० चग़ताई खाँ से चला हुआ तुर्कों का एक वंश।

चट—फौरन, झट। पु० दाग। मु० चट कर जाना = सब खा जाना।

चटक—चटकीला, चटपटा, तेजी से। पु० गौरैया पक्षी, फुरती, चमक-दमक।

चटकदार—चटकीला।

चटकना—तड़कना, चटचट करना, चिड़चिड़ाना, स्थान-स्थान पर फटना, कलियों का खिलना, अनबन होना।

चटक-मटक—स्त्री० बनाव-सिंगार, नाज़-नखरा।

चटकाली—स्त्री० चिड़ियों की पंक्ति।

चटकीला—चमकीला, भड़कीला, चटपटा।

चटपट—जल्दी।

चटपटा—चरपरा, मजेदार।

चटपटी—स्त्री० शीघ्रता, व्यग्रता।

चटसार, चटी—स्त्री० पाठशाला।

चटुल—चंचल, सुंदर।

चटोरा—स्वादलोलुप, लोभी।

चट्टान—पु० शिलाखंड।

चट्टाबट्टा—पु० बाजीगर की थैली के गोले और गोलियाँ। मु० एक ही थैले के चट्टेबट्टे = एक ही मेल के मनुष्य। चट्टेबट्टे लड़ाना = इधर की उधर लगाकर लड़ाई लड़ाना।

चट्टी—स्त्री० पड़ाव।

चढ़ाई—स्त्री० चढ़ने की क्रिया या भाव, ऊँचाई की ओर ले जाने वाली भूमि, आक्रमण। [से बढ़ने का प्रयत्न।

चढ़ा ऊपरी—स्त्री० होड़, एक दूसरे

चढ़ाव-पु० चढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, वह दिशा जिधर से नदी आयी हो।

चतुरंग—पु० वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। सेना के चार अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। चतुरंगिनी सेना। शतरंज।

चतुरंगिनी—स्त्री० चार अंगों वाली (विशेषतः सेना)।

चतुर-टेढ़ी चाल चलने वाला, फर्तुला, प्रवीण, चालाक।

चतुराई—स्त्री० चतुरता।

चतुरानन—पु० ब्रह्मा।

चतुर्गुण—चौगुना, चार गुणोंवाला।

चतुर्थ—चौथा।

चतुर्थी—स्त्री० चौथ। [तिथि।

चतुर्दशी-स्त्री० पक्ष की चौदहवीं

चतुर्दिक्—चारो ओर। पु० चारो दिशाएँ।

चतुर्भुज—चार भुजाओं वाला। पु० विष्णु, वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों। [पु० ब्रह्मा।

चतुर्मुख—चार मुखवाला, चारों ओर,

चतुर्युगी—पु० चारो युगों का समय।

चतुर्वर्ग—पु० अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। [क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वर्ण—पु० ये चार वर्ण—ब्राह्मण,

चतुर्वेद—पु० ईश्वर, चारो वेद।

चतुर्व्यूह-पु० विष्णु, चार का समूह।

चतुष्कल-चार कलाओंवाला, जिसमें चार मात्राएँ हों।

चतुष्कोण—चौकोना।

चतुष्टय—पु० चार की संख्या, चार चीजों का समूह।

चतुष्पथ—पु० चौराहा।

चतुष्पद—पु० चौपाया।

चतुष्पदी-स्त्री० चार पद का गीत।

चद्दर—स्त्री० चादर, किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर।

चनकना—चटकना।

चना—पु० बूट। मु० नाकों चने चबवाना = बहुत तंग करना।

लोहे का चना = कठिन काम ।

चपकन—पु० अँगरखा । [पत्तर ।

चपड़ा—पु० साफ की हुई लाख का

चपत—पु० थप्पड़, हानि ।

चपरगट्टू—सत्यानाशी, अभागा, गुत्थमगुत्थ ।

चपरास—स्त्री० दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की पट्टी जिसे अरदली वगैरह पहनते हैं ।

चपरासी—पु० चपरास पहने हुए नौकर, प्यादा । [चालाक ।

चपल—चंचल, क्षणिक, उतावला,

चपला—चंचला । स्त्री० लक्ष्मी, बिजली, पुंश्चली स्त्री, जीभ ।

चपेट—स्त्री० झोंका, थप्पड़, दबाव ।

चप्पा—पु० चौथा भाग, थोड़ा भाग, चार अंगुल जगह, थोड़ी जगह ।

चबूतरा—पु० बैठने को बनायी हुई ऊँची जगह ।

चबेना—पु० भूँजा ।

चभोरना—डुबाना ।

चमक—स्त्री० प्रकाश, कांति ।

चमक-दमक—स्त्री० तड़क-भड़क ।

चमकदार—चमकीला ।

चमकना—जगमगाना, दमकना, उन्नति करना, बढ़ना, चौंकना, फुरती से खसक जाना, मटकना,

चमकीला—चकमने वाला, भड़कीला ।

चमचमाना—प्रकाशमान होना ।

चमड़ा—पु० त्वचा, खाल, छाल ।

चमत्कार—पु० विस्मय, आश्चर्य का विषय, करामात, विचित्रता ।

चमत्कृत—विस्मित ।

चमत्कृति—स्त्री० आश्चर्य, विस्मय ।

चमन—पु० फुलवारी, हरी क्यारी ।

चमर, चमरी—पु० सुरा गाय, चँवर । [की सेना ।

चमू—स्त्री० सेना, एक नियत संख्या

चम्मच—पु० एक प्रकार की हलकी कलछू या कलछी ।

चमोटी—स्त्री० चाबुक, पतली छड़ी, अस्तूरा पिजाने का चमड़ा ।

चय—पु० समूह, टीला, गढ़, चहारदीवारी, बुनियाद, चबूतरा, चौकी ।

चयन—पु० संग्रह, चुनने का काम ।

चर—पु० जासूस, दूत, चलनेवाला, भोजन, खंजन, कौड़ी, मंगल, दलदल, नदियों के किनारे या संगम स्थान की गीली भूमि ।

चरख—पु० गोल चक्कर, कुम्हार का चाक, चरखा, खराद, वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है ।

चरखा—पु० घूमनेवाला गोल चक्कर । सूत कातने, सूत लपेटने, कुएं से पानी खींचने आदि का यंत्र ।

चरखी—स्त्री० छोटा चरखा ।

चरचना—लेपना, अनुमान करना ।

चरचराना—चर चर करना ।

चरण—पु० पैर, बड़ों का संग, श्लोक आदि का एक पद, चौथाई भाग, मूल, गोत्र, क्रम, आचार, घूमने की जगह, किरण, अनुष्ठान, गमन, भक्षण।

चरणदासी—स्त्री० स्त्री, जूता।

चरणपादुका—स्त्री० खड़ाउं, चरण-चिह्न।

चरणपीठ—पु० चरणपादुका।

चरणामृत, चरणोदक—पु० चरण धोया हुआ जल।

चरपरा—तीता।

चरबी—स्त्री० प्राणियों के शरीर का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ। मु० चरबी चढ़ना = मोटा होना। चरबी छाना = मदांध होना।

चरम अंतिम।

चरस—पु० चमड़े का बड़ा थैला जिससे सींचने के लिये कुएँ से पानी निकाला जाता है, भूमि नापने का एक परिमाण, गांजे के पेड़ से निकला एक प्रकार का गोंद जिसका धूआँ नशे के लिये चिलम पर पीते हैं।

चरागाह—पु० वह मैदान जहाँ पशु चरते हों।

चराचर—पु० चलनेवाले और न चलनेवाले, संसार।

चराना—पशुओं को मैदान में घुमा कर चारा खिलाना, बातों में फँसाना या बहलाना।

चरित—पु० आचरण, काम, कृत्य, जीवनी। [कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितनायक—पु० वह प्रधान व्यक्ति जिसके चरित्र का आधार लेकर

चरितार्थ—जिसके उद्देश्य की सिद्धि हो चुकी हो, कृतकृत्य, कृतार्थ, जो ठीक-ठीक घटे।

चरित्र—पु० स्वभाव, कार्य, चरित।

चरित्रनायक—दे० 'चरितनायक।'

चरित्रवान्—अच्छा चरित्रवाला।

चरी—स्त्री० चरागाह, चरने की घास। [का पात्र, चरी, यज्ञ।

चरु—पु० हव्यान्न, हव्यान्न पकाने

चर्ख—पु० आकाश।

चर्च—पु० गिरजाघर

चर्चक—चर्चा करनेवाला।

चर्चन—पु० चर्चा, लेपन।

चर्चा—स्त्री० जिक्र, बातचीत, अफवाह, लेपन, दुर्गा। [हो।

चर्चित—लेपा हुआ, जिसकी चर्चा

चर्म—पु० चमड़ा, ढाल।

चर्मकार—पु० चमार।

चर्मचक्षु—पु० साधारण चक्षु, ज्ञान-चक्षु का उलटा।

चर्मदंड—पु० चाबुक।

चर्मपादुका—स्त्री० जूता।

चर्मवसन—पु० शिव।

चर्य्य—जो करने योग्य हो।

चर्य्या—स्त्री० आचरण, आचार,

काम-काज, जीविका, सेवा, गमन ।
चर्राना—चर-चर शब्द करना, रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना, घाव पर खुजली मिली हुई हलकी पीड़ा होना, वेगपूर्ण इच्छा होना ।
चर्वण—पु० चबाना, चबेना ।
चर्वित—चबाया हुआ ।
चर्वितचर्वण—पु० किसी किये हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना, पिष्टपेषण ।
चल— चंचल । पु० पारा, शिव, विष्णु ।
चलता—चलता हुआ, प्रचलित, काम करने योग्य, चालाक । पु० कवच । स्त्री० चंचलता ।
चलती—स्त्री० प्रभाव, मानमर्य्यादा ।
चलदल—पु० पीपल का वृक्ष ।
चलन—पु० चाल, रिवाज, व्यवहार, भ्रमण । [जाता है ।
चलन-कलन—पु० ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन-रात के घटने बढ़ने का हिसाब लगाया
लनसार— जिसका व्यवहार प्रचलित हो, टिकाऊ ।
चलपत्र—पु० पीपल का वृक्ष ।
चल विचल—जो ठीक जगह से इधर-उधर हो गया हो । स्त्री० नियम या क्रम का उल्लंघन ।
चला—स्त्री० बिजली, पृथ्वी, लक्ष्मी ।
चलाचली—स्त्री० चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी ।
चलान—स्त्री० भेजे जाने या चलने की क्रिया, किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय में भेजा जाना, माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना, वह कागज जिसमें भेजी हुई चीजों की सूची हो । [वाला ।
चलायमान-चंचल, विचलित, चलने-
चलावा—पु० रस्म, आचरण, गौना ।
चलित—चलता हुआ, चला हुआ ।
चवर्ग—पु० च से ञ तक के अक्षरों का समूह ।
चवाई—पु० निंदक, चुगलखोर ।
चवाव—पु० बदनामी, निंदा की चर्चा, अफवाह ।
चश्म—स्त्री० आँख, नेत्र । [हो ।
चश्मदीद—जो आँख से देखा हुआ
चश्मा—पु० आँख पर लगाने का ऐनक, पानी का स्रोत ।
चसका—पु० चाट, आदत, लत ।
चहक, चहकार—स्त्री० पक्षियों का मधुर शब्द ।
चहचह—स्त्री० चिड़ियों के चहकने और बोलने की आवाज । [दिल्लगी ।
चहचहा—जिसमें चहचह शब्द हो, मनोहर, ताजा । पु० चहक, हँसी-
चहचहाना—चहकना । [तहखाना ।
चहबच्चा—पु० पानी भर रखने का छोटा गड्ढा । धन गाड़ रखने का

चहल—स्त्री० कीचड़, आनंद की धूम, रौनक।

चहल-कदमी—स्त्री० धीरे-धीरे टहलना। [लना।

चहल पहल—स्त्री० आनंद की धूम, रौनक, लोगों के आने जाने की धूम।

चहला—पु० कीचड़।

चहारदीवारी—स्त्री० किसी स्थान के चारो ओर की दीवार, प्राचीर।

चहारुम—चतुर्थांश।

चहुँ—चार, चारों।

चाँई—पु० ठग, चालाक।

चाँकना—सीमा घेरना, पहचान के लिये चिह्न लगाना।

चाँगला—चतुर, तंदुरुस्त।

चांचल्य--पु० चंचलता।

चाँड़--प्रबल, उग्र, बढ़ाचढ़ा, संतुष्ट। पु० भार सँभालने का खंभा, गहरी चाह, दबाव, प्रबलता।

चांडाल--पु० डोम, पतित मनुष्य।

चाँद--पु० चंद्रमा, चांद्र मास। मु० चाँद का टुकड़ा = अत्यंत सुंदर मनुष्य। चाँद पर थूकना = किसी महात्मा पर कलंक लगाना जिससे पीछे स्वयं अपमानित होना पड़े।

चाँदनी--स्त्री० चंद्रमा का प्रकाश, सफेद चादर, ऊपर तानने का सफेद कपड़ा। स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग। मु० चार दिन की चाँदनी = थोड़े दिन रहनेवाला सुख।

चाँदी--स्त्री० एक धातु। मु० चाँदी का जूता = घूस।

चांद्र—चंद्रमा संबंधी। पु० चांद्रायण व्रत, चंद्रकांत मणि, अदरख।

चांद्रमास—पु० उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है, पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।

चांद्रायण--पु० महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना बढ़ाना पड़ता है।

चाँप--स्त्री० दबाव, रेलपेल।

चांसेलर—पु० विश्वविद्यालय का सब से प्रधान अधिकारी, कुलपति।

चाक-मजबूत, हृष्टपुष्ट। पु० कुम्हार का बर्तन बनानेका चक्का, पहिया, कुएँ से पानी खींचने की चरखी, दरार।

चाकर—पु० सेवक, नौकर।

चाकरी—स्त्री० नौकरी।

चाकलेट-पु० एक प्रकार की मिठाई।

चाकू—पु० छुरी।

चाक्षुस—चक्षु संबंधी, जिसका बोध चक्षु से हो। पु० प्रत्यक्ष प्रमाण।

चाट—स्त्री० चसका, लत, लोलुपता।

चाटु—पु० मीठी बात, खुशामद।

चाटुकार—पु० खुशामदी, चापलूस।

चाटुकारी—स्त्री० खुशामद, चापलूसी।
चातक—पु० पपीहा।
चातुर—नेत्रगोचर, चतुर, खुशामदी।
चातुरी—स्त्री० चतुराई।
चातुर्य—पु० चतुराई। [बिछौना।
चादर—स्त्री० हलका ओढ़ना और
चाप—पु० धनुष, आधा वृत्तक्षेत्र, परिधि का कोई भाग, धनुराशि। स्त्री० दबाव, पैर की आहट।
चापलूस—खुशामदी।
चापलूसी—स्त्री० खुशामद।
चापल्य—चपलता।
चाबी—स्त्री० कुंजी। [वाली बात।
चाबुक—पु० कोड़ा, जोश दिलाने
चाबुकसवार—पु० घोड़े को चलना सिखाने वाला।
चामर—पु० चँवर, मोरछल।
चामीकर—स्वर्णमय, सुनहला। पु० सोना, धतूरा।
चायक—पु० चाहक।
चार—कई एक, कुछ। पु० एक संख्या, गति, चाल, बंधन, दूत, दास, रीति। मु० चार आँखें होना = देखादेखी होना। चार चाँद लगना = चौगुनी प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ना।
चारकाने—पु० पासे का एक दाव।
चारखाना—पु० एक प्रकार का कपड़ा जिसमें चौखुटे घर बने रहते हैं।
चारजामा—पु० जीन, पलान।
चारण—पु० भाट, बंदीजन, राजपूताने की एक जाति, भ्रमणकारी।
चारदीवारी—स्त्री० घेरा, प्राचीर।
चारयारी—स्त्री० चार मित्रों की मंडली, मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली, चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफों के नाम या कलमा लिखा रहता है।
चारा—पु० पशुओं के खाने की घास, पत्ती वगैरह, उपाय, तदबीर।
चाराजोई—स्त्री० नालिश।
चारित—चलाया हुआ।
चारित्र—पु० आचार-व्यवहार, स्वभाव, संन्यास (जैन)।
चारित्र्य—पु० चरित्र। [भाव।
चारी—चलानेवाला, आचरण करने वाला। पु० पैदल सिपाही, संचारी
चारु—सुंदर, मनोहर। [दाम, दोष।
चार्ज—पु० कार्यभार, सुपुर्दगी,
चार्टर—पु० सनद, अधिकारपत्र।
चाल—स्त्री० गति, चलने का ढंग, आचरण, बनावट, रीति, गमन, मुहूर्त, ढंग, तदवीर, छल, हलचल, आहट।
चालक—चलानेवाला, छली।
चालचलन—पु० आचरण।
चालढाल—स्त्री० तौर तरीका।
चालन पु० चलाने की गति या क्रिया, चालनेके बाद बची हुई भूसी आदि।

चालना—चलाना, डोलाना, भुगताना, प्रसंग छेड़ना, चलनी में रखकर छानना।

चालबाज—धूर्त, छली।

चालाक—चतुर, धूर्त।

चालान—पु० दे० 'चलान'।

चालीसा—पु० चालीस दिन या वस्तु का समूह। [दुलार, उमंग।

चाव—पु० लालसा, प्रेम, चाह, शौक,

चाशनी—स्त्री० गुड़ या चीनी में पानी देकर आग पर गाढ़ा किया हुआ रस, चसका, मजा।

चास—पु० खेती।

चासा—पु० हलवाहा, किसान।

चाह—स्त्री० इच्छा, प्रीति, कदर, माँग, खबर।

चाहक—पु० चाहनेवाला, प्रणयी।

चाहत—स्त्री० चाह, प्रेम।

चाहना—इच्छा करना, प्यार करना, माँगना प्रयत्न करना, देखना, ढूँढ़ना। स्त्री० जरूरत, चाह।

चाहि—अपेक्षाकृत, बनिस्बत।

चाहे—जी चाहे, जैसा जी चाहे, होनेवाला हो। [बच्चा।

चिंगना—पु० मुरगी का छोटा बच्चा,

चिंघाड़—स्त्री० चिल्लाहट, हाथी की बोली। किसी जन्तु का घोर शब्द।

चिंगा—पु० लड़का, पुत्र।

चिंत—स्त्री० चिंता।

चिंतन—पु० बार-बार स्मरण, विचार।

चिंतनीय—चिंतन या चिंता करने योग्य, संदिग्ध।

चिंता—स्त्री० ध्यान, सोच।

चिंतामणि—पु० एक कल्पित रत्न जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय उसे वह पूरा कर देता है, ब्रह्मा, परमेश्वर, सरस्वती का एक मंत्र।

चिंत्य—चिंतनीय, संदिग्ध।

चिंदी—स्त्री० टुकड़ा। मु० हिंदी की चिंदी निकालना = अत्यंत तुच्छ भूल निकालना, तर्क करना।

चिक—स्त्री० बांस या सरकंडे का झँझरीदार परदा, बूचर।

चिकना—जो खुरखुरा न हो, साफ-सुथरा, सुंदर, चापलूस, स्नेही। पु० घी-तेल आदि चिकना पदार्थ।

चिकनिया—शौकीन, छैला।

चिकित्सक—पु० वैद्य, हकीम।

चिकित्सा—स्त्री० इलाज।

चिकित्सालय—पु० दवाखाना।

चिकुर—पु० केश, पर्वत, रेंगनेवाले जंतु, छुछुन्दर, गिलहरी।

चिकोटी—स्त्री० चुटकी, चुट्टी।

चिक्कट—बहुत मैला कुचैला। पु० जमी हुई मैल। [टुकड़ा, पुरजा।

चिट—स्त्री० कागज कपड़े आदि का

चिटकना—लकड़ी का जलते समय

चिटचिट करना, सूखकर जगह-जगह पर फटना, चिढ़ना।

चिटनबीस--पु० मुहर्रिर।

चिट्ठा--पु० हिसाब बही, फिहरिस्त, पुर्जा, वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जाँचकर नफा-नुकसान दिखाया जाता है। मु० कच्चा चिट्ठा = स्पष्ट और सविस्तर वृत्तांत।

चिट्ठी—स्त्री० पत्र, आज्ञापत्र, पुर्जा।

चिट्ठीपत्री—स्त्री० पत्र, पत्रव्यवहार।

चिट्ठीरसाँ--पु० डाकिया।

चिड़चिड़ा—पु० शीघ्र चिढ़नेवाला।

चिड़िया—स्त्री०पक्षी। मु०सोने की चिड़िया = धन देनेवाला असामी।

चिड़ियाखाना--पु० वह स्थान जहाँ अनेक प्रकारके पशु-पक्षी रखेजाते हैं।

चिढ़--स्त्री० नाराजगी, नफरत।

चिढ़ाना--नाराज करना, कुढ़ाना, उपहास करना।

चित्—स्त्री० चेतना, ज्ञान।

चित—पीठ के बल पड़ा हुआ। पु० मन, चितवन,

चितकबरा—रंगबिरंगा।

चितवन—स्त्री० ताकने का भाव या ढंग, दृष्टि।

चितवना—देखना।

चिता—स्त्री० लकड़ियों का ढेर जिस पर मुर्दा जलाया जाता है, श्मशान।

चिताना—सावधान करना, याद दिलाना, आत्मबोध कराना, जलाना (आग के अर्थ में)।

चितावनी—स्त्री० सावधान करने की क्रिया, वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय।

चितेरा—पु० चित्रकार।

चित्त—पु० अंतःकरण, दिल, मन।

चित्तविक्षेप-पु० चित्त की चंचलता।

चित्ती—स्त्री० छोटा धब्बा, वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी होती है।

चित्र—अद्‌भुत, चितकबरा, रंग-विरंगा,। पु० तसवीर, तिलक।

चित्रक-पु० तिलक,चीता, चित्रकार।

चित्रकार—पु० चितेरा, चित्र खींचने वाला। [चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकला, चित्रकारी--स्त्री०

चित्रगुप्त--पु० चौदह यमराजों में से एक जो पुराणानुसार पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रपट—पु० चित्र, फोटो, वह वस्तु जिसपर चित्र बनाया जाय, छींट। [चित्तीदार हिरन।

चित्रमृग—पु० एक प्रकार का

चित्ररथ—पु० सूर्य। [कूँची।

चित्रलेखा—स्त्री० चित्र बनाने की

चित्रविचित्र-रंगविरंगा, बेल बूटेदार।

चित्रशाला—स्त्री० वह घर जहाँ चित्र बनते हों या चित्र सजाकर रखे गये हों।

चित्रसारी—स्त्री० वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर चित्र बने हों, सजा हुआ सोने का कमरा।
चित्रा—स्त्री० एक नक्षत्र।
चित्रिणी-स्त्री० स्त्रियों का एक भेद।
चित्रित— चित्र खींचा हुआ।
चिथड़ा—पु० पुराना कपड़ा।
चिथाड़ना— चीरना, खूब बातें सुनाकर अपमानित करना।
चिदात्मा—पु० ब्रह्म।
चिदानंद—पु० ब्रह्म।
चिदाभास—पु० चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिंब जो अंतःकरण पर पड़ता है, जीवात्मा।
चिद्रूप—ज्ञानमय परमात्मा।
चिनगारी—स्त्री० अग्निकण।
चिनगी—स्त्री० चिनगारी।
चिन्मय—ज्ञानमय। पु० परमेश्वर।
चिन्ह--पु० दे० "चिह्न"। [लकीर।
चिन्हानी—स्त्री० पहचान, यादगार,
चिपकना—सटना।
चिपचिपा—लसीला।
चिपटना—चिपकना।
चिप्पी—स्त्री० छोटा टुकडा, गोयठी।
चिबुक—पु० ठुड्डी।
चिमटना—सटना, लिपटना।
चिमनी—स्त्री० शीशे की नली अथवा मकान के ऊपर का वह छेद जिससे धूआँ निकलता है।
चिरंजीव—चिरजीवी, आशीर्वाद का शब्द।
चिरंतन—पुराना। [बहुत दिनों तक।
चिर—बहुत दिनों तक रहने वाला,
चिरकाल—पु० दीर्घकाल।
चिरकुट--पु० चिथड़ा।
चिरजीवी--बहुत दिनों तक जीने वाला, अमर। पु० विष्णु, कौवा, मार्कंडेय ऋषि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं। [वाला।
चिरस्थायी--बहुत दिनों तक रहने
चिरस्मरणीय—बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य, पूजनीय।
चिराग--पु० दीपक, दीआ।
चिरायँध—स्त्री० मांस, चमड़ा आदि जलने की दुर्गंध।
चिरायु—दीर्घायु।
चिलक—स्त्री० आभा, काँति, टीस
चिलबिल्ला—चंचल।
चिल्ल-पों—स्त्री० शोरगुल।
चिल्ला—पु० चालीस दिन का समय धनुष की डोरी।
चिहुँकना--चौंकना।
चिह्न--पु० निशान, पताका, धब्बा
चिह्नित—चिह्न किया हुआ। [बोलना।
चीं-चपड़—स्त्री० विरोध में कुछ
चीक, चीख--स्त्री० चिल्लाहट।

चीज़—स्त्री० वस्तु, विलक्षण या महत्व की वस्तु, गीत। [होश।
चीता—पु० एक पशु, एक पेड़, दिल,
चीत्कार—पु० चिल्लाहट।
चीथना—फाड़ना।
चीफ—पु० बड़ा सरदार, प्रधान।
चीर—पु० वस्त्र, चिथड़ा, गौ का थन, धूप का पेड़। स्त्री० चीरने की क्रिया। [काम, शस्त्रचिकित्सा।
चीरफाड़—स्त्री० चीरने-फाड़ने का
चीर्ण—चीरा हुआ।
चीवर—पु० संन्यासियों या भिक्षुकों का फटा पुराना कपड़ा, बौद्ध संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।
चीवरी—पु० बौद्ध भिक्षुक, भिखमंगा।
चुंगी—स्त्री० चुटकी भर चीज, बाहर से आनेवाले माल पर लगाया गया कर।
चुंबक—पु० वह जो चुम्बन करे, कामुक, धूर्त मनुष्य, ग्रन्थों को केवल इधर-उधर उलटनेवाला, एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर खींचने की शक्ति होती है।
चुंबन—पु० चुम्मा, बोसा।
चुंबित—चूमा हुआ, प्यार किया हुआ, स्पर्श किया हुआ।
चुकता—बेबाक, अदा।
चुकना—खतम होना, अदा होना, निबटना, भूल करना, खाली जाना।
चुग़द—उल्लू पक्षी, बेवकूफ। [खाना।
चुगना—चिड़ियों का दाना उठाकर
चुगलखोर—पु० पीठ पीछे शिकायत करनेवाला।
चुगली—स्त्री० पीठ पीछे की शिकायत।
चुचाना—टपकना, निचुड़ना।
चुटकी—स्त्री० किसी वस्तु को पकड़ने के लिये अंगूठे और तर्जनी का मेल। दो अंगुलियों के बजने का शब्द, दो अंगुलियों से किसी के बदन के चमड़े को दबाना। मु० चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना। चुटकी लेना = हँसी उड़ाना।
चुटकुला—पु० मजेदार बात, दवा का कोई छोटा नुसखा।
चुटिया—स्त्री० शिखा, चोटी।
चुड़ैल—स्त्री० भूतनी, कुरूपा स्त्री, क्रूर स्वभाव की स्त्री।
चुनचुनाना—कुछ जलन लिये हुए चुभने की सी पीड़ा होना।
चुनट, चुनन = स्त्री० सिकुड़न।
चुनना—एक एक कर उठाना, छाँट छाँट कर अलग करना, बहुतों में से कुछ को पसन्द करके लेना, सजाना, दीवार उठाना, सिकुड़न डालना। मु० दीवार में चुनना = किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके चारों ओर से ईंटों की जोड़ाई करना।

चुनरी-स्त्री० वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीचमें बुंदियाँ होती हैं।
चुनांचे—जैसा कि, इसलिये।
चुनाव—पु० चुनने का काम।
चुनिंदा—चुना हुआ, बढ़िया।
चुनौती-स्त्री० उत्तेजना, युद्ध के लिये ललकार।
चुप—मौन।
चुपचाप—मौन, शांत भाव से, प्रयत्नहीन। स्त्री० मौनावलंबन।
चुपका--मौन, छिपाया हुआ। मु० चुपके से=बिना कुछ कहे, गुप्त रूप से।
चुपड़ना—लेपना, पोतना, चिकनी-चुपड़ी कहना।
चुप्पा--घुन्ना।
चुप्पी--स्त्री० मौन।
चुभकी—स्त्री० गोता।
चुभना—धँसना, हृदय में खटकना, मन में बैठना।
चुरकी--स्त्री० चुटिया।
चुराना—चोरी करना।
चुरुट--पु० सिगार।
चुलचुलाना—खुजलाहट होना।
चुलबुला—चंचल, नटखट।
चुल्लू--गहरी की हुई हथेली।
चुस्त—कसा हुआ, फुर्तीला, मजबूत।
चुस्ती—स्त्री० फुर्ती, तंगी। [चहाना।
चुहचुहाना—चटकीला लगना, चह-
चुहल--स्त्री० हंसी-ठठोली।

चूं--पु० छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। चूं करना=कुछ कहना, प्रतिवाद करना।
चूंकि--क्योंकि।
चूक--स्त्री० भूल, धोखा।
चूकना—भूल करना, लक्ष्यभ्रष्ट होना मौका खोना।
चूजा—पु० मुरगी का बच्चा।
चूड़ांत--चरम सीमा, अत्यन्त।
चूड़ा—स्त्री० चोटी, कूआँ, गुंजा, चूड़ाकरण संस्कार। पु० कंकण, हाथी दाँत की चूड़ियाँ। [संस्कार।
चूड़ाकरण, चूड़ाकर्म--पु० मुंडन
चूड़ामणि--सब में श्रेष्ठ। पु० सिर में पहनने का गहना। [के घेरे पड़े हों।
चूड़ीदार—जिसमें चूड़ी के आकार
चूत--पु० आम। स्त्री० योनि, भग।
चूमना--चुम्मा लेना। [बुकनी।
चूर—तल्लीन, नशे में मस्त। पु०
चूर्ण--तोड़ा फोड़ा। नष्ट भ्रष्ट। पु० बुकनी।
चूर्णक—पु० सत्तू, धान. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे शब्द हों।
चूर्णित—चूर्ण किया हुआ।
चूल—पु० शिखा, बाल, लकड़ी का वह पतला शिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में ठोंका जाय।
चूषण--पु० चूसने की क्रिया।
चूसना—जीभ और होंठ के संयोग

से किसी पदार्थ का रस पीना, सार भाग ले लेना, धीरे धीरे धन आदि ले लेना।

चैंबर—पु० सभागृह। [की सभा।

चैंबर आफ कामर्स—व्यापारियों

चैक—वह रुक्का या आज्ञापत्र जो बैंक के नाम लिखा गया हो।

चेअरमैन—पु० सभा का प्रधान।

चेचक—स्त्री० शीतला रोग।

चेटक—पु० सेवक, दूत, चटक-मटक, जादूगरी।

चेटकी—पु० जादूगर।

चेत्—यदि, शायद।

चेत—पु० होश, चित्त की वृत्ति, ज्ञान, सावधानी, सुध, स्मरण।

चेतन—जिसमें चेतना हो। पु० आत्मा, परमात्मा, मनुष्य, प्राणी।

चेतनता—स्त्री० सज्ञानता।

चेतना—होश में आना, सावधान होना, समझना। स्त्री० बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, सुधि, चेतनता, होश। [सूचना।

चेतावनी—स्त्री० सतर्क होनें की

चेपदार—लसदार, चिपचिपा।

चेर, चेरा—पु० सेवक, चेला।

चेरी—स्त्री० दासी, चेली।

चेष्टा—स्त्री० अंगो की गति, उद्योग, कार्य, श्रम, इच्छा।

चेहरा—पु० मुखाकृति, अगला भाग।

मु० चेहरा उतरना = चेहरे का तेज जाता रहना।

चैतन्य—पु० चेतन, आत्मा, ज्ञान, चेतना, ब्रह्म, परमेश्वर, प्रकृति, एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा।

चैत्य—पु० घर, मंदिर, यज्ञशाला, किसी देवी देवता का चबूतरा, बुद्ध की मूर्ति, बौद्ध संन्यासी, बौद्ध संन्यासियों के रहने का मठ या विहार, चिता। [भूमि, मंदिर।

चैत्र—पु० चैत, बौद्ध भिक्षु, यज्ञ-

चैन—पु० आराम, सुख, शांति।

चैलेंज—पु० ललकार।

चोंगा—पु० नली।

चोंच—स्त्री० पक्षियों के मुख का निकला हुआ अगला भाग, मुँह (व्यंग्य)। मु० दो दो चोंचें होना = कहासुनी होना।

चोंथना—नोचना। [छोटी हों, मूर्ख।

चोंधर, चोंधा—जिसकी आँखें बहुत

चोआ पु० एक सुगंधित द्रव पदार्थ।

चोखा—विशुद्ध, खरा, धारदार। पु० भरता।

चोग़ा—पु० लबादा।

चोचला—पु० हावभाव, नखरा।

चोज—पु० हँसानेवाली युक्तियुक्त बात, व्यंग्यपूर्ण उपहास।

चोट—स्त्री० आघात, जख्म, वार, हमला, मानसिक व्यथा, ताना,

दगा। अनिष्ट के लिये चली हुई चाल, मरतबा।

चोटी--स्त्री० शिखा, स्त्रियों के गुँथे हुए सिर के बाल, बाल बाँधने का डोरा, कलगी, शिखर।

चोप-पु० चाह, चाव, उमंग, बढ़ावा।

चोब--स्त्री० शामियाना खड़ा करने का बड़ा खम्भा, नगाड़ा बजाने की लकड़ी, सोने या चाँदी से मढ़ा डंडा, सोंटा।

चोबकारी--स्त्री० कलाबत्तू का काम।

चोबदार-पु० वह नौकर जिसके पास चोब या असा रहता है, असा-बरदार, द्वारपाल।

चोरकट--पु० उचक्का। [रिक्त दाँत।

चोर दंत--पु० बत्तीस दाँतों के अति-

चोर दरवाजा--पु० गुप्तद्वार।

चोर महल--पु० वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री या प्रेमिका रखते हैं।

चोरा चोरी--छिपे छिपे।

चोल--पु० चोली, कवच।

चोला--पु० एक बहुत लंबा और ढीलाढाला कपड़ा, नये जनमे बालक को पहले पहल कपड़ा पहनाने का रस्म, शरीर।

चोली--स्त्री० अँगिया की तरह का एक पहनावा। मु० चोली-दामन का साथ = बहुत अधिक साथ या

घनिष्टता।

चोषण--पु० चूसना।

चोष्य--चूसने योग्य।

चौंकना--झिझकना, चौकन्ना होना, चकित होना, भड़कना।

चौंध--स्त्री० तिलमिलाहट।

चौंधियाना-चकाचौंध होना, आँखों से दिखाई न पड़ना।

चौ--चार।

चौक--पु० चौकोर भूमि, आँगन, चौखूँटा चबूतरा, मंगल अवसरों पर पूजन के लिये आटा, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र, चौराहा, शहर के बीच का बाजार, चौसर खेलने का कपड़ा।

चौकड़ी--स्त्री० हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारो पैर एक साथ फेंकता हुआ जाता है, कुलाँच, मंडली, चतुर्युगी, पलथी। मु० चौकड़ी भूल जाना = घबड़ा जाना; चंडाल चौकड़ी = उपद्रवियों की मंडली।

चौकन्ना--चौकस, सजग, चौंका हुआ।

चौकस--सावधान, दुरुस्त।

चौकसी-स्त्री० खबरदारी, सावधानी।

चौका--पु० चौकोर टुकड़ा, रोटी बेलने का चकला, रसोई-स्थान, लीपा हुआ स्थान, चार वस्तुओं का संग्रह।

चौकी-स्त्री० पायेदार चौकोर आसन, कुर्सी, [illegible], पहरा, पड़ाव, [illegible]

खेलने का चकला ।
चौकीदार--पु० पहरेदार ।
चौखानि—स्त्री० अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव ।
चौगान-पु० एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं; चौगान खेलने का मैदान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी ।
चौगिर्द — चारों तरफ ।
चौताल--पु० मृदंग का एक ताल ।
चौतुका—जिसमें चार तुक हों ।
चौथ--स्त्री० पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थांश ।
चौथपन--पु० बुढ़ापा ।
चौदस—स्त्री० चतुर्दशी ।
चौधरी—पु० प्रधान ।
चौपट—बरबाद, अरक्षित ।
चौपड़--पु० चौसर ।
चौपद-प० चौपाया । [हों,वर्गात्मक ।
चौपहल-जिसमें चार पहल या पार्श्व
चौपाया—पु० चार पैरोंवाला पशु ।
चौपाल-पु० बैठक, दालान । [बार ।
चौवार—पु० खुली हुई बैठक, चौथी
चौमासा—पु० वर्षा काल के चार महीने, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन; वर्षा ऋतु संबंधी कविता ।
चौर—पु० चोर ।
चौरस—समतल, चौपहल ।
चौरा—पु० चबूतरा, चौपाल ।
चौराहा—पु० चौरास्ता ।
चौर्य्य—पु० चोरी ।
चौवा—पु० हाथ की चार अंगुलियों का समूह, चार अंगुल का माप, बगल का दाँत ।
चौसर—पु० चौपड़ खेल, चार लड़ों का हार ।
चौहट्टा—पु० चौराहा, वह स्थान जिसके चारो ओर दूकान हो ।
चौहद्दी-स्त्री० चारो ओर की सीमा ।
चौहैं—चारो ओर ।
च्युत—गिरा हुआ, भ्रष्ट, स्थान से हटा हुआ, विमुख ।
च्युति—स्त्री० गिरना, गति, चूक ।

छ

छ--एक अक्षर। काटना, ढाँकना, घर, टुकड़ा।

छँटना—कटकर अलग होना, समूह से तितर बितर होना, अलग होना, साफ होना, क्षीण होना।

छंद—पु० वेद, वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है, पद्य, पद्यबद्ध छंद शास्त्र, अर्थात वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो, अलिभाषा, स्वेच्छाचार, बंधन, समूह, छल, युक्ति, रंग ढंग, अभिप्राय।

छंदोबद्ध—पद्यबद्ध।

छंदोभंग—पु० छंद टूटना।

छकड़ा--पु० बैलगाड़ी।

छकड़ी—स्त्री० छः का समूह, वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों, छः घोड़ों की गाड़ी।

छकना--तृप्त होना, अघाना, नशे में चूर होना, चकराना, दिक होना, धोखा खाना।

छक्का—पु० छः का समूह, जुआ, होश-हवास। मु० छक्का पंजा = चालबाजी; छक्के छूटना = होश-हवास जाता रहना, साहस छूटना।

छगड़ा—पु० बकरा।

छगुनी--स्त्री० कानी उँगली।

छछिआ, छछिया—स्त्री० छाँछ पीने या नापने का छोटा पात्र।

छछूँदर—पु० चूहे की जाति का एक जंतु, एक आतिशबाजी।

छजना—शोभना, ठीक जँचना।

छज्जा—पु० ओलती।

छटकना—सटकना, दूर दूर रहना, कश से निकल जाना, कूदना।

छटपटी--स्त्री० बेचैनी, आकुलता।

छटा—स्त्री० शोभा, प्रकाश, बिजली।

छठ--स्त्री० पक्ष की छठी तिथि, एक पर्व।

छठी—स्त्री० जन्म से छठे दिन का संस्कार। मु० छठी का दूध याद आना = सब सुख भूल जाना, बहुत हैरानी होना।

छड़—स्त्री० धातु या लकड़ी का लंबा और पतला टुकड़ा।

छड़ा—अकेला। पु० पैर में पहनने का एक गहना।

छत—होते हुए, आछत। पु० जख्म। स्त्री० ऊपर का खुला हुआ कोठा, छत के ऊपर तानने की चादर।

छतरी—स्त्री० छाता, मंडप।

छतीसा—चतुर, धूर्त।

छत्ता—पु० छाता, मधुमक्खी का घर, कमल का बीजकोश।

छत्र-पु० छाता, राजाओं का सुनहला रूपहला छाता, कुकुरमुत्ता । [रक्षा ।
छत्रछाँह, छत्रछाया—स्त्री० शरण,
छत्रक—पु० कुकुरमुत्ता पौधा, तालमखाने की जाति का एक पौधा, मंदिर, शहद का छत्ता ।
छत्रपति—पु० राजा ।
छत्रभंग—पु० राजा का नाश, अराजकता, ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है ।
छत्री—छत्रयुक्त । पु० छत्रिय ।
छद—पु० आवरण, पंख, पत्ता ।
छदाम—पु० पैसे का चौथाई भाग ।
छद्म—पु० गोपन, बहाना, छल ।
छद्मवेश—पु० गुप्तवेश, कृत्रिम वेश ।
छनक—पु० एक क्षण, छन छन करने का शब्द । स्त्री० भड़क ।
छनछबि—स्त्री० बिजली ।
छनना—चलनी से साफ होना, किसी नशे का पीया जाना, चलनी हो जाना, विध जाना, छानबीन होना ।
छपद—पु० भौंरा ।
छपा—स्त्री० दे० "क्षपा" ।
छबीला—सुंदर ।
छमछम—स्त्री० नूपुर, घुँघरू आदि बजने या पानी बरसने का शब्द ।
छय—पु० दे० "क्षय" ।
[illegible]
छरहरा—क्षीणांग, हलका, फुरतीला ।
छरा—पु० छड़ा, लड़ी, रस्सी, इजारबंद ।
छर्रा—पु० छोटी कंकड़ी, लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाये जाते हैं ।
छल—पु० कपट, ठगपन, बहाना ।
छलकना—किसी तरह चीज का बर्तन से उछलकर बाहर होना, उभड़ना ।
छलछंद—पु० चालबाजी ।
छलछलाना—छल छल शब्द होना, पानी आदि का थोड़ा थोड़ा करके गिरना, जल से पूर्ण होना ।
छलछिद्र, छलछेव-पु० कपट व्यवहार
छलना—किसी को धोखा देना, दगा देना । स्त्री० धोखा, छल ।
छलनी—स्त्री० चलनी । मु० छलनी होना = किसी वस्तु में बहुत से छेद होना । कलेजा छलनी होना = दुख सहते-सहते हृदय जर्जर हो जाना ।
छलाँग—स्त्री० कुदान, चौकड़ी ।
छला—पु० दे० "छल्ला"
छलिया, छली—कपटी । [वस्तु ।
छल्ला—पु० मुंदरी, कोई मंडलाकार
छबि—स्त्री० शोभा, प्रभा ।
छहरना—छितराना ।
छाँट—स्त्री० छाँटने की क्रिया या ढंग, कतरन, अलग की हुई निकम्मी वस्तु, वमन ।
छाँड़ना—छोड़ना ।
छाँह—स्त्री० छाया, ऊपर से छाया

हुआ स्थान, संरक्षा, प्रतिबिंब । मु० छाँह न छूने देना = पास न फटकने देना । छाँह बचाना = पास न जाना ।

छाँहगीर—पु० राजछत्र, दर्पण ।

छाक—स्त्री० तृप्ति, दुपहरिया भोजन, नशा । [होना, हैरान होना ।

छाकना—अघाना, नशा पीकर मस्त

छाग, छागल—पु० बकरा ।

छाछ—स्त्री० मट्ठा, मही ।

छाजन—पु० आच्छादन, कपड़ा । स्त्री० छप्पर, छवाई ।

छाजना—शोभा देना ।

छाती—स्त्री० सीना, वक्षस्थल, कलेजा, स्तन, हिम्मत, हृदय, मन, जी । मु० छाती पत्थर की करना या छाती पर पत्थर रखना = दुःख-सहन के लिये हृदय कठोर करना; छाती पर मूँग दलना = किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे; छाती पर साँप लोटना = कलेजा दहल जाना; छाती फटना = अत्यंत संताप होना ।

छात्र—पु० शिष्य, विद्यार्थी ।

छात्रवृत्ति—स्त्री० वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास की दशा में सहायतार्थ मिले ।

छात्रालय, छात्रावास—पु० विद्यार्थियों के रहने का स्थान । [छिपाव, वस्त्र ।

छादन—पु० छाने का काम, आवरण,

छान—पु० छप्पर ।

छानना—चूर्ण या तरल पदार्थ को कपड़े या किसी छेददार चीज से पार निकालना जिससे कूड़ा-कर्कट निकल जाय, ढूँढ़ना, भेदकर पार करना, नशा पीना । [विवेचना ।

छानबीन—स्त्री० गहरी खोज, पूरी

छाना—आच्छादित करना, फैलाना, शरण में लेना, फैलना, डेरा डालना ।

छाप—स्त्री० किसी वस्तु का चिन्ह, मुद्रा, कवियों का उपनाम ।

छापना—चिन्हित करना, मुद्रित करना, अंकित करना ।

छापा—चिन्ह, मुहर, आक्रमण ।

छापाखाना—पु० मुद्रालय, प्रेस ।

छाया—स्त्री० साया, परछाईं, प्रतिबिंब, तद्रूप वस्तु, अनुकरण, कांति, शरण, अंधकार, भूत का प्रभाव ।

छायाग्राहिणी—स्त्री० एक राक्षसी जिसने समुद्र लांघते वक्त हनुमान जी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था ।

छायादान—पु० घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाईं देखकर दिया जानेवाला दान ।

छायापथ—पु० आकाश-गंगा, देवपथ ।

छार—पु० भस्म, राख, खारा, नमक, खारी चीज, धूल । [बना हुआ वस्त्र ।

छालटी—स्त्री० छाल या सन का

छाला—पु० छाल, चमड़ा, फफोला।
छावनी—स्त्री० छप्पर, पड़ाव, डेरा, सेना के ठहरने का स्थान।
छिगुनी—स्त्री० सबसे छोटी उँगली।
छिछला—जो गहरा न हो।
छिछोरपन—पु० नीचता।
छिटकना—चारों ओर फैलना।
छिड़काव—पु० छिड़कने की क्रिया।
छिड़ना—शुरू होना।
छिति—स्त्री० दे० "क्षिति"।
छिदना—बिंधना, घायल होना, चुभना।
छिद्र—पु० छेद, बिल, अवकाश, दोष, नौकर, संख्या।
छिद्रान्वेषण—पु० दोष ढूँढ़ना।
छिनक—एक क्षण।
छिनछवि—स्त्री० बिजली।
छिनाल—स्त्री० व्यभिचारिणी।
छिन्न—खंडित। [तितर-बितर।
छिन्नभिन्न—कुटाकुटा, नष्टभ्रष्ट,
छिपाव—पु० गोपन। [मैला, लड़की।
छिया—स्त्री० घृणित वस्तु, गलीज,
छींट—स्त्री० महीन बूँद, जलकण, बूटेदार कपड़ा।
छींटा—पु० जलकण, पड़ी हुई बूँद का चिन्ह, छोटा दाग, व्यंग्यपूर्ण उक्ति।
छी—घृणासूचक शब्द।
छींका—पु० सीका या सिकहर, झरोखा, झूला, रस्सियों का जाल।
छीछालेदर—स्त्री० दुर्दशा, दुर्गति।
छीज—स्त्री० कमी, घाटा।
छीपी—पु० छींट छापनेवाला।
छीर—पु० दे० "क्षीर"।
छुआछूत—स्त्री० छूतछात का विचार।
छुईमुई—स्त्री० लज्जावंती पौधा।
छुछमछली—स्त्री० मेढ़क का बहुत छोटा बच्चा जिसका रूप मछली जैसा होता है। [निस्तार।
छुटकारा—पु० मुक्ति, रिहाई,
छुटपन—पु० छोटाई, बचपन।
छुट्टा—जो बँधा न हो, अकेला।
छुट्टी—स्त्री० रिहाई, फुरसत, तातील, चलने की अनुमति।
छुद्र—पु० दे० "क्षुद्र"।
छुद्रावलि—स्त्री० दे० "क्षुद्रघंटिका"
छुपना—छिपना।
छुरिका—स्त्री० छुरी, चाकू।
छुरित—पु० बिजली की चमक।
छूंछा—खाली, निःसार, निर्धन।
छू—पु० मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द। मु० छू मंतर होना = चटपट दूर होना।
छूट—स्त्री० छुटकारा, फुरसत, छुड़ौती, छोड़ी हुई रकम, आजादी, गालीगलौज।
छूत—स्त्री० छूने का भाव, अस्पृश्य का संसर्ग, अपवित्र वस्तु के छूने का दोष, अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता।
छेकोक्ति—स्त्री० अर्थान्तरगर्भित उक्ति।
छेड़ना—खोदना खादना, भड़काना,

चुटकी लेना, कोई बात आरंभ करना।
छेद—पु० छेदन, ध्वंस, छेदक, भाजक सूराख, बिल, ऐब। [का अस्त्र।
छेदन—पु० चीड़फाड़, नाश, छेदने
छेना—पु० दूध का वह भाग जो खटाई से फाड़कर पानी का अंश निकाल लेने पर रहता है, पनीर।
छेनी—स्त्री० पत्थर काटने का लोहे का औजार।
छेरी—स्त्री० बकरी। [डालना।
छेवना—काटना, चिन्ह करना, फेंकना,
छेह—कम, खँडित। पु० छेव, खंडन, परंपराभंग। स्त्री० धूल।
छैया—पु० बच्चा।
छैलचिकनियाँ — पु० बनाठना आदमी।
छैलछबीला—पु० सजाधजा और युवा पुरुष। [आदमी
छैला—पु० सुंदर और बनाठना
छोटी हाजिरी—स्त्री० प्रातःकाल का कलेवा।
छोनिप—पु० दे० "क्षोणिप"।
छोनी—स्त्री० दे० "क्षोणी"। [छिपाव।
छोप—पु० मोटा लेप, लेपन, प्रहार,
छोभ—पु० दे० "क्षोभ"।
छोह—पु० ममता, स्नेह, दया।
छोहिनी—स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।
छौना—पु० पशु का बच्चा।

ज

ज—एक अक्षर। वेगवान, जीतनेवाला, उत्पन्न। पु० मृत्युंजय, जन्म, पिता, विष्णु, जगण।
जंकशन—पु० वह स्थान जहाँ कई रेलवे लाइनें मिलती हों, संगम।
जंग—स्त्री० लड़ाई। पु० लोहे का मुरचा।
जंगम—चलने फिरने वाला।
जंगल—पु० बन।
जंगला—पु० छड़ लगी हुई खिड़की।
जंगी—युद्ध संबंधी, फौजी, दीर्घकाय, बहुत बड़ा, लड़ाका, वीर।
जंघा—पु० जाँघ, रान, उरु।
जँचना—जाँचा जाना, जाँच में ठीक उतरना, जान पड़ना।
जंजाल—पु० प्रपंच, झंझट, उलझन, भँवर, बड़ा जाल।
जंजीर—स्त्री० सिकड़ी, बेड़ी।
जंतर—पु० यंत्र, ताबीज। [बजानेवाला।
जंतरी—स्त्री० पत्रा, जादूगर, बाजा
जंतु—पु० प्राणी।
जंत्र—पु० दे० यंत्र।

जंभी—पु० बाजा।
जंद—पु० पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ, वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है।
जंबीर—पु० जँबीरी नीबू, मरुआ, बनतुलसी।
जंबु—पु० जामुन। [गीदड़।
जंबुक—पु० बड़ा जामुन, केवड़ा,
जंबू—पु० जामुन। [जँभाई।
जंभ—पु० दाढ़, जबड़ा, जँबीरी नीबू,
जँभाई—स्त्री० निद्रा या आलस्य मालूम होने पर स्वभाविक रीति से मुँह खुलकर हवा निकलना।
जईफ—बूढ़ा।
जईफी—स्त्री० बुढ़ापा।
जकड़ना—कसकर बाँधना।
जकात—स्त्री० दान, महसूल।
जखम—पु० घाव।
जखमी—घायल।
ज़खीरा—संग्रह, खजाना।
जख्म—पु० दे० "जखम।"
जग—पु० संसार, जन समुदाय।
जगड्वाल—पु० आडंबर। [जंगम।
जगत—पु० संसार, वायु, महादेव,
जगतसेठ—पु० बहुत बड़ा धनी।
जगती—स्त्री० संसार, पृथ्वी।
जगदंबा, जगदंबिका—स्त्री० दुर्गा।
जगदाधार—पु० ईश्वर। [जगन्नाथ।
जगदीश—पु० ईश्वर, विष्णु,
जगदीश्वर—पु० परमेश्वर।
जगदीश्वरी—स्त्री० भगवती।
जगद्गुरु—पु० परमेश्वर, शिव, नारद, परम पूज्य व्यक्ति।
जगद्धाता—पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
जगद्धात्री—स्त्री० दुर्गा, सरस्वती।
जगद्योनि—पु० शिव, विष्णु, ब्रह्मा, परमेश्वर, पृथ्वी।
जगद्वंद्य—संसारपूज्य।
जगन्नाथ—पु० ईश्वर, विष्णु, [illegible] की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो पुरी में है।
जगन्नियंता—पु० ईश्वर।
जगन्मय—पु० विष्णु। [महामाया।
जगन्माता, जगन्मोहिनी—स्त्री० दुर्गा,
जगमग, जगरमगर—चमकीला प्रकाशित।
जगह—स्त्री० स्थान, मौका, पद।
जघन—पु० पेड़ू, नितंब।
जघन्य—अंतिम, अत्यंत बुरा, नीच। पु० शूद्र, नीच जाति।
जचना—दे० "जँचना"।
जच्चा—स्त्री० प्रसूता स्त्री।
जज—पु० न्यायाधीश।
जजमान—पु० दे० "यजमान"।
जजिया—पु० दंड, एक प्रकार का कर जिसे मुसलमान बादशाह अन्य धर्मवालों पर लगाते थे।
जजी—स्त्री० जज की अदालत।
जटना—ठगना।

जटा—पु० एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े-बड़े बाल, जड़ के पतले-पतले सूत, शाखा, जूट, वेद-पाठ का एक भेद ।

जटाजूट—पु० बहुत से लंबे बालों का समूह, शिव की जटा ।

जटाधर—पु० शिव ।

जटित—जड़ा हुआ । [क्रूर ।

जटिल—जटाधारी, अत्यन्त कठिन,

जठर—पु० बूढ़ा, कठिन । पु० पेट का एक रोग, शरीर ।

जठराग्नि--स्त्री० पेट की वह अग्नि जिससे अन्न पचता है ।

जड़--अचेतन, चेष्टाहीन, नासमझ, ठंढा, ठिठुरा हुआ, गूँगा, बहरा, जिसके मन में मोह हो । स्त्री० मूल, नींव, बुनियाद, कारण, आधार ।

जड़ना—एक चीज को दूसरी चीज में बैठाना, प्रहार करना, चुगली खाना । [जड़े हों ।

जड़ाऊ—जिसपर नग या रत्न आदि

जड़ावर--पु० जाड़े का कपड़ा ।

जड़ित—जड़ा हुआ ।

जड़ी--स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लायी जाय ।

जड़ीबूटी—स्त्री० जंगली औषधि ।

जतन—पु० यत्न । [देना ।

जतलाना, जताना--बतलाना, सूचना

जती पु० दे० यती ।

जतेक—जितना ।

जत्था—पु० झुंड, फिरका ।

जथा--दे० "यथा" । पु० पूंजी, धन ।

जद—जब, यदि, अगर ।

जदपि—यद्यपि ।

जन--पु० लोग, प्रजा, देहाती, अनुयायी, अनुचर, समुदाय, भवन, मजदूरी, सात लोकों में एक लोक ।

जनक—पु० जन्मदाता, पिता, मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि, सीता के पिता ।

जनकनंदिनी—स्त्री० सीता ।

जनखा--पु० हिजड़ा । [का भाव ।

जनता--स्त्री० सर्वसाधारण, जनन

जनन--पु० उत्पत्ति, जन्म, आविर्भाव, वंश, पिता, परमेश्वर ।

जनना—जन्म देना ।

जननी—स्त्री० उत्पन्न करने वाली, माता, दया, अलता, चमगादड़ ।

जननेंद्रिय--स्त्री० भग, योनि ।

जनपद—पु० आबाद देश, बस्ती ।

जनप्रिय—लोकप्रिय ।

जनमसंघाती--पु० वह जिसका साथ जन्म से ही हो या जन्म भर रहे ।

जनयिता—पु० पिता ।

जनयित्री—स्त्री० माता ।

जनरल—पु० सेनापति ।

जनरव—पु० किंवदंती, अफवाह, लोकनिंदा, कोलाहल ।

जनलोक—पु० सात लोकों में से एक।
जनवास, जनवासा—पु० सर्वसाधारण के ठहरने का स्थान, बरातियों के ठहरने का स्थान, सभा, समाज।
जनश्रुति—स्त्री० अफ़वाह।
जनसंख्या—स्त्री० आबादी।
जनाज़ा—पु० लाश, अरथी।
जनानखाना—पु० अंतःपुर, स्त्रियों के रहने का घर।
जनाना—स्त्री संबंधी, हिजड़ा, निर्बल, पु० जनानखाना, मौगा, पत्नी।
जनाब—पु० महाशय।
जनाबआली—मान्यवर।
जनार्दन-पु० विष्णु। [भाव, सूचना।
जनाव—पु० जानाने की क्रिया या
जनि—मत, नहीं। स्त्री० जन्म, स्त्री। माता, पत्नी, जन्मभूमि।
जनित—उत्पन्न।
जनिता—पु० उत्पन्न करनेवाला, पिता
जनियाँ—स्त्री० प्रियतमा।
जनी—उत्पन्न की हुई। स्त्री० दासी, स्त्री, माता, पुत्री।
जनु—मानो।
जनेत—स्त्री० बरात।
जन्नत—पु० स्वर्ग।
जन्म—पु० उत्पत्ति, जीवन-काल। मु० जन्म हारना = व्यर्थ जन्म खोना, दूसरे का दास होकर रहना।
जन्मकुंडली, जन्मपत्री—स्त्री० जन्म के समय ग्रहों की स्थिति सूचक कुंडली।
जन्मभूमि—स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
जन्मांतर—पु० दूसरा जन्म।
जन्माष्टमी—स्त्री० कृष्णाष्टमी।
जन्य—जनसंबंधी, राष्ट्रीय, जातीय, उद्भूत। पु० जनसाधारण, अफ़वाह, राष्ट्र, लड़ाई, पुत्र, पिता, जन्म।
जप—मंत्र आदि का पाठ।
जपनीय—जपने योग्य।
जपमाला—स्त्री० जप की माला।
जपा—स्त्री० अड़हुल फूल। पु० जपनेवाला।
जफ़ा—स्त्री० सख्ती, जुल्म।
जबड़ा—पु० कल्ला।
जबर—बलवान, मजबूत।
जबरई—स्त्री० ज्यादती।
जबरदस्त—बलवान, मजबूत।
जबरदस्ती—बलपूर्वक। स्त्री० अत्याचार, ज्यादती।
जबरन्—बलपूर्वक।
जबरा—बलवान। पु० एक पशु।
जबह—स्त्री० हत्या।
ज़बान—स्त्री० जीभ, बात, वादा, भाषा। ज़बान पकड़ना = बोलने न देना। ज़बान में लगाम न होना = बोलने में संयम न रखना। ज़बान हिलाना = मुँह से शब्द निकालना।

बरज़बान = कंठस्थ । [वाला ।

ज़बानदराज़--धृष्टता पूर्वक बोलने

ज़बानी—मौखिक, अलिखित ।

जब्त--सरकार से छीना या अपनाया हुआ ।

जब्ती--स्त्री० जब्त होने की क्रिया ।

जब्र—पु० सख्ती, ज्यादती ।

जमघट—पु० भीड़ ।

जमना—तरल पदार्थ का ठोस होना, दृढ़तापूर्वक बैठना, स्थिर होना, इकट्ठा होना, कोई काम उत्तमता से होना ।

जमा—इकट्ठा, सब मिलाकर, रखा हुआ । पूंजी, धन, मालगुजारी, जोड़ ।

जमाखर्च--पु० आयव्यय ।

जमात--स्त्री० मनुष्यों का समूह, गरोह, जत्था, श्रेणी ।

जमादार—पु० सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान ।

जमानत—स्त्री० वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिखकर या कुछ रुपया जमा करके ली जाती है ।

जमाना—पु० समय, बहुत अधिक समय, मुद्दत, सौभाग्य का समय, दुनिया ।

जमानासाज--जो लोगों के रंगढंग देखकर व्यवहार करता है ।

जमाबंदी--स्त्री० वह कागज जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं ।

जमायत--स्त्री० दे० "जमात" ।

जमाव--पु० जमने या जमाने का भाव, जमघट ।

जमींदार—पु० जमीन का मालिक ।

जमीन--स्त्री० पृथ्वी, पृथ्वी का ऊपरी भाग, कपड़े आदि की सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों । वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय । मु० जमीन-आसमान एक करना = बड़े बड़े उपाय करना । जमीन-आसमान का फरक = बहुत बड़ा फरक ।

जम्हाना--दे० "जँभाना" ।

जयंत—विजयी, बहुरूपिया । एक रुद्र का नाम कार्त्तिकेय ।

जयंती—स्त्री० विजय करनेवाली, पताका, दुर्गा, पार्वती, उत्सव, हल्दी जौ के छोटे पौधे जो दशहरे में जनमाये जाते हैं ।

जय--स्त्री० जीत, लाभ ।

जयजीव--पु० अभिवादन, प्रणाम ।

जयपत्र—पु० विजयपत्र ।

जयपाल—पु० विष्णु, राजा ।

जयमंगल—पु० वह हाथी जिसपर विजयी राजा की सवारी निकले ।

जयमाल—स्त्री० वह माला जो विजयी को विजय के उपलक्ष में

पहनायी जाय, वह माला जिसे कन्या स्वयंबर के समय अपने चुने हुए पति को पहनाती है ।
जयस्तंभ—पु० विजयस्मारक स्तंभ ।
जया—जयकारिणी । स्त्री० दुर्गा, पार्वती, पताका, हरी दूब ।
जयी—विजयी ।
जर—पु० स्वर्ण, सोना, धन । [हों ।
जरकस—जिसपर सोने के तार लगे
जरगा—पु० आदमियों का गिरोह, सम्मेलन ।
जरठ—कठिन, वृद्ध, पुराना । [तार ।
जरतार—पु० सोने चाँदी आदि का
जरत्—बुड्ढा, पुराना ।
ज़रद—पीला ।
जरदी—स्त्री० पीलापन । [वाला ।
जरदोज—पु० जरदोजी का काम करने-
जरदोजी—स्त्री० कपड़ों पर सलमे-सितार आदि लगाने की कारीगरी ।
जरनल—पु० सामयिक पत्र ।
जरनि—स्त्री० जलन ।
जरब—स्त्री० चोट, गुणा ।
जरर—पु० हानि, आघात ।
जरा—स्त्री० बुढ़ापा ।
जरा—थोड़ा ।
जराग्रस्त—वृद्ध, बूढ़ ।
जराफत—स्त्री० बुद्धिमानी ।
जरायु—प० वह झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है, गर्भाशय ।
जरायुज—पु० वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो ।
जरिया—पु० संबंध, द्वारा, सबब ।
जरी—स्त्री० सोने के तारों आदि से बना हुआ काम ।
जरीब—स्त्री० भूमि नापने की जंजीर ।
जरूर—अवश्य ।
जरूरत—स्त्री० आवश्यकता ।
जरूरी—आवश्यक ।
जर्कवर्क—तड़क-भड़क वाला ।
जर्द—पीला ।
जर्दा—पु० एक प्रकार का तम्बाकू जो पान के साथ खाते हैं ।
जर्जर—पु० जीर्ण, टूटा फूटा, वृद्ध ।
जर्दी—स्त्री० पीलापन ।
जर्रा—पु० अणु, बहुत छोटा टुकड़ा ।
जर्राह—पु० शस्त्र-चिकित्सक ।
जलंधर—पु० दे० "जलोदर" ।
जल—पु० पानी, उशीर, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र । [पानी पर तैरा करता है ।
जल अलि—पु० एक काला कीड़ा जो
जलकर—पु० जलाशय में होनेवाला पदार्थ, इन पदार्थों पर का कर ।
जलक्रीड़ा—स्त्री० जलविहार ।
जलघड़ी—स्त्री० समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नांद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी ।
जलचर—पु० जलजंतु ।

जलचरकेतु—पु० कामदेव।

जलचारी—पु० जलजंतु।

जलज—जो जल में उत्पन्न हो। पु० कमल, शंख, मछली, मोती।

जलजला—पु० भूकंप।

जलजात—दे० "जलज"।

जलडमरूमध्य—पु० जल का वह पतला भाग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता हो।

जलतरंग—पु० एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर बजाया जाता है। [कपूर।

जलद्—जल देनेवाला। पु० मेघ, मोथा,

जलधर—पु० बादल, समुद्र।

जलधरी—स्त्री० वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। [संख्या।

जलधि—पु० समुद्र, दस शंख की

जलन—स्त्री० दाह, डाह।

जलना—अग्नि के संयोग से ज्वाला, कोयला, राख या भाप के रूप में हो जाना, झुलसना, डाह करना। मु० जले पर नमक छिड़कना = किसी दुःखी को और दुःख देना।

जलनिधि—पु० समुद्र।

जलप्रपात—पु० जल का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना।

जलप्राय—जलमय।

जल भँवरा—पु० दे० "जलअलि"।

जल मानुष—पु० वह जल जंतु जिसके ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली ऐसा होता है।

जलयान—पु० नाव, जहाज।

जलवा—पु० वैभव।

जलशायी—पु० विष्णु।

जलसा—पु० उत्सव का समारोह जिसमें खाना, पीना, गाना, बजाना आदि हो, अधिवेशन। [वाली सेना।

जलसेना—स्त्री० समुद्र में लड़ने-

जलस्तंभ—पु० वह दैवी घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तंभ सा बन जाता है।

जलहरी—स्त्री० अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है, मिट्टी का जलभरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टँगा रहता है।

जलातन—क्रोधी, डाही।

जलाधिप—पु० वरुण। [होनेवाली जलन।

जलापा—पु० डाह ईर्ष्या आदि के कारण

जलाल—पु० तेज, प्रकाश, प्रभाव।

जलावतन—निर्वासित।

जलावतनी—स्त्री० देशनिकाला।

जलावर्त—पु० भँवर।

जलाशय—पु० वह स्थान जहाँ पानी जमा हो। जैसे नदी, तालाब।

जलाहल—जलमय।

जलील—बेकदर, अपमानित।

जलूस—पु० बहुत से लोगों का सज-धज कर धूमधाम से एक साथ

निललना ।

जलेश--पु० वरुण, समुद्र ।

जलोदर--पु० एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी जम जाने से पेट फूल जाता है ।

जल्द--शीघ्र ।

जल्दबाज--किसी काम को जल्दी करनेवाला ।

जल्प--पु० कथन, बकबाद ।

जल्पक--बकबादी ।

जल्पन--पु० बकवाद, डींग ।

जल्लाद--पु० प्राणदंड पाये अपराधी को वध करनेवाला, क्रूर व्यक्ति ।

जवनिका--स्त्री० दे० "यवनिका" ।

जवाँमर्द--बहादुर ।

जवा--स्त्री० दे० "जपा" ।

जवान--युवा, बहादुर ।

जवानी--स्त्री० यौवन, तरुणाई ।

जवाब--पु० उत्तर, बदला, मुकाबले की चीज, नौकरी छूटने की आज्ञा ।

जवाबदेह--जिम्मेदार ।

जवाल-पु० अवनति, आफ़त ।

जवास--पु० एक पौधा ।

जवाहर--पु० रत्न, मणि ।

जस--जैसे । पु० यश ।

जहन्नुम--पु० नरक ।

जहमत--स्त्री० आफत, झंझट, दुःख ।

जहर--घातक । स्त्री० विष । मु० जहर उगलना = कटु बात कहना । जहर का घूट पीना = अनुचित बात देखकर क्रोध को मन ही मन दबाना । जहर का बुझाया हुआ = बहुत अधिक उपद्रवी या अनिष्टकर ।

जहरमोहरा--पु० एक विषनाशक पत्थर ।

जहरीला--विषैला ।

जहाँपनाह--पु० संसाररक्षक ।

जहाद--पु० धर्मयुद्ध ।

जहान--पु० संसार ।

जहालत--स्त्री० अज्ञान, मूर्खता ।

ज़हीन--बुद्धिमान ।

ज़हूर--प्रकाश ।

जहेज--पु० दहेज ।

जाँघ--स्त्री० जंघा, उरु ।

जाँच--स्त्री० परीक्षा, तहकीकात ।

जाँचना--परीक्षा लेना, माँगना ।

जाँफिशानी--स्त्री० मेहनत ।

जाँनिवाज--प्राणदान करनेवाला ।

जा--उत्पन्न । स्त्री० माता, देवरानी ।

जाई--स्त्री० बेटी ।

जाकड़--पु० शर्त पर लाया हुआ माल ।

जाकेट--पु० फतुही, कुर्ती ।

जाग--स्त्री० जागरण । पु० यज्ञ ।

जागरण--पु० जागना ।

जागरित--पु० जागरण, वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव हो ।

जागरूक--पु० जगा हुआ ।

जागर्त्ति--स्त्री० जागरण, चेतनता ।

जागीर—स्त्री० राज्य की ओर से मिली भूमि। [अमीर।

जागीरदार—पु० जागीर रखने वाला,

जाग्रत—जो जागता हो।

जाग्रति—स्त्री० जागरण।

जाचक—पु० माँगनेवाला।

जाचना—माँगना।

जाजिम—स्त्री० बिछाने की चादर।

जाज्वल्य—प्रज्वलित।

जाठ—पु० बड़ा लट्ठा।

जाड्य—पु० जड़ता, मूर्खता।

जात—उत्पन्न, व्यक्त, प्रशस्त। पु० जन्म, पुत्र, जीव। स्त्री० शरीर, जाति।

जातक—पु० बच्चा, भिक्षु, बुद्धदेव के पूर्वजन्म की कथा। [संस्कार।

जातकर्म्म—पु० जन्म समय का

जातना—स्त्री० यातना, तकलीफ।

जातपाँत—स्त्री० जाति, बिरादरी।

जातरूप—पु० सोना, चाँदी, धतूरा।

जाता—उत्पन्न। स्त्री० पुत्री।

जाति—स्त्री० जन्म, हिन्दू समाज का वह विभाग जो पहले कर्म्मानुसार किया गया पर पीछे जन्मानुसार हो गया, निवास, स्थान, वंशपरंपरा या धर्मादि के विचार से मनुष्य समाज का विभाग, श्रेणी, वर्ण, कुल, गोत्र।

ज़ाती—निजी, अपना, व्यक्तिगत।

जातीय—जातिसंबंधी, जातिवाले।

जातीयता—स्त्री० जाति का भाव।

जातुधान—पु० राक्षस, निशाचर।

जादू—पु० इंद्रजाल, तिलस्म, टोना, मोहित करने की शक्ति।

जादूगर—पु० वह जो जादू करता हो।

जादूगरी—स्त्री० जादू करने की क्रिया, जादूगर का काम।

जान—सुजान, चतुर। स्त्री० ज्ञान, ख्याल, प्राण, बल, सार। मु० जान के लाले पड़ना = प्राण बचना कठिन दिखाई देना। जान खाना = तंग करना। जान पर खेलना = जान जोखिम में डालना।

जानकार—जाननेवाला, चतुर।

जानकी—स्त्री० सीता।

जानकीजीवन—पु० रामचंद्र।

जानदार—जानवाला।

जानपद—पु० जनपद संबंधी वस्तु, जनपद-निवासी, देश, मालगुजारी।

जानराय—पु० बड़ा बुद्धिमान।

जानवर—पु० जीव, पशु।

जानशीन—पु० उत्तराधिकारी।

जानिब—स्त्री० तरफ।

जानी—जान से सम्बन्ध रखनेवाला। स्त्री० प्राणप्यारी।

जानु—पु० घुटना, (फा०) जांघ।

जानुपाणि—घुटनों और हाथों के बल चलना, जैसे बच्चे चलते हैं। [माला।

जाप—पु० जप, जपने की थैली या

जापक—पु० जाप करने वाला।
जापा—पु० प्रसूतिका गृह।
जाफ़रान—पु० केसर।
जाबजा—जगह जगह, इधर उधर।
जाबिर—अत्याचारी।
जाब्ता—पु० नियम, कानून।
जाम—पु० पहर, प्याला।
जामदानी—स्त्री० एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।
जामा—पु० पहनावा, चुननदार घेरे का एक पहनावा।
जामाता—पु० दामाद।
जामिन—पु० जिम्मेदार।
जामिनी—स्त्री० जमानत, रात।
जामुनी—जामुन के रंग का।
जायका—पु० स्वाद।
जायचा—पु० जन्मपत्री।
जायज—उचित।
जायदाद—स्त्री० संपत्ति।
जायनमाज—स्त्री० छोटी दरी या बिछौना जिसपर बैठकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।
जाया—खराब, नष्ट। स्त्री० पत्नी।
जार—शोकित, वृद्ध, रोता हुआ। पु० मारने वाला, उपपति।
जारकर्म—पु० व्यभिचार। [पुत्र।
जारज—पु० किसी जार से उत्पन्न
जारण—पु० जलाना, भस्म करना।
जारणी—स्त्री० कुलटा।
जारी—प्रचलित, प्रवाहित। स्त्री० परस्त्री-गमन।
जालंधरी विद्या—स्त्री० इंद्रजाल।
जालंध्र—पु० झरोखे की जाली।
जाल—पु० मछली, चिड़ियाँ आदि पकड़ने के लिये सूत या रस्सी की बनी चीज, फँसाने की युक्ति, समूह, इंद्रजाल, धोखा, फरेब।
जालसाज़—पु० जालिया।
जाला—पु० मकड़ी का जाल, आँख का एक रोग।
जालिम—जुल्म करनेवाला।
जालिया—फरेब करनेवाला।
जावक—पु० महावर।
जासु—जिसका।
जासूस—पु० भेदिया।
जासूसी—स्त्री० जासूस का काम।
जाहिद—संसारत्यागी।
जाहिर—प्रकट।
जाहिरा—प्रकट रूप में।
जाहिल—मूर्ख, अनपढ़।
जाही—स्त्री० एक फूल।
जाह्नवी—स्त्री० गंगा।
जिंद—पु० भूत-प्रेत।
जिंदगी—स्त्री० जीवन, आयु।
जिंदा—जीवित।
जिंदादिल—खुशमिजाज। [अनाज।
जिंस—स्त्री० किस्म, चीज, सामग्री,
जिक्र—पु० चर्चा।

जिगर—पु० कलेजा, चित्त।
जिगरी—दिली, घनिष्ठ।
जिगीषा—स्त्री० जीतने की इच्छा।
जिच्च—स्त्री० बेबसी। [प्रश्न।
जिज्ञासा—स्त्री० जानने की इच्छा,
जिज्ञासु—जानने का इच्छुक, खोजी।
जित्—जीतनेवाला।
जित—जीता हुआ, जिधर।
जिताष्टमी—स्त्री० जितिया पर्व।
जितेंद्रिय—जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो।
जितै—जिधर।
जिद—स्त्री० हठ।
जिद्दी—हठी।
जिन—पु० विष्णु, सूर्य, बुद्ध, जैनों के तीर्थंकर, मुसलमान भूत।
जिनिस—स्त्री० दे० "जिंस"।
जिबह—पु० वलिदान।
जिमनास्टिक—पु० अंगरेजी कसरत।
जिमाना—खिलाना।
जिमि—जैसे।
जिम्मा—पु० जवाबदेही, सुपुर्दगी।
जिम्मावार—पु० जवाबदेह।
जियरा—पु० जीव, मन।
जियान—पु० घाटा, नुकसान।
जियाफत—स्त्री० मेहमानदारी, दावत।
जिरगा—पु० झुंड, दल।
जिरह—स्त्री० हुज्जत, पूछताछ, कवच।
जिराअत—स्त्री० खेती।

जिला—पु० प्रांत, भाग, प्रांत का वह हिस्सा जहाँ एक कलक्टर रहता है।
जिलादार—पु० जिले का प्रधान अफसर। [बाँधनेवाला।
जिल्दबंद, जिल्दसाज—पु० जिल्द
जिल्लत—स्त्री० अपमान, दुर्गति।
जिस्ता—पु० जस्ता, दस्ता।
जिस्म—पु० शरीर।
जिह—स्त्री० धनुष का रोदा।
जिहन—पु० बुद्धि।
जिहाद—पु० मजहबी लड़ाई।
जिह्वल—चटोरा, लोभी।
जिह्वा—स्त्री० जीभ।
जिह्वाग्र—पु० जीभ की नोक। मु० जिह्वाग्र करना = कंठस्थ करना।
जिह्वामूलीय—वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा मूल से हो।
जी—पु० मन, दिल, हिम्मत, संकल्प, विचार, प्राण, एक सम्मान सूचक शब्द। मु० किसी पर जी आना = किसी से प्रेम होना। जी का बुखार निकलना = क्रोध शोक आदि भाव रो-कलप कर या बक-झक कर शांत करना। जी खट्टा होना = मन फिर जाना। जी खोलकर = बेधड़क, यथेष्ट। जी चुराना = किसी काम से भागना।
जीजा—पु० बड़ा बहनोई।
जीजी—स्त्री० बड़ी बहन।
जीत—स्त्री० विजय।

जीता—जीवित, नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।
जीन—पु० पलान, एक मोटा कपड़ा।
जीनपोश—पु० जीन ढकने का कपड़ा।
जीना—जीवित रहना, प्रसन्न होना। पु० सीढ़ी। मु० जीती मक्खी निगलना = जान बूझकर अनुचित कर्म करना।
जीभ—स्त्री० जिह्वा। मु० जीभ पकड़ना या बंद करना = बोलने न देना। जीभ हिलाना = मुँह से कुछ बोलना।
जीमना—भोजन करना।
जीमूत—पु० पर्वत, बादल, इन्द्र, सूर्य।
जीमूतवाहन—पु० इन्द्र।
जीर्ण—टूटा फूटा और पुराना, बुढ़ापे से जर्जर, पचा हुआ।
जीर्णशीर्ण—फटा पुराना।
जीर्ण ज्वर—पु० पुराना बुखार।
जीर्णोद्धार—पु० फिर से सुधार, मरम्मत।
जीवंत—जीता जागता।
जीव—पु० आत्मा, प्राण, प्राणी।
जीवजंतु—पु० प्राणी।
जीवक—पु० प्राण धारण करनेवाला। क्षपणक, सँपेरा, सेवक, सूदखोर।
जीवट—पु० हिम्मत।
जीवदान—पु० प्राणदान।
जीवधारी—पु० प्राणी।
जीवन—पु० जिंदगी, प्राणधारण, जीवित रखने वाली वस्तु, परमप्रिय।
जीवनचरित—पु० जीवन वृत्तांत।
जीवनधन—पु० प्राणप्रिय।
जीवनबूटी—स्त्री० संजीवनी बूटी।
जीवनमूरि—स्त्री० जीवनबूटी, प्यारा।
जीवनवृत—पु० जीवनचरित।
जीवनी—स्त्री० जीवनचरित।
जीवनोपाय—पु० जीविका।
जीवन्मुक्त—जीवित अवस्था में ही माया-बंधन से मुक्त।
जीवन्मृत—जिसका जीवन सुखमय [न हो।
जीवयोनि—स्त्री० जीवजंतु।
जीवलोक—पु० भूलोक, पृथ्वी।
जीवात्मा—पु० आत्मा।
जीविका—स्त्री० रोजी।
जीवित—जिंदा।
जीवी—जीनेवाला, जीविका करने- [वाला।
जु—जो।
जुआ—पु० बाजी लगाकर खेलाजाने [वाला खेल।
जुआचोर—पु० ठग।
जुआरी—पु० जुआ खेलनेवाला।
जुकाम—पु० सरदी।
जुग—पु० युग, जोड़ा, पीढ़ी।
जुगराफिया—पु० भूगोल।
जुगुत—स्त्री० उपाय, चतुराई।
जुगनू—पु० एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है।
जुगाना—[...] करना, हिफाजत से [रखना।

जुगालना—पागुर करना ।

जुगुप्सा—निन्दा, घृणा ।

जुज—पु० फारस, टुकड़ा ।

जुजबंदी—स्त्री० किताब की एक प्रकार की सिलाई ।

जुझाऊ—युद्ध संबंधी ।

जुझार—लड़ाका, लड़ाई ।

जुट—स्त्री० जोड़ी, जत्था ।

जुड़ना—संबद्ध होना, इकट्ठा होना ।

जुड़ाना—तृप्त होना या करना, ठंढा होना या करना ।   [लगना ।

जुतना—जोता जाना, परिश्रम पूर्वक

जुदा—अलग, भिन्न ।

जुदाई—स्त्री० वियोग ।

जुन्हाई—स्त्री० चाँदनी, चंद्रमा ।

जुबली—स्त्री० किसी महत्वपूर्ण घटना का स्मारक-महोत्सव ।

जुमला—कुल, सब । पु० पूरा वाक्य ।

जुमा—पु० शुक्रवार ।

जुमा मसजिद—स्त्री० वह मसजिद जहाँ मुसलमान लोग जुमा के दिन एकत्र होकर नमाज पढ़ते हैं ।

जुरअत—स्त्री० साहस ।

जुरमाना—पु० अर्थदंड ।

जुर्म—पु० अपराध ।   [दस्त

जुलाब—पु० दस्त लानेवाली दवा,

जुल्फ, जुल्फी—स्त्री० सिर के लंबे बाल ।

जुल्म—पु० अत्याचार । मु० जुल्म ढाना = अत्याचार करना, कोई अद्भुत काम करना ।

जुलूस—पु० दे० "जलूस" ।

जुस्तजू—स्त्री० तलाश ।

जुहार—स्त्री० क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम ।

जुहारना—सहायता माँगना, एहसान लेना, प्रणाम करना ।

जूं—स्त्री० बालों का कीड़ा, ढीला । मु० कानों पर जूं रेंगना = स्थिति का ज्ञान होना, होश होना ।

जू—आदरसूचक एक शब्द, जी ।

जूआ—पु० गाड़ी, चक्की आदि की वह लकड़ी जो बैल के कंधे पर रहती है, बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल ।

जूझना—लड़ना, लड़कर मरना ।

जूट—पु० जटा की गाँठ, जूड़ा, लट ।

जूठन—स्त्री० उच्छिष्ट भोजन ।

जूड़ा—पु० स्त्रियों के सिर पर बालों को एक साथ लपेटकर बाँधी हुई गाँठ, चोटी, पगड़ी का पिछला भाग, घड़े के नीचे रखने की गेंडुली ।

जूड़ी—वह ज्वर जिसमें पहले कुछ जाड़ा हो आता है ।   [पीट ।

जूती पैजार—स्त्री० जूतों की मार-

जूथ—पु० दे० "युथ" ।

जूनियर—छोटा, कालक्रम से पिछला ।

जूरर—पु० जूरी का काम करनेवाला, पंच। [के साथ बैठते हैं।
जूरी—स्त्री० पंच जो अदालत में जज
जूस—पु० रसा, झोल, सम संख्या।
जूही—स्त्री० एक फूल।
जृंभ—पु० जंभाई, आलस्य।
जृंभण—पु० जँभाई लेना।
जृंभा—स्त्री० जँभाई, आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता।
जेंवना—खाना।
जेटी—स्त्री० वह चबूतरा जिसपर से जहाजों का माल चढ़ाया-उतारा जाता है। [का बड़ा भाई, भसुर।
जेठ—अग्रज। पु० एक महीना, पति
जेठा—अग्रज, सबसे बड़ा।
जेठानी—स्त्री० जेठ अर्थात् पति के बड़े भाई की पत्नी।
जेता—विजयी, विष्णु।
जेतिक, जेते—जितना
जेन्टिलमैन—पु० शरीफ आदमी।
जेब—पु० पाकेट। स्त्री० सुन्दरता।
जेबखर्च—पु० निजी फुटकर खर्च।
जेर—पराजित, जो बहुत तंग किया जाय। [हो।
जेरबार—जिसकी बहुत हानि हुई
जेरबारी—स्त्री० आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना, तंगी, हैरानी।
जेल, जेलखाना—पु० कारागार।
जेवनार—स्त्री० भोज, रसोई।
जेवर—पु० गहना।
जेहन—पु० बुद्धि।
जेहि—जिस।
जैन—पु० एक धार्मिक संप्रदाय।
जैनी—पु० जैन मतावलंबी।
ज़ैल—पु० दामन, नीचे।
जोंधैया—स्त्री० चाँदनी।
जोई—स्त्री० जोरू, पत्नी।
जोकर—पु० मसखरा।
जोखना—पु० तौलना।
जोखा—पु० लेखा, हिसाब।
जोखिम—स्त्री० खतरा।
जोगड़ा—बना हुआ योगी, पाखंडी।
जोगवना—यत्न से रखना, इकट्ठा करना, आदर करना, जाने देना, पूरा करना। [पिशाचिनी।
जोगिन—स्त्री० योगी की स्त्री,
जोगिनी—स्त्री० दे० "योगिनी"।
जोगेश्वर—पु० श्रीकृष्ण, शिव, सिद्ध योगी।
जोटो—स्त्री० जोड़ी, समान।
जोड़—पु० जोड़ने की क्रिया, टोटल, वह स्थान जहाँ दो या अधिक चीजें मिलें, जोड़ने का टुकड़ा, गाँठ, मेल-मिलाप, जोड़ा, बराबरी, पूरी पोशाक, छल।
जोड़तोड़—पु० उपाय, दाँव पेंच, ढंग।

जोड़वाँ—यमज।

जोड़ा—पु॰ दो समान पदार्थ, जूता, पूरी पोशाक, नर-मादा, बराबरी का।

जोधा—पु॰ लड़ाका।

जोन्हाई—स्त्री॰ दे॰ "जुन्हाई"।

जोपै—यदि, यद्यपि।

जोम—पु॰ उमंग, जोश, अभिमान।

जोय—स्त्री॰ स्त्री। पु॰ जो।

जोर—पु॰ बल, प्रबलता, अधिकार, आवेग, झोंक, सहारा, व्यायाम।

जोरजुल्म—पु॰ अत्याचार।

जोरशोर—पु॰ अधिक जोर।

जोरावर—बलवान।

जोरू—स्त्री॰ पत्नी। [देखना।

जोवना—देखना, ढूँढना, आसरा

जोश—पु॰ उफान, चित्त की तीव्र वृत्ति, उत्तेजना।

जोशीला—आवेगपूर्ण।

जोषी—पु॰ ज्योतिषी। [दृष्टि।

जोह—स्त्री॰, तलाश, इंतजार, कृपा-

जोहार—पु॰ अभिवादन, प्रणाम।

जौं—यदि, जो, ज्यों।

जौजा—स्त्री॰ पत्नी।

जौतुक—पु॰ दहेज।

जौन—जो।

जौहर—पु॰ रत्न, तत्त्व, हथियार की ओप, विशेषता, खूबी। पु॰ राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या किले पर शत्रुओं का अधिकार हो जाने के निश्चय पर स्त्रियाँ और बच्चे दहकती चिता में जल मरते थे। दुर्ग में स्त्री, बच्चों के जल मरने के लिये बनायी चिता। आत्महत्या। [वाला, पारखी।

जौहरी—पु॰ रत्न परखने या बेचने-

ज्ञ—पु॰ ज और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर, ज्ञान, ज्ञानी, जाननेवाला, ब्रह्मा, बुध।

ज्ञप्त—जाना हुआ।

ज्ञप्ति—स्त्री॰ जानकारी, बुद्धि।

ज्ञात—जाना हुआ।

ज्ञातव्य—जानने योग्य, जो जाना जा सके। [रखने वाला।

ज्ञाता—जानकार, जानने वाला, ज्ञान

ज्ञाति—पु॰ एक ही गोत्र या वंश का व्यक्ति, भाई-बंधु। स्त्री॰ जाति।

ज्ञान—पु॰ तत्वज्ञान, जानकारी, बोध।

ज्ञानगम्य, ज्ञानगोचर — ज्ञेय, जानने योग्य।

ज्ञानयोग—पु॰ ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन।

ज्ञानवान्—ज्ञानी, जिसे ज्ञान हो।

ज्ञानवृद्ध—जिसे जानकारी अधिक हो। [ज्ञानी।

ज्ञानी—ज्ञानवान्, जानकार, ब्रह्म-

ज्ञानेंद्रिय—पु॰ वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे विषयों का बोध होता है, जैसे आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा।

ज्ञापक—बतानेवाला।

ज्ञापन—बताने का कार्य।

ज्ञापित—सूचित।

ज्ञेय—जानने योग्य, जो जाना जा सके।

ज्या—स्त्री० धनुष की डोरी, वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो, पृथ्वी।

ज्यादती—स्त्री० अधिकता, अत्याचार।

ज्यादा—अधिक।

ज्यामिति—स्त्री० रेखागणित।

ज्येष्ठ—बड़ा, वृद्ध, एक महीना, परमेश्वर।

ज्येष्ठा—बड़ी। स्त्री० एक नक्षत्र, वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। छिपकिली, मध्यमा उँगली।

ज्यों—जिस प्रकार, जिस क्षण।

ज्योति—स्त्री० प्रकाश, लौ, अग्नि, सूर्य, नक्षत्र, आँख की पुतली का मध्य विंदु, दृष्टि, विष्णु, परमात्मा।

ज्योतिर्लिंग—पु० शिव।

ज्योतिर्लोक—पु० ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्—पु० ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—स्त्री० ज्योतिष।

ज्योतिश्चक्र—पु० नक्षत्रों और राशियों का मंडल।

ज्योतिष—पु० वह विद्या जिससे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाय।

ज्योतिषी—पु० ज्योतिष जाननेवाला।

ज्योतिष्पथ—पु० आकाश।

ज्योतिष्पुंज—पु० नक्षत्र-समूह।

ज्योतिष्मती—स्त्री० रात्रि।

ज्योतिष्मान—प्रकाशयुक्त। पु० सूर्य।

ज्योत्स्ना-स्त्री० चाँदनी, चाँदनी रात।

ज्योनार—पु० भोजन, भोज।

ज्यौं—यदि, जो।

ज्यौतिष—ज्योतिष संबंधी।

ज्वर—पु० बुखार।

ज्वलंत—दीप्त, अत्यन्त स्पष्ट।

ज्वलन—पु० जलन, आग, ज्वाला।

ज्वलित—जला हुआ, उज्ज्वल।

ज्वार—स्त्री० एक अन्न, लहर की उठान।

ज्वारभाटा—पु० समुद्र के जल का चढ़ाव उतार।

ज्वाल—पु० लौ, लपट।

ज्वाला—स्त्री० अग्नि शिखा, गरमी, ताप।

ज्वालामुखी पर्वत—पु० वह पर्वत जिसकी चोटी से धूआँ, राख आदि निकला करते हैं।

झ

झ—एक अक्षर। पु० झंझावात, वृहस्पति, दैत्यराज, ध्वनि।

झंकार—स्त्री० झनझनाहट।

झंखाड़—पु० घनी और काँटेदार झाड़ी। पत्रहीन वृक्ष, रद्दी चीजों का समूह।

झँगा, झँगुलो—स्त्री० दे० "झगा"।

झंझट—स्त्री० बखेड़ा।

झँझरी—स्त्री० जाली, जालीदार [खिड़की।

झंझा, झंझावात—पु० तेज आँधी, वर्षा के साथ तेज आँधी।

झांझी—स्त्री० फूटी कौड़ी।

झंडा—पु० पताका।

झँडूला—जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो, मुंडन संस्कार के पहले का।

झंप—पु० फलाँग, उछाल। [झंपना।

झँपना—ढकना, उछलना, टूट पड़ना,

झँवाना—झाँवे के रंग का अर्थात् कुछ काला पड़ना, मंद होना, कुम्हलाना।

झँसना–रगड़ना, बहका कर धन लेना।

झक—चमकीला। स्त्री० सनक, धुन।

झकझक—चमकीला। स्त्री० बकबक।

झकझेलना, झकझोरना—पकड़कर खूब हिलाना।

झकाझक—चमकता हुआ।

झकोर—पु० झोंका, झटका।

झकोड़—पु० तेज आँधी।

झक्की—बहुत बक बक करने वाला, सनकी।

झखना—बहुत पछताना और कुढ़ना, दुखड़ा रोना। पु० दुखड़ा।

झगड़ालू—कलहप्रिय।

झगा—पु० छोटे बच्चों के पहनने का कुछ ढीला कुरता।

झगुली—स्त्री० दे० "झगा"।

झझक—स्त्री० भड़क, झुंझलाहट, दुर्गंध, पागलपन का ह[ल]का दौरा।

झटकना—झटका या झोंका देना, तेज से चलना, चालाकी से या जबर-दस्ती कोई चीज ले लेना।

झटका—पु० झोंका। आघात, एक ही आघात से पशु बध करना।

झटपट—शीघ्र।

झटिति—झट, बिना समझे बूझे।

झड़—स्त्री० झड़ी।

झड़ना—छोटे छोटे टुकड़ों में गिरना, झाड़ा जाना।

झड़पना—आक्रमण करना, झगड़ना, जबरदस्ती लेना।

झड़बेरी–स्त्री० बनबेर। [कहते जाना।

झड़ी–स्त्री० लगातार झड़ने की क्रिया, लगातार वर्षा, लगातार बहुत सी बातें

झनक, झनकार—स्त्री० झंकार।

झन्नाहट—स्त्री० झनझनाहट।

झप--तुरंत, झट।
झपक—स्त्री० पलक मारने भर का समय, पलक का गिरना, हलकी नींद।
झपकी—स्त्री० हलकी नींद, आँख झपकने की क्रिया, बहकावा।
झपटना--वेग से जाना।
झपना—पलकों का गिरना। ढकना, झुकना, झेंपना। [होना।
झपसना--लता आदि का खूब घना
झपित—झपा हुआ, जिसमें नींद भरी हो, लज्जित। [बाल हों।
झबरा—जिसके लंबे लंबे बिखरे
झब्बा--पु० गुच्छा।
झमक--स्त्री० चमक, प्रकाश, झम-झम शब्द, नखरे की चाल।
झमाझम--दमक के साथ, झमझम शब्द सहित।
झमाट--पु० झुरमुट।
झमेला--पु० झंझट, भीड़भाड़।
झर—स्त्री० पानी गिरने का स्थान, झरना, समूह, वेग, झड़ी, ताप।
झरना--ऊंची जगह से सोते का गिरना। पु० सोता, चलना, छेददार चिपटी करछी।
झरहरना--झरझर करना।
झरी—स्त्री० पानी का झरना, स्रोत।
झरोखा--पु० खिड़की। [समूह।
झल--पु० जलन, उग्र कामना, क्रोध,
झलक--स्त्री० चमक, प्रतिबिंब।
झलका—पु० फफोला।
झलझल—स्त्री० चमक। [हिलाना।
झलना—हवा के लिये कोई चीज
झलमल—पु० अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला, चमकदमक।
झला—पु० हलकी वर्षा, झालर, तोरण, बंदनवार, पंखा, समूह।
झल्लाना—चिढ़ना, चिढ़ाना।
झष—पु० मछली, मगर, गरमी, वन, मीन राशि।
झषकेतु—पु० कामदेव। [पड़ना।
झहरना-झड़ना, झरझर करना, ढीला
झाँई—स्त्री० छाया, अँधेरा, धोखा, प्रतिध्वनि, शरीर पर का हलका काला धब्बा। [देखना।
झाँकना--ओट से देखना, झुककर
झाँका पु० झरोखा।
झाँकी—स्त्री० झाँकने की क्रिया या भाव, दृश्य, झरोखा। [पाजीपन।
झाँझा—स्त्री० झाल बाजा, क्रोध,
झाँप—स्त्री० ढकना, झपकी, पर्दा।
झाँवा--पु० जली हुई ईंट।
झाँस, झाँसापट्टी—स्त्री० धोखा।
झाग—पु० फेन।
झाड़—पु० वह पौधा जिसकी घनी डालियाँ फैली हुई हों, ऐसे पौधे के आकार का रोशनी करने का एक सामान। स्त्री० झाड़ने की क्रिया, फटकार, मंत्र से झाड़ना।

झाड़खंड—पु० जंगल ।
झाड़दार—सघन, कँटीला ।
झाड़न—स्त्री० झाड़ने का कपड़ा, झाड़ने से निकली चीज ।
झाड़ना—साफ करना, झटकारना, डाँटना, मंत्र से कोई रोग दूर करना ।
झाड़ फूँक - स्त्री० मंत्रोपचार । [फूँक ।
झाड़ा—पु० पैखाना, तलाशी, झाँड
झाड़ी—स्त्री० पौधा, पौधों का समूह ।
झापड़—पु० थप्पड़ ।
झारी—स्त्री० एक प्रकार का टोंटीदार लोटा । [पराहट, लहर ।
झाल—पु० एक बाजा । स्त्री० चर-
झालर - स्त्री० किसी चीज के किनारे पर लटकती हुई चीज । [अचम्भा ।
झिझक—स्त्री० चौंक, भय, भड़क,
झिड़की - स्त्री० डाँट, फटकार ।
झिरझिर—पु० धीरे धीरे बहना ।
झिलम—स्त्री० सिर और मुँह पर पहना जाने वाला कवच ।
झिलमिल—रह रह कर चमकता हुआ । स्त्री० हिलता हुआ प्रकाश, प्रकाश के घटने बढ़ने की क्रिया, एक बारीक और मुलायम कपड़ा, झिलम ।
झिलमिली—स्त्री० आड़ी पटरियों का ढाँचा जो हवा और प्रकाश आने के लिये किवाड़ में लगाया जाता है, चिक ।
झिल्ली—पु० झींगुर, पतली तह ।
झींसी—स्त्री० फुहार ।
झीना—बहुत पतला, झँझरा, दुबला ।
झील—स्त्री० बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय ।
झीलर—पु० छोटा झील ।
झीवर—पु० मल्लाह ।
झुँझलाना—खिझलाना ।
झुकाव—पु० प्रवृत्ति, ढाल ।
झुनक—पु० झुन झुन शब्द ।
झुनझुनी—स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने से उसमें होनेवाली सनसनाहट ।
झुरमुट—पु० झाड़ों का समूह, दल ।
झुर्री—स्त्री० सिकुड़न । [झौंसना ।
झुलसना-गरमी से काला पड़ जाना,
झूठ—जो सच न हो ।
झूठ मूठ—यों ही, व्यर्थ ।
झूठा—असत्य, असत्यवादी, नकली ।
झूमना—इधर उधर हिलना । [झूला ।
झूल—पु० चौपाये के ओढ़ने का कपड़ा,
झूलन—पु० मूर्तियों को झूला पर बैठाकर झुलाने का उत्सव ।
झूला—पु० हिंडोला, झोंका ।
झेंपना—लज्जित होना ।
झेलना—बरदाश्त करना, पानी में पैठना, ठेलना ।
झोंक—स्त्री० झुकाव, भार, प्रचंड गति, ठाट, झोंका, पानी का हिलोर ।

झोंकना—आग में फेंकना, ठेलना, अंधाधुन्ध खर्च करना।

झोंका—पु० झटका, धक्का, हवा का झकोरा, पानी की हिलोरें, इधर उधर हिलने की क्रिया। [झोंका।

झोंटा—पु० बड़े बालों का समूह,

झोपड़ी—स्त्री० कुटिया।

झोल—ढीला, निकम्मा, पु० रसा, शोरबा, धातु पर का मुलम्मा, तनाव या कसाव का उलटा, आँचल, परदा भूल, गर्भ, राख, दाह।

झोली—स्त्री० थैली, चरसा।

झौंर—पु० झुंड, गुच्छा, कुंज।

झौंरना—गूँजना, झपटकर पकड़ना।

झौंराना—झूमना, काला पड़ना, मुरझाना।

झौंसना—झुलसना।

झौर—पु० तकरार, डाँट डपट।

झौरे—समीप, साथ।

ट

ट—एक अक्षर। पु० नारियल का खोपड़ा, वामन, चौथाई भाग, शब्द।

टंक—पु० चार माशे का एक तौल, सिक्का, छेनी, कुल्हाड़ी, कुदाल, तलवार, टाँग, क्रोध, अभिमान, सुहागा, कोष। [टाँके से जोड़ लगाने का कार्य।

टंकण—पु० सुहागा, धातु की चीज में

टँकना—टाँका जाना, दर्ज किया जाना, सिल या चक्की आदि का कूटना।

टंकार—पु० धातु खण्ड पर आघात लगने का शब्द, धनुष की कसी हुई डोरी खींचने का शब्द।

टंकी—स्त्री० पानी भरने का कुंड या बड़ा वर्तन।

टंकोर—पु० दे० "टंकार"।

टंगड़ी—स्त्री० टाँग, पैर।

टँगना—लटकना। पु० अलगनी।

टंटघंट—पु० आडम्बर।

टंटा—पु० आडम्बर, उपद्रव, झगड़ा।

टक—स्त्री० स्थिर दृष्टि, गड़ी हुई नजर। मु० टक लगाना = आसरा देखते रहना। [नजर।

टकटकी—स्त्री० अनिमेष दृष्टि, गड़ी

टकटोना, टकटोरना—टटोलना, ढूँढ़ना। [फिरना, पटकना।

टकराना—ठोकर लेना, मारा मारा

टकसाल—स्त्री० सिक्का बनने का स्थान, प्रामाणिक वस्तु।

टकसाली—टकसाल का खरा, चोखा, सर्व सम्मत, जँचा हुआ। पु० टकसाल का अधिकारी।

टका—पु० रुपया, अधन्ना, धन, तीन

तोले की तौल । मु० टका सा जवाब देना = साफ इनकार करना। टका सा मुँह लेकर रह जाना = लज्जित होना ।

टक्कर—स्त्री० ठोकर, मुकाबिला, हानि।

टटोलना—ढूढ़ने के लिये इधर उधर हाथ रखना, थाह लेना, परखना ।

टट्टी—स्त्री० बाँस की फट्टियों आदि की बनी दीवार, चिक, पाखाना । मुहा० टट्टी की ओट से शिकार खेलना = छिपकर कोई चाल चलना । धोखे की टट्टी = धोखे की चीज ।

टट्टू—पु० छोटे कद का घोड़ा । मु० भाड़े का टट्टू = रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी ।

टनकना-टन टन बजना, धूप या गर्मी लगने से सिर दर्द होना । [हो ।

टनमन—स्वस्थ, चंगा, जो सुस्त न

टनेल—स्त्री० सुरंग ।

टपक—स्त्री० टपकने का भाव, बूँदबूँद गिरने का शब्द, रुक रुक कर होने वाला दर्द ।[आसरे में पड़ा रहना ।

टपना—पार करना, लांघना, व्यर्थ

टप्पा—पु० फलाँग, कूद, टिकान, नियत दूरी, फर्क, जमीन का छोटा टुकड़ा, एक प्रकार का गाना ।

टब—पु० पानी रखने का बड़ा बर्तन।

टर—स्त्री० कर्णकटु शब्द । मेढ़क की बोली, ऐंठ, हठ, तुच्छ बात ।

टरकना—हट जाना, टल जाना ।

टरटराना—बकबक करना ।

टर्राना—कठोर स्वर से उत्तर देना ।

टलना—हटना, मिटना, बीतना, उल्लंघन करना ।

टलमल—डगमग ।

टलहा—खोटा ।

टस—स्त्री० टसकने का शब्द, कपड़ा फटने का शब्द । मु० टस से मस न होना = कुछ न खिसकना, कहने सुनने से कुछ प्रभावित न होना ।

टसक—स्त्री० कसक ।

टसकना—हटना, टीस मारना ।

टसर—पु० एक प्रकार का कड़ा और मोटा रेशम ।

टसुआ—पु० आँसू, अश्रु ।

टहकना—रह रहकर दर्द होना ।

टहनी—स्त्री० पेड़ की पतली डाली ।

टहल—स्त्री० सेवा, कामधंधा ।

टहलना—धीरे धीरे चलना, हवा खाना, सैर करना ।

टहलनी—स्त्री० नौकरानी ।

टहलुआ—पु० सेवक ।

टाँक—स्त्री० तीन या चार माशे की एक तौल, अंदाज, लिखावट, कलम की नोक, हिस्सेदारों का हिस्सा ।

टाँकना—जोड़ना, सीना, सिल आदि कूटना, तेज करना, दर्ज करना ।

टाँकी—स्त्री० छेनी, छेद ।

टाँग—स्त्री० पैर। मु० टाँग अड़ाना =अनधिकार दखल देना। टाँग पसार कर सोना = निश्चिंत सोना।
टाँय टाँय—स्त्री० टें टें, बकवाद। मु० टाँय टाँय फिस = बकवाद बहुत पर फल कुछ भी नहीं।
टाइट—खूब कसकर बाँधा हुआ।
टाइटिल—पु० पदवी, खिताब।
टाइप—पु० शीशे के ढले अक्षर।
टाइम—पु० समय। [पत्र।
टाइम टेबुल—समय सूचक विवरण-
टाई—स्त्री० अंगरेजी पहनावे में गले में बाँधने की एक पट्टी।
टाउन—पु० शहर। [भवन।
टाउन हाल—शहर का सार्वजनिक
टाट—पु० सन या पटुआ का बुना मोटा कपड़ा, बिरादरी, महाजनी गद्दी। मु० टाट उलटना = दिवाला निकालना।
टान—स्त्री० तनाव।
टानिक—पु० पुष्टिकारक औषध।
टाप—स्त्री० घोड़े के पैर का निचला भाग, घोड़े के पैर का शब्द।
टापना—घोड़े का पैर पटकना, कूदना, किसी वस्तु के लिये इधर उधर फिरना।
टापिक—पु० विषय, प्रसंग।
टापू—पु० स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो।
टार्च—पु० एक लैम्प जो बिजली के मसाले से जलता है। [पु० भडुआ।
टाल—स्त्री० ढेर, टालने का भाव।
टालटूल—स्त्री० टालमटूल।
टालना—हटाना, मिटाना, बिताना, न मानना, बहाना करके पीछा छुड़ाना, टरकाना, झूठा वादा करना, पलटना, हिलाना।
टालमटूल—स्त्री० बहाना।
टावर—पु० लाट, मिनार।
टिकट—पु० महसूल, महसूल का प्रमाण पत्र।
टिकटी—स्त्री० तिपाई, रंथी। [लिट्टी।
टिकड़ा—पु० चपटा और गोल टुकड़ा,
टिकना—कुछ काल तक ठहरना।
टिकस—पु० महसूल।
टिकाऊ—मजबूत।
टिकान—स्त्री० पड़ाव। [पड़ाव
टिकाव—पु० ठहराव, स्थिरता,
टिकिया—स्त्री० चिपटा छोटा टुकड़ा।
टिटकारना—टिकटिक करके हाँकना।
टिटिहरी—स्त्री० कुररी पक्षी।
टिट्टिभ—पु० कुररी, टिड्डी।
टिड्डी—स्त्री० एक उड़ने वाला कीड़ा जो दल बाँधकर चलता है।
टिपटिप—स्त्री० टपकने का शब्द।
टिप्पणी—स्त्री० विवरण, टीका।
टिफिन—पु० अंगरेजों का तीसरे पहर का जलपान।

टिमटिमाना—मंद मंद जलना।
टिरफिस—स्त्री० चींचपड़ विरोध।
टीका—पु० तिलक, दोनों भौहों के बीच का भाग,श्रेष्ठ पुरुष,राज्यतिलक, युवराज, आधिपत्य का चिह्न, एक गहना, दाग, खास खास रोगों से बचने के लिये सूई लेना। स्त्री० व्याख्या।
टीकाकार—पु० व्याख्या लिखने [वाला।
टीचर—पु० शिक्षक।
टीन—पु० जस्ता, जस्ते का बक्स।
टीप—स्त्री० दबाव, गच कूटना,टंकार, लिख लेना, दस्तावेज, जन्मपत्री।
टीपन—स्त्री० जन्मपत्री।
टीमटाम—स्त्री० बनाव सिंगार।
टीला—पु० ऊँचा ढेर, पहाड़ी।
टीस—स्त्री० कसक।
टुक—थोड़ा, जरा।
टुकड़ा—पु० खंड, भाग, रोटी का टुकड़ा। मु० टुकड़ा माँगना = भीख माँगना। टुकड़ा सा जवाब देना = साफ इनकार करना।
टुकड़ी—स्त्री० छोटा टुकड़ा, दल, सेना का एक अंश।
टुच्चा—तुच्छ, ओछा।
टुटपूँजिया—थोड़ी पूंजीवाला।
टूँगना—थोड़ा थोड़ा काट कर खाना।
टूँड़ी—स्त्री० नाभि, लंबी नोक।
टूटना—खंडित होना, धावा करना, दुर्बल होना, धनहीन होना, मरना, घाटा होना, शरीर में ऐंठन लिये हुए पीड़ा होना।
टूम—स्त्री० गहना, ताना। मु० टूम-टाम = वस्त्राभूषण, बनाव सिंगार।
टेंट—स्त्री० फेंटा।
टेंटी—स्त्री० करील। पु० हुज्जती।
टेंपरेचर—पु० तापमान।
टेक—स्त्री० चाँड़, सहारा, आश्रय, बैठने का स्थान, ऊँचा टीला, हठ, प्रतिज्ञा, आदत,गीत का पहला पद।
टेकना—सहारा लेना, ठहरना, हठ करना, बीच में रोकना। मु० माथा टेकना = प्रणाम करना।
टेकनिकल—पारिभाषिक।
टेढ़ा—वक्र, तिरछा, कठिन, उद्धत।
टेनिस—पु० एक अंगरेजी खेल।
टेबुल—पु० मेज, नकशा, कोष्ठक।
टेम—स्त्री० दीपशिखा।
टेर—स्त्री० ऊँचा स्वर, तान, पुकार।
टेलिग्राफ—पु० खबर भेजने का तार।
टेलिग्राम—पु० तार से भेजी खबर।
टेलिस्कोप—पु० दुर्बीन।
टेसू—पु० पलाश, ढाक।
टैक्स—पु० महसूल।
टैक्सी—स्त्री० किराये पर चलनेवाली [मोटर गाड़ी।
टोंटा—पु० नली। [पु० टोकरा, हँडा।
टोकना—कहना, कुछ पूछ बैठना।
टोटका—पु० टोना, यंत्रमंत्र।

टोटल--पु० जोड़ । [कमी ।
टोटा—पु० टुकड़ा, कारतूस, घाटा,
टोना--टटोलना । पु० जादू ।
टोप--पु० बड़ी टोपी, खोल ।
टोभ--पु० टाँका ।
टोल--स्त्री० मंडली, पाठशाला ।
टोला--पु० महल्ला, रोड़ा ।
टोली—स्त्री० छोटा महल्ला, जत्था, मँडली, सिल ।
टोह—स्त्री० खोज, देखभाल ।
टोही—स्त्री० पता लगानेवाला ।
ट्यूटर—पु० घर पर आकर पढ़ाने-वाला शिक्षक [का काम ।
ट्यूशन—पु० घर पर जाकर पढ़ाने
ट्रस्ट—पु० दान की संपत्ति को कुछ व्यक्तियों के हाथ सुप्रबंध के लिये सौंपना ।
ट्रस्टी—पु० अभिभावक ।
ट्राम—पु० एक प्रकार की गाड़ी ।
ट्रूस—पु० क्षणिक संधि ।
ट्रेजरर—पु० खजांची ।
ट्रेड—व्यापार ।
ट्रेडमार्क—पु० व्यापार का मार्का ।
ट्रेन—स्त्री० रेलगाड़ी ।

ठ

ठ—एक अक्षर । पु० शिव, महाध्वनि, चंद्रमंडल, शून्य ।
ठंढ—स्त्री० सरदी । [शांति ।
ठंढक—स्त्री० सरदी, तरी, संतोष,
ठंढा—शीतल, बुझा हुआ, शांत,सुस्त, तृप्त, निश्चेष्ट, अविरोधी, मरा हुआ मु० ठंढी साँस=दुःख से भरी साँस ।
ठक—भौचक्का । स्त्री० ठोंकने का शब्द ।
ठकठक—स्त्री० झंझट, खटखट ।
ठकुरसुहाती—स्त्री० खुशामद ।
ठकुराइन—स्त्री० मालकिन क्षत्राणी, नाइन । [अधिकार, बड़प्पन ।
ठकुराई—स्त्री० सरदारी, ठाकुर का
ठकुरानी—स्त्री० ठाकुर की स्त्री, रानी, मालकिन ।
ठग—पु० लुटेरा, धूर्त, ठगनेवाला ।
ठगना--धोखा देकर माल लूटना, धोखा देना, सौदा बेचने में बेईमानी करना, धोखा खाना, चकित होना ।
ठगनी--स्त्री० ठगनेवाली स्त्री, कुटनी ।
ठगी--स्त्री० धोखेबाजी, लूट ।
ठट—पु० जमघट, सजावट ।
ठटना—ठहरना, ठहराना, सजना, सजाना । [ढाँचा, रंथी ।
ठटरी—स्त्री० ढाँचा, हड्डियों का
ठट्ठा—पु० हँसी । [हो जाना ।
ठठकना—एकाएक रुक जाना, चकित
ठठाना—मारना, जोरसे पानी बरसना, जोर से हँसना ।
ठठेरा, ठठेरी—पु० बरतन बनाने-

वाला। मु० ठठेरे ठठरे की बद-लाई = जैसे के साथ तैसा व्यवहार।

ठठोल—पु० दिल्लगीबाज, दिल्लगी।

ठठोली--स्त्री० दिल्लगी।

ठनक—स्त्री० ठन ठन शब्द, टीस।

ठनठन गोपाल—पु० छूँछी और निःसार वस्तु, निर्धन मनुष्य।

ठठना—आरंभ होना, ठहरना, लगना, मुस्तैद होना।

ठनाठन—ठनठन शब्द के साथ।

ठप्पा—पु० साँचा, छाप।

ठमक—स्त्री० ठिठक, लचक।

ठमना—ठानना, कर चुकना, निश्चित करना, ठहराना, लगाना, स्थित होना, लगना।

ठरना—सरदी से अकड़ना।

ठर्रा—पु० बहुत मोटा सूत।

ठस—ठोस, कड़ा, गफ़, दृढ़, भारी, सुस्त, कृपण, (रुपया) जिसकी ठनकार ठीक न हो।

ठसक—स्त्री० नखरा, शान।

ठसाठस—खचाखच।

ठहना—घंटे का बजना।

ठहरना—रुकना, टिकना, बना रहना, होना, निश्चित होना।

ठहाका—पु० जोर की हँसी।

ठाऊँ—स्त्री० दे० "ठाँय"।

ठाँय, ठाँव—स्त्री० स्थान, समीप।

ठाँसना—जोर से घुसाना।

ठाकुर—पु० देवता, ईश्वर, पूज्य व्यक्ति, सरदार, जमींदार, मालिक, एक उपाधि।

ठाकुरद्वारा—पु० मंदिर।

ठाकुरबाड़ी—स्त्री० मंदिर।

ठाट—पु० टट्टी, ढाँचा, सजावट, तड़क भड़क, ढंग, तैयारी सामान, युक्ति, झुंड।

ठाटना—बनाना, ठानना, सजाना।

ठाटबाट--पु० सजधज, तड़क भड़क।

ठाम--स्त्री० स्थान। [सरदी, पाला।

ठार—पु० अत्यंत ठंढा। गहरी

ठाला--पु० बेकारी।

ठिंगना--नाटा।

ठिकाना--पु० स्थान, निवास स्थान, स्थिरता, प्रबंध, अंत।

ठिठकना—दे० "ठठकना"।

ठिठरना—सरदी से सिकुरना।

ठिलना—ठेला जाना, घुसना।

ठिलुआ—निठल्ला।

ठीक—यथार्थ, सच, उचित, सही, दुरुस्त अच्छा, सीधा, निश्चित, पक्का। पु० पक्की बात, निश्चय, स्थिर प्रबंध, जोड़।

ठीकठाक—पु० बंदोबस्त, निश्चय।

ठीकरा—पु० मिट्टी के बर्तन का फूटा टुकड़ा, टूटा फूटा बर्तन, भिक्षा पात्र।

ठीका—पु० कुछ धन आदि के बदले में किसीके काम को पूरा करने

का जिम्मा, इजारा, पट्टा।
ठीकेदार—पु० ठीका लेने वाला।
ठुकना—ठोंका जाना, गड़ना।
ठुकराना—ठोकर लगाना,तुच्छ समझ कर दूर हटाना।
ठुड्डी—स्त्री० होंठ के नीचे का भाग।
ठुनकना—बच्चों का बीच बीच में रुक रुक कर रोना। [पटकते चलना।
ठुमकना—बच्चों का उमंग से पैर
ठुमकी—नाटी। स्त्री० ठिठक।
ठूँठ—पु० डाल पात कटा हुआ पेड़, लूल्हा।
ठेंगना—नाटा।
ठेकना—सहारा लेना,ठहरना, छूना।
ठेठ—निपट, निरा, खालिस, निर्मल, आरंभ, सीधी सादी बोली। [गाड़ी।
ठेला—पु० धक्का, भीड़भाड़, एक
ठेस—स्त्री० चोट।
ठोंक—स्त्री० प्रहार।
ठोंकना—पीटना, प्रहार करना, गाड़ना थपथपाना, (नालिश आदि) दायर करना, बेड़ियों से जकड़ना।
ठोकर—स्त्री० ठेस, धक्का।
ठोर—पु० चोंच, ओंठ। [पु० डाह।
ठोस—जो खोखला न हो, मजबूत।
ठौर—पु० जगह, मौका।

ड

ड—एक अक्षर।
डंक—पु० बिच्छू आदि का जहरीला काँटा जिसे वे शरीर में धँसाते हैं, डंक मारा हुआ स्थान, कलम की जीभ।
डंका—पु० नगारा। मु०—डंके की चोट कहना = खुल्लमखुल्ला कहना।
डंगर—पु० चौपाया।
डंटल—पु० डाँट।
डंड—पु० सोंटा, बाँह, एक कसरत, सजा, जुरमाना, नुकसान, दंड (समय का भाग)।
डंडा—पु० सोंटा, चारदीवारी।
डंडी—स्त्री० छोटी सीधी पतली लकड़ी, मूँठ,तराजू की लकड़ी,दंडी संन्यासी।
डंबर—पु० आडंबर, विस्तार, एक प्रकार का चँदवा। [का एक पदार्थ।
डंबल—पु० कसरत करने का लोहे
डंस—पु० डाँस, डंक का स्थान।
डकार—पु० पेट की वायु का शब्द के साथ मुँह से बाहर होना। मु० डकार न लेना = किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।
डकैत—पु० लुटेरा।
डकैती—स्त्री० डाका मारने का काम।
डग—पु० कदम।
डगडगाना—हिलना।

डगना—हिलना, खसकना, चूकना, डगमगाना ।

डगर—पु० रास्ता ।

डगरना—चलना ।

डगाना—दे० "डिगाना" ।

डटना—अड़ना, लगजाना, देखना ।

डपट—स्त्री० डाँट, झिड़की ।

डपोरसंख—पु० डींग मारनेवाला, बड़े डीलडौल का पर मूर्ख ।

डफ, डफला—पु० चमड़ा मढ़ा एक बाजा, चंग ।

डफली-स्त्री० छोटा डफ, खँजरी । मु० अपनी अपनी डफली अपना अपना राग = जितने लोग उतनी राय ।

डफाली—पु० डफली आदि बजाने वाला ।

डबडबाना—आँसू से भर जाना ।

डबरा—पु० कुंड, हौज ।

डबल—दोहरा ।

डबल रोटी—स्त्री० पाव रोटी ।

डब्बा—पु० ढक्कनदार छोटा गहरा वर्तन, रेलगाड़ी का एक कमरा ।

डब्बू—पु० बड़ी कलछी ।

डमरू—पु० चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता है ।

डमरूमध्य—पु० धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि खंडों को मिलाता हो ।

डर—पु० भय, आशंका ।

डरपना—डरना ।

डरपोक—कायर ।

डरावना—भयंकर ।

डल—पु० टुकड़ा, झील ।

डला—पु० खंड, टोकरा ।

डलिया—स्त्री० छोटा डाला ।

डली—स्त्री० खंड, सुपारी, डलिया ।

डसना डंक मारना ।

डहकना—ठगना, बिलखना, दहाड़ मारना, फैलना ।

डहडहा—हराभरा, ताजा, प्रसन्न ।

डहना—जलना, द्वेष करना, जलना, दुःख पहुँचाना ।

डहर—पु० रास्ता, आकाश गंगा ।

डहरना—चलना ।

डाँगर—बहुत दुबला पतला, मूर्ख । पु० चौपाया, एक नीच जाति ।

डाँट—स्त्री० डपट, दबाव, डंठल ।

डाँड़—पु० डंडा, गदका, नाव खेने का बल्ला, सीधी लकीर, दूर तक गयी ऊँची तंग जमीन, छोटा टीला, सीमा, जुरमाना, हरजाना ।

डाँवाँडोल—अस्थिर ।

डाँस—पु० बड़ा मच्छड़ ।

डाइन—स्त्री० चुड़ैल, टोना करनेवाली स्त्री, कुरूपा और डरावनी स्त्री ।

डाइरेक्टर—पु० कार्यसंचालक ।

डाइरेक्टरी—स्त्री० विवरण पुस्तिका ।

डाक—पु० राज्य की ओर से चिट्ठियाँ

के आने जाने की व्यवस्था, चिट्ठी वगैरह जो डाक से आवे। नीलाम की बोली। स्त्री० बमन, कै।

डाकखाना, डाकघर--पु० पोस्ट आफिस।

डाकबँगला--पु० वह मकान जो दौरे में गये अफसरों और यात्रियों के ठहरने के लिये बना हो।

डाका—पु० माल असबाब जबरदस्ती छीनने के लिये दल बांध कर धावा।

डाकाजनी—स्त्री० डाका डालना।

डाकिनी—स्त्री० पिशाचिनी।

डाकू—पु० लुटेरा।

डाक्टर—पु० चिकित्सक, पाश्चात्य चिकित्सा करने वाला।

डाटना—एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कस कर दबाना, चाँड़ लगाना, टेंपी लगाना, कस कर भरना, मिलाना, पेट भर खाना, ठाट से कपड़ा गहना आदि पहनना।

डाढ़—स्त्री० चौआ। [दाह।

डाढ़ा—स्त्री० वन की आग, आग,

डाढ़ी—स्त्री० ठुड्डी, दाढ़ी।

डाबर—पु० नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे, पोखरी, मैला पानी।

डाभ—पु० कुश, आम की मंजरी, कच्चा नारियल।

डायरी—स्त्री० रोजनामचा।

डायल—पु० ऊँचा चबूतरा।

डारना—डालना। [का फल, डलिया।

डाल, डार—स्त्री० शाखा, तलवार

डालना—नीचे गिराना, रखना, घुसाना।

डालर—पु० अमेरिका का सिक्का।

डाली—स्त्री० डलिया।

डासन—पु० बिछौना।

डासना—बिछाना, डसना।

डाह—स्त्री० ईर्ष्या, जलन। [गुलाम।

डिंगर—पु० मोटा आदमी, बदमाश,

डिंगल—नीच। स्त्री० राजपूताने की एक भाषा। [फेफड़ा, पिलही।

डिंब—पु० भयध्वनि, दंगा, अंडा,

डिंभ—पु० छोटा बच्चा, मूर्ख।

डिक्टेटर—पु० प्रधान नेता, पथ-प्रदर्शक, निरंकुश शासक।

डिक्टेशन—पु० वह वाक्य जो लिखने के लिये बोला जाय।

डिक्लरेशन—पु० वह कागज जिसमें मजिस्ट्रेट के सामने कोई प्रेस या अखबार चलाने के लिये जिम्मेवारी ली या घोषित की जाती है।

डिक्री—स्त्री० आज्ञा, न्यायालयकी वह आज्ञा जिसके द्वारा किसी पक्ष को किसी संपत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिगना—टलना, विचलित होना।

डिगरी—स्त्री० उपाधि, दे० "डिक्री"।

डिगरीदार—पु० वह आदमी जिसकी डिगरी मिली हो।

डिग्गी—स्त्री० तालाब।

डिठौना—पु० काजल का टीका जो लड़कों को नजर से बचाने के लिये लगाते हैं ।
डिपटी—नायब ।
डिपाजिट—पु० धरोहर, जमा ।
डिपार्टमेंट—पु० विभाग ।
डिपो—पु० गुदाम
डिप्लोमा—पु० सनद ।
डिबेंचर—पु० ऋण स्वीकार पत्र ।
डिमरेज—पु० स्टेशन पर आये माल के अधिक दिनों तक पड़े रहने का हर्जाना ।
डिलेवरी—स्त्री० डाक की चिट्ठियों आदि की बटाई, बटाई, प्रसव होना ।
डिवीजन—पु० कमिश्नरी, विभाग ।
डिसकाउंट—पु० बट्टा, दस्तूरी ।
डिसमिस—बरखास्त ।
डींग—स्त्री० शेखी । [ज्ञान ।
डीठ—स्त्री० दृष्टि, देखने की शक्ति,
डीठमूठि—स्त्री० जादू, टोना ।
डीमडाम—स्त्री० ऐंठ, ठाट ।
डील—पु० कद, देह ।
डीलडौल—पु० शरीर का ढाँचा ।
डीह—पु० वस्ती, उजाड़ गाँव का टीला, ग्राम देवता ।
डुगडुगी—स्त्री० डुग्गी ।
डुबकी—स्त्री० गोता ।
डुबाना, डुबोना—गोता देना, चौपट करना । मु० लुटिया डुबाना = प्रतिष्ठा नष्ट करना ।
डेक—पु० जहाज पर लकड़ी से पटा हुआ फर्श या छत ।
डेपुटेशन—पु० चुने हुए प्रधान लोगों की वह मंडली जो किसी समाज या संस्था की ओर से किसी अधिकारी या शासक से मिले ।
डेलटा—पु० नदियों के मुहाने या संगम स्थान पर बनी हुई भूमि ।
डेरी—स्त्री० दुग्धशाला, वह स्थान जहाँ दूध देनेवाले पशु रखे जाते और दूध मक्खन आदि बेचे जाते हैं ।
डेलिगेट—पु० प्रतिनिधि ।
डेस्क—पु० लिखने का एक प्रकार का ढालुआ टेबुल ।
डैस—पु० विराम का एक चिह्न ।
डूबना—गोता खाना, अस्त होना, चौपट होना, नष्ट होना, लिप्त होना ।
डेढ़—एक और आधा । मु० डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना = अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना । डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना = अपनी राय सबसे अलग रखना ।
डेमरेज—पु० हानि, नुकसान ।
डेरा—पु० पड़ाव, रहने का स्थान, छावनी, मकान । [हुआ भाग ।
डेला—पु० आँख का सफेद उभड़ा
डेवढ़ा—डेढ़ गुना, सिलसिला ।
डेवढ़ी—स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी' ।

डैना—पु० पर, पंख।

डोंगर—पु० पहाड़ी, टीला।

डोंगी—स्त्री० छोटी नाव। [कौआ।

डोम कौआ—पु० बड़ा और बहुत काला

डोमड़ा—पु० डोम।

डोरा—पु० तागा, धारी, तलवार की धार, स्नेहसूत्र, सुराग, काजल की रेखा।

डोरिया—पु० धारीदार कपड़ा।

डोरी—स्त्री० रस्सी, बंधन।

डोल—चंचल। पु० लोहे का एक गोल बरतन, झूला, डोली, हलचल।

डोलडाल—पु० चलना फिरना, पैखाना जाना। [होना।

डोलना—चलना, हटना, विचलित

डोला—पु० स्त्रियों के बैठने के लिये एक बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं, झूले का झोंका। मु० डोला देना = राजा या सरदार को भेंट की तरह अपनी बेटी देना।

डोली—स्त्री० छोटा डोला।

डौंड़ी—स्त्री० ढिंढोरा, घोषणा।

डौल—पु० ढाँचा, ढब, तरह, युक्ति, रंगढंग। [पहरा, चुंगी महसूल।

ड्यूटी—स्त्री० कर्त्तव्य, धर्म, फर्ज, सेवा,

ड्योढ़ा—डेढ़ गुना।

ड्योढ़ी—पु० फाटक, दरवाजा।

ड्योढ़ीदार — ड्योढ़ीवान। पु० द्वारपाल, दरवान।

ड्राइंग—स्त्री० लकीरों से चित्र या आकृति बनाने की विद्या।

ड्राइवर—पु० गाड़ी हाँकनेवाला।

ड्राफ्ट—पु० मस्विदा।

ड्रामा—पु० अभिनय।

ड्रिल—पु० कवायद।

ढ

ढ—एक अक्षर। पु० बड़ा ढोल, कुत्ता, ध्वनि।

ढंग—पु० रीति, प्रकार, बनावट, युक्ति, चालढाल, पाखंड, लक्षण, अवस्था।

ढंगी—चालबाज।

ढँढोरना—ढूँढ़ना।

ढँढोरा—पु० डुगडुगी, घोषणा।

ढपना—ढकना।

ढकोसना—एकबारगी बहुत सा पीना।

ढकोसला—पु० आडंबर।

ढक्कन—पु० ढकना।

ढक्का—पु० बड़ा ढोल।

ढचर—पु० टंटा, ढकोसला।

ढड्ढा—बड़ा और बेढंगा। पु० ढाँचा, आडंबर।

ढनमनाना—लुढ़काना।

ढपना—पु० ढक्कन।

ढब—पु० ढग।

ढरना—ढलना।
ढरनि—स्त्री० पतन, गति, झुकाव, दयाशीलता। [चलन।
ढर्रा—पु० रास्ता, शैली, युक्ति, चाल-
ढलकना—ढलना, लुढ़कना।
ढलना—बहना, बीतना, लुढ़कना, प्रवृत्त होना, रीझना, ढाला जाना।
ढहना—गिर पड़ना, नष्ट होना।
ढाँचा—पु० डौल, ठट्टर, प्रकार, बनावट, साँचा।
ढाँसना—सूखी खाँसी खाँसना।
ढाई—दो और आधा। [ढोल।
ढाक—पु० पलाश वृक्ष, लड़ाई का
ढाड़—स्त्री० चिल्लाहट, गरज। मु० ढाड़ मारना = चिल्लाकर रोना।
ढाढ़स—पु० धैर्य, साहस।
ढाबर—गदला, मैला।
ढार—ढाल, मार्ग, ढाँचा।
ढारना—ढालना।
ढारस—पु० दे० "ढाढ़स"।
ढाल—स्त्री० उतार, ढंग, तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र।
ढालना—पानी आदि गिराना, शराब पीना, साँचे में डालकर कोई चीज बनाना।
ढालवाँ—ढालू।
ढिंढोरना—मथना, हाथ देकर ढूँढ़ना।
ढिंढोरा—पु० दे० "ढंढोरा"।
ढिग—पास। स्त्री० निकटता, किनारा।
ढिठाई—स्त्री० धृष्टता, निर्लज्जता, अनुचित साहस।
ढिलाई—स्त्री० सुस्ती।
ढींगर—पु० हट्टाकट्टा आदमी, पति, उपपति।
ढीठ—शोख, धृष्ट, निडर, साहसी।
ढील—स्त्री० सुस्ती।
ढीला—जो कसा न हो, बहुत गीला, जो अपने संकल्प पर न रहे, सुस्त।
ढुंढिराज—पु० गणेश।
ढुंढी—स्त्री० बाँह।
ढुरकना—लुढकना। [प्रसन्न होना।
ढुरना—ढुरकना, डगमगाना, झुकना,
ढुलकना—लुढ़कना।
ढुलना—दे० "ढुरना"।
ढूँढ़—स्त्री० खोज, तलाश।
ढेंकली—स्त्री० कूएँ से पानी निकालने या धान कूटने का यंत्र।
ढेंढर—पु० टेटर।
ढेर—बहुत। पु० समूह। मुहा० ढेर करना = मार डालना।
ढेलबाँस—स्त्री० रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं।
ढोंग—पु० ढकोसला।
ढोंढी—स्त्री० नाभि।
ढोटा, ढोटौना—पु० पुत्र, लड़का।
ढोर—पु० मवेशी।
ढोलक—स्त्री० छोटा ढोल। [हर्ष।
ढोली—स्त्री० दो सौ पानों की गड्डी,

ण

ण--एक अक्षर । आभूषण, निर्णय, ज्ञान, शिव, दान ।

त

त—एक अक्षर । तो । पु० नाव, पुण्य, चोर, झूठ, दूम, गोद, म्लेच्छ, गर्भ, रत्न, बुद्ध ।

तंग--कसा हुआ, सिकुड़ा हुआ, चुस्त, हैरान । पु० घोड़ों की जीन कसने का चमड़े का फीता । मु० हाथ तंग होना = हाथ में रुपया पैसा न होना ।

तंगदस्त—कंजूस, गरीब ।

तंगहाल--गरीब, विपद्ग्रस्त ।

तंगी--स्त्री० संकीर्णता, तकलीफ, गरीबी, कमी । [मलमल ।

तंजेब--पु० महीन और बढ़िया

तंडुल--पु० चावल । [आतुरता ।

तंत--पु० तंतु, तंत्र, तत्व । स्त्री०

तंतु—पु० सूत, ग्राह, संतान, विस्तार, वंशपरंपरा, ताँत ,मकड़ी का जाला ।

तंतुकीट— पु० रेशम का कीड़ा

तंतुवादक—पु० सितार आदि तार के बाजे बजाने वाला । [ताँती ।

तंतुवाय—पु० कपड़े बुननेवाला,

तंत्र—पु० ताँत, सूत, जुलाहा, कपड़ा, भरणपोषण, निश्चित सिद्धान्त, प्रमाण, औषध, कार्य, कारण, झाड़ने फूँकने का मंत्र, राज्य कर्मचारी, राज्यप्रबन्ध, सेना, धन, अधीनता, कुल, एक शास्त्र । [काम ।

तंत्रण—पु० शासन या प्रबन्ध का

तंत्री--स्त्री० वीणा आदि का तार, तार वाला बाजा, वीणा, रस्सी, शरीर की नस । पु० तंतुवादक ।

तंदुरुस्त—नीरोग, स्वस्थ ।

तंदुरुस्ती—स्त्री० नीरोगता, स्वास्थ्य ।

तंदुल—पु० दे० "तंडुल" । [ताकीद ।

तंदेही—स्त्री० प्रयत्न, परिश्रम,

तंद्रा—स्त्री० उँघाई, अधजगी अवस्था, हलकी बेहोशी ।

तंद्रालु—जिसे तंद्रा आती हो ।

तंबीह--स्त्री० नसीहत, ताकीद ।

तंबू--पु० खेमा, शिविर ।

तंबूरची-पु० तंबूरा बजाने वाला ।

तंबूरा--पु० सितार की तरह का एक बाजा ।

तअज्जुब—पु० अचंभा ।

तअम्मुल—पु० फिक्र ।

तअल्लुक—पु० संबंध ।

तईं—से, प्रति, को, लिये ।

तउ—तब, त्यों ।

तऊ—तब भी, तथापि।
तकदीर—स्त्री० भाग्य ।
तकदीरवर—भाग्यवान ।
तकना—देखना, शरण लेना ।
तकरार—स्त्री० हुज्जत, टंटा ।
तकरीर—स्त्री० बातचीत, भाषण ।
तकरीबन्—अनुमानतः ।
तकली—स्त्री० टेकुआ, टिकुरी ।
तकलीफ—स्त्री० दुःख, विपत्ति ।
तकल्लुफ—पु० शिष्टाचार ।
तकसीम—स्त्री० बटाई, भाग ।
तकाजा—पु० तगादा, प्रेरणा ।
तकावी—स्त्री० वह धन जो गरीब किसानों को बीज आदि के लिये कर्ज दिया जाय । [आश्रय ।
तकिया—पु० बालिश, विश्राम स्थान,
तकियाकलाम—पु० सखुनतकिया ।
तक्र—पु० मट्ठा, छाछ । [एक जाति ।
तक्षक—पु० साँप, विश्वकर्मा, सूत्रधार
तक्षण—पु० पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाना ।
तख़फीफ—स्त्री० कमी ।
तख़मीनन्—अंदाज से ।
तखमीना—पु० अंदाज ।
तख़ल्लुस—पु० उपनाम ।
तख्त—पु० सिंहासन, चौकी ।
तख्तनशीन—पु० सिंहासनारूढ़ ।
तख्तपोश—पु० चौकी, चादर ।
तगड़ा—बलवान, बड़ा ।

तगमा—पु० तमगा, पदक ।
तगर—पु० एक सुगंधित लकड़ी ।
तगादा—पु० तकाजा ।
तजन—पु० त्याग, कोड़ा ।
तजरबा—पु० अनुभव ।
तजरबाकार—अनुभवी । [बंदोबस्त ।
तजवीज—स्त्री० राय, फैसला,
तजवीजसानी—स्त्री० एक ही हाकिम के सामने होने वाला पुनर्विचार ।
तज्ञ—तत्त्वज्ञ, ज्ञानी ।
तट—पु० क्षेत्र, प्रदेश, किनारा ।
तटस्थ—निरपेक्ष, किनारे रहनेवाला, निकटवासी ।
तटिनी—स्त्री० नदी । [उछलना ।
तड़कना—फटना, चटकना, बिगड़ना,
तड़का—पु० सवेरा, छौंक । [करना ।
तड़तड़ाना—तड़ तड़ शब्द होना या
तड़प—स्त्री० तड़पने की क्रिया, भड़क ।
तड़पना, तड़फना— छटपटाना, गरजना । [शब्द के साथ,तुरंत ।
तड़ाक—पु० तड़ाके का शब्द, तड़
तड़ाग—पु० तालाब ।
तड़ातड़—तड़तड़ शब्द के साथ ।
तड़ित, तड़िता—स्त्री० बिजली ।
तड़ी—स्त्री० चपत, धोखा, बहाना ।
तत्— उस । पु० ब्रह्म,परमात्मा, वायु ।
तत्काल—फौरन ।
तत्कालीन—उस समय का ।
तत्त्व—पु० असलियत । जगत का मूल

कारण। पंचभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश। सार वस्तु। ब्रह्म।

तत्त्वज्ञ—पु० तत्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, दार्शनिक। [यथार्थता।

तत्त्वता—स्त्री० तत्त्व होने का भाव,

तत्त्वदर्शी—पु० तत्त्वज्ञ।

तत्त्वदृष्टि—स्त्री० ज्ञानचक्षु, दिव्य दृष्टि।

तत्त्ववाद—पु० दर्शनशास्त्र संबंधी विचार।

तत्त्ववादी—तत्त्ववाद का ज्ञाता, यथार्थ और स्पष्टवादी।

तत्त्वविद्—पु० तत्त्ववेत्ता।

तत्त्वविद्या—स्त्री० दर्शन शास्त्र।

तत्वावधान—पु० देखरेख।

तत्पर—उद्यत, निपुण, चतुर।

तत्पुरुष—पु० परमेश्वर, एक रुद्र का नाम, एक समास।

तत्र—वहाँ।

तत्रभवान्—पु० माननीय।

तत्रापि—तथापि।

तत्सम—पु० संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार भाषा में उसके शुद्ध रूप में ज्यों का त्यों हो।

तथा—और, इसी तरह।

तथागत—पु० गौतम बुद्ध।

तथापि—तो भी।

तथास्तु—ऐसा ही हो।

तथैव—वैसा ही।

तथ्य—पु० यथार्थता।

तद्—वह, तब।

तदंतर, तदनंतर—उसके बाद।

तदनुरूप—उसीके समान।

तदनुसार—उसके मुताबिक।

तदपि—तथापि।

तदबीर—उपाय।

तदा—उस समय, तब।

तदाकार—वैसा ही, तन्मय। [सजा।

तदारुक—पु० खोज या जाँच, बंदोबस्त,

तदुपरांत—उसके बाद।

तद्गत—उससे संबंध रखने वाला, उसके अन्तर्गत।

तद्धित—पु० व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं।

तद्भव—पु० संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो।

तद्यपि—तथापि।

तद्रूप—समान, सदृश।

तद्वत—उसीके ऐसा।

तन—तरफ, तनिक। पु० शरीर।

तनखाह—स्त्री० वेतन।

तनज्जुल—अवनत।

तनज्जुली—स्त्री० अवनत।

तनत्राण—पु० दे० "तनुत्राण"।

तनना—विस्तार बढ़ना, प्रवृत्त होना, अकड़कर खड़ा होना, ऐंठना।

तनय—पु० पुत्र, बेटा।

तनया—स्त्री० बेटी, पुत्री।

तनहा—अकेला।

तनहाई—स्त्री० अकेलापन।

तना—तरफ। पु० पेड़ का धड़।

तनाजा—पु० झगड़ा, वैर।

तनाव—पु० तनने का भाव, रस्सी।

तनि, तनिक—थोड़ा, छोटा।

तनिया—स्त्री० लँगोटी, चोली।

तनी—तनिक। स्त्री० बंद या बंधन, लंगोटी।

तनु—दुबला पतला, थोड़ा, कोमल, सुंदर। स्त्री० शरीर, चमड़ा, स्त्री।

तनुकूप—पु० रोमछिद्र।

तनुज—पु० पुत्र।

तनुजा—स्त्री० पुत्री।

तनुता—स्त्री० लघुता, दुर्बलता।

तनुत्राण—पु० कवच।

तनुराग—पु० केसर चंदन आदि मिला सुगंधित उबटन।

तनुरुहा—स्त्री० रोम, केश।

तनोज—पु० रोआँ बेटा।

तनोरुह—पु० रोआँ।

तन्मय—लवलीन।

तन्मात्र—पु० सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म प जो पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

तन्मात्रा—स्त्री० दे० "तन्मात्र।"

तन्वी—दुबली या कोमल अंगोंवाली।

तप—पु० तपस्या, संयम, नियम, अग्नि, गरमी, ग्रीष्म ऋतु, ज्वर।

तपती—स्त्री० सूर्य की कन्या।

तपन—पु० ताप, जलन, सूर्य, सूर्यकांत मणि, ग्रीष्म, धूप, एक प्रकार की अग्नि। स्त्री० ताप गरमी।

तपना—तप्त होना, कष्टसहना, गरमी फैलाना, आतंक फैलाना, तप करना।

तपश्चर्य्या—स्त्री० तपस्या।

तपस्—पु० चंद्र, सूर्य, शिशिर ऋतु, एक लोक।

तपसा—स्त्री० तपस्या, तापती नदी।

तपस्विनी—स्त्री० तपस्या करनेवाली, तपस्वी की स्त्री, पतिव्रता, सती।

तपस्वी—पु० तप करनेवाला, दीन, दया करने योग्य।

तपा—पु० तपस्वी।

तपाक—पु० आवेश, तेजी।

तपाना—तप्त करना, दुःख देना।

तपावंत—तपस्वी।

तपिश—स्त्री० गरमी।

तपी—पु० तपस्वी।

तपेदिक—पु० क्षयी रोग।

तपोधन—पु० बड़ा तपस्वी।

तपोभूमि—स्त्री० तप करने का स्थान।

तपोलोक—पु० पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक।

तपोवन—पु० वह वन जहाँ तपस्या की जाय।

तपोवृद्ध—तपस्या द्वारा श्रेष्ठ ।
तप्त—गरम, दुःखित ।
तफरका—पु० फर्क ।
तफरीक—स्त्री० जुदाई ।
तफरीह—स्त्री० खुशी, दिल्लगी, सैर ।
तफसील—स्त्री० ब्योरा, टीका ।
तफावत—पु० फर्क, दूरी ।
तब—उस समय, इस कारण ।
तबक—स्त्री० लोक, तल, तह, परत, चौड़ी और छिछली थाली, सोने चाँदी का अत्यन्त पतला पत्तर ।
तबदील—परिवर्तित ।
तबदीली—स्त्री० बदली ।
तबलची—पु० तबला बजानेवाला ।
तबला—पु० एक बाजा ।
तबाह—बरबाद ।
तबीअत—स्त्री० चित्त, बुद्धि । मु० (किसी पर) तबीअत आना = प्रेम होना ।
तबीअतदार—रसिक, समझदार ।
तमंचा—पु० पिस्तौल ।
तम—पु० अंधकार, राहु, सूअर, पाप, क्रोध, अज्ञान, कालिमा, नरक, मोह, सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण जिससे काम क्रोध आदि होते हैं ।
तमक—पु० जोश, तेजी, क्रोध ।
तमगा—पु० पदक ।
तमचर—पु० निशाचर, उल्लू ।
तमचुर—पु० मुरगा ।
तमतमाना—क्रोध आदि से चेहरा लाल होना ।
तमता—स्त्री० अन्धकार ।
तमन्ना—स्त्री० अभिलाषा ।
तमस—पु० अन्धकार, अज्ञानांधकार, पाप, तमसा नदी ।
तमस्विनी—स्त्री० रात, अन्धेरी रात ।
तमस्सुक—पु० दस्तावेज ।
तमा—पु० राहु । स्त्री० रात, लोभ ।
तमादी—स्त्री० मियाद का गुजरना ।
तमाम—कुल, समाप्त ।
तमाल—पु० एक वृक्ष । [ऐयाश ।
तमाशबीन—पु० तमाशा देखनेवाला,
तमाशा—पु० मनोरंजक दृश्य, अनोखी बात, अद्भुत व्यापार ।
तमिस्र—पु० अन्धकार, क्रोध ।
तमिस्रा—स्त्री० अन्धेरी रात ।
तमी—स्त्री० रात ।
तमीचर—पु० निशिचर । [अदब ।
तमीज—स्त्री० विवेक, ज्ञान, पहचान,
तमोगुण—पु० प्रकृति के तीन गुणों में एक गुण जिससे निकृष्ट कर्म होते हैं ।
तमोगुणी—अधम वृत्तिवाला ।
तमोघ्न—अन्धकारनाशक । पु० अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, बुद्ध, विष्णु, शिव, ज्ञान, दीपक ।
तमोमय-तमोगुणयुक्त, अज्ञानी, क्रोधी ।
तमोर, तमोल—पु० पान ।
तमोहर—अज्ञान या अन्धकार दूर

करनेवाला । पु० चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि, ज्ञान । [निबटाया हुआ ।

तय—समाप्त, निश्चित, मुक़र्रर,

तरंग—स्त्री० लहर, स्वरलहरी, उमंग ।

तरंगवती, तरंगिणी—स्त्री० नदी ।

तरंगित—लहराता हुआ ।

तरंगी—तरंगयुक्त, मनमौजी ।

तर—भीगा हुआ, गीला, शीतल, हरा, मालदार, तले, नीचे, एक प्रत्यय ।

तरकश—पु० तीर रखने का चोंगा ।

तरकारी—स्त्री० शाक, भाजी ।

तरकीब—स्त्री० उपाय, मिलान, रचना-प्रणाली ।

तरक्की—स्त्री० उन्नति ।

तरजनी - स्त्री० दे० "तर्जनी" ।

तरजुमा—पु० अनुवाद ।

तरण - पु० नदी आदि पार करना, उद्धार, निस्तार, बेड़ा, स्वर्ग ।

तरणि—पु० सूर्य, मदार, किरन, नाव, स्थल कमलिनी ।

तरणिजा, तरणितनूजा—स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना । [शनि, कर्ण ।

तरणिसुत—पु० सूर्य का पुत्र, यम,

तरणी—स्त्री० नाव, घीकुआर ।

तरतीब—स्त्री० सिलसिला ।

तरद्दुद—पु० सोच, चिन्ता ।

तरनतार—पु० उद्धार, मोक्ष, भव-सागर से पार करनेवाला । [तलना ।

तरना—पार करना, मुक्त होना,

तरफ़—स्त्री० ओर, किनारा, पक्ष ।

तरफ़दार—पक्षपाती ।

तरबतर—भीगा हुआ ।

तरमीम—पु० संशोधन । [चमकीला ।

तरल-चंचल, क्षणभंगुर, बहनेवाला,

तरवन—पु० तरकी, कर्णफूल ।

तरस—पु० दया, रहम । मु० तरस खाना = दया करना ।

तरसना—न पाकर बेचैन रहना ।

तरह—स्त्री० प्रकार, ढाँचा, ढंग, उपाय, दशा । मु० तरह देना = ख्याल न करना, जाने देना । [तराई ।

तरहटी - स्त्री० नीची भूमि, पहाड़ की

तराई—स्त्री० पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान, पहाड़ की घाटी ।

तराना - पु० राग, गीत ।

तराबोर—सराबोर, भीगा हुआ ।

तरावट—स्त्री० गीलापन, ठंढक, नमी, शीतलता, स्निग्ध भोजन, गरमी शांत करनेवाला आहार ।

तराश—स्त्री० काटछाँट, ढंग ।

तराशना—काटना, कतरना ।

तरी—स्त्री० नाव, गीलापन, ठंढक, कछार, तराई, तरिवन, कर्णफूल ।

तरीका—पु० ढंग, चाल, उपाय ।

तरु - पु० वृक्ष ।

तरुण—युवा, नया ।

तरुणाई—स्त्री० युवावस्था, जवानी ।

तरुणाना—जवानी पर आना ।

तरुणी—स्त्री० युवती।
तरुनापा—पु० युवावस्था।
तरे—तले, नीचे।
तरेटी—स्त्री० तराई।
तरेरना—क्रोधपूर्वक देखना।
तरौना—स्त्री० दे० "तरवन"।
तर्क—पु० दलील, चमत्कारपूर्ण उक्ति, ताना, त्याग। [बहस।
तर्कवितर्क—पु० सोच विचार,
तर्कश—पु० दे० 'तरकश"।
तर्कशास्त्र—पु० न्यायशास्त्र।
तर्काभास—पु० कुतर्क।
तर्की—पु० तर्क करने वाला।
तर्ज—पु० किस्म, शैली, बनावट।
तर्जन—पु० भयप्रदर्शन, क्रोध, फटकार।
तर्जनी—स्त्री० अँगूठे के बगल की अँगुली।
तर्जुमा—पु० अनुवाद।
तर्पण—पु० संतुष्ट करने की क्रिया। पितरों को पानी देने की क्रिया।
तर्यौना—पु० दे० "तरवन"।
तल—पु० नीचे का भाग, पेंदा, तलवा, हथेली, सतह, छत, सात पातालों में पहला।
तलक—तक।
तलख—कड़ुआ, असह्य।
तलछट—स्त्री० तलौंछ।
तलना—घी या तेल में पकाना।
तलफना—तड़पना।
तलफ्फुज—पु० उच्चारण।
तलब—स्त्री० खोज, चाह, माँग, बुलावा, वेतन।
तलबगार—चाहनेवाला।
तलबाना—पु० वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिये अदालत में दाखिल किया जाता है।
तलबी—स्त्री० बुलाहट, माँग।
तलबेली—छटपटी।
तलवा—पु० तरवा, पादतल।
तलवार—स्त्री० लोहे का एक लंबा धारदार हथियार। मु० तलवार का खेत = लड़ाई का मैदान। तलवार के घाट उतारना = तलवार से मार डालना। तलवार की छाँह में = रणक्षेत्र में।
तलहटी—स्त्री० तराई।
तलाक—पु० पति-पत्नी का विधान-पूर्वक संबंधत्याग। [एक।
तलातल—पु० सात पातालों में से
तलाश—स्त्री० खोज, चाह। [तलौंछ।
तली—स्त्री० पेंदी, हथेली, तलवा,
तले—नीचे।
तलेटी—स्त्री० पेंदी, तलहटी।
तलैया—स्त्री० छोटा ताल।
तल्ख़—कड़ुआ, बुरे स्वाद का।
तल्प—पु० पलंग, अटारी।
तल्ला—पु० अन्तर, पास।
तव—तुम्हारा।

तवज्जह—स्त्री० ध्यान, कृपादृष्टि ।
तवना—गरम होना, कुढ़ जाना, प्रताप फैलाना ।
तवा—स्त्री० रोटी पकाने का बर्तन, चिलम पर का टिकरा । मु० तवे की बूँद = क्षणस्थायी । जिससे कुछ तृप्ति नहीं हो ।
तवाज़ा—स्त्री० आदर, दावत ।
तवायफ—स्त्री० वेश्या ।
तवारीख़—स्त्री० इतिहास ।
तशख़ीस—स्त्री० निश्चय, रोग का निदान । [सख्ती करना ।
तशद्दुद—पु० अनाचार, किसी पर
तशरीफ़—स्त्री० बुजुर्गी, बड़प्पन । मु० तशरीफ रखना = विराजना । तशरीफ लाना = पधारना ।
तश्तरी—स्त्री० रिकाबी, छोटी थाली ।
तस = तैसा, वैसा ।
तसदीक—स्त्री० सचाई, सचाई की परीक्षा, समर्थन, गवाही ।
तसनीफ—स्त्री० ग्रंथ की रचना, लेख ।
तसरूफ—पु० दखल देना ।
तसवीह—स्त्री० जपमाला ।
तसमा—पु० चमड़े का चौड़ा फीता ।
तसलीम—स्त्री० सलाम, प्रणाम, हामी, स्वीकृति । [धीरज ।
तसल्ली—स्त्री० ढारस, सांत्वना,
तसवीर—सुंदर । स्त्री० चित्र ।
तस्कर—पु० चोर, कान ।
तस्करी—स्त्री० चोरी, चोर की स्त्री चोर स्त्री ।
तस्फिया—पु० निबटारा ।
तस्मात्—इसलिये ।
तस्य—उसका ।
तह—स्त्री० परत, पेंदा, तल, वरक ।
तहकीक, तहकीकात—स्त्री० जाँच ।
तहखाना—पु० वह घर जो जमीन के नीचे बना हो ।
तहजीब—स्त्री० सभ्यता । [कपड़ा ।
तहपेंच—पु० पगड़ी के नीचे का
तहमत—स्त्री० लुंगी ।
तहरीक—पु० आन्दोलन, ध्यान दिलाना ।
तहरीर—स्त्री० लिखावट, लेखशैली, लिखी बात, लिखा हुआ प्रमाण-पत्र, लिखाई ।
तहरीरी—लिखित । [बरबादी ।
तहलका—पु० खलबली, मौत,
तहवील = पु० सुपुर्दगी, अमानत, खजाना, जमा, धरोहर ।
तहवीलदार—पु० खजानची ।
तहसनहस = बरबाद ।
तहसील—स्त्री० वसूली, लगान की आमदनी, तहसीलदार की कचहरी ।
तहसीलदार—पु० कर वसूल करने वाला ।
तहियाँ—उस समय ।
तहेदस्त—पु० खाली हाथ, गरीब ।

ता--एक प्रत्यय। तक। उस।

ताँगा--पु० एक तरह की घोड़ा गाड़ी।

तांडव—पु० शिव का नृत्य, पुरुष का नृत्य, (स्त्री के नृत्य को लास्य कहते हैं) उद्धत नृत्य।

ताँत—स्त्री० चमड़े की डोरी।

ताँता—पु० कतार, पंक्ति। [जुलाहा।

ताँती—स्त्री० पंक्ति' औलाद। पु०

ताँत्रिक—तंत्र संबंधी, तंत्र जानने-वाला।

तांबूल—पु० पान, सुपारी। [तईं।

ताईं—तक, पास, समक्ष, वास्ते,

ताई—स्त्री० जेठी चाची।

ताईद—स्त्री० पक्षपात, समर्थन।

ताऊ—पु० बड़ा चाचा।

ताऊस—पु० मोर, एक बाजा।

ताक—स्त्री० अवलोकन, टकटकी, मौका की इंतजारी। पु० ताखा। मु० ताक पर रखना=पड़ा रहने देना। [बार देखने की क्रिया।

ताकझाँक—स्त्री० रह रह कर बार

ताक़त—स्त्री० बल, सामर्थ्य।

ताक़तवर—बलवान, शक्तिमान्।

ताकना—देखना, सोचना, ताड़ना, नजर रखना, तजबीज करना।

ताकि--जिसमें। [या अनुरोध।

ताकीद—स्त्री० जोर के साथ आज्ञा

ताज—पु० राजमुकुट, कलगी, मोर और मुर्गे आदि के सिर की चोटी, दीवार की कँगनी, मकान के सिरे की बुर्ज, ताजमहल।

ताजगी—स्त्री० ताजापन, प्रफुल्लता।

ताजदार—पु० बादशाह।

ताजन—पु० चाबुक। [बैठने का उत्सव

ताजपोशी—स्त्री० राजसिंहासन पर

ताजा—हराभरा, टटका, तुरत का तैयार, स्वस्थ, नया।

ताजीम—स्त्री० सम्मान प्रदर्शन।

ताजीरात—पु० दण्डविधि।

ताटंक, ताडंक--पु० कर्णफूल।

ताड़--पु० एक पेड़, प्रहार, शब्द।

ताड़न--पु० आघात, डाँटडपट, शासन।

ताड़ना—मारना, डाँटना, भाँपना, लख लेना। स्त्री० ताड़न।

तात—पु० पिता, गुरु, प्यार का एक शब्द जो भाई और मित्र आदि के लिये बोला जाता है।

ताता—गरम।

ताताथेई—स्त्री० नाचने का ताल।

तातारी—तातार देश का।

तातील—स्त्री० छुट्टी।

तात्कालिक—तुरंत का।

तात्पर्य्य--पु० अभिप्राय, मतलब, तत्परता। [युक्त, यथार्थ।

तात्विक—तत्त्व संबंधी, तत्त्वज्ञान-

तादात्म्य—पु० एक वस्तु का मिल-कर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना।

तादाद—स्त्री० संख्या ।

तादृश—उसके समान ।

तान—स्त्री० फैलाव, आलाप, ज्ञान का विषय । मु० तान उड़ाना = गीत गाना ।

तानपूरा—पु० तंबूरा ।

ताना—तपाना, जाँचना । पु० कपड़े में लँबाई के सूत । दरी या कालीन बुनने का करघा । आक्षेप वाक्य । व्यंग । [वाला शासक, मगरूर ।

तानाशाह—पु० किसी की न सुनने-

तानाबाना—पु० कपड़े में लँबाई और चौड़ाई का सूत ।

ताप—पु० गरमी, आँच, ज्वर, पीड़ा, मानसिक कष्ट । ताप तीन कहे गये हैं—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक । [रजोगुण, ज्वर ।

तापक—पु० ताप उत्पन्न करनेवाला,

तापन—पु० ताप देनेवाला, सूर्य, सूर्यकांतमणि, कामदेव का एक बाण ।

तापमानयंत्र—पु० थरमामीटर ।

तापस—पु० तपस्वी, तेजपत्ता ।

तापसी—स्त्री० तपस्विनी ।

तापस्वेद—पु० गरमी का पसीना ।

तापी—ताप देनेवाला । स्त्री० यमुना, तापती । पु० बुद्धदेव ।

तापेंद्र—पु० सूर्य । [कपड़ा ।

ताफ्ता—पु० एक चमकदार रेशमी

ताब—स्त्री० ताप, चमक, शक्ति, सहन करने की शक्ति, धैर्य ।

ताबा—पु० दे० "तवा" ।

ताबड़तोड़—लगातार ।

ताबूत—पु० मुर्दा रखने का संदूक ।

ताबे—अधीन, आज्ञानुवर्ती ।

ताबेदार—पु० आज्ञाकारी । [धतूरा,

तामरस—पु० कमल, सोना, ताँबा,

तामस—तमोगुण से युक्त । पु० साँप, खल, उल्लू, क्रोध, अंधकार अज्ञान, चौथे मनु का नाम ।

तामसी—तमोगुणवाली । स्त्री० आधी रात, महाकाली, माया विद्या ।

तामिल—स्त्री० दक्षिण की एक जाति, उनकी भाषा । [अविद्या, एक नरक ।

तामिस्र—पु० क्रोध, द्वेष, एक

तामील—स्त्री० आज्ञा का पालन ।

ताम्मुल—व्यवहार में लाना, काम करना ।

ताम्र—पु० ताँबा ।

ताम्रचूड़—पु० मुरगा ।

ताम्रपत्र—पु० ताँबे की वह छोटी चद्दर जिसपर अक्षर खुदवा कर दानपत्र आदि लिखते थे ।

ताम्रपर्णी—स्त्री० तालाब ।

ताय—पु० ताप, जलन, धूप ।

तायदाद—स्त्री० दे० "तादाद" ।

तायफा—स्त्री० वेश्या, वेश्याओं और समाजियों की मंडली ।

ताया—पु० बड़ा चाचा ।

तार—पु० चाँदी, डोरी, धातु की डोरी, तार से भेजी जानेवाली खबर, सिलसिला, व्यवस्था, ठीक माप, युक्ति, ओंकार, एक बाजा, तरौना।

तारक—पु० तारा, आँख, आँख की पुतली, 'ॐ रामाय नमः' यह मंत्र, पार उतारनेवाला, भवसागर से पार उतारनेवाला। [पुतली।

तारका—स्त्री० तारा, आँख की

तारकेश्वर—पु० शिव।

तारण—पु० पार उतारने का काम, उद्धार, तारनेवाला, विष्णु।

तारतम्य—पु० न्यूनाधिक, कमी बेशी के हिसाब से तरतीब, गुण परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारना—पार करना, सद्गति देना।

तारबर्की—पु० बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।

तारा—पु० नक्षत्र, आँख की पुतली, भाग्य। स्त्री० दस महाविद्याओं में एक। मु० तारे गिनना = चिंता या आसरे में बेचैनी से दिन काटना। तारा टूटना = उल्कापात होना। तारे तोड़ लाना = कोई बहुत कठिन काम करना। तारों की छाँह = बड़े सवेरे।

ताराधिप, ताराधीश—पु० चंद्रमा, शिव, बृहस्पति, बालि, सुग्रीव।

तारापथ—पु० आकाश।

तारामंडल—पु० ताराओं का समूह।

तारिका—स्त्री० ताड़ी नामक मद्य। दे० "तारका"। [देवी।

तारिणी—स्त्री० तारनेवाली, तारा

तारी—स्त्री० ताली, ताड़ी।

तारीख—स्त्री० तिथि। [सिफत।

तारीफ—स्त्री० लक्षण, वर्णन, प्रशंसा,

तारुण्य—पु० जवानी। [वेत्ता।

तार्किक—पु० तर्कशास्त्र ज्ञाता, तत्त्व-

ताल—पु० हथेली, करतल ध्वनि, नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया का परिमाण, जंघे पर हथेली मारने का शब्द, मंजीरा, ताड़ का फल या वृक्ष, ताला, तलवार की मूँठ, तालाब।

तालबैताल—पु० दो यक्ष।

तालरस—पु० ताड़ी। [रित शब्द।

तालव्य—तालूसंबंधी, तालू से उच्चा-

तालाब—पु० पोखरा।

तालिका—स्त्री० कुंजी, फेहरिस्त।

तालिब—पु० ढूँढ़नेवाला, चाहक।

तालिबइल्म—पु० विद्यार्थी।

ताली—स्त्री० कुंजी, ताड़ी, छोटा, तालाब, करतलध्वनि।

तालीम—स्त्री० शिक्षा।

तालु—पु० दे० "तालू"।

तालुका—पु० बड़ा इलाका।

तालुकेदार—पु० तालुके का मालिक।

तालू—पु० मुँह के भीतर की ऊपरी छत, दिमाग। मु० तालू में दाँत

जमना = बुरे दिन आना ।
ताल्लुक—पु० संबंध ।
ताल्लुका—पु० इलाका ।
ताव—पु० गरमी, अधिकार भरे क्रोध का आवेश, शेखी, उतावली इच्छा । मु० मूँछों पर ताव देना = घमंड से मूँछों पर हाथ फेरना ।
तावत—तबतक, वहाँ तक ।
तावभाव—पु० मौका ।
तावान—पु० जुर्माना, दंड ।
ताबीज—पु० जंतर ।
तासीर—स्त्री० प्रभाव ।
तासु—उसका ।
तासों—उससे ।
ताहम—तो भी ।
ताहि—उसको ।
तिक्ख—तेज, तीव्रबुद्धि ।
तिक्त—तीता ।
तिच्छ—तीक्ष्ण, चोखा ।
तिखाई—स्त्री० तीखापन ।
तिखारना—कोई बात निश्चित करने के लिये कई बार पूछना या कहलाना ।
तिच्छन—तीक्ष्ण ।
तिजारत—स्त्री० व्यापार ।
तिड़ीबिड़ी—तितर बितर ।
तित—वहाँ, उधर । [व्यस्त ।
तितरबितर—बिखरा हुआ, अस्त-
तितिंबा—पु० ढकोसला, शेष, उप-संहार, परिशिष्ट ।

तितिक्षा—स्त्री० सहिष्णुता, क्षमा ।
तितिम्मा—पु० दे० 'तितिंबा ।'
तितीर्षा—स्त्री० तरने की इच्छा ।
तिते, तितेक—उतना ।
तितै—वहीं, उधर ।
तितो—उतना । [संख्या ।
तिथि—स्त्री० तारीख, पन्द्रह की
तिथिपत्र—पु० पंचांग ।
तिधर—उधर ।
तिन—उन । पु० तिनका ।
तिनकना—चिढ़ना ।
तिनका—पु० तृण । मु० तिनका दाँतों में पकड़ना = क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना । तिनका तोरना = संबंध तोड़ना । तिनके का सहारा = थोड़ासा सहारा ।
तिनगना—दे० 'तिनकना' ।
तिपाई—स्त्री० तिकठी ।
तिफ्ल—पु० बच्चा, शिशु ।
तिबासी—तीन दिन का बासी ।
तिमंजिला—तीन खंडों का ।
तिमि—वैसे । पु० समुद्र, रतौंधी ।
तिमिर—पु० अँधेरा, रतौंधी ।
तिय, तिया—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
तिरछा—जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर उधर हट गया हो । मु० तिरछी चितवन या नजर = बिना सिर फेरे बगल की ओर देखना ।
तिरछौहाँ—तिरछापन लिये ।

तिरना—तैरना, पार होना, मुक्त होना।

तिरपित—दे० "तृप्त"।

तिरपौलिया—पु० वह स्थान जहाँ बराबर से ऐसे तीन बड़े फाटक हों जिनसे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें।

तिरमिराना—चौंधियाना।

तिरस्कार—पु० अपमान, फटकार, अनादरपूर्वक त्याग।

तिरिया—स्त्री० स्त्री। [चालाकी।

तिरिया चरित्तर—पु० स्त्रियों की

तिरोधान, तिरोभाव—पु० अंतर्द्धान, अदर्शन, गोपन।

तिरोहित, तिरोभूत—छिपा हुआ, अंतर्हित, गायब। [आदि जीव।

तिर्यक्—तिरछा। पु० पशु पक्षी

तिर्यग्योनि—स्त्री० पशु पक्षी आदि जीव। [सिपाही।

तिलंगा—पु० अंगरेजी फौज का देशी

तिलंगी—तिलंगाने का निवासी, तैलंग। स्त्री० गुड्डी।

तिल—पु० एक तेलहन अन्न, शरीर पर का छोटा काला दाग, आँख की पुतली के बीचो बीच की गोल बिंदी। मु० तिल का ताड़ करना = किसी छोटी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल-तिल = थोड़ा थोड़ा। तिल भर = जरा सा।

तिलक—पु० टीका, राज्याभिषेक, एक गहना, श्रेष्ठ व्यक्ति, व्याख्या, विवाह की एक रीति, एक जनाना कुर्ता, खिलअत। [छाप।

तिलकमुद्रा—स्त्री० तिलक और

तिलमिल—स्त्री० चकाचौंध।

तिलस्म—पु० जादू, करामात।

तिलस्मी—तिलस्म संबंधी।

तिलांजली—स्त्री० मृतक संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में तिल और जल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं। मु० तिलाँजली देना = बिलकुल त्याग देना।

तिलोदक—पु० दे० "तिलाँजली"।

तिल्ला—पु० कलाबत्तू का काम, साड़ी आदि का वह अंचल जिसमें कलाबत्तू आदि का काम किया हो।

तिल्ली—स्त्री० पिलही, तिल।

तिहवार—पु० त्योहार।

तिहूँ—तीनों।

ती—स्त्री० स्त्री, पत्नी। [चरपरा।

तीक्ष्ण—तेज, प्रचंड, कर्णकटु, असह्य,

तीक्ष्णधार—जिसकी धार तेज हो। पु० तलवार।

तीखन, तीखा—तीक्ष्ण।

तीज—स्त्री० पक्ष की तीसरी तिथि, भादो सुदी तीज।

तीजा—तीसरा।

तीन—पु० एक संख्या। मु० तीन

तेरह होना = तितर बितर होना । न तीन में न तेरह में = किसी गिनती में नहीं ।

तीय—स्त्री० स्त्री, औरत ।

तीरंदाज—पु० तीर चलानेवाला ।

तीरंदाजी—स्त्री० तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।

तीर—पु० किनारा, पास, वाण ।

तीरभुक्ति—स्त्री० तिरहुत देश ।

तीरवर्ती—पु० किनारे पर रहनेवाला, पड़ोसी । [पुरुष जो २४ हुए ।

तीर्थंकर—पु० जैनियों के सिद्ध

तीर्थ—पु० वह पवित्र स्थान जहाँ लोग धर्म भाव से जाते हैं, शास्त्र, यज्ञ, स्थान, उपाय, अवसर, अवतार, गुरु, दर्शन, ब्राह्मण, अग्नि, तारने वाला, ईश्वर, माता पिता, एक उपाधि ।

तीर्थराज—पु० प्रयाग ।

तीर्थराजी—स्त्री० काशी ।

तीर्थाटन—पु० तीर्थयात्रा ।

तीवर—पु० समुद्र, व्याधा, मछुआ ।

तीव्र—अत्यंत, तीक्ष्ण, बहुत गर्म, कटु, असह्य, प्रचंड, तेज, ऊंचा ।

तुंग—ऊंचा, प्रचंड, प्रधान । पु० पहाड़, नारियल, कमल का केसर, शिव । [अगला हिस्सा, शिव ।

तुंड—पु० मुँह, चोंच, तलवार का

तुंडी—तुंडवाला । पु० गणेश। स्त्री० नाभि।

तुंद—प्रचंड । पु० पेट ।

तुंदिल—तोंदवाला । [बनाया बर्तन ।

तुंबा—पु० कदुआ को खोखला करके

तुभ—तुम्हारा ।

तुक—स्त्री० किसी पद्य का कोई खंड, पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल, काफिया ।

तुकबंदी—स्त्री० तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया, भद्दी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों ।

तुकांत—पु० पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल, काफिया ।

तुक्कड़—पु० भद्दी कविता करनेवाला ।

तुच्छ—हीन, नीच, थोड़ा ।

तुतरौहाँ—तोतला ।

तुतलाना—शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना ।

तुनुक—नाजुक, कमजोर ।

तुमड़ी—स्त्री० तुंबी ।

तुमुल—पु० सेना का कोलाहल, सेना की गहरी मुठभेड़ ।

तुरंग, तुरंगम—पु० घोड़ा, चित्त, सात की संख्या ।

तुरकटा—मुसलमान (उपेक्षा सूचक शब्द) ।

तुरकाना—तुरकों का सा ।

तुरकिन—स्त्री० तुर्क जाति की स्त्री, मुसलमान स्त्री ।

तुरकी—पु० तुर्क देश का ।

तुरग—पु० घोड़ा, चित्त ।

तुरही—स्त्री० एक बाजा ।

तुरीय—चौथा । स्त्री० वह अवस्था जब वाणी मुख में आकर उच्चरित होती है । [तुर्किस्तान वासी ।

तुरुष्क—पु० तुर्क जाति, तुर्किस्तान,

तुर्क—पु० तुर्किस्तानवासी ।

तुर्रा—अनोखा । पु० घुँघराले बालों की लट, पगड़ी या टोपी का फूँदना । चोटी, कलगी, चाबुक । मु० तुर्रा यह कि = उस पर भी इतना और ।

तुर्श—खट्टा ।

तुलना—तौला जाना, तुल्य होना, उद्यत होना । स्त्री० मिलान, समता, उपमा ।

तुलसिका—स्त्री० तुलसी ।

तुला—स्त्री० सादृश्य, तराजू, तौल, एक राशि ।

तुलादान—पु० वह दान जिसमें अपनी तौल के बराबर द्रव्य दिया जाय ।

तुलाधार—पु० तुलाराशि, बनियाँ ।

तुलाना—आ पहुँचना, बराबर होना, पहिये में तेल देना ।

तुलायंत्र—पु० तराजू ।

तुल्य—बराबर, सदृश ।

तुव—तव, तुम्हारा ।

तुष—पु० भूसी, छिलका ।

तुषानल—पु० घासफूस की आग ।

तुषार—पु० पाला, बरफ ।

तुष्ट—तृप्त, खुश ।

तुष्टि—स्त्री० तृप्ति, प्रसन्नता ।

तुहमत—स्त्री० झूठा कलंक । [ठंढक ।

तुहिन—पु० पाला, बरफ, चाँदनी,

तूठना—संतुष्ट या प्रसन्न होना ।

तूण, तूणीर—पु० तरकश ।

तूती—स्त्री० एक चिड़िया । मु० किसी की तूती बोलना = खूब चलती होना या प्रभाव जमना । नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है = बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता ।

तूफान—पु० डुबानेवाली बाढ़, भयंकर आँधी, आफत, हल्लागुल्ला, दंगा, तोहमत ।

तूर—पु० नगाड़ा, तुरही ।

तूर्य—सचाई । [रंग का कपड़ा ।

तूल—पु० आकाश, शहतूत, रूई, लाल

तूला—स्त्री० कपास । [कूँची ।

तूलिका—स्त्री० तसवीर बनाने की

तूष्णी—मौन । स्त्री० चुप्पी ।

तूस—पु० भूसी । एक प्रकार का बढ़िया ऊन, उस ऊनसे बना दुशाला ।

तूसना—तृप्त होना या करना, सन्न करना ।

तृण—पु० दूब, घास । मु० तृण गहना = हीनता प्रकट करना । तृणवत् = अत्यन्त तुच्छ । तृण तोड़ना

=संबंध तोड़ना ।

तृणावर्त—पु० बवंडर ।

तृतीय—तीसरा । [करण कारक ।

तृतीया—स्त्री० पक्ष का तीसरा दिन,

तृप्त—अघाया हुआ, खुश ।

तृप्ति—स्त्री० संतोष, खुशी ।

तृषा—स्त्री० प्यास, इच्छा, लोभ ।

तृषावंत—प्यासा ।

तृषित—प्यासा, इच्छुक ।

तृष्णा—स्त्री० इच्छा, लोभ ।

तैं—से, द्वारा ।

ते—दे० 'तैं' वे ।

तेग—स्त्री० तलवार ।

तेज—तीक्ष्ण, तीखा, महँगा, प्रचंड, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो । पु० कांति, चमक, पराक्रम, वीर्य, तत्त्व, ताप, पित्त, सोना प्रताप, अग्नि, सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग शरीर ।

तेजपत्र—पु० तेजपत्ता । [चमकीला ।

तेजवंत, तेजवान—तेजस्वी, वीर्यवान,

तेजस्—पु० दे० "तेज"

तेजसी—तेजयुक्त । [भाव ।

तेजस्विता—स्त्री० तेजस्वी होने का

तेजस्वी—कांतिमान् । प्रतापी ।

तेजी—स्त्री० तीव्रता, उग्रता, शीघ्रता, महँगी ।

तेरस—स्त्री० त्रयोदशी ।

तेलगू—पु० तैलंग देश की भाषा ।

तेलहन—पु० वे बीज जिनसे तेल निकलता है ।

तेली—स्त्री० एक जाति । मु० तेली का बैल = हर समय काम में लगा रहने वाला व्यक्ति ।

तेवर—पु० कुपित दृष्टि, भौंह । मु० तेवर बदलना = खफा हो जाना ।

तैं—से, तू ।

तै—जिसका फैसला हो गया हो, जो पूरा हो चुका हो, उतना । पु० फैसला, पूर्ति ।

तैत्तिरीय—स्त्री० कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक जो तित्तिरि ऋषि प्रोक्त है ।

तैनात—नियुक्त ।

तैयार—दुरुस्त, तत्पर, मौजूद, हृष्टपुष्ट ।

तैराक—पु० अच्छा तैरनेवाला ।

तैलंग—पु० दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश ।

तैल—तेल ।

तैलाक्त—जिसमें तेल लगा हो ।

तैश—पु० आवेश, क्रोध ।

तोंद—स्त्री० पेट का फुलाव ।

तोंदल—तोंदवाला ।

तोख—पु० दे० "तोष" ।

तोड़—पु० तोड़ने की क्रिया या भाव, कुश्ती में दाँव पेंच, प्रतिकार, बार ।

तोड़ा—पु० सोने चाँदी की पहनने की लच्छेदार जंजीर, रुपया रखने का थैला, नदी का किनारा, बाधा ।

तोतला—तुतलाकर बोलनेवाला ।
तोता—पु० सुग्गा, शुक, सूआ ।
तोप—पु० एक बहुत बड़ा अस्त्र ।
तोपखाना—पु० जहाँ तोपें रखी जाती हों ।
तोपची—पु० तोप चलानेवाला ।
तोबा—स्त्री० अनुचित कार्य को न करने की शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा ।
तोम -पु० समूह ।
तोमर—पु० एक पुराना अस्त्र, भाला, बरछी, राजपूतों का एक वंश ।
तोय—पु० जल, पानी ।
तोयधर—पु० मेघ, मोथा ।
तोयधि, तोयनिधि—पु० समुद्र ।
तोरण—पु० बाहरी फाटक, बंदनवार ।
तोलन—पु० तौलने या उठाने की क्रिया ।
तोला—पु० बारह माशे की तौल ।
तोष—थोड़ा । पु० तृप्ति, प्रसन्नता ।
तोषण—पु० तृप्ति, संतुष्टकरण ।
तोहफा—बढ़िया । पु० उपहार; सौगात ।
तोहमत—झूठा कलंक ।
तौंसना—गरमी से झुलसना ।
तौंसा—पु० कड़ी गरमी ।
तौ—तो, था ।
तौक—पु० गले में पहनने का एक गोलाकार गहना, एक वृत्ताकार पटरी जिसे अपराधी या पागल के गले में पहनाते हैं । पट्टी, चपरास ।
तौकीर—पु० दूसरे की प्रतिष्ठा का ध्यान । [दशा ।
तौर—पु० तरह, तरीका, चालढाल,
तौल—पु० वजन, तराजू, तुलाराशि ।
तौहीन—स्त्री० बेइज्जती ।
त्यक्त—त्यागा हुआ ।
त्यजन—पु० त्याग । [की क्रिया ।
त्याग—पु० उत्सर्ग, त्यागने या छोड़ने
त्यागपत्र—पु० इस्तीफा, वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो । [का त्यागनेवाला ।
त्यागी—स्वार्थ या सांसारिक सुखों
त्याज्य—त्यागने योग्य ।
त्यों—उस तरह, तत्काल ।
त्योरुस—पु० तीसरा वर्ष ।
त्योरी—स्त्री० नजर । मु० त्योरी बदलना = क्रोध से आँखें चढ़ाना ।
त्योहार—पु० पर्व ।
त्रय—तीन, तीसरा ।
त्रयी—स्त्री० तीन का समूह ।
त्रयोदशी—स्त्री० तेरहवीं तिथि ।
त्रसन—पु० भय, उद्वेग ।
त्रसित, त्रस्त—भयभीत, पीड़ित ।
त्राण—पु० रक्षा, रक्षा का साधन, कवच ।
त्राता, त्रातार—पु० रक्षक ।
त्रायमाण—रक्षक ।
त्रास—पु० भय, कष्ट ।
त्रासक—पु० डरानेवाला, निवारक ।

त्राहि—रक्षा करो ।
त्रि—तीन । [त्रिफला ।
त्रिक—पु० तीन का समूह, कमर,
त्रिककुद्—पु० जिसके तीन शृंग हों ।
त्रिकल—पु० तीन मात्राओं का शब्द, प्लुत ।
त्रिकाल—पु० तीन समय—भूत, वर्तमान और भविष्य, दिन के तीन समय—प्रातः, मध्याह्न और सायं ।
त्रिकालज्ञ, त्रिकालदर्शक—तीनों काल की बातें जाननेवाला ।
त्रिकुटी—स्त्री० दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान ।
त्रिकोण—पु० तीन कोने का क्षेत्र, तीन कोने वाली कोई वस्तु ।
त्रिकोणमिति—स्त्री० त्रिकोण के कोण आदि का मान निकालने की रीति ।
त्रिखा—स्त्री० तृषा । [रज और तम ।
त्रिगुण—तिगुना । तीन गुण—सत्त्व,
त्रिगुणात्मक—तीनों गुणों से युक्त ।
त्रिजग—पु० दे० "तिर्यक्" । तीन लोक—स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल ।
त्रिजट—पु० महादेव ।
त्रिजामा-स्त्री० रात्रि ।[तक की रेखा ।
त्रिज्या—स्त्री० वृत्त के केंद्र से परिधि
त्रिदंड—पु० संन्यास आश्रम का चिह्न, बाँस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बाँधी जाती हैं ।
त्रिदंडी—पु० संन्यासी ।
त्रिदश—पु० देवता ।
त्रिदशालय-पु० स्वर्ग, सुमेरु पर्वत ।
त्रिदेव—पु० तीन देवता—ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
त्रिदोष—पु० सन्निपात । तीन दोष—कफ, पित्त, वायु ।
त्रिधा—तीन तरह का, तीन तरह से ।
त्रिधारा—स्त्री० गंगा ।
त्रिनयन, त्रिनेत्र—पु० शिव ।
त्रिपथ—पु० तीन मार्ग—ज्ञान, कर्म और उपासना । [गंगा ।
त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी—स्त्री०
त्रिपद—पु० तिपाई, त्रिभुज ।
त्रिपाद—पु० तिपाई, त्रिभुज ।
त्रिपाठी—पु० त्रिवेदी, ब्राह्मणों की एक उपाधि, तिवारी ।
त्रिपिटक—पु० बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जिसका तीन भाग है-सूत्र पिटक, विनय पिटक और अभिधर्म पिटक ।
त्रिपुंड—पु० भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग लगाते हैं । [लोक ।
त्रिपुर—पु० वाणासुर राक्षस, तीनों
त्रिपुरदहन, त्रिपुरारि—पु० शिव ।
त्रिफला—स्त्री० आँवला, हर्रे और बहेड़े का मिश्रण ।
त्रिबली-स्त्री० वे तीन बल या सिकुड़न जो पेट पर पड़ते हैं और जिनकी रचना स्त्रियों के सौंदर्य में होती है ।

त्रिभंग, त्रिभंगी—जिसमें तीन जगह टेढ़ापन हो। पु० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें पेट, कमर और गर्दन में कुछ टेढ़ापन रहता है।

त्रिभुज—पु० वह धरातल जो तीन भुजाओं से घिरा हो।

त्रिभुवन—पु० त्रिलोक।

त्रिमात्रिक—प्लुत। [विष्णु, महेश।

त्रिमूर्ति--स्त्री० तीन मूर्ति--ब्रह्मा,

त्रिया—स्त्री० औरत। [कपट।

त्रियाचरित्र—स्त्री० स्त्रियों का छल-

त्रियामा—स्त्री० रात्रि।

त्रियुग--पु० विष्णु, तीनयुग—सतयुग, त्रेता, द्वापर।

त्रिलोक—पु० तीन लोक— स्वर्ग, मर्त्य और पाताल। [कृष्ण।

त्रिलोकनाथ--पु० ईश्वर, राम,

त्रिलोकी—स्त्री० दे० "त्रिलोक"।

त्रिलोचन—पु० शिव।

त्रिवर्ग--पु० त्रिफला। अर्थ, धर्म और काम। वृद्धि। स्थिति और क्षय। सत्व, रज और तम, ये तीन गुण। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन जातियाँ।

त्रिविधि—दे० "त्रिधा"।

त्रिवेणी—स्त्री० गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम स्थान जो प्रयाग में है। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों का संगमस्थान।

त्रिवेद—पु० तीन वेद--ऋक्, यजुः और साम। इन तीनों का ज्ञाता।

त्रिवेदी—पु० तीनों वेदों का जानने-वाला, ब्राह्मणों की उपाधि, त्रिपाठी, तिवारी।

त्रिशंकु—पु० बिल्ली, जुगनूँ, पपीहा, पुराणानुसार एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो तपोबल से सशरीर स्वर्ग जा रहे थे पर देवताओं के विरोध से बीच में ही लटकते रह गये, एक तारा जिसके विषय में कहा जाता है कि वह उपर्युक्त त्रिशंकु ही है।

त्रिशक्ति—स्त्री० तीन शक्तियाँ इच्छा ज्ञान और क्रिया। बुद्धितत्व। गायत्री।

त्रिशूल—पु० एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन नोक होते हैं। तीन दुःख—दैहिक, दैविक और भौतिक।

त्रिसंध्य--पु० तीन काल—प्रातः मध्याह्न और सायं।

त्रिसंध्या—स्त्री० दे० "त्रिसंध्य"।

त्रिस्थली—स्त्री० तीन पुण्य स्थान—काशी, प्रयाग और गया।

त्रिस्रोता स्त्री० गंगा।

त्रुटि—स्त्री० कमी, अभाव, भूल, वचन भंग। [युग।

त्रेता युग—पु० चार युगों में दूसरा

त्रै— तीन।

त्रैकालिक—तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैगुण्य—पु० तीनों गुणों का भाव।

त्रैमातुर—पु० लक्ष्मण।
त्रैमासिक—जो हर तीसरे महीने हो।
त्रैराशिक—गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
त्रैलोक्य—पु० त्रिलोक।
त्र्यंबक—पु० शिव।
त्रयंबका—स्त्री० दुर्गा।
त्वक्—पु० छिलका, चमड़ा।
त्वचा—स्त्री० चमड़ा, छाल, केंचुली।
त्वदीय—तुम्हारा।
त्वरा—स्त्री० जल्दी।
त्वरित—शीघ्रता से। तेज।
त्वष्टा—पु० विश्वकर्मा, शिव, बढ़ई, एक प्रजापति का नाम, बारह आदित्यों में एक, एक वैदिक देवता।

थ

थ—एक अक्षर। पु० रक्षण, मंगल, भय, पर्वत, आहार।
थंब, थंभ—स्तंभ, खंभा, सहारा।
थंभन—स्तंभन।
थकान—स्त्री० थकावट।
थकित—थका हुआ, मोहित।
थन—पु० चौपायों का स्तन।
थनी—स्त्री० गलस्तन।
थपकी, थपथपी—स्त्री० प्यार से किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारने की क्रिया।
थपन—पु० स्थापन।
थपना—स्थापित होना या करना।
थपेड़ा—पु० थप्पड़, आघात। [धरना।
थमना—रुकना, बंद हो जाना, धीरज
थर—स्त्री० परत, थल।
थरकना—डर से काँपना।
थरथर—स्त्री० काँपने की मुद्रा।
थरथराना—डर से काँपना, काँपना।
थरथरी—स्त्री० कँपकँपी।
थरमामीटर—पु० सरदी गरमी नापने का यंत्र।
थर्राना—दहलना।
थल—पु० स्थान, जल का उलटा, थल मार्ग, रेगिस्तान, बाघ की माँद।
थलकना—हिलना। [जीव।
थलचर—पु० पृथ्वी पर रहने वाले
थलरुह—पु० धरती पर उत्पन्न होने वाले जंतु, वृक्ष आदि।
थली—स्त्री० स्थान, जल के नीचे का थल, बैठने की जगह, बालू का मैदान, रेतीली जमीन।
थहाना—थाह लेना।
थाक—पु० ढेर।

थाती—स्त्री० जमा, धरोहर।

थान—पु० जगह, डेरा, देवस्थान, बथान, कपड़े का पूरा टुकड़ा, संख्या।

थाना—पु० अड्डा, टिकने या बैठने का स्थान पुलिस की बड़ी चौकी।

थानेदार-पु० थाने का बड़ा अफसर।

थाप—स्त्री० थपकी, थप्पड़ छाप, जमाव, धाक, प्रतिष्ठा, मर्यादा, प्रमाण, पंचायत, कसम।

थापन—स्थापन। [कार्यभार लेना।

थामना—रोकना, पकड़ना, सँभालना,

थाल—पु० बड़ी थाली।

थाह—स्त्री० गहराई का अंत, कम गहरा पानी जिसकी थाह मिल सके, गहराई का पता, अन्त।

थित—स्थित, स्थापित।

थिति—स्त्री० ठहराव, ठहरने का स्थान, रहन, दशा। [तमाशा।

थियेटर—पु० रंगभूमि, नाटक का

थियोसोफिस्ट—पु० थियोसोफी के सिद्धान्तों को मानने वाला।

थियोसोफी —स्त्री० ब्रह्मविद्या।

थिर—स्थिर, शांत, दृढ़। [गति।

थिरक—पु० नाच में पैरों की चंचल

थिरता—स्त्री० स्थिरता, ठहराव।

थिरना—किसी द्रव पदार्थ का हिलना बंद होना, जल के स्थिर होने से उसमें घुली हुई वस्तु का बैठना, निथरना।

थुक्का फजीहत—स्त्री० लड़ाई झगड़ा, निंदा और तिरस्कार।

थुड़ी—स्त्री० धिक्कार, लानत।

थू—थूकने का शब्द, धिक्, छिः। मु० थू थू करना = धिक्कारना।

थूक—पु० खखार। मु० थूकों सत्तू सानना = बहुत थोड़ी सामग्री लगाकर बड़ा कार्य करने चलना।

थूकना—थूक फेंकना। मु० थूक कर चाटना = कहकर मुकर जाना, दी हुई वस्तु लौटाना। थूक देना = तिरस्कार कर देना, बुरा कहना।

थूथन—पु० लंबा निकला हुआ मुँह।

थैली—स्त्री० बटुआ, तोड़ा।

थोक—पु० ढेर, खुदरा का उलटा, इकट्ठी वस्तु। [करना, मत्थे मढ़ना।

थोपना—गीली वस्तु का लोंदा जमा

थोरिक—थोड़ा सा।

द

द—एक अक्षर। पु० पर्वत, दाँत, दाता (यौगिक में) । स्त्री० पत्नी, रक्षा, खंडन ।
दंग—चकित । पु० भय, दंगा ।
दंगल—पु० पहलवानों का युद्ध, कुश्ती, अखाड़ा, जमात, तोशक ।
दंगा—पु० झगड़ा, शोरगुल ।
दंड—पु० सोंटा, डंडे के आकार की कोई वस्तु जैसे भुजदंड, एक कसरत, दंडवत्, सजा, जुरमाना, शासन, ध्वजा का बाँस, तराजू की डंडी, चार हाथ का एक प्राचीन माप, यम, २४ मिनट वा ६० पल का समय ।
दंडक—पु० शासक, एक वन ।
दंडधर, दंडधार—पु० यमराज, शासक, संन्यासी ।
दंडन—पु० शासन । [हाकिम ।
दंडनायक—पु० सेनापति, राजा
दंडनीति—स्त्री० राजनीति, दंड देकर वश में रखने की नीति ।
दंडपाणि—पु० यमराज ।
दंडप्रणाम—पु० दंडवत ।
दंडायमान—खड़ा । [का स्थान ।
दंडालय—पु० न्यायालय, दंड देने
दंडी—पु० दंडधारी, यमराज, राजा । द्वारपाल, वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे, जिन देव, शिव ।

दंड्य—दंड पाने योग्य ।
दंत—पु० दाँत, ३२ की संख्या ।
दंतकथा—स्त्री० सुनीसुनायी बात ।
दंतच्छद—पु० ओंठ ।
दंतधावन—पु० दाँत धोना, दतौन ।
दंतमूलीय—दंतमूल से उच्चारण होनेवाला ।
दँतिया—स्त्री० छोटे छोटे दाँत ।
दंतोष्ठ्य—जिसका उच्चारण दाँत और ओष्ठ से हो । [दाँत से हो ।
दंत्य—दंत संबंधी, जिसका उच्चारण
दंद—पु० शोरगुल, उपद्रव ।
दंदी—उपद्रवी । [जोड़ा ।
दंपति, दंपती—पु० स्त्री-पुरुष का
दंभ—पु० पाखंड, घमंड ।
दंश—पु० दंतक्षत, दंशन, दाँत, डंक ।
दंशक—पु० दंश करनेवाला ।
दंष्ट्र—पु० दाँत ।
दई—पु० विधाता, प्रारब्ध ।
दइमारा—अभागा । [विश्वासी ।
दक़ियानूस—पुरातनपंथी, अन्ध-
दक्ष—निपुण, चतुर, दाहिना । पु० एक प्रजापति, महेश्वर ।
दक्षकन्या—स्त्री० सती ।
दक्षिण—दाहिना, अनुकूल, रक्षा । पु० एक दिशा, प्रदक्षिण, तंत्रोक्त एक आचार ।

दक्षिणा—स्त्री० दक्षिण दिशा, दान, पुरस्कार ।

दक्षिणापथ—पु० विन्ध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँसे दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।

दक्षिणायन—भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। पु० सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति, २१ जून से २२ दिसम्बर तक वह छः महीने का समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।

दक्षिणावर्त—जो दक्षिण की ओर घूमा हुआ हो, दक्षिण देश का। पु० एक शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है। [का पात्र हो।

दक्षिणीय—दक्षिण का, जो दक्षिणा

दखल—पु० अधिकार, हस्तक्षेप, पहुँच।

दखीलकार—पु० वह असामी जिसने जमींदार की जमीन पर बारह वर्ष तक दखल रखा हो।

दगना—छूटना, जलना, दागा जाना, प्रसिद्ध होना।

दगा—स्त्री० धोखा, छल।

दगादार, दगाबाज—छली।

दग्ध—जला हुआ, दुखित।

दग्धा—स्त्री० अमंगल तिथि।

दग्धोदर—पु० क्षुधार्त।

दग्धाक्षर—पु० पिंगल के अनुसार झ, ह, र, य और ष अक्षर जिनका छंद के प्रारम्भ में रखना वर्जित है।

दत्त—दिया हुआ। पु० दान, दत्तक।

दत्तक—पु० गोद लिया हुआ लड़का। [खूब मन लगाया हो।

दत्तचित्त—जिसने किसी कार्य में

दद्रु—पु० दाद रोग।

दधि—पु० दही, वस्त्र, समुद्र।

दधिजात—पु० मक्खन, चंद्रमा।

दधिसुत—पु० कमल, मोती, चंद्रमा, विष, जालंधर दैत्य, मक्खन।

दधिसुता—स्त्री० सीप। [शीघ्र।

दनादन—दन दन शब्द के साथ,

दनु—स्त्री० दक्ष की कन्या जिसके पुत्र दानव कहलाये।

दनुज—पु० राक्षस।

दनुजदलनी—स्त्री० दुर्गा।

दफ़ती—स्त्री० गत्ता, कूट।

दफन—पु० मुर्दे को जमीन में गाड़ने की क्रिया। [कानून की धारा।

दफा—हटाया हुआ। स्त्री० बार,

दफ्तर—पु० कार्यालय, आफिस।

दफ्तरी—पु० दफ्तर का कागज आदि दुरुस्त रखने और रजिस्टर आदि पर रूल खींचनेवाला, जिल्दसाज।

दबंग—प्रभावशाली।

दबक—स्त्री० छिपाव, सिकुड़न।

दबदबा—पु० रोबदाब, आतंक।
दबाव—पु० दबाने का भाव या क्रिया, शेष।
बीज—मोटा, गाढ़ा।
दबोचना—धर दबाना, छिपाना।
दम—पु० सजा, इंद्रिय निग्रह, कीचड़, घर, विष्णु, दबाव, श्वाँस, गांजे आदि का धूँआ खींचने की क्रिया, साँस लेने भर का समय, प्राण, व्यक्तित्व, धोखा, तलवार आदि की धार। मु० दम घुटना = साँस रुकना। दम तोड़ना = अंतिम साँस लेना। दम फूलना = हाँफना। दम भरना = किसी के प्रेम आदि का पक्का भरोसा रखना। दम मारना या लेना = सुस्ताना। दम साधना = साँस रोकना, चुप होना। दम लगाना = गांजे आदि का धूँआ खींचना। नाक में दम आना = बहुत तंग होना। दम सूखना = प्राण सूखना। दमदिलासा = झूठी आशा।
दमक—स्त्री० चमक।
दमकल—स्त्री० वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी आग बुझाई जाती है, पंप।
दमड़ी—स्त्री० पैसे का आठवाँ भाग।
दमदमा—पु० मोरचा, नक्कारा, ढोल, शोहरत, फरेब, चापलूसी।
दमदार—जिसमें जीवन शक्ति हो, दृढ़, चोखा। [निग्रह, विष्णु, शिव।
दमन—पु० दबाने की क्रिया, दंड,
दमनीय—दमन करने योग्य।
दमा—पु० एक साँस रोग।
दमामा—पु० डंका, नगारा।
दमारि—पु० दावानल।
दया—स्त्री० रहम, करुणा।
दयानत—स्त्री० ईमान।
दयानतदार—पु० ईमानदार।
दयानिधि—पु० बहुत दयालु पुरुष, ईश्वर।
दयापात्र—पु० जो दया के योग्य हो।
दयामय—पु० दयालु, ईश्वर।
दयार्द्र, दयाल—दयालु।
दयालु—दया करनेवाला।
दयावंत, दयावान्—दयालु।
दयाशील—दयालु।
दयित—पु० प्यारा, पति।
दयिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री।
दर—अंदर, बीच। पु० शंख, गड्ढा, गुफा, विदारण, भय, दल, द्वार। स्त्री० भाव, प्रमाण, प्रतिष्ठा, ऊख।
दरकना—फटना।
दरकार—आवश्यक, जरूरी।
दरकिनार—अलग।
दरखास्त—स्त्री० प्रार्थनापत्र।
दरख्त—पु० पेड़।
दरगाह—स्त्री० चौखट, दरबार, समाधिस्थान।

दरगुजर—वंचित, क्षमाप्राप्त ।

दरण—पु० पीसने की क्रिया, ध्वंस।

दर दर—द्वार द्वार ।

दरदवंत—दयालु, पीड़ित ।

दरपेश—सामने । [संदूक ।

दरबा—पु० काठ का खानेदार

दरबान—पु० ड्योढ़ीदार । [दरवाजा ।

दरबार—पु० राजसभा, राजा,

दरबारदारी—स्त्री० किसीके यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना ।

दरबार विलासी—पु० दरबान ।

दरबारी—दरबार का । पु० दरबार में बैठनेवाला आदमी ।

दरमाहा—पु० मासिक वेतन ।

दरमियान—बीच ।

दरमियानी—बीच का । दो आदमियों के बीच का झगड़ा मिटानेवाला ।

दरवाजा—पु० द्वार, किवाड़ ।

दरविदलित—थोड़ा खिला हुआ।

दरवेश—पु० साधु, फकीर ।

दरस—पु० दर्शन, भेंट, रूप ।

दरसनी—स्त्री० दर्पण ।

दरसनी हुंडी—वह हुंडी जिसके भुगतान की मिती को दस दिन या उससे कम दिन बाकी हों ।

दरसाना—दिखलाना ।

दराज—बहुत, बड़ा भारी । स्त्री० दरार, मेज में लगा हुआ संदूकनुमा खाना ।

दरार—स्त्री० फटा हुआ स्थान ।

दरिद्र—निर्धन ।

दरिया—पु० नदी, समुद्र ।

दरियाई—नदी संबंधी, नदी के तट का, समुद्र संबंधी ।[चलाया संप्रदाय ।

दरियादासी—पु० दरिया साहब का

दरियादिल—उदार, दानी ।

दरियाफ्त—मालूम ।

दरियाबरार—पु० वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले । [नदी काटकर बहा दे ।

दरियाबुर्द—पु० वह भूमि जिसे कोई

दरियाव—स्त्री० दे० "दरिया" ।

दरी—स्त्री० गुफा, पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो, शतरंजी ।

दरीचा—पु० खिड़की, खिड़की के पास बैठने की जगह ।

दरेरना—रगड़ना । [दरार ।

दर्ज—कागज पर लिखा हुआ । स्त्री०

दर्जन—पु० बारह का समूह ।

दर्जा—गुना । पु० श्रेणी, पद, खंड ।

दर्द—पु० पीड़ा, दुःख, दया । मु० दर्द खाना = दया रखना ।

दर्दमंद, दर्दी—पीड़ित, दयावान् ।

दर्दुर—पु० मेढ़क, बादल, अबरक ।

दर्प—पु० घमंड, मान, उद्दंडता रोब ।

दर्पण—पु० आइना, आँख ।
दर्भ—पु० डाभ, कुश, कुशासन ।
दर्रा—पु० घाटी ।
दर्शक—देखने वाला ।
दर्शन—पु० साक्षात्कार, मुलाकात, तत्त्वज्ञान, नेत्र, स्वप्न, बुद्धि, धर्म, दर्पण ।
दर्शी—देखने वाला । [मंडली, सेना ।
दल—पु० हिस्सा, पत्ता, पँखड़ी, झुंड,
दलक—स्त्री० थरथराहट, टीस, गुदड़ी ।
दलकना—फट जाना, काँपना, चौंकना उद्विग्न हो उठना, डरना ।
दलगंजन—पु० भारी वीर ।
दलदल—स्त्री० कीचड़ ।
दलदला—दलदल वाला ।
दलन—पु० संहार ।
दलना—चूर करना, कुचलना, दबाना, नष्ट करना, तोड़ना ।
दलपति—पु० मुखिया, सेनापति ।
दलबल—पु० फौज ।
दलबादल—पु० बादलों का समूह, भारी सेना, बड़ा शामियाना ।
दलमलना—मसल डालना, कुचलना, नष्ट करना । [दाल बनायी जाय ।
दलहन—पु० वह अन्न जिसकी
दलाल—पु० वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे, कराये । [मजदूरी
दलाली—स्त्री० दलाल का काम या

दलित—मसला हुआ ।
दलील—स्त्री० तर्क, बहस ।
दव—पु० वन, दवाग्नि, अग्नि ।
दवा—स्त्री० औषध, चिकित्सा, दूर करने का उपाय, दुरुस्त करने की तदबीर ।
दवाखाना—पु० औषधालय ।
दवाग्नि—स्त्री० दवानल ।
दवानल—पु० वन की आग ।
दवामी—स्थायी ।
दवामी बंदोबस्त—पु० जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी मालगुजारी हमेशा के लिये एक बार निश्चित कर दी गयी हो ।
दवारी—स्त्री० दवाग्नि ।
दशकंठ—पु० रावण ।
दशकंठ जहा—पु० श्री रामचन्द्र ।
दशकंधर—पु० रावण ।
दशदिक्—पु० दश दिशाएँ—पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायु, ऊर्ध्व, अधः ।
दशन—पु० दाँत, शिखर ।
दशभुजा—स्त्री० दुर्गा ।
दशमलव—पु० वह भिन्न जिसके हर में दस वा उसका कोई गुणनफल हो ।
दशमी—स्त्री० पक्ष की दसवीं तिथि ।
दशमुख, दशशीश—पु० रावण ।
दशहरा—पु० गंगा दशहरा, विजया दशमी ।

दशा—स्त्री० हालत ।

दशानन—पु० रावण ।

दशाह—दस दिन, मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन ।

दशमाथ—पु० रावण ।

दस्तंदाजी—स्त्री० हस्तक्षेप ।

दस्त—पु० पतला पायखाना, हाथ ।

दस्तक—स्त्री० हाथ से खटखटाने की क्रिया, माल आदि ले जाने का परवाना, महसूल, मालगुजारी वसूली के लिये निकाला हुआ हुक्मनामा, गिरफ्तारी या वसूली का परवाना ।

दस्तकार—पु० हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला ।

दस्तकारी-स्त्री० हाथ की कारीगरी ।

दस्तखत—हस्ताक्षर ।

दस्तबस्ता—हाथ जोड़े हुए, मुस्तैद ।

दस्तरखान—पु० वह चादर जिस पर खाना रखा जाता है ।

दस्ता—पु० वह जो हाथ में आवे, बेंट, गुलदस्ता, गारद, कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी ।

दस्ताना—पु० पंजे और हथेली में पहनने का कपड़ा ।

दस्तावर—जिससे दस्त आवे ।

दस्तावेज़—स्त्री० वह कागज जिसमें दो वा अधिक आदमियों के व्यवहार की बातें लिखी हों और उनके दस्तखत हों ।

दस्ती—हाथ का । स्त्री० मशाल, छोटा बेंट, छोटा कलमदान ।

दस्तूर—पु० रवाज, कायदा ।

दस्तूरी— स्त्री० कमीशन ।

दस्यु—पु० डाकू, चोर, असुर, अनार्य, दास ।

दहक—स्त्री० धधक, ज्वाला ।

दहन—पु० दाह, अग्नि, कृत्तिका नक्षत्र, एक रुद्र, तीन की संख्या ।

दहपटना—चौपट करना, रौंदना ।

दहलना—काँप उठना, घबराना ।

दहलीज—स्त्री० देहली ।

दहशत—स्त्री० भय ।

दहा—पु० मुहर्रम का महीना, ताजिया, मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय ।

दहाई—स्त्री० दस का मान, अंकों की गिनती में दूसरा स्थान ।

दहाड़—स्त्री० गरज ।

दहिने—दाहिनी ओर को । मु० दहिने होना = अनुकूल होना, प्रसन्न होना ।

दहेंड़ी—स्त्री० दही की हाँड़ी ।

दहेज—पु० विवाह के समय कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया हुआ द्रव्य और सामान ।

दाँ—पु० बार, ज्ञाता ।

दाँत—पु० दंत । मु० दाँतों ऊँगली काटना = चकित होना, अफसोस करना । दाँत खट्टे करना = खूब

हैरान करना, परास्त करना। दाँतों में तिनका लेना = दया के लिये बहुत विनती करना। दाँत लगाना = लेने की गहरी चाह रखना। तालू में दाँत जमना = बुरे दिन आना।

दांत--दबाया हुआ, संयमी, दाँत का।

दाँति--स्त्री० इंद्रिय निग्रह, अधीनता, नम्रता।

दांपत्य—दम्पति संबंधी। पु० स्त्री पुरुष का पारस्परिक प्रेम।

दांभिक—पाखंडी, घमंडी।

दाई—स्त्री० धाय।

दाऊ—पु० बड़ा भाई, बलराम।

दाक्षायणी--स्त्री० दक्ष की कन्या, अश्विनी आदि नक्षत्र, दुर्गा, अदिति।

दाक्षिणात्य--दक्खिनी। पु० विंध्याचल से दक्षिण का भाग, दक्षिण देशवासी।

दाक्षिण—दक्षिण या दक्षिणा संबंधी। पु० अनुकूलता, प्रसन्नता, उदारता।

दाख-स्त्री० अंगूर, मुनक्का, किशमिश।

दाखिल--प्रविष्ट ,शरीक, मिला हुआ, पहुँचा हुआ।

दाखिल खारिज--पु० किसी सरकारी कागज पर से जायदाद के पुराने हकदार का नाम हटाकर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिला—पु० प्रवेश, संस्था आदि में शामिल किये जाने का काम।

दाग--पु० धब्बा, निशान, कलंक, जलन।

दागदार--जिस पर धब्बा लगा हो।

दाघ--पु० गरमी, दाह।

दाड़िम—पु० अनार।

दाढ़—स्त्री० दहाड़, चिल्लाहट। स्त्री० चौभर या चौआ। [शीलता।

दातव्य--देने योग्य। पु० दान, दान-

दाता, दातार--पु० दानशील, देनेवाला।

दातृत्व--पु० दानशीलता।

दात्री--स्त्री० देनेवाली।

दाद--स्त्री० दिनाई, इन्साफ। मु० दाद चाहना = किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना = न्याय करना, सराहना।

दादनी-स्त्री० चुकायी जानेवाली रकम, पेशगी रकम।

दादुर—पु० मेढ़क। [यायी।

दादूपंथी—पु० दादूदयाल के अनु-

दान –पु० देने का कार्य, खैरात, दान की वस्तु, हाथी का मद, छेदन, शुद्धि, एक प्रकार का मधु।

दानव—पु० राक्षस।

दानवारि—पु० हाथी का मद।

दानवी-दानव संबंधी। स्त्री० राक्षसी।

दानवीर—पु० बड़े दानी।

दानवेंद्र—पु० राजा बलि।

दानशील—दानी।

दाना—अक्लमंद। पु० अन्न का एक कण, अनाज, फल या उसका बीज, कण, कोई छोटी गोल वस्तु, जैसे मोती का दाना, अदद, अन्दाज।

दानाई—स्त्री० अक्लमन्दी।

दानापानी—पु० अन्न जल, जीविका, रहने का संयोग।

दानिश—स्त्री० समझ, बुद्धि, राय।

दानिश्ता—जाना हुआ।

दानी—जो दान करे। पु० दाता, दान लेने वाला, कर उगाहनेवाला।

दानेदार—दानावाला।

दाप—पु० अहंकार, शक्ति, उत्साह, दबदबा, क्रोध, जलन।

दापना—दबाना, रोकना।

दाभ—पु० कुश, डाभ।

दाम—पु० रस्सी, माला, समूह, लोक, शत्रु को धन द्वारा वश में करने की नीति, फंदा, पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग, कीमत, धन, रुपया।

दामन—पु० कपड़े का छोर, अंचल, आश्रय, पहाड़ों के नीचे की भूमि।

दामनगीर—पीछे पड़नेवाला, दावा करनेवाला, बसनेवाला।

दामिनी—स्त्री० बिजली।

दामी—कीमती। स्त्री० कर।

दामोदर—पु० श्रीकृष्ण, विष्णु।

दामुल—पु० कालापानी।

दाय—पु० वह धन जो किसी को दिये जाने को हो, वह धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके, दान, दाव।

दायक—पु० दाता।

दायज—पु० दहेज।

दायभाग—पु० पैत्रिक धन का विभाग, बाप दादे या संबंधियों के धन का पुत्रों, पौत्रों या अन्य संबंधियों में बाँटे जाने की व्यवस्था।

दायमुल हब्स—पु० जीवन भर के के लिये कैद, कालेपानी की सजा।

दायर—चलता हुआ, जारी। मु० दायर करना = मामले वगैरह को चलाने के लिये पेश करना।

दायरा—पु० घेरा, वृत्त, कक्षा।

दायाद—जो दाय का अधिकारी हो। पु० हिस्सेदार, पुत्र, सपिंड कुटुम्बी।

दायित्व—पु० जवाबदेही।

दायी—देनेवाला।

दायें—दाहिने। मु० दायें होना = अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार—रखनेवाला। पु० दारु। स्त्री० पत्नी।

दारक—पु० लड़का, बेटा।

दारकर्म—पु० विवाह।

दारण—पु० चीरफाड़, चीरने फाड़ने का औजार।

दारपरिग्रह—पु० विवाह।

दारमदार—पु० आश्रय, निर्भर, अवलंबन, कार्यभार।

दारा—स्त्री० पत्नी।

दारिका—स्त्री० कन्या, पुत्री।

दारिद्र, दारिद्र्य—पु० दरिद्रता।
दारीजार—पु० दासीपति, गुलाम, दासीपुत्र (गाली)। [बढ़ई, कारीगर।
दारु, दारुक—पु० लकड़ी, देवदार,
दारुण—भयंकर, कठिन। पु० भयानक रस, विष्णु, शिव, राक्षस।
दारु—स्त्री० दवा, शराब, बारूद।
दारोगा—पु० थानेदार।
दार्शनिक—दर्शन शास्त्र जाननेवाला, दर्शनशास्त्र संबंधी।
दाल—स्त्री० दली हुई अरहर आदि। मु० दाल गलना = प्रयोजन सिद्ध होना, मतलब निकलना। दाल में कुछ काल होना = कुछ खटके या संदेह की बात होना।
दालान—पु० बरामदा।
दावँ—पु० बार, पारी, मौका, उपाय, चाल, छल, जगह, जुए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिसमें जीत हो। मु० दाँव पर रखना = बाजी पर रखना। [जलन।
दाव—पु० वन, वन की आग, आग,
दावत—स्त्री० भोज, भोजन का निमन्त्रण।
दावा—स्त्री० दावानल। पु० हक, अधिकार, नालिश, दृढ़ता, दृढ़तापूर्वक कथन।
दावागीर—पु० दावा करनेवाला।
दावाग्नि—स्त्री० दावानल।
दावादार—पु० दावा करनेवाला।
दावानल—पु० वनाग्नि।
दाशरथि—पु० दशरथ के पुत्र, राम।
दास—पु० गुलाम, सेवक, शूद्र, दस्यु, धीवर।
दासता—स्त्री० गुलामी, सेवा वृत्ति।
दासानुदास—पु० सेवक का सेवक, अत्यंत तुच्छ सेवक।
दासी—स्त्री० लौंडी।
दास्तान—पु० वृत्तांत, कथा।
दास्य—पु० दासत्व, सेवा।
दाह—पु० जलाने की क्रिया या भाव, जलन, मुर्दे का जलाना, संताप, डाह।
दाहक—जलानेवाला। पु० आग।
दाहकता—स्त्री० जलाने का गुण।
दाहकर्म—पु० शव-दाह-कर्म।
दाहिना—दायाँ, दाहिनी ओर, अनुकूल, प्रसन्न।
दाही—जलानेवाला।
दिक्—स्त्री० दिशा, ओर।
दिक—तंग, बीमार।
दिक्कत—स्त्री० तकलीफ, मुश्किल।
दिक्कन्या—स्त्री० दिशा रूपी कन्या।
दिक्करी—पु० दिग्गज।
दिक्कांता—स्त्री० दिक्कन्या।
दिक्पाल—पु० पुराणानुसार दस दिशाओं के दस पालक।
दिक्शूल—पु० फलित ज्योतिष के

अनुसार खास खास दिनों में खास खास दिशाओं की ओर काल का वास जिधर जाना हानिकर माना जाता है।
दिक्सुंदरी—स्त्री० दिक्कन्या।
दिखाऊ—दिखौआ, बनावटी।
दिखावा—पु० ऊपरी तड़कभड़क।
दिगंत—पु० दिशा का अंत, क्षितिज, सब दिशाएँ। [का स्थान।
दिगंतर—पु० दो दिशाओं के बीच
दिगंबर—नंगा। पु० शिव, नग्न साधु, अंधकार।
दिग्—स्त्री० दे० "दिक्"।
दिग्पाल—पु० दे० "दिकपाल"।
दिग्गज—बहुत बड़ा। पु० पुराणानुसार वे आठ हाथी जो आठो दिशाओं में पृथ्वी को दबाये रखने के लिये हैं।
दिग्दर्शक यंत्र—पु० दिशा सूचक यंत्र। [दिखाने का काम, जानकारी।
दिग्दर्शन—पु० नमूना, नमूना
दिग्दाह—पु० सूर्यास्त के समय दिशाओं का लाल होना।
दिग्देवता—पु० दिक्पाल। [वस्त्र।
दिग्पट—पु० नंगा, दिशा रूपी
दिग्पति—पु० दिक्पाल।
दिग्भ्रम—पु० दिशा का भ्रम।
दिग्मंडल—पु० दिशासमूह।
दिग्विजय—पु० सभी ओर देश-देशांतरों पर विजय।
दिग्शूल—पु० दे० "दिक्शूल"।
दिङ्नाग—पु० दिग्गज।
दिङ्मंडल—पु० दिशासमूह।
दिठौना—पु० दे० "डिठौना"।
दिति—पु० दैत्य।
दिन—पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, पृथ्वी के अपने अक्ष पर एक बार घूम जाने का, अर्थात् २४ घंटे का समय, समय। मु० दिन को दिन और रात को रात न समझना = विश्राम का कुछ ध्यान न देना। दिन ढलना = संध्या होने चलना। दिन दहाड़े = बिलकुल दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना बढ़ना = बहुत तेजी से बढ़ना। दिन फिरना = सुख के दिन आना। दिन भरना = बुरे दिन काटना।
दिनकंत, दिनकर—पु० सूर्य।
दिनचर्य्या—स्त्री० दिन भर का कामधंधा। [पु० सूर्य।
दिननाथ, दिनपति, दिनमणि—
दिनमान—पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय का मान।
दिनेश—पु० सूर्य। [रोग।
दिनौंधी—स्त्री० दिन में न सूझने का
दिमाग—पु० मस्तिष्क, बुद्धि, अभिमान। मु० दिमाग चाटना = व्यर्थ की बातें करना। दिमाग चढ़ना = बहुत घमंड होना। दिमाग लड़ाना =

खूब सोचना ।

दिमागी = दिमागदार, दिमाग संबंधी ।

दियारा—पु० कछार, प्रांत ।

दिल—पु० कलेजा, मन, साहस, इच्छा । मु० दिल कड़ा करना = हिम्मत बाँधना । दिल का बादशाह = उदार, मनमौजी । दिल के फफोले फोड़ना = भली बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना ।

दिलगीर—उदास, दुखी ।

दिलचला—वीर, साहसी, दिलेर ।

दिलचस्प—मनोरंजक । [रंजन

दिलचस्पी—स्त्री० अभिरुचि, मनो-

दिलजमई—स्त्री० तसल्ली, इतमीनान, संतोष ।

दिलजला—जिसका दिल जला हो ।

दिलदार—उदार, रसिक, प्रेमी ।

दिलबर, दिलरुबा—प्यारा ।

दिलावर—बहादुर, साहसी ।

दिलासा—पु० तसल्ली ।

दिली—हार्दिक ।

दिलेर—बहादुर, साहसी ।

दिल्लगी—स्त्री० दिल लगाने की क्रिया या भाव, मजाक । [दिन ।

दिव—पु० स्वर्ग, आकाश, वन,

दिवस—पु० दिन । [उल्लू ।

दिवांध—जिसे दिन में न सूझे,

दिवा—पु० दिन ।

दिवाकर—पु० सूर्य ।

दिवाला—पु० वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने को कुछ न बचे । मु० दिवाला निकलना = दिवाला होना । दिवाला मारना = दिवालिया बन जाना ।

दिवालिया—पु० जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बचा हो ।

दिव्य—स्वर्गीय, अलौकिक, प्रकाशमान, साफ और सुंदर । पु० जौ, तत्ववेत्ता, सौगंध । [चश्मा ।

दिव्यचक्षु—पु० ज्ञान चक्षु, अंधा,

दिव्यांगना—स्त्री० देववधू, अप्सरा ।

दिव्यास्त्र—पु० देवताओं का दिया अस्त्र, मंत्रों द्वारा चलनेवाला अस्त्र ।

दिव्योदक—पु० वर्षा का जल । [संख्या ।

दिश्, दिशा—स्त्री० तरफ, दस की

दिशाभ्रम—पु० दे० "दिक्भ्रम ।"

दिशाशूल—पु० दे० "दिक्शूल" ।

दिशि—स्त्री० दिशा ।

दिष्ट—पु० भाग्य, उपदेश, काल ।

दिसावर—पु० परदेश ।

दिहंदा—देनेवाला, दाता ।

दीक्षा—स्त्री० यजन, मंत्रोपदेश ।

दीक्षित—दीक्षाप्राप्त ।

दीखना—दिखाई देना ।

दीगर—दूसरा ।

दीघी—स्त्री० पोखरा ।

दीठ—स्त्री० दृष्टि, नजर, दृकपथ, निगरानी, परख, उम्मीद, विचार ।

दीदा—पु० आँख, नजर, ढिठाई।
दीदार—पु० दर्शन।
दीन—गरीब, दुखित, खिन्न, विनीत। पु० मत, मजहब।
दीनता—स्त्री० गरीबी, नम्रता।
दीनदार—अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला।
दीनदुनिया—स्त्री० लोक परलोक।
दीनबंधु—पु० दुखियों का सहायक, ईश्वर। [ईश्वर।
दीनानाथ—पु० दुखियों का रक्षक,
दीनार—पु० स्वर्ण भूषण, स्वर्ण मुद्रा।
दीप—पु० चिराग।
दीपक—प्रकाश करनेवाला, जठराग्नि-वर्द्धक, उत्तेजक। पु० दीया, एक राग, केसर, कुंकुम।
दीपन—पु० जठराग्निवर्द्धन। पु० प्रकाशन, भूख को उभारना, उत्तेजन।
दीपमालिका—स्त्री० दीपों की पंक्ति, दीवाली।
दीपमाली—स्त्री० दीवाली।
दीपशिखा—स्त्री० दीये की टेम।
दीपावलि—स्त्री० दीपमालिका।
दीपिका—स्त्री० उजाला फैलाने वाली, छोटा दीया।
दीपोत्सव—पु० दीवाली।
दीप्ति—स्त्री० प्रकाश, प्रभा, कांति, ज्ञान का प्रकाश, कीर्ति।
दीप्य—जलाने योग्य।
दीप्यमान—चमकता हुआ।
दीबाचा—स्त्री० भूमिका।
दीया—पु० दीपक। मु० दीया ठंढा करना = दीया बुझाना। दीया ठंढा होना = किसी के मरने से कुल में अंधकार छा जाना। दीया बढ़ाना = दीया बुझाना। [उलटा।
दीर्घ—लंबा, बड़ा, गुरु वर्ण, ह्रस्व का
दीर्घजीवी—बहुत दिनों तक जीने-वाला।
दीर्घदर्शी, दीर्घदृष्टि—दूरदर्शी।
दीर्घनिद्रा—स्त्री० मृत्यु।
दीर्घबाहु—जिसकी भुजाएँ लंबी हों।
दीर्घलोचन—बड़ी आँखों वाला।
दीर्घसूत्र—दे० "दीर्घसूत्री"।
दीर्घसूत्रता—स्त्री० प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव। [करने वाला।
दीर्घसूत्री—प्रत्येक कार्य में विलंब
दीर्घायु—दीर्घजीवी।
दीवान—पु० राजसभा, वजीर।
दीवानआम—पु० ऐसा दरबार जिसमें बादशाह से सब लोग मिल सकते हैं।
दीवानखाना—पु० बैठक।
दीवानखास—पु० ऐसा दरबार जहाँ बादशाह मंत्रियों तथा कुछ चुने हुए लोगों के साथ बैठते हैं।
दीवाना—पागल।
दीवानी—स्त्री० दीवान का पद, वह

न्यायालय जो संपत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे।
दीवार—स्त्री० भीत।
दीसना—दिखाई पड़ना।
दुंद—पु० दो मनुष्यों के बीच का झगड़ा, उत्पात, जोड़ा, नगाड़ा।
दुंदुभी—स्त्री० नगाड़ा। [रोग।
दुःख—पु० कष्ट, संकट, खेद, पीड़ा,
दुःखद, दुःखप्रद—दुख देनेवाला।
दुखांत—जिस के अन्त में दुख हो।
दुःशील—बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता—स्त्री० दुष्टता।
दुःसह—जिसका सहना कठिन हो।
दुःसाध्य—जिसका करना कठिन हो।
दुःसाहस—पु० व्यर्थ का साहस, अनुचित साहस, धृष्टता।
दुःस्वप्न—पु० बुरा सपना।
दुआ—स्त्री० प्रार्थना, दरखास्त, आसीस। मु० दुआ माँगना = प्रार्थना करना।
दुकड़ा—पु० जोड़ा, छदाम।
दुकान—वह स्थान जहाँ चीजें बिकें। मु० दुकान बढ़ाना = दुकान बंद करना।
दुकाल—पु० अकाल।
दुकूल—पु० वस्त्र।
दुखड़ा—पु० दुःख की कथा, कष्ट। मु० दुखड़ा रोना = दुख का वृत्तांत कहना।
दुखदुंद—पु० दुःख का उपद्रव।
दुखारी—दुखी।
दुख़्तर—स्त्री० लड़की।
दुग्ग—पु० दुर्ग।
दुग्ध—दुहा हुआ। पु० दूध।
दुचित—अस्थिर चित्त, चिंतित।
दुचिताई—स्त्री० चित्त की अस्थिरता, संदेह, खटका, चिंता।
दुज—पु० दे० "द्विज"।
दुतकार—स्त्री० तिरस्कार, फटकार।
दुतर्फा—दोनों ओर का।
दुति—स्त्री० दे० "द्युति"।
दुतिया—स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि।
दुधमुख, दुधमुँहाँ—जो अभी तक मा का दूध पीता हो।
दुधारी—जो दूध देती हो, जिसमें दोनों ओर धार हो। [का जंजाल।
दुनिया—स्त्री० संसार, जनता, संसार
दुनियादार—पु० व्यवहार कुशल, संसारी, गृहस्थ।
दुनियादारी—स्त्री० गृहस्थी का जंजाल, स्वार्थसाधन, बनावटी व्यवहार, व्यवहार कुशलता।
दुपट्टा—पु० चादर।
दुविधा—स्त्री० दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव, संशय, असमंजस, पसोपेश, खटका।
दुभाषिया—पु० दो भाषाओं का

जानने वाला ऐसा व्यक्ति जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो व्यक्तियों को एक दूसरे का कहना समझावे।

दुम—स्त्री० पूँछ, पिछलग्गू। मु० दुम दबाकर भागना = डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना।

दुरंत—अपार, दुर्गम, कठिन, प्रचंड, अशुभ, दुष्ट।

दुर्—एक अव्यय जिसका प्रयोग दूषण, निषेध और दुःख के अर्थ में होता है। [छोटी बाली।

दुर—तिरस्कार का शब्द। पु० मोती,

दुरतिक्रम—प्रबल, अपार।

दुरदाम—कष्टसाध्य।

दुरदुराना-तिरस्कारपूर्वक दूर करना।

दुरभिसंधि—स्त्री०बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।

दुरवस्था—बुरी दशा।

दुराग्रह—पु० बुरा आग्रह।[चलन।

दुराचरण, दुराचार—पु० बुरा चाल

दुराज—पु० बुरा राज्य, एक ही जगह पर दो राजों का राज्य।

दुरात्मा—दुष्टात्मा।

दुराधर्ष—जिसका दमन करना कठिन हो, प्रबल। [छिपना, छिपाना।

दुराना—दूर होना, दूर करना,

दुराव—पु० भेदभाव, छल।[नीयत।

दुराशय—बुरी नीयतवाला। पु० बुरी

दुराशा—स्त्री० व्यर्थ की आशा।

दुरित—पापी। पु० पाप।

दुरुपयोग—पु० बुरा उपयोग।

दुरुस्त—ठीक, उचित, यथार्थ।

दुरुस्ती—स्त्री० सुधार, संशोधन।

दुरूह—कठिन।

दुरेफ—पु० दे० "द्विरेफ"।

दुर्गंध—स्त्री० बदबू।

दुर्ग—दुर्गम। पु० किला।

दुर्गति—स्त्री० दुर्दशा, नरकभोग।

दुर्गपाल—पु० गढ़रक्षक।

दुर्गम—जहाँ जाना कठिन हो, दुर्ज्ञेय दुस्तर, कठिन। पु० किला, विष्णु, वन, संकट का स्थान।

दुर्घट—कष्टसाध्य। [आफत।

दुर्घटना—स्त्री० अशुभ घटना,

दुर्जन—पु० खोटा आदमी।

दुर्जनता—स्त्री० दुष्टता।

दुर्जय—जिसे जीतना कठिन हो।

दुर्ज्ञेय—दुर्बोध।

दुर्दमनीय, दुर्दम्य—जिसका दमन करना बहुत कठिन हो, प्रचंड।

दुर्दिन—पु० बुरा दिन, बुरी दशा।

दुर्दैव—दुर्भाग्य। [प्रबल।

दुर्द्धर—जिसे कठिनता से पकड़ सकें,

दुर्द्धर्ष—जिसका दमन करना कठिन हो, जिसे अधीन न कर सकें, प्रबल।

दुर्निवार्य्य—जिसका निवारण करना कठिन हो, जो जल्दी हटाया न जा सके, जिसका होना निश्चित हो।

दुर्नीति--स्त्री० कुनीति।
दुर्बल—कमजोर, दुबला पतला।
दुर्बोध—जो शीघ्र समझ में न आवे।
दुर्भाव—पु० बुरा भाव, मनमुटाव।
दुर्भावना—स्त्री० बुरी भावना, खटका, अंदेशा।
दुर्भिक्ष—पु० अकाल।
दुर्भेद—जो जल्दी भेदा न जा सके, जिसे जल्दी पार न कर सकें। [बुद्धि।
दुर्मति—कमअक्ल, दुष्ट। स्त्री० बुरी
दुर्मुख—जिसका मुख बुरा हो, कटु भाषी। पु० घोड़ा।
दुर्लंघ्य—जिसे शीघ्र न लाँघ सकें।
दुर्लक्ष्य--जो मुश्किल से दिखाई पड़े। [अनोखा, प्रिय।
दुर्लभ—जिसे पाना सहज न हो,
दुर्वह—जिसका भार उठाना कठिन हो, मुश्किल।
दुर्विनीत—उद्धत। [टना।
दुर्विपाक—पु० बुरा परिणाम, दुर्घ-
दुर्वृत्त—दुश्चरित्र।
दुर्व्यवस्था—स्त्री० कुप्रबंध।
दुर्व्यवहार—पु० बुरा व्यवहार।
दुर्व्यसन—पु० बुरी लत।
दुलार—पु० प्यार।
दुशवार—कठिन, दुःसह।
दुश्चरित, दुश्चरित्र—बदचलन, कठिन। पु० कुचाल।
दुश्चेष्टा—स्त्री० कुचेष्टा।

दुश्मन--पु० शत्रु।
दुश्मनी—स्त्री० शत्रुता।
दुष्कर—दुःसाध्य।
दुष्कर्म—पु० बुरा काम।
दुष्काल—पु० कुसमय, अकाल।
दुष्ट—जिसमें दोष हो, दुर्जन।
दुष्टात्मा—खोटी प्रकृति का।
दुष्प्राप्य-जिसका मिलना कठिन है।
दुसह—असह्य, कठिन।
दुसार, दुसाल—पु० आरपार किया हुआ छेद। [विकट, कठिन।
दुस्तर—जिसे पार करना कठिन हो,
दुस्सह—दे० "दुःसह"।
दुहता—पु० नाती।
दुहाई—स्त्री० घोषणा, कसम, रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना, दुहने का काम या मजदूरी। मु० दुहाई फिरना = प्रताप का डंका पिटना। दुहाई देना = अपने बचाव के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
दुहाग-पु० दुर्भाग्य, वैधव्य। [विधवा।
दुहागिन—स्त्री० सुहागिन का उलटा,
दुहिता—स्त्री० कन्या।
दुह्य—दुहने योग्य।
दूकान—स्त्री० दे० "दुकान"।
दूज—स्त्री० द्वितीया। मु० दूज का चाँद होना = बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना।

दूजा—दूसरा।

दूत—पु० चर, प्रेमी और प्रेमिका का संदेश एक दूसरे तक पहुँचाने वाला व्यक्ति।

दूतकर्म—पु० दूत का काम।

दूतिका, दूती—स्त्री० प्रेमी और प्रेमिका का संदेश एक दूसरे तक पहुँचाने वाली स्त्री।

दूध—पु० स्तन, हरा बीज तथा पौधों की पत्तियों और डंठलों से निकनेवाला उजला तरल पदार्थ। मु० दूध का दूध और पानी का पानी करना = ठीक न्याय करना। दूधों नहाओ और पूतों फलो = धन संतान की वृद्धि हो।

दूधपूत—पु० धन और संतति।

दूतावास—पु० दूसरे राज्य के दूत के रहने का स्थान।

दूभर—कठिन।

दूरंदेश—दूरदर्शी।

दूरंदेशी—स्त्री० दूरदर्शिता।

दूरदर्शक—पु० दूर तक देखने वाला।

दूरदर्शक यंत्र—पु० दूरबीन।

दूरदर्शिता—स्त्री० दूर की बात सोचने का गुण।

दूरबीन—स्त्री० एक यंत्र जिससे दूर की चीजें स्पष्ट और नजदीक दिखाई पड़ती हैं।

दूरवर्ती—दूर का।

दूरवीक्षण—पु० दूरबीन।

दूरस्थ—दूर का।

दूरी—स्त्री० फासला।

दूर्वा—स्त्री० दूब।

दूषक—पु० दोषारोपण करने वाला व्यक्ति, दोष उत्पन्न करने वाला पदार्थ। [गुण, दोषारोपण।

दूषण—पु० दोष, ऐब, बुराई, अव-

दूषित—दोषयुक्त।

दृक्पथ—पु० दृष्टि का मार्ग।

दृगंचल—पु० पलक।

दृग—पु० आँख।

दृढ़—मजबूत, कड़ा, प्रगाढ़, बलिष्ट, स्थायी, ध्रुव, निडर। [न टले।

दृढ़प्रतिज्ञ—जो अपनी प्रतिज्ञा से

दृश्य—दृग्गोचर, दर्शनीय, मनोरम, ज्ञेय। पु० देखने की वस्तु, तमाशा, नाटक।

दृश्यमान—जो दिखाई पड़ रहा हो, चमकीला, सुन्दर।

दृष्ट—देखा हुआ, जाना हुआ, प्रत्यक्ष। पु० दर्शन, साक्षात्कार, प्रत्यक्ष प्रमाण।

दृष्टकूट—पु० पहेली, वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से न समझा जाकर प्रसंग या रूढ़ अर्थों से समझा जाय।

दृष्टवाद—पु० वह दार्शनिक सिद्धान्त जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।

दृष्टांत—पु० उदाहरण, शास्त्र।

दृष्टि—स्त्री० आँख की ज्योति, नजर, दृक्पथ, परख, कृपादृष्टि, उम्मीद, ध्यान, उद्देश्य।
दृष्टिगत—जो दिखाई पड़ता हो।
दृष्टिगोचर—जो देखने में आ सके।
दृष्टिपथ—पु० नजर की पहुँच।
दृष्टिपात—पु० देखना।
दृष्टिबंध—पु० जादू, हाथ की सफाई।
दृष्टिवंत—दृष्टिवाला, ज्ञानी।
दृष्टिवाद—पु० वह सिद्धांत जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।
देखभाल, देखरेख—स्त्री० निगरानी।
देदीप्यमान—चमकता हुआ।
देन—स्त्री० दान, कर्ज, दी हुई चीज।
देनदार—पु० कर्जदार, देनेवाला।
देना—प्रदान करना। पु० कर्ज।
देय—देने योग्य।
देर—स्त्री० विलंब, समय। [दैत्य।
देव—पु० देवता, पूज्य व्यक्ति, (फा०)
देवऋण—पु० देवताओं के लिये कर्त्तव्य यज्ञादि। [नारद आदि ऋषि।
देवऋषि—पु० देवलोक में रहने वाले
देवकीनंदन—पु० श्रीकृष्ण।
देवगति—स्त्री० स्वर्गलाभ।
देवगुरु—पु० बृहस्पति।
देवदासी—स्त्री० मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्तकी, स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा।

देवदेव—पु० इंद्र।
देवधुनि, देवनदी—स्त्री० गंगा।
देवनागरी—स्त्री० संस्कृत, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि।
देवपथ—पु० आकाश।
देवभाषा—स्त्री० संस्कृत भाषा।
देवभूमि—स्त्री० स्वर्ग।
देवमाया—स्त्री० परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है।
देवयोनि—स्त्री० देवताओं की जाति जिसमें अप्सरा, यक्ष, पिशाच आदि गिने जाते हैं।
देवराज—पु० इंद्र
देव राज्य—पु० स्वर्ग।
देवरानी—स्त्री० देवर की स्त्री, इन्द्राणी।
देवर्षि—पु० दे० "देवऋषि"।
देवलोक—पु० स्वर्ग।
देववाणी—स्त्री० संस्कृत भाषा, आकाश वाणी।
देवालय—पु० स्वर्ग, मंदिर।
देवी—स्त्री० देवपत्नी, दुर्गा, पटरानी, सुशीला और सदाचारिणी स्त्री।
देवेंद्र—पु० इंद्र।
देवोत्तर—पु० देवता को अर्पित की हुई संपत्ति।
देश—पु० स्थान, राष्ट्र, मुल्क, अंग।
देशज—देश में उत्पन्न। पु० वह शब्द जो संस्कृत या संस्कृत का अपभ्रंश

नहीं हो बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल चाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।

देशनिकाला—पु० देश से निकाल दिये जाने का दंड।

देशांतर—पु० अन्य देश, विदेश, भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर दक्षिण गयी हुई किसी सर्वमान्य मध्य-रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी।

देशाटन—पु० देशभ्रमण।

देशीय—देशी, देश का।

देसावर—पु० अन्य देश।

देह—स्त्री० शरीर।

देहत्याग, देहपात—पु० मृत्यु।

देहली दीपक न्याय—पु० देहली पर रखे हुए दोनों ओर प्रकाश फैलाने वाले दीपक के समान दोनों ओर लगनेवाली बात।

देहवंत, देहवान्—शरीरधारी।

दैत्य—पु० राक्षस।

दैत्यगुरु—पु० शुक्राचार्य।

दैनिक—प्रति दिन का, नित्य होने वाला, दिन संबंधी।

दैन्य—पु० दीनता, कातरता।

दैव—देवता संबंधी। पु० भाग्य, होनी, विधाता, आकाश। [भाग्य।

दैवगति—स्त्री० ईश्वरीय बात,

दैवज्ञ—पु० ज्योतिषी।

दैवयोग—पु० संयोग।

दैववश—संयोग से।

दैवात्—अकस्मात्।

दैविक—देवता संबंधी।

दैवी—देवता संबंधी, प्रारब्ध से होनेवाला, आकस्मिक, सात्विक।

दैहिक—शारीरिक, देह से उत्पन्न।

दोआब—पु० दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दोगला—वर्णसंकर।

दोजख—पु० नरक।

दोबारा—दूसरी बार।

दोयम—दूसरा।

दोल—पु० झूला, डोली।

दोली—स्त्री० झूला, डोली।

दोलायमान—हिलता हुआ।

दोशंबा—पु० सोमवार।

दोष—पु० अवगुण, कलंक, अभियोग, अपराध, पाप, प्रदोष।

दोस्त—पु० मित्र, स्नेही।

दोस्ताना—दोस्ती का। पु० दोस्ती, दोस्ती का व्यवहार।

दोस्ती—स्त्री० मित्रता।

दोहद—स्त्री० गर्भवती स्त्री की इच्छा, गर्भावस्था, गर्भ का चिन्ह, गर्भ।

दोहदवती—स्त्री० गर्भवती स्त्री।

दोहन—पु० दूध दुहना।

दोहाग—पु० दुर्भाग्य।

दौं—वा, अथवा।

दौं—ताप, दावाग्नि।

दौड़—स्त्री० द्रुतगमन, धावा, प्रयत्न, वेग, पहुँच, उद्योग की सीमा, बुद्धि की गति, विस्तार।
दौड़धूप—स्त्री० प्रयत्न, उद्योग।
दौड़ान-स्त्री० दौड़, झोंक, सिलसिला।
दौत्य—दूत का काम।
दौर—पु० चक्कर, भ्रमण, दिनों का फेर, बढ़ती का समय, प्रताप, पारी, दौरा।
दौर दौरा—पु० प्रबलता।
दौरा—पु० भ्रमण, फेरा, आवर्तन, टोकरा। [पारी।
दौरान—पु० दौरा, दिनों का फेर,
दौर्जन्य—पु० दुर्जनता।
दौर्बल्य—पु० दुर्बलता।
दौलत—स्त्री० धन, संपत्ति
दौलतखाना—पु० घर।
दौलतमंद—धनी।
दौहित्र—पु० नाती। [सूर्यलोक।
द्यु—पु० दिन, आकाश, स्वर्ग, अग्नि,
द्युति—स्त्री० कांति, शोभा, लावण्य, किरण।
द्युतिमंत—द्युतियुक्त।
द्युलोक—पु० स्वर्ग।
द्यूत—पु० जुआ।
द्योतक—प्रकाशक, बतानेवाला।
द्योतन—पु० प्रदर्शन।
द्यौस—पु० दिवस।
द्रव—तरल, गीला, पिघला हुआ। पु० द्रवण, दौड़, वेग, आसव, रस, द्रवत्व, परिहास।
द्रवण—पु० गमन, गति, दौड़, बहाव, पिघलना, पसीजना, चित्त के कोमल होने की वृत्ति।
द्रविड़—पु० दक्षिण भारत का एक देश, इस देश के वासी।
द्रवीभूत—पिघला हुआ।
द्रव्य – पु० पदार्थ, सामान, धन।
द्रष्टव्य—देखने योग्य, दिखाया जाने वाला, साक्षात्, कर्त्तव्य।
द्रष्टा—देखने वाला।
द्राक्षा—स्त्री० दाख, अंगूर।
द्रावक—बहाने वाला, पिघलाने वाला। गलाने वाला, हृदय पर प्रभाव डालने वाला।
द्राविड़—द्रविड़ देशवासी। पु० एक अनार्य जाति। [वृक्ष।
द्रुत—द्रवीभूत, भागा हुआ। पु०
द्रुतगामी—शीघ्रगामी।
द्रुम—पु० वृक्ष।
द्रोण—पु० नाव, कठौत, दोना।
द्रोणकाक—पु० डोम कौआ।
द्रोह—पु० वैर, द्वेष।
द्वंद, द्वंद्व—पु० जोड़ा, प्रतिद्वंद्वी, द्वंद्व युद्ध, झगड़ा, उलझन, दुःख, उपद्रव, दुविधा, रहस्य, दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा, जैसे—रात दिन, सुख दुख, आदि।

द्वंद्वयुद्ध—पु० कुश्ती।
द्वय—दो।
द्वादश—बारह।
द्वादशाक्षर—पु० बारह अक्षर का विष्णु का मंत्र—'ओं नमो भगवते वासुदेवाय।'
द्वादशाह—पु० बारह दिनों का समुदाय, बारहवें दिन का श्राद्ध।
द्वादशी—स्त्री० किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वापर—पु० चार युगों में तीसरा [युग।
द्वार—पु० दरवाजा, उपाय।
द्वारकाधीश—पु० श्रीकृष्ण।
द्वारपाल—पु० दरबान।
द्वारा—मारफत, जरिये से। पु० दरवाजा, मार्ग।
द्वि—दो।
द्विकर्मक—जिसके दो कर्म हों।
द्विगुण—दूना। [दूना,
द्विगुणित—दो से गुणा किया हुआ,
द्विज, द्विजन्मा—पु० वह जिसका जन्म दो बार हुआ हो, अंडज प्राणी, पक्षी, ब्राह्मण, ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण के पुरुष, चंद्रमा, दाँत।
द्विजपति, द्विजराज—पु० ब्राह्मण, चंद्र, कपूर, गरुड़।
द्विजाति—पु० दे० "द्विज"।
द्विजेंद्र, द्विजेश—पु० द्विजपति।
द्वितीय—दूसरा। [तिथि।
द्वितीया—स्त्री० पक्ष की दूसरी
द्विदल—जिसमें दो दल हों।
द्विधा—दो प्रकार से, दो टुकड़ों में।
द्विभाषी—पु० दे० "दुभाषिया"।
द्विरद—पु० हाथी।
द्विरागमन—पु० दोंगा, पुनरागमन।
द्विरुक्ति—स्त्री० दो बार कथन।
द्विरेफ—पु० भौंरा।
द्विविध—दे० "द्विधा"।
द्वीप—पु० टापू। पुराणानुसार सात द्वीप ये हैं—जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर।
द्वेष—पु० वैर, शत्रुता।
द्वैत—पु० दो का भाव, युगल, भेद-भाव, दुविधा, अज्ञान।
द्वैतवाद—पु० वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जीव और ईश्वर को दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है।
द्वैतवादी—द्वैतवाद को मानने वाला।
द्वौ—दोनों, दे० "द्व"।

ध

ध―एक अक्षर ।

धक―अचानक । स्त्री० धड़क, उमंग, संकोच ।

धकधकी― स्त्री० धड़कन, धुकधुकी ।

धक्का―पु० टक्कर, झोंका, चपेट, कसमकस, संताप, शोक या दुःख का आघात, विपत्ति, हानि ।

धक्कामुक्की―स्त्री० मारपीट ।

धज्जी―स्त्री० कपड़े या कागज आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी । मु० धज्जी उड़ाना = टुकड़े टुकड़े करना, खूब दुर्गति करना ।

धड़―पु० शरीर का स्थूल मध्य भाग, पेड़ का सब से मोटा कड़ा भाग जिससे डालियाँ निकलती हैं, तना । स्त्री० एक बारगी गिरने का शब्द ।

धड़क―स्त्री० दिल के चलने या उछलने की क्रिया, हृदय का स्पंदन, स्पंदन का शब्द, खटका, अंदेशा, संकोच ।

धड़कन―स्त्री० दिल का धक धक करना ।

धड़धड़ाना― धड़धड़ शब्द करना । मु० धड़धड़ाता हुआ― धड़धड़ शब्द और वेग के साथ, बेधड़क ।

धड़ल्ला―पु० धड़ाका । मुहा० धड़ल्ले के साथ = झोंके से, बेधड़क ।

धड़ा―पु० बटखरा, तराजू । मु० धड़ा करना = तौलने के पहले एक पल्ले पर कोई वस्तु रख कर डंडी बराबर कर लेना ।

धड़ाका―पु० धड़ धड़ शब्द । मु० धड़ाके से = जल्दी से ।

धड़ाधड़―लगातार धड़ धड़ शब्द के साथ, लगातार, जल्दी जल्दी ।

धतकारना―दुतकारना, धिक्कारना ।

धता―हटा हुआ । मु० धता बताना = भगाना, हटाना ।

धधक―स्त्री० आग की भड़क, लपट ।

धनंजय―पु० अग्नि, विष्णु, शरीरस्थ पाँच वायु में एक, अर्जुन का एक नाम ।

धन―पु० दौलत, गोधन, स्नेहपात्र, जोड़, जोड़ का चिन्ह, पूंजी । स्त्री० युवती स्त्री ।

धनकुबेर―पु० अत्यंत धनी ।

धनद―धन देने वाला । पु० कुबेर ।

धनधान्य―पु० धन और अन्नादि ।

धनपति―पु० कुबेर ।

धनाढ्य―धनी ।

धनि―धन्य । स्त्री० युवती ।

धनिक―धनी ।

धनी―धनवाला, गुणवाला । पु० धनवान पुरुष, मालिक, पति । स्त्री० युवती स्त्री ।

धनु―पु० धनुष ।

धनुर्द्धर, धनुर्द्धारी―पु० धनुष

धारण करने वाला व्यक्ति। [विद्या।
धनुर्विद्या—स्त्री॰ धनुष चलाने की
धनुर्वेद—पु॰ वह शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या हो।
धनुष, धनुस्-पु॰ कमान, एक राशि, एक लग्न, चार हाथ की एक माप।
धनुही—स्त्री॰ छोटा धनुष।
धन्य—प्रशंसायोग्य, पुण्यवान्।
धन्यवाद—पु॰ शाबाशी, प्रशंसा, कृतज्ञता-सूचक शब्द, शुक्रिया।
धन्वंतरि—पु॰ देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र मंथन के समय समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सब से प्रधान आचार्य और चिकित्सक समझे जाते हैं।
धन्वा—पु॰ धनुष, मरुभूमि।
धन्वी—धनुर्धर, निपुण।
धब्बा—पु॰ दाग, कलंक।
धमक—स्त्री॰ आघात का शब्द, आहट, आघात।
धमकना—धम शब्द के साथ गिरना, दर्द होना। मु॰ आ धमकना = आ पहुँचना।
धमकाना—डराना, डाँटना।
धमकी—स्त्री॰ डर दिखाने की क्रिया, डाँट-डपट। [नाड़ी।
धमनी—स्त्री॰ रक्तवाहिनी नली,
धमाचौकड़ी—स्त्री॰ उपद्रव, मार-पीट।
धमार—स्त्री॰ उछल कूद।
धर—धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला। पु॰ पर्वत, कच्छप, विष्णु, श्रीकृष्ण, पृथ्वी। स्त्री॰ धरने की क्रिया।
धरणि—स्त्री॰ पृथ्वी।
धरणी—स्त्री॰ पृथ्वी।
धरणीधर—पृथ्वी को धारण करने वाला। पु॰ पर्वत, कच्छप, विष्णु, शिव, शेषनाग।
धरणीसुता—स्त्री॰ सीता।
धरधरा—पु॰ धड़कन।
धरना—पकड़ना, रखना, अङ्गीकार करना, धारण करना, ग्रहण करना, बंधक रखना। पु॰ कोई काम कराने के लिये अड़कर बैठना।
धरहरा—पु॰ मीनार। [वाला, रक्षक।
धरहरिया—पु॰ बाच बिचाव कराने
धरा—स्त्री॰ पृथ्वी, संसार।
धरातल—पु॰ पृथ्वी, सतह, रकबा।
धराधर—पु॰ शेषनाग, पर्वत, विष्णु।
धराधार—पु॰ शेषनाग।
धराधीश—पु॰ राजा।
धरित्री—स्त्री॰ पृथ्वी।
धरोहर—स्त्री॰ थाती, अमानत।
धर्त्ता—धारण करने वाला, कोई काम अपने ऊपर लेने वाला।
धर्म—पु॰ प्रकृति, स्वभाव, गुण, वृत्ति, कर्त्तव्य, कल्याणकारी कर्म, पुण्य, सत्कर्म, संप्रदाय, नीति, कानून, विवेक।

धर्मघड़ी—स्त्री० बड़ी घड़ी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें ।

धर्मचक्र—पु० धर्म का समूह, बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था, बुद्धदेव ।

धर्मचर्य्या—पु० धर्म का आचरण ।

धर्मचारी—धर्म का आचरण करने वाला । [हुई हानि, व्यर्थ का कष्ट ।

धर्मधक्का—पु० धर्म के लिये उठायी

धर्मध्वजी—पाखंडी ।

धर्मनिष्ठ—धर्मपरायण ।

धर्मनिष्ठा—स्त्री० धर्म में श्रद्धा ।

धर्मपत्नी—स्त्री० विवाहिता स्त्री ।

धर्मभीरु—जिसे धर्म का भय हो ।

धर्मयुग—पु० सत्ययुग ।

धर्मयुद्ध—पु० वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियमभंग न हो ।

धर्मराज—पु० धर्म का पालन करने वाला राजा, युधिष्ठिर, यमराज, न्यायाधीश । [साहसी हो ।

धर्मवीर—पु० वह जो धर्म करने में

धर्मशाला—स्त्री० वह मकान जो यात्रियों के टिकने के लिये बना हो ।

धर्मशील—धार्मिक ।

धर्मसभा—स्त्री० न्यायालय, अदालत ।

धर्माचार्य्य—पु० धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु ।

धर्मात्मा—धर्म करनेवाला, धार्मिक ।

धर्माधिकरण—पु० न्यायालय ।

धर्माधिकारी, धर्माध्यक्ष—पु० न्यायाधीश, दानाध्यक्ष ।

धर्मार्थ—धर्म के लिये ।

धर्मावतार—पु० साक्षात् धर्मस्वरूप, न्यायाधीश, युधिष्ठिर । [का आसन ।

धर्मासन—पु० न्यायाधीश के बैठने

धर्मिष्ठ—धार्मिक, सदाचारी । [व्यक्ति ।

धर्मी—पु० धर्म का आधार, धर्मात्मा

धर्ष—पु० दे० "धर्षण" ।

धर्षक—धर्षण करनेवाला ।

धर्षण—पु० अनादर, आक्रमण, दबाने का कार्य, असहनशीलता ।

धवरी—स्त्री० सफेद । सफेद गाय ।

धवल—उजला, निर्मल, सुंदर ।

धवलगिरि—पु० हिमालय पहाड़ की एक चोटी धवलागिरि ।

धवली—स्त्री० सफेद गाय ।

धस—पु० डुबकी, गोता ।

धाँधली—स्त्री० मनमानी, जल्दबाजी, दगाबाजी । [भाँति ।

धा—धारण करने वाला । तरह,

धाक—स्त्री० रोब, प्रसिद्धि ।

धाता—पालनेवाला, रक्षक, धारण करनेवाला । पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, विधाता ।

धातु—स्त्री० सोना, चाँदी, लोहा आदि खनिज पदार्थ । शरीर को बनाये रखनेवाले पदार्थ जो वैद्यक में

सात कहे गये हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। वीर्य पु० तत्त्व, शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनती हैं। [भूमि, गाय।

धात्री—स्त्री० मा, धाय, गायत्री स्वरूपिणी भगवती, गंगा, आँवला,

धात्वर्थ—पु० धातु से निकलने वाला अर्थ।

धाना—दौड़ना, प्रयत्न करना।

धानी—हलके हरे रंग का। स्त्री० धान की पत्ती के रंग का सा हलका रंग, वह जो धारण करे, स्थान।

धान्य—पु० अन्न, धान, धनिया, चार तिल का एक तौल।

धाम—पु० घर, देह, बागडोर, शोभा, प्रभाव, पुण्यस्थान, जन्म, विष्णु, ज्योति, ब्रह्म, स्वर्ग।

धाय—स्त्री० धात्री, दाई।

धार—पु० जोर की वर्षा, उधार, प्रांत। स्त्री० अखंड प्रवाह, पानी का सोता, काटने का तेज किनारा, छोर, सेना, तरफ, आक्रमण।

धारण—पु० थामना, पहनना, सेवन करना, ग्रहण करना, कर्ज लेना।

धारणा—स्त्री० धारण करने की क्रिया या भाव, बुद्धि, दृढ़ निश्चय, मर्य्यादा, स्मृति, योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

धारना—धारण करना, कर्ज लेना, डारना।

धारा—स्त्री० घोड़े की चाल, अखंड प्रवाह, पानी का स्रोत, काटने वाले हथियार का तेज किनारा, बहुत अधिक वर्षा, समूह, रेखा।

धाराधर—पु० बादल, तलवार।

धारावाही—धारा की तरह बिना रोक टोक चलने वाला। [पृथ्वी।

धारिणी—धारण करनेवाली। स्त्री०

धारी—धारण करनेवाला, कर्जदार। स्त्री० सेना, समूह, रेखा।

धारोष्ण—पु० थन से निकला हुआ ताजा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है।

धार्मिक—धर्मात्मा, धर्मसंबंधी।

धार्य—धारण करने योग्य।

धावक—पु० धोबी, हरकारा।[काम।

धावन—पु० द्रुतगमन, दूत, धोने का

धावरी—स्त्री० सफेद गाय।

धावा—पु० चढ़ाई, दौड़। [निन्दा।

धिक्—तिरस्कारसूचक शब्द, लानत,

धिक्कार—स्त्री० लानत।

धिग—धिक्। [धीरज रखना।

धिराना—धमकाना, धीमा पड़ना,

धींगाधींगी—स्त्री० बदमाशी, जबरदस्ती। [स्त्री० लड़की।

धी—स्त्री० बुद्धि, मन, कर्म।

धीमान्—बुद्धिमान्।

धीया—स्त्री० लड़की ।

धीर—जिसमें धैर्य हो, धैर्य्यवान्, बलवान्, विनीत, गंभीर, मनोहर, मंद । पु० धीरज, संतोष ।

धीरज—पु० धैर्य्य ।

धीरता—स्त्री० धैर्य्य, संतोष ।

धीरे से—आहिस्ते से ।

धीवर—पु० मल्लाह ।

धुँकार—स्त्री० गरज ।

धुंध—स्त्री० वह अँधेरा जो हवा में मिली हुई धूल के कारण हो, स्पष्ट न दिखाई देने का रोग । [या अँधेरा ।

धुँधला—अस्पष्ट, कुछ कुछ काला

धुँआँकश—पु० स्टीमर । [जोर का, प्रचंड ।

धुआँधार—धुएँ से भरा, काला, बड़े

धुकधुकी—स्त्री० पेट और छाती के बीच का गहरा सा भाग, कलेजा, हृदय की धड़कन, भय ।

धुकार—स्त्री० नगाड़े का शब्द ।

धुन—स्त्री० लगन, मन की तरंग, चिंता, गाने का तर्ज । [छोटा धनुष ।

धुनकी—स्त्री० रूई धुनने का धनुष,

धुनना—धुनकी से रूई साफ करना, खूब मारना पीटना, लगातार कहते या करते ही जाना ।

धुनि—स्त्री० ध्वनि ।

धुरंधर—भार उठाने वाला, जो सब में बहुत बड़ा, भारी या बली हो, श्रेष्ठ

धुर—पक्का, दृढ़, बिलकुल ठीक । पु० गाड़ी या रथ आदि का धुरा, प्रधान स्थान, भार, आरंभ, जमीन की एक माप ।

धुरवा—पु० बादल, मेघ ।

धुरा—पु० वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है । [प्रधान ।

धुरीण—धुरंधर, बोझ सँभालने वाला,

धुलना—धोया जाना । [शब्द ।

धू-धू—आग के जोर से जलने का

धूत—थरथराता या काँपता हुआ, जो धमकाया गया हो, त्यक्त ।

धूनी—स्त्री० धूप, साधुओं के तापने की आग । मु० धूनी रमाना = सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना, तप करना, साधु या विरक्त हो जाना ।

धूप—पु० सुगंधित धुआँ । स्त्री० गंध-द्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है; सूर्य का प्रकाश और ताप ।

धूपघड़ी—स्त्री० एक यंत्र जिसमें एक गोल चक्कर के बीच एक कील होती है जिसकी परछाँही से समय जाना जाता है ।

धूपछाँह—स्त्री० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है कभी दूसरा । [डिबिया या बरतन ।

धूपदानी—स्त्री० धूप जलाने की

धूम—पु० धुआँ, अपच में उठनेवाली

डकार, धूमकेतु, उल्कापात। स्त्री० हलचल, उपद्रव, कोलाहल, ठाटबाट प्रसिद्धि। [शिव।
धूमकेतु—पु० अग्नि, पुच्छल तारा,
धूमधाम—स्त्री० ठाट-बाट।
धूमपोत—पु० धूआँकश।
धूमल, धूमिल—धुएँ के रंग का, ललाई लिये, काला, धुँधला।
धूम्र—धुएँ के रंग का। पु० ललाई लिये काला रंग, शिव।
धूर—स्त्री० धूल।
धूर्जटि—पु० शिव।
धूर्त—छली, धोखाबाज।
धूल, धूलि—स्त्री० गर्दा, धूल के समान तुच्छ वस्तु। मु० (किसी की) धूल उड़ना = बदनामी होना दिल्लगी उड़ना।
धूसर—मटमैला, धूल से भरा।
धूसरित—धूल से भरा हुआ।
धृक—दे० "धिक्"।
धृत—पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ, निश्चित, पतित। [धैर्य।
धृति—स्त्री० धारण, ठहराव, धीरता,
धृष्ट—निर्लज्ज, ढीठ। [पृथ्वी।
धेनु—स्त्री० बछड़े वाली गाय, गाय,
धैर्य्य—पु० धीरता, सब्र।
धोखा—पु० भुलावा, भ्रम, माया, अज्ञान, जोखिम, संशय, भूल, त्रुटि।
धोखे की टट्टी—दिखाऊ चीज।
धोखेबाज—धोखा देने वाला।
धोटा—पु० दे० "ढोटा"।
धोती—कटिवस्त्र। मु० धोती ढीली होना = भयभीत होना।
धोना—पानी से साफ करना।
धोबी—पु० कपड़ा धोने वाला। मु० धोबी का कुत्ता = व्यर्थ इधर उधर फिरने वाला।
धौ—न जाने, मालूम नहीं, या, कि, अथवा, तो भला।
धौंक—स्त्री० गरमी की लपट।
धौंकनी—स्त्री० भाथी।
धौंज—स्त्री० दौड़धूप, घबड़ाहट।
धौंताल—धुनवाला, चालाक, साहसी पटु, हट्टा-कट्टा।
धौंस—स्त्री० धमकी, धाक, धोखा।
धौंसा—पु० बड़ा नगाड़ा, शक्ति।
धौत—धोया हुआ, नहाया हुआ, उजला। पु० चाँदी।
धौरी—स्त्री० उजली गाय। [धरहरा।
धौल—धबल। स्त्री० थप्पड़, हानि,
ध्याता—विचारक, ध्यान करनेवाला।
ध्यान—पु० अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया, चिंतन, मनन, भावना, विचार, ख्याल, चित्त, चेत, समझ, बुद्धि, याद, स्मृति।
ध्यानयोग—पु० वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।
ध्याना—ध्यान करना।

ध्यानी—ध्यानयुक्त, ध्यान करनेवाला।
ध्येय—ध्यान करने योग्य, जिसका ध्यान किया जाय।
ध्रुव—अचल, दृढ़, सदा एक अवस्था में रहने वाला, निश्चित। पु० आकाश, कील, पर्वत, खंभा, वट, ध्रुपद, विष्णु, ध्रुवतारा, पृथ्वी का उत्तरी और दक्षिणी सिरा।
ध्वंस—पु० नाश।
ध्वंसक, ध्वंसी—नाशक।
ध्वज—पु० चिह्न, झंडा।
ध्वजभंग—पु० नपुंसकता।
ध्वजा—स्त्री० पताका।
ध्वजी—ध्वजा या चिह्न वाला।
ध्वनि—स्त्री० शब्द, लय, आशय, वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक विशेषता वाला हो।
ध्वनित—शब्दित, व्यंजित, वादित।
ध्वन्यात्मक—ध्वनिमय, जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।
ध्वन्यार्थ—पु० वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर ध्वनि या व्यंजना से हो। [परास्त।
ध्वस्त—नष्ट, गिरा पड़ा, खंडित,
ध्वांत—पु० अंधकार।

न

न—एक अक्षर। नहीं, मत, या नहीं। पु० उपमा, रत्न, सोना, बुद्ध, बंध।
नंगधड़ंग—बिलकुल नंगा। [हुआ।
नंगा—वस्त्रहीन, निर्लज्ज, पाजी, खुला
नंगाझोली-स्त्री० नंगा करके तलाशी लेना, कपड़ा टटोल कर बदन की तलाशी लेना। [निधि, पुत्र।
नंद—पु० हर्ष, परमेश्वर, विष्णु, एक
नंदक—आनंददायक, कुलपालक, संतोष देने वाला। पु० राजा नंद।
नंदकिशोर, नंदकुमार, नंदनंदन—पु० श्रीकृष्ण।
नंदनंदिनी—स्त्री० योगमाया।
नंदन—आनंददायक। पु० इंद्र का उपवन, शिव, विष्णु, पुत्र, मेघ।
नंदनवन—इंद्र की वाटिका।
नंदनी—स्त्री दे० "नंदिनी"।
नंदरानी-स्त्री० नंद की स्त्री, यशोदा।
नंदलाल—पु० नंद के पुत्र।
नंदा—शुभ, आनंद देने वाली। स्त्री० दुर्गा, गौरी, संपत्ति, ननद प्रसन्नता।
नंदि—पु० आनंद, वह जो आनन्द-मय हो, परमेश्वर, शिव का द्वारपाल बैल, नंदकेश्वर।
नंदिघोष—पु० बंदीजनों की घोषणा।
नंदित—आनंदित, बजता हुआ।

नंदिनी—स्त्री० पुत्री, उमा, गंगा, ननद, दुर्गा, पत्नी ।

नंदिवर्द्धन—आनंद बढ़ाने वाला। पु० शिव, पुत्र, मित्र ।

नंदी—आनंदयुक्त । पु० शिव का द्वारपाल बैल, शिव के एक प्रकार के गण, दाग कर छोड़ा हुआ बैल ।

नंदोई—पु० ननद का पति ।

नंबर—संख्या । पु० गिनती, अंक, दो हाथ का एक माप ।

नंबरवार—सिलसिलेवार ।

नककटा—जिसकी नाक कटी हो, जिसकी दुर्दशा हुई हो, निर्लज्ज ।

नकचढ़ा—पु० चिड़चिड़ा ।

नकद—(रुपया-पैसा) जो तैयार हो। उधार का उलटा । पु० वह धन जो सिक्कों के रूप में हो ।

नकदी—स्त्री० नकद ।

नकल—पु० अनुकरण, कापी ।

नकलनबीस—नकल करनेवाला ।

नकली—जो असली न हो, बनावटी ।

नकाब—स्त्री० घूँघट, मुँह ढकने का वह कपड़ा जो गले तक लटकता हो ।

नकार—पु० नहीं, इनकार, न अक्षर ।

नकाशी—स्त्री० दे० "नक्काशी" ।

नकुल—पु० नेवला, पुत्र ।

नकेल—स्त्री० नाक में बाँधी रस्सी जो लगाम का काम देती है ।

नक्कारखाना-पु० नौबतखाना । मु० नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है = बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता ।

नक्कारची-पु० नगाड़ा बजाने वाला ।

नक्कारा—पु० नगाड़ा, डंका ।

नक्काल—पु० नकल करने वाला ।

नक्काश—पु० नक्काशी करने वाला व्यक्ति ।

नक्काशी—स्त्री० धातु आदि पर खोद कर बेलबूटे बनाने का काम, बेलबूटा ।

नक्कू—बड़ी नाकवाला, अपयशी, तिरस्कृत, बहिष्कृत ।

नक्ल—स्त्री० नकल ।

नक्श—चित्रित किया गया । पु० चित्र, बेलबूटा, छाप, ताबीज, टोना ।

नक्शा—पु० तसबीर, आकृति, ढाँचा, ढंग, दशा, वह चित्र जिसमें किसी भूभाग के नगर, नदी, पहाड़ आदि दिखाये गये हों ।

नक्शानवीस—पु० नक्शा बनाने वाला ।

नक्शी—नक्काशीदार ।

नक्षत्र—पु० चंद्रमा के पथ में पड़ने वाले तारों का वह समूह जिनके २७ भाग किये गये हैं और जिनकी पहचान के लिये आकार निर्दिष्ट कर अलग अलग नाम रखे गये हैं ।

नक्षत्रनाथ—पु० चंद्रमा ।

नक्षत्री—भाग्यवान् । पु० चंद्रमा ।

नख—पु० नाखून, खंड, तागा ।

नखक्षत, नखच्छत—पु० वह चिन्ह जो नाखून के गड़ने के कारण बना हो।

नखत—पु० नक्षत्र।

नखरा, नखरातिल्ला—पु० वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय के रिझाने के लिये हो, नाज।

नखरेखा, नखरौट—स्त्री० नखक्षत।

नखशिख—पु० नख से लेकर सिर तक के सब अंग, सब अंगों का वर्णन।

नखास—पु० वह बाजार जिसमें पशु और खास कर घोड़े बिकते हैं।

नखी—नखधारी। पु० शेर, चिता।

नग—पु० पर्वत, पेड़, सात की संख्या, सर्प, सूर्य। नगीना, अदद।

नगज—पु० पहाड़ से उत्पन्न। पु० हाथी।

नगण्य—न गिनने योग्य, तुच्छ।

नगद—पु० नकद।

नगधर—पु० श्रीकृष्ण।

नगनंदिनी—स्त्री० पार्वती।

नगन—नंगा। [शिव, सुमेरु।

नगपति—पु० हिमालय, चंद्रमा,

नगर—पु० शहर। [बजाना।

नगरकीर्तन—नगर में घूम कर गाना-

नगरनारि—स्त्री० बेश्या।

नगरपाल—पु० नगररक्षक।

नगराई—स्त्री० नागारिकता, चतुराई।

नगरी—स्त्री० नगर। पु० [illegible]।

नगाधिप—पु० हिमालय, सुमेरु।

नगारा—पु० डंका, धौंसा।

नगारि—पु० इंद्र। [स्त्री।

नगी—स्त्री० नगीना, पार्वती, पहाड़ी

नगीना—पु० रत्न, मणि।

नगेंद्र, नगेश—पु० हिमालय।

नग्न—नंगा, लँगटा।

नजदीक—पास, निकट।

नजदीकी—नजदीक का।

नजम—स्त्री० कविता।

नजर—स्त्री० निगाह, दृष्टि, कृपादृष्टि, निगरानी, ध्यान, परख, बुरी दृष्टि। स्त्री० उपहार।

नजरबंद जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय, जहाँ से वह कहीं आ जा न सके, जादू का खेल।

नजरबंदी—स्त्री० नजरबंद करने की सजा, नजरबंदी की दशा, जादूगरी।

नजरसानी—स्त्री० किसी किये हुए कार्य या लिखे हुए लेख आदि को उसमें सुधार करने के लिये फिर से देखना।

नजराना—नजर लग जाना या लगाना। पु० भेंट, उपहार।

नजाकत—स्त्री० सुकुमारता।

नजारा—पु० दृश्य, नजर, प्रिय को प्रेम या लालसा की दृष्टि से देखना।

नजीर—स्त्री० उदाहरण।

नट—पु० नाट्य करने वाला व्यक्ति,

एक प्रकार की जाति।

नटखट—ऊधमी, धूर्त।

नटना—नाट्य करना, नाचना, कह कर नकार जाना, नष्ट होना या करना

नटवर—बहुत चतुर। पु० नाट्य कला में प्रवीण व्यक्ति, श्रीकृष्ण।

:साल—स्त्री० काँटा या बाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाय, कसक, पीड़ा। [नर्त्तकी, अभिनेत्री।

नटी—स्त्री० नट जाती की स्त्री,

नतरु—नहीं तो।

नतांगी—स्त्री० युवती। [नम्रता।

नति—स्त्री० झुकाव, प्रणाम, विनय,

नतीजा—पु० परिणाम।

नतु—नहीं तो।

नथना—नत्थी होना, छिदना। पु० नाक का अगला भाग, नाक का छेद। मु० नथना फुलाना=क्रोध करना।

नद—पु० बड़ी नदी या ऐसी नदी जिसका नाम पुलिंगवाची हो।

नदना—शब्द करना।

नदारद—गायब, लुप्त।

नदी—स्त्री० दरिया। मु० नदीनाव-संयोग=ऐसा संयोग जो कभी इत्ति-फाक से हो जाय।

नदीगर्भ—पु० वह गड्ढा जिससे हो कर नदी बहती हो।

नदीश—पु० समुद्र।

नधना—जुतना, जुड़ना, काम का ठनना, होना। [घर।

ननसार, ननिहाल—पु० नाना का

नन्हा—छोटा।

नपुंसक—पु० वह पुरुष जिसमें कामेच्छा बहुत ही कम हो, नामर्द, हिजड़ा।

नपुंसकता—स्त्री० नामर्दी, हिजड़ापन।

नफर—पु० नौकर, व्यक्ति।

नफरत—स्त्री० घृणा।

नफा—पु० लाभ, फायदा।

नफासत—स्त्री० उम्दापन।

नफीस—उम्दा, साफ, सुंदर।

नबी—पु० पैगंबर।

नबज—स्त्री० नाड़ी।

नभ—पु० आकाश, शून्य स्थान, सुन्ना।

नभचर, नभश्चर—आकाश में चलने वाला। पु० पक्षी, बादल, हवा, देवता, ग्रह आदि।

नभधुज—पु० मेघ।

नभस्थल—पु० आकाश।

नम—गीला। पु० नमस्कार, त्याग, अन्न, वज्र, यज्ञ।

नमक—पु० नोन। मु० नमक अदा करना=मालिक के उपकार का बदला चुकाना (किसी का) नमक खाना=(किसी के द्वारा) पालित होना। नमक-मिर्च लगाना=बढ़ा-चढ़ा कर कहना। नमक फूट कर निकलना=कृतघ्नता का दंड मिलना। जले पर

नमक छिड़कना = किसी दुखी को और भी दुख देना ।
नमकख्वार—नमक खाने वाला ।
नमकहराम—पु० कृतघ्न ।
नमकहरामी—पु० कृतघ्नता ।
नमकहलाल—पु० वह जो अपने मालिक का काम अच्छी तरह करे, स्वामिभक्त ।
नमकीन—नमकदार, सुंदर ।
नमन—पु० नमस्कार, झुकाव ।
नमस्कार—नमस्ते । पु० प्रणाम ।
नमाज-स्त्री० मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो रोज पाँच बार होती है ।
नमित—झुका हुआ ।
नमी—स्त्री० गीलापन ।
नमूना—पु० बानगी, ढाँचा ।
नम्र—विनीत, झुका हुआ ।
नय--पु० नीति, नम्रता ।
नयन—पु० आँख, ले जाना ।
नयनपट—पु० आँख की पलक ।
नयनी—आँखवाली । स्त्री० आँख की पुतली ।
नयशील—नीतिज्ञ, विनीत
नर—पु० पुरुष, आदमी, विष्णु, शिव, अर्जुन, सेवक ।
नरकंत—पु० राजा ।
नरक—पु० दोजख, जहन्नुम, गंदा स्थान, वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा हो ।
नरकेसरी, नरकेहरि—पु० जो मनुष्यों में बहादुर हो, नृसिंह ।
नरगिस—स्त्री० एक फूल ।
नरद—स्त्री० ध्वनि, गोटी ।
नरदेव—पु० राजा, ब्राह्मण ।
नरनाथ—पु० राजा ।
नर-नारायण—पु० नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं ।
नरनाह—पु० राजा ।
नरनाहर—पु० मनुष्यों में शेर की तरह, नृसिंह ।
नरपति, नरपाल—पु० राजा ।
नरपिशाच--पु० मनुष्य होकर भी पिशाच सा काम करने वाला व्यक्ति ।
नरमी--स्त्री० कोमलता ।
नरमेध—पु० एक यज्ञ ।
नरलोक—पु० संसार ।
नरसिंह, नरहरि—पु० नृसिंह ।
नराच—पु० बाण, तीर ।
नराधिप, नरेंद्र, नरेश—पु० राजा ।
नरोत्तम—पु० ईश्वर ।
नर्त्तक—पु० नाचने वाला, चारण, शिव ।
नर्त्तकी--स्त्री० नाचने वाली ।
नर्त्तन—पु० नाच ।
नर्द—स्त्री० चौसर की गोटी ।
नर्दन—पु० भीषण ध्वनि ।
नर्म—नरम । पु० हँसी, ठट्ठा, हँसी-ठट्ठा करने वाला सखा ।

नर्मसचिव--पु० विदूषक।
नल--पु० नरकट, कमल, पोली लंबी चीज, पनाला, नाली।
नलिका--स्त्री० नली तरकस।
नलिनी--स्त्री० कमलनी, नदी।
नलिनीरुह--पु० मृणाल, ब्रह्मा।
नव--नया, नौ।
नवग्रह-पु० फलित ज्योतिष में नौ ग्रह कहे गये हैं--सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।
नवधा भक्ति --स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति, जो ये हैं--श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, बंदन, सख्य, दास्य, आत्मनिवेदन।
नवनीत--पु० मक्खन।
नवम--नवाँ।
नवमल्लिका--स्त्री० चमेली।
नवमी--स्त्री० पक्ष की नवीं तिथि।
नवयुवक, नवयुवा-पु० नौजवान।
नवयौवना--स्त्री० वह स्त्री जिसकी युवावस्था आरम्भ हुई हो।
नवरंग--सुन्दर नये रंग का।
नवरंगी--नित्य नया आनन्द करने वाला, हँसमुख।
नवरत्न--पु० नौ रत्न जो ये हैं--मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा लहसुनिया, पद्मराग और नीलम।
नवरात्र--पु० चैत और आश्विन के शुक्ल पक्ष की प्रथम नौ तिथियाँ जिनमें नव दुर्गा का व्रतादि करते हैं।
नवल-नया, सुंदर, जवान, उज्ज्वल।
नवलकिशोर--पु० श्रीकृष्ण।
नवला--स्त्री० युवती। [शिक्षा प्राप्त।
नवशिक्षित--पु० नौसिखुआ, नवीन
नवाज--कृपा करनेवाला।
नवाजना--कृपा करना।
नवाजिश--स्त्री० मेहरबानी, कृपा।
नवाब--शानशौकत से रहने वाला। मुगल बादशाह के समय प्रांत के सूबेदार, एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार मुसलमान अमीरों को देती है।
नवाबजादा--पु० नवाब का पुत्र।
नवाबी--स्त्री० नवाब का पद या काम, नवाब होने की दशा, नवाबों का राजत्वकाल, नवाबों की सी हुकूमत, बहुत अधिक अमीरी।
नवाह--पु० रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।
नवीन--नया, विचित्र, जवान।
नवीस--पु० लेखक।
नवीसी--स्त्री० लिखाई।
नवेद--पु० निमंत्रण, निमंत्रणपत्र।
नवेला--नया, जवान। [नवयौवना।
नवोढ़ा--स्त्री० नवविवाहिता स्त्री,
नव्य--नया।
नशा--पु० मादक द्रव्य, वह दशा जो मादक द्रव्य सेवन से हो, मद, गर्व।
नशा छाना--नशा चढ़ना।

नशाखोर—पु० नशेबाज।
नशाना—भ्रष्ट करना।
नशीन—बैठनेवाला।
नशीला--मादक। मु० नशीली आँखें = मदमत्त आँखें।
नशेबाज--पु० नशा सेवन करने वाला।
नश्तर-पु० फोड़ा चीरने का तेज चाकू।
नश्वर—नष्ट होने वाला।
नष्ट—जिसका नाश हो गया हो, जो अदृश्य हो, नीच, व्यर्थ।
नष्टभ्रष्ट--बिलकुल टूटाफूटा।
नष्टा—स्त्री० वेश्या, कुलटा। [सुंघनी।
नस—स्त्री० रक्त वाहिनी नली,
नसतालीक—पु० साफ और सुंदर लिखावट, 'घसीट' का उलटा।
नसर—पु० गद्य।
नसल—स्त्री० वंश। [= प्राप्त होना।
नसीब-पु० भाग्य। मु० नसीब होना
नसीबवर—भाग्यवान्।
नसीहत—स्त्री० उपदेश।
नसेनी—स्त्री० सीढ़ी।
नहर—स्त्री० वह कृत्रिम जलमार्ग जो सिंचाई या यात्रा आदि काम में आता है।
नहूसत—स्त्री० मनहूसी, दुर्भाग्य।
नांदी--स्त्री० अभ्युदय, समृद्धि, मंगलाचरण।
नाइत्तिफाकी--स्त्री० मतभेद।
नाइन—स्त्री० नाई की स्त्री।

नाई--स्त्री० समान, तुल्य। पु० हजाम।
नाउम्मेद—निराश।
नाउम्मेदी—स्त्री० निराशा।
नाक—स्त्री० नासिका, नेटा, प्रतिष्ठा की वस्तु, प्रतिष्ठा, स्वर्ग, आकाश, अस्त्र का एक आघात। मु० नाक कटना = इज्जत जाना। (किसी की) नाक का बाल = सदा साथ रहनेवाला, घनिष्ट मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना = क्रोध आना। नाकों चने चबवाना = खूब हैरान करना। नाक-भौं सिकोड़ना = अरुचि या अप्रसन्नता प्रकट करना। नाक में दम लाना = बहुत हैरान करना। नाक रगड़ना = बहुत गिड़गिड़ाना। नाक रख लेना = इज्जत रख लेना।
नाक़दरी—अपमान।
नाका—पु० रास्ते का ओर या छोर, वह स्थान जहाँ निगरानी के लिये पुलिस तैयार हो, फाटक, सुई का छेद। [कहीं आने जाने की मनाही।
नाकाबंदी—स्त्री० किसी रास्ते से
नाकाबिल—अयोग्य। [निकम्मा।
नकाम, नकारा—निरर्थक, बेकार,
नाकिस—खराब, हानिकारक।
नाखुश—नाराज।
नाखुशी—नाराजी, अप्रसन्नता।
नाखून—नख।
नाग—पु० साँप, एक प्राचीन देश

और वहाँ की जाति, हाथी, राँगा, सीसा, नागकेसर, पान, बादल, आठ की संख्या ।

नागकेसर—पु० एक फूल ।

नागनग—पु० गजमुक्ता ।

नागपति—पु० शेषनाग, ऐरावत ।

नागपाश, नागफाँस—पु० एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे ।

नागबेल—स्त्री० पान, पान की लत्ती।

नागर—नगर संबंधी, नगरवासी । नगरवासी पुरुष, चतुर आदमी, देवर । [चतुराई ।

नागरता—स्त्री० नागरिकता, सभ्यता,

नागरबेल—स्त्री० पान ।

नागराज—पु० शेषनाग, ऐरावत ।

नागरिक—नगर संबंधी, नगरवासी, चतुर । [से युक्त होने की अवस्था ।

नागरिकता—स्त्री० नागरिक अधिकारों

नागरी—स्त्री० नगरवासिनी स्त्री, देवनागरी लिपि ।

नागलोक—पु० पाताल ।

नागवल्ली—स्त्री० पान ।

नागवार—असह्य, अप्रिय ।

नागा—पु० अंतर, बीच, उस संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं ।

नागाशन—पु० गरुड़, मयूर, सिंह ।

नागिन—स्त्री० नाग की स्त्री ।

नागेंद्र—पु० बड़ा सर्प, ऐरावत ।

नागौरी—नौगर की अच्छी जाति का (बैल आदि) ।

नाचरंग—पु० आमोद-प्रमोद ।

नाचार—असमर्थ, लाइलाज ।

नाचीज—तुच्छ, अप्रतिष्ठित । [गर्व ।

नाज—पु० अन्न, खाद्य द्रव्य, नखरा,

नाज़नीन—स्त्री० सुन्दरी, कोमलांगी ।

नाजायज—अनुचित ।

नाजिम—प्रबंधकर्त्ता ।

नाजिर—देखनेवाला, लेखकों का अफसर, ख्वाजा, वेश्याओं का दलाल । [पतला, सूक्ष्म ।

नाज़ुक—सुन्दर, कोमल, सुकुमार,

नाटक—पु० अभिनेता, अभिनय, अभिनय ग्रंथ । [नाटक होता है ।

नाटकशाला—स्त्री० वह घर जहाँ

नाटकावतार—पु० किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय । [चार अंक हों ।

नाटिका—स्त्री० वह नाटक जिसमें

नाट्य—पु० नटों का काम, अभिनय, स्वांग ।

नाट्योक्ति—स्त्री० वे विशेष विशेष संबोधन शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिये नाटकों में आते हैं ।

नाठना—नष्ट होना या करना ।

नाड़ा—पु० इजारबंद ।

नाड़ी—स्त्री० नली, रक्तवाहिनी नालियाँ, नासूर का छेद, समय का

एक मान जो छ क्षण का होता है।

नाड़ीचक्र—पु० नाभिदेश में कल्पित एक अंडाकार गाँठ जिससे निकल कर सब नाड़ियाँ फैली हैं।

नाड़ीमंडल—पु० विषुवत् रेखा।

नाता—पु० रिश्ता, संबंध।

नाताकत—निर्बल।

नाताकती—स्त्री० निर्बलता, कमजोरी।

नाते—संबंध से, लिये।

नातेदार—संबंधी।

नाथ—पु० मालिक, पति, नकेल।

नाद—पु० शब्द, वर्णों का अव्यक्त, रूप, सानुसिक स्वर, संगीत।

नादना—बजना, बजाना, गरजना, प्रफुल्लित होना।

नादान—नासमझ।

नादानी—स्त्री० नासमझी।

नादिरशाही—स्त्री० भारी अत्याचार। वि० बहुत कठोर और उग्र।

नादिहंद—न देनेवाला। [अनुयायी।

नानकशाही—पु० नानकशाह का

नानखताई-स्त्री० मीठी खस्ता टिकिया

नान-को-ओपरेशन—पु० असहयोग।

नाना—अनेक प्रकार के, अनेक। झुकाना, डालना, घुसाना। पु० पुदीना, मा का पिता।

नानी—स्त्री० मा की मा। मु० नानी याद आना या नानी मरना = दुःख सा पड़ जाना।

नाप—स्त्री० माप। [सिर काटना।

नापना—मापना। मु० सिर नापना =

नापसंद—जो पसंद न हो, अप्रिय।

नापाक—अशुद्ध, मैलाकुचैला।

नापित—पु० नाई।

नाफा—पु० कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृग की नाभि में होती है।

नाबालिग—कम उम्रका, अप्राप्तवयस्क।

नाबूद—नष्ट। [भाग। कस्तूरी।

नाभि—स्त्री० ढोंढ़ी, पहिये का मध्य।

नामंजूर—अस्वीकृत।

नाम—पु० संज्ञा, यश, प्रसिद्धि। मु० नाम के लिये = थोड़ा सा। नाम धरना = बदनाम करना। (किसी के) नाम पर मरना = प्रेम में लीन होना। नाम लगाना = दोष मढ़ना।

नामक—नाम का।

नामकरण, नामकर्म—पु० नाम रखना, नाम रखने का संस्कार।

नामजद—जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो, प्रसिद्ध।

नामधराई—स्त्री० बदनामी।

नामधारी—नामक, नामवाला।

नामनिशान—पु० चिन्ह, पता।

नामबोला—पु० भक्ति पूर्वक नाम स्मरण करने वाला।

नामर्द—नपुंसक, कायर।

नामलेवा—पु० नाम लेने वाला, संतान।
नामवर—प्रसिद्ध।
नामवरी—स्त्री० प्रसिद्धि। [अयुक्त।
नामाकूल—जो ठीक न हो, अयोग्य,
नामावली—स्त्री० नामों की, सूची।
नामिनेटेड—नामजद, मनोनीत।
नामी—नामधारी, प्रसिद्ध।
नामुनासिब—अनुचित। [असंभव।
नामुमकिन—जिसका होना कठिन हो,
नामुराद—जिसकी इच्छाएँ पूरी न हुई हों, विफलमनोरथ।
नामुवाफिक—विरुद्ध।
नामेहरबान—अकृपालु।
नायक—पु० नेता, मालिक, शृँगार का साधक, रूप-यौवन-संपन्न पुरुष, प्रेमाभिलाषी पुरुष, वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो, कलावंत।
नायब—सहायक, मुख्तार।
नायिका—स्त्री० रूप-यौवन-संपन्ना स्त्री, प्रेमाभिलाषिणी युवती, वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।
नारंगी—स्त्री० एक फल, नारंगी सा पीलापन लिये लाल रंग।
नार—स्त्री० गरदन। पु० इजारबंद।
नारकी—पापी।
नारसिंह—पु० नरसिंह रूपधारी विष्णु।
नारा—पु० इजारबंद।
नाराच—पु० लोहे का बाण, दुर्दिन।
नाराज—अप्रसन्न, नाखुश।
नारायण—पु० विष्णु। [गंडक।
नारायणी—स्त्री० दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा,
नारिकेल—पु० नारियल।
नारी—स्त्री० स्त्री, औरत।
नाल—स्त्री० कमल आदि फूलों की लंबी डंटी। डंटी, नली, नल। पु० घोड़े के पैर में जड़ने की लोहे की चीज।
नालायक—अयोग्य, निकम्मा।
नालिका—स्त्री० छोटी नाल या डंठल, नाली।
नालिश—स्त्री० फरियाद।
नाव—स्त्री० नौका।
नावक—पु० एक प्रकार का छोटा बाण, मधुमक्खी का डंक, मल्लाह।
नावाकिफ—अनजान।
नाविक—पु० मल्लाह।
नाश—पु० ध्वंस।
नाशवान्—नश्वर नष्ट होनेवाला।
नाश्ता—पु० जलपान।
नासा—स्त्री० नाक, नाक का छेद।
नासापुट—पु० नाक का छेद।
नासिका—स्त्री० नाक।
नासूर—पु० फोड़े आदि के भीतर

दूर तक गया हुआ छेद ।
नास्तिक—पु० ईश्वर या परमेश्वर आदि को न मानने वाला ।
नास्तिवाद—पु० नास्तिकों का मत ।
नाह—पु० नाथ ।
नाहक—व्यर्थ ।
नाहर—पु० सिंह, बाघ, टेसू का फूल ।
निंदक—निंदा करने वाला ।
निंदनीय—निंदा योग्य, बुरा ।
निंदा—स्त्री० शिकायत, दोषकथन, बदनामी । [स्तुति ।
निंदास्तुति—स्त्री० निंदा के बहाने
निंद्य—निंदनीय, बुरा ।
निंब—स्त्री० नीम ।
निः—दे० "नि" ।
निःशंक—निडर ।
निःशेष—समूचा, समाप्त ।
निःश्रेणी—स्त्री० सीढ़ी । [भक्ति, विज्ञान ।
निःश्रेयस—पु० मोक्ष, कल्याण,
निःश्वास—पु० साँस ।
निःसंकोच—बेधड़क । [रहित ।
निःसंग—संग रहित, निर्लिप्त, वासना
निःसंतान—संतानरहित ।
निःसंदेह—बेशक ।
निःसंशय—संदेहरहित ।
निःसरण—पु० निकास, निकलना, निर्वाण, मरण ।
निःसीम—सीमारहित ।
निःस्पृह—इच्छारहित, निर्लोभ ।
निःस्वार्थ—स्वार्थरहित ।
नि—एक उपसर्ग जो इन अर्थों का बोधक है—संघ, समूह, अधोभाव, अत्यंत, आदेश, नित्य, कौशल, बंधन अन्तर्भाव, समीप ।
निकंदन—पु० नाश ।
निकट—पास । पास का ।
निकटवर्ती, निकटस्थ—पासवाला ।
निकम्मा—बेकाम का ।
निकर—पु० समूह, राशि, निधि ।
निकल—पु० एक धातु ।
निकलंक—दोषरहित । [सुंदरता ।
निकाई—स्त्री० भलाई, अच्छापन,
निकाय—पु० समूह, ढेर, घर, परमात्मा ।
निकास—पु० निकलने की क्रिया या भाव, छेद, द्वार, दरवाजा, मैदान, उद्गम स्थान, वंश का मूल, रक्षा का उपाय, निर्वाह का ढंग, आमदनी का रास्ता, आमदनी, खपत ।
निकाह—पु० मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह ।
निकुंज—पु० लतागृह ।
निकृष्ट—बुरा, नीच ।
निकेत—पु० घर, स्थान ।
निक्षिप्त—फेंका हुआ, त्यक्त ।
निक्षेप—पु० फेंकना, चलाना, छोड़ना, पोंछना, धरोहर, थाती ।
निखट्टू—निकम्मा ।

निखरना—निर्मल होना, रंगत का खुलता होना।
निखबख—बिलकुल।
निखालिस—बिना मिलावट का, विशुद्ध,
निखिल—संपूर्ण, सब।
निगम—पु० मार्ग, वेद, हाट, मेला, रोजगार, निश्चय।
निगमागम—पु० वेदशास्त्र।
निगराँ—रक्षक।
निगरानी—स्त्री० देखरेख।
निगहबान—रक्षक।
निगहबानी—स्त्री० रक्षा, बचाव।
निगाह—स्त्री० नजर, चितवन, मेहरबानी, ध्यान, परख।
निगूढ़—अत्यंत गुप्त।
निगृहीत—धरा हुआ, आक्रमित, पीड़ित, दंडित।
निगोड़ा—अभागा, नीच।
निग्रह—पु० रोक, दमन, रोकने का उपाय, दंड, पीड़न, बंधन, फटकार, सीमा।
निघटना—कम होना।
निचय—पु० समूह, निश्चय, संचय।
निचुड़ना—गरना, सारहीन होना।
निचोड़—पु० सार, सत, सारांश।
निचोल—पु० स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।
निचौहाँ—झुका हुआ।
निछावर—स्त्री० एक टोटका, जिसमें किसीकी रक्षा के लिये कोई चीज उसके माथे या सारे अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या फेंक देते हैं, उत्सर्ग, उतारा, इनाम। मु० किसी पर निछावर होना = किसी के लिये मर जाना। [खासकर।
निज—अपना, खास, ठीक। निश्चय,
निजाम—पु० इंतजाम, हैदराबाद के नवाबों का पदवीसूचक नाम।
निठल्ला, निठल्लू—बेरोजगार।
निठाला—पु० वह समय जब कोई काम न हो या कोई आमदनी नहीं हो। [निर्दय, कठोर।
निठुर—जिसके दिल में दया न हो,
निडर—निर्भय, साहसी, ढीठ।
नितंब—पु० चूतड़, कंधा। [सुंदरी।
नितंबिनी—स्त्री० सुंदर नितंबवाली स्त्री,
नित—रोज, सदा।
नितांत—बहुत अधिक, बिलकुल।
नित्य—प्रति दिन, सदा। रोज का, सब दिन रहने वाला। शाश्वत।
नित्यता—स्त्री० सदा रहने का भाव या क्रिया, अनश्वरता।
नित्यप्रति—हर रोज।
नित्यशः—रोज, सदा।
निथरना—किसी द्रव पदार्थ का स्थिर होकर नीचे मैल बैठ जाना।
निदरना—निरादर करना, मात करना।

निदर्शन—पु० दिखाने का कार्य, उदाहरण ।
निदाघ—पु० गरमी, धूप, ग्रीष्मकाल ।
निदान—अन्त में । निकृष्ट । पु० आदि कारण, कारण, रोग की पहचान, रोग का लक्षण, अंत, तप के फल की चाह, शुद्धि । [निर्दय ।
निदारुण—कठिन, घोर, दुःसह,
निदिध्यासन—पु० बार बार स्मरण।
निदेश—पु० शासन, हुक्म, कथन ।
निर्द्धि—स्त्री० दे० 'निर्दोष'
निद्रा—स्त्री० नींद, स्वप्न ।
निद्रालु—सोने वाला ।
निद्रित—सोया हुआ ।
निधड़क—बेरोक, बेखटके ।
निधन—निर्धन । पु० नाश, मरण, कुल, कुल का अधिपति, विष्णु ।
निधान—पु० आधार, निधि, लयस्थान ।
निधि—स्त्री० खजाना, कुबेर के नौ प्रकार के रत्न, समुद्र, आधार, घर, विष्णु, शिव, नौ की संख्या ।
निधिनाथ—पु० कुवेर ।
निनाद—पु० शब्द ।
निपंग—लंगड़ा, अपाहिज ।
निपट—निरा, बिलकुल ।
निपटना—छुट्टी पाना, निबटना ।
निपात—बिना पत्तों का । पु० पतन, अधःपतन, विनाश, मृत्यु ।
निपातन—पु० गिराने का कार्य, नाश ।
निपीड़न—पीड़ित करना, मलना, दलना, पेरना ।
निपुण—दक्ष ।
निब—स्त्री० लोहे आदि की बनी कलम की नोक ।
निबंध—पु० बंधन, लेख, गीत ।
निबटना—छुट्टी पाना, समाप्त होना, तय होना, खतम होना ।
निबटेरा—पु० छुट्टी, समाप्ति, फैसला । [गुँधा हुआ, जुड़ा हुआ ।
निबद्ध—बँधा हुआ, रुका हुआ,
निबाह—पु० गुजारा, पूरा करने का कार्य, छुटकारे का ढंग, संबंध या परंपरा की रक्षा ।
निबेड़ना—छुड़ाना, बिलगाना, छाँटना, सुलझाना, फैसला करना, दूर करना ।
निबौरी—स्त्री० नीम का फल ।
निभना—पार पाना, जारी रहना, गुजारा होना, पूरा होना, पालन होना ।
निभृत—रखा हुआ, निश्चल, गुप्त, बंद किया हुआ, निश्चित, नम्र, शांत, निर्जन, एकांत, पूर्ण ।
निमंत्रण—पु० न्यौता, बुलावा ।
निमग्न—डूबा हुआ, तन्मय ।
निमज्जन—डूबना, डूबकर किया जानेवाला स्नान ।
निमटना—निबटना, छुट्टी पाना ।

निमि—पु० निमेष। [उद्देश्य।
निमित्त—हेतु, कारण, चिह्न, लक्षण,
निमित्तक—किसी हेतु से होनेवाला।
निमिराज—पु० राजा जनक।
निमिष, निमेष—पु० पलक का गिरना, पलक गिरने भर का समय, पल।
निम्न—नीचा।
निम्नगा—स्त्री० नदी।
नियंता—पु० नियम बाँधनेवाला, कार्य चलाने वाला, शासक।
नियंत्रण—पु० नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना। [हुआ।
नियंत्रित—नियमित, नियम से जकड़ा
नियत—नियम द्वारा स्थिर, परिमित, निश्चित, तैनात।
नियति—स्त्री० नियत होने का भाव, स्थिरता, भाग्य, दैव, अवश्य होने-वाली बात।
नियम—पु० बँधा हुआ क्रम, दस्तूर, विधि, व्यवस्था, कानून, शर्त, संकल्प, शासन, दबाव, रोक, परि-मिति, विष्णु, शिव। [कार्य, शासन।
नियमन—पु० नियमबद्ध करने का
नियमित—क्रमबद्ध, नियमबद्ध।
नियर—नजदीक।
नियाजमंद—कृपापात्र।
नियामक—नियम करनेवाला, व्यवस्था या विधान बनानेवाला, मारनेवाला।
नियामत—स्त्री० दुर्लभ पदार्थ, स्वादिष्ट भोजन, धन-दौलत।
नियुक्त—तैनात, मुकर्रर, प्रेरित, स्थिर किया हुआ।
नियुक्ति—स्त्री० बहाली, तैनाती।
नियुद्ध—पु० कुश्ती।
नियोक्ता—पु० तैनात करनेवाला, नियोग करनेवाला।
नियोग—पु० तैनाती, प्रेरणा, अव-धारण, आज्ञा, पति के मर जाने या पति से संतान न होने पर किसी अन्य व्यक्ति से संतान उत्पन्न करने का कार्य।
नियोजन—काम में लगाना।
निरंकार—निराकार।
निरंकुश—जिसके लिये कोई अंकुश या प्रतिबंध नहीं हो, बिना रोक का।
निरंजन—पु० अंजन रहित, काजल रहित, दोष रहित, माया से निर्लिप्त। पु० परमात्मा।
निरंतर—अंतर रहित, लगातार, स्थायी, घना। बराबर, सदा।
निरक्ष देश—पु० भूमध्यरेखा के आसपास के देश जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।
निरक्षर—अक्षरशून्य, अनपढ़।
निरक्ष रेखा—स्त्री० भूमध्य रेखा।
निरखना—देखना।
निरत—लीन, मशगूल।
निरनुनासिक—जिसका उच्चारण

नाक के संबंध से न हो।
निरपराध—निर्दोष।
निरपेक्ष—जिसे किसी की अपेक्षा या चाह न हो, जो किसी पर निर्भर न हो, तटस्थ।
निरवेद—पु० वैराग्य, ताप।
निरभिमान—अभिमानरहित।
निरभिलाष—अभिलाषारहित।
निरभ्र—बादल रहित।
निरर्थक—अर्थ शून्य, व्यर्थ, निष्फल।
निरवयव—जिसका कोई रूप, आकार प्रकार न हो, निराकार। [हीन।
निरवलंब—बिना सहारे का, अवलंब-
निरवारना — टालना, छुड़ाना, छोड़ना, सुलझाना, तय करना।
निरशन—पु०—उपवास। [सूखा।
निरस—रसहीन, फीका, असार, रूखा।
निरस्त्र—बिना हथियार का, अस्त्रहीन।
निरहंकार—अहंकाररहित।
निरा—विशुद्ध, केवल, निपट, बिलकुल। [निवारण, खंडन।
निराकरण-छाँटना, हटाना, मिटाना,
निराकार—आकार-रहित। पु० ईश्वर, आकाश। [बहुत व्याकुल।
निराकुल—जो व्याकुल नहीं हो,
निरादर—पु० अपमान।
निराधार—आधार या सहारा-रहित, प्रमाण रहित, झूठ, जो बिना अन्न-जल के हो।

निरापद—सुरक्षित, खतरे से रहित।
निरामय—तन्दुरुस्त, नीरोग।
निरामिष—जिसमें मांस न मिला हो, जो मांस को न खाय।
निरालंब—जिसका कोई मददगार न हो, निराश्रय।
निरालस्य—फुरतीला।
निराला—एकांत, अद्भुत, अनूठा। पु० एकांत स्थान।
निरावलंब-निराश्रय, अनाथ।
निराश—नाउम्मीद।
निराशा—स्त्री० नाउम्मीदी। [रहित।
निराहार—बिना खाये-पीये, आहार-
निरीक्षक— देखनेवाला, देखरेख करनेवाला। [चितवन।
निरीक्षण—पु० दर्शन, निगरानी,
निरीश्वरवाद—पु० ईश्वर को न मानने का सिद्धांत।
निरीह—जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे, जिसे किसी बात की चाह न हो, उदासीन, शांतिप्रिय।
निरुक्त—निश्चय रूप से कहा हुआ, नियुक्त। पु० वेद का चौथा अंग।
निरुक्ति—स्त्री० ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो।
निरुज—दे० "नीरूज"।
निरुत्तर—जिसका उत्तर न हो, जो उत्तर न दे सके।
निरुत्साह—उत्साहहीन।

निरुद्यम—उद्यम रहित ।
निरुद्योग—उद्योगरहित ।
निरुपद्रव—उपद्रव रहित ।
निरुपम—जिसकी कोई बराबरी न कर सके, उपमा रहित ।
निरुपयोगी—निरर्थक, बेकार ।
निरुपाधि—बाधा-रहित, माया-रहित पु० ब्रह्म ।
निरुपाय—जो उपाय न कर सके, जिसका उपाय न हो ।
निरूपण—पु० प्रकाश, निदर्शन, विवेचनापूर्वक निर्णय ।
निरोग-स्वस्थ । [की वृत्तियों की रोक ।
निरोध—पु० रोक, घेरा, नाश, चित्त
निर्ख—पु० भाव, दर ।
निर्गंध—जिसमें महक न हो, गंधहीन ।
निर्गत—निकला हुआ ।
निर्गम—पु० निकास ।
निर्गुण—सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों से परे, जिसमें कोई अच्छा गुण न हो । पु० परमेश्वर ।
निर्घंट—पु० शब्द या ग्रन्थसूची ।
निर्घृण—जिसे गंदे पदार्थों या कामों से घृणा न हो, नीच, निर्दय ।
निर्घोष—शब्द रहित । पु० शब्द ।
निर्जन—एकांत ।
निर्जीव—उत्साहहीन, जीवरहित ।
निर्झर—पु० झरना ।
निर्णय—पु० निश्चय, फैसला ।
निर्णीत—निर्णय किया हुआ ।
निर्दय—जिसमें दया न हो, निष्ठुर ।
निर्दिष्ट—बतलाया हुआ ।
निर्देश—पु० बतलाना, ठहराना, आज्ञा, कथन, जिक्र, वर्णन, नाम ।
निर्दोष—दोष रहित, बेकसूर ।
निर्द्वंद, निर्द्वंद्व—जिसका कोई विरोध करनेवाला नहीं हो, जो राग-द्वेष, मान-अपमान आदि द्वन्द्व से रहित हो, स्वच्छंद, मनमौजी ।
निर्धन—गरीब । [निश्चय, निर्णय ।
निर्धार, निर्धारण—पु० ठहराना,
निर्निमेष—बिना पलक झपकाये, एकटक । जो पलक न गिरावे ।
निर्बल—बलहीन, कमजोर ।
निर्बहन—निभना, पार होना ।
निर्बुद्धि—मूर्ख ।
निर्बोध—अनजान, जो कुछ न जाने ।
निर्भय—निडर । [हुआ ।
निर्भर—अवलंबित, भरा हुआ, मिला
निर्भीक—निडर ।
निर्भ्रम—भ्रमरहित । निधड़क ।
निर्भ्रांत—भ्रमरहित ।
निर्मम—ममता रहित, वासना रहित
निर्मल—स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष ।
निर्माण—पु० रचना, बनाना ।
निर्माता—बनानेवाला ।
निर्माल्य—पु० वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो, नैवेद्य ।

निर्मित—रचित, बनाया हुआ।
निर्मूल—बिना जड़ का, जड़ से उखाड़ा हुआ, बेबुनियाद, जो बिलकुल नष्ट हो गया हो।
निर्मूलन—पु० नाश करना, विनाश।
निर्मोही—निर्दय।
निर्यात—पु० विदेश भेजा हुआ माल।
निर्यातन—बदला चुकाना, प्रतिकार, मार डालना, बाहर भेजना।
निर्लज्ज—बेशर्म।
निर्लिप्त—जो लिप्त न हो, अनासक्त।
निर्लेप—लेपरहित, आशक्ति-रहित, माया-ममता से परे। पापशून्य।
निर्लोभ--लोभरहित।
निर्वंश—जिसका वंश नष्ट हो गया हो।
निर्वाचक--पु० चुननेवाला।
निर्वाचन--पु० चुनना।
निर्वाध—बाधा-रहित।
निर्वाण--बुझा हुआ, मृत। पु० बुझना, समाप्ति, अस्त शांति, मुक्ति।
निर्वासन--पु० निकालना, देश-निकाला, वध।
निर्वाह—पु० निवाह, पालन, समाप्ति।
निर्विकल्प—जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों आदि से रहित हो, स्थिर।
निर्विकार—विकाररहित।
निर्विघ्न—विघ्नरहित, सही सलामत।
निर्विवाद—विवादरहित।
निर्विशेष—पु० परमात्मा। किसी विशेषता से हीन।
निर्वीज—बीज रहित, कारण रहित।
निर्वीर्य्य—वीर्य्यहीन, निर्बल।
निर्व्याज—निष्कपट, सीधा, बाधारहित
निलय—पु० घर, स्थान।
निलहा—नीलवाला, नील संबंधी।
निवसन—पु० गाँव, घर, वस्त्र।
निवसना—रहना।
निवाज--कृपा करनेवाला।
निवाजिश—स्त्री० कृपा, मेहरबानी।
निवारण—पु० रोकना, हटाना, छुटकारा। मना करना।
निवारना—रोकना, बचाना, बिताना, मना करना।
निवाला—पु० कौर, ग्रास।
निवास--पु० रहना, रहने का स्थान, घर।
निविड़—घना, गहरा।
निविष्ट--एकाग्रचित्त, एकाग्र, लपेटा हुआ, घुसाया हुआ, बाँधा हुआ।
निवृत्ति—स्त्री० मुक्ति, मोक्ष।
निवेदक--अर्ज करने वाला, प्रार्थी।
निवेदन--पु० प्राथना, समर्पण, अर्ज।
निवेश--पु० प्रवेश, खेमा, घर, विवाह।
निशंक--निडर।
निश--स्त्री० दे० "निशा"।
निशांत—पु० प्रभात, सवेरा।
निशांध—जिसे रात में न सूझे।
निशा—स्त्री० रात, हलदी।
निशाकर—पु० चंद्रमा। मुरगा।

निशाचर—पु० राक्षस, गीदड़, उल्लू, सर्प, चकवा, भूत, चोर, वह जो रात को चले। [अभिसारिका।
निशाचरी—स्त्री० राक्षसी, कुलटा,
निशाधीश—पु० चन्द्रमा।
निशान—पु० चिह्न, लक्षण, अँगूठे की छाप, पता-ठिकाना, झंडा।
निशानची, निशानबरदार—झंडा लेकर चलनेवाला।
निशापति—पु० चंद्रमा।
निशाना—पु० लक्ष्य, वार।
निशानाथ—पु० चन्द्रमा।
निशानी—स्त्री० स्मृतिचिह्न, निशान।
निशि—स्त्री० रात।
निशिकर—पु० चंद्रमा।
निशिचर—पु० दे० "निशाचर"।
निशिनाथ, निशिपाल—पु० चंद्रमा।
निशिवासर—पु० रात-दिन।
निशीथ—पु० रात, आधी रात।
निशीथिनी—स्त्री० रात।
निश्चय—पु० निःसंशय ज्ञान, विश्वास, निर्णय, दृढ़ संकल्प।
निश्चयात्मक—ठीक ठीक। [स्थिर।
निश्चल—जो हिले-डुले नहीं, अटल,
निश्चिंत—बेफिक्र।
निश्चित—तै किया हुआ, ठीक।
निश्चेष्ट—चेष्टा रहित, अचेत, स्थिर।
निश्छल—छल रहित।
निश्वास—पु० साँस।

निश्शंक—शंका रहित, निडर। [हो।
निश्शेष—जिसमें कुछ बाकी न बचा
निषंग—पु० तरकश, खड्ग।
निषाद—पु० एक प्राचीन अनार्य जाति। मल्लाह।
निषिद्ध—जिसका निषेध किया गया हो, खराब।
निषेध—पु० मनाही, बाधा। निर्विघ्न।
निष्कंटक—बिना रोक-टोक के।
निष्क—पु० वैदिक काल का एक सिक्का, एक तौल, सुवर्ण, हीरा।
निष्कपट—दगाबाज नहीं, निश्छल।
निष्कर्म—बिना काम का, कर्मरहित।
निष्कर्ष—पु० निचोड़, सार, निश्चय।
निष्कलंक—पाप रहित, निर्दोष।
निष्काम—जो किसी चीज की इच्छा न करे, कामनारहित।
निष्कारण—बेसबब, व्यर्थ।
निष्काशन—पु० निकालना।
निष्क्रमण—पु० बाहर निकलना।
निष्क्रिय—जो कुछ न करे, निश्चेष्ट।
निष्क्रिय प्रतिरोध—पु० शांतिपूर्वक विरोध। [के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।
निष्ठ—स्थित, तत्पर, जिसमें किसी
निष्ठा—स्त्री० स्थिति, निर्वाह, चित्त का जमना, विश्वास, श्रद्धा-भक्ति, नाश, ज्ञान की अन्तिम अवस्था।
निष्ठुर—निर्दय, कड़ा।

निष्णात— निपुण, विज्ञ ।
निष्पंद — जो हिले-डुले नहीं, कंपरहित ।
निष्पक्ष—पक्षपात रहित ।
निष्पत्ति—स्त्री० समाप्ति, सिद्धि, निर्वाह, मीमांसा, निश्चय । [हो ।
निष्पन्न—जो समाप्त या पूरा हो चुका
निष्पीड़न—पु० निचोड़ना, दुःख देना ।
निष्प्रभ—जिसमें चमक न हो, प्रभाहीन ।
निष्प्रयोजन—स्वार्थशून्य, व्यर्थ ।
निष्फल—व्यर्थ, निरर्थक ।
निसबत—स्त्री० संबंध, विवाह-संबंध की बात, मुकाबला ।　[सृष्टि ।
निसर्ग—पु० प्रकृति, आकृति, दान,
निसार—पु० निछावर, बलिदान ।
निसास —पु० गहरी या ठंढी साँस ।
निस्तत्त्व—विना सार का, तत्वरहित ।
निस्तब्ध—निश्चेष्ट, जो हिलता-डुलता न हो ।　[सन्नाटा ।
निस्तब्धता—निश्चेष्टता, खामोशी,
निस्तरण, निस्तार—पु० पार होना छुटकारा, मोक्ष ।
निस्तीर्ण—जो पार हो चुका हो, मुक्त ।
निस्तेज—मलिन ।[कामना से रहित ।
निःस्पृह—स्पृहा अर्थात् लोभ या
निस्फ—आधा ।
निस्बत — स्त्री० तालुक, संबंध ।
निस्संकोच—संकोच रहित, बेधड़क ।
निस्संतान—संतान रहित ।
निस्संदेह—जरूर, अवश्य ।
निस्सरण—पु० निकलना, निकलने का मार्ग ।
निस्सार—साररहित, बेकार ।
निस्सीम—सीमा रहित, बहुत अधिक ।
निस्स्वार्थ—स्वार्थ रहित ।
निहंग—अकेला, नंगा, बेशरम ।
निहंगलाड़ला—जो लड़का दुलार के कारण उद्दंड हो गया हो । [वाला ।
निहंता—नाश करने वाला, प्राण लेने
निहत्था—शस्त्रहीन, निर्धन ।
निहाई—स्त्री० लोहे का वह चौकोर औजार जिसपर किसी धातु को रख कर पीटते हैं ।
निहायत—बहुत, अत्यंत ।
निहार—पु० पाला, ओस, बरफ ।
निहारना— देखना ।
निहाल—सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न, पूर्णकाम, कामयाब, सफल ।
निहाली—स्त्री० गद्दा, निहाई ।
निहित—रखा हुआ ।
निहोरा—द्वारा, वास्ते । पु० उपकार अनुग्रह, प्रार्थना, भरोसा ।
नींद —स्त्री० निद्रा ।
नीक—अच्छा । पु० अच्छापन ।
नीके—अच्छी तरह ।
नीच—क्षुद्र, तुच्छ ।
नीचऊँच—अच्छा बुरा, भलाई-बुराई, गुण-अवगुण, हानि-लाभ, सुख-दुख ।

नीचा—ऊँचा का उलटा । मु० नीचा दिखाना = परास्त करना, लज्जित करना, अपमानित करना ।

नीचाशय—क्षुद्र, ओछा ।

नीठि—ज्यों त्यों करके, मुश्किल से । स्त्री० अरुचि ।

नीड़—पु० घोंसला ।

नीति—स्त्री० ले जाने की क्रिया, व्यवहार की रीति, सदाचार, राजविद्या, राज्य रक्षा के लिये काम में लायी जाने वाली युक्ति, उपाय ।

नीतिज्ञ—नीति जानने वाला ।

नीतिमान—सदाचारी ।

नीतिशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें नीति की बातें हों ।

नीम—आधा । एक पेड़ ।

नीमास्तीन—आधी बाँह की कुरती ।

नीयत—स्त्री० आंतरिक लक्ष्य, मंशा, उद्देश्य, इच्छा ।

नीर—पु० पानी, रस । मु० आँख का नीर ढल जाना = निर्लज्ज हो जाना ।

नीरज—पु० जल में उत्पन्न वस्तु, कमल, मोती । [बादल ।

नीरद—विना दाँत का, अदंत । पु०

नीरधि—पु० समुद्र ।

नीरस—रस-हीन, सूखा, फीका, जिसमें मन न लगे ।

नीरोग—स्वस्थ ।

नील—नीले रंग का । पु० नीला रंग, एक पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है, चोट का दाग, कलंक, नीलम, सौ अरब की संख्या ।

नीलकंठ—जिसका कंठ नीला हो । पु० एक छोटी चिड़िया, मोर, शिव ।

नीलम—पु० नीलमणि ।

नीललोहित—नीलापन लिये लाल रंग, बैंगनी रंग । पु० शिव ।

नीलांबुज—पु० नीले रंग का कमल ।

नीलाम—पु० बोली या डाक बोल कर बेचना ।

नीलिमा—स्त्री० नीलापन, श्यामता ।

नीलोत्पल—पु० नील कमल ।

नींव—नीव—स्त्री० मूल भित्ति, दीवार का आधार, जड़, बुनियाद । मु० नींव पड़ना—सूत्रपात होना, जड़ खड़ी होना या जमना ।

नीवि, नीवी—स्त्री० कमर में लपेटी हुई साड़ी की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे बाँधती हैं ।

नीहार—पु० कुहरा, पाला ।

नीहारिका—स्त्री० आकाश में धुएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अंधेरी रात में सफेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई देता है ।

नुकता—पु० बिंदु, चुटकुला, ऐब ।

नुकताचीनी—स्त्री० छिद्रान्वेषण, दोष निकालने का काम ।

नुकसान--पु० घटी, क्षति, दोष ।
नुकीला—नोकदार, तिरछा ।
नुक्कड़--पु० नोक, छोर, कोना ।
नुक्स—पु० दोष, त्रुटि, ऐब ।
नुनाई—स्त्री० सुन्दरता ।
नुमाइश—स्त्री० प्रदर्शन, सजधज, प्रदर्शनी ।
नुमाइशी—दिखाऊ ।
नुमायाँ—प्रत्यक्ष, प्रकट ।
नुसखा—पु० लिखा हुआ कागज,वह पुरजा जिसमें रोगी के लिये औषध और उसकी सेवन-विधि लिखी हो ।
नूतन—नया, अनोखा ।
नूपुर—पु० पैंजनी ।
नूर—पु० ज्योति, काँति ।
नूरचश्म—पु० आँखकी ज्योति,बेटा ।
नृ—पु० नर, मनुष्य । [पुरुष ।
नृकेशरी—नृसिंह अवतार, श्रेष्ठ
नृत्य—पु० नाच ।
नृत्यशाला—स्त्री० नाचघर ।
नृदेव—पु० राजा, ब्राह्मण ।
नृप—पु० राजा ।
नृपति, नृपाल—पु० राजा ।
नृमेध—पु० नरमेध नाम का यज्ञ ।
नृशंस—क्रूर, अत्याचारी ।
नृसिंह, नृहरि—पु० विष्णु का एक अवतार जिनका आधा शरीर मनुष्य सा और आधा सिंह सा था, श्रेष्ठ पुरुष, पुरुषोत्तम ।

नेक—थोड़ा । भला, सज्जन ।
नेकचलन—सदाचारी ।
नेकचलनी—स्त्री० सदाचार ।
नेकनाम—यशस्वी । [विचार का ।
नेकनीयत—अच्छे संकल्प या
नेकबख्त—भाग्यवान । [उपकार ।
नेकी—स्त्री० भलाई, सज्जनता
नेग—पु० विवाह आदि अवसर पर संबंधियों या आश्रितों को कुछ दिये जाने का दस्तूर ।
नेचर—पु० प्रकृति, स्वभाव ।
नेटिव—देशी, देश का ।
नेता—पु० अगुआ, स्वामी ।
नेति—जिसका अन्त हो, इति नहीं ।
नेत्र—पु० आँख
नेपथ्य—पु० वेशभूषा, नाटक परदे के पीछे का स्थान ।
नेम—पु०नियम रीति,पवित्र आचरण ।
नेवाज—दे० "निवाज" ।
नेशनल—राष्ट्र का, राष्ट्रीय ।
नेशनलिस्ट—राष्ट्रवादी ।
नेसुक—तनिक । जरा सा ।
नेस्त—जो न हो ।
नेस्तनाबूद—नष्टभ्रष्ट । [नाश ।
नेस्ती—स्त्री० अनस्तित्व, आलस्य,
नेह—पु० स्नेह, प्रीति, तेल, घी ।
नैऋत्य—दक्षिण-पश्चिम कोण ।
नैकु, नैकु—पु० थोड़ा, जरा ।
नैगम—निगम संबंधी । पु० उपनिषद्

का भाग, नीति।
नैतिक—नीति संबंधी।
नैपुण्य—पु० निपुणता, चतुरता।
नैमित्तिक—जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो।
नैयायिक—न्याय जानने या करने वाला, न्यायवेत्ता।
नैराश्य—पु० नाउम्मेदी।
नैवेद्य—पु० वह भोजन-सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय।
नैष्ठिक—निष्ठावान्, धर्मात्मा।
नैसर्गिक—प्राकृतिक, कुदरती।
नोक—स्त्री० पतला अग्रभाग।
नोकझोंक—स्त्री०बनाव-सिंगार,ताना, दर्प, छेड़छाड़
नोट—पु० लिखा हुआ पर्चा, टिप्पणी। [कागजी रुपया।
नोटबुक—पु० याददास्त की पुस्तक।
नोटिस—स्त्री० पु० सूचना।
नोनिया—पु० एक जाति जिसका पेशा नमक बनाना है।
नौ—नया। एक संख्या। मु० नौ दो ग्यारह होना = देखते देखते भाग जाना, चंपत हो जाना।
नौकरशाही—स्त्री० वह शासन-प्रणाली जिसमें राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है, कर्मचारीतंत्र।
नौकरीपेशा—वह मनुष्य जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।
नौका—स्त्री० नाव।
नौजवान—नवयुवक।
नौनिहाल—पु० नया पौधा।
नौबत—स्त्री० बारी, पारी, गति, दशा, संयोग, वैभव या मंगलसूचक बाजा, विशेषत: नंगाड़ा और शहनाई। मु० नौबत झड़ना = नौबत बजना।
नौबतखाना—पु० फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठ कर नौबत बजायी जाती है।
नौमि—नमस्कार करता हूँ।
नौरंग—पु० औरंग (औरंगजेब) का रूपान्तर।
नौरोज—पु० पारसियों में नये वर्ष का पहला दिन जब कि बहुत आनंदोत्सव मनाया जाता है, त्यौहार।
नौलखा—नौ लाख मूल्य का।
नौशा—पु० दुलह, बर।
नौ-सेना—स्त्री० जलसेना।
न्यस्त—रखा हुआ, बैठाया हुआ, सजाया हुआ, छोड़ा हुआ।
न्याय—पु० इंसाफ, तर्कशास्त्र, दृष्टांत वाक्य या कहावत, जैसे—काकतालीय न्याय = संयोगवश होने वाला।
न्यायतः—न्याय से।
न्यायपरता—स्त्री० न्यायशीलता।
न्यायाधीश—पु० न्यायकर्त्ता।
न्यायालय—पु० अदालत।

न्यायी—पु० न्याय पर चलने वाला।
न्यारा—दूर, अलग, और ही, निराला।
न्याव—पु० न्याय, विवेक, वाजिब, बात, नियम, नीति। [संन्यास।
न्यास—पु० स्थापन, थाती, अर्पण,
न्यूज—पु० समाचार। [अखबार।
न्यूजपेपर—पु० समाचार पत्र,
न्यून—कम, घटकर।
न्यूनता—स्त्री० कमी।
न्यौछावर—स्त्री० दे० "निछावर"।
न्यौता—पु० निमंत्रण, बुलावा, दावत।

प

प—एक अक्षर।
पंक—पु० कीचड़।
पंक्चर—पु० छेद।
पंकज—पु० कमल।
पंकजात—पु० कमल।
पंकजासन—पु० ब्रह्मा।
पंकरुह—पु० कमल।
पंकिल—कीचड़ युक्त। [संख्या।
पंक्ति—स्त्री० श्रेणी, कतार, दस की
पंक्तिबद्ध—कतार में बँधा।
पंख—पु० डैना। मु० पंख जमना = न रहने का, बहकने का या प्राण खोने का लक्षण दिखाई देना।
पंखड़ी—स्त्री० पुष्पदल।[गिलाफ।
पंखापोश—पु० पंखे की ऊपर का
पंखी—पु० पक्षी, फतिंगा। स्त्री० छोटा पंखा।
पंगत—स्त्री० पाँती, भोज समाज।
पंगु—लँगड़ा।
पंच—पाँच। पु० समाज, जनता, न्याय करने वाली मण्डली, असेसर।
पंचक—पु० पाँच का समूह, पंचायत शकुन शास्त्र।
पंचकन्या—स्त्री० ये पाँच स्त्रियाँ—अहिल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी।
पंचकोस—पु० पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की भूमि।
पंचकोसी—स्त्री० काशी की परिक्रमा।
पंचक्रोश—पु० पंच कोस।
पंचगंगा—स्त्री० पाँच नदियों का समूह—गंगा, यमुना, सरस्वती, किरण, धूतपापा।
पंचगव्य—पु० गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो पवित्र माने जाते हैं और प्रायश्चित्त आदि में खिलाये जाते हैं।
पंचगौड़—पु० विंध्याचल के उत्तर

वसनेवाले ब्राह्मणों के देशानुसार पाँच भेद—सारस्वत, कान्यकुब्जी, गौड़, मैथिल और उत्कल ।

पंचतत्त्व—पु० ये पाँच तत्त्व—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ।

पंचदेव—पु० पाँच देव—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश, और देवी ।

पंचनद—पु० पाँच नदियाँ-सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम । पंजाब प्रदेश ।

पंचनामा—पु० वह कागज जिसपर पंच लोगों ने अपना फैसला लिखा हो ।

पंचप्राण—पु० पाँच प्राण या वायु—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान ।

पंचभूत—पु० पंचतत्त्व ।

पंचम—पाँचवाँ, सुन्दर, निपुण । पु० सात स्वरों में पंचम स्वर ।

पंचमकार—पु० वाम मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ।

पंचमहापातक—पु० ये पाँच महापाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी गुरुपत्नी-संयोग, और इन पापियों का संसर्ग ।

पंचमहायज्ञ—पु० ये पाँच कृत्य—संध्यावंदन, पितृतर्पण, होम, भूतयज्ञ, अतिथिपूजन ।

पंचराशिक—पु० एक हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है ।

पंचबाण, पंचशर—पु० कामदेव, कामदेव के पाँच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन, और उन्माद । पाँच पुष्पबाण ये हैं—कमल, अशोक आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल ।

पंचांग—पु० पाँच अंगवाली वस्तु । पत्रा जिसमें ये पाँच अंग होते हैं—वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ।

पंचाग्नि—स्त्री० पाँच प्रकार की अग्नियाँ, एक प्रकार का तप जिसमें चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठते हैं । [सिंह ।

पंचानन—पाँच मुखवाला । पु० शिव,

पंचामृत—पु० एक प्रकार का द्रव्य जो दूध, घी, दही, चीनी और मधु मिलाकर बनता है और जिससे देवताओं को स्नान कराया जाता है ।

पंचायत—स्त्री० पंचों की मंडली ।

पंचायतन—पु० पाँच देवों का समूह ।

पंचाली—स्त्री० गुड़िया, द्रौपदी ।

पंछी—पु० पक्षी ।

पंज—पाँच । हथेली सहित हाथ या पाँव की उँगलियाँ । [पिंजड़ा ।

पंजर—पु० हड्डियों का ठट्टर, शरीर,

पंजा—पाँच का समूह ।

पंजिका—स्त्री० पंचांग ।

पंजुम—पाँचवाँ ।
पंडा—पु० पुजारी तीर्थ पुरोहित ।
पंडाल—पु० किसी समारोह के वास्ते बना हुआ विस्तृत मंडप ।
पंडित—विद्वान्, कुशल । पु० शास्त्रज्ञ ब्राह्मण ।
[पीला ।
पंडु—पीलापन लिये मटमैला सफेद,
पंथ—पु० मार्ग, आचार, पद्धति, संप्रदाय ।
पंथान—पु० मार्ग ।
पंथी—पु० राही, बटोही, किसी संप्रदाय का अनुयायी ।
पँवरी—स्त्री० ड्योढ़ी, खड़ाऊँ ।
पंसारी—पु० मसाले या जड़ी बूटी बेचने वाला बनिया ।
पक्का—पका हुआ, पुष्ट, अभ्यस्त, निपुण, दृढ़, निश्चित, प्रामाणिक ।
पक्व—पका हुआ, पुष्ट । [पकवान ।
पक्वान्न—पु० पका हुआ अन्न,
पक्वाशय—पु० पेट का वह स्थान जहाँ अन्न पचता है ।
पक्ष—पु० ओर, तरफ, पहलू, अनुकूल मत, संबंध, सेना, सहायक, पंख, गृह, चंद्रमास का करीब पन्द्रह पन्द्रह दिनों का दो विभाग, पख ।
पक्षपात—पु० तरफदारी ।
पक्षपाती—पु० तरफदार ।
पक्षाघात—पु० अर्द्धांग रोग, आधे अंग का लकवा ।
पक्षिराज—पु० गरुड़, जटायु ।
पक्षी—पु० चिड़िया, तरफदार ।
पख—पु० पक्ष, चंद्रमास का करीब पन्द्रह पन्द्रह दिनों का विभाग ।
पखड़ी—स्त्री० पुष्पदल ।
पखवारा—पु० पक्ष, पख ।
पखान—पु० दे० पाषाण ।
पखारना—धोना । [एक बाजा ।
पखावज—स्त्री० मृदंग की तरह का
पखेरू—पु० पक्षी ।
पग—पु० पैर, डग ।
पगडंडी—स्त्री० जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो ।
पगड़ी—स्त्री० पाग, साफा ।
पगदासी—स्त्री० जूता, खड़ाऊँ ।
पगना—रस आदि के साथ ओतप्रोत होना, सनना, किसी के प्रेम में डूबना ।
पगनियाँ—स्त्री० जूती ।
पगा—पु० दुपट्टा ।
पगार—पु० चहारदीवारी, कीचड़ या गाड़ा, वह पानी या नदी जिसे पैदल पार कर सकें ।
पगिया—स्त्री० पगड़ी ।
पगुराना—पागुर करना, हजम करना ।
पचड़ा—पु० झंझट ।
पचना—हजम होना, खपना, क्षीण होना । मु० पच मरना=अत्यंत

परिश्रम करना, हैरान होना ।

पचासा—पु० पचास वस्तुओं का संग्रह ।

पच्ची—स्त्री० ऐसा जड़ाव जो बिलकुल मिल जाय । [काम ।

पच्चीकारी—स्त्री० पच्ची करने का

पछतावा—पु० किसी अनुचित कार्य के लिये पीछे दुखी होना, पश्चात्ताप ।

पछाड़ खाना—बेसुध होकर गिर पड़ना । [करना ।

पछाड़ना—गिराना, कपड़ा साफ

पजारना—जलाना ।

पजावा—पु० आवाँ, भट्टा ।

पट—चित्त का उलटा, औंधा । तुरंत । पु० वस्त्र, पर्दा, चिक, चित्रपट, छप्पर, कपास, दरवाजा, सिंहासन, चौरस भूमि ।

पटतर—पु० समता, उपमा ।

पटना—समतल होना, परिपूर्ण होना, पक्कीछत बनना, सींचा जाना, मन मिलना, तय हो जाना, ऋण चुकना, पु० एक नगर ।

पटपटाना—भूख प्यास या सर्दी गर्मी के मारे अत्यतं व्याकुल होना ।

पटपर—समतल । पु० चाँड़, उजाड़ स्थान ।

पटबीजना—पु० जुगनूँ ।

पटमंडप—पु० तंबू, खेमा ।

पटरा—पु० तख्ता, पाट, हेंगा ।

पटरानी—स्त्री० वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो ।

पटरी—स्त्री० काठ का पतला लंबा तख्ता, लिखने की तख्ती, सड़क के दोनों किनारे पर पैदल चलने का रास्ता । मु० पटरी बैठना = दिल मिलना ।

पटल—पु० छप्पर, पर्दा, तह, पहल, आँख के पर्दे, तख्ता, परिच्छेद, तिलक, समूह ।

पटवास—पु० शिविर, तंबू, लहँगा, कपड़ा सुगंधित करने की वस्तु ।

पटाका—पु० पटाक शब्द के साथ छूटने वाली एक प्रकार की आतशबाजी, पटाक शब्द, थप्पड़ । [पर्दा ।

पटी—स्त्री० पट्टी, कमरबंद, नाटक का

पटु—प्रवीण, चतुर, स्वस्थ, तीखा, उग्र, कठोर हृदय । [बाँधी जाय, चादर ।

पटुका—पु० वह दुपट्टा जिससे कमर

पटुआ—पु० जूट । [उपाधि ।

पटेल—पु० गाँव का मुखिया, एक

पटोर—पु० परवल, रेशमी कपड़ा ।

पटोरी—स्त्री० रेशमी साड़ी या धोती ।

पटोल—पु० परवल, रेशमी कपड़ा ।

पट्ट—प्रधान । पु० पीढ़ा, तख्ती, ताम्रपत्र, शिला, पट्टा, ढाल, पगड़ी, दुपट्टा, नगर, चौराहा, राजसिंहासन, रेशम, पटुआ ।

पट्टमहिषी—स्त्री० पटरानी ।
पट्टा-पु० सनद, अधिकारपत्र, भूमि के उपयोग का अधिकारपत्र, पट्टी, पीढ़ा, चपरास, एक प्रकार की तलवार ।
पट्टिका—स्त्री० छोटी तख्ती ।
पट्टी—स्त्री० तख्ती, पाठ, शिक्षा, बहकावा, छज्जी, पाटी, कपड़े की किनारी, पंक्ति, हिस्सा, अबवाब । [अधिकारी ।
पट्टीदार—पु० हिस्सेदार, बराबर का
पट्टू--पु० एक बहुत गर्म ऊनी कपड़ा ।
पट्ठा—पु० जवान, लड़ाका, मोटी नस, चौड़ा गोटा, काछ ।
पठन—पढ़ना ।
पठनीय--पढ़ने योग्य ।
पठावन—पु० दूत ।
पठित—पढ़ा हुआ ।
पठ्यमान—पढ़ा जाने योग्य ।
पड़ता—पु० लागत, दर, लगान की शरह, औसत । मु० पड़ता खाना = खर्च और मुनाफा निकल आना ।
पड़ताल--पु० छानबीन, अनुसंधान, जाँच-पड़ताल ।
पड़पोता—पु० पोते का पुत्र ।
पड़ाव—ठहरने का स्थान ।
पड़िवा—स्त्री० पक्ष की प्रथम तिथि ।
पड़ोस—पु० आस पास के घर ।
पड़ोसी—पड़ोस में रहनेवाला ।
पढ़ाई—स्त्री० पढ़ने-पढ़ाने का काम या भाव ।

पण—पु० जूआ, प्रतिज्ञा, कीमत, फीस, किराया, धन, सौदा, व्यवहार, स्तुति, प्राचीन काल का एक सिक्का, एक प्राचीन माप ।
पण्य—क्रयविक्रय योग्य, प्रशंसा योग्य । पु० माल, सौदा, व्यापार, बाजार, दूकान ।
पण्य भूमि—स्त्री० गोदाम ।
पण्यशाला--स्त्री० दूकान ।
पतंग—पु० पक्षी, टिड्डी, फतिंगा, उड़नेवाला कीड़ा, सूर्य, गेंद, शरीर नाव, गुड्डी ।
पतंगबाज—पु० गुड्डी उड़ानेवाला ।
पतंगा---पु० फतिंगा, चिनगारी ।
पतंचिका—स्त्री० धनुष की डोरी ।
पत—पु० पति, स्वामी । स्त्री० लज्जा, इज्जत ।
पतझड़—स्त्री० शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं, अवनतिकाल ।
पतन—पु० गिरना, डूबना, अवनति, नाश, जातिच्युति, उड़ान ।
पतनशील—गिरनेवाला ।
पतनोन्मुख—गिरने की ओर प्रवृत्त ।
पत-पानी—पु० लाज, इज्जत ।
पतरी--स्त्री० पत्तल ।
पतलून—पु० पाजामा, पैंट ।
पतवार--स्त्री० नाव के पीछे का वह दाग जिससे नाव मोड़ी या घुमायी जाती है ।

पता—पु० ठिकाना, खोज, जानकारी, रहस्य। मु० पते की बात = रहस्य खोलने वाला कथन।

पताका—स्त्री० झंडा, सौभाग्य। मु० पताका उड़ना = अधिकार होना, प्रसिद्धि होना। पताका गिरना = हार होना।

पताकिनी—स्त्री० सेना।

पतिंवरा—स्त्री० स्वयंवरा।

पति—पु० मालिक, शौहर, शिव, ईश्वर, मर्यादा।

पतित—गिरा हुआ, नीतिभ्रष्ट, महा-पापी, जातिच्युत, अधम।

पतित उधारन—जो पतित का उद्धार करे, ईश्वर। [करे, ईश्वर।

पतित पावन—जो पतित को पवित्र

पतियाना—विश्वास करना।

पतिलोक—पु० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जहां उसका पति रहता है। [और भक्ति।

पतिव्रत—पु० पति में अनन्य प्रीति

पतिव्रता—पतिव्रत धारिणी, सती।

पतीजना—विश्वास करना।

पतुरिया—स्त्री० वेश्या।

पत्तन—पु० नगर।

पत्तर—पु० धातु की चादर।

पत्ति—पु० प्यादा, पैदल सिपाही, योद्धा, सेना की एक संख्या। [पट्टी।

पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता, हिस्सा, पंखड़ी,

पत्थर—पु० एक कड़ा पिंड, ओला, रत्न, भारी वस्तु, कुछ नहीं। मु० पत्थर का कलेजा = दया, करुणा आदि रहित हृदय। पत्थर की लकीर = अमिट लकीर। पत्थर चटाना = पत्थर पर घिस कर धार तेज करना। पत्थर पर दूब जमाना = असम्भव कार्य करना। पत्थर पसीजना = कठोर चित्त में दया आना।

पत्थरचटा—पु० कंजूस।

पत्नी—स्त्री० विवाहिता स्त्री।

पत्नीव्रत—पु० अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम।

पत्र—पु० पत्ता, चिट्ठी, लिखा कागज, अखबार, पृष्ठ, पत्तर, पक्ष।

पत्रकार—पु० समाचार पत्र का काम करनेवाला व्यक्ति।

पत्रपुष्प—पु० सत्कार या पूजा की मामूली सामग्री। [पर बनाती हैं।

पत्रभंग—पु० चित्र रेखाएं जिन्हें स्त्रियाँ सौन्दर्य वृद्धि के लिये भाल या कपोल

पत्रवाहक—पु० चिट्ठी लेजानेवाला।

पत्रव्यवहार—पु० चिट्ठी आने जाने का क्रम।

पत्रा—पु० पंचाङ्ग।

पत्रिका—स्त्री० चिट्ठी, सामयिकपत्र।

पत्री—स्त्री० चिट्ठी। पु० तीर, पक्षी, वृक्ष, बाज।

पथ—पु० रास्ता, व्यवहार की रीति ।
पथगामी—पु० पथिक ।
पथराना—सूख कर पत्थर सा कड़ा होजाना, सजीव न रहना ।
पथरीला—पत्थरों से युक्त ।
पथिक, पथी—पु० मुसाफिर ।
पत्थ्य—पु० रोगी के लिये हलका भोजन, कल्याण ।
पद—पु० व्यवसाय, रक्षा, दर्जा, चिह्न, पैर, वस्तु, शब्द, प्रदेश, पैर का निशान, श्लोक या किसी छेद का चतुर्थांश, उपाधि, मोक्ष, भजन ।
पदक—पु० पैर का चिह्न, तमगा ।
पदचर—पु० पैदल ।
पदच्छेद—पु० संधि या समास युक्त वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग रकने की क्रिया ।
पदच्युत—अपने पद से गिरा हुआ ।
पदतल—पु० पैर का तलवा ।
पदत्राण—पु० जूता ।
पदन्यास—पु० पैर रखना, पैर रखने की मुद्रा, चलन, पद रचने का काम ।
पदपीठ—पु० खड़ाऊं, जूता ।
पदमैत्री—स्त्री० अनुप्रास ।
पदयोजना—स्त्री० कविता के लिये पदों का जोड़ना ।
पदरिपु—पु० काँटा । [रास्ता ।
पदवी—स्त्री० उपाधि, दरजा, पद्धति,
पदवृत्त—पु० संयुक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द ।
पदाति, पदातिक—पु० प्यादा, पैदल सिपाही, नौकर ।
पदाधिकारी—पु० ओहदेदार ।
पदार्थ—पु० पद का अर्थ । वस्तु । ये चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ।
पदार्थवाद—पु० वह सिद्धान्त जिस में ईश्वर का अस्तित्व न मान कर भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता है ।
पदार्थविज्ञान—पु० भौतिक पदार्थों और व्यापारों को जानने की विद्या ।
पदार्पण—पु० किसी स्थान में पैर रखना या जाना (सम्मानार्थ प्रयोग) ।
पदावली—स्त्री० पदों का समूह ।
पदिक—पु० पैदल सेना, हीरा ।
पदी—पु० पैदल, प्यादा ।
पद्धति—स्त्री० मार्ग, रीति, कर्म या संस्कार विधि की पोथी, तरीका, विधि, कतार । [संख्या ।
पद्म—पु० कमल, सौ नील की
पद्मकंद—पु० कमल की जड़ ।
पद्मनाभ—पु० विष्णु ।
पद्मयोनि—पु० ब्रह्मा ।
पद्मराग—पु० मानिक ।
पद्मबीज—पु० कमलगट्टा ।
पद्मा—स्त्री० लक्ष्मी ।

पद्माकर—पु॰ बड़ा तालाब जिसमें कमल पैदा होता है।
पद्मालय—पु॰ ब्रह्मा।
पद्मालया—स्त्री॰ लक्ष्मी।
पद्मासन—पु॰ पालथी मार कर सीधे बैठने का आसन, ब्रह्मा, शिव।
पद्मिनी—स्त्री॰ कमलिनि, वह तालाब जिसमें कमल हो, लक्ष्मी, कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से एक।
पद्मिनीवल्लभ—पु॰ सूर्य।
पद्य—जिसका संबंध पैर से हो, जिस में कविता के पद हों। पु॰ छंद, कविता।
पद्यात्मक—छंदोबद्ध।
पधारना—जाना, आना, चलना, आदरपूर्वक बैठाना।
पन—पु॰ प्रतिज्ञा, एक प्रत्यय।
पनघट—पु॰ पानी भरने का घाट।
पनच—स्त्री॰ धनुष की डोरी।
पनचक्की—स्त्री पानी के जोर से चलनेवाली चक्की।
पनडुब्बा—पु॰ गोताखोर।
पनडुब्बी—स्त्री॰ पानी में डूबकर चलने वाली नाव।
पनबट्टा—पु॰ पान रखने का डिब्बा।
पनस—पु॰ कटहल।
पनसाला—स्त्री॰ लोगों को पानी पिलाने का स्थान।
पनहा—पु॰ चौड़ाई, मर्म।
पनही—स्त्री॰ जूता।
पनाला—दे॰ "परनाला"।
पनाह—स्त्री॰ बचाव, शरण।
पनिच—पु॰ दे॰ "पनच"।
पनी—पु॰ प्रण करने वाला। [दही।
पनीर—पु॰ छेना, पानी निचोड़ा हुआ
पनीला—जलयुक्त।
पन्न—गिरा हुआ, नष्ट।
पन्नग—पु॰ साँप, पद्मा।
पन्नगारि—पु॰ गरुड़।
पन्ना—पु॰ मरकत मणि, पृष्ठ, पत्र।
पपीहा—पु॰ चातक।
पबलिक—पु॰ जनता। [महकमा।
पबलिक वर्क्स—इनजीनियरी का
पब्लिशर—पु॰ पुस्तक प्रकाशक।
पय—पु॰ दूध, पानी, अन्न।
पयद—पु॰ दे॰ "पयोद"।
पयधि, पयनिधि—पु॰ समुद्र।
पयस्विनी—स्त्री॰ दूध देनेवाली गाय बकरी, नदी।
पयस्वी—जलवाला।
पयान—पु॰ गमन
पयाम—पु॰ संदेश, पैगाम।
पयोज—पु॰ कमल।
पयोद—पु॰ बादल। [पर्वत।
पयोधर—पु॰ स्तन, मेघ, तालाब,
पयोधि, पयोनिधि—पु॰ समुद्र।
परंच—पु॰ और भी, परन्तु।

परंतप—जितेंद्रिय, वैरियों को दुख देने वाला।
परंतु—पर, लेकिन।
परंपरा—स्त्री० पूर्वापर क्रम, संतति।
पर—दूसरा, दूसरे का, भिन्न, पीछे का, दूर, श्रेष्ठ, लीन। अधिकरण का चिह्न। पीछे, परन्तु। पु० पंख।
परकटा—जिसका पंख कटा हो।
परकना—मिलना, धड़क खुलना, चसका लगना।
परकाजी—परोपकारी। [औजार।
परकार—पु० वृत्त खींचने का एक
परकाला—पु० सीढ़ी, चौखट, टुकड़ा, हिस्सा, चिनगारी। मु० आफत का परकाला = गजब करने वाला, भयंकर मनुष्य।
परकीय—दूसरे का।
परकीया—स्त्री० पर पुरुष से प्रीति करने वाली स्त्री।
परकोटा—पु० किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिये चारो ओर उठायी हुई दीवार।
परख—स्त्री० जाँच, पहचान।
परगटना—प्रगट होना।
परगना—पु० वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से गाँव हों। [होना।
परगसना—प्रकाशित होना, प्रगट
परगास—पु० दे० प्रकाश।
परचा—पु० कागज का टुकड़ा, चिट, पुरजा, प्रश्नपत्र, परिचय, परख सबूत।
परछन—स्त्री० विवाह में वर के द्वार लगने पर आरती आदि उतारने की क्रिया।
परछांई—स्त्री० छाया।
परजन्य—पुं० दे० "पर्जन्य"।
परतंचा—स्त्री० धनुष की डोरी।
परतंत्र—पराधीन।
परतः—दूसरे से, पीछे, आगे।
परत—स्त्री० तह।
परती—स्त्री० बेजोतीबोयी जमीन।
परदा—पु० ओट, आड़, आड़ करने का कपड़ा आदि, चिक, स्त्रियों का लोगों के सामने न होने की चाल।
परदानशीन—जो परदे में रहे।
परदाफाश—पु० भेद खुलना।
परदेश—पु० विदेश।
परधाम—पु० बैकुंठ।
परपंच—पु० दे० "प्रपंच"।
परपट—पु० चौरस मैदान।
परपार—पु० उस पार। [प्रति।
परपैठ—पु० असली हुंडी की तीसरी
परबाल—पु० आँख की पलक पर का फालतू बाल।
परब्रह्म—पु० ब्रह्म जो जगत् से परे है।
परभृत—शत्रु का साथ देने वाला, अन्य पालित। पु० कोयल।
परम—अत्यंत, उत्कृष्ट, प्रधान, आदिम। पु० शिव, विष्णु।
परमगति—स्त्री० मोक्ष।

परम तत्व—पु० मूल तत्व ।

परम धाम—पु० वैकुंठ ।

परम पद—पु० मोक्ष

परम पुरुष—पु० परमेश्वर ।

परम भट्टारक—पु राजाओं की एक उपाधि ।

परमहंस—पु० वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो, परमात्मा ।

परमा—स्त्री० शोभा ।

परमाणु—पु० अत्यंत सूक्ष्म अणु ।

परमाणुवाद—पु० वह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत क सृष्टि हुई है ।

परमात्मा—पु० ईश्वर ।

परमानंद—पु० ब्रह्म के अनुभव का सुख, आनंद स्वरूप ब्रह्म ।

परमानेन्ट—स्थायी, कायम । [आयु ।

परमायु—स्त्री० अधिक से अधिक

परमार्थ—पु० सबसे बढ़कर वस्तु, यथार्थ तत्व, मोक्ष ।

परमार्थवादी—पु० ज्ञानी, तत्त्वज्ञ ।

परमार्थी—यथार्थ तत्त्व को ढूँढ़ने वाला, मोक्ष चाहने वाला । [शिव ।

परमेश,परमेश्वर— पु० ब्रह्म, विष्णु

परमेश्वरी—स्त्री० दुर्गा लक्ष्मी,पार्वती ।

परमेष्ठी पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।

परयंक—पु० दे० ''पर्यंक'' ।

परला—उधरका । मु० परले दरजे का = हद दरज का, अत्यंत ।

परलोक—पु० दूसरा लोक, वैकुंठ ।

परलोक गमन—पु० मृत्यु ।

परवर—पालने वाला ।

परवर दिगार—पु० ईश्वर ।

परवरिश—स्त्री० पालनपोषण ।

परवश—पराधीन ।

परवस्ती—स्त्री० परवरिश ।

परवा—स्त्री० दे० ''पड़िवा'', चिंता, ख्याल, ध्यान, आसरा ।

परवानगी—स्त्री० इजाजत, आज्ञा ।

परवाना—पु० आज्ञापत्र, फतिंगा ।

परवाह—स्त्री० दे० ''परवा'' ।

परश—पारस पत्थर, स्पर्श ।

परशु—पु० फरसा ।

परसना—छूना, परोसना ।

पर साल-पु० गत वर्ष,आगामी वर्ष ।

परस्तो—स्त्री० पूजा, इबादत ।

परस्पर—आपस में । [रहना ।

परहेज—पु० संयम, दोषों से दूर

परहेलना—निरादर करना ।

परा—अत्युत्कृष्ट, सबसे परे, सबसे ऊपर । स्त्री० चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी, ब्रह्म विद्या, मुक्ति, प्राधान्य, वैपरित्य, विक्रम, अहंकार अनादर ।

पराकाष्ठा—स्त्री० अंत, हद ।

पराक्रम—पु० बल, पुरुषार्थ ।

पराग—पु० पुष्परज, धूलि, चंदन, उपराग ।

पराग केसर—फूलों के बीच में वे पतले लंबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा हुआ रहता है।
परागना—अनुरक्त होना।
पराङ्मुख—मुँह फेरे हुए, विमुख, उदासीन, विरुद्ध।
पराजय—स्त्री० हार।
पराजित—हारा हुआ।
परात—स्त्री० बड़ी थाली।
पराधीन—दूसरे के अधीन।
पराना—भागना।
पराभव—हार, तिरस्कार, विनाश।
पराभूत—हारा हुआ, नष्ट।
परामर्श—पु० खिचाव, विवेचन, युक्ति, सलाह।
परामर्ष—पु० निवृत्ति, क्षमा।
परायण—गया हुआ, लगाया हुआ, आसक्त।
पराया—दूसरे का, गैर।
परार्थ—दूसरे के लिये। पु० दूसरे का उपकार। [अंतिम संख्या।
परार्द्ध—पु० ब्रह्मा की आधी आयु,
परावन—पु० भगदड़।
परावर्तन—पु० लौटना। [एक।
परावह—पु० वायु के सात भेदों में
परास—पु० पलाश।
परास्त—पराजित, ध्वस्त।
पराह्न—तीसरा पहर।
परि—एक उपसर्ग जो इन अर्थों का बोध कराता है:—चारों ओर, अच्छी तरह, अतिशय, पूर्णता, दोषाख्यान, नियम, क्रम।
परिकर—पु० पलंग, कटिबंधन, परिवार, समूह, अनुचर वर्ग, तैयारी, सहकारी, विवेक।
परिकल्पना—स्त्री० उपाय, चिंता।
परिक्रमण—पु० टहलना, परिक्रमा।
परिक्रमा—स्त्री० चारों ओर घूमना।
परिख्यात—विख्यात।
परिगणन—पु० गिनना। [ज्ञात।
परिगत—बीता हुआ, मृत, विस्मृत,
परिगृहीत—स्वीकृत, मिला हुआ।
परिग्रह—पु० दान लेना, पान, धनादि का संग्रह, सेवक, ग्रहण, विवाह, पत्नी, परिवार।
परिघ—पु० भाला, घोड़ा, फाटक, घर, तीर, बाधा।
परिघोष—पु० मेघगर्जन।
परिचय—पु० जानकारी, लक्षण, जान पहचान। [करनेवाला।
परिचर—पु० सेवक, रोगी की सेवा
परिचर्या—स्त्री० सेवा, रोगी की सेवा शुश्रूषा। [सूचक।
परिचायक—पु० परिचय करानेवाला,
परिचार—पु० सेवा, टहलनेका स्थान।
परिचारिका—स्त्री० सेविका।
परिचालक—पु० चलानेवाला।
परिचालन—पु० चलाना, जारी

रखना, गति देना। [अभिज्ञ।
परिच्चित—जाना पहचाना, वाकिफ,
परिच्चिति—स्त्री० परिचय।
परिच्छद—पु० आच्छादन, पहनावा, राजचिह्न, राजा के अनुचर, परिवार।
परिच्छन्न—ढका हुआ, वस्त्र युक्त, साफ किया हुआ।
परिच्छिन्न—परिमित, विभक्त।
परिच्छेद—पु० विभाजन, अध्याय।
परिजन—पु० परिवार, सदा साथ रहनेवाला नौकर।
परिज्ञा—स्त्री० ज्ञान।
परिज्ञात—जाना हुआ।
परिज्ञान—पु० पूर्ण ज्ञान।
परिणत—झुका हुआ, बदला हुआ, रूपांतरित, पका हुआ, पचा हुआ।
परिणति—स्त्री० रूपान्तर होना, पकना, पचना, पुष्टि, अंत।
परिणय—पु० विवाह।
परिणयन—पु० ब्याहना।
परिणाम—पु० बदलना, रूपांतर प्राप्ति, रूपांतर, विकार, परिपुष्टि, वृद्धि, अंत, फल, नतीजा।
परिणीत—विवाहित, समाप्त।
परिणेता—पु० पति। [पश्चाताप।
परिताप—पु० गरमी, दुःख, संताप,
परितुष्ट—संतुष्ट, प्रसन्न।
परितोष—पु० संतोष, खुशी। [हुआ।
परित्यक्त—छोड़ा, फेंका या दूर किया
परित्याग—छोड़ना, निकालना, अलग करना।
परित्राण—पु० रक्षा।
परिदेवन—पु० अनुताप, पश्चाताप, विलाप, जूए का खेल। [पहनना।
परिधान—पु० वस्त्र, पोशाक, कपड़ा
परिधि—स्त्री० घेरा, मंडल, चहार दिवारी, कक्षा, वस्त्र।
परिधेय—पहनने योग्य। पु० वस्त्र।
परिन्यास—पु० काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो, नाटक में मुख्य कथा की मूलभूत घटना की संकेत से सूचना करना।
परिपक्व—खूब पका हुआ, जो बिलकुल हजम हो गया हो, पूर्ण विकसित, प्रौढ़, बहुदर्शी, निपुण।
परिपाक—पु० पकना, पचना, प्रौढ़ता, बहुदर्शिता, निपुणता।
परिपाटी—स्त्री० क्रम, प्रणाली, पद्धति, अङ्कगणित।
परिपालन—पु० बचाना, बचाव।
परिपुष्ट—पूर्ण, पुष्ट।
परिपूरक—परिपूर्ण करनेवाला।
परिपूर्ण—खूब भरा हुआ, पूर्ण तृप्त, समाप्त किया हुआ। [नाव।
परिप्लव—पु० तैरना, बाढ़, जुल्म,
परिप्लुत—डूबा हुआ, गीला।
परिभव, परिभाव—पु० अपमान।
परिभावना—स्त्री० चिन्ता, साहित्य

में वह वाक्य या पद जिससे कुतुहल या उत्सुकता सूचित या उत्पन्न हो।
परिभाषा—स्त्री० स्पष्ट कथन, किसी शब्द का ऐसा अर्थ करना जिससे उसकी विशेषता और व्याप्ति निश्चित हो जाय, लक्षण।
परिभू—पु० ईश्वर।
परिभूत—पराजित, अपमानित।
परिभ्रमण-पु० घूमना, घेरा, टहलना।
परिमंडल—पु० घेरा, चक्र।
परिमल-पु० सुगंध, मलना, संभोग।
परिमाण—वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। [कार्य, परिशोधन।
परिमार्जन—पु० धोने या माँजने का
परिमित—जो नापा या तौला गया हो, उचित परिमाण में, कम।
परिमिति—स्त्री० नाप तौल आदि, मर्य्यादा।
परिमेय-जो नापा या तौला जा सके, संकुचित, जिसे नापना या तौलना हो।
परिरंभ, परिरंभण-पु० आलिंगन।
परिलेख—पु० ढाँचा, चित्र, कूँची, उल्लेख।
परिलेखना—समझना, मानना।
परिवर्तक—चक्कर खाने या खिलाने वाला, बदलनेवाला। [रूपांतर।
परिवर्तन—पु० चक्कर, विनिमय,
परिवर्ती—परिवर्तनशील, बदला करने वाला, बराबर घूमनेवाला।
परिवर्द्धित—बढ़ाया हुआ।
परिवा—स्त्री० दे० "पड़िवा"।
परिवाद—पु० निन्दा। [परिषद्।
परिवार—पु० आवरण, म्यान, कुटुंब,
परिवास—पु० घर, सुगंध, टिकना।
परिवाह—पु० बहाव।
परिवृत—घेरा हुआ, छिपाया हुआ।
परिवृत्ति—स्त्री० घुमाव, घेरा, विनिमय, समाप्ति।
परिवेद—पु० पूरा ज्ञान।
परिवेदन—पु० पूरा ज्ञान, विचरण, लाभ, विद्यमानता, बहस, भारी दुःख, बड़े भाई के पहले छोटे भाई का ब्याह होना।
परिवेश—पु० घेरा।
परिवेष, परिवेषण—पु० परोसना, परिधि, घेरा, परकोटा। [दन।
परिवेष्टन—पु० घेरना, घेरा, आच्छा
परिव्रज्या—स्त्री० इधर उधर घूमना, तपस्या, भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।
परिव्राज, परिव्राजक, परिव्राट्—पु० संन्यासी, सदा भ्रमण करनेवाला संन्यासी।
परिशिष्ट—बचा हुआ। पु० पुस्तक के अन्त में दी हुई वे बातें जो पहले न आ सकी हों या न आ सकती हों।
परिशीलन—पु० मनन पूर्वक अध्ययन, स्पर्श।

परिशेष—बचा हुआ। पु० परिशिष्ट, अंत। [बेबाकी।
परिशोध—पु० पूर्ण शुद्धि, ऋण की
परिश्रम—पु० मेहनत, थकावट।
परिश्रय—पु० आश्रय, सभा।
परिश्रांत—थका हुआ।
परिश्रुत—विख्यात।
परिषद्—स्त्री० सभा, समूह।
परिषद—पु० परिषद्, सभासद, दरबारी।
परिष्कार—पु० संस्कार, शुद्धि, स्वच्छता, गहना, शोभा, सजावट।
परिष्क्रिया—स्त्री० शोधन, मांजना धोना, सजाना।
परिष्कृत—शुद्ध किया हुआ, धोआ हुआ, सजाया हुआ।
परिसंख्या—स्त्री० गणना।
परिस्तान—पु० परियों का देश।
परिस्फुट—खुला हुआ, प्रगट, खिला हुआ।
परिहत—मरा हुआ।
परिहरण—पु० छीन लेना, परित्याग, निवारण।
परिहार—पु० दोष निवारण, इलाज, उपचार, चरागाह, छूट, खंडन, तिरस्कार, उपेक्षा, जीता हुआ धन आदि। [जा सके।
परिहार्य—जिसका परिहार किया
परिहाना—पु० हसी, खेल।
परिहास—पु० हँसी, उपहास, कौतुक।
परिहित—ढका हुआ, पहना हुआ।
परी—स्त्री० फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर वसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियां, परम सुंदरी।
परीक्षक—पु० परीक्षा लेनेवाला।
परीक्षा—स्त्री० जांच, इम्तहान, आजमाइश, जांच पड़ताल। [हो।
परीक्षित—जिसकी परीक्षा की गयी
परीक्ष्य—परीक्षा करने योग्य।
परीजाद—परी से उत्पन्न, अत्यंत सुंदर।
परुष—कठोर, बुरा लगनेवाला, निष्ठुर।
परुषा—स्त्री० काव्य में शब्दयोजना की वह प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्त्व, संयुक्त, रेफ आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आये हों, वीनदी।
परे—उधर, बाहर, ऊपर, बाद।
परेई—स्त्री० पंडुकी, मादा कबूतर।
परेखना—परखना, आसरा देखना।
परेखा—पु० परीक्षा, विश्वास, पछतावा।
परेड—पु० सिपाहियों के कवायद रने की जगह, प्रदर्शन के लिये सिपाहियों की कवायद।
परेवा—पु० पंडुक पक्षी, कबूतर, तेज उड़नेवाला पक्षी, हरकारा।

परेश—पु० ईश्वर।

परेशान—व्याकुल।

परेशानी—स्त्री० व्याकुलता।

परोक्ष—जो देख न पड़े, गुप्त। पु० अनुपस्थिति, परम ज्ञानी।

परोपकार—पु० दूसरे की भलाई।

पर्जंक—पु० दे० "पर्यंक"।

पर्जन्य—पु० मेघ, विष्णु, इंद्र।

पर्ण—पु० पत्ता।

पर्णकुटी, पर्णशाला—स्त्री० झोपड़ी।

पर्णलता—स्त्री० पान की लता।

पर्णी—पु० वृक्ष।

पर्त—स्त्री० परत।

पर्पटी—स्त्री० गोपीचंदन, पपड़ी।

पर्यंक—पु० पलंग।

पर्यंत—तक, लौं।

पर्यटन—पु० भ्रमण।

पर्यवसान—पु० अन्त, शामिल होना, ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्याप्त—काफी, प्राप्त, समर्थ।

पर्याय—पु० समानार्थवाची शब्द, क्रम।

[पड़ताल।

पर्यालोचना—स्त्री० पूरी जांच

पर्युपासन—पु० सेवा।

पर्व—पु० धर्म, पुण्यकाल, त्यौहार, चातुर्मास्य, पक्ष, दिन, क्षण, मौका, उत्सव, हिस्सा, संधिस्थान।

पर्वणी—स्त्री० पूर्णिमा।

पर्वत—पु० पहाड़, पेड़, वृक्ष।

पर्वतनंदिनी—स्त्री० पार्वती।

पर्वतराज—पु० बड़ा पहाड़, हिमालय।

पर्वतारि—पु० इंद्र।

पर्वतीय—पहाड़ी।

पर्वतेश्वर—पु० हिमालय।

पर्वसंधि—स्त्री० पूर्णिमा (या अमावस्या) और प्रतिपदा के बीच का समय, ग्रहण का समय।

[पाई।

पलंग—पु० अच्छी और बड़ी चार-

पलंगपोश—पु० चादर।

पल—पु० क्षण, २४ सेकंड का समय, मांस, धोखेबाजी, तराजू, एक तौल, पलक।

पलक—स्त्री० क्षण, पल, आँख के ऊपर का चमड़ा। मु० किसी के लिये पलक बिछाना = अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक मारना = इशारा करना, पलक गिराना। पलक लगना = नींद आना।

पलका—पु० पलंग।

पलकान—पु० सीढ़ी।

[झुंड।

पलटन—स्त्री० सेना की एक टुकड़ी,

पलटना—उलटना, परिवर्तन होना या करना, मुड़ना, मोड़ना, लौटना, लौटाना, बदलना।

पलटा—पु० परिवर्तन, बदला।

पलड़ा—पु० तराजू का पलला।

पलना—पाला जाना, हृष्टपुष्ट होना।

पु० झूला।

पलहना—पल्लवित होना।

पला—पु० पल, पलड़ा, आँचल, किनारा।

पलान—चढ़ने या लादने के लिये जानवरों की पीठ पर की गद्दी।

पलाना—भागना।

पलानी—स्त्री० छप्पर।

पलायक—पु० भागनेवाला।

पलायन—पु० भागना।

पलाश—मांसाहारी, निर्दय। पु० ढाक, पत्ता, राक्षस, मगध देश।

पलित—वृद्ध, पका हुआ (बाल)। पु० बाल पकना, गरमी।

पलीता—आग बबूला। पु० बत्ती।

पलीद—गंदा, घृणास्पद, नीच। पु० भूत।

पलोटना—पैर दबाना, तड़फड़ाना।

पल्लव—पु० कोंपल, कंकण, विस्तार, बल।

पल्लवास्त्र—पु० कामदेव।

पल्लवित—कोंपल युक्त, हराभरा, लंबा चौड़ा, जिसके रोंगटे खड़े हों।

पल्ला—दूर। पु० दूरी, आँचल, तरफ, अधिकार में, किवाड़, पहल, पलड़ा, कैंची का एक भाग, दुपलिया टोपी का आधा भाग। मु० पल्ला छूटना = पीछा छूटना। पल्ला पड़ना = प्राप्त होना। पल्ला भारी होना = पक्ष मजबूत होना।

पल्ली—स्त्री छोटा गांव, कुटी।

पवन—पु० हवा, आँवा, जल, साँस, प्राण वायु। [सेन।

पवनकुमार—पु० हनुमान्, भीम-

पवनचक्की—स्त्री० वह चक्की जो हवा से चले।

पवनचक्र—पु० बवंडर।

पवनतनय—पु० दे० "पवनकुमार।"

पवनसखा—पु० आग।

पवनाशन, पवनाशी—पु० साँप।

पवि—पु० वज्र, बिजली, वाक्य।

पवित्र—शुद्ध। पु० वर्षा, ताँबा, जल, दूध, जनेऊ, घी, शहद, विष्णु, शिव।

पवित्रता—स्त्री० शुद्धता, सफाई।

पवित्रा—स्त्री० तुलसी, हल्दी, पीतल।

पवित्री—स्त्री० कुश की बनी अंगुठी जो कर्मकांड के समय अंगुली में पहनते हैं।

पशम—स्त्री० बढ़िया मुलायम ऊन, उपस्थ पर के बाल, तुच्छ वस्तु।

पशमीना—पु० पशम का बना कपड़ा।

पशु—पु० प्राणी, चौपाया, देवता।

पशुता—स्त्री० जानवरपन, मूर्खता।

पशुपतास्त्र—पु० शिव का शूलास्त्र।

पशुपति—पु० शिव, अग्नि, औषधि।

पशुपाल—पु० पशुपालक।

पशुराज—पु० सिंह।

पश्चात—पीछे, बाद। [पछतावा।

पश्चात्ताप, पश्चानुताप—पु०

पश्चिमाचल—पु० अस्ताचल।
पश्चिमोत्तर—पु० वायु कोण।
पश्तो—स्त्री० एक भाषा।
पश्म—स्त्री० दे० "पशम"।
पसंद – स्त्री० अभिरुचि।
पसंदीदा—अच्छा।
पस—इस कारण, इसलिये, बस, तब, तो, अन्त में [कर सोना।
पसरना—फैलना, बढ़ना, पैर फैला
पसरहट्टा—पु० वह बाजार जहां पंसारियों की दूकानें हों।
पसार--पु० फैलाव, विस्तार।
पसिंजर-पु० वह रेलगाड़ी जो प्रत्येक स्टेशन पर ठहरती है।
पसीजना—घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंश का धीरे धीरे बाहर निकलना, चित्त में दया उत्पन्न होना।
पसीना--पु० परिश्रम या गर्मी के कारण शरीर से निकलने वाला जल।
पसेव--पु० पसीजने से निकला हुआ जल, पसीना। [उंचनीच।
पसोपेश—पु० दुविधा, हानिलाभ,
पस्त—हारा हुआ, थका हुआ, दबा हुआ।
पस्तक--नाटा, बौना।
पस्तहिम्मत--डरपोक।
पस्ती—स्त्री० निचाई, कमी, अभाव।
पहँ—निकट, से।
पहचान—स्त्री० पहचानने की क्रिया या भाव, लक्षण, परिचय।[का ढंग।
पहनावा—पु० पोशाक, कपड़े पहनने
पहचट—स्त्री० हल्ला, बदनामी का शोर छल।
पहर – पु० तीन घंटे का समय, एक दिन का चतुर्थांश, समय।
पहरा—पु० रखवाली, चौकी, तैनाती, गारद, गश्ती, हवालात, जमाना, समय।
पहरी, पहरू—पु० पहरेदार।
पहल--पु० बगल, पहलू, परत, कार्य का आरम्भ।
पहलवी—स्त्री० एक भाषा।
पहलू—पु० पांजर, बगल, करवट, पहल, किसी वस्तु का भिन्न भिन्न अंग।
पहले पहल—सब से पहले।
पहाड़—पु० पर्वत, ढेर, कठिन कार्य। मु० पहाड़ उठाना = भारी काम सिर पर लेना। पहाड़ टूट पड़ना = अचानक कोई भारी विपत्ति आ पड़ना। पहाड़ से टक्कर लेना = जबरदस्त मुकाबिला करना।
पहाड़ा—पु० गुणन सूची।
पहाड़ी—पहाड़ का, पहाड़ संबंधी। स्त्री० छोटा पहाड़।
पहुँच--स्त्री० किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति, प्रवेश, रसीद, पकड़, दौड़, परिचय, दखल। मु० पहुँचा हुआ = सिद्ध, निपुण।

पहुँचा—पु० कलाई ।
पहुँची—स्त्री० पहुँचा पर का गहना ।
पहुँनाई—स्त्री० मेहमानदारी ।
पहुप—पु० दे० "पुष्प" ।
पहेली—स्त्री० बुझौवल, समस्या ।
पाँक—पु० कीचड़, पंक ।
पाँच—एक संख्या । पंच, बहुत से लोग । मु० पाँचों उँगलियाँ घी में होना = सब तरहका लाभ या आराम होना, खूब बन आना । पाँचों सवारों में नाम लिखाना = औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनना ।[अग्नि ।
पांचजन्य—पु० श्रीकृष्ण का शंख,
पांचाली—स्त्री० गुड़िया, द्रौपदी ।
पाँजर—पु० पँजरा, पसली, बगल ।
पांडव—पु० पांडुके पांचो पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव ।
पांडित्य—पु० विद्वत्ता ।
पांडु—पु० कुछ लाली लिये पीला रंग, सफ़ेद रंग, सफेद हाथी, एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है ।
पांडुर—स्त्री० पीलापन, सफेद । पु० कबूतर, बगुला, सफेद कोढ़ ।
पांडुलिपि—स्त्री० मसौदा ।
पांडेय—पु० पाँडे ।
पाँति—स्त्री० कतार ।
पांथ—पु० पथिक, बिरही ।
पांथशाला—स्त्री० सराय ।
पाँय पु० पैर ।
पाँयदान—पु० पगपोछना जो दरवाजे पर पड़ा रहता है ।
पाँवरी—स्त्री० सीढ़ी, पैर रखने का स्थान, जूता, डौढ़ी, दालान । [खाद
पांशु—स्त्री० धूलि, बालू गोबर की
पांशुल—व्यभिचारी, मलिन ।
पाँस—खाद ।
पाँसा—पु० चौसर खेलने की लंबी गोटी । मु० पाँसा उलटना = किसी प्रयत्न का उलटा फल होना ।
पाँही—पास, निकट ।
पाइंट—पु० डेढ़ पाव का पैमाना, आधी या छोटी बोतल ।
पाइका—पु० एक प्रकार का टाइप ।
पाइक—पु० दे० "पायक" ।
पाइतरी—स्त्री० पलंग का वह भाग जिधर पैर रहता है, गोरथारी ।
पाइप—पु० नल वा नली, पानी का कल, हुक्के का नल ।
पाइल—स्त्री० दे० "पायल"
पाई—स्त्री० पैसा, वह छोटा सिक्का जो पैसे का तीसरा भाग होता है । एक चौथाई सूचक सीधी लकीर, आकार या पूर्ण विराम का चिह्न ।
पाउंड—पु० एक अंगरेजी सिक्का, एक अंगरेजी तौल ।
पाउडर—पु० चूर्ण, बुकनी ।
पाक—पवित्र, निर्दोष, शुद्ध पचने

की क्रिया, पकाने की क्रिया, रसोई ।
पाकदामन—पतिव्रता, सती ।
पाकशाला--स्त्री० रसोई घर ।
पाकशासन—पु० इंद्र ।
पाकस्थली -स्त्री० पक्वाशय ।
पाकीजा--पवित्र, शुद्ध निर्दोष ।
पाकेट—पु० जेब । [नीचता ।
पाखंड--पु० ढोंग, ढकोसला, छल,
पाख—पु० पखवाड़ा, पंख ।
पाखर—स्त्री० लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर रखी जाती है ।
पाखाना—पु० मल, गलीज, मल त्यागने का स्थान ।
पाग--स्त्री० पगड़ी, चाशनी ।
पागना--मीठी चाशनी में सानना, अत्यंत अनुरक्त होना ।
पागलखाना—पु० पागलों के रहने का स्थान ।
पागुर—पु० जुगाली ।
पाचक—पचाने या पकानेवाला । पु० अन्न पचानेवाली औषधि, रसोइया ।
पाचन—पचानेवाला । पु० पचाना या पकाना, पाचक, प्रायश्चित, खट्टा रस, अग्नि ।
पाचिका--स्त्री० रसोईदारिन ।
पाछ—स्त्री० छुरी की धार आदि मार कर किया हुआ हलका घाव ।
पाजामा--पु० पैर से कमर तक पहनने का सिला हुआ एक कपड़ा ।
पाजी—दुष्ट । पु० प्यादा रक्षक ।
पाजेब—स्त्री० नूपुर ।
पाटंबर—पु० रेशमी वस्त्र ।
पाट—रेशम, सिंहासन, चौड़ाई, पीढ़ा, धोबी का शिला जिसपर वह कपड़ा धोता है, वस्त्र ।
पाटना--किसी गहराई को भर देना, छत बनाना, सींचना । [रानी ।
पाटमहिषी, पाटरानी—स्त्री० पट-
पाटल—पु० एक पेड़ ।
पाटव–पु० पटुता, दृढ़ता, आरोग्यता ।
पाटवी--पटरानी से उत्पन्न । स्त्री० रेशमी ।
पाटी—स्त्री० परिपाटी, जोड़, बाकी गुणा आदि का क्रम, श्रेणी । पु० तख्ती, पाठ, माँग के दोनों ओर का बैठाया बाल, चारपाई की पट्टी । मु० पाटी पढ़ाना = पाठ पढ़ाना, बहकाना ।
पाठ—पु० पढ़ाई, धर्म पुस्तक का नियमपूर्वक पढ़ना, सबक, परिच्छेद । मु० पाठ पढ़ाना = बहकाना ।
पाठक—पु० पढ़नेवाला, पढ़ानेवाला, अध्यापक, ब्राह्मणों का एक भेद ।
पाठन—पु० पढ़ाना ।
पाठभेद—पु दे० "पाठांतर" ।
पाठशाला—स्त्री० विद्यालय ।
पाठांतर—पु० एक ही पुस्तक की

दो प्रतियों में विशेष स्थल पर भिन्न भिन्न शब्द या वाक्य, दूसरा पाठ, पाठ भेद।

पाठा—मोटा तगड़ा। स्त्री० एक लता, पु० जवान बैल, भैसा या बकरा।

पाठालय—पु० विद्यालय।

पाठी—पढ़नेवाला।

पाठ्य—पढ़ने योग्य, जो पढ़ाया जाय।

पाड़ई—स्त्री० पाटल।

पाड़ा—पु० महल्ला।

पाणि—पु० हाथ।

पाणिग्रहण—पु० विवाह में कन्या का हाथ पकड़ने की रीति।

पाणिग्राहक—पु० पति।

पाणिज—पु० उँगली, नख।

पाणिनी—पु० व्याकरण रचयिता एक प्राचीन प्रसिद्ध व्यक्ति।

पाणिनीय—पाणिनोक्त।

पाणिनीय दर्शन—पु० पाणिनी का अष्टाध्यायी व्याकरण। [मलना।

पाणिपीड़न—पु० पाणिग्रहण, हाथ

पातंजल—पतंजलि का बनाया हुआ। पु० पतंजलिकृत योग सूत्र या महाभाष्य।

पातंजल दर्शन—पु० योग दर्शन।

पातंजल भाष्य—पु० महाभाष्य नामक व्याकरण ग्रंथ।

पातंजल सूत्र—पु० योगसूत्र।

पात—पु० पतन, नाश, राहु, खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांति वृत्त को काट कर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं, पत्ता।

पातक—पु० पाप। [पत्तल, वेश्या।

पातर—पतला, बारीक। स्त्री०

पातव्य—रक्षा करने योग्य, पीने योग्य।

पातशाह—पु० बादशाह।

पाताबा—पु० मोजा।

पाताल—पु० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ, पृथ्वी के नीचे के लोक, गुफा, बड़वानल। [होने का भाव।

पातिव्रत, पातिव्रत्य—पु० पतिव्रता

पाती—स्त्री० चिट्ठी, पत्ता, इज्जत।

पातुर—स्त्री० वेश्या।

पात्र—पु० बरतन, भाजन, अधिकारी (जैसे दानपात्र), नाटक के नायक नायिका आदि, अभिनेता, पत्ता।

पात्रता—स्त्री० योग्यता, पात्र होने का भाव।

पात्री—स्त्री० छोटा बरतन।

पात्रीय—पात्र संबंधी।

पाथ—पु० जल, सूर्य, अग्नि, अन्न, आकाश, वायु, मार्ग।

पाथना—गढ़ना, ठोंकना।

पाथर—पु० पत्थर। [राहखर्च।

पाथेय—पु० रास्ते का कलेवा,

पाथोज—पु० कमल।

पाथोधि—पु० समुद्र ।
पाद—पु० पैर, पद्य का चतुर्थांश, चरण, चौथाई, वृक्ष का मूल, नीचे का भाग, गमन, गुदावायु ।
पादक—पु० चलनेवाला, चतुर्थांश ।
पादग्रहण—पु० पैर छू कर प्रणाम करना ।
पादटिप्पणी, पादटीका—स्त्री० वह टिप्पणी जो पुस्तक में पृष्ठ के नीचे लिखी हुई हो ।
पादतल—पु०पैर का तलवा ।[जूता ।
पादत्र, पादत्राण—पु० खड़ाऊँ,
पादप—पु० वृक्ष, पीढ़ा ।
पादपीठ—पु० पीढ़ा ।
पादपूरण—पु० पद्यपूर्ति ।
पादरक्षक—पु० खड़ाऊं, जूता ।
पादरी—पु० ईसाई धर्म का पुरोहित ।
पादशाह—पु० बादशाह ।
पादाकुलक—पु० चौपाई ।
पादाक्रांत—पददलित । [सिपाही ।
पादाति, पादातिक—पु० पैदल
पादी—पु० पैरवाले जलजंतु ।
पादीय—पदवाला ।
पादुका—स्त्री० खड़ाऊं, जूता ।
पादोदक—पु० वह जल जिससे पैर धोया गया हो, चरणामृत ।
पाद्य—पु० पैर धोने का जल ।
पाद्यार्घ—पु० पैर हाथ धोने का जल, पूजा की सामग्री ।
पाधा—पु० उपाध्याय ।
पान—पु० पीना, मद्यपान, पेय पदार्थ, मद्य, पानी, कटोरा, प्राण, पत्ता, एक प्रसिद्ध पत्ता । मु० पान फूल = साधारण उपहार, अत्यंन्त कोमल वस्तु ।
पानदान-पु० पान रखने का डिब्बा ।
पानिप—पु० कांति, चमक, पानी ।
पानी—पु० जल, वर्षा, रस, चमक, इज्जत, वर्ष, मुलम्मा, मरदानगी, ठंढा या फीका पदार्थ, द्वंद्वयुद्ध, बार, आबहवा । मु० पानी का बुलबुला = क्षणभंगुर वस्तु । पानी की तरह बहाना = अंधाधुन्ध खर्च करना । पानी का मोल = बहुत सस्ता । पानी पानी होना = लज्जित होना । पानी फेरना = चौपट करना । पानी में आग लगाना = जहाँ झगड़ा सम्भव नहीं वहाँ झगड़ा पैदा करना, असंभव बात करना । मुँह में पानी आना = अत्यंत लालच होना । पानी उतारना = बेइज्जत करना ।[साहसी ।
पानीदार—चमकदार, इज्जतदार,
पानीदेवा—पिंडदान या तर्पण करनेवाला, वंशज । [योग्य । पु०जल ।
पानीय—पीने योग्य, रक्षा करने
पाप—पु० बुरा कर्म, पातक, अपराध, वध, पापबुद्धि, अहित, झंझट, अशुभ ग्रह ।

पापकर्मा—पु० पापी ।
पापघ्न—पापनाशक ।
पापाचारी—पापी ।
पापदृष्टि—जिसकी दृष्टि पापमय हो ।
पापनाशन—पु० पापनाशक, प्रायश्चित्त विष्णु, शिव ।
पापयोनि—स्त्री० पाप से प्राप्त, मनुष्य से भिन्न योनि ।
पापरोग—पु० वह रोग जो पाप के कारण हुआ या माना जाता है । जैसे, कुष्ट, कोढ़, अंधा होना आदि ।
पापलोक—पु० नरक ।
पापहर—पु० पापनाशक ।
पापाचार—पु० दुराचार ।
पापात्मा—पापी ।
पापिष्ठ—बहुत बड़ा पापी ।
पापोश—पु० जूता ।
पाबंद—बँधा हुआ, कैद, नियम और प्रतिज्ञा आदि पालन करने को विवश ।
पाबन्दी—स्त्री० मजबूरी ।
पाबोसी—स्त्री० पैर चूमना ।
पामर—दुष्ट, पापी, मूर्ख ।
पामाल—पददलित, तबाह ।
पामाली—स्त्री० तबाही, बरबादी ।
पायंटमैन—वह आदमी जिसके जिम्मे स्टेशन पर रेलवे लाइन बदलने की कल रहती है ।
पाँय—पु० पैर ।
पायंदाज-पु०पैर पोछने का बिछावन ।

पायक—पु० दूत, हरकारा, सेवक, पैदल सिपाही ।
पायतख्त—पु० राजधानी, राजनगर ।
पायताबा—पु० मोजा ।
पायदार—टिकाऊ ।
पायबंद—किसी काम में फँसा हुआ ।
पायमाल—दे० "पामाल ।" [हथनी ।
पायल—स्त्री० नूपुर, तेज चलनेवाली
पायस—स्त्री० खीर ।
पायसा—पु०पड़ोस । [दरजा,सीढ़ी ।
पाया—पु० गोड़ा, पावा, खम्भा,
पायी—पीनेवाला । [कार ।
पारंगत—पार गया हुआ, पूरा जान
पार—पु० दूसरी ओर का किनारा, दूसरी ओर, तरफ, छोर, अंत ।
पारखी—परखने वाला । [जानकार ।
पारग—पार जानेवाला, समर्थ, पूरा
पारचा—पु० टुकड़ा, कपड़ा, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, पहनावा ।
पारण—पु० व्रत के बाद का भोजन । तृप्त करना, मेघ, समाप्ति ।
पारतंत्र्य—पु० परतंत्रता, अधीनता ।
पारद—पु० पारा । [पड़े ।
पारदर्शक—जिसमें आर पार दिखाई
पारदर्शी—उस पार तक देखनेवाला, दूरदर्शी ।
पारधी-पु० व्याध, शिकारी, हत्यारा ।
पारना—गिराना, लेटाना, पछाड़ना, रखना, उत्पात मचाना, ढालना,

सकना, पालना। [विक।
पारमार्थिक—परमार्थ संबंधी, वास्त-
पारलौकिक—परलोक संबंधी।
पारस—स्वच्छ और उत्तम, नीरोग। पु० एक पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुलाया जाय तो वह सोना हो जायगा, लाभ दायक और उपयोगी वस्तु, वह जो दूसरे को अपने समान कर ले, परोसा हुआ भोजन, पास, एक देश। [जाति।
पारसी—पारस देश का, पु० एक
पारस्परिक—आपस का।
पारस्य—पु० पारस देश।
पारा—पु० एक धातु, टुकड़ा, हिस्सा।
पारायण—पु० समाप्ति, समय बाँध-कर किसी ग्रन्थ का आद्योपान्त पाठ।
पारावत—परेवा, कबूतर, बंदर, पर्वत।
पारावार—पु० आरपार, सीमा, समुद्र।
पारिजात—पु० स्वर्ग में नन्दन वन का एक वृक्ष जो समुद्र मंथन में निकला माना जाता है।
पारितोषिक—पु० इनाम।
पारिपार्श्व, पारिपार्श्विक—पु० दे० "पारिषद"।
पारिभाषिक—जिसका व्यहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय।

पारिषद—पु० परिषद् में बैठनेवाला, अनुयायी।
पारी—स्त्री० बारी।
पार्क—पु० बागीचा, उपवन।
पार्ट—पु० हिस्सा, भाग, खंड, नाटक में अभिनय का एक खंड, अभिनय।
पार्टिशन—पु० बँटवारा।
पार्टी—स्त्री० मंडली, दावत, भोज।
पार्थ—पु० पृथ्वीपति, अर्जुन, युधिष्ठिर, भीम,।
पार्थक्य—भेद, जुदाई।
पार्थिव—पृथ्वी से उत्पन्न, मिट्टी आदि का बना हुआ। राजसी। पु० मिट्टी का शिवलिंग।
पार्वण—पु० वह श्राद्ध जो किसी पर्व के दिन किया जाय।
पार्वतीय—पहाड़ी।
पार्श्व—पु० बगल, पास। [मुसाहब।
पार्श्ववर्ती—पु० पास रहनेवाला,
पार्षद—पु० मुसाहब, मंत्री, सेवक।
पार्सल—पु० पुलिंदा, पैकेट, डाक से रवाना करने के लिये बँधा हुआ पुलिंदा।
पाल—पु० पालनकर्त्ता, पकाने के लिये पत्ता बिछा कर फलों को रखने की विधि, तंबू, नाव में ताना हुआ कपड़ा, ओहार, बाँध, ऊँचा किनारा।
पालक—पु० पालनकर्त्ता, साईस, दत्तक पुत्र, पलंग, एक साग।

पालकी गाड़ी—स्त्री० बग्घी।

पालट—पु० दत्तक पुत्र।

पालन—पु० भरण-पोषण, भंग न करना, न टालना,

पालना—पालन करना। पु० झूला।

पाला—पु० हिम, बर्फ, सरदी, वास्ता, प्रधान स्थान, अखाड़ा।

पालि—स्त्री० कोना, पंक्ति, किनारा, सीमा, बाँध, कगार, गोद, परिधि, चिह्न।

पालिटिक्स—पु० राजनीति शास्त्र।

पालिश—स्त्री० लेप, चिकनाई और चमक।

पालिसी—स्त्री० नीति, वह प्रमाण या प्रतिज्ञापत्र जो बीमा कराने वाली कम्पनी की ओर से बीमा कराने वाले को मिलता है। [वाला।

पालिसी होल्डर—पु० बीमा कराने

पाँव—पु० पैर। मु० पाँव अड़ाना =फजूल दखल देना। पाँव उखड़ जाना=लड़ाई में न ठहरना। पाँव तले की मिट्टी निकल जाना=स्तब्ध सा हो जाना। पाँव फूँक फूँक कर रखना=बहुत बचा कर काम करना।

पावँड़ा—पु० वह कपड़ा जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाय।

पावँड़ी—स्त्री० खड़ाऊँ, जूता।

पावक—शुद्ध करनेवाला। पु० अग्नि, सदाचार, वरुण, सूर्य।

पावदान—पु० पैर रखने की वस्तु।

पावन—पवित्र, पवित्र करने वाला। पु० अग्नि, प्रायश्चित्त, जल, गोबर, रुद्राक्ष, विष्णु।

पावना-पाना, जानना, भोजन करना। पु० लहना, वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

पावस—स्त्री० वर्षा काल।

पाश—पु० फंदा, बंधन।

पाशव—पशु संबंधी।

पाशा—पु० तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशुपत—पशुपति संबंधी।

पाश्चात्य—पीछे का, पश्चिमी।

पाषंड—पु० वेद विरुद्ध आचरण करने वाला, ढोंगी।

पाषाण—पु० पत्थर।

पासंग—पु० पसँगा।

पास निकट। पु० अधिकार, निकटता, बगल, पहरा, एक पहर, परवाना, अधिकार पत्र। मु० पास फटकना= निकट जाना।

पासपोर्ट—पु० राहदानी, एक देश से दूसरे देश के जाने का सरकार द्वारा दिया हुआ अधिकार पत्र।

पासबुक—पु० वह पुस्तक जिसमें लेन देन का हिसाब किताब हो।

पासा—पु० चौसर, चौसर की लंबी गोटी। मु० पासा पड़ना=भाग्य

अनुकूल होना । पासा पलटना = भाग्य पलटना ।

पासी—स्त्री० फंदा । पु० फंदा डाल कर चिड़ियाँ पकड़ने वाली एक जाति ।

पाहन—पु० पत्थर ।

पाहरू—पु० पहरेदार ।

पाहिँ—पास, किसी से ।

पाहि—रक्षा करो ।

पाहुना—पु० अतिथि, दामाद ।

पिंग—पीला, पीलापन लिये भूरा, भूरापन लिये लाल ।

पिंगल—पीला, भूरापन लिये लाल, भूरापन लिये पीला । पु० छंदशास्त्र के आदि आचार्य, छंदशास्त्र, बंदर, अग्नि, पीतल, उल्लू पक्षी ।

पिंगला—स्त्री० तीन प्रधान नाड़ियों में एक, राजनीति, लक्ष्मी ।

पिंजर—पीला, भूरापन लिये लाल । पु० पिंजड़ा, पंजर, सोना ।

पिंजरापोल—पु० पशुशाला ।

पिंड—पु० गोल या ठोस टुकड़ा, ढेर, शरीर, चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को दिया जाता है, भोजन । मु० पिंड छोड़ना= साथ लगा या सटा न रहना ।

पिंडज—पु० गर्भ से उत्पन्न प्राणी ।

पिंडदान—पु० पितरों को पिंड देने का कर्म ।

पिउ—पु० पति ।

पिक—पु० कोयल ।

पिकेटिंग—स्त्री० धरना, किसी बात को रोकने के लिये पहरा देना ।

पिक्चर—स्त्री० चित्र, तस्वीर ।

पिघलना—गलना, द्रवीभूत होना ।

पिछानना—पहचानना ।

पिटक—पु० पिटारा, फुंसी, ग्रंथ का एक भाग । [सहायक ।

पिठ्ठु—पु० पीछे चलनेवाला, अनुयायी,

पितर—पु० मरे हुए पुरखे ।

पिता—पु० बाप ।

पितामह—पु० पिता का पिता, दादा, भीष्म, ब्रह्मा, शिव ।

पितृ—पु० पिता, मरे हुए पुरखे ।

पितृऋण— पु० धर्म-शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक जिससे वह तब उऋण हुआ माना जाता है जब पुत्र उत्पन्न करता है ।

पितृकर्म—पु० श्राद्ध तर्पण आदि कर्म ।

पितृतीर्थ—पु० गया तीर्थ, अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग ।

पितृपक्ष—पु० आश्विन का पहला पख जिसमें लोग पितृतर्पण कराते हैं, पिता के संबंधी ।

पितृपद—पु० पितरों का लोक ।

पितृयज्ञ—पु० पितृतर्पण ।

पितृलोक—पु० पितरों का लोक ।

पितृव्य—पु० चाचा ।

पित्त—पु० एक तरल पदार्थ जो शरीर

के अन्तर्गत यकृति में बनता है।
पित्तघ्न—पित्त का नाश करनेवाला।
पित्तज्वर—पु० वह ज्वर जो पित्त के बिगड़ने से हो।
पित्तप्रकृति—जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।
पित्ताशय—पु० पित्त की थैली।
पिदर—पु० पिता।
पिधान—पु० आवरण, पर्दा, ढक्कन, तलवार की म्यान, किवाड़।
पिन—स्त्री० आलपीन।
पिनकी—पिनकनेवाला, अफीमची,
पिनहा—छिपा हुआ, पोशीदा।
पिनाक—पु० धनुष, शिवजी का धनुष, त्रिशूल।
पिनाकी—पु० शिव।
पिपरमिंट—पु० पुदीने की जाति का एक पौधा जो यूरोप और अमेरिका में होता है।
पिपासा—स्त्री० प्यास, लोभ।
पिपासु—प्यासा, लालची।
पिपीलिका—स्त्री० चींटी।
पिप्पल—पु० पीपल।
पिप्पली—स्त्री० पीपल।
पिय—पु० पति।
पियराना—पीला पड़ना।
पिराना—दर्द करना।
पिरोना—गूथना।
पियानो—पु० एक अँगरेजी बाजा।
पिलना—झुक पड़ना, भिड़ जाना, पेरा जाना।
पिलपिला—भीतर से गीला और [नरम।
पिल्ला—पु० कुत्ते का बच्चा।
पिव—पु० पिय, पति।
पिशाच—पु० भूत।
पिशुन—पु० चुगलखोर।
पिष्ट—पिसा हुआ।
पिष्टपेषण—पु० पिसे हुए को पीसना, कही हुई बात को फिर से कहना।
पिसना—चूर्ण होना, दब जाना, पीड़ित होना।
पिसर—पु० लड़का, बेटा।
पिस्ता—पु० एक तरह का मेवा।
पिस्ताँ—पु० छाती, स्तन।
पिस्तौल—स्त्री० छोटी बंदूक।
पिहित—छिपा हुआ।
पी—पु० पिय, पति।
पीक—स्त्री० थूक से मिला हुआ [पान का रस।
पीकदान—पु० पीक फेंकने का बर्तन।
पीछा—आगे का उलटा। मु० पीछा करना = तंग करना, खदेड़ना। पीछा छूटना = पिंड छूटना, अप्रिय कार्य से छुटकारा मिलना।
पीठ—पु० पीढ़ा, चौकी, विद्यार्थी आदि के बैठने का आसन, किसी वस्तु के रहने की जगह, अधिष्ठान, सिंहासन, वेदी, प्रांत, पुराणानुसार

वह स्थान जहाँ दक्षपुत्री का अंग या भूषण कट कर गिरा है। स्त्री० पेट के पीछे का भाग। मु० पीठ ठोंकना = शाबाशी देना, हिम्मत बढ़ाना। पीठ दिखाना = युद्ध से भागना। पीठ दिखा कर जाना = स्नेह तोड़ कर जाना। पीठ देना = बिदा होना, विमुख होना, भाग जाना। पीठ पर या पीठ पर का = जन्मक्रम से अपने सहोदर के बाद का। पीठ पर होना = मदद पर होना। पीठ फेरना = बिदा होना, भाग जाना, मुँह फेर लेना।

पीठस्थान—पु० पुराणानुसार वह स्थान जहाँ दक्षपुत्री का अंग या भूषण कट कर गिरा है।

पीड़क—पीड़ा देनेवाला।

पीड़न—पु० पीड़ा देना, दबाना, पेरना, अत्याचार करना, नाश।

पीड़ा—स्त्री० दर्द, रोग।

पीढ़ी—स्त्री० पुश्त, संतान।

पीत—पीला, भूरा, पीया हुआ। पु० पीला रंग, भूरा रंग, हरताल, हरिचंदन, कुसुम, पुखराज, मूँगा।

पीतक—पीला। पु० हरताल, केशर, अगर, पीतल, पीला चंदन, शहद।

पीतधातु—स्त्री० गोपी चंदन।

पीतपुष्प—पु० कनेर, चंपा।

पीतम—पु० प्रियतम।

पीतवास—पु० श्रीकृष्ण।

पीतसार—पु० पीत चंदन, सफेद [चंदन।

पीतांबर—पु० पीला कपड़ा, रेशमी धोती, श्रीकृष्ण।

पीन—मोटा, पुष्ट, संपन्न।

पीनक—स्त्री० नशे में झुकना।

पीनलकोड—पु० अपराध और दण्ड सम्बन्धी कानूनों का संग्रह।

पीनस—पु० घ्राण शक्ति नष्ट होने का एक रोग। नाक फूलना।

पीयूष—पु० अमृत, दूध।

पीयूषभानु—पु० चंद्रमा।

पीर—बुजुर्ग, महात्मा, सिद्ध। पु० पीड़ा, दर्द, हमदर्दी।

पीरी—स्त्री० बुढ़ापा, चेला मूड़ने का धंधा।

पीरोजा—पु० एक प्रकार का नीले [रंग का पत्थर।

पील—पु० हाथी, ऊँट।

पीलपाँव—पु० पैर फूलने का रोग।

पीलु—पु० फलदार वृक्ष, फूल, परमाणु, हाथी, हड्डी का टुकड़ा।

पीव—पु० पिय, पति।

पीवर—मोटा, भारी।

पीवरी—स्त्री० युवती स्त्री, गाय।

पीस गुड्स—पु० कपड़े का थान।

पीहर—पु० नैहर।

पुंगव—श्रेष्ठ, पु० बैल।

पुंगीफल—पु० सुपारी, पूगीफल।

पुंज—पु० समूह, ढेर।

पुंड—पु० तिलक, टीका।
पुंडरी—पु० स्थलपद्म।
पुंडरीक--पु० श्वेत कमल, कमल, रेशम का कीड़ा, बाघ, तिलक, सफेद हाथी, सफेद कोढ़, अग्नि, बाण, आकाश। [की तरह हों, विष्णु।
पुंडरीकाक्ष—जिसकी आँखें कमल
पुंड्र—पु० गन्ना, श्वेत कमल, तिलक, टीका। [पुरुष वाचक शब्द (व्या०)
पुंलिंग—पु० पुरुष का चिन्ह, शिश्न,
पुंश्चली—स्त्री० कुलटा, छिनाल।
पुंस—पु० पुरुष।
पुंसवन—पु० दुग्ध, सोलह संस्कारों में दूसरा जो गर्भिणी के तीसरे महीने हो, एक व्रत।
पुंसत्व—पु० पुरुषत्व, स्त्री सहवास की शक्ति, वीर्य्य।
पुकार—स्त्री० हाँक, टेर, दुहाई, नालिश, गहरी माँग।
पुखराज—पु० एक रत्न।
पुख्ता—पका हुआ, मजबूत।
पुचकारना—चूमने का सा शब्द करके प्यार करना।
पुचारा—पु० भींगे कपड़े से पोंछने का काम, हलका लेप, पोतने का गीला कपड़ा, प्रसन्न करने का शब्द, चापलूसी, बढ़ावा।
पुच्छ— स्त्री० दुम, पूँछ।
पुच्छल--दुमदार।
पुछल्ला—बड़ी पूँछ, पिछलग्गू।
पुजना—पूजा जाना, पूरा होना।
पुजापा—पु० पूजा की सामग्री।
पुजारी--पु० पूजा करनेवाला।
पुट—पु० हलका छिड़काव, बोर, हलका मेल, आच्छादन, कटोरा, दोनों के आकार की वस्तु, औषध पकाने का मुँहबंद वस्तु, दो बराबर बरतनों को मुँह मिल कर जोड़ने से बना हुआ बंद घेरा, अन्त:पट, कमल, मध्य, युगल, युग्म। [मृत्यु, आफत।
पुटकी--स्त्री० पोटली, आकस्मिक
पुटपाक--पु० पत्ते के दोने में या बंद बर्तन में औषध पकाने का विधान। [लँगोटी।
पुटी--स्त्री० छोटा दोना, पुड़िया,
पुटीन—पु० किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़ और छेद आदि भरने में काम आने वाला मसाला।
पुण्य--पवित्र, शुभ। पु० धर्मकार्य।
पुण्यभूमि--स्त्री० आर्यावर्त्त।
पुण्यश्लोक--पवित्र आचरणवाला।
पुण्यस्थान--पु० तीर्थस्थान।
पुण्यात्मा--धर्मात्मा।
पुण्याह—पु० पवित्र दिन।
पुण्याह वाचन--पु० देवकार्य के अनुष्ठान के पहले मंगल के लिये "पण्याह" शब्द का तीन बार कथन।
पुतला--पु० मूर्ति।

पुतली—स्त्री० गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग, कपड़ा बुनने की कल। [कपड़ा बुनने का कारखाना।

पुतलीघर—पु० कल-कारखाना,

पुत्तलिका—स्त्री० पुतली, गुड़िया।

पुत्र—पु० लड़का, बेटा।

पुत्रवधू—स्त्री० बेटे की स्त्री, पतोहू।

पुत्रिका—स्त्री० लड़की, गुड़िया, आँख की पुतली, स्त्री का चित्र।

पुत्री—स्त्री० बेटी, लड़की।

पुत्रेष्टि—स्त्री० पुत्रोत्पत्ति के लिये किया जाने वाला यज्ञ।

पुनः—फिर, पीछे। [दोहराना।

पुनरावृत्ति—स्त्री० फिर से घूमना,

पुनरुक्ति—स्त्री० कही हुई बात को फिर कहना। [जन्म ग्रहण।

पुनर्जन्म—पु० मरने के बाद फिर

पुनर्भू—स्त्री० वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो।

पुनि—फिर।

पुनीत—पवित्र। [सुलताना, चंपा।

पुन्नाग—पु० श्वेत कमल, जायफल,

पुमान्-पु० मर्द। [वाला, इंद्र, विष्णु।

पुरंदर—पु० नगर या घर तोड़ने

पुरः—आगे, पहले।

पुरःसर—अगुआ, संगी, सहित।

पुर-भरा हुआ। पु० नगर, घर, कोठा, लोक, नक्षत्र, पुंज, देह, दुर्ग, नगरा।

पुरइन-स्त्री० कमल, कमल का पत्ता।

पुरखा—पु० पूर्व पुरुष, घर का बड़ा बूढ़ा।

पुरजा—पु० टुकड़ा, कतरन, धज्जी, अंग। मु० चलता पुरजा = चालाक आदमी।

पुरत्राण—पु० शहर पनाह, परकोटा।

पुरवा—पु० छोटा गाँव, पूर्वी हवा, मिट्टी का कुल्हड़।

पुरश्चरण-पु० किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से अनुष्ठान करना, किसी कार्य की सिद्धि के लिये मंत्र आदि जपना।

पुरसाँ—पूछने वाला।

पुरसा—पु० पुरुष की ऊँचाई।

पुरस्कार—पु० आदर, प्रधानता, इनाम।

पुरस्कृत—आगे किया हुआ, पूजित, स्वीकृत, जिसे इनाम मिला हो।

पुरा—प्राचीन। पुराने समय में। पु० गाँव।

पुराकल्प—पु० पहले का कल्प, प्राचीन काल। [किया हुआ।

पुराकृत—पूर्वकाल या पूर्वजन्म में

पुराण—पु० प्राचीन, हिन्दुओं के धर्म संबंधी आख्यान ग्रंथ, अठारह की संख्या, शिव। [विद्या।

पुरातत्व—पु० प्राचीन काल संबंधी

पुरातन—प्राचीन, विष्णु।

पुरारि—पु० शिव।

पुरावृत्त—पु० पुराना वृत्तांत।
पुरि—स्त्री० पुरी, नदी।
पुरी—स्त्री० नगरी, जगन्नाथ पुरी।
पुरीष—पु० मल, विष्ठा। [शरीर।
पुरु—पु० देवलोक, दैत्य, पराग,
पुरुष—पु० मनुष्य, आत्मा, विष्णु, सूर्य, जीव, शिव, पूर्वज, पति।
पुरुषकुंजर, पुरुषसिंह—पु० श्रेष्ठ पुरुष। [मरदानगी।
पुरुषत्व—पु० पुरुष होने का भाव,
पुरुषानुक्रम—पु० पुरखों की चली आती हुई परंपरा।
पुरुषार्थ—पु० पुरुष के उद्योग का विषय, उद्यम, पराक्रम, शक्ति।
पुरुषार्थी-पुरुषार्थ करनेवाला, उद्योगी, परिश्रमी, बली।
पुरुषोत्तम—पु० श्रेष्ठ पुरुष, विष्णु, जगन्नाथ, नारायण, मलमास।
पुरुहूत—पु० इंद्र।
पुरोधा—पु० पुरोहित।
पुर्जा—पु० टुकड़ा, चिथड़ा, कतरन।
पुर्तगीज—पुर्तगाल वासी।
पुल—पु० नदी आदि के आरपार जाने का रास्ता। मु० पुल बाँधना =अतिशय करना।
पुलक—पु० प्रेम हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों का प्रफुल्ल होना, रोमांच।
पुलकना—पुलकित होना, गदगद होना।
पुलकालि, पुलकावलि—स्त्री० हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली।
पुलकित—गदगद।
पुलटिस—स्त्री० फोड़ा पकाने के लिये दवाओं का मोटा लेप।
पुलिन—पु० किनारा, नदी से हाल की निकली हुई जमीन।
पुलिस—प्रजा की जानमाल की रक्षा के लिये मुकर्रर सरकारी सिपाही।
पुलिसमैन—पु० कान्स्टेबुल,।
पुलोमजा—स्त्री० इन्द्राणी।
पुश्त—स्त्री० पीठ, पीढ़ी।
पुश्तनामा—पु० वंशावली।
पुश्तपनाह—हिमायती।
पुश्ता—पु० बाँध, ऊँची मेंड़।
पुश्तैनी—कई पुश्तों से चला आने वाला, कई पुश्तों तक चलनेवाला।
पुष्कर—पु० जल, जलाशय, कमल, हाथी की सूँड़ का अगला भाग, आकाश, बाण, सर्प, युद्ध, भाग, सूर्य, एक दिग्गज, सारस पक्षी, विष्णु, शिव, बुद्ध, पुराणानुसार सात द्वीपों में एक, अजमेर के पास एक तीर्थ।
पुष्करिणी—स्त्री० तालाब।
पुष्कल—बहुत, परिपूर्ण, श्रेष्ठ, उपस्थित, पवित्र। पु० चार ग्रास की भिक्षा, अनाज नापने का एक प्राचीन मान। [बूत, बलवर्द्धक।
पुष्ट—पाला हुआ, मोटाताजा, मज-

पुष्टई—स्त्री० ताकत की दवा ।

पुष्टि—स्त्री० पोषण, बलिष्ठता, वृद्धि, दृढ़ता, बात का समर्थन ।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक—पुष्टि करने वाला, बलवर्द्धक ।

पुष्टिमार्ग—पु० बल्लभ संप्रदाय ।

पुष्प—पु० फूल, ऋतुमती स्त्री का रज,मांस । [आँख का एक रोग,फूला ।

पुष्पक—पु० फूल, कुवेर का विमान,

पुष्पधन्वा,पुष्पध्वज—पु० कामदेव ।

पुष्परज—पु० पराग, फूलों की धूल ।

पुष्पराग—पु० पुखराज ।

पुष्परेणु—पु० पराग । [स्वला स्त्री ।

पुष्पवती—स्त्री० फूली हुई, रज-

पुष्पवाटिका—स्त्री० फुलवारी ।

पुष्पबाण, पुष्पशर—पु० कामदेव ।

पुष्पांजलि—स्त्री० फूलों से भरी अंजलि ।

पुष्पित—फूला हुआ ।

पुष्पोद्यान—पु० फुलवारी ।

पुष्य—पु० पुष्ट, पोषण, सार वस्तु, पूस मास ।

पुस्तक—स्त्री० किताब ।

पुस्तकालय—पु० वह भवन जहाँ पुस्तकों का संग्रह हो ।

पुहुप—पु० फूल ।

पुहुमी—स्त्री० पृथ्वी,

पुहरेनु—पु० पराग ।

पूँजी—स्त्री० संचित धन, व्यापार में लगाया जाने वाला धन, समूह ।

पूंजीदार, पूंजीपति—पूंजीवाला ।

पूगना—पूरा होना ।

पूगी, पूगीफल—स्त्री० सुपारी ।

पूछ—स्त्री० खोज, चाह, इज्जत, जिज्ञासा ।

पूजक—पूजनेवाला ।[धन, सम्मान ।

पूजन—पु० पूजा की क्रिया, आरा-

पूजना—अराधना करना, सम्मान करना, घूस देना, पूरा होना, गहराई का भरना, चुकता होना, बीतना ।

पूजनीय—पूजने योग्य । [घूस ।

पूजा—स्त्री० आराधना, सत्कार, दंड,

पूज्य—पूजनीय । [अत्यंत पूज्य ।

पूज्यपाद—जिसके पैर पूजनीय हों,

पूत—पवित्र । पु० सत्य, शंख, सफेद कुश, पलास, तिल वृक्ष, पुत्र ।

पूति—स्त्री० पवित्रता, दुर्गंध ।

पूनो—स्त्री० पूर्णिमा ।

पूप—पु० पूआ ।

पूय—पु० पीप, मवाद ।

पूरक—पूरा करनेवाला । पु० गुणक अंक, साँस भीतर लेजाने की क्रिया ।

पूरण—पूरक । पु० भरने की क्रिया, समाप्त करना, अंकों का गुणा करना, वृष्टि, समुद्र ।

पूरणपरब—पु० पूर्णमासी । [जन्म ।

पूरबल—पु० पुराना जमाना, पूर्व

पूरित— परिपूर्ण, तृप्त, गुणित ।

पूर्ण—पूरा, अभावरहित, परितृप्त, भरपूर, समूचा, सफल, समाप्त ।
पूर्णकाम—जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गयी हों, निष्काम ।
पूर्ण चंद्र—पु० पूर्णिमा का चाँद ।
पूर्णतया, पूर्णतः—पूरी तरह से ।
पूर्णप्रज्ञ—पूर्ण ज्ञानी ।
पूर्णमासी—स्त्री० पूर्णिमा । [चिह्न ।
पूर्णविराम—पु० वाक्य समाप्ति का
पूर्णाहुति—स्त्री० वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं, किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया ।
पूर्णिमा—स्त्री० पूर्णमासी ।
पूर्त—पूरित, ढका हुआ । पु० पालन ।
पूर्त विभाग—पु० वह सरकारी मोहकमा जिसका काम सड़क, पुल आदि बनवाना हो ।
पूर्ति—स्त्री० समाप्ति, पूर्णता, पूरा करने की क्रिया, पूरण, गुणन ।
पूर्व—पहले का, आगे का, पुराना, पहले । पु० पूरब दिशा ।
पूर्वक—सहित, साथ ।
पूर्वकालिक—पूर्व काल का ।[भाई ।
पूर्वज—पु० पूर्व पुरुष, पुरखा, बड़ा
पूर्वजन्म—पु० पहले का जन्म ।
पूर्वपक्ष—पु० शास्त्रीय विषय के संबंध में उठायी हुई बात, प्रश्न या शंका, कृष्ण पक्ष, मुद्दई का दावा ।
पूर्वमीमांसा—स्त्री० एक दर्शन जिस से कर्मकांड संबंधी बातों का निर्णय किया गया है । [नुराग ।
पूर्वराग—पु० शुरू का प्यार, प्रथमा-
पूर्ववर्ती—पहले का ।
पूर्ववृत्त—पु० इतिहास ।
पूर्वानुराग—पु० वह प्रेम जो किसी के गुण सुन कर, चित्र या रूप देख कर उत्पन्न होता है ।
पूर्वापर—आगे पीछे ।
पूर्वापर्य—पु० पूर्वापर का भाव ।
पूर्वार्द्ध—पु० पहला आधा भाग ।
पूर्वाह्न—पु० सबेरे से दोपहर तक का समय ।
पूर्वी—पूरब का ।
पूर्वोक्त—पहले कहा हुआ ।
पूषण, पूषा—पु० सूर्य ।
पृथक्—अलग ।
पृथक्करण—पु० अलग करना ।
पृथिवी—स्त्री० दे० "पृथ्वी" ।
पृथु—जिसकी कीर्ति बहुत हो, चौड़ा बड़ा, अगणित, चतुर । पु० अग्नि, विष्णु, शिव । [एक तत्त्व ।
पृथ्वी—स्त्री० धरती, भूमि, मिट्टी,
पृथ्वीतल—पु० संसार, जमीन की सतह ।
पृथ्वीनाथ—पु० राजा ।
पृष्ट—पूछा हुआ । [पेज ।
पृष्ठ—पु० पीठ, पीछे का भाग, पन्ना,
पृष्ठपोषक—पु० पीठ ठोकने वाला,

सहायक, मददगार ।
पैंग—स्त्री० झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर का जाना ।
पैंटर—पु० चित्रकार ।
पैंटिंग—पु० चित्रकारी, रंगसाजी ।
पैंडुलम—पु० घड़ी का लटकन ।
पेखना—देखना ।
पेच—पु० घुमाव, उलझन, चालाकी, पगड़ी का लपेट, मशीन, मशीन का पुरजा, स्क्रू, युक्ति, कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की तरकीब ।
पेचक-स्त्री० बटे हुए तागे की गोली । पु० उल्लू पक्षी, जूँ, बादल, पलंग ।
पेचकश—पु० पेच कसने का औजार ।
पेचिश—स्त्री० पेट की पीड़ा, मरोड़ा ।
पेचीदगी—स्त्री० उलझाव ।
पेचीदा, पेचीला—पेचदार ।
पेज—पु० पुस्तक का पृष्ठ, वरक ।
पेट—पु० उदर, गर्भ, मन, गुंजाइश । मु० पेट काटना = बचत करने के लिये कम खाना । पेट का पानी न पचना = रहा न जाना । पेट की आग = भूख । पेट जलना = अत्यंत भूख लगना । पेट गिरना = गर्भपात होना । पेट रहना = गर्भ रहना ।
पेटक—पु० पिटारा, ढेर ।
पेटा—पु० बीच का हिस्सा, ब्योरा, सीमा, घेरा ।
पेटिका—स्त्री० सन्दूक, छोटी पिटारी ।
पेटी—स्त्री० छोटा सन्दूक, कमरबंद, चपरास ।
पेटू—बहुत खानेवाला ।
पेटेंट—वह आविष्कार या पदार्थ जिस की सरकार द्वारा रजिष्ट्री करायी गयी हो ।
पेड़—पु० वृक्ष ।
पेड़ू—पु० नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान, गर्भाशय ।
पेनी—स्त्री० इंगलैंड का एक तांबे का सिक्का ।
पेनीवेट—पु० एक अँगरेजी तौल ।
पेन्शन—पु० मासिक या वार्षिक वृत्ति ।
पेन्शनर—पु० पेन्शन पानेवाला ।
पेन्स—पु० एक अँगरेजी सिक्का ।
पेन्सिल—स्त्री० कागज या स्लेट पर लिखने की एक तरह का कलम ।
पेपर—पु० कागज, प्रश्नपत्र, लेख, निबंध, अखबार ।
पेमेंट—पु० भुगतान ।
पेय—पीने योग्य । पु० पीने की वस्तु, पानी, दूध ।
पेरना—इस प्रकार दबाना कि रस निकल आवे, कष्ट देना, देर करना ।
पेलना—धँसाना, ढकेलना, टाल देना, त्यागना, जबरदस्ती करना, पेरना ।
पेश—सामने । मु० पेश आना = बर्ताव करना, घटित होना । पेश करना = सामने रखना, नजर करना ।
पेशकार— पु० हाकिम के सामने कागज पेश करनेवाला कर्मचारी ।
पेशखेमा — पु० फौज का अगला

हिस्सा, पहले से आगे भेजा हुआ, किसी घटना का पूर्व लक्षण ।

पेशगी—स्त्री० अगाऊ ।

पेशतर—पहले ।

पेशबंदी—स्त्री० पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति ।

पेशवा—पु० नेता, महराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि ।

पेशवाई—स्त्री० अगवानी, पेशवाओं का शासनकाल, पेशवा का पद ।

पेशा—पु० जीविकोपार्जन का काम ।

पेशानी—स्त्री० ललाट, किस्मत ।

पेशाब—पु० मूत्र ।

पेशाबखाना—पु० पेशाब करने का [स्थान ।

पेशावर—पु० पेशा करनेवाला, व्यवसायी, भारत का एक शहर ।

पेशी—स्त्री० पेश होने या सामने होने की क्रिया, वस्त्र, तलवार की म्यान ।

पेश्तर—पहले ।

पेषण—पु० पीसना ।

पैंजनी—पु० नूपुर ।

पैंठ—स्त्री० हाट, दूकान, हाट का दिन ।

पैंडा—पु० रास्ता, घुड़साल, प्रणाली ।

पैंत—स्त्री० दाँव, बाजी ।

पैंफ्लेट—पु० पुस्तिका ।

पै—परन्तु, जरूर, पीछे, निकट, तरफ, ऊपर, से, द्वारा । स्त्री० ऐब, दोष । पु० दे० "पय" ।

पैकार—पु० छोटा व्यापारी, फुटकर सौदा बेचनेवाला, फेरीवाला ।

पैकेट—पु० पुलिंदा, छोटी गठरी ।

पैक्ट—पु० कौल करार, सुलहनामा ।

पैखाना—पु० दे० "पाखाना" ।

पैगंबर—पु० ईश्वरीय दूत ।

पैगाम—पु० संदेशा ।

पैज—स्त्री० प्रतिज्ञा, होड़ ।

पैजामा—पु० दे० "पायजामा" ।

पैजार—स्त्री० जूता, जोड़ा ।

पैठ—स्त्री० प्रवेश, पहुँच ।

पैड—पु० छोटी मुलायम गद्दी ।

पैड़ी—स्त्री० सीढ़ी ।

पैतरा—पु० तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम फिर कर पैर रखने की मुद्रा ।

पैतृक—पितृसंबंधी, पुस्तैनी ।

पैदा—उत्पन्न, प्रकट, प्राप्त, कमाया हुआ । स्त्री० आमदनी ।

पैदाइश—स्त्री० जन्म ।

पैदाइशी—जन्म का, स्वाभाविक ।

पैदावार—स्त्री० उपज, उत्पत्ति ।

पैना—तेज ।

पैमाइश—स्त्री० माप, नाप ।

पैमाना—पु० मापने का औजार, मानदंड ।

पैमाल—दे० "पामाल" ।

पैया—स्त्री० पैर ।

पैरगाड़ी—स्त्री० साइकिल ।

पैरना—तैरना ।

पैरवी—स्त्री० अनुसरण, आज्ञापलन, कोशिश, पक्ष लेना, किसी बात के अनुकूल प्रयत्न ।
पैरवीकार—पु० पैरवी करने वाला ।
पैरा—पु० लेख का उतना अंश जितने में कोई एक बात पूरी हो जाय ।
पैराक—तैराक ।
पैवंद-पु० जोड़,पेड़ का कलम बाँधना ।
पैवस्त—सोखा हुआ, मिला हुआ ।
पैशाच-पिशाच संबधी,पिशाच देश का,
पैशाच विवाह--पु० सोई हुई या मदोन्मत्त कन्या को हरण करके किया हुआ विवाह ।
पैशाचिक--राक्षसी ।
पैशाची--स्त्री० एक प्राकृत भाषा ।
पैशुन्य--पु० चुगलखोरी ।
पोगंड--पु० पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक, वह जिसका कोई अंग छोटा बड़ा या अधिक हो ।
पोच--तुच्छ, क्षीण, हीन ।
पोट--पु० गठरी, ढेर ।
पोटना—ससेटना, फुसलाना ।
पोढ़ा—दृढ़, मजबूत ।
पोत-पशुपक्षी आदि का छोटा बच्चा, छोटा पौधा, गर्भस्थ पिंड जिसपर झिल्ली न चढ़ी हो, कपड़े की बुनावट, नौका,प्रवृत्ति,बारी,जमीन का लगान ।
पोतदार--पु० खजानची, खजाना में रुपया परखनेवाला ।
पोतना--लीपना, चुपड़ना, लीपने का कपड़ा । [अण्डकोष ।
पोता--पु० बेटे का बेटा, लगान,
पोथा—पु० बड़ी पोथी, कागजों की गड्डी ।
पोथी—स्त्री० पुस्तक ।
पोप—पु० ईसाइयों के कैथोलिक संप्रदाय का प्रधान धर्मगुरु ।
पोपला--पचका और सिकुड़ा हुआ, जिसके मुँह में दाँत न हो ।
पोर—स्त्री० अँगुली की गाँठ, अँगुली या ईख की गाँठों के बीच का भाग, रीढ़ ।
पोर्ट—पु० बंदरगाह ।
पोर्टर—पु० रेलवे कुली, डाक-कुली ।
पोल—पु० शून्य स्थान, खोखलापन, फाटक, आँगन । मु० पोल खुलना = छिपा दोष प्रकट होना,भंडा फूटना ।
पोला—खोखला, पुलपुला ।
पोलाव—पु० माँस और चावल को एक साथ पका कर बनाया हुआ भोजन । [हो, निर्वाचन स्थान ।
पोलिंग स्टेशन--पु० जहाँ चुनाव
पोलिटिकल एजेंट--पु० राज प्रतिनिधि ।
पोलो—पु० एक अंगरेजी खेल जो घोड़े पर चढ़ कर खेला जाता है ।
पोशाक--स्त्री० पहनावा ।
पोशीदा--छिपा हुआ ।

पोष—पु० पोषण, उन्नति, वृद्धि, धन, संतोष।

पोषक—पालक, वर्द्धक, सहायक।

पोषण—पु० पालन, वर्द्धन, पुष्टि, सहायता।

पोष्य—पालने योग्य।

पोष्यपुत्र—पु० पुत्र के समान पाला हुआ लड़का, दत्तक-पुत्र।

पोस—पु० पालने वाले के साथ हेल मेल। [नौकरी, डाकखाना।

पोस्ट—स्त्री० जगह, स्थान, पद

पोस्ट आफिस—पु० डाकघर।

पोस्ट मोर्टम—पु० किसी प्राणी के मरने पर उसकी लाश को चीरफाड़ कर की जानेवाली परीक्षा।

पोस्ट मास्टर—पु० डाकघर का प्रधान कर्मचारी। [वाला।

पोस्टमैन—पु० डाकिया, चिट्ठी बाँटने

पोस्टर—पु० छपा हुआ बड़ा विज्ञापन जो दीवारों पर चिपकाया जाता है।

पोस्टेज—पु० चिट्ठी आदि भेजने का महसूल। [का पौधा।

पोस्त—पु० छिलका, चमड़ा, अफीम

पोस्ता—पु० अफीम का पौधा।

पोस्तीन—पु० खाल का बना हुआ कोट जिसमें नीचे की ओर बाल होते हैं। [जड़ना, घिसना। घुसनेवाला।

पोहना—गूँथना, छेदना, लगाना,

पौ—स्त्री० प्याऊ, ज्योति, पासे की एक चाल। पु० पैर, जड़। मु० पौ फटना = उजाला दिखाई पड़ना। पौ बारह होना = जीत का दाँव पड़ना, बन आना।

पौगंड—पु० पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौडर—पु० बुकनी, चूर्ण।

पौढ़ना—लेटना, झूलना।

पौत्र—पु० पोता।

पौदर—स्त्री० पैर का चिन्ह, पगडंडी।

पौधा—पु० छोटा पेड़। [चौथाई।

पौन—स्त्री० हवा, प्राण, प्रेत, तीन

पौनार—स्त्री० पद्मनाल।

पौर—नगर का।

पौराणिक—पुराणवेत्ता, पुराणपाठी, पुराण संबंधी, प्राचीन काल का।

पौरिया पु० द्वारपाल।

पौरी—स्त्री० ड्योढ़ी, सीढ़ी, खड़ाऊँ।

पौरुष—पुरुष संबंधी। पु० पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पराक्रम, उद्योग।

पौरुषेय—पुरुष संबंधी, आदमी का किया हुआ, आध्यात्मिक।

पौरोहित्य—पु पुरोहित का कर्म।

पौर्णमासी—स्त्री० पूर्णमासी।

पौलस्त्य—पु० पुलस्त्य के वंश का पुरुष, कुबेर, रावण, कुंभकर्ण और विभीषण, चंद्र।

पौलोमी—स्त्री० इंद्राणी।

पौष—पु० पूस।

पौष्टिक—पुष्टिकारक ।
प्याऊ—पु० पनसाला ।
प्याजी—हलका गुलाबी ।
प्यादा—पु० पैदल सिपाही, दूत ।
प्यार—पु० प्रेम ।
प्यारा—पु० प्रेमपात्र ।
प्याला—पु० छोटा कटोरा, जाम ।
प्यास—स्त्री० जल पीने की इच्छा, प्रबल कामना ।
प्युनिटिव पुलिस—पु० किसी नगर या गाँव की अतिरिक्त पुलिस ।
प्यून—पु० सिपाही, चपरासी ।
प्योसार—पु० नैहर ।
प्यौर—पु० पति, प्रियतम ।
प्रकंप—पु० कँपकँपी ।
प्रकट—जाहिर, उत्पन्न, स्पष्ट ।
प्रकरण—पु० उत्पन्न करना, वृत्तांत, प्रसंग, अध्याय ।
प्रकर्ष—पु० उत्कर्ष, अधिकता ।
प्रकला—स्त्री० कला का साठवाँ भाग ।
प्रकांड—बहुत बड़ा, बहुत विस्तृत ।
प्रकार—पु० भेद, भाँति । स्त्री० घेरा ।
प्रकाश—पु० ज्योति, विकाश, प्रकट होना, प्रसिद्धि, धूप, पुस्तक का विभाग ।
प्रकाशक—प्रकाशित करने वाला ।
प्रकाशन—पु० प्रकाशित करने का काम ।

प्रकाशमान—चमकता हुआ, प्रसिद्ध ।
प्रकाश्य—प्रकट करने योग्य । प्रकट रूप से ।
प्रकीर्णक—पु० अध्याय, प्रकरण, फुटकर ।
प्रकुपित—बहुत क्रुद्ध ।
प्रकृत—यथार्थ, असली, विकार रहित ।
प्रकृति—स्त्री० स्वभाव, तासीर, कुदरत ।
प्रकृतिशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों पर विचार किया गया हो ।
प्रकृतिसिद्ध—स्वाभाविक ।
प्रकृतिस्थ—स्वाभाविक, जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो ।
प्रकोप—पु० बहुत अधिक कोप, क्षोभ, चंचलता, बीमारी का तेज होना, शरीर के पित्त आदि का बिगड़ना ।
प्रकोष्ठ—पु० सदर फाटक के पास की कोठरी, बड़ा आँगन ।
प्रक्रम—पु० क्रम, उपक्रम ।
प्रक्रमभंग—पु० क्रमभंग का दोष ।
प्रक्रिया—स्त्री० प्रकरण, युक्ति ।
प्रख्यात—प्रसिद्ध ।
प्रक्षालन—पु० धोना ।
प्रक्षिप्त—फेंका हुआ ।
प्रक्षेप, प्रक्षेपण—पु० फेंकना, छितराना, मिलाना ।
प्रखर—तीक्ष्ण, धारदार ।
प्रख्यात—प्रसिद्ध, मशहूर ।
प्रगट—दे० "प्रकट" ।

प्रगल्भ—चतुर, प्रतिभाशाली, साहसी, हाजिरजवाब, निडर, उद्धत।
प्रगाढ़—बहुत अधिक, बहुत गाढ़ा, कड़ा, प्रौढ़। [बड़ा।
प्रचंड—तीव्र, भयंकर, कठिन, असह्य,
प्रचंडा—स्त्री॰ दुर्गा।
प्रचलन—पु॰ प्रचार।
प्रचलित—जारी।
प्रचार—पु॰ किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार, प्रकाश।
प्रचारित—फैलाया हुआ।
प्रचुर—अधिक।
प्रचोदन—पु॰ प्रेरणा, आज्ञा, कायदा।
प्रच्छन्न—ढँका हुआ।
प्रच्छादन—पु॰ ढाँकना, छिपाना, उत्तरीय वस्त्र। [धात्री कर्म।
प्रजनन—पु॰ संतानोत्पादन, जन्म,
प्रजा—स्त्री॰ संतान, रैयत। [शासन।
प्रजातंत्र—पु॰ प्रजा द्वारा होने वाला
प्रजापति—पु॰ सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा, मनु, राजा, सूर्य, आग, पिता, घर का मालिक।
प्रजासत्ता—प्रजातन्त्र।
प्रज्ञ—पु॰ विद्वान्।
प्रज्ञप्ति—स्त्री॰ सूचना, संकेत।
प्रज्ञा—स्त्री॰ बुद्धि, सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु—पु॰ ज्ञानी, अन्धा (व्यंग्य), धृतराष्ट्र।
प्रज्वलन—पु॰ जलना।

प्रज्वलित—जला हुआ, बहुत स्पष्ट।
प्रण—पु॰ प्रतिज्ञा।
प्रणत—झुका हुआ, नम्र।
प्रणतपाल—पु॰ दीनरक्षक।
प्रणति—स्त्री॰ प्रणाम, नम्रता, विनती।
प्रणमन—झुकना, प्रणाम करना।
प्रणम्य—प्रणाम करने योग्य।
प्रणय—पु॰ प्रीतियुक्त प्रार्थना, प्रेम, विश्वास, मोक्ष।
प्रणयन—पु॰ रचना।
प्रणयिनी—स्त्री॰ प्रियतमा, स्त्री।
प्रणयी—पु॰ प्रेमी, पति।
प्रणव—पु॰ ओंकार परमेश्वर।
प्रणाली—स्त्री॰ निकलने का मार्ग, रीति, ढङ्ग।
प्रणिधान—पु॰ रखा जाना, प्रयत्न, समाधि, अत्यन्त भक्ति, ध्यान।
प्रणीत—रचित, संशोधित, लाया हुआ।
प्रणिपात—पु॰ प्रगति, प्रणाम।
प्रणेता—पु॰ रचयिता।
प्रणेय—अधीन।
प्रणोदित—प्रेरित।
प्रतंचा—दे॰ "प्रत्यंचा"।
प्रतनु—क्षीण, दुबला।
प्रतप्त—तपा हुआ। [का नाम।
प्रतल—पु॰ पाताल के सातवें भाग
प्रताप—पु॰ पौरुष, इकबाल, गरमी।
प्रतापी—इकबालमंद, सतानेवाला।
प्रतारक—पु॰ ठग, धूर्त।

प्रतारणा—स्त्री० ठगी ।

प्रतिंचा—स्त्री० धनुष की डोरी ।

प्रति—सामने, तरफ, एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर ये अर्थ सूचित करते हैं:—विपरीत, सामने, बदले में, हरेक, समान, मुकाबिले का । स्त्री० नकल ।

प्रतिकार—पु० बदला ।

प्रतिकूल—उलटा । [बदला ।

प्रतिकृति—स्त्री० प्रतिमा, चित्र, छाया

प्रतिक्रिया—स्त्री० बदला, एक ओर कोई क्रिया होने पर परिणाम स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया ।

प्रतिगृहीता—स्त्री० धर्मपत्नी ।

प्रतिग्रह—पु० स्वीकार, पकड़ना, पाणिग्रहण, ग्रहण ।

प्रतिघात—पु० टक्कर, बाधा, वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय । [वाला ।

प्रतिघाती—पु० शत्रु, मुकाबला करने-

प्रतिच्छाया—स्त्री० चित्र, परछाईं ।

प्रतिज्ञा—स्त्री० प्रण, शपथ, अभियोग, न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो ।

प्रतिज्ञापत्र—पु० इकरारनामा ।

प्रतिदान—पु० लौटाना, बदला ।

प्रतिद्वंद्वी—पु० मुकाबला करनेवाला ।

प्रतिध्वनि—स्त्री० गूँज, प्रतिशब्द, दूसरे के विचारों आदि का दोहराया जाना ।

प्रतिनायक—पु० नायक का प्रतिद्वन्द्वी पात्र ।

प्रतिनिधि—पु० प्रतिमा, दूसरे की ओर से काम करनेवाला ।

प्रतिपक्षी—पु० विपक्षी, विरोधी ।

प्रतिपत्ति—स्त्री० प्राप्ति, ज्ञान, प्रतिष्ठा, यश, अनुमान, दान, कार्यरूप में लाना, प्रतिपादन, जी में बैठाना, स्वीकृति ।

प्रतिपदा—स्त्री० परिवा ।

प्रतिपन्न—जाना हुआ, स्वीकृत, प्रमाणित, निश्चित, भरापूरा, शरणागत, प्राप्त । [वाला ।

प्रतिपादक—पु० प्रतिपादन करने-

प्रतिपादन—पु० अच्छी तरह समझाना, प्रमाणपूर्ण कथन, प्रमाण ।

प्रतिपाल, प्रतिपालक—पु० पालन, करनेवाला, पालक, राजा ।

प्रतिफल—पु० प्रतबिंब, परिणाम ।

प्रतिबंध—पु० रोक, बाधा । [वाला ।

प्रतिबंधक—रोकने वा, बाधा डालने-

प्रतिबिंब—पु० छाया, मूर्ति, चित्र, दर्पण । [मानसिक शक्ति । चमक ।

प्रतिभा—स्त्री० बुद्धि, असाधारण

प्रतिभावान, प्रतिभाशाली—प्रतिभा वाला, अत्यन्त बुद्धिमान ।

प्रतिभू—पु० जामिन ।

प्रतिम—समान ।

प्रतिमा—स्त्री० अनुकृति मूर्ति, छाया ।

प्रतिमान—पु० प्रतिबिंब, बराबरी, उदाहरण ।

प्रतिमूर्ति—स्त्री० प्रतिमा ।

प्रतियोग-पु० शत्रुता, विरुद्ध संयोग ।

प्रतियोगिता—स्त्री० प्रतिद्वन्द्विता, मुकाबला । [विरोधी ।

प्रतियोगी—पु० सहायक, हिस्सेदार,

प्रतिरूप—पु० प्रतिमा, चित्र, प्रतिनिधि ।

प्रतिरोध—पु० विरोध, बाधा ।

प्रतिलिपि—स्त्री० लेख की नकल ।

प्रतिलोम—प्रतिकूल, उलटा ।

प्रतिलोम विवाह—पु० वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो ।

प्रतिवाद—पु० खंडन, विवाद ।

प्रतिवास—पु० समीप का वास ।

प्रतिवासी—पु० पड़ोसी ।

प्रतिवेश—पु० पड़ोस ।

प्रतिशब्द—पु० प्रतिध्वनि

प्रतिशोध—पु० बदला ।

प्रतिषेध-पु० निषेध । [सत्कार ।

प्रतिष्ठा—स्त्री० स्थापना, गौरव, कीर्ति,

प्रतिशब्द—पु० प्रतिध्वनि ।

प्रतिशोध—पु० बदला ।

प्रतिषेध—पु० निषेध, रोक ।

प्रतिष्ठा—स्त्री० स्थापना, गौरव, कीर्ति, सत्कार । [पना ।

प्रतिष्ठान—पु० स्थापित करना, स्था-

प्रतिष्ठित—इज्जतदार, जो स्थापित किया गया हो ।

प्रतिस्पर्द्धा—स्त्री० चढ़ाऊपरी ।

प्रतिस्पर्द्धी-स्त्री० जो प्रतिस्पर्द्धा करे ।

प्रतिहार—पु० द्वारपाल, दरवाजा, चोबदार, राजा को समाचार आदि सुनानेवाला कर्मचारी ।

प्रतिहारी—पु० द्वारपाल ।

प्रतिहिंसा—स्त्री० बदला लेना ।

प्रतीक—पु० चिह्न, मुख, आकृति, प्रतिरूप, प्रतिमा ।

प्रतीकार—पु० दे० "प्रतिकार ।"

प्रतीक्षा—स्त्री० इंतजार ।

प्रतीची—स्त्री० पश्चिम दिशा ।

प्रतीच्य—पश्चिमी ।

प्रतीत—ज्ञात, प्रसिद्ध, आनंद ।

प्रतीति—स्त्री० जानकारी, विश्वास, प्रसन्नता ।

प्रतीप—पु० प्रतिकूल घटना ।

प्रतीयमान—ज्ञान पड़ता हुआ ।

प्रत्न—प्राचीन ।

प्रत्यंचा—स्त्री० धनुष की डोरी ।

प्रत्यक्ष—सामने, आँखों के आगे, जो आँखों के सामने हो, जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके ।

प्रत्यक्षदर्शी—प्रत्यक्ष रूप से देखनेवाला, गवाह ।

प्रत्यनीक—पु० शत्रु, विरोधी ।

प्रत्यय—पु० विश्वास, प्रमाण,

विचार, बुद्धि, व्याख्या, कारण, आवश्यकता, प्रसिद्धि । चिह्न, लक्षण, निर्णय, राय, व्याकरण में वह अक्षर या अक्षरसमूह जो धातु या मूल शब्द के अन्त में लगाया जाय ।

प्रत्याख्यान—पु० खंडन, निराकरण ।

प्रत्यागत—लौटा हुआ । [आना ।

प्रत्यागमन—पु० लौट आना, दोबारा

प्रत्यावर्त्तन—पु० लौट आना ।

प्रत्याशा—स्त्री० आशा ।

प्रत्याहार—पु० इंद्रियनिग्रह ।

प्रत्युत—बल्कि ।

प्रत्युत्तर—पु० उत्तर का उत्तर ।

प्रत्युत्पन्न—जो फिर से उत्पन्न हो, जो ठीक समय पर उत्पन्न हो ।

प्रत्युत्पन्नमति—तत्पर बुद्धिवाला ।

प्रत्युपकार—पु० उपकार के बदले उपकार करना ।

प्रत्यूष—पु० प्रभात ।

प्रत्यूह—पु० बाधा ।

प्रत्येक—हर एक ।

प्रथम—पहला । पहले । [कारक ।

प्रथमा—पहली । स्त्री० मदिरा, कर्त्ता

प्रथा—स्त्री० रीति, रिवाज ।

प्रद—देनेवाला ।

प्रदक्षिणा—स्त्री० परिक्रमा ।

प्रदत्त—दिया हुआ ।

प्रदर—पु० एक स्त्री-रोग ।

प्रदर्शक—पु० दिखलानेवाला, दर्शक ।

प्रदर्शन—पु० दिखलाने का काम ।

प्रदर्शनी—स्त्री० नुमाइश ।

प्रदर्शित—दिखलाया हुआ ।

प्रदाता—देनेवाला ।

प्रदान—पु० देना, दान, विवाह ।

प्रदायी—देनेवाला ।

प्रदाह—पु० दाह, जलन ।

प्रदीप—पु० दीपक, प्रकाश ।

प्रदीपक—पु० प्रकाशक । [काना ।

प्रदीपन—पु० उजाला करना, चम-

प्रदीप्त—प्रकाशवान्, उज्ज्वल ।

प्रदेश—प्रांत, स्थान, अंग ।

प्रदोष—पु० संध्या काल, भारी दोष ।

प्रद्युम्न—पु० कामदेव ।

प्रद्योत—पु० किरण, आभा ।

प्रधान—मुख्य । पु० मुखिया, मंत्री, सभापति ।

प्रपंच—पु० संसार, विस्तार, दुनिया का जंजाल, झगड़ा, आडंबर, छल ।

प्रपत्ति—स्त्री० अनन्य भक्ति ।

प्रपन्न—आया हुआ, शरणागत ।

प्रपात—पु० ऊँचे से गिरती हुई जल-धारा, झरना, एक बारगी नीचे गिरना, किनारा ।

प्रपितामह—पु० परदादा । परब्रह्म ।

प्रपीड़न—पु० बहुत कष्ट देना ।

प्रपुत्र—पु० पोता ।

प्रपौत्र—पु० परपोता ।

प्रफुल्ल—खिला हुआ, जिसमें फूल

लगे हों, खुला हुआ, प्रसन्न ।
प्रबंध—पु० बाँधने की डोरी आदि, बँधा हुआ सिलसिला, निबंध, योजना, उपाय, इंतजाम ।
प्रबल—प्रचंड, उग्र, घोर ।
प्रबला—स्त्री० बलवती ।
प्रबुद्ध—खिला हुआ, जागा हुआ, होश में आया हुआ, ज्ञानी ।
प्रबोध—पु० जागना, यथार्थ ज्ञान, तसल्ली, चेतावनी ।
प्रबोधन—पु० जागरण, जगाना, यथार्थ ज्ञान, ज्ञान देना, सांत्वना ।
प्रभंजन—पु० नाश, आँधी, हवा ।
प्रभव—पु० उत्पत्ति-कारण, उत्पत्ति स्थान, जन्म, सृष्टि ।
प्रभा—स्त्री० प्रकाश । [समुद्र ।
प्रभाकर—पु० सूर्य, चंद्रमा, अग्नि,
प्रभात—पु० सबेरा । [गीत ।
प्रभाती—स्त्री० प्रभात में गाने का
प्रभाव—पु० प्रादुर्भाव, शक्ति, साख या दबाव ।
प्रभास—पु० ज्योति ।
प्रभु—पु० स्वामी, ईश्वर ।
प्रभुता—स्त्री० बड़ाई, हुकूमत, वैभव, मालिकपन ।
प्रभुत्व—पु० प्रभुता । [पु० तत्त्व ।
प्रभूत—उत्पन्न, उन्नत, प्रचुर ।
प्रभृति—इत्यादि ।
प्रभेद—पु० भेद ।

प्रमत्त—मस्त, पागल ।
प्रमथ—पु० मथन या पीड़ित करनेवाला, शिव के गण ।
प्रमथन—पु० मथना, दुख देना, नाश करना । [हर्ष ।
प्रमद—मतवाला । पु० मतवालापन,
प्रमदा—स्त्री० युवती स्त्री ।
प्रमाण—प्रमाणित, ठीक, बड़ाई आदि में बराबर । तक । पु० सबूत, सत्यता, निश्चय, आदर, मानने की बात, सीमा, प्रमाणपत्र ।
प्रमाणपत्र—पु० सर्टिफिकेट ।
प्रमाणित—साबित, सिद्ध ।
प्रमाद—पु० भूल, चूक, भ्रम, अंतःकरण की दुर्बलता । [अल्प ।
प्रमित—परिमित, ज्ञात, निश्चित,
प्रमुख—प्रथम, प्रधान, मान्य । वगैरह ।
प्रमुदित—प्रसन्न । [योग्य ।
प्रमेय—प्रमाणसाध्य, प्रतिपादन करने
प्रमेह—पु० धातु संबंधी रोग ।
प्रमोद—पु० हर्ष, सुख ।
प्रयत्न—पु० कोशिश ।
प्रयाण—पु० गमन, युद्ध यात्रा ।
प्रयास—पु० प्रयत्न, श्रम । [हुआ ।
प्रयुक्त—सम्मिलित, प्रयोग में लाया
प्रयुत—पु० दस लाख की संख्या ।
प्रयोक्ता—पु० प्रयोग करनेवाला, ऋण देनेवाला ।
प्रयोग—पु० साधन, व्यवहार, अमल,

अभिनय, पद्धति, दृष्टांत। [योग।
प्रयोजन—पु० कार्य, उद्देश्य, उप-
प्रयोज्य—प्रयोग के योग्य।
प्ररोहन—पु० आरोह,. उगना।
प्रलंब-लंबा, टँगा हुआ, निकला हुआ।
प्रलंबन—पु० अवलंबन, सहारा।
प्रलयंकर—नाशकारी।
प्रलय—पु० लय को प्राप्त होना, संसार का लोप होना, मूर्च्छा।
प्रलाप—पु० बकना, व्यर्थ की बकवाद, रोना।
प्रलेप—पु० लेप, पुल्टिस। [दिखाना।
प्रलोभ, प्रलोभन—पु० लोभ
प्रवंचना-स्त्री० छल। [व्याख्या, वेदांग।
प्रवचन—पु० समझा कर कहना,
प्रवण—ढालुवाँ, झुका हुआ, प्रवृत्त, नम्र, उदार। पु० ढाल, उतार, चौराहा, पेट।
प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।
प्रवर—श्रेष्ठ, मुख्य। पु० संतति।
प्रवर्त—पु० कार्यारंभ, एक प्रकार का मेघ।
प्रवर्त्तक—पु० संचालक, जारी करनेवाला, काम में लगानेवाला, उभारनेवाला, निकालनेवाला।
प्रवर्तन—पु० कार्य आरंभ करना, काम को चलाना, जारी करना।
प्रवर्षण—पु० वर्षा।

प्रवह—पु० बहाव, एक वायु।
प्रवाद—पु० बातचीत, अफवाह, अपवाद, झूठी बदनामी।
प्रवाल—पु० मूँगा।
प्रवास—पु० अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में रहना, विदेश।
प्रवासी—परदेसी।
प्रवाह—पु० जल का स्रोत, धारा, काम का जारी रहना, सिलसिला।
प्रवाहित—बहता हुआ। [द्रव।
प्रवाही—बहने या बहानेवाला, तरल,
प्रविष्ट—घुसा हुआ।
प्रवीण—चतुर, निपुण।
प्रवीर—बहादुर।
प्रवृत्त—किसी ओर झुका हुआ, उद्यत।
प्रवृत्ति—स्त्री० झुकाव, बहाव, लगन, प्रवर्त्तन, सांसारिक विषयों की ओर आसक्ति।
प्रवृद्ध—खूब बढ़ा हुआ, प्रौढ़।
प्रवेश—पु० घुसना, गति, किसी विषय की जानकारी।
प्रवेशिका—प्रवेश करानेवाली।
प्रव्रज्या—स्त्री० संन्यास।
प्रशंसक—प्रशंसा करनेवाला।
प्रशंसन—पु० गुणकीर्तन।
प्रशंसनीय—प्रशंसा करने योग्य।
प्रशंसा—स्त्री० गुणवर्णन, बड़ाई।
प्रशस्य—प्रशंसनीय।
प्रशमन—पु० शांति, नाशन, मारण।

प्रशस्त—प्रशंसनीय, सुन्दर, श्रेष्ठ, भव्य, विस्तृत ।

प्रशस्ति—स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, राजा की ओर से एक प्रकार का आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे । प्राचीन पुस्तकों के आदि और अन्त को कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तकों के कर्ता, विषय और काल आदि का ज्ञान होता हो । [सागर ।

प्रशांत—स्थिर, शांति, पु० एक महा-

प्रशाखा—स्त्री० शाखा की शाखा ।

प्रश्न—पु० पूछताछ, पूछने की बात, सवाल, विचारणीय विषय ।

प्रश्नय—पु० आश्रय स्थान, सहारा ।

प्रश्वास—पु० नाक से बाहर निकलने वाली हवा ।

प्रष्टव्य—पूछने योग्य, पूछने का ।

प्रसंग—पु० संबंध, अर्थ की संगति, स्त्री पुरुष का संयोग, बात, उपयुक्त संयोग, मौका, कारण, प्रस्ताव, प्रकरण, विस्तार ।

प्रसन्न—खुश, संतुष्ट, अनुकूल ।

प्रसरण—पु० आगे बढ़ना, फैलना, ख्याति, विस्तार ।

प्रसव—पु० बच्चा जनने की क्रिया, जन्म, बच्चा ।

प्रसविनी—प्रसव करनेवाली ।

प्रसाद—पु० प्रसन्नता, अनुग्रह, वह वस्तु जो देवता को चढ़ायी जाय, वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग अपने भक्तों या सेवकों को दें, भोजन, काव्य का एक गुण जिसमें भाषा स्वच्छ और साधु हो और सुनने के साथ ही भाव समझ में आ जाय ।

प्रसादी—स्त्री० प्रसाद, नैवेद्य ।

प्रसार—पु० विस्तार, संचार, गमन, निकास ।

प्रसारण—पु० फैलाना, बढ़ाना ।

प्रसिद्ध—विख्यात, भूषित ।

प्रसिद्धि—स्त्री० ख्याति, बनाव, सिंगार ।

प्रसुप्त—सोया हुआ ।

प्रसुप्ति—स्त्री० नींद ।

प्रसू—जननेवाली ।

प्रसूत—पैदा हुआ, उत्पादक । पु० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के बाद होता है ।

प्रसूता—स्त्री० बच्चा जननेवाली स्त्री ।

प्रसूति—स्त्री० प्रसव, उद्भव, कारण ।

प्रसूतिका—स्त्री० प्रसूता ।

प्रसून—पु० फूल ।

प्रसृति-स्त्री० विस्तार, संतति । [काव ।

प्रसेक—पु० सींचना, निचोड़, छिड़-

प्रस्तर—पु० पत्थर, बिछावन, चौड़ी सतह, प्रस्तार ।

प्रस्तार—पु० फैलाव, आधिक्य, परत ।

प्रस्ताव—पु० प्रसंग, छिड़ी हुई बात, चर्चा, भूमिका, सभा के सामने उपस्थित मंतव्य ।

प्रस्तावना—स्त्री० आरंभ, भूमिका, प्राक्कथन ।
प्रस्तुत—जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गयी हो, कथित, उपस्थित, उद्यत ।
प्रस्थान—पु० गमन, यात्रा ।[होना ।
प्रस्फुरण—पु० निकलना, प्रकाशित
प्रस्फोटन—पु० अचानक जोर से खुलना । [झरना ।
प्रस्रवण—पु० टपक कर बहना, सोता,
प्रस्वेद—पु० पसीना ।
प्रहर--पु० पहर ।
प्रहरी—पु० पहरा देनेवाला ।
प्रहर्ष—पु० आनन्द ।
प्रहर्षण—पु० आनन्द ।
प्रहसन—पु० हँसी, दिल्लगी, चुहल, हास्य रस प्रधान एक प्रकार का नाट्य।
प्रहार—पु० आघात । [नाशक ।
प्रहारी—मारने वा अस्त्र चलानेवाला,
प्रहेलिका—स्त्री० पहेली । [का पुत्र ।
प्रह्लाद—पु० आनन्द, हिरण्यकशिपु
प्रांगण—पु० आँगन ।
प्रांजल—सरल, सीधा, सच्चा, बराबर ।
प्रांत—पु० अंत, सीमा, किनारा, ओर, खंड, प्रदेश ।
प्रांतीय, प्रांतिक—प्रांत का ।
प्राइमर—पु० प्रारम्भिक, प्राथमिक, किसी भाषा की प्रारम्भिक पुस्तक ।
प्राइवेट—व्यक्तिगत, निज का, गुप्त ।
प्राइवेट सेक्रेटरी—पु० किसी बड़े आदमी का निज का मंत्री या सहायक ।
प्राकाम्य—पु० एक सिद्धि ।
प्राकार—पु० प्राचीर, दीवार ।
प्राकृत--प्रकृति संबंधी, स्वाभाविक, भौतिक, सहज, बोलचाल की भाषा, एक प्राचीन भारतीय भाषा ।
प्राक्--पहले का । पु० पूर्व ।
प्राङ्मुख—पूर्व की ओर मुँह किये हुए, पूर्वाभिमुख ।
प्राची—स्त्री० पूरब ।
प्राचीन—पूरब का, पुराना, वृद्ध,
प्राचीर—पु० परकोटा ।
प्राचुर्य—पु० अधिकता ।
प्राच्य—पूर्व का, पूर्वीय, पुराना ।
प्राजापत्य—प्रजापति से उत्पन्न । पु० यज्ञ, आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।
प्राज्ञ - बुद्धिमान्, पण्डित ।
प्राड्विवाक-पु० न्यायाधीश, वकील ।
प्राण—पु० वायु, साँस, शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता हो । बल, जीवन, परम प्रिय, ब्रह्मा, विष्णु अग्नि, आग । मु० प्राण उड़ जाना = हक्का बक्का हो जाना । किसी पर प्राण देना = किसी को बहुत चाहना ।
प्राणघात—पु० हत्या ।
प्राणजीवन—पु० प्राणाधार, परम प्रिय व्यक्ति ।
प्राणपण-पु० प्राण की बाजी लगाना ।

प्राणदंड—पु० मार डालने की सजा। फाँसी।
प्राणधन—परम प्रिय।
प्राणनाथ—पु० प्रियतम, पति।
प्राणपति—पु० प्यारा, पति।
प्राणप्रतिष्ठा—स्त्री० मूर्ति में मंत्रों द्वारा प्राण का आरोप।
प्राणप्रिय—प्रियतम।
प्राणवल्लभ—पु० प्राणप्यारा, पति।
प्राणवायु—स्त्री० प्राण।
प्राणशरीर—पु० एक सूक्ष्म शरीर।
प्राणांत—पु० मृत्यु। [पु० पति।
प्राणाधार, प्राणाधिक—अत्यंत प्रिय।
प्राणायाम—पु० योग की एक क्रिया जिसमें विधिपूर्वक साँस को ऊपर चढ़ाया जाता, रोका जाता और उतारा जाता है।
प्राणी—प्राणधारी। पु० मनुष्य।
प्राणेश, प्राणेश्वर-पु० बहुत प्यारा, पति।
प्रात—सबेरे। पु० सबेरा।
प्रातः—पु० सबेरा।
प्रातःस्मरण—पु० सबेरे के समय ईश्वर भजन करना।
प्रातःस्मरणीय—जो प्रातःकाल स्मरण करने योग्य हो, पूज्य। 'पेड़'।
प्रातिपदिक—पु० अग्नि, वह शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो; जैसे
प्राथमिक—पहले का, प्रारंभिक।
प्रादुर्भाव—पु० आविर्भाव, प्रकट होना, उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत—प्रकटित, उत्पन्न।
प्रादेशिक—प्रांतिक।
प्राधान्य—पु० प्रधानता।
प्राप्त—पाया हुआ, समुपस्थित।
प्राप्तकाल—पु० उचित समय, मरण-योग्य काल।
प्राप्ति—स्त्री० मिलना, पहुँच, एक ऐश्वर्य जिससे सब इच्छाएँ पूरी हो जती हैं, आय, लाभ।
प्राप्य—पाने योग्य मिलने योग्य।
प्राबल्य—पु० प्रब । [योग्य।
प्रामाणिक—प्रमाणों से सिद्ध, मानने
प्रामिसरी नोट—पु० हुंडी।
प्राय—पु० समान, तुल्य, लगभग।
प्रायः—विशेषकर, अक्सर, लगभग।
प्रायद्वीप—पु० स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।
प्रायशः—प्रायः।
प्रायश्चित्त—पु० शास्त्रानुसार वह कर्म जिससे पाप दूर हो जाते हैं।
प्रारंभ—पु० आरंभ, शुरू। [भाग्य।
प्रारब्ध—आरंभ किया हुआ। पु०
प्रारब्धी—भाग्यवान्।
प्रार्थना—स्त्री० याचना, निवेदन।
प्रार्थनापत्र—पु० अर्जी।
प्रार्थनीय—प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी—प्रार्थना करनेवाला।
प्रालेय—पु० हिम, बर्फ।
प्रावृट्—पु० वर्षा ऋतु।
प्राशन—पु० खाना, चखना।
प्राशी—खानेवाला।
प्रासंगिक—प्रसंग का।
प्रासाद—पु० महल।
प्रास्पेक्टस—पु० विवरण-पत्र।
प्रिंटर—पु० छापनेवाला।
प्रिंटिंग—स्त्री० छपाई।
प्रिंटिंग प्रेस—पु० छापाखाना।
प्रिंस—पु० राजकुमार, सरदार।
प्रिंस-आफ वेल्स—पु० इंगलैंड का बड़ा राजकुमार। [का प्रधान अध्यापक।
प्रिंसिपल—पु० किसी बड़े विद्यालय
प्रिमियम—पु० बीमा की किस्त।
प्रिय—प्यारा, सुंदर। पु० पति।
प्रियतम—सबसे प्यारा। पु० पति।
प्रियदर्शन—सुंदर।
प्रियदर्शी—सबको प्रिय समझनेवाला।
प्रियवर—अति प्रिय।
प्रिया—स्त्री० प्यारी पत्नी, प्रेमिका।
प्रीत—प्रीतियुक्त, पु० प्रीति।
प्रीतम—पु० प्यारा, पति।
प्रीति—स्त्री० प्रेम, हर्ष संतोष।
प्रीतिपात्र—पु० जो प्यार करने योग्य हो, प्रेमी।
प्रूफ—पु० सबूत, प्रमाण, पुस्तक आदि के छपने से पहले टाइप बैठाकर उसकी अशुद्धियाँ दूर करने के लिये तैयार किया हुआ नमूना।
प्रूफरीडर—पु० प्रूफ पढ़नेवाला।
प्रेक्षक—पु० देखने वाला।
प्रेक्षण—पु० आँख, देखना।
प्रेक्षा—स्त्री० देखना, दृष्टि, बुद्धि।
प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—पु० मंत्रणागृह, नाट्यशाला।
प्रेत—पु० मृत प्राणी, पुराणानुसार मरने के उपरांत मिलनेवाली कल्पित देह, एक कल्पित योनि। [का कर्म।
प्रेतकर्म—पु० मृतदाह से सपिंडी तक
प्रेतगृह—पु० श्मशान, कब्रिस्तान।
प्रेतदाह—पु० मृतक दाह।
प्रेतलोक—पु० यमपुर।
प्रेम—पु० स्नेह, प्रीति।
प्रेमगर्विता—स्त्री० पति के प्रेम का अहंकार रखनेवाली स्त्री। [माशूक।
प्रेमपात्र—पु० वह जिससे प्रेम हो,
प्रेमवारि—पु० प्रेम के आँसू प्रेमाश्रु।
प्रेमा—पु० स्नेह, इंद्र।
प्रेमालाप—पु० प्रेमपूर्वक बातचीत।
प्रेमाश्रु—पु० प्रेम से गिरा आँसू।
प्रेमिक, प्रेमी—पु० प्रेम करनेवाला, आशिक।
प्रेयसी—स्त्री० प्रेमिका।
प्रेरक—पु० प्रेरणा करनेवाला, काम में लगानेवाला। [जोर।
प्रेरणा—स्त्री० उत्तेजना देना, दबाव,

प्रेरित—भेजा हुआ।
प्रेषक—पु० भेजनेवाला।
प्रेस—पु० छापाखाना।
प्रेसिडेन्ट—पु० सभापति। [नुस्खा।
प्रेस्क्रिप्शन—पु० दवा का पुर्जा,
प्रोक्त—कहा हुआ।
प्रोक्षण—पु० पानी छिड़कना। [सिला।
प्रोग्राम—पु० कार्यक्रम, काम का सिल-
प्रोत—अच्छी तरह मिला हुआ, छिपा हुआ, पैठा हुआ।
प्रोत्साहन—पु० खूब उत्साह बढ़ाना।
प्रोपगैंडा—पु० प्रचार-कार्य।
प्रोप्राइटर—पु० मालिक, स्वामी।
प्रोफेसर—पु० कालेज का शिक्षक।
प्रोषित—प्रवासी। [हो।
प्रोषित पति—वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल
प्रोषितपतिका, प्रोषितभर्तृका—स्त्री० वह नायिका जो अपने पति के परदेश में होने के कारण दुखी हो।
प्रौढ़—अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पक्का, गम्भीर, चतुर।
प्रौढ़ा—स्त्री० साधारणतः तीस से पचीस वर्ष तक की स्त्री, वह नायिका जो काम कला अच्छी तरह जानती हो।
प्लांचेट—पु० मेस्मरेजम के काम के लिये पान के आकार की लकड़ी की एक तख्ती।
प्लाट—पु० जमीन का टुकड़ा, उपन्यास आदि का मुख्य कथा-भाग, षड्यंत्र। [धोना।
प्लावन—पु० बाढ़, तैरना, अच्छी तरह
प्लावित—डूबा हुआ। [पलस्तर।
प्लास्टर—पु० औषध का लेप,
प्लीडर—पु० वकील।
प्लीहा—स्त्री० पिलही।
प्लेग—पु० एक संक्रामक रोग।
प्लेट—पु० किसी धातु का पतला टुकड़ा या चादर, तश्तरी।
प्लेट फार्म—पु० चबूतरा, जिसपर खड़े होकर लोग भाषण दें, रेलवे स्टेशनों पर बना वह चबूतरा जिसके किनारे गाड़ी खड़ी होती है।
प्लेन—पु० किसी बनने वाली इमारत का रेखा-चित्र, नक्शा, ढाँचा, योजना, मनसूबा, तजबीज।
प्लुत—पु० टेढ़ी चाल, उछाल, स्वर का एक भेद जो दीर्घ से बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

फ

फ—एक अक्षर। पु० कटु वाक्य, निष्फल भाषण।

फंड—पु० कोश। [दुःख।

फंद—पु० बंधन, फंदा, धोखा, रहस्य

फकत--काफी, सिर्फ, बस, केवल।

फकीर—पु० भिक्षुक, साधु, निर्धन मनुष्य। [निर्धनता, गरीबी।

फकीरी—स्त्री० भिखमंगापन, साधुता

फखर--पु० गर्व, गौरव।

फजर—स्त्री० सबेरा।

फजल—कृपा।

फजीलत—स्त्री० श्रेष्ठता।

फजीहत—स्त्री० दुर्दशा।

फजूल—व्यर्थ।

फजूल-खर्च—व्यर्थ खर्च करने वाला, अपव्ययी।

फटकना-- फटफटाना, पटकना, चलाना, धुनना, सूप से अन्न साफ करना, पहुँचना, जाना, दूर होना, तड़फड़ाना, श्रम करना।

फटकार—स्त्री० झिड़की।

फटकारना—शस्त्र आदि चलाना, लाभ उठाना, पटक पटक कर धोना, झटका देकर दूर फेंकना, झिड़कना।

फटना--अलग होना, दरकना। मु० छाती फटना = असह्य दुःख होना। चित्त फटना = विरक्त होना।

फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना।

फटिक—पु० स्फटिक, संगमरमर।

फड़कना—फड़फड़ाना, हिलना डोलना, चंचल होना, किसी अंग में अचानक स्फुरण होना। मु० फड़क उठना = आनंदित होना।

फड़नवीस -पु० मराठों के राजत्व काल का का एक राजपद। [फंदा।

फण—पु० साँप का फन, रस्सी का

फणधर, फणिक-पु० साँप। [साँप।

फणींद्र--पु० शेषनाग, वासुकी, बड़ा

फणी—पु० साँप।

फणीश--पु० फणींद्र।

फतवा--पु० मौलवियों द्वारा दी हुई किसी काम के धर्मशास्त्रानुसार होने न होने की व्यवस्था।

फतह—स्त्री० जीत, सफलता।

फतूर—पु० विकार, दोष, हानि, विघ्न, खुराफात, उपद्रव।

फतूह—स्त्री० जीत, लड़ाई या लूट में मिला हुआ धन।

फतेह—पु० विजय, जीत।

फन—पु० गुण, विद्या, दस्तकारी, छलने का ढंग।

फना—स्त्री० नाश, बरबादी।

फफोला—पु० छाला, फोका, । मु० दिल के फफोले फोड़ना = अपने दिल

की जलन या क्रोध प्रकट करना ।
फबती-स्त्री० समयानुकूल बात,चुटकी।
फबना—शोभना ।
फबीला—सुदंर । [दुराव, कमी ।
फरक—पु० पार्थक्य, दूरी, अंतर,
फरजंद—पु० पुत्र ।
फरजी—बनावटी, नकली । पु० शतरंज की एक गोटी जिसे वजीर कहते हैं ।
फरद—बेजोड़ । स्त्री०लेखा वा वस्तुओं की सूची, पल्ला, दो पदों की कविता ।
फरफंद—पु० दाँवपेंच, नखरा ।
फरमा—पु० ढाँचा या साँचा, कागज का पूरा तख्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाता है ।
फरमाइश—स्त्री० आज्ञा, कोई चीज लाने या बनाने की आज्ञा ।
फरमाइशी—फरमाइश पर मँगाया या बनाया हुआ ।
फरमान-पु० राजकीय आज्ञापत्र।
फरमाना—आज्ञा देना ।
फरयाद—स्त्री० दे० "फरियाद" ।
फरलांग—पु० दो सौ बीस गज की दूरी । [धरातल, गच ।
फरश, फरशबंद—पु० बिछावना ,
फरहरा—पु० पताका ।
फराकत-विस्तृत । पु० दे० "फरागत"।
फरागत-स्त्री० छुटकारा, छुट्टी, निश्चिंतता, मल त्यागना ।
फरार—भागा हुआ ।
फरासीसी—फ्रांस का, फ्रांसवासी ।
फरियाद—स्त्री० दुःख से बचाये जाने के लिये पुकार, नालिश, प्रार्थना ।
फरियादी—फरियाद करनेवाला ।
फरिश्ता--पु० ईश्वरी दूत, देवता ।
फरीक—पु० प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी , विरोधी, किसी एक पक्ष का व्यक्ति ।
फरेब—पु० छल, धोखा ।
फरेबी—पु० धोखेबाज ।
फरोख्त—स्त्री० बिक्री ।
फरोश--बेचनेवाला ।
फर्क—दे० "फरक" ।
फर्ज—पु० कर्त्तव्य, कल्पना ।
फर्जी—कल्पित, नाम मात्र का । पु० दे० "फरजी" ।
फर्द—स्त्री० दे० "फरद" ।
फर्म—पु० साझे का कारबार, व्यापारी व महाजनी कोठी ।
फर्श-पु० "फरस" ।
फल—पु० वृक्ष आदि का फल, लाभ, परिणाम, कर्मभोग, गुण, प्रभाव, बदला, तलवार आदि का वह तेज अगला भाग जिससे आघात किया जाता है, फलक, ढाल, उद्देश्य की सिद्धि, शुभ कर्मों के परिणाम जो चार हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।
फलक—पु० तख्ता, चादर, वरक, पृष्ठ, हथेली, आकाश, स्वर्ग ।

फलकर—पु० फल पर लगाया गया कर ।
फलका—पु० फफोला ।
फलहरी—पु० वन के फल, मेवा ।
फलाँ—अमुक । [करने की दूरी ।
फलाँग—स्त्री० कुदान, फलाँग से तय
फलांश—पु० सारांश । [शरद् ऋतु ।
फलागम—पु० फल लगने की ऋतु,
फलाना—अमुक ।
फलाहार—पु० फल-भोजन ।
फलित—फला हुआ, पूर्ण । [है ।
फलित ज्योतिष—पु० ज्योतिष का वह अंग जिसमें गृहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता
फलीभूत—फलदायक । [निकलता है ।
फव्वारा—पु० निर्झर, जिसमें से पानी
फसल—स्त्री० ऋतु, समय, खेत की उपज । [एक संवत, हैजा ।
फसली—ऋतु का, ऋतु संबंधी । पु०
फसाद—पु० बिगाड़, विकार, उपद्रव, विद्रोह, लड़ाई ।
फसादी—उपद्रवी, झगड़ालू ।
फहम—स्त्री० ज्ञान ।
फहरना—वायु में उड़ना ।
फहश—फूहड़, अश्लील ।
फाँस—स्त्री० फंदा, कमाची ।
फाँसी—स्त्री० फंदा, गले में फंदा लगा कर मारने का दंड ।
फाका—पु० उपवास ।
फाकेमस्त—जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी चिंतित नहीं होता ।
फाजिल—जरूरत से ज्यादा, विद्वान् ।
फातिहा—पु० प्रार्थना, वह चढ़ावा जो मुसलमान लोग मरे हुए लोगों के नाम पर देते हैं ।
फादर—पु० पादरियों की सम्मान सूचक उपाधि, पिता ।
फानूस—पु० एक प्रकार की बड़ी कंदील, एक दंड में लगे हुए शीशे के अनेक गिलास जिनमें बत्तियाँ जलायी जाती हैं ।
फायदा—पु० लाभ, प्रयोजन सिद्धि, भला परिणाम, उत्तम प्रभाव ।
फायदेमंद—लाभदायक ।
फायर—पु० आग । बंदूक, तोप आदि हथियारों का दगना ।[दमकल ।
फायर एंजिन—पु० आग बुझाने की
फायर ब्रिग्रेड—पु० आग बुझाने वाले कर्मचारियों का दल ।
फायरमैन—पु० इंजिन में कोयला देनेवाला कर्मचारी । [चिट्ठा ।
फारखती—स्त्री० चुकता हो जाने का
फारम—पु० दरखास्त व रसीद आदि के नमूने, छपाई में एक पूरा तख्ता जो एक बार एक साथ छापा जाता हो ।
फारमूला—पु० संकेत, सिद्धांत, कायदा, नुसखा ।

फारिग—काम से छुट्टी पाया हुआ, निश्चिंत, बेफिक्र, छूटा हुआ, मुक्त।
फालतू—जरूरत से ज्यादा, बढ़ती, निकम्मा।
फाश—खुला, प्रकट, ज्ञात।
फासला—पु० दूरी, अंतर।
फाहा—पु० मरहम आदि में तर की हुई रुई की पट्टी। [व्यंग्य।
फिकरा—पु० वाक्य, झांसा-पट्टी,
फिक्र—स्त्री० चिंता, ध्यान, तदबीर।
फिक्रमंद—जो चिंतित हों, चिंताग्रस्त।
फितना—पु० झगड़ा।
फितूर—पु० खराबी, झगड़ा।
फिदवी—आज्ञाकारी। पु० दास।
फिदा—आसक्त। [नाम का रोग।
फिरंग—पु० गोरों का मुल्क, गरमी
फिरंगी—गोरा, फिरंग देश का। स्त्री० विलायती, तलवार।
फिरका—पु० जाति, पन्थ।
फिरकी—स्त्री० घिरनी, लट्टू।
फिराक—पु० वियोग, चिंता, खोज़।
फिरार—पु० भागना।
फिरिश्ता—पु० देवदूत।
फिलसफी—पु० दर्शनशास्त्र।
फिलहाल—तत्काल, अभी।
फिलासफी—स्त्री० दर्शनशास्त्र, सिद्धांत या तत्त्व की बात।
फिस—कुछ नहीं। मु० टाँय टाँय फिस = थी तो बहुत धुन लेकिन हुआ कुछ नहीं।
फिसड्डी—जिससे कुछ करते धरते न बने, जो काम में सबसे पीछे रहे।
फिहरिस्त—स्त्री० सूची।
फी—हर एक, शुल्क, फीस।
फीरोजा—पु० हरापन लिये नीले रंग का एक नग।
फीरोजी—हरापन लिये नीला।
फील—पु० हाथी।
फील्ड—पु० क्षेत्र, खेत, मैदान।
फीस—पु० कर, शुल्क।
फुट—अकेला, अलग। बारह इंच का एक नाप, पैर।
फुटनोट—पु० वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तक के पृष्ठ में नीचे दी जाती है।
फुटपाथ—पु० शहरों में सड़क की दोनों ओर का वह रास्ता जिसपर लोग पैदल चलते हैं।
फुटकर, फुटकल—फुट, अलग, कई प्रकार का, थोड़ा थोड़ा।
फुरसत—स्त्री० छुट्टी, अवसर।
फुलेल—पु० सुगंधित तेल।
फुल्ल—फूला हुआ, विकसित। [कागज।
फुल्सकेप—पु० एक प्रकार का
फुहार—स्त्री० जलकण, झींसी।
फूँकना—मुँह से जोर के साथ हवा निकालना, जलाना, फजूल खर्च करना। मु० फूँक फूँक कर चलना =

बहुत सावधानी से कोई काम करना।

फूट—स्त्री० फूटने की क्रिया या भाव, बैर, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना—टूटना, भीतर से झोंक के साथ बाहर आना, अंकुर निकलना, कली का खिलना, बिगड़ना, पक्ष छोड़ना, प्रकट होना। मु० फूटी आँखों न भाना = तनिक भी न सुहाना। फूट फूट कर रोना = विलाप करना।

फूत्कार—पु० फुफकार। [बर्तन।

फूलदान—पु० गुलदस्ता रखने का

फूलदार—फूलवाला।

फूलना—पुष्पित होना, खिलना, सूजना, गर्व करना, खुश होना, रूठना। मु० फूलना फलना = सुखी और संपन्न होना। फूला फूला फिरना = प्रसन्न घूमना। फूले अंग न समाना = अत्यंत आनंदित होना।

फूहड़—बेढंगा, फद्दा।

फूही—स्त्री० फुहार।

फेनिल—फेनयुक्त।

फेफड़ा—पु० साँस की थैली जो छाती के नीचे होती है।

फेर—फिर। पु० चक्कर, घुमाव, मोड़, रद्दबदल, फर्क, असमंजस, उलझन, भ्रम, चालबाजी, झंझट, उपाय, हानि और। मु० दिनों का फेर = एक दशा से दूसरी दशा में विशेष कर बुरी दशा में पड़ना। निन्यानवे का फेर = निन्यानवे रुपये पाकर सौ रुपये पूरे करने की धुन।

फेरी—स्त्री० फेरा, फेर, परिक्रमा, चक्कर, बराबर आना जाना।

फेल—पु० नापास, असफल। पु० बुरा काम।

फेलो—पु० सभासद।

फेंसिंग—पु० तार, घेरा।

फेहरिस्त—स्त्री० सूची।

फैक्टरी—स्त्री० कारखाना।

फैलाव—पु० विस्तार। [तर्ज।

फैशन—पु० रवाज, चाल, ढंग, शौक,

फैशनेबल—शौकीन।

फैंसी—देखने में सुन्दर।

फैसला—पु० निर्णय।

फोकट—निःसार व्यर्थ, मुफ्त। [चित्र।

फोटो—पु० यंत्र द्वारा उतारा हुआ

फोड़ना—भग्न करना, भेदभाव उत्पन्न करना, फूट डाल कर अलग करना, एक बारगी भेद खोलना।

फोता—पु० भूमिकर, थैली, अंडकोष।

फोतेदार—पु० खजांची, रोकड़िया।

फोनोग्राफ—पु० एक बाजा जो आदमी की तरह गाता है।

फोरमैन—पु० कारखानों में कारीगरों का सरदार।

फोर्ट—पु० किला।

फौज—पु० झुंड, सेना।

फौजदार—पु० सेनापति ।
फौजदारी —स्त्री० लड़ाई-दंगा ।
फौजी —सैनिक, फौज का ।
फौत--मृत, मरा हुआ, गत !
फौती—मृत्यु संबंधी, मृत्यु का ।
फौरन—तुरंत ।

फौलाद—पु० एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा ।
फ्रांसीसी—फ्रांस देश का, फ्रांस देश का रहने वाला, फ्रांसवासी ।
फ्रेम—पु० चौकठा ।
फ्लैग—पु० झंडा, पताका ।

ब

ब—एक अक्षर । पु० वरुण, सिंधु, जल, सुगंधि ।
बंक—टेढ़ा, पुरुषार्थी, दुर्गम । पु० वः संस्था जो लोगों का रुपया जमा करती और लोगों को कर्ज देती है ।
बंजर—पु० ऊसर ।
बंजारा—दे० "बनजारा" ।
बँटवारा—पु० विभाग, हिस्सा ।
बंडल—पु० छोटी गठरी ।
बंदगी—स्त्री० ईश्वर की बंदना, सेवा, प्रणाम । [झालर, तोरण ।
बंदनवार--पु० फूलों और पत्तों का
बंदर--बानर, बंदरगाह ।
बंदरघुड़की—स्त्री० एक धमकी जो केवल डराने के लिये हो ।
बंदरगाह—पु० समुद्र के किनारे जहाज लगने का स्थान ।
बंदा--पु० सेवक, कैदी ।
बंदि—स्त्री० कैद ।[भाव,प्रबंध,षड्यंत्र ।
बंदिश —स्त्री० बाँधने की क्रिया या
बंदी—पु० भाट, कैदी ।

बंदीखाना—पु० कैदखाना ।[सिपाही ।
बंदूकची--पु० बंदूक चलानेवाला
बंदोबस्त—पु० प्रबंध,खेत नाप कर उस का राज्य-कर निर्धारित करने का काम ।
बंध —पु० बंधन, गाँठ, कैद, बाँध, योगसाधन की मुद्रा, निबंध-रचना, बंद, फँसाव, शरीर ।
बंधक—पु० रेहन, बाँधनेवाला, ।
बंधन--पु० बाँधने की क्रिया, रस्सी, बाधक, बध, कैदखाना, जोड़ ।
बँधना--बाँधा जाना, कैद होना, फँसना, ठीक होना, क्रम ठीक होना ।
बंधु—पु० भाई, सहायक, मित्र ।
बँधुआ –पु० कैदी, बंदी ।
बँधेज—पु० रुकावट, नियम ।
बंध्या—स्त्री० बाँझ ।
बंध्यापुत्र-पु० ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र, कभी न होनेवाली चीज ।
बंबा--पु० पानी की कल, सोता ।
बंसी—स्त्री० मुरली, मछली फँसाने

का औजार, एक प्रकार की घास।
क—पु० बगुला, कुबेर।
बकतर—पु० कवच।
बकध्यान—पु० ऐसा ध्यान या ढंग जो देखने में तो साधु सा जान पड़े पर वास्तव में जिसका उद्येश्य बुरा हो, बनावटी साधुभाव।
बकवाद--स्त्री० बकबक।
बकसना--दे० "बख्शना।"
बकसीस—दे० "बख्शिश"।
बकाया—स्त्री० बाकी, बचत।
बकुचना—सिकुड़ना।
बकुचा—पु० छोटी गठरी।
बकुल—पु० मौलसिरी।
बक्काल--पु० बनिया।
बखरा—पु० भाग, हिस्सा।
बखान—पु० वर्णन, प्रशंसा।
बखिया—पु० एक प्रकार की सिलाई।
बखील—कृपण, कंजूस।
बखूबी—भली भाँति।
बखेरना--छितराना।
बख्त—पु० समय, भाग्य, तकदीर।
बख्तर—पु० कवच। [माफ करना।
बख्शना--कृपापूर्वक देना, छोड़ना,
बख्शिश—स्त्री० उदारता, दान, इनाम, क्षमा। [नौकर।
बख्शी—स्त्री० वेतन बाँटनेवाला
बगर—पु० महल, घर, कोठरी, आँगन। स्त्री० बगल।
बगरना—फैलना, छितराना।
बगल—स्त्री० काँख, पार्श्व, किनारे का हिस्सा, पास की जगह। मु० बगलें बजाना = खूब खुशी मनाना। बगलें झाँकना = इधर-उधर भागने का यत्न करना। [भगत = ढोंगी, कपटी।
बगला—पु० एक पक्षी। मु० बगला
बगावत—स्त्री० बागी होने का भाव, बलवा, राजद्रोह।
बगैर—बिना।
बघंबर—पु० बाघ की खाल।
बचत—स्त्री० बचाव, शेष, लाभ।
बचन—पु० वाणी, बात।
बचपन—पु० लड़कपन।
बचाव—पु० बचने का भाव, रक्षा।
बच्चा—पु० लड़का, शिशु।
बच्चादान—पु० गर्भाशय।
बजमारा—वज्र से मारा हुआ।
बजरंग—वज्र के समान शरीरवाला।
बजरंगबली—पु० हनुमान।
बज्जरबट्टू—पु० एक वृक्ष का बीज जिसकी माला बच्चों को नजर से बचाने के लिये पहनाते हैं।
बजा—उचित, ठीक। मु० बजा लाना = पूरा करना, करना।
बजाज—पु० कपड़ा बेचनेवाला।
बजाजा—पु० वह स्थान जहाँ बजाजों की दुकानें हों। [व्यापार।
बजाजी—स्त्री० कपड़ा बेचने का

बजाय—बदले में, जगह पर।

बट—पु० दे० "वट"। गोल वस्तु, बटखरा, रस्सी की ऐंठन, रास्ता।

बटपार, बटमार—पु० ठग, डाकू।

बटवार—पु० पहरेदार, रास्ते का कर उगाहनेवाला। [बटोही।

बटा—पु० गोल वस्तु, गेंद, ढेला,

बटाऊ—पु० बटोही।

बटालियन—पु० पैदल सेना का एक दल जिसमें एक हजार सैनिक होते हैं।

बटी—स्त्री० गोली, बाटिका।

बट्टा—पु० वह कमी जो लेन-देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है, दलाली, दस्तूरी, घाटा, लोढ़ा, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, छोटा गोल डिब्बा। मु० बट्टा लगना = दाग या कलंक लगना। [लेखा।

बट्टा खाता—पु० डूबी हुई रकम का

बड़वाग्नि—स्त्री० समुद्र की आग।

बड़वानल—पु० दे० "बड़वाग्नि"।

बढ़ावा—पु० प्रोत्साहन, उत्तेजना।

बणिक्, बनिज्—पु० बनिया, विक्रेता।

बतकही—स्त्री० बातचीत।

बतरस—पु० बातों का मजा।

बतौर—तरह पर, समान।

बद—खराब, नीच, बुरा। [अशान्ति।

बदअमली—स्त्री० राज्य का कुप्रबंध,

बदइंतजामी—कुप्रबंध।

बदकार—कुकर्मी, व्यभिचारी।

बदकिस्मत—अभागा।

बदख्वाह—बुरा चाहनेवाला।

बदगुमानी—स्त्री० झूठा शक।

बदगोई—स्त्री० निंदा, चुगली।

बदचलन—पु० कुमार्गी। [भाषी।

बदजबान—बुरा बोलनेवाला, कटु-

बदजात—खोटा, नीच।

बदतमीज—अशिष्ट, बेहूदा।

बदतर—और भी बुरा।

बददियानती—स्त्री० बेइमानी।

बददुआ—स्त्री० शाप।

बदन—पु० शरीर।

बदनसीब—अभागा।

बदना—कहना, मान लेना, निश्चित करना, बाजी लगाना, कुछ समझना। मु० बदा होना = भाग्य में लिखा होना। बद कर = जानबूझ कर।

बदनाम—जिसकी निंदा हो रही हो, कलंकित।

बदनामी—स्त्री० कलंक, लोकनिंदा।

बदनीयत—बुरी नीयतवाला।

बदपरहेज—कुपथ्य करनेवाला।

बदबू—दुर्गंध।

बदमजा—पु० बुरे स्वाद का।

बदमस्त—लंपट, नशे में चूर।

बदमाश—बुरे कर्म से जीविका चलानेवाला, दुष्ट, पाजी, दुराचारी। [चार।

बदमाशी—स्त्री० दुष्कर्म, दुष्टता, व्यभि-

बदमिजाज—बुरे स्वभाव का।

बदरंग—भद्दे रंग का, विवर्ण ।[वृक्ष ।
बदर—बाहर । पु० बेर का फल या
बदरा—पु० बादल ।
बदराह—कुमार्गी, दुष्ट ।
बदरि—पु० बेर का फल या पेड़ ।
बदल—पु० परिवर्तन, एवज ।
बदला—पु० परिवर्तन, एवज, प्रतीकार, नतीजा । [तब्दीली ।
बदली—स्त्री० मेघ का विस्तार,
बदवख्त—अभागा ।
बदसलूकी—स्त्री० बुरा व्यवहार ।
बदसूरत—कुरूप ।
बदस्तूर—ज्यों का त्यों ।
बदहजमी—स्त्री० अपच ।
बदहवास—बेहोश, विकल ।
बदा—भाग्य में लिखा हुआ ।
बदाबदी—स्त्री० दो पक्षों की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ ।
बदि—बदले में,लिये । स्त्री० बदला ।
बदी—स्त्री० कृष्ण पक्ष, बुराई ।
बदौलत—द्वारा, कारण से ।
बद्ध—बँधा हुआ, निर्धारित ।
बद्धकोष्ठ—पु० कब्जियत ।
बद्धपरिकर—कमर बाँधे हुए, तैयार ।
बधना—हत्या करना । पु० टोंटीदार लोटा ।
बधाई—स्त्री० वृद्धि, मंगलाचार,आनंद, किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या संदेश, मुबारकबाद ।
बधाया—पु० बधाई ।
बधावा—पु० बधाई, मंगल अवसरों पर भेजा जानेवाला उपहार ।
बधिक—पु० हत्यारा, जल्लाद, व्याध
बधिर—पु० बहरा ।
बनक—स्त्री० सजधज, वेष ।
बनकर—पु० जंगल की चीजों पर लगनेवाला कर ।
बनखंड—पु० जंगली प्रदेश ।
बनजारा—पु० बैलों पर अन्न लाद कर एक देश से दूसरे देश को बेचने के लिये जानेवाला व्यक्ति, व्यापारी ।
बनज्योत्स्ना—स्त्री० माधवी लता ।
बनत—स्त्री० बनावट, अनुकूलता ।
बनमानुष—पु० मनुष्य से मिलता-जुलता जंगली जंतु; जैसे गोरिल्ला आदि ।
बनरा—पु० बंदर,वर, दूल्हा । [पेड़ ।
बनराज, बनराय—पु० सिंह, बड़ा
बनरी—स्त्री० नववधू । [बना कपड़ा ।
बनवसन—पु० वृक्षों की छाल का
बनवारी—पु० श्रीकृष्ण ।
बना—पु० वर, दूल्हा ।
बनात—स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा । [प्रति ।
बनाम—नाम पर, नाम से, किसी के
बनाव—पु० बनावट, सजावट,तरकीब ।

बनावटी—नकली ।
बनिज—पु० व्यापार, सौदा ।
बनिजना—व्यापार करना, खरीदना-बेचना, अपने अधीन करना ।
बनिस्बत—अपेक्षा । [स्त्री ।
बनी—स्त्री० वनस्थली, बाग, दुलहिन,
बनौरी—स्त्री० ओला । [का संस्कार ।
बपतिस्मा-पु० ईसाई बनाने के समय
बपुरा—बेचारा । [जायदाद ।
बपौती—स्त्री० बाप से पायी हुई
बबर—पु० सिंह ।
बम—पु० विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ गोला, शिव के उपासकों का "बम-बम" शब्द । मु० बम बोल जाना = कुछ न रह जाना ।
बमपुलिस—पु० म्युनिसिपैलिटी का पैखाना । [विरुद्ध ।
बमुकाबला—मुकाबले में, सामने,
बमूजिब—मुताबिक ।
बयन—पु० वचन, बात ।
बयस—स्त्री० उम्र ।
बयान—पु० वर्णन, विवरण ।
बयाना—पु० पेशगी ।
बयाबान—जंगल, उजाड़ ।
बयार—स्त्री० हवा ।
बर—श्रेष्ठ, पूरा, बल्कि, ऊपर । पु० दूल्हा, बल, वट वृक्ष, रेखा ।
बरकत—स्त्री० वृद्धि, लाभ, समाप्ति, धनदौलत, कृपा ।

बरकरार—कायम, मौजूद ।
बरकाज—पु० विवाह ।
बरखास्त—विसर्जित, हटाया गया ।
बरखिलाफ—विरुद्ध, उलटा ।
बरगद—पु० बड़ ।
बरछा—पु० भाला ।
बरजना—मना करना ।
बरजबान—कंठस्थ । [चारी ।
बरजोर—बलपूर्वक । प्रबल, अत्याचारी ।
बरतना—व्यवहार करना ।
बरतरफ—अलग, बरखास्त ।
बरताव—पु० व्यवहार ।
बरदार—ढोनेवाला, धारण करनेवाला, पालन करनेवाला ।
बरदाश्त—स्त्री० सहना ।
बरनर—पु० लैंप का वह ऊपरी भाग जिसमें बत्ती जलाई जाती है ।
बरना—ब्याहना, किसी को चुनना या नियुक्त करना, दान देना ।
बरपा—खड़ा हुआ ।
बरफी—स्त्री० एक मिठाई । [प्रचंड ।
बरबंड—बलवान, प्रतापशाली, उद्दंड,
बरबस—बलपूर्वक, व्यर्थ ।
बरबाद—नष्ट ।
बरबादी—स्त्री० नाश ।
बरसना—मेघ पड़ना । मु० बरस पड़ना = बहुत क्रुद्ध हो कर डाँटने-डपटने लगना ।
बरसात—स्त्री० वर्षा ऋतु ।

बरसाती—बरसात का। पु० एक प्रकार का कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भींगता।
बरही—पु० मयूर, मुरगा। स्त्री० प्रसूता का वह स्नानादि कर्म जो बारहवें दिन पर होता है।
बराक—शोचनीय, नीच, बेचारा। पु० शिव, युद्ध।
बराट—स्त्री० कौड़ी। [जानेवाले लोग।
बरात—स्त्री० विवाह में वर के साथ
बरामद—बाहर या सामने आया हुआ। स्त्री० दियारा, आमदनी।
बरामदा—पु० दालान, ओसारा, बरंडा।
बराय—वास्ते, लिये। [दे० "वराह"।
बराह—के तौर पर, द्वारा। पु०
बरिबंड—दे० "बरबंड"।
बरी—मुक्त, छूटा हुआ।
बरु—भले ही, चाहे। पु० दे० "वर"।
बरुआ—पु० ब्रह्मचारी, ब्राह्मण-कुमार, उपनयन। [के बाल।
बरुनी—स्त्री० पलक के किनारे पर
बर्फ—स्त्री० जमा हुआ पानी।
बर्बर—असभ्य, जंगली, उद्दंड। पु० घुंघराले बाल, जंगली आदमी।
बर्राक—चमकीला, तीव्र, चतुर, सफेद, पूर्ण रूप से अभ्यस्त।
बलंद—ऊँचा।
बल—पु० शक्ति, सँभार, सहारा, आसरा, सेना, पहलू, ऐंठन, लपेट, घुमाव, टेढ़ापन, सिकुड़न, लचक, कसर। मु० बल खाना = घुमाव के साथ टेढ़ा होना, लचकना, घाटा सहना। बल पड़ना = अंतर होना।
बलकल—दे० "वल्कल"।
बलगम—पु० कफ।
बलद—पु० बैल।
बलना—जलना।
बलवा—पु० दंगा, विद्रोह।
बलवाई—पु० विद्रोही, उपद्रवी।
बलशाली—बलवान्।
बलशील—बली। [दुख, रोग।
बला—स्त्री० पृथ्वी, लक्ष्मी, आफत,
बलाक—पु० बगुला। [पंक्ति।
बलाका—स्त्री० बगुली, बगुलों की
बलाग्र—पु० सेनापति, सेना का अगलाभाग।
बलाढ्य—बली।
बलात्—बलपूर्वक, हठात्।
बलात्कार—पु० जबरदस्ती कोई काम करना, किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
बलाध्यक्ष—पु० सेनापति।
बलाय—स्त्री० बला। [बगला।
बलाहक—पु० मेघ, एक प्रकार का
बलि—पु० मालगुजारी, उपहार, पूजा की सामग्री, नैवेद्य, खाने की वस्तु, देवता के उद्देश्य से मारा

जानेवाला पशु। मु० बलि जाना = निछावर होना।
बलित—बलिदान चढ़ाया हुआ।
बलिदान—पु० नैवेद्यादि चढ़ाना, देवता के उद्येश्य से बकरे आदि का मारना।
बलिपशु—पु० बलिदान का पशु।
बलिप्रदान—पु० बलिदान।
बलिवर्द—पु० साँड़, बैल।
बलिष्ठ—अधिक बलवान।
बलिहारी स्त्री० प्रेम,भक्ति और श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना, निछावर, कुरबान। मु० बलिहारी जाना = निछावर होना। बलिहारी लेना = बलैया लेना।
बली—बलवान्।
बलीमुख—पु० बंदर।
बलूची पु० बलूचिस्तान का निवासी।
बलैया—स्त्री० बला, बलाय। मु० (किसी की) बलैया लेना = किसी का रोग-दुख अपने ऊपर लेना, मंगल कामना करते हुए प्यार करना। [है।
बल्कि—अन्यथा, इसके विरुद्ध, बेहतर
बल्ब—पु० वह गोलाकार शीशा जिसके अंदर बिजली की रोशनी के तार लगे रहते हैं।
बल्लम—पु० छड़, सोंटा, बरछा।
बवंडर—पु० चक्र की तरह घूमती हुई वायु, आँधी।
बवासीर—पु० पेट की एक बीमारी।
बसंती—वसंत का, खुले हुए पीले रंग का।
बस—काफी,केवल। पु० दे० "वश"।
बसर—पु० गुजर, निर्वाह।
बसहा—पु० बैल। [महकना।
बसाना—आबाद करना, ठहराना,
बसीठ—पु० संदेशा ले जानेवाला दूत। [जाने का काम।
बसीठी—स्त्री० संदेशा, संदेशा ले
बसेरा—बसनेवाला। पु० टिकने की जगह।
बसोबास—पु० निवासस्थान।
बस्ट—पु० मुख अथवा छाती के ऊपर का चित्र।
बस्ता—पु० कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें बही खाते आदि बाँध कर रखते हैं।
बहकना—भटकना, चूकना, भुलावे में आ जाना, आपे में न रहना,बहलना।
बहना—प्रवाहित होना। मु० बहती गंगा में हाथ धोना = किसी ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हों।
बहबूदी—स्त्री० लाभ, भलाइ, फायदा।
बहलना—झंझट या दुख की बात भूलना, मनोरंजन होना।
बहस—स्त्री० दलील, हुज्जत, होड़।
बहादुर—साहसी, पराक्रमी।

बहाना—प्रवाहित करना। पु० किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिये झूठ बात कहना, मिस, हीला, उक्त उद्देश्य से कही झूठ बात, कहने-सुनने के लिये एक कारण, निमित्त।

बहार—स्त्री० वसंत ऋतु, मौज, जवानी का रंग, रौनक, शोभा, विकास। [प्रसन्न।

बहाल—ज्यों का त्यों, भला-चंगा,

बहाली—स्त्री० पुनर्नियुक्ति।

बहाव—पु० प्रवाह।

बहिः—बाहर।

बहित्र—पु० नाव, जहाज।

बहिरंग—बाहरी। [भूमि।

बहिर्भूमि-स्त्री० बस्ती से बाहरवाली

बहिर्मुख—विमुख।

बहिष्कार—पु० बाहर करना, हटाना।

बहिष्कृत—निकाला आ।

बहु—बहुत, ज्यादा।

बहुज्ञ—बहुत जाननेवाला।

बहुतक—बहुतेरा।

बहुतायत—स्त्री० अधिकता।

बहुतेरा—अनेक। [बहुज्ञ।

बहुदर्शी—पु० बहुत जाननेवाला

बहुधा—अनेक प्रकार से, अक्सर, प्रायः।

बहुमत—पु० बहुत लोगों की राय, आधे से अधिक लोगों की राय।

बहुमूत्र—पु० एक रोग जिसमें रोगी को मूत्र बहुत उतरता है।

बहुमूल्य—बहुत मूल्य का, बेशक़ीमती।

बहुराना—लौटाना।

बहुरि—फिर, पीछे। [धरनेवाला।

बहुरुपिया—पु० तरह-तरह के रूप

बहुल—अधिक।

बहुलता—स्त्री० अधिकता।

बहुश्रुत—बहुत जानकार।

बहुसंख्यक—अधिक।

बहू—स्त्री० पुत्रवधू, पत्नी, दुलहिन।

बहेलिया—पु० चिड़ीमार।

बाँका—टेढ़ा, तिरछा, बहादुर, बना-ठना, ला।

बाँकुरा—टेढ़ा, पैना, चतुर।

बाँग—स्त्री० पुकार, अजान, मुरगे का शब्द।

बाँचना—पढ़ना।

बाँदी—स्त्री० दासी, लौंड़ी।

बांधव—पु० भाई, नातेदार, मित्र।

बाँबी—स्त्री० साँप का बिल।

बाँसुरी—स्त्री० वंशी।

बाँह—स्त्री० बाहु, बल, सहायक, भरोसा। मु० बाँह गहना या पकड़ना = आश्रय या सहायता देना, अपनाना, ब्याह करना। बाँह देना = सहारा देना, बाँह टूटना = सहायक न रह जाना।

बा—पु० जल, मरतबा।

बाइबुल--पु० ईसाइयों की धर्म-पुस्तक ।

बाइसिकिल—स्त्री० पाँवगाड़ी ।

बाई--स्त्री० वातदोष, स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक शब्द, वेश्याओं की पदवी ।

बाउंटी—स्त्री० सहायता, मदद ।

बाउर-पागल, सीधासादा,मूर्ख,गूँगा ।

बाकी —शेष, लेकिन ।

बाखबर—जाननेवाला, वाकिफ ।

बाग —पु० वाटिका । स्त्री० लगाम ।

बागडोर—स्त्री० लगाम ।

बागबान —पु० माली ।

बागबानी—स्त्री० माली का काम, बाग लगाने की विद्या ।

बागर —पु० नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ पानी नहीं पहुँचता हो ।

बागी—पु० राजद्रोही ।

बागीचा—पु० छोटा बाग ।

बागुर—पु० फंदा ।

बाघंबर —पु० बाघ की खाल ।

बाचा—स्त्री० बोलने की शक्ति, वचन, प्रतिज्ञा ।

बाज—वंचित, रहित, कोई-कोई । बगैर, बिना । पु० एक पक्षी, घोड़ा, बाजा । मु० बाज आना = खोना, रहित होना, दूर होना ।

बाजना—बाजे आदि का बजना, लड़ना, प्रसिद्ध होना, आघात पहुँचना ।

बाजाप्ता—नियमानुसार ।

बाजार—पु० वह स्थान जहाँ अनेक तरह की दूकानें हों । मु० बाजार करना = सौदा खरीदना । बाजार गर्म होना = चीजों या ग्राहकों की अधिकता होना । बाजार तेज होना = चीजों की माँग अधिक होना, कीमत चढ़ना, काम जोरों पर होना । बाजार मंदा होना = चीजों की माँग कम होना, दाम घटना, कारबार कम चलना ।

बाजि—पु० घोड़ा, बाण, पक्षी ।

बाजी-स्त्री० ऐसी शर्त जिसमें हारजीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो । पु० घोड़ा । मु० बाजी मारना = बाजी जीतना । बाजी ले जाना = किसी बात में आगे बढ़ जाना ।

बाजीगर—पु० जादूगर ।

बाजु—बिना, बगैर, सिवा ।

बाजू--तरफ, ओर, पक्षी का डैना । पु० बाँह, बाँह का एक गहना ।

बाट—पु० रास्ता, बटखरा । मु० बाट जोहना = प्रतीक्षा करना ।

बॅाडी—स्त्री० अंगरेजी ढंग की एक प्रकार की अँगिया ।

बॉडी गार्ड—पु० शरीर रक्षक ।

बाड़व—पु० बड़वाग्नि, समुद्र की आग । [धार ।

बाढ़—स्त्री० अधिकता, जलप्लावन

बाण—पु० तीर, गाय का थन, आग,

लक्ष्य, पाँच की संख्या।
बात—स्त्री० वचन, खबर, कथन, हाल, चर्चा, बहाना, याद, मान-मर्य्यादा, रहस्य, साख आदेश, अभिप्राय, प्रश्न, तत्त्व, चीज, खूबी, ढंग, काम। मु० बात की बात में =फौरन। बात न पूछना=कुछ भी कदर न करना। बात का बतंगड़ करना=साधारण बात को पेचीदा बनाना। बात का धनी=बात का पक्का, दृढ़प्रतिज्ञ।
बातुल—पागल, सनकी।
बातूनी—बहुत बातें करनेवाला।
बाद—पीछे, व्यर्थ, कमीशन, सिवाय। पु० बहस, झगड़ा, शर्त, हवा।
बादल—पु० मेघ। [तार।
बादला—पु० सोने या चाँदी का चिपटा
बादशाह—पु० राजा, स्वतंत्र।
बादशाहत—स्त्री० राज्य, शासन, हुकूमत।
बादशाही—बादशाह संबंधी। स्त्री० राज्य, शासन, मनमाना व्यवहार।
बादहवाई—व्यर्थ, यों ही।
बादामी—बादाम के रंग का, कुछ पीलापन लिये लाल।
बादि—व्यर्थ, फजूल।
बादी—वायु संबंधी, वायुविकार संबंधी, वायुविकार करनेवाला। स्त्री० वात-विकार।
बाध—पु० बाधा डालनेवाला, पीड़ा, कठिनता, अर्थ की असंगति। [दाई।
बाधक—पु० बाधा डालनेवाला, दुख-
बाधकता—स्त्री० बाधा।
बाधा—स्त्री० रुकावट, संकट।
बाधित—बाधायुक्त, असंगत, ग्रस्त।
बाध्य—जो रोका या दबाया जाय, मजबूर होनेवाला।
बान-पु० बाण, तीर, ऊँची लहर, कांति बाना। स्त्री० सजधज, आदत।
बानक—स्त्री० वेश।
बानगी—स्त्री० नमूना।
बाना—पु० पोशाक, पहनावा, भेस, चाल, एक हथियार, बुनावट, भरनी।
बानावरी—स्त्री० बाण चलाने की विद्या या ढंग। [वचन।
बानि—स्त्री० सजधज, आदत, चमक,
बानिक—स्त्री० वेश, सजधज।
बानी—स्त्री० वचन, प्रतिज्ञा, सरस्वती, आभा। [वाला, योद्धा।
बानैत—पु० बाना या बाण चलाने-
बापुरा—तुच्छ, बेचारा।
बाबत—स्त्री० संबंध, विषय।
बाबा—पु० पिता, पितामह, साधु-संन्यासियों के लिये आदरसूचक शब्द, बूढ़ा पुरुष।
बाम—दे० "वाम"। पु० अटारी।
बाय—स्त्री० वायु, बाई, बावली।
बायक—पु० कहनेवाला, दूत।

बॉयकॉट—पु० बहिष्कार।
बॉय स्काउट—पु० बालचर।
बायस्कोप—पु० सिनेमा। [विरुद्ध।
बायाँ—दाहिना का उलटा, उलटा,
बारंबार—बारबार।
बार—पु० द्वार, ठिकाना, दरबार, बाढ़, घोर, धार, बाल। स्त्री० काल, देर, मरतबा।
बारदाना—पु० रसद।
बारना—मना करना, जलाना।
बारनिश—स्त्री० फेरा हुआ रोगन या चमकीला रंग।
बारवधू—स्त्री० वेश्या।
बारबरदार—पु० बोझ ढोनेवाला।
बारमुखी—स्त्री० वेश्या।
बारह—एक संख्या। मु० बारह बाट होना = तितर-बितर होना।
बारहखड़ी—स्त्री० बारह मात्राओं का व्यंजनों के साथ मिलान।
बारहदरी—स्त्री० वह बैठक जिसमें बारह दरवाजे हों।
बारहमासा—पु० वह गीत जिसमें बारह महीनों का प्राकृतिक वर्णन विरहिनी के मुख से कराया जाय।
बारहमासी-बारहो महीने होनेवाला।
बारहा—बारबार।
बारात—स्त्री० दे० "बरात"।
बारिधर—पु० बादल।
बारिश—स्त्री० वर्षा, वर्षा ऋतु।

बारी—किनारा, हासिया, घेरा, धार, बगीचा, क्यारी, घर खिड़की, बन्दरगाह, पारी, लड़की, नवयौवना।
बारीक—पतला, महीन, सूक्ष्म।
बारीकी—स्त्री० पतलापन, खूबी।
बारूद—स्त्री० एक प्रकार की बुकनी जो तोप आदि के चलाने में काम आती है।
बारे—अंत को। पु० बच्चे।
बारे में—संबंध में। [जानने का यंत्र।
बारोमीटर—पु० हवा का दबाव
बाल—जो सयाना न हो, हाल का उगा। पु० बालक, नासमझ आदमी। केश। मु० बाल बाँका न होना = कुछ भी हानि न पहुँचना। किसी काम में बाल पकना = कोई काम करते बूढ़ा होना। बाल-बाल बचना = हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।
बालचर—पु० बॉय स्काउट।
बालक—पु० लड़का, बच्चा, केश, अनजान व्यक्ति।
बालतंत्र—पु० बालकों के लालन-पालन आदि की विद्या, कौमारभृत्य।
बालधि—पु० दुम, पूँछ।
बालना—जलाना, रोशन करना।
बालबच्चे—पु० संतान।
बालबोध—स्त्री० देवनागरी लिपि।
बालभोग—पु० प्रातःकाल का नैवेद्य,

जलपान, कलेवा, नाश्ता ।

बालम—पु० पति, प्रेमी ।

बाललीला--स्त्री० बालकों का खेल ।

बालविधु--पु० शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चाँद ।

बालसूर्य-पु० प्रातःकाल का सूर्य्य ।

बाला--ऊँचा । स्त्री० जवान स्त्री, पत्नी, औरत, कन्या, दो वर्ष तक की लड़की, हाथ में पहनने का कड़ा ।

बालाई--ऊपरी, उँचाई ।

बालाबर-पु० एक प्रकार का अँगरखा ।

बालार्क—पु० प्रातःकाल का सूर्य, कन्या राशि में स्थित सूर्य ।

बालिका--स्त्री० छोटी लड़की, बेटी ।

बालिग--पु० प्राप्तवयस्क, सयाना ।

बालिश—अज्ञान । पु० तकिया ।

बालिश्त--पु० बित्ता ।

बालिस ट्रेन—स्त्री० वह रेलगाड़ी जिसपर सड़क बनाने के सामान लाद कर भेजे जाते हैं ।

बालुका—स्त्री० बालू ।

बालू—पु० चट्टानों का चूर्ण । मु० बालू की भीत = शीघ्र ही नष्ट होनेवाली चीज ।

बाल्य--बालक का । पु० लड़कपन ।

बाल्यावस्था--स्त्री० लड़कपन ।

बाव--पु० वायु, बाई ।

बावड़ी—देखो "बावली" ।

बावन—पु० एक संख्या । मु० बावन तोले पाव रत्ती = बिलकुल ठीक-ठीक । बावन वीर = बड़ा बहादुर और चालाक ।

बावरची—पु० रसोइया ।

बावरा, बावला--पागल, मूर्ख ।

बावली—स्त्री० चौड़े मुँह का कुआँ । जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों, छोटा गहरा तालाब ।

बाशिंदा--निवासी, रहनेवाला ।

बासन—पु० बरतन ।

बाससी—पु० कपड़ा ।

बासा—पु० होटल ।

बाहना—ढोना, चलाना, हाँकना, बहना, पकड़ना, जोतना ।

बाहम—आपस में ।

बाहु—स्त्री० बाँह ।

बाहुबल—पु० पराक्रम, बहादुरी ।

बाहुयुद्ध--पु० कुश्ती ।

बाहुल्य—पु० अधिकता ।

बिंदी--स्त्री० सुन्ना, बिंदुली ।

बिंदुका--स्त्री० बिंदी ।

बिंदुली--स्त्री० बिंदी ।

बिंधना—छेदा जाना, फँसना ।

बिंब—पु० प्रतिबिंब, छाया, कमंडलु, प्रतिमूर्ति, सूर्य या चंद्रमा का मंडल, आभास, झलक ।

बिंबा-पु० तिलकोरा या कुंदरू, प्रतिछाया, सूर्य या चंद्रमा का मंडल ।

बि—दो, एक और एक ।

बिकाऊ—बिकनेवाला।
बिकारी—हानिकारक, जिसका रूप बिगड़ कर और हो गया हो।
बिखरना—छितराना। [जिद्दी।
बिगड़ैल—हर बात में बिगड़नेवाला
बिगाड़—पु० बिगाड़ने की क्रिया या भाव, खराबी, झगड़ा।
बिगाड़ना—खराब करना, बुरी आदत लगाना, बहकाना, व्यर्थ व्यय करना, सतीत्व नष्ट करना।
बिगुल—पु० अंगरेजी ढंग की एक तुरही जो प्रायः सैनिकों को इकट्ठा करने के लिये बजायी जाती है।
बिगोना—बिगाड़ना, छिपाना, तंग करना, बहकाना, बिताना। [मध्यस्थ।
बिचवान—बीच में पड़नेवाला,
बिछुड़न—स्त्री० अलग होना।
बिदुराना—मुस्कराना।
बिदुरानी—स्त्री० मुस्कराहट।
बिद्दत—स्त्री० खराबी, तकलीफ, आफत, जुल्म, दुर्दशा।
बिध—स्त्री० प्रकार, तरह, ब्रह्मा, जमाखर्च का हिसाब।
बिधना—पु० ब्रह्मा। [बुनना।
बिनना—नन्हीं वस्तुओं का चुनना,
बिनौला—पु० कपास का बीज।
बिबि—दो।
बिय—दो, दूसरा।
बियत—पु० आकाश।

बियाबान—पु० बहुत उजाड़ स्थान या जंगल।
बिरला—बहुतों में से कोई एकाध।
बिरवा—पु० पौधा।
बिरादर—पु० भाई, भ्राता।
बिरादरी—स्त्री० भाईचारा, एक ही जाति के लोगों का समूह।
बिरान, बिराना—दे० "बेगाना।"
बिरियाँ—स्त्री० समय, मरतबा।
बिल—पु० छेद, माँद।
बिलकुल—सब, निपट।
बिलखना—फूट-फूट कर रोना।
बिलगाना—अलग करना।
बिलगाव—पु० भिन्नता, भेद।
बिलटना—बिगड़ना, नष्ट होना।
बिलटी—स्त्री० रेल से माल भेजने की रसीद।
बिलफेल—इस समय, अभी।
बिललाना—बिलखना।
बिलल्ला—मूर्ख, अवारा।
बिला—बिना, बगैर।
बिलाना—नष्ट होना, अदृश्य होना।
बिलियर्ड—पु० एक अंगरेजी खेल।
बिलोकनि—स्त्री० देखने की क्रिया, दृष्टिपात। [व्यस्त करना।
बिलोड़ना—दूध आदि मथना, अस्त-
बिल्लौर—पु० स्फटिक, बहुत स्वच्छ शीशा
बिशप—पु० ईसाई मत का बड़ा पादरी
बिसमिल—घायल।

बिसमिल्ला—पु० श्रीगणेश, आरंभ।
बिसरना—भूलना।
बिसाँयँध—पु० सड़े माँस की गंध।
बिसात—स्त्री० हैसियत, पूंजी, सामर्थ्य, शतरंज या चौपड़ खेलने का कपड़ा। [आदि बेचनेवाला।
बिसाती—पु० सुई, तागा, चूड़ी
बिसारना—भुलाना।
बिसासी—जिसपर विश्वास न किया जा सके, दगाबाज, छली। [फिक्र।
बिसूरना—खेद करना। स्त्री० चिंता,
बिसेखना—ब्यौरेवार वर्णन करना, निर्णय करना, प्रतीत होना।
बिस्कुट—पु० आँटे की बनी हुई एक प्रकार की टिकिया।
बिस्तर—पु० बिछौना, विस्तार।
बिस्तरना—फैलना, फैलाना।
बिस्वा—पु० कट्टा।
बिहसना—मुस्कराना।
बिहरना— सैर करना, फटना।
बिहाना—छोड़ना, बीतना।
बिहिस्त—पु० स्वर्ग।
बिहीदाना—पु० एक प्रकार का फल।
बींधना—फँसना, बेधना, छेदना।
बीच—पु० मध्य, भेद, अंतर, अवसर, अंदर। स्त्री० लहर। मु० बीच रखना = भेद करना। बीच में कूदना = अनावश्यक हस्तक्षेप करना।
बीज—पु० बीया, दाना, प्रधान कारण, जड़, हेतु, वीर्य, कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्ण या शब्द, बीजगणित।
बीजक—पु० सूची, वह सूची जिसमें माल का ब्यौरा, दर और कीमत आदि लिखा हो, बीज।
बीजगणित—पु० गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मान कर विशिष्ट युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि मालूम की जाती हैं।
बीजन—पु० पंखा।
बीजमंत्र—पु० किसी देवता के उद्येश्य से निश्चित मूलमंत्र।
बीजाक्षर—पु० बीजमंत्र का पहला अक्षर।
बीझना—फँसना, लिप्त होना।
बीट—स्त्री० पक्षियों का विष्ठा।
बीबी—स्त्री० पत्नी, कुलीन स्त्री।
बीभत्स—घृणित, क्रूर, पापी। पु० काव्य में एक रस।
बीम—पु० जहाज का मस्तूल।
बीमा—पु० एक निश्चित रकम ले कर आर्थिक हानि वगैरह पूरी करने की जिम्मेवारी।
बीमार—रोगग्रस्त, रोगी। [शुश्रूषा।
बीमारदारी—स्त्री० रोगियों की
बीमारी—स्त्री० रोग, झंझट, बुरी आदत। [चरागाह।
बीर—दे० "वीर"। स्त्री० सखी,

बीरन—पु० भाई। [बरसाती कीड़ा।
बीरबहूटी—स्त्री० लाल रंग का एक
बीहड़—ऊँचा नीचा, विकट, अलग।
बुकचा—पु० गठरी।
बुखार—पु० भाप, ज्वर, क्रोध और दुःख आदि का आवेग।
बुजदिल—कायर।
बुजुर्ग—वृद्ध, बड़ा, पुरखा।
बुझना—अग्नि या अग्निशिखा का शांत होना, चित्त का आवेग शांत होना, समझना।
बुड़ाना—डुबाना।
बुढ़ापा—पु० वृद्धावस्था।
बुत—पु० मूर्ति, प्रियतम।
बुतपरस्त—मूर्तिपूजक।
बुतपरस्ती—स्त्री० मूर्तिपूजा।
बुतशिकन—पु० मूर्तिपूजा का घोर विरोधी।
बुताम—पु० बटन, घुंडी।
बुदबुद—पु० बुलबुला।
बुद्ध—जागरित, ज्ञानी, पंडित।
बुद्धि—स्त्री० समझ, [सके।
बुद्धिपर—जिस तक बुद्धि न पहुँच
बुद्धिमत्ता—स्त्री० अक्लमंदी।
बुद्धिमान्, बुद्धिवंत—अक्लमंद।
बुद्धिहीन—मूर्ख। [एक दिन।
बुध—पु० एक ग्रह, देवता, विद्वान्,
बुधि—स्त्री० बुद्धि।
बुनियाद—स्त्री० जड़, असलियत।

बुबुकना—जोर-जोर से रोना।
बुभुक्षा—स्त्री० भूख।
बुभुक्षित—भूखा।
बुरकना—भुरभुराना।
बुरका—मुसलमान औरतों का एक पहनावा जिससे सिर से पाँव तक के सब अंग ढके रहते हैं।
बुरा—खराब। [गुण, निंदा।
बुराई—स्त्री० खराबी, नीचता, अव-
बुरुश—पु० कूँची।
बुर्ज—पु० किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग, मीनार का ऊपरी भाग, गुंबज।
बुर्द—स्त्री० ऊपरी आमदनी, बाजी, शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरें मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है।
बुलंद—ऊँचा, भारी।
बुलडाग—पु० विलायती कुत्ता।
बुलबुला—बुदबुदा, पानी का बुल्ला।
बुलावा—पु० निमंत्रण।
बुलेटिन—पु० परचा।
बूँद—स्त्री० कतरा, वीर्य।
बू—स्त्री० गंध, दुर्गंध।
बूआ—स्त्री० फूफी, बड़ी बहन।
बूकना—महीन पीसना, गढ़ कर बातें करना।
बूचर—पु० कसाई।
बूचरखाना—पु० कसाईखाना।

बूचा—कनकटा।

बूझ—स्त्री० समझ, पहेली।

बूट—पु० चना, अंगरेजी जूता।

बूटी—स्त्री० वनस्पति, भाँग, कपड़ों आदि पर बननेवाले फूलों के छोटे चिह्न।

बूड़ना—डूबना।

बूता—पु० बल।

बे—बिना, बगैर, छोटों के लिये एक [संबोधन।

बेअकल—मूर्ख।

बेअदब—जिसको अदब न हो।

बेआब—जिसमें चमक न हो, तुच्छ।

बेआबरू—बेइज्जत।

बेइज्जत—अपमानित।

बेईमान—जो ईमानदार न हो।

बेउज्र—बिना उज्र के।

बेकदर—बेइज्जत।

बेकरार—व्याकुल, बेचैन।

बेकली—स्त्री० बेचैनी।

बेकस—निस्सहाय, अनाथ।

बेकसूर—निरपराध।

बेकाबू—विवश, लाचार, जो किसी के [वश में न हो।

बेकाम—निकम्मा।

बेकायदा—नियमविरुद्ध।

बेकार—निकम्मा, व्यर्थ।

बेकसूर—निरपराध।

बेखटक—बिना किसी खटके के, [निस्संकोच।

बेखबर—अनजान, बेहोश।

बेखौफ—निर्भय, निडर।

बेगम—स्त्री० रानी।

बेगाना—पराया, अनजान।

बेगार—स्त्री० बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती लिया हुआ काम। मु० बेगार टालना = बिना चित्त लगाये कोई काम करना।

बेगि—शीघ्र।

बेगुनाह—बेकसूर।

बेचारा—दीन और असहाय।

बेचैन—व्याकुल।

बेजबान—गूंगा, दीन।

बेजा—बेमौका, अनुचित, खराब।

बेजान—मुरदा, मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, कमजोर।

बेजाब्ता—कानून या नियम के विरुद्ध।

बेजार—जो किसी बात से बहुत तंग आ गया हो, व्यथित।

बेड़ा—पु० घिरनाई, बाँस या तख्ते आदि की बनायी चीज जिससे छोटी-छोटी नदियाँ पार की जा सकें। मु० बेड़ा पार लगना = संकट आदि से पार लगना।

बेड़ी—स्त्री० लोहे की जंजीर।

बेतकल्लुफ—सीधा-सादा व्यवहार करनेवाला, बेधड़क, निस्संकोच।

बेतमीज—उजड्ड, बेशहूर।

बेतरह—अनुचित रूप से, बुरी तरह से, बहुत अधिक।

बेतरीका—तरीका के विरुद्ध।

बेतहाशा—बहुत तेजी से।
बेताब—दुर्बल, विकल।
बेतुका—बेमेल, बेढंगा।
बेतौर—बेतरह।
बेदखल—अधिकारच्युत।
बेदखली—स्त्री० बेदखल होना।
बेदम—मृतक, मृतप्राय, जर्जर।
बेदर्द—कठोर-हृदय।
बेदर्दी—निर्दयता, कठोरता। [बेक़सूर।
बेदाग—जिसमें दाग न हो, निर्दोष
बेदाना—मूर्ख। पु० काबुली अनार।
बेनजीर—अनुपम, सब से बढ़कर।
बेधना—छेदना।
बेनसीब—अभागा, बदकिस्मत।
बेनी—स्त्री० स्त्रियों की चोटी।
बेनु—पु० दे० "वेणु", वंशी, बाँस।
बेपरद—परदारहित, नंगा।
बेपरवा—बेफिक्र, मनमौजी, उदार।
बेपीर—निर्दय, कठोर।
बेपेंदी—जिसमें पेंदा न हो। मु० बेपेंदी का लोटा = किसी के जरा से कहनेपर विचार बदलनेवाला आदमी।
बेफायदा—व्यर्थ, बेकार।
बेफिक्र—निश्चिंत।
बेबस—लाचार, पराधीन।
बेबसी—स्त्री० लाचारी, मजबूरी।
बेबाक—चुकाया हुआ।
बेबुनियाद—निर्मूल, बिना जड़ का।
बेमज़ा—जिसमें मज़ा न हो।
बेमुनासिब—अनुचित।
बेमुरव्वत—जिस में मुरव्वत न हो।
बेर-पु० एक फल। स्त्री० मरतबा, देर।
बेरहम—निर्दय, जिसमें दया न हो।
बेरियाँ—स्त्री० समय।
बेरुख—बेमुरव्वत, नाराज।
बेल-पु० एक फल। स्त्री० लता, संतान, कपड़े आदि पर बनी हुई फूल-पत्तियाँ।
बेलज्जत—स्वादहीन।
बेलाग—बिलकुल अलग, साफ।
बेलौस—खरा, बेमुरव्वत।
बेवकूफ—मूर्ख, नासमझ।
बेवक्त—बुरे समय में।
बेवतन—बिना घर-द्वार का।
बेवफा—मित्रता, प्रेम आदि को न निबाहने वाला।
बेवहरिया—पु० लेनदेन का व्यवहार करनेवाला, महाजन।
बेवा—स्त्री० विधवा।
बेशऊर—मूर्ख, नासमझ।
बेशक—निःसंदेह।
बेशक़ीमत—बहुमूल्य।
बेशरम—निर्लज्ज।
बेशी—स्त्री० अधिकता।
बेशुमार—अनगिनत।
बेसबब—अकारण।
बेसर—पु० एक गहना।
बेसाहना—खरीदना, जान बूझकर अपने पीछे लगाना।

बेसुध—बेहोश, बेखबर ।

बेहतर—स्वीकृति सूचक शब्द, अच्छा किसी से बढ़ कर ।

बेहतरी—स्त्री० भलाई ।

बेहद—अपार, बहुत अधिक ।

बेहया—निर्लज्ज ।

बेहरी—स्त्री० चंदा ।

बेहाल—बेचैन ।

बेहिसाब—बेहद ।

बेहुरमत—बेइज्जत ।

बेहूदगी—बदतमीजी ।

बेहूदा—बदतमीज ।

बेहोश—मूर्च्छित, बे सुध ।

बेहोशी—स्त्री० मूर्च्छा ।

बैंक—पु० रुपये के लेन देन की बड़ी कोठी ।

बैंकर—पु० महाजन, साहूकार ।

बैंड—पु० एक अंगरेजी बाजा ।

बै—स्त्री० बेचना, बिक्री ।

बैजा—पु० अंडा, अंडकोष ।

बैट—पु० अंडा ।

बैटरी—स्त्री० शीशे आदि का पात्र जिसमें रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लायी जाती है ।

बैठक—स्त्री० बैठने का स्थान, या आसन, बैठकखाना, आधार, जमावड़ा, अधिवेशन, बैठने की क्रिया या ढंग, मेल ।

बैठका—पु० बैठने का कमरा ।

बैठकी—स्त्री० बार बार बैठने और उठने की कसरत, आसन ।

बैत—पु० पद्य ।

बैन—पु० वचन ।

बैरंग—वह चिट्ठी या पार्सल जिसका महसूल पाने वाले से वसूल किया जाय ।

बैरन—पु० एक अंगरेजी उपाधि ।

बैरा—पु० सेवक, चाकर ।

बैरोमीटर—पु० मौसिम की सरदी गरमी नापने का एक यंत्र ।

बैलून—पु० गुब्बारा ।

बैस—स्त्री० उम्र, जवानी ।

बैसना—बैठना ।

बैसाखी—स्त्री० वह लाठी जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रख कर लगड़े लोग चलते हैं ।

बोदा—मूर्ख, सुस्त, जो दृढ़ या कड़ा न हो ।

बोध—पु० ज्ञान, धीरज ।

बोधक—पु० जताने वाला ।

बोधगम्य—समझ में आने योग्य ।

बोधन—पु० सूचित करना, जगाना ।

बोधिवृक्ष—पु० गया में पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान ने बुद्धत्व प्राप्त किया था ।

बोधिसत्त्व—पु० बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी ।

बोनस—पु० पुरस्कार, वह अतिरिक्त लाभ जो किसी कम्पनी के हिस्सेदारों को दिया जाय ।

बोरना—डुबना। [तैयारी करना।
बोरिया—पु० चटाई, बिस्तर। मु० बोरिया बधना उठाना—चलने की
बोर्ड—पु० समिति, तख्ता, कागज की मोटी दफ्ती।
बोर्डर—हासिया, किसी चीज के किनारे पर बना हुआ बेलबूटा।
बोल—पु० बचन, ताना, व्यंग्य मु० बोलबाला रहना = साख या मान मर्यादा रहना।
बोलचाल—स्त्री० बात चीत, मेल मिलाप। छेड़छाड़, व्यवहार की भाषा।
बोलता-बाचाल, पु० ज्ञान, आत्मा।
बोली—स्त्री० बाणी, बात, नीलाम में जोर से दाम कहना, भाषा, ठठोली।
बोहित—पु० बड़ी नाव।
बौंड़—स्त्री० टहनी, लता।
बौछाड़-स्त्री० झड़ी, ताना। [यायी।
बौद्ध-बुद्ध द्वारा प्रचारित बुद्ध का अनु-
बौना—पु० अत्यंत नाटा मनुष्य।
बौर—पु० आम की मंजरी।
बौरा—पागल, मूर्ख।
बौरी—स्त्री० पगली स्त्री।
ब्यालू—पु० रात का भोजन।
ब्योंत—स्त्री० व्यवस्था, ढब, तरीका, उपाय, तैयारी, संयोग, प्रबंध, समाई काटछांट। [वृत्तांत, हाल, भेद।
ब्योरा—पु० विवरण, तफसील,
ब्रह्म—पु० एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत कारण और सच्चिदानन्द है। परमात्मा, आत्मा, ब्राह्मण (विशेषकर समस्त पदों में), ब्रह्मा, ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो, एक की संख्या।
ब्रह्मग्रंथी—स्त्री० जनेऊ की मुख्य गाँठ।
ब्रह्मघोष—पु० वेदध्वनि।
ब्रह्मचर्य्य—पु० वीर्य को रक्षित करने का प्रतिबंध, चार आश्रमों में पहला आश्रम जिसमें विषय भोग आदि से दूर रहकर अध्ययन में लगा रहना चाहिये।
ब्रह्मचारिणी—स्त्री० ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री, दुर्गा, सरस्वती। [धारण करनेवाला।
ब्रह्मचारी—पु० ब्रह्मचर्य्य का व्रत
ब्रह्मज्ञान—पु० ब्रह्म या पारमार्थिक सत्ता का बोध।
ब्रह्मण्य—ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला, ब्रह्म या ब्रह्मसंबंधी। [ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मत्व—पु० ब्रह्म का भाव,
ब्रह्मदिन—पु० १०० चतुर्युगियों का समय। [पाप।
ब्रह्मदोष—पु० ब्राह्मणों के मारने का
ब्रह्मद्रोही—ब्राह्मणों का वैरी।
ब्रह्मद्वार—पु० ब्रह्मरंध्र। [संपन्न।
ब्रह्मनिष्ठ -ब्राह्मण-भक्त, ब्रह्मज्ञान
ब्रह्मपद—पु० ब्रह्मत्व, ब्राह्मणत्व, मुक्ति।

ब्रह्मभट्ट—पु० वेदों का ज्ञाता, ब्रह्म-विद्, एक प्रकार के ब्राह्मण ।

ब्रह्मभोज—पु० ब्राह्मण भोजन ।

ब्रह्म मुहुर्त—दे० ब्राह्म मुहूर्त ।

ब्रह्मयज्ञ—पु० विधिपूर्वक वेदाभ्यास ।

ब्रह्मरंध्र—पु० मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिस मे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है । [कर भूत हुआ हो ।

ब्रह्मराक्षस—पु० वह ब्राह्मण जो मर

ब्रह्मरात्रि—स्त्री० ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है ।

ब्रह्मरेख—स्त्री० ब्रह्मलेख ।

ब्रह्मलेख—पु० भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही लिख देते हैं ।

ब्रह्मर्षि—पु० ब्राह्मण ऋषि ।

ब्रह्मलोक—पु० वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं, मोक्ष का एक भेद ।

ब्रह्मवाद—पु० वेदपाठ, अद्वैतवाद ।

ब्रह्मविद्—ब्रह्म को जाननेवाला, वेदार्थवेत्ता । [विद्या ।

ब्रह्मविद्या—स्त्री० ब्रह्म को जानने की

ब्रह्मसमाज—पु० दे० "ब्राह्म समाज" ।

ब्रह्मसूत्र—पु० जनेऊ, व्यासकृत शारीरिक सूत्र ।

ब्रह्महत्या—स्त्री० ब्राह्मणवध ।

ब्रह्मांड—पु० संपूर्ण विश्व जिसके भीतर अनंत लोक हैं, कपाल ।

ब्रह्मा—पु० ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप ।

ब्रह्माणी—स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति, सरस्वती ।

ब्रह्मानंद—पु० ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद ।

ब्रह्मावर्त—पु० सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश ।

ब्रह्मास्त्र—पु० एक प्रकार का अस्त्र ।

ब्राह्म—ब्रह्मसंबंधी ।

ब्राह्मण—पु० चार वर्णों में प्रथम वर्ण जिसका कार्य पठन पाठन तथा ज्ञानोपदेश आदि हैं, वेद का एक भाग, विष्णु, शिव ।

ब्राह्मण्य—पु० ब्राह्मण का भाव ।

ब्राह्म मुहूर्त—पु० सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय ।

ब्राह्म समाज—पु० राजा राय मोहन राय द्वारा चलाया हुआ एक संप्रदाय जो एक मात्र ब्रह्म की उपासना मानता है । [प्राचीन लिपि, एक बूटी ।

ब्राह्मी—स्त्री० दुर्गा, भारत की एक

ब्रिगेड—पु० सेना का एक समूह ।

ब्रिटिश—इंगलिस्तान का, अंगरेजी ।

ब्रुश—पु० बालों का बना हुआ कूँचा ।

ब्रोकर—पु० दलाल ।

ब्लाक—पु० ठप्पा । [कागज ।

ब्लाटिंग पेपर—पु० स्याही-सोख

ब्लूब्लैक—पु० नीली स्याही ।

भ

भ-एक अक्षर । पु० नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, भ्रमर, भूधर, भ्राँति ।

भंग—पु० तरंग, पराजय, खंड, भेद, टेढ़ापन, भयविनाश, बाधा स्त्री० भाँग ।

भंगी—पु० नष्ट होनेवाला, नष्ट करनेवाला, भाँग पीनेवाला, एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मलमूत्र आदि साफ करना है ।

भंगुर—नाशवान्, टेढ़ा ।

भँगेड़ी—भाँग पीनेवाला ।

[illegible]क—तोड़नेवाला । [ध्वंस, नाश ।

भंजन—तोड़नेवाला पु० तोड़ना,

भँजाना—तोड़ना ।

भंटा—पु० बैगन । [पु० दे० "भाँड़"

भंड—गंदी बातें बकनेवाला, धूर्त ।

भंडना—बिगाड़ना, तोड़ना, नष्टभ्रष्ट करना, बदनाम करना ।

भंडा—पु० बर्तन, भंडारा, भेद । मुहा० भंडा फूटना = भेद खुलना ।

भंडाफोड़—पु० रहस्योद्घाटन, भेद खुलना ।

भंडार—भंडारा पु० कोष, खजाना, कोठार, पाकशाला, पेट, झुंड, साधुओं का भोज ।

भँवर—पु० भौंरा, गड्ढा, पानी की लहर का एक स्थान पर चक्कर खाना ।

भँवरजाल—पु० भ्रमजाल, सांसारिक झगड़े बखेड़े ।

भँवरभीख—स्त्री० वह भीख जो भौंरे के समान घूम फिर कर माँगी जाय ।

भकुआ—मूर्ख, मूढ़ । [बनाना ।

भकुआना—घबड़ा जाना, मूर्ख

भकोसना—निगलना ।

भक्त—बटा हुआ, अलग किया हुआ, अनुयायी, भक्ति करनेवाला ।

भक्तवत्सल—भक्तों पर कृपा रखनेवाला, विष्णु ।

भक्ति—स्त्री० बाँटना, भाग, अंग, सेवा शुश्रूषा, पूजा, श्रद्धा । भगवद्भक्ति नौ प्रकार की है—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्जन, वंदन, दास्य, संख्या, आत्मनिवेदन ।

भक्षक—खानेवाला ।

भक्षण—पु० भोजन करना, भोजन ।

भक्षी—भक्षक ।

भक्ष्य—खाने योग्य ।

भगंदर—पु० एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा द्वार के पास होता है ।

भग—पु० योनि, गुदा, ऐश्वर्य, सौभाग्य, सूर्य ।

भगत—सेवक, उपासक । पु० तिलक चंदनधारी और अमांसाहारी व्यक्ति, ओझा ।

भगदर—स्त्री० भागने की क्रिया या भाव। [स्वती, दुर्गा।
भगवती—स्त्री० देवी, गौरी, सर-
भगवत्—पु० परमेश्वर, विष्णु, शिव।
भगवान—ऐश्वर्य्य युक्त, पूज्य। पु० ईश्वर, विष्णु, कोई पूज्य व्यक्ति।
भगिनी—स्त्री० बहन।
भगीरथ—राजा भगीरथ की तपस्या के समान भारी, बहुत बड़ा। पु० एक प्रसिद्ध राजा।
भगोड़ा—भागा हुआ, भागनेवाला।
भगोल—पु० दे० "खगोल"।
भग्न—टूटा हुआ, पराजित।
भग्नावशेष—पु० टूटे फूटे मकान आदि का बचा हुआ अंश, खंडहर।
भचक्र-पु० राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग, कक्षा, नक्षत्रों का समूह।
भजन—पु० बार बार स्मरण या जप, गुणकीर्तन।
भजना—भजन करना, सेवा करना, आश्रित होना, भाग जाना, पहुँचना।
भजनानंदी—पु० भजन गाकर सदा आनंद रहनेवाला।
भजनी—पु० भजन गानेवाला।
भट—पु० योद्धा, सैनिक। [भेंट।
भटभेरा—भिड़ंत, टक्कर, अनायास
भट्ट—स्त्री० स्त्रियों के संबोधन के लिये एक आदर सूचक शब्द।
भट्ट—पु० भाट, योद्धा, ब्राह्मणों की एक उपाधि।
भट्टी—स्त्री० बड़ा चूल्हा, वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है। [कना।
भड़क—स्त्री० चमक दमक, भड़-
भड़कदार—भड़कीला, रोबदार।
भड़कना—तेजी से जल उठना, झिझकना, चौंकना, क्रुद्ध होना।
भड़ुआ—पु० वेश्याओं की दलाली करनेवाला।
भणना—कहना।
भणित—कहा हुआ।
भत्ता-पु० दैनिक खर्च जो कर्मचारियों को यात्रा के लिये मिलता है।
भद्दा—कुरुप। [मुंडके
भद्र—सभ्य, कल्याणकारी, श्रेष्ठ, साधु पु० महादेव, सुमेरु, सोना। पु०
भद्रकाली—स्त्री० दुर्गा, देवी, कात्यायिनी।
भद्रा—स्त्री० आकाश गंगा, गाय, दुर्गा, पृथ्वी, फलित ज्योतिष के अनुसार एक आरंभ योग, वाधा, भद्र स्त्री।
भद्री—भाग्यवान्। [उड़ती खबर।
भनक—स्त्री० ध्वनि, धीमा स्वर,
भनभनाना—भनभन शब्द करना।
भभकना—उबलना, भड़कना।
भभकी—स्त्री० घुड़की।
भभूत—स्त्री० भस्म।
भयंकर—डरावना।
भय—पु० डर।

भयप्रद —भयानक ।
भयभीत—डरा हुआ ।
भयहारी—भय दूर करने वाला ।
भयानक—डरावना । पु॰ साहित्य में एक रस ।
भयावह—डरावना ।
भरण—पु॰ पोषण ।
भरतखंड—पु॰ भारतवर्ष ।
भरतार—पु॰ पति ।
भरपाई—भलीभाँति । स्त्री॰ चुकती ।
भरपूर—पूरा पूरा ।
भरमना—घूमना, भटकना, धोखा खाना स्त्री॰ भूल, धोखा ।
भरमार—स्त्री॰ अत्यंत अधिकता ।
भरसक—यथाशक्ति ।
भरित —भरा हुआ ।
भरी—स्त्री॰ दस माशे या एक रुपये के बराबर तौल।
भरोसा—पु॰ आसरा, सहारा, आशा, दृढ़ विश्वास ।
भर्ग —पु॰ शिव ।
भर्त्ता—पु॰ अधिपति, मालिक, विष्णु ।
भर्त्तार—पु॰ पति ।
भर्त्सना—स्त्री॰ निंदा, फटकार ।
भलमनसी —स्त्री॰ सज्जनता ।
भला—खैर, "नहीं" सूचक अव्यय । अच्छा बढ़िया । पु॰ कल्याण लाभ ।
भलाई—स्त्री॰ भलापन, उपकार ।
भवंत —आपका ।
भव—उत्पन्न, शुभ पु॰ उत्पत्ति, शिव, मेघ, कुशल, संसार, सत्ता, कामदेव, भय, जन्ममरण का दुःख ।
भवदीय—आपका ।
भवन—पु॰ मकान, संसार ।
भवनी—स्त्री॰ घरनी ।
भवबंधन—पु॰ संसार का बंधन ।
भवभंजन—पु॰ सांसारिक दुःखों को नाश करनेवाले परमेश्वर ।
भवभय—पु॰ संसार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय ।
भवभामिनी—स्त्री॰ पार्वती ।
भवमोचन—पु॰ संसार के बंधनों को छुड़ाने वाले ।
भवविलास—पु॰ माया, सांसारिक सुख ।
भवसंभव—सांसारिक ।
भवानी—स्त्री॰ दुर्गा ।
भवितव्य—पु॰ होनहार ।
भवितव्यता—स्त्री॰ होनहार, भाग्य ।
भविष्य —पु॰ वर्तमान काल के बाद का काल ।
भविष्यत्—पु॰ भविष्य ।
भविष्यवक्ता—पु॰ भविष्यवाणी करने वाला, ज्योतिषी ।
भविष्यद्वाणी—स्त्री॰ भविष्य में होने वाली कही हुई बात ।
भवेश—पु॰ शिव ।
भव्य—सुंदर, शुभ, सत्य, भविष्य में होनेवाला ।
भसना—डूबना, तैरना ।
भसुंड—पु॰ हाथी ।

भस्म—पु० राख। [गया हो।
भस्मीभूत—जो जलकर राख हो
भहराना—टूट पड़ना, एकाएक गिरना।
भाँजना—तह करना, मुगदर आदि घुमाना।
भाँजी—स्त्री० बाधा, चुगली।
भाँड़—पु० विदूषक, मसखरा, नंगा, सत्यानाश, बरतन, भंडाफोड़, उपद्रव।
भांडागार—पु० भंडार, कोश।
भांडागारिक—पु० भंडारी।
भांडार—पु० भंडार, खजाना।
भाँति—स्त्री० तरह।
भाँपना—ताड़ना, देखना।
भाँय भाँय—पु० सन्नाटे का शब्द।
भाँवर—स्त्री० परिक्रमा, विवाह में वर-वधू की अग्नि-परिक्रमा। पु० भौंरा। [किरण, बिजली।
भा—चाहे, वा। स्त्री० दीप्ति, छटा,
भाइप—पु० भाईचारा।
भाईचारा—पु० भाईपन।
भाऊ-पु० भाव, प्रेम, भावना, स्वभाव, हालत, महत्व, स्वरुप, सत्ता, विचार।
भाकर—पु० सूर्य।
भाग-पु० हिस्सा, तरफ, भाग्य, सौभाग्य, ललाट, प्रातःभाग, बाँट।
भागफल—पु० लब्धि।
भागवंत—भाग्यवान्।
भागिनेय—पु० भानजा।
भागी—हिस्सेदार, हकदार।
भागीरथ—दे० "भगीरथ"।
भागीरथी—स्त्री० गंगा।
भाग्य—पु० किस्मत।
भाचक्र—पु० क्रांतिवृत्त।
भाजक—विभाग करने वाला। पु० भाजन अंक।
भाजन—पु० बर्तन, आधार, योग्य।
भाजना—भाजना।
भाजी—स्त्री० तरकारी। [भाज्य अंक।
भाज्य—विभाग करने योग्य। पु०
भाट—पु० चारण, खुशामदी। [उलटा।
भाटा—पु० पानी का उतार, ज्वार का
भाड़—पु० अनाज भूँजने का चुल्हा। मु० भाड़ झोंकना = तुच्छ काम करना। समय वर्बाद करना। भाड़ में झोंकना = नष्ट करना।
भाड़ा—पु० किराया। मुहा० भाड़े का टट्टू = निकम्मा।
भाति—स्त्री० शोभा।
भाथा—पु० तरकश।
भाथी—स्त्री० धौंकनी।
भाद्र, भाद्रपद—पु० भादो।
भान—पु० प्रकाश, चमक, ज्ञान, आभास। [पुत्र।
भानजा—पु० भगना, बहन का
भानमती—स्त्री० जादूगरनी।
भानवी—स्त्री० यमुना। [शोभा देना।
भाना—जान पड़ना, अच्छा लगना,
भानु—पु० सूर्य्य, विष्णु, किरण, राजा।

भानुजा—स्त्री० यमुना।
भानुतनया—स्त्री० यमुना। कर्ण।
भानुसुत—पु० यम, मनु, शनिश्चर,
भानुसुता—स्त्री० यमुना।
भाभी—स्त्री० भौजाई।
भामा, भामिनी—स्त्री० स्त्री।
भारत—पु० महाभारत का पूर्वरूप, भारतवर्ष, लंबी कथा, घोर युद्ध।
भारतखंड—पु० भारतवर्ष।
भारती—स्त्री० वाणी, सरस्वती, ब्राह्मी।
भारतीय—भारत संबंधी। पु० भारत वासी।
भारथी—पु० सैनिक।
भारबाहक—बोझ ढोने वाला।
भार्य्या—स्त्री० पत्नी।
भाल—पु० कपाल।
भालचंद्र—पु० शिव, गणेश।
भाललोचन—पु० शिव।
भाला—पु० बरछा।
भालुक—पु० भालू।
भाव—पु० अस्तित्व, विचार, अभिप्राय, मुख की आकृति या चेष्टा, आत्मा। जन्म, चित्त, पदार्थ, चीज, प्रेम, कल्पना, स्वभाव, ढँग, प्रकार, दशा, भावना, विश्वास, आदर, दर, भक्ति, विकार, नखरा।
भावक—थोड़ासा। भावपूर्ण। भावना करने वाला, भाव संयुक्त, भक्त।
भावगम्य—भक्ति भाव से जानने योग्य।
भावज—स्त्री० भौजाई।
भावता—प्रिय। पु० प्रेमपात्र।
भावना—प्रिय लगने वाला।
भावना—अच्छा लगना। प्यारा। स्त्री० ध्यान, इच्छा, कल्पना।
भावनीय—भावना करने योग्य।
भावली—स्त्री० जमींदार और असामी के बीच उपज की बटाई।
भावार्थ—पु० वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय, अभिप्राय।
भावी—स्त्री० आने वाला समय, भवितव्यता, भाग्य।
भावुक—भावना वाला, अच्छी बातें सोचनेवाला, जिस पर कोमल भावों का शीघ्र प्रभाव पड़ता हो।
भाषण—पु० कथन, व्याख्यान।
भाषांतर—पु० अनुवाद।
भाषा—स्त्री० जबान, बोली, वाणी।
भाषित—कथित।
भाषी—बोलने वाला।
भाष्य—पु० सूत्र की की हुई व्याख्या।
भास—पु० प्रकाश, चमक, किरण, इच्छा। [देख पड़ना, फँसना, कहना।
भासना—चमकना, मालूम होना,
भास्कर—पु० सोना, सूर्य्य, अग्नि, वीर, शिव।
भास्वर—चमकदार। पु० दिन, सूर्य्य।
भिक्षा—स्त्री० भीख।
भिक्षुक—पु० भिखारी, सन्यासी, बौद्ध

संन्यासी ।
भिक्षुक—पु० भिखमंगा ।
भिखारी—पु० भिखमंगा ।
भिगोना, भिजाना—भिगाना ।
भिज्ञ—जानकार ।
भित्ति—स्त्री० दीवार, भय, वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय ।
भिद—पु० भेद, अंतर । [होना ।
भिदना—घुस जाना, छेदा जाना, घायल
भिदुर—पु० वज्र ।
भिनसार—पु० सबेरा ।
भिन्न—अलग, दूसरा । पु० वह संख्या जो एकाई से कुछ कम हो ।
भिश्ती—पु० मशक द्वारा पानी ढोने वाला व्यक्ति ।
भिषग्—पु० वैद्य ।
भींजना—भीगना, गद्‌गद होना, नहाना, समा जाना, मेलमिलाप पैदा करना । [भय ।
भी—अवश्य, अधिक, तक । स्त्री०
भीख—स्त्री० भिक्षा ।
भीटा—पु० ऊँची जमीन ।
भीड़—स्त्री० जनसमूह, संकट ।
भीत—डरा हुआ । स्त्री० दीवार, चटाई, छत । [खाना ।
भीतर—अंदर । पु० हृदय, जनान-
भीति—स्त्री० डर ।
भीम—भयानक, बहुत बड़ा । पु० भयानक रस, शिव, विष्णु ।
भीर—भयभीत, कायर । स्त्री० भीड़, कष्ट, विपत्ति ।
भीरु—डरपोक, कायर । [रस ।
भीषण—भयानक, उग्र । पु० भयानक
भीष्म—भयंकर । पु० भयानक रस, शिव, राक्षस ।
भुक्खड़—भूखा, पेटू, कंगाल ।
भुक्त—भक्षित, भोगा हुआ ।[कब्जा ।
भुक्ति—स्त्री० भोजन, लौकिक सुख ।
भुगतना—भोजन, पूरा होना, चुकना ।
भुगतान—पु० निपटारा, बेबाकी, देन ।
भुजंग—पु० साँप ।
भुजंगी—स्त्री० साँपिन ।
भुज—पु० बाहु, हाथ, हाथी का सूँड़, शाखा, किनारा, रेखा ।
भुजग—पु० साँप ।
भुजदंड—पु० बाहुदंड ।
भुजपाश—पु० गलबाँही ।
भुजबंद—पु० बाजूबंद ।
भुजमूल—पु० काँख ।
भुजा—स्त्री० हाथ ।
भुनगा—पु० पतिंगा ।
भुवि—स्त्री० पृथ्वी ।
भुरकुस—पु० चूर्ण ।
भुलावा—पु० धोखा ।
भुवः—पु० अंतरिक्ष लोक ।
भुव—पु० अग्नि । स्त्री० पृथ्वी, भौंह ।
भुवन—पु० जगत्, जल, लोग, लोक, सृष्टि, चौदह की संख्या ।

भुवनकोश—पु० भूमंडल, ब्रह्मांड ।
भुवनपति—पु० भूपति ।
भुवाल—पु० राजा ।
भुवि—स्त्री० पृथ्वी ।
भू—स्त्री० पृथ्वी, स्थान, भौंह ।
भूकंप—पु० पृथ्वी का काँपना ।
भूख—स्त्री० खाने की इच्छा, कामना, चाह, जरूरत । [विष्णु ।
भूगर्भ—पु० पृथ्वी का भीतरी भाग,
भूगोल—पु० पृथ्वी, वह ग्रंथ या शास्त्र जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक विभागों का वर्णन हो ।
भूचर—पु० पृथ्वी पर रहनेवाला प्राणी, शिव ।
भूचाल—भूडोल । पु० भूकंप ।
भूत—बीता हुआ, मिला हुआ, समान । पु० वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि की रचना हुई है, सृष्टि का कोई चर या अचर प्राणी, जीव, सत्य, बीता हुआ समय, शव, मृत प्राणी की आत्मा, प्रेत ।
भूतत्वविद्या—स्त्री० भूगर्भशास्त्र ।
भूतनाथ—पु० शिव ।
भूतपूर्व—वर्तमान से पहले का ।
भूतभावन—पु० शिव ।
भूत भाषा—स्त्री० पैशाची भाषा ।
भूतल—पु० पृथ्वी का ऊपरी तल, संसार, पाताल ।
भूतात्मा—पु० परमेश्वर, शिव, जीवात्मा ।
भूति—स्त्री० वैभव, भस्म, उत्पत्ति, वृद्धि, अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ ।
भूतिनी—स्त्री० भूतयोनि प्राप्त स्त्री, डाकिनी ।
भूतेश्वर—पु० शिव ।
भूदेव—पु० ब्राह्मण । [राजा ।
भूधर—पु० पहाड़, शेषनाग, विष्णु,
भूप, भूपति—पु० राजा ।
भूपाल—पु० राजा ।
भूमंडल—पु० पृथ्वी । [देश, क्षेत्र ।
भूमि—स्त्री० पृथ्वी, स्थान, आधार,
भूमिका—स्त्री० रचना, भेस बदलना, प्रस्तावना, पृथ्वी ।
भूमिज—भूमि से उत्पन्न ।
भूमिजा—स्त्री० सीताजी ।
भूमिसुत—पु० मंगल ग्रह ।
भूमिसुता—स्त्री० सीताजी ।
भूय—फिर, पुनः । [चीनी ।
भूरा—खाकी । पु० खाकी रंग, कच्ची
भूरि—अधिक, भारी । पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इंद्र, सोना ।
भूरितेज—पु० अग्नि, सोना ।
भूर्जपत्र—पु० भोजपत्र ।
भूल—स्त्री० भूलने का भाव, गलती कसूर, अशुद्धि ।
भूलना—याद न रहना, गलती होना, लुभाना, इतराना, खो जाना ।
भूलभुलैया—पु० घुमाव-फिराव ।
भूलोक—पु० संसार ।

भूशायी—जमीन पर सोने वाला, जमीन पर गिरा हुआ, मृतक ।
भूषण—पु० गहना । [क्रिया ।
भूषा—स्त्री० गहना, साज श्रृंगार की
भूषित—अलंकृत, सजाया हुआ ।
भूसुता—स्त्री० सीताजी ।
भूसुर—पु० ब्राह्मण ।
भृंग—पु० भौंरा । [स्त्री० भौंरी ।
भृंगी—पु० शिवजी का एक गण ।
भृकुटी—स्त्री० भौंह ।
भृगुनाथ—पु० परशुराम ।
भृगुरेखा—स्त्री० विष्णु की छाती पर भृगु के लात मारने का चिन्ह ।
भृत—भरा हुआ, पाला हुआ । पु० दास, नौकर ।
भृति—स्त्री० नौकरी, मजदूरी, वेतन, मूल्य, भरना, पालन करना ।
भृत्य—पु० नौकर ।
भृश—बहुत ।
भेंट—स्त्री० मुलाकात, उपहार ।
भेक—पु० मेढ़क ।
भेड़—स्त्री० बकरी की जाति का एक चौपाया । मुहा० भेड़िया धसान = देखादेखी कोई काम करना ।
भेद—पु० भेदने या छेदने की क्रिया, फूट, रहस्य, मर्म, फर्क, प्रकार ।
भेद भाव—पु० फरक, अंतर ।
भेदिया—पु० जासूस, भेद या गुप्त बात जानने वाला ।
भेद्य—जो भेदा या छेदा जा सके ।
भेरी—स्त्री० नगाड़ा ।
भेव—पु० भेद ।
भेष—पु० वेष ।
भेषज—पु० औषध ।
भेस—पु० वेष । [क्रिया ।
भैक्ष वृत्ति—स्त्री० भिक्षा माँगने की
भैरव—भयानक, भीषण शब्द वाला । पु० शिव, शिव के एक गण, भयानक रस, भयानक शब्द ।
भैरवीचक्र—पु० तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ खास समयों में देवी की पूजा के लिये इकट्ठा होता है ।
भोंदू—बेवकूफ । [फूँक कर बजाते हैं ।
भोंपू—पु० एक प्रकार का बाजा जिसे
भोक्ता—भोजन करनेवाला, ऐयाश ।
भोग—पु० सुख दुःख आदि का अनुभव करना, सुख, दुःख, स्त्री संयोग, धन, पालन, भक्षण, देह, प्रारब्ध, फल, नैवेद्य, सूर्य्य आदि ग्रहों के के राशियों में रहने का फल ।
भोगना—सुख दुख आदि का अनुभव करना, सहन करना ।
भोगविलास—पु० आमोद प्रमोद, सुख चैन । [आनंद करने वाला ।
भोगी—भोगनेवाला, सुखी, इंद्रियों का सुख चाहने वाला, विषयासक्त,
भोग्य—भोगने योग्य ।

भोजपत्र—पु० एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ आदि लिखने के काम आती थी।
भोजविद्या—स्त्री० इंद्रजाल।
भोजी—खानेवाला।
भोज्य—खाने योग्य। पु० खाद्य पदार्थ।
भोर—चकित, भोला। पु० सबेरा, भ्रम।
भोला—सीधा सादा, मूर्ख।
भोलानाथ—पु० शिव।
भौं—स्त्री० भौंह।
भौंर—पु० भौंरा, पानी का चक्र।
भौंह—स्त्री० भौं। मुहा० भौंह या भौं चढ़ना = क्रुद्ध होना, भौंह या भौं जोहना = खुशामद करना।
भौगोलिक—भूगोल का।
भौचक—हक्का बक्का।
भौतिक—पंचभूत संबंधी, पार्थिव, शरीर संबंधी, भूतयोनि का।
भौम—भूमिका, भूमि से उत्पन्न। पु० मंगल ग्रह।
भौमवार—पु० मंगलवार।
भौमिक—भूमि का। पु० जमींदार।
भ्रंश—भ्रष्ट। पु० अधः पतन, नाश, भागना।
भ्रकुटि—स्त्री० भौंह। [प्रतिष्ठा।
भ्रम—पु० धोखा, संदेह, भ्रमण, मूर्च्छा,
भ्रमण—पु० घूमना-फिरना, आना-जाना, यात्रा, चक्कर।
भ्रममूलक—भ्रम के कारण उत्पन्न।
भ्रमर—पु० भौंरा।
भ्रमरगीत—पु० वह गीत या काव्य जिसमें उद्धव के प्रति व्रज की गोपियों का उपालंभ हो।
भ्रमात्मक—संदिग्ध।
भ्रमाना—घुमाना, बहकाना।
भ्रष्ट—पतित, बिगड़ा हुआ, दूषित, बदचलन।
भ्रष्टा—स्त्री० कुलटा। [घुमाया हुआ।
भ्रांत—भूला हुआ, व्याकुल, उन्मत्त।
भ्रांति—स्त्री० भ्रम संदेह, भ्रमण, पागलपन, मोह।
भ्राता—पु० भाई। [वाला।
भ्रामक—भ्रम में डालने वाला, घुमाने
भ्रू—स्त्री० भौं। [बालक।
भ्रूण—पु० स्त्री का गर्भ, गर्भस्थ
भ्रूभंग—पु० त्यौरी चढ़ाना।

म

म—एक अक्षर। पु० शिव, चंद्रमा, ब्रह्मा, यम, मधुसूदन।
मंगन—पु० भिक्षुक।
मंगल—पु० अभीष्ट सिद्धि, कल्याण, मंगलवार, एक ग्रह।
मंगला—स्त्री० पार्वती।
मंगलाचरण—पु० शुभ कार्य के आरम्भ में मंगल-कामना से पढ़ाया-

लिखाया गया पद्य ।

मंगलामुखी—स्त्री० गाने वाली, मंगल मनाने वाली, वेश्या ।

मंच, मंचक—पु० मचान, उच्चासन, खाट, छोटी पीढ़ी । [स्नान ।

मंजन—पु० दाँत साफ करने का चूर्ण,

मंजरी—स्त्री० कोंपल, लता, बौर या मोर ।

मंजार—स्त्री० बिल्ली ।

मंजिल—स्त्री० पड़ाव, मकान का खंड, दूर का स्थान ।

मंजीर—पु० नूपुर ।

मंजु, मंजुल—सुंदर ।

मंजूर—स्वीकृत ।

मंजूरी—स्त्री० स्वीकृति ।

मंजूषा—स्त्री० पिटारी, पिंजड़ा ।

मँझार—बीच में ।

मंडन—पु० सजाना, प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना ।

मंडप—पु० विश्राम-स्थान, बारहदरी, किसी उत्सव के लिये ऊपर फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान, मँड़वा, चँदोवा, देवमंदिर के ऊपर का गोल हिस्सा ।

मंडराना—किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना, परिक्रमा करना, किसी के आसपास ही घूम फिर कर रहना ।

मंडल—पु० परिधि, गोल फैलाव, घेरा, क्षितिज, समूह, कक्षा, ऋग्वेद का एक खंड, बारह राज्यों का समूह ।

मंडली—स्त्री० समूह । [पति ।

मंडलीक, मंडलेश्वर—पु० एक मंडज अर्थात् बारह राज्यों का अधि-

मंडित—सजाया हुआ, छाया हुआ भरा हुआ ।

मंडी—स्त्री० बड़ा हाट, बड़ा बाजार ।

मंडूक—पु० मेंढक ।

मंत—पु० मन्त्र, सलाह ।

मंतव्य—पु० विचार ।

मंत्र—पु० सलाह, गायत्री आदि वैदिक शब्द, संहिता के शब्द या वाक्य जिनके जाप से कामनाओं का सिद्ध होना माना जाता है ।

मंत्रकार—पु० मंत्र रचने वाला ऋषि ।

मंत्रणा—स्त्री० सलाह, मशवरा ।

मंत्रित—मंत्र द्वारा संस्कार किया हुआ ।

मंत्री—पु० सलाहकार, सचिव ।

मंथ—पु० मथना, हिलाना, मलना, मारना, मथानी । [का पता लगाना ।

मंथन—पु० मथना, खूब डूब कर तत्त्वों

मंथर—मंद, सुस्त, मंद बुद्धि, भारी, नीच । पुं० मथानी । [दुष्ट ।

मंद—सुस्त, शिथिल, आलसी, मूर्ख

मंदभाग्य—अभाग्य । [दर्पण ।

मंदर—मंद । पु० एक पर्वत, स्वर्ग,

मंदा—मंद, शिथिल, सस्ता, खराब ।

मंदाकिनी—स्त्री० स्वर्ग की गंगा,

आकाश गंगा, चित्रकूट के पास एक नदी ।
मंदाग्नि — स्त्री० बदहजमी ।
मंदार — पु० स्वर्ग का एक देव-वृक्ष, आक, स्वर्ग, हाथी, मंदराचल ।
मंदिर — पु० घर, देवालय, नगर ।
मंदी — स्त्री० सस्ती । [गंभीर ध्वनि ।
मंद्र — सुंदर, प्रसन्न, गंभीर, धीमा । पु०
मंशा — स्त्री० इच्छा, मतलब । [कार ।
मंसब — पु० पद, पदवी, काम, अधि-
मंसूख — खारिज किया हुआ ।
मकतब — पु० पाठशाला, मदरसा ।
मकदूर — पु० सामर्थ्य, ताकत ।
मकफूल — रेहन किया हुआ ।
मकबरा — पु० वह इमारत जिसमें किसी की लाश गड़ी हो, रौजा ।
मकरंद — पु० फूलों का रस ।
मकर — पु० घड़ियाल, एक राशि, माघ मास, मछली, कपट, नखरा ।
मकरध्वज - पु० कामदेव, एक ओषधि ।
मकर संक्रांति — स्त्री० वह समय जब कि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है ।
मकराकृत — मछली के आकारवाला ।
मकसद — पु० उद्देश्य, मनोरथ, मतलब ।
मकान — पु० घर । [न हों ।
मकुना — वह नर हाथी जिसके दाँत
मक्कर - पु० छल, धोखा, नखरा । [नगर ।
मक्का - पु० मकई, अरब का एक प्रसिद्ध
मक्कार — फरेबी, कपटी ।
मक्कारी — स्त्री० धोखेबाजी ।
मक्खी — स्त्री० एक कीड़ा । मुहा० जीती मक्खी निगलना = जान बूझ कर कोई ऐसा बुरा काम करना जिसके कारण पीछे हानि हो । मक्खी मारना = बिलकुल निकम्मा रहना ।
मक्खी चूस — पु० भारी कंजूस ।
मक्षिका — स्त्री० मक्खी ।
मख — पु० यज्ञ ।
मखतूल — पु० काला रेशम ।
मखमल - स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा ।
मखशाला — स्त्री० यज्ञशाला ।
मखौल — पु० हँसी ।
मग — पु० रास्ता, राह ।
मगज — पु० दिमाग, गूदा । मुहा० मगज चाटना = बक कर तंग करना । मगज खाली करना = बहुत दिमाग लड़ाना । [लड़ाना ।
मगजपच्ची — स्त्री० बहुत दिमाग
मगन — डूबा हुआ, प्रसन्न, लीन ।
मगर — परंतु । पु० घड़ियाल, मछली ।
मगरिब — पश्चिम ।
मगरूर — घमंडी ।
मगरूरी — स्त्री० घमंड ।
मग्ज — पु० दिमाग, गूदा ।
मग्न — डूबा हुआ, लीन, प्रसन्न, जल आदि में चूर ।

मघवा—पु० इंद्र।

मघवाप्रस्थ—पु० इंद्रप्रस्थ, नगर।

मघोनी—स्त्री० इंद्राणी।

मचलना—हठ करना, जिद करना।

मचली—स्त्री० ओकाई।

मचिया—स्त्री० छोटी चारपाई।

मच्छ—पु० बड़ी मछली।

मजकूर—उक्त, कथित।

मजनूँ—पु० पागल, आशिक, अरब का एक प्रसिद्ध आशिक।

मजबूत—पक्का, बलवान्।

मजबूर—विवश, लाचार।

मजबूरी—स्त्री० लाचारी।

मजमा—पु० भीड़, जमघट।

मज़मून—पु० विषय, लेख।

मजरूआ—जोता बोया हुआ खेत।

मजलिस—स्त्री० सभा, महफिल।

मजहब—पु० धार्मिक संप्रदाय।

मजा—पु० स्वाद, आनंद, हँसी।

मजाक—पु० हँसी।

मजाकिया—मजाक से। मजाक कर-ने वाला।

मज़ाज—पु० गर्व, स्वभाव, तबियत।

मजार—पु० मकबरा, कब्र।

मजारी—स्त्री० बिल्ली।

मजाल—स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य।

मजिस्ट्रेट—पु० फौजदारी अदालत का अफसर।

मजीठी—मजीठ के रंग का, लाल।

मज़ूर—पु० मजदूर, कुली।

मजूरी—स्त्री० मजदूर की कमाई।

मजेदार—स्वादिष्ट, बढ़िया, जिसमें आनंद आता हो।

मज्जन—पु० स्नान।

मज्जा—स्त्री० नली की हड्डी के भीतर का गूदा।

मझधार—स्त्री० मध्य धारा।

मटकना—लचक कर नखरे से चलना, लौटना, हिलना।

मटका—पु० मिट्टी का बड़ा घड़ा।

मटमैला—खाकी।

मटरगश्त—सैर सपाटा।

मटुकी—स्त्री० छोटा मटका।

मठ—पु० निवास स्थान, साधुओं का निवास स्थान।

मठधारी, मठाधीश—पु० वह साधु जिसके अधिकार में कोई मठ हो।

मड़ाई—स्त्री० कुटिया।

मढ़ना—चारो ओर से लेपना, बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना, किसी के गले लगाना।

मढ़ी—स्त्री० छोटा मठ, कुटी, छोटा घर।

मणि—पु० जवाहिर, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

मणिधर—पु० साँप।

मणिबंध—पु० कलाई।

मणी—पु० साँप।

मतँग—पु० हाथी, बादल।

मतंगी—पु० हाथी का सवार।

मत—नहीं। पु० सम्मति, राय, मज-हब, संप्रदाय, आशय।

मतलब—पु० अभिप्राय, अर्थ, स्वार्थ, उद्देश्य, संबंध।
मतलबी—स्वार्थी।
मतली—स्त्री० मिचली।
मतवाला—मदमस्त, पागल। [कार।
मताधिकार—पु० वोट देने का अधि-
मति—समान। स्त्री० बुद्धि, सलाह।
मतिमान्—बुद्धिमान्, अक्लमंद।
मत्त—मस्त, मतवाला, पागल, प्रसन्न।
मत्सर—पु० डाह, क्रोध।
मत्सरता—स्त्री० डाह।
मत्स्य—पु० मछली। [या डंडा।
मथानी—स्त्री० दही मथने का बरतन
मद—मतवाला, मस्त। पु० हर्ष, वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है, वीर्य, कस्तूरी, मध्य, नशा, उन्मत्तता, अहंकार। स्त्री० विभाग, खाता।
मदक—पु० एक प्रकार का मादक द्रव्य जो अफीम के सत से बनता है और चिलम पर रख कर पीया जाता है।
मदकची—मदक पीनेवाला।
मदकल—मतवाला।
मदद—स्त्री० सहायता।
मददगार—सहायक।
मदन—पु० कामदेव, कामक्रीड़ा, प्रेम, भ्रमर, मैना पक्षी।
मदनकदन—पु० शिव।
मदनगोपाल—पु० श्रीकृष्ण।
मदन महोत्सव—पु० प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होता था।
मदनमोहन—पु० श्रीकृष्ण।
मदनोत्सव—पु० मदन महोत्सव।
मदमत्त—मतवाला।
मदरसा—पु० पाठशाला।
मदांध—मदमत्त।
मदार—पु० आक। [बाजीगर।
मदारी—पु० बंदर भालू नचानेवाला,
मदिरा—स्त्री० शराब।
मदीय—मेरा।
मदोन्मत्त—मद में भरा हुआ।
मद्धे—बीच में, संबंध में, बाबत।
मद्य—पु० शराब।
मद्यप—शराबी।
मधु—मीठा, स्वादिष्ट। पु० जल, शहद, मदिरा, मकरंद, वसंत ऋतु, चैत्र मास, शिव, अमृत।
मधुकर—पु० भौंरा।
मधुकरी—स्त्री० वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो।
मधुचक्र—पु० मधुमक्खी का छाता।
मधुजा—स्त्री० पृथ्वी।
मधुप—पु० भौंरा, उद्धव।
मधुपति—पु० श्रीकृष्ण।
मधुपर्क—पु० दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं

को चढ़ाया जाता है।
मधुपुरी--स्त्री० मथुरा नगरी।
मधुपुष्प—पु० महुआ।
मधुप्रमेह—पु० दे० "मधुमेह"।
मधुमक्षिका—स्त्री० मधुमक्खी।
मधुमालती—स्त्री० मालती लता।
मधुमास--पु० चैत्र मास।
मधुमेह—पु० प्रमेह का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा होता है।
मधुर--मीठा, सुंदर, जो सुनने में अच्छा जान पड़े, जो क्लेशप्रद न हो।
मधुरता—स्त्री० मधुर होने का भाव, मीठापन, सुंदरता, सुकुमारता।
मधुराज—पु० भौंरा।
मधुरान्न--पु० मिठाई।
मधुरिमा—स्त्री० मीठापन, सुंदरता।
मधुरी—स्त्री० मीठी, रसीली।
मधुवन—पु० व्रज का एक वन।
मधुवामन—पु० भौंरा।
मधुव्रत—पु० भौंरा। [चीनी।
मधुशर्करा—स्त्री० शहद से बनी हुई
मधुसख—पु० कामदेव।
मधुसूदन—पु० श्रीकृष्ण।
मधूकरी-दे० "मधुकरी"। [अंतर, भेद।
मध्य—पु० बीच का भाग, कमर,
मध्यदेश—पु० हिमालय से दक्षिण, विंध्याचल से उत्तर, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पच्छिम का भू-भाग।

मध्यम—बीच का। [उँगली।
मध्यमा--बीच की। स्त्री० बीच की
मध्यवर्ती—बीच का। [तटस्थ।
मध्यस्थ—पु० बीच में पड़नेवाला,
मध्याह्न—पु० दोपहर।
मन—पु० चित्त, अंतःकरण, इच्छा, विचार। मु० मन अटकना = प्रेम होना। मन टूटना = हताश होना। मन हरा होना = चित्त प्रसन्न होना। मन के लड्डू खाना = व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन मोटा होना = मन उदास होना। मनमाना = अपने मन के अनुसार।
मनका--पु० माला का दाना, माला।
मनकामना--स्त्री० इच्छा।
मनकूला--अस्थिर, चल। [संपत्ति।
मनकूला जायदाद—स्त्री० चल
मनगढंत—कपोल कल्पित। स्त्री० कपोल कल्पना।
मनचला—निडर, साहसी, रसिक।
मनचाहा—इच्छित।
मनचीता—मनचाहा, मनभाया।
मनजात—पु० कामदेव। [यन।
मनन—पु० चिंतन, भली भाँति अध्य-
मननशील—विचारशील।
मनभावता—प्रिय, प्यारा।
मनभावन--मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमति—स्वेच्छाचारी।
मनमथ--दे० "मन्मथ"।

मनमुटाव—पु० वैमनस्य ।
मनमोदक—पु० मन का लड्डू ।
मनमोहन--चित्ताकर्षक, प्रिय । पु० श्रीकृष्ण ।
मनरोचन—सुंदर ।
मनशा —दे० "मंशा" ।
मनसब—पु० दे० "मंसब" ।
मनसबदार--पु० ओहदेदार ।
मनसा—मन का, मन से उत्पन्न । मन से । स्त्री० कामना, इच्छा, इरादा, मन, बुद्धि, अभिप्राय ।
मनसाना—उमंग में आना ।
मनसिज—पु० कामदेव ।
मनसूख—परित्यक्त, अप्रामाणिक ठहराया हुआ ।
मनसूबा--पु० युक्ति, ढंग, इरादा ।
मनस्क--पु० 'मन' का अल्पार्थक रूप ।
मनस्ताप—पु० मन की पीड़ा, पश्चाताप ।
मनस्वी—बुद्धिमान्, स्वेच्छाचारी ।
मनहरण-मनोहर, मन को हरनेवाला ।
मनहुँ—जैसे, यथा ।
मनहूस--अशुभ, अप्रिय दर्शन ।
मना—निषिद्ध, वर्जित, अनुचित ।
मनाक्--थोड़ा ।
मनाना—राजी करना, रूठे हुए को प्रसन्न करना, प्रार्थना करना ।
मनाही—स्त्री० निषेध, रोक ।
मनिया—स्त्री० दे० "मनका" ।
मनिहार—पु० चुड़िहारा ।
मनी—स्त्री० वीर्य, धन ।
मनीआडर—पु० हुंडी जो डाक द्वारा भेजी जाती है ।
मनीबैग—पु० रुपये पैसे रखने का छोटा थैला ।
मनीषा—स्त्री० बुद्धि, अक्ल ।
मनीषि--पंडित, बुद्धिमान, अक्लमंद ।
मनु—मानो, जैसे । पु० ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं, विष्णु, मन ।
मनुज, मनुष्य—पु० आदमी, नर ।
मनुष्यता—स्त्री० आदमियत, शिष्टता ।
मनुहार--स्त्री० मनावन, खुशामद, विनय, सत्कार, तृप्ति ।
मनोकामना—स्त्री० इच्छा ।
मनोगत—दिली । पु० कामदेव ।
मनोज—पु० कामदेव । वायुपुत्र ।
मनोजव-अत्यंत वेगवान् । पु० विष्णु,
मनोज्ञ--मनोहर, सुन्दर ।
मनोदेवता—पु० विवेक ।
मनोनिग्रह—पु० मन को वश में करना ।
मनोनीत—पसंद, चुना हुआ ।
मनोभव--पु० कामदेव ।
मनोभूत—पु० चंद्रमा ।
मनोयोग—पु० मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना ।
मनोरंजक—चित्त को प्रसन्न करनेवाला ।
मनोरंजन—पु० दिल बहलाव ।
मनोरथ—पु० अभिलाषा ।

मनोरम—सुंदर।
मनोराज—पु० मानसिक कल्पना।
मनोवांछित—इच्छित।
मनोविज्ञान—पु० वह शास्त्र जिसमें चित्तकी वृत्तियों का विवेचन होता है। [मनोविकार।
मनोवृत्ति—स्त्री० मन का झुकाव,
मनोहर, मनोहारी—सुंदर।
मन्नत—स्त्री० मनौती।
मफलर—पु० गलेबंद।
मम—मेरा। [स्नेह, मोह।
ममता स्त्री० ममत्व, अपनापन,
ममत्व—पु० ममता।
मयंक—पु० चंद्रमा।
मयंद—पु० सिंह।
मय—एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।
मयगल—पु० मस्त हाथी।
मयन—पु० कामदेव।
मयस्सर—उपलब्ध, प्राप्त।
मयूख—पु० किरण, प्रकाश, ज्वाला।
मयूर—पु० मोर।
मरंद—पु० मकरंद।
मरकत—पु० पन्ना रत्न।
मरगजा—मसला हुआ।
मरघट—पु० श्मशान।
मरज—पु० रोग, बुरी लत।
मरजिया—मरणासन्न, अधमरा, मरने पर उतारू, मरकर जीनेवाला, समुद्र से मोती निकालनेवाला।
मरजी—स्त्री० इच्छा, खुशी, आज्ञा।
मरण—पु० मृत्यु।
मरतबा—पु० पद, पदवी, बार, दफा।
मरदानगी—स्त्री० वीरता, साहस।
मरदाना—पुरुष संबंधी, वीरोचित।
मरदूद—तिरस्कृत, नीच।
मरभुक्खा—भुक्खड़, कंगाल।
मरमर—पु० एक प्रकार का चीकना और चमकीला पत्थर।
मरम्मत—स्त्री० दुरुस्ती।
मरसिया—पु० उर्दू भाषा में शोक-सूचक कविता जो किसी की मृत्यु पर बनायी जाती है, मृत्यु-शोक।
मरहम—पु० घावों पर लगाने का औषधियों का गाढ़ा और चिकना लेप।
मरहून—जो रेहन किया गया हो।
मरहूम—मृत, स्वर्गीय।
मरातिब—दरजा, पद, पृष्ठ, तह, मकान का खंड, झंडा, उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ।
मराल पु० हंस, हाथी, घोड़ा, बत्तख
मरी—स्त्री० महामारी। [ष्णा।
मरीचि—स्त्री० किरण, प्रभा, मृगतृ-
मरीचिका—स्त्री० मृगतृष्णा, किरण।
मरीची—पु० सूर्य, चंद्र।
मरीज—रोगी।
मरुत्—पु० वायु, प्राण।

मरुद्वीप—पु० मरुस्थल में उपजाऊ और हरा-भरा स्थान ।

मरुधर—पु० मारवाड़ देश ।

मरुभूमि—पु० रेगिस्तान, बालू का निर्जल मैदान ।

मरुस्थल—पु० मरुभूमि ।

मरोड़—पु० घुमाव, ऐंठन, व्यथा, पेट की पीड़ा, घमंड, क्रोध ।

मर्कट—पु० बंदर, मकड़ा ।

मर्जी-स्त्री० इच्छा, स्वीकृति, आज्ञा ।

मर्तवा—पु० दे० "मरतवा" ।

मर्तबान—एक प्रकार का बर्तन जिसमें अचार मुरब्बा आदि रक्खा जाता है ।

मर्त्य—पु० मनुष्य, भूलोक, शरीर ।

मर्त्यलोक—पु० पृथ्वी । [पुरुष, पति ।

मर्द—पु० मनुष्य, साहसी पुरुष, वीर

मर्दना मलना, नाश करना, कुचलना ।

मर्दुम-पु० मनुष्य । [आबादी ।

मर्दुमशुमारी—स्त्री० मनुष्य गणना,

मर्दुमी—स्त्री० मरदानगी ।

मर्दन—नाशक । पु० कुचलना, मलना, पीसना, नाश ।

मर्दित—मर्दन किया गया ।

मर्म—पु० रहस्य, भेद, स्वरूप, संधि स्थान, प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है ।

मर्मज्ञ—मर्म जाननेवाला ।

मर्मभेदी—आंतरिक कष्ट देनेवाला ।

मर्म वचन-पु० वह बात जिससे सुनने वाले को आंतरिक कष्ट हो ।

मर्म वाक्य—पु० भेद की बात ।

मर्मविद्—मर्म्मज्ञ ।

मर्मांतक—मन में चुभनेवाल

मर्मी—मर्मज्ञ ।

मर्य्यादा-स्त्री०सीमा, किनारा, प्रतिज्ञा, नियम, सदाचार, प्रतिष्ठा, धर्म्म ।

मल—पु० मैल, विष्टा, विकार, पाप, ऐब ।

मलका—स्त्री० महारानी ।

मलद्वार—पु० गुदा ।

मलमास—अधिक मास ।

मलय—पु० पश्चिमी घाट का वह हिस्सा जो ट्रावंकोर के पूरब और मैसूर के दक्षिण में है, मलाबार देश, मलाबार वासी, सफेद चंदन, नंदन वन ।

मलयगिरि—पु० दक्षिण का एक पर्वत, मलयागिरि में उत्पन्न चंदन ।

मलयज—पु० चंदन ।

मलयाचल—पु० मलयगिरि ।

मलयानिल—पु० मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु, सुगंधित वायु, वसंतकाल की वायु ।

मलयुग—पु० कलियुग ।

मलहम—पु० मरहम, घाव आदि पर लगाने का लेप । [गदेली ।

मलामत—स्त्री० लानत, फटकार,

मलाल—पु० दुःख, उदासी।
मलिंद—पु० भौंरा।
मलिक—पु० राजा, अधीश्वर।
मलिका—स्त्री० रानी, अधिश्वरी।
मलिन—मैला, खराब, बदरंग, पापी, फीका, उदासीन।
मलीदा—पु० चूरमा, एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।
मलेरिया—पु० एक प्रकार का ज्वर।
मलोला—पु० दुःख, अरमान।
मल्ल—पु० पहलवान्, दीप शिखा।
मल्लभूमि—स्त्री० अखाड़ा।
मल्लविद्या—स्त्री० कुश्ती की विद्या।
मल्लशाला—स्त्री० मल्लभूमि।
मल्लाह—पु० धीवर, मांझी।
मल्लिका—स्त्री० एक फूल।
मल्लू—पु० बंदर। [असामी।
मवक्किल—मुकदमे के लिये कचहरी में काम करने को अपनी ओर से वकील मुकर्रर करने वाला व्यक्ति,
मवाजिब—पु० नियमित समय पर नियत मात्रा में मिलनेवला पदार्थ।
मवाजी—अनुमान किया हुआ।
मवाद—पु० पीव।
मवास—पु० आश्रय, किला।
मवासी—स्त्री० छोटा गढ़। पु० गढ़-पति, मुखिया।
मवेशी—पु० पशु।
मशक—पु० मच्छड़, पानी ढोने का चमड़े का थैला।
मशक्कत—स्त्री० मेहनत, परिश्रम।
मशगूल—व्यस्त।
मशविरा—पु० सलाह।
मशहूर—प्रसिद्ध। [की बत्ती।
मशाल—पु० जलनेवाली एक प्रकार
मशालची—मशाल दिखानेवाला।
मशीन—स्त्री० कल, यंत्र।
मशीनगन—पु० मशीन से चलने वाली बंदूक।
मश्क—पु० अभ्यास।
मष—पु० दे० "मख"।
मष्ट—संस्कार शून्य, मौन। मु० मष्ट मारना = चुप रहना।
मसक—पु० मच्छड़।
मसखरा—पु० हँसोड़, विदूषक।
मसखरी—स्त्री० हँसी।
मसजिद—स्त्री० मुसलमानों के नमाज पढ़ने का मंदिर। [की गद्दी।
मसनद—स्त्री० बड़ा तकिया, बैठने
मसरफ—पु० उपयोग, काम में आना।
मसल—स्त्री० कहावत।
मसलन्—उदाहरणार्थ, जैसे।
मसलहत—स्त्री० गुप्त युक्ति।
मसला—पु० कहावत, लोकोक्ति, विचारणीय विषय।
मसवासी—पु० वह साधु जो एक मास से कहीं अधिक नहीं टिके।
मसविदा—पु० बाद में काट छाँट

हो सकने लायक पहली बार लिखा हुआ लेख, खर्रा, उपाय।

मसान—पु० मरघट, भूत, पिशाच आदि, रणभूमि।

मसानी—स्त्री० श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी आदि।

मसाला—पु० वे चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो, साधन, आतिशबाजी।

मसि—स्त्री० रोशनाई, काजल, कालिख।

मसिदानी—स्त्री० दावात।

मसिपात्र—पु० दावात।

मसिबिंदु—पु० दिठौना।

मसी—स्त्री० दे० "मसि"।

मसीत—स्त्री० मसजिद।

मसीह, मसीहा—पु० ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा।

मसूरिका, मसूरी—स्त्री० चेचक।

मसूसना—मनोवेग को रोकना, कुढ़ना, ऐंठना, निचोड़ना।

मसौदा—पु० मसविदा।

मस्त—मतवाला, सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहने वाला, यौवन मद से भरा हुआ, मदपूर्ण, परम प्रसन्न।

मस्तक—पु० सिर। [मस्तों का सा।

मस्ताना—मस्त होना या करना।

मस्तिष्क—पु० मगज, दिमाग।

मस्ती—स्त्री० मतवालीपन, मद।

मस्तूल—पु० नावों पर गाड़ा जानेवाला वह बड़ा लट्ठा जिसमें पाल बाँधते हैं।

महँ—में

महँगी—स्त्री० महँगापन, अकाल।

महंत—श्रेष्ठ। पु० मठ का अधिष्ठाता।

महंती—स्त्री० महंत का पद।

मह—महा, श्रेष्ठ। में।

महक—स्त्री० गंध।

महकमा—पु० किसी कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग।

महज—शुद्ध, केवल।

महत्—बड़ा, सर्वश्रेष्ठ। पु० ब्रह्म।

महताब—स्त्री० चाँदनी। पु० चँद्रमा।

महती—स्त्री० महिमा।

महत्तत्व—पु० बुद्धितत्त्व, जीवात्मा।

महत्तम—सबसे श्रेष्ठ।

महत्तर—दो पदार्थों में बड़ा।

महत्त्व—पु० बड़ाई, श्रेष्ठता।

महदूद—घेरा हुआ, सीमाबद्ध।

महफिल—स्त्री० सभा, नाच गान का स्थान। [जाय।

महबूब—पु० प्रिय, जिससे प्रेम किया

महबूबा—स्त्री० प्रेमिका, माशूक।

महमहा—सुगंधित।

महर—पु० सुगंधित, एक आदर सूचक शब्द जो ब्रज में प्रायः जमींदारों के लिये व्यवहृत होता है।

महरि—स्त्री० ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिये आदर का शब्द।

महरूम—वंचित, जिसे न मिले।
महरेटा—पु० श्रीकृष्ण।
महरेटी—स्त्री० राधिका।
महरलोक—पु० एक लोक।
महर्षि—पु० बड़ा ऋषि।
महल—पु० प्रासाद, रनिवास, बड़ा कमरा, अवसर।
महल्ला—पु० शहर का एक भाग।
महसूल—पु० कर, भाड़ा, लगान।
महा—अत्यंत, सर्वश्रेष्ठ, बहुत बड़ा।
महाकल्प—पु० पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है।
महाकाल—पु० शिव।
महाकाली—स्त्री० शिव की पत्नी, दुर्गा।
महाकाव्य—पु० वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं, प्राकृतिक दृश्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो।
महागौरी—स्त्री० दुर्गा।
महाजन—पु० श्रेष्ठ पुरुष, साधु, धनवान्, रुपये पैसे का लेन देन करने वाला, बनिया।
महाजनी—स्त्री० रुपये पैसे के लेनदेन का व्यवसाय, महाजनों की एक लिपि।
महाजल—पु० समुद्र।
महातल—पु० एक भुवन।
महात्मा—पु० वह जिसकी आत्मा बड़ी हो, बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।

महादान—पु० बड़ा दान, ग्रहण समय का दान।
महादेव—पु० शिव।
महादेवी—स्त्री० दुर्गा, पटरानी।
महाद्वीप—पु० पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों।
महान्—बहुत बड़ा।
महानाटक—पु० दस अंकों वाला [नाटक।
महा निद्रा—स्त्री० मृत्यु।
महानिशा—स्त्री० आधीरात, प्रलय [की रात।
महानुभाव—पु० महापुरुष।
महापथ—पु० राजपथ, मृत्यु।
महापद्म—पु० नौ निधियों में एक निधि, सफेद कमल, सौ पद्म।
महापातक—पु० पांच बड़े पाप—ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान, गुरुपत्नी संभोग और ये पाप करनेवालों का संग।
महाप्रभु—पु० बल्लभाचार्य और चैतन्य [की आदर सूचक पदवी, ईश्वर
महाप्रलय—पु० वह समय जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और सर्वत्र अनंत जल के सिवा कुछ नहीं रहता।
महाप्रसाद—पु० देवताओं या जगन्नाथ जी का प्रसाद, मांस (व्यंग्य)।
महाप्रस्थान—पु० देहत्याग की इच्छा से हिमालय की ओर प्रस्थान, देहांत।
महाप्राण—पु० हिन्दी वर्णमाला का दूसरे और चौथे अक्षर को महाप्राण

कहते हैं ।
महाबाहु—लंबी भुजावाला, बली ।
महा ब्राह्मण—पु० महापात्र ।
महाभारत—पु० एक ग्रंथ, कोई बड़ा ग्रंथ, कौरव पांडवों का युद्ध, कोई बड़ा युद्ध ।
महाभूत—पु० पंचतत्त्व ।
महामंत्री—पु० प्रधान मंत्री ।
महामति—बड़ा बुद्धिमान ।
महामहोपाध्याय पु० गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो संस्कृत के बड़े विद्वानों को सरकार की ओर से दी जाती है ।
महामांस—पु० नरमांस, गोमांस ।
महामात्य—पु० महामंत्री ।
महामाया—स्त्री० प्रकृति, दुर्गा, गंगा ।
महामारी—स्त्री० वह संक्रामक रोग जिससे एक साथ बहुत लोग मरें ।
महामृत्युंजय—पु० शिव ।
महायात्रा—स्त्री० मृत्यु । [दाय ।
महायान—पु० बौद्धों का एक संप्र-
महायुग—पु० चार युगों का समूह ।
महारथ, महारथी पु० भारी योद्धा ।
महाराज—पु० बड़ा राजा, ब्राह्मण औ गुरु आदि के लिये संबोधन ।
महाराणा—पु० मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि ।
महारात्रि—स्त्री० महाप्रलय वाली रात ।
महारुद्र—पु० शिव ।
महार्घ—बहुमूल्य, महँगा ।
महाल—पु० मुहल्ला, जमीन का एक विभाग, भाग ।
महालय—पु० पितृपक्ष ।
महालया—स्त्री० आश्विन अमावस्या ।
महावत—पु० हाथीवान । [लाल रंग ।
महावर—पु० पैर रंगने का एक
महावरा—पु० आदत, बोलचाल के निश्चित वाक्य या शब्द ।
महावीर—बड़ा बहादुर । पु० हनुमान, गौतम बुद्ध, जैनियों का अंतिम तीर्थंकर ।
महाशय पु० महानुभाव ।
महाश्वेता स्त्री० सरस्वती ।
महि—स्त्री० पृथ्वी ।
महिदेव—पु० ब्राह्मण ।
महिपाल—पु० राजा । [एक सिद्धि ।
महिमा—स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, प्रताप,
महिला—स्त्री० भली स्त्री ।
महिष—पु० भैंसा, राजा ।
महिषमर्दिनी—स्त्री० दुर्गा ।
महिषी—स्त्री० भैंस, पटरानी ।
महिसुर—पु० ब्राह्मण ।
मही—स्त्री० पृथ्वी, मिट्टी, एक नदी, एक की संख्या ।
महीतल—पु० पृथ्वी ।
महीधर—पु० पर्वत, शेषनाग ।
महीन—पतला, बारीक, झीना, कोमल ।
महीप, महीपती—पु० राजा ।

महीसुर—पु० ब्राह्मण ।
महेंद्र -पु० इंद्र, विष्णु ।
महेश –पु० शिव ।
महेशी - स्त्री० पार्वती ।
महेश्वर –पु० ईश्वर, परमेश्वर ।
महोदधि—पु० समुद्र ।[स्वर्ग,स्वामी ।
महोदय—पु० महाशय, आधिपत्य,
माँग -स्त्री० माँगने की क्रिया या भाव, खपत के कारण किसी वस्तु की चाह, बालों के बीच की रेखा ।
माँगन—पु० मांगना, भिक्षुक ।
मांगलिक –मंगल करनेवाला । पु० नाटक में मंगल पाठ करनेवाला पात्र ।
माँझी--पु० केवट । [का शासक ।
मांडलिक—पु० किसी मंडल या प्रांत
मांदगी—स्त्री० थकावट, बीमारी ।
मांदा--थका हुआ, रोगी, बीमार ।
मांसाहारी—मांसभक्षी ।
मा—स्त्री० माता, लक्ष्मी, प्रकाश ।
माई—स्त्री० माता । मु० माई का लाल = वीर, साहसी, उदार ।
माकूल—उचित, वाजिब, योग्य, अच्छा, पूरा, बढिया,
माखना--क्रोध करना । [जरासंध ।
मागध--मगध का । पु० चारण,भाट,
मागधी--स्त्री० मगध की प्राचीन भाषा ।
माजरा—पु० हाल, वृत्तान्त ।
माटी --स्त्री० मिट्टी, लाश, शरीर, पृथ्वी तत्व, धूल ।
माणवक-पु० सोलह वर्ष की अवस्था वाला युवक, विद्यार्थी, नीच आदमी ।
माणिक, माणिक्य—सर्वश्रेष्ठ, पद्मराग मणि ।
मातंग --पु० हाथी, चांडाल ।
मातंगी-स्त्री० एक देवी ।[जय,माता ।
मात – पराजित, मदमस्त । स्त्री० परा-
मातदिल--गुण में न बहुत गर्म न बहुत ठंढा ।
मातना—मदमत्त होना ।
मातवर--विश्वसनीय ।
मातवरी--स्त्री० विश्वसनीयता ।
मातम-- पु० किसी के मरने पर शोक प्रकाश । [को सांत्वना देना ।
मातमपुर्सी—स्त्री० मृतक के संबंधियों
मातमी—शोकसूचक ।
मातलि - पु० इंद्र का सारथी ।
मातलिसूत—पु० इंद्र ।
मातहत – किसी की अधीनता में काम करने वाला ।
माता--मतवाला । स्त्री० जननी, गौ, भूमि, लक्ष्मी, शीतला ।
मातामह—पु० नाना ।
मातुल—पु० मामा या मामू, धतूरा ।
मातुली--स्त्री० मामी, भाँग ।
मातृ—स्त्री० माता ।
मातृक—माता संबंधी ।
मातृका--स्त्री० धाय, माता ।

मात्र—केवल, सिर्फ।
मात्रा – स्त्री० परिमाण, इकाई, स्वर सूचक चिह्न, उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर के उच्चारण में लगता है।
मात्रिक—मात्रा संबंधी।
मात्सर्य—पु० ईर्ष्या, डाह।
माथा—पु० मस्तक। मु० माथा ठनकना = पहले से ही किसी दुर्घटना की आशंका करना, माथे चढ़ाना = सादर स्वीकार करना। माथा पच्ची = बहुत बकना।
मादक—नशीला।
मादर—स्त्री० माता। [नंगा।
मादरजाद—जन्म का, सहोदर,
मादा—स्त्री० स्त्री जाति का प्राणी।
माद्दा—पु० मूल तत्त्व, योग्यता, पीव। [वसंत ऋतु।
माधव—पु० विष्णु, वैशाख मास,
माधवी—स्त्री० एक लता, तुलसी, दुर्गा। [शराब।
माधुरी—स्त्री० मिठास, सुंदरता,
माधुर्य—पु० मधुरता, सुंदरता, मिठास, काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।
माधो—पु० श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण।
माध्यम—मध्य का। पु० कार्यसिद्धि का उपाय या साधन।
माध्वी—स्त्री० मदिरा।
मान—पु० भार, तौल या नाप आदि, पैमाना, अभिमान, प्रतिष्ठा, रूठना, शक्ति।
मानगृह—पु० कोप भवन।
मानचित्र—पु० नकशा।
माननीय—पूजनीय।
मानमंदिर—पु० कोप भवन, वेधशाला।
मानमोचन—पु० रूठे हुए प्रिय को मनाना।
मानव—पु० मनुष्य।
मानवशास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें मानव जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।
मानवी–मानव संबंधी। स्त्री० नारी।
मानस—मन के द्वारा। मन से उत्पन्न। पु० मन, मान सरोवर, कामदेव, संकल्पविकल्प, मनुष्य, दूत।
मानसर—पु० मानसरोवर।
मानस शास्त्र—पु० मनोविज्ञान।
मानसिक—मन संबंधी।
मानसी—मनका।
मानहानि—स्त्री० अपमान।
मानहुँ—मानो।
मानिंद—समान।
मानिक—दे० "माणिक"। [रुष्टा।
मानिनी—मानवती, मान करनेवाली,
मानी—अहंकारी, सम्मानित। पु० रूठा हुआ नायक, मतलब, अर्थ।
मानीटर—पु० मुखिया।
मानुष—मनुष्य का। पु० मनुष्य।

मानुषी—मनुष्य संबंधी।
माने—अर्थ।
मानो—जैसे।
मान्य—माननीय, पूज्य।
माप—स्त्री० नाप, मान।
मापक—पु० पैमाना, मापनेवाला।
माफ—जो क्षमा कर दिया गया हो।
माफकत—स्त्री० अनुकूलता, मेल।
माफिक—मुताबिक, योग्य।
माफी—स्त्री० क्षमा, वह भूमि जो किसी को बिना लगान के दी गयी हो।
मामता—स्त्री० अपनापन, प्रेम।
मामलत—स्त्री० मामिला, विवादास्पद विषय। [विवादास्पद विषय।
मामला—पु० काम, व्यवहार,
मामा—पु० मामू। स्त्री० माता।
मामूल—पु० रीति, लत, टेव।
मामूली—नियमित, साधारण।
मायका—पु० नैहर।
माया—स्त्री० लक्ष्मी, संपत्ति, अविद्या, भ्रम, छल, प्रकृति, जादू, लीला, दुर्गा, ममत्व, दया, मा।
मायावाद—पु० ईश्वर के सिवाय संसार की सब वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।
मायाविनी—स्त्री० ठगिनी।
मायावी—पु० फरेबी, परमात्मा, जादूगर।
मायिक—बनावटी, मायावी।
मायूस—निराश, नाउम्मेद।

मार—अत्यंत। पु० कामदेव, विष, धतूरा। स्त्री० मारपीट, चोट, निशान, माला।
मारक—पु० संहारक। [पूर्ण घटना।
मारका—पु० चिन्ह, युद्ध, महत्व-
मारण—पु० मार डालना।
मारफत—द्वारा, जरिये से।
मारी—स्त्री० महामारी।
मारुत—पु० हवा।
मारुति—पु० हनुमान, भीम।
मारू—मारनेवाला, हृदयवेधक। पु० धौंसा, एक राग जो युद्ध के समय गाया या बजाया जाता है।
मारे—वजह से।
मार्क, मार्का—पु० छाप।
मार्केट—पु० बाजार, हाट।
मार्ग—पु० रास्ता
मार्गण—पु० अन्वेषण।
मार्गशीर्ष—पु० अगहन।
मार्गी—पु० यात्री।
मार्च—पु० एक अंगरेजी महीना, गमन, गति, सेना की कूच।
मार्जन—पु० सफाई, क्षमा।
मार्जनी—स्त्री० झाड़ू।
मार्जार—पु० बिल्ली।
मार्जित—साफ किया हुआ।
मार्तंड—पु० सूर्य।
मार्दव—पु० अहंकार का त्याग, दूसरे को दुखी देखकर दुखी होना,

सरलता।
मार्फ़त--दे० "मारफत"। [पड़े।
मार्मिक—जिसका प्रभाव मर्म पर
माल—पु० संपत्ति, सामान, क्रय विक्रय का पदार्थ, वर्ग अंक। स्त्री० माला, पंक्ति, चरखे के टेकुए को घुमानेवाला सूत।
मालखाना—पु० भंडार।
मालगुजार -पु० मालगुजारी देनेवाला व्यक्ति। [लगान।
मालगुजारी—स्त्री० भूमि कर,
मालगोदाम—पु० वह स्थान जहां माल रखा जाता है। [लता।
मालती—स्त्री० चाँदनी, रात, एक
मालदार—धनी। [समूह, दूब।
माला—स्त्री० पंक्ति, फूलों का हार,
मालामाल—बहुत संपन्न। [मालिन।
मालिका—स्त्री० पंक्ति, माला,
मालिकाना—मालिक की तरह। पु० स्वामित्व, मालिक का हक, कर।
मालिनी—स्त्री० मालिन।
मालिन्य—पु० मलिनता।
मालियत--स्त्री० कीमत, संपत्ति, कीमती चीज।
मालिश—स्त्री० मर्दन।
माली—माला पहने हुए, आर्थिक। पु० एक जाति।
मालीदा--पु० मलीदा, चूरमा, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
मालूम—ज्ञात, जाना हुआ।
माल्य पु० फूल, माला। [खोआ।
मावा -पु० माँड़, सत्त, प्रकृति,
माशूक--पु० प्रेमपात्र।
माशूका--स्त्री० प्रेमिका।
माष—पु० उड़द, माशा, शरीर पर का काले रंग का मसा।
माषपर्णी -स्त्री० जंगली उड़द।
मास--पु० महीना।
मासांत -पु० महीने का अंत, अमावास्या, संक्रांति।
मासिवा—अलावा, सिवा।
मासूम—पु० छोटा बच्चा।
मास्टर—पु० स्वामी, गुरु, शिक्षक, किसी विषय में निपुण। [उड़द।
माह—बीच। पु० महीना, माघ,
माहताब--पु० चंद्रमा।
माहली—पु० अंतःपुर में जानेवाला सेवक, सेवक।
माहवार—प्रति मास, मासिक।
माहवारी—मासिक, हर महीने का।
माहात्म्य--पु० महिमा, आदर।
माहिं--भीतर, में, पर।
माही—स्त्री० मछली।
महामरातीव--पु० राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे।
माहुर--पु० विष, जहर।
माहेश्वरी—स्त्री० दुर्गा।
मिकदार--स्त्री० परिमाण, मात्रा।

मिचकना—आँखों का बार बार खुलना और बंद होना।

मिचना—आँखों का बंद होना।

मिचलाना—मतली आना।

मिजराब—स्त्री० सितार आदि बजाने का तार का छल्ला।

मिजाज—पु० तासीर, स्वभाव, तबीयत, अभिमान।

मिजाजआली—एक वाक्यांश जो किसी से शारीरिक कुशल मंगल पूछने के लिये व्यवहृत होता है।

मिजाजदार—घमंडी।

मिजाजपुरसी—स्त्री० तबीयत का हाल पूछना।

मिजाज शरीफ—आप अच्छे तो हैं?

मिजाजी—घमंडी।

मिट्टी—स्त्री० जमीन, धूल, राख, शरीर, लाश, शारीरिक गठन। मु० मिट्टी करना = नष्ट करना। मिट्टी के मोल = बहुत सस्ता। मिट्टी डालना = किसी बात को जाने देना, दोष को छिपाना। मिट्टी में मिलना = नष्ट होना, मरना। मिट्टी का पुतला = मानव शरीर। मिट्टी पलीद करना = दुर्दशा करना।

मिट्ठी—चुंबन।

मिट्ठू—मीठा बोलनेवाला। पु० [तोता।

मिठाई—स्त्री० मिठास, मीठा पदार्थ।

मिठास—स्त्री० मीठापन।

मिडिल—मध्य, बीच। पु० विद्यालय में एक क्लास।

मिडिलची—मिडिल पास।

मितंग—पु० हाथी।

मित—परिमित, थोड़ा।

मितभाषी—थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय—किफायत, कम खर्च करना।

मिताई—स्त्री० मित्रता।

मिताक्षरा—स्त्री० याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।

मिति—स्त्री० परिमाण, सीमा, काल की अवधि।

मिती—स्त्री० तारीख, दिन। मिती पूजना = हुंडी का समय पूरा होना।

मित्र—पु० दोस्त, सूर्य।

मिथुन—पु० स्त्री और पुरुष का जोड़ा, समागम, एक राशि।

मिथ्या—स्त्री० झूठ।

मिथ्यावादी—झूठा।

मिथ्याहार—पु० प्रकृति के विरुद्ध [भोजन करना।

मिनहा—मुजरा किया हुआ।

मिनजानिब—ओर से, तरफ से।

मिन्जुमला—कुल में से।

मिन्नत—स्त्री० प्रार्थना, दीनता।

मियाँ—पु० मालिक, पति, शिक्षक मुसलमान, महाशय, एक उपाधि।

मियाँ मिट्ठू—मधुर भाषी, तोता, बेवकूफ। मु० अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना = अपने मुह से अपनी

प्रशंसा करना।
मियान—स्त्री० तलवार आदि रखने का खोल, शरीर, बीचका हिस्सा।
मिरगी—स्त्री० मूर्च्छा रोग।
मिरजई—स्त्री० एक प्रकार का अंगरखा। [मुगलों की एक उपाधि।
मिरजा—पु० अमीरज़ादा, राजकुमार,
मिरजामिजाज—नाजुक दिमाग का।
मिलकी—स्त्री० जमींदार, अमीर।
मिलन—पु० भेंट, मिलना, मिलावट।
मिलनसार—मिलने जुलनेवाला।
मिलान—पु० मिलाने की क्रिया या भाव, तुलना, ठीक होने की जाँच।
मिलाप—पु० मिलना, मित्रता, भेंट।
मिलावट—स्त्री० मिलाये जानेका भाव।
मिलिक—स्त्री० जमींदारी, जागीर।
मिलित—मिला हुआ।
मिल्क—पु० जमींदारी, जागीर।
मिल्कियत—स्त्री० जमींदारी, जागीर, धन संपत्ति, वह धन संपत्ति जिस पर मालिकों का सा हक हो।
मिल्की—पु० जमींदार, जागीरदार।
मिल्लत—स्त्री० मेलजोल, मिलनसारी, संप्रदाय।
मिशन—पु० विशिष्ट कार्य के लिये भेजे हुए आदमी, ईसाइयों की संस्था।
मिशनरी—पु० वह ईसाई पादरी जो किसी मिशन का सदस्य होता है, पादरी।
मिश्र—मिला हुआ, श्रेष्ठ, जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकार की रकमों की संख्या हो।
मिश्रण—पु० मिलावट, जोड़ना।
मिष—पु० छल, बहाना, डाह।
मिष्ट—मीठा।
मिष्टान्न—पु० मिठाई।
मिस—पु० बहाना, पाखंड। स्त्री० कुमारी, युवती लड़की।
मिसकीन—बेचारा, गरीब।
मिसरा—पु० उर्दू या फारसी की कविता का एक चरण।
मिसरा तरह—पु० समस्या।
मिसल—स्त्री० सिक्खों के समूह।
मिसाल—स्त्री० उदाहरण, उपमा, कहावत। [फाइल।
मिसिल—दे० "मिस्ल"। स्त्री०
मिसेज—स्त्री० श्रीमती।
मिस्टर—पु० महाशय।
मिस्ट्रेस—स्त्री० अध्यापिका।
मिस्तरी—पु० दस्तकारी का अच्छा काम करने वाला।
मिस्ल—समान, तुल्य। [मंजन।
मिस्सी—स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध
मिहिर—पु० सूर्य, आक का पौधा, बादल, चंद्रमा। [गूदा।
मींगी—स्त्री० बीज के अन्दर का
मींजना—हाथों से मलना, मर्दन करना।

मींड़ना—मसलना। [अवधि।

मीआद—स्त्री० अवधि, कैद की

मीआदी—जिसकी अवधि नियत हो, जो कारागार में रह चुका हो।

मीचना—आँखें बंद करना।

मींटिंग—स्त्री० सभा।

मिचु—स्त्री० मृत्यु।

मीजान स्त्री० जोड़।

मीटिंग—स्त्री० अधिवेशन, सभा।

मीठा—मधुर, स्वादिष्ट, धीमा, सुस्त, मामूली, हलका या मंद, नामर्द, प्रिय, सीधा। पु० मिठाई, गुड़।

मीठा तेल—पु० तिल का तेल।

मीठा पानी—पु० लेमनेड, नीबू का अंगरेजी सत मिला हुआ पानी।

मीठी छुरी—स्त्री० कपटी, विश्वास घातक।

मीन—पु० मछली, एक राशि।

मीनकेतन—पु० कामदेव।

मीनाकारी—स्त्री० सोने या चाँदी पर होने वाला रंगीन काम।

मीनार—स्त्री० वह इमारत जो प्रायः गोलाकार चलती हुई बहुत ऊंचाई तक जाती है।

मीमांसक-पु० मीमांसा करनेवाला, मीमांसा शस्त्र का ज्ञाता।

मीमांसा—स्त्री० अनुमान और तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कौन बात कैसी है, छःदर्शनों मेंसे दो दर्शन।

मीर—पु० सरदार, धार्मिक आचार्य, प्रतियोगिता का काम सबसे पहले करनेवाला।

मीर अर्ज—पु० वह कर्मचारी जो बादशाहों की सेवा में लोगों के निवेदन-पत्र आदि उपस्थित करे।

मीरजा—पु० अमीर या सरदार का लड़का।

मीरास- स्त्री० बपौती।

मीरासी-पु० गाने बजाने का काम या मसखरापन करने वाला मुसलमान।

मील—पु० १७६० गज की दूरी।

मीलन—पु० बंद करना, संकुचित करना।

मुंड—पु० सिर।

मुंडन-पु० सिर मुड़ाना, एक संस्कार।

मुँड़ना—मूँड़ा जाना, लुटना, ठगा जाना।

मुंडमाला-स्त्री० कटे सिर की माला।

मुंडमालिनी—स्त्री० काली देवी।

मुंडमाली—पु० शिव।

मुंडा—पु० वह जिसके सिर के बाल न हों, वह जो किसी साधु का शिष्य हो गया हो, वह पशु जिसे सींग होना चाहिये पर न हो, एक लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं होंती, एक जाति।

मुँडिया—पु० संन्यासी।

मुँडी—स्त्री० वह स्त्री जिसका सिर

मुँड़ा हो, विधवा । [पर गया हुआ ।
मुंतकिल—एक स्थान से दूसरे स्थान
मुंतजिम—पु० इंतजामकार ।
मुंतजिर—इंतजार करनेवाला ।
मुँदरी—स्त्री० अँगूठी ।
मुंशी—पु० मुहर्रिर ।
मुंशीखाना—पु० दफ्तर । [पद ।
मुंशीगिरी—स्त्री० मुंशी का काम या
मुंसरिम—पु० इंतजाम करनेवाला, दफ्तर का प्रधान कर्मचारी ।
मुंसिफ—पु० इन्साफ करनेवाला ।
मुंसिफी—स्त्री० मुंसिफ का काम, पद या कचहरी ।
मुँह—पु० मुख, चेहरा, छेद, लिहाज, योग्यता, साहस, अगला या ऊपरी भाग । मु० मुँह आना = मुँह के अंदर छाले पड़ना । मुँह भरना = घूस देना । मुँह में पानी भर आना = ललचना । मुँह में लगाम न होना = जो मुँह में आवे सो कह देना । मुँह सीना = चुप रहना । अपना सा मुँह लेकर रहना = लज्जित होकर रहना । अपना मुँह काला करना = व्यभिचार करना, अपनी बदनामी करना । मुँह की खाना = बेइज्जत होना, दुर्दशा किया जाना, मुँह-तोड़ उत्तर सुनना । मुँह धो रखना = प्राप्ति से निराश होना । मुँह लगाना = उद्दंड बनाना ।
मुँहचोर—लज्जालु ।

मुँहजोर—बकवादी, मुँहफट, उद्दंड ।
मुँहफट—कोई बात कहने में संकोच न करनेवाला ।
मुँहमाँगा—माँगने के अनुसार ।
मुँहामुँह—लबालब । [देनेवाला ।
मुअज्जन—पु० मसजिद में अजान
मुअत्तल—जो दंडस्वरूप कुछ समय के लिये काम से हटा दिया गया हो ।
मुअम्मा—पु० रहस्य, भेद, पहेली ।
मुअल्लिम—पु० शिक्षक ।
मुआफ—क्षमा ।
मुआफी—स्त्री० क्षमा, माफी ।
मुआफकत—स्त्री० दोस्ती, अनुकूलता ।
मुआफिक—अनुकूल, समान, मनोनुकूल ।
मुआमला—पु० व्यापार, काम, व्यवहार, विवादास्पद विषय ।
मुआयना—पु० जाँच पड़ताल ।
मुआवजा—बदला । [करार ।
मुआहिदा—पु० दृढ़ निश्चय,
मुकदमा—पु० अभियोग, नालिश ।
मुकद्दमेबाज—पु० मुकदमा लड़ते रहनेवाला । [मुखिया ।
मुकद्दम—पुराना, सर्वश्रेष्ठ, जरूरी,
मुकद्दर—पु० भाग्य, तकदीर ।
मुकम्मल—पूरा । [फिर जाना ।
मुकरना—कोई बात कह कर उससे
मुकर्रर—फिर से दोबारा । निश्चित नियुक्त ।

मुकर्ररी—स्त्री० नियुक्ति।

मुकाबला-पु० आमना सामना, मुठ-भेड़, बराबरी, तुलना, मिलान, विरोध।

मुकाबिल-सामने पु० प्रतिद्वंद्वी, शत्रु।

मुकाम—पु० ठहरने का स्थान, घर अवसर, ठहरना। [वाला।

मुकिर—प्रतिज्ञा करनेवाला, किसी दस्तावेज या अरजी दावे का लिखने

मुकुंद—पु० विष्णु।

मुकुट—पु० ताज।

मुकुर—पु० आइना, मौलसिरी, कली।

मुकुल—पु० कली, शरीर, आत्मा।

मुकुलित—जिसमें कलियाँ आई हों, कुछ खिली हुई, अधखुला।

मुक्त—मुक्तिप्राप्त। बंधन से छूटा हुआ, खुला हुआ, फेंका हुआ।

मुक्तकंठ—खुला कंठ, चिल्लाकर बोलनेवाला, जिसे कहने में आगा पीछा न हो।

मुक्तक—पु० फेंक कर मारा जानेवाला अस्त्र, फुटकर कविता। [वाला।

मुक्तहस्त—खुले हाथों दान करने

मुक्ता—स्त्री० मोती।

मुक्ताफल—पु० मोती।

मुख—प्रधान। पु० मुँह, दरवाजा, आरंभ, अगला या ऊपरी भाग।

मुखड़ा—पु० चेहरा।

मुखतार—पु० प्रतिनिधि, एक प्रकार का कानूनी सलाहकार या कानूनी काम करनेवाला।

मुखतार आम—पु० वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने और मुकदमे आदि लड़ने का अधिकार दिया गया हो। [काम या पद।

मुखतारकारी—स्त्री० मुखतार का

मुखतार खास—पु० वह जो किसी विशिष्ट कार्य या मुकदमे के लिये प्रतिनिधि बनाया गया हो।

मुखतारनामा—पु० मुख्तार या प्रतिनिधि की तरह काम करने का अधिकार पत्र। [कम किया गया हो।

मुखफ्फफ—संक्षिप्त, जो घटा कर

मुखबंध—पु० भूमिका।

मुखबिर—पु० जासूस।

मुखर—कटुभाषी, बकवादी।

मुखलिसी—स्त्री० छुटकारा, रिहाई।

मुखस्थ, मुखाग्र—कंठस्थ।

मुखातिब—जिससे बात की जाय।

मुखापेक्षा—स्त्री० दूसरों का मुँह ताकना, आश्रित रहना।

मुखापेक्षी—पु० आश्रित। [द्वंद्वी।

मुखालिफ—विरोधी, शत्रु, प्रति-

मुखालिफत—स्त्री० विरोध, दुश्मनी।

मुखिया—पु० नेता, अगुआ।

मुख्तलिफ—अलग, भिन्न, अनेक प्रकार का।

मुख्तसर—संक्षिप्त, छोटा, थोड़ा।

मुख्तार—पु० दे० "मुखतार"।

मुख्य—प्रधान । [मूढ़,सुंदर,मोहित ।
मुग्ध—मोह या भ्रम में पड़ा हुआ,
मुग्धा—स्त्री० वह नायिका जो युवावस्था को तो प्राप्त हो चुकी हो पर जिसमें अभी कामचेष्टा न हो ।
मुचलका—पु० भविष्य में कोई अनुचित काम न करने या नियत समय पर अदालत में हाजिर होने का प्रतिज्ञापत्र । [कुरूप और मूर्ख ।
मुछंदर—पु० बड़ी बड़ी मूछोंवाला,
मुजक्कर—पुलिंग ।
मुजरा—पु० वह जो जारी किया गया हो, काटी हुई रकम, अभिवादन, वेश्या का बैठ कर गाना ।
मुजरिम—पु० अभियुक्त ।
मुजिर—हानिकारक । [कार ।
मुटाई—स्त्री० मोटापन, पुष्टि, अहं-
मुटिया—पु० बोझ ढोनेवाला ।
मुट्ठी—स्त्री० बँधी हथेली । मु० मुट्ठी में = कब्जे में । मुट्ठी गरम करना = रुपया देना या लेना ।
मुठभेड़—स्त्री० टक्कर, भिडंत, सामना ।
मुतअल्लिक—संबंधी, विषय में ।
मुतफन्नी—चालाक ।
मुतफरिक—अलग अलग, विविध ।
मुतबन्ना—पु० दत्तक पुत्र ।
मुतलक—जरा भी । बिलकुल ।[लित ।
मुतल्लिक—संबंध में । संबंधी, सम्मि-
मुतवल्ली—पु० अभिभावक ।

मुतसद्दी—पु० लेखक, पेशकार, मुनीम, इंतजामकार ।
मुताबिक—अनुकूल, अनुसार ।
मुतालबा—पु० बाकी रुपया ।
मुताह—पु० मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह ।
मुद—पु० हर्ष, आनंद ।
मुदर्रिस—पु० अध्यापक । [आनंद ।
मुदा—तात्पर्य यह कि, मगर । स्त्री०
मुदाम—हमेशा, लगातार, ठीक ठीक ।
मुदित—प्रसन्न ।
मुदिर—पु० मेघ ।
मुद्ग—पु० मूँग ।
मुद्गर—पु० मुगदर ।
मुद्दआ—पु० अभिप्राय, मतलब ।
मुद्दई—पु० दावादार, वादी, दुश्मन ।
मुद्दत—स्त्री० अवधि, बहुत दिन ।
मुद्दालेह—पु० प्रतिवादी, जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय ।
मुद्रक—पु० छापनेवाला ।
मुद्रण—पु० छपाई ।
मुद्रांकित—मोहर किया हुआ ।
मुद्रा—स्त्री० मोहर, सिक्का, छाप, अँगूठी, टाइप से छपे हुए अक्षर, मुखकी आकृति या चेष्टा, बैठने या लेटने आदि का ढंग, हाथ पाँव आदि की कोई स्थिति, अंगविन्यास ।
मुद्रातत्त्व—पु० पुराने सिक्के आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें

जानने की विद्या।
मुद्रायंत्र—पु० छापे की कल।
मुद्राविज्ञान—पु० दे० "मुद्रातत्त्व"।
मुद्राशास्त्र—पु० दे० "मुद्रातत्त्व"।
मुद्रिका—स्त्री० अँगूठी, सिक्का।
मुद्रित—छपा हुआ, मुँदा हुआ।
मुधा—व्यर्थ, निष्प्रयोजन, झूठ। पु० मिथ्या।
मुनादी—स्त्री० डिंढोरा।
मुनाफा—पु० लाभ।
मुनासिब—उचित।
मुनि—पु० ईश्वर और धर्म आदि का सुक्ष्म विचार करनेवाला, तपस्वी, सात की संख्या।
मुनीब, मुनीम—पु० सहायक, हिसाब किताब लिखनेवाला।
मुन्ना—प्यारा।
मुफलिस—निर्धन, गरीब।
मुफलिसी—स्त्री० निधनता, गरीबी।
मुफस्सल—ब्योरेवार। पु० किसी केन्द्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर के स्थान।
मुफीद—फायदेमंद, लाभकारी।
मुफ्त—बिना दाम का।
मुफ्तखोर—मुफ्त का खानेवाला।
मुबतिला—फँसा हुआ, ग्रस्त। [शुभ।
मुबारक—जिसके कारण बरकत हो,
मुबारकबाद—पु० बधाई।
मुबारकबादी—स्त्री० बधाई।
मुबारकी—स्त्री० मुबारकबाद।
मुबाहिसा—पु० बहस।
मुमकिन—संभव।
मुमुक्षु—मुक्ति पाने का इच्छुक।
मुमूर्षा—स्त्री० मरने की इच्छा।
मुमूर्षू—जो मरने के समीप हो।
मुर—फिर। पु० वेष्टन।
मुरकना—मुड़ना, घूमना, लौटना, रुकना, नष्ट होना।
मुरज—पु० मृदंग। [होना।
मुरझाना—कुम्हलाना, सुस्त या उदास
मुरदर—पु० श्रीकृष्ण।
मुरदार—मरा हुआ, बेजान, अपवित्र।
मुररिपु—पु० श्रीकृष्ण।
मुरलिका—स्त्री० मुरली।
मुरली—स्त्री० वंशी।
मुरलीधर—पु० श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर—पु० श्रीकृष्ण।
मुरवा—पु० मोर।
मुरवी—स्त्री० धनुष की डोरी।
मुरशिद—पु० गुरु, पथप्रदर्शक, पूज्य।
मुरहा—मूल नक्षत्र में उत्पन्न, अनाथ, उपद्रवी। पु० श्रीकृष्ण।
मुरहारी—पु० श्रीकृष्ण।
मुराद—स्त्री० अभिलाषा, अभिप्राय। पु० मुराद पाना = मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना = मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।
मुरार—पु० मृणाल।

मुरारि—पु० श्रीकृष्ण ।
मुरीद—पु० शिष्य, अनुयायी ।
मुरौवत—स्त्री० शील, लिहाज, भलमनसी ।
मुर्ग—पु० मुरगा ।
मुर्गकेश—पु० जटाधारी ।
मुर्दनी—स्त्री० मुख पर प्रगट होने वाले मृत्यु के चिह्न । [चतुर ।
मुर्शिद—पु० मार्गदर्शक, गुरु, श्रेष्ठ,
मुलकना—पुलकित होना । [देशी ।
मुलकी—शासन या व्यवस्था संबंधी,
मुलजिम—अभियुक्त ।
मुलतबी—स्थगित । [भड़क ।
मुलम्मा—पु० कलई, ऊपरी तड़क-
मुलाकात—स्त्री० भेंट, मेलमिलाप ।
मुलाकाती—पु० परिचित ।
मुलाजिम—पु० नौकर ।
मुलाजिमत—स्त्री० नौकरी ।
मुलायम—कोमल, हलका, नाजुक ।
मुलायमियत-स्त्री० नर्मी, नजाकत ।
मुलाहजा—पु० निरीक्षण, संकोच, रियायत ।
मुल्क—पु० देश, प्रान्त, संसार ।
मुल्तवी—स्थगित ।
मुल्ला—पु० मौलवी ।
मुवक्किल—पु० वह जो अपने किसी काम के लिये वकील नियुक्त करे ।
मुश्क—पु० कस्तूरी, अंस, बाँह । मु० मुश्कें कसना = दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना ।
मुश्कनाफा—पु० कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है ।
मुश्किल—कठिन । स्त्री० कठिनता, मुसीबत । [जिसमें मुश्क पड़ी हो ।
मुश्की—कस्तूरी के रंग का, काला,
मुश्त—पु० मुट्ठी ।
मुश्ताक—चाहनेवाला ।
मुष्टि—स्त्री० मुट्ठी, मुक्का, चोरी, अकाल, मुष्टिक । [की नाप, मुट्ठी ।
मुष्टिक—पु० मुक्का, घूँसा, चार अंगुल
मुष्टिका—स्त्री० मुक्का, मुट्ठी ।
मुसकराहट—स्त्री० मीठी हँसी ।
मुसकान, मुसक्यान—स्त्री० मंद हास, मुसकराहट ।
मुसन्ना—पु० असल कागज की दूसरी नकल, रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है ।
मुसन्निफ—पु० ग्रंथकर्त्ता । [औरत ।
मुसम्मात—नामधारिणी । स्त्री०
मुसलमान—पु० इस्लाम धर्म को माननेवाला । [मान ।
मुसल्लम—पूरा, अखंड । पु० मुसल-
मुसल्ला—पु० नमाज पढ़ने की दरी या चटाई, मुसलमान । [खींचनेवाला ।
मुसव्विर—पु० चित्रकार, तस्वीर
मुसाफिर—पु० यात्री ।
मुसाफिरखाना—पु० मुसाफिरों के

ठहरने का स्थान, धर्मशाला।

मुसाफिरत, मुसाफिरी— स्त्री० मुसाफिर होने की दशा, यात्रा।

मुसाहब – पु० धनवान या राजा आदि का पार्श्ववर्ती या सहवासी।

मुसाहबत, मुसाहबी – स्त्री० मुसाहब का पद या काम।

मुसीबत – स्त्री० तकलीफ, विपत्ति।

मुस्तकिल—स्थिर, पक्का।

मुस्तनद—प्रामाणिक।

मुस्तशना—छाँटा हुआ, भिन्न, जो अपवाद हो, बरी किया हुआ।

मुस्तहक—हकदार, योग्य। स्वरूप।

मुस्तैद—तत्पर, चालाक।

मुस्तैदी—स्त्री० तत्परता, फुरती।

मुहकम—पक्का, दृढ़।

मुहकमा—पु० सरिश्ता, विभाग।

मुहतमिम—पु० बंदोबस्त करनेवाला। प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

मुहताज—दरिद्र, चाहनेवाला।

मुहब्बत—स्त्री० प्रेम, दोस्ती, लगन।

मुहर—स्त्री० मोहर।

मुहरा—पु० सामने का भाग, निशान, मुँह की आकृति, शतरंज की गोटी।

मुहर्रम—पु० अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। [जक, मनहूस।

मुहर्रमी—मुहर्रम संबंधी, शोक व्यं-

मुहर्रिर—पु० लेखक, किरानी।

मुहर्रिरी—स्त्री० मुहर्रिर का काम।

मुहलत – स्त्री० छुट्टी, अवधि।

मुहल्ला – पु० दे० 'महल्ला'।

मुहसिल—उगाहनेवाला। पु० प्यादा।

मुहाफिज—संरक्षक, रखवाला।

मुहाफिजखाना—पु० कचहरी में वह स्थान जहाँ सब प्रकार की मिसलें आदि रहती हैं। [महाल।

मुहाल—नामुमकिन, कठिन। पु०

मुहावरा—पु० लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो, अभ्यास, आदत।

मुहासिल—पु० आमदनी, लाभ।

मुहिब्ब—पु० दोस्त, मित्र।

मुहिम—पु० कठिन या बड़ा काम, युद्ध, आक्रमण।

मुहुः – बार बार, फिर फिर।

मुहूर्त्त—पु० दिन रात का तीसवाँ भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल।

मूँगफली—स्त्री० चिनिया बदाम।

मूँगा—पु० एक सामुद्रिक जंतु की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है।

मूँछ— स्त्री० ओठ के ऊपर का बाल। मु० मूँछें नीची होना = घमंड टूट जाना, बेइज्जती होना।

मूक—गूँगा, विवश।

मूकता—स्त्री० गूँगापन।

मूजी—पु० कष्ट पहुँचानेवाला, दुष्ट ।
मूठ—स्त्री० मुट्ठी, दस्ता, जादू । मु० मूठ चलाना = जादू करना ।
मूढ़—मूर्ख, स्तब्ध ।
मूत, मूत्र—पु० पेशाब ।
मूत्रकृच्छ्र—पु० एक रोग जिसमें पेशाब रुक रुक कर होता है । [रोग ।
मूत्राघात—पु० पेशाब बंद होने का
मूत्राशय—पु० नाभि के नीचे वह स्थान जहाँ मूत्र जमा रहता है ।
मूरि, मूरी—स्त्री० मूल, जड़ी ।
मूर्ख—पु० बेवकूफ, मूढ़ ।
मूर्च्छन—पु० बेहोश करना ।
मूर्च्छा—स्त्री० बेहोशी ।
मूर्च्छित—बेहोश ।
मूर्त—साकार, ठोस ।
मूर्ति—स्त्री० आकृति, शरीर, प्रतिमा, चित्र । [बनानेवाला ।
मूर्तिकार—पु० मूर्ति या तसवीर
मूर्तिमान्—सशरीर, साक्षात ।
मूर्द्ध—पु० सिर ।
मूर्द्धकर्णी—स्त्री० छाया आदि के लिये सिर पर रखी हुई वस्तु ।
मूर्द्धन्य—मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला, मस्तक में स्थित ।
मूर्द्धा—पु० सिर । [सिंचन ।
मूर्द्धाभिषेक—पु० सिर पर जल-
मूल—प्रधान । पु० जड़, कंद, आदि, आरंभ, उत्पत्ति का हेतु, पूँजी, आरंभ का भाग, नींव, ग्रंथकार का निज का लेख जिसपर टीका की जाय । [मूली, मूल स्वरूप ।
मूलक—उत्पन्न करनेवाला । पु०
मूलधन—पु० पूँजी ।
मूलस्थली स्त्री० थाला ।
मूलस्थान—पु० पूर्वजों का स्थान, प्रधान स्थान ।
मूलिका—स्त्री० जड़ी ।
मूली—स्त्री० मुरई, जड़ी-बूटी ।
मूल्य—पु० कीमत ।
मूष, मूषक—पु० चूहा ।
मूसल—पु० धान कूटने का मोटा डंडा, एक अस्त्र । [धार से वर्षा ।
मूसलधार—मूसल के समान मोटी
मृग—पु० पशु मात्र विशेषतः वन्य पशु, हिरन, अगहन, मकर राशि, मृगशिरा नक्षत्र, कस्तूरी का नाफा ।
मृगतृषा, मृगतृष्णा—स्त्री० ऊसर मैदानों में कड़ी धूप के समय जल की लहरों की मिथ्या प्रतीति ।
मृगनाथ—पु० सिंह ।
मृगनाभि—पु० कस्तूरी ।
मृगनैनी—स्त्री० हरिण के समान सुंदर नेत्रवाली ।
मृगमद—पु० कस्तूरी ।
मृगमरीचिका—स्त्री० मृगतृष्णा ।
मृगमित्र—पु० चंद्रमा ।
मृगमेद—पु० कस्तूरी ।

मृगया—पु० शिकार ।
मृगरोचन—पु० कस्तूरी ।
मृगलोचनी—दे० "मृगनैनी" ।
मृगवारि—पु० मृगतृष्णा का जल ।
मृगांक—पु० चंद्रमा ।
मृगाक्षी—दे० स्त्री० "मृगनैनी" ।
मृगाशन—पु० सिंह । [कस्तूरी ।
मृगी—स्त्री० हरिणी, मूर्च्छा रोग,
मृगेंद्र—पु० सिंह ।
मृड़ा, मृड़ानी—स्त्री० दुर्गा ।
मृणाल—स्त्री० कमल का डंठल, कमल की जड़ ।
मृणालिका—स्त्री० मृणाल ।
मृणालिनी—स्त्री० कमलिनी, वह स्थान जहाँ कमल हों ।
मृत—मरा हुआ ।
मृतक—पु० मृत प्राणी ।
मृतककर्म—पु० मृतक पुरुष की सद्गति के लिये किया जानेवाला कर्म । जैसे, दाह, षोड़शी इत्यादि ।
मृतकधूम—पु० राख, भस्म ।
मृत्तिका—स्त्री० मिट्टी । [शिव ।
मृत्युंजय—पु० मृत्यु को जीतनेवाला,
मृत्यु—स्त्री० मौत, यमराज ।
मृत्युलोक—पु० यमलोक, मर्त्यलोक ।
मृथा—वृथा, मृषा । [हो, सुकुमार, मंद ।
मृद—कोमल, जो सुनने में अप्रिय न
मृदुल—कोमल, कृपालु, सुकुमार ।
मृन्मय—मिट्टी का बना हुआ ।

मृषा—व्यर्थ, असत्य ।
मृष्ट—शोधित ।
मृष्टि—स्त्री० शोधन ।
मेंबर—पु० सभासद, सदस्य ।
मेकदार—पु० परिमाण, मात्रा ।
मेख—पु० खूँटी, कील, पच्चड़ ।
मेखल—पु० मेखला ।
मेखला—स्त्री० वह वस्तु जो दूसरी वस्तु के मध्य में उसे चारो ओर से घेरे हुए पड़ी हो, करधनी, मंडल, पर्वत का मध्य भाग, कफनी ।
मेगजीन—पु० बारूदखाना, सामयिक पत्र, विशेषकर मासिक पत्र ।
मेघ—पु० बादल । [शामियाना ।
मेघडंबर—पु० मेघ का गर्जन, बड़ा
मेघनाद—पु० मेघगर्जन, वरुण, मोर ।
मेघमाला—स्त्री० बादलों की घटा ।
मेघराज—पु० इंद्र ।
मेचकता—स्त्री० कालापन ।
मेज—स्त्री० टेबुल ।
मेजर—पु० फौज का एक अफसर ।
मेजवान—पु० आतिथ्य करनेवाला ।
मेजा—पु० मेढ़क ।
मेठ—पु० मजदूरों का अफसर ।
मेडल—पु० तमगा, पदक ।
मेड़—पु० छोटा बाँध, दो खेतों के बीच का रास्ता ।
मेढ़क—पु० बेंग ।
मेद—पु० चरबी, कस्तूरी ।

मेदा—पु० पेट ।
मेदिनी—स्त्री० धरती ।
मेध—पु० यज्ञ ।
मेधा—स्त्री० बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति ।
मेधावी—जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो, बुद्धिमान्, विद्वान् ।
मेम—स्त्री० यूरोप आदि की स्त्री ।
मेम्बर—पु० सदस्य ।
मेरु—पु० एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा जाता है, जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना ।
मेरुदंड—पु० रीढ़, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गयी हुई सीधी कल्पित रेखा ।
मेल—पु० मिलना, मिलाप, एकता, सुलह, मित्रता, उपयुक्तता, बराबरी, ढंग, मिलावट ।
मेवा—पु० किशमिश बादाम आदि सुखाये हुए बढिया फल । [घर ।
मेवासा—पु० किला, रक्षा का स्थान,
मेष—पु० भेड़, एक राशि । [वर्षा ।
मेह—पु० मूत्र, प्रमेह रोग, मेघ,
मेहनत—स्त्री० परिश्रम । [दूरी ।
मेहनताना—पु० पारिश्रमिक, मज-
मेहमान—पु० अतिथि ।
मेहमानदारी—स्त्री० अतिथि सत्कार ।
मेहर—स्त्री० कृपा, दया ।
मेहरबान—कृपालु ।

मेहरबानी—स्त्री० दया । [वाला ।
मेहरा—पु० स्त्रियों की सी चेष्टा·
मेहराब—स्त्री० द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार भाग ।
मेहरी—स्त्री० स्त्री, पत्नी ।
मैका—पु० नैहर ।
मैगल—मस्त हाथी ।
मैत्री—स्त्री० दोस्ती ।
मैथिली—स्त्री० सीता, एक भाषा ।
मैथुन—पु० संभोग ।
मैदा—पु० बहुत महीन आटा ।
मैदान—पु० लंबीचौड़ी भूमि । युद्ध-क्षेत्र । मु० मैदान में आना = मुकाबले पर आना । मैदान साफ होना = मार्ग में कोई बाधा न रहना । मैदान मारना = जीतना ।
मैन—पु० कामदेव, मोम ।
मैल—स्त्री० गंदगी, दोष, विकार ।
मोक्ष—पु० मुक्ति, छुटकारा, मृत्यु ।
मोघ—निष्फल, चूकनेवाला ।
मोचन—पु० बंधन आदि से छुड़ाना, दूर करना, रहित करना ।
मोजा—पु० पायताबा ।
मोटर—पु० हवागाड़ी ।
मोतबर—पु० विश्वासपात्र ।
मोती—पु० समुद्र में सीपी में से निकलनेवाला रत्न ।
मोद—पु० आनंद, सुगंध ।
मोदक—पु० लड्डू, गुड़ ।

मोम—पु० वह चिकना और नरम पदार्थ जिससे मधुमक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं।

मोमजामा—पु० वह कपड़ा जिसपर मोम का रोगन चढ़ाया जाता है।

मोमबत्ती—स्त्री० मोम की बनी हुई जलनेवाली बत्ती।

मोमिन—पु० धर्मनिष्ठ मुसलमान, जोलाहों की एक जाति।

मोरंग—पु० नैपाल का पूर्वी भाग।

मोरचंद्रिका—स्त्री० मोर पंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा—पु० जंग, दर्पण पर जमी मैल, गढ़ के चारो ओर का गड्ढा, वह स्थान जहाँ से सेना और गढ़ आदि की रक्षा की जाती है। मु० मोरचाबंदी करना = गढ़ के चारो ओर यथा स्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा लेना = युद्ध करना।

मोरछल—पु० मोर के परों से बनाया हुआ चँवर। [बना हुआ मुकुट।

मोरमुकुट—पु० मोर के पंखों का

मोष—पु० मोक्ष।

मोह—पु० अज्ञान, भ्रम, शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की दुःखदायिनी बुद्धि, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता, दुःख, प्रेम, बेहोशी।

मोहक—मोह उत्पन्न करनेवाला, लुभानेवाला।

मोहताज—निर्धन, गरीब।

मोहताजी—स्त्री० गरीबी।

मोहन—लुभावना, लोभ उत्पन्न करनेवाला। पु० श्रीकृष्ण, एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्छित करते हैं, एक अस्त्र जिससे शत्रु मोहित किया जाता था, कामदेव का एक बाण।

मोहनभोग—पु० हलुआ। [माला।

मोहनमाला—स्त्री० सोने के दानों की

मोहना—मोहित होना, मोहित करना, मूर्च्छित होना, भ्रम में डालना।

मोहनी—मोहनेवाली। स्त्री० माया, जादू।

मोहब्बत—स्त्री० प्रेम।

मोहर—स्त्री० ठप्पा, छाप, अशरफी।

मोहरा—पु० ऊपरी या अगला भाग, सेना की अगली पंक्ति, फौज की चढ़ाई का रुख, छेद, चोली आदि की तनी, शतरंज की गोटी, मिट्टी का साँचा, जहरमोहरा, सिंगिया विष। मु० मोहरा लेना = सेना का मुकाबला करना, भिड़ जाना।

मोहरात्रि—स्त्री० वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है।

मोहरिर—पु० दे० "मुहरिर"।

मोहलत—स्त्री० दे० "मुहलत"।

मोहित—मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, आसक्त।

मोहिनी—दे० "मोहनी"।
मोही—मोहित करनेवाला, प्रेम करनेवाला, लोभी, अज्ञानी।
मौका—पु० घटनास्थल, स्थान, अवसर।
मौकूफ—बरखास्त, निर्भर।
मौक्तिक—पु० मोती।
मौखिक—मुख का, जबानी।
मौज—स्त्री० लहर, तरंग, मन की उमंग, धुन, सुख, विभूति।
मौजा—पु० गाँव।
मौजी—जो जी में आवे वही करनेवाला, आनंदी।
मौजूद—उपस्थित, तैयार।
मौजूदगी—स्त्री० उपस्थिति।
मौजूदा—प्रस्तुत, वर्तमान काल का।
मौत—स्त्री० मृत्यु।
मौन—चुप। पु० चुप्पी, मुनिव्रत।
मौर—पु० विवाह काल का शिरोभूषण, प्रधान, शिरोमणि, मंजरी, गर्दन।
मौरूसी—पैतृक।
मौलवी—पु० मुसलमान धर्म का आचार्य्य, अरबी फारसी का पंडित।
मौलसिरी—स्त्री० एक फूल का पेड़।
मौलाना—पु० मौलवी।
मौलि—पु० चोटी, मस्तक, किरीट, जूड़ा, सरदार।
मौसिम—पु० उपयुक्त समय, ऋतु।
मौसिमी—मौसिम के अनुकूल।
म्यान—पु० तलवार आदि रखने का खोल, शरीर।
म्रियमाण—अवसन्न, मृतप्राय।
म्लान—मलिन, दुर्बल।
म्लानि—स्त्री० विषाद, मलिनता।
म्लेच्छ—नीच, पापी। पु० वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो।
म्युनिसिपैलिटी—स्त्री० किसी नगर के स्वास्थ्य तथा स्वच्छता आदि का प्रबन्ध करनेवाली प्रतिनिधि सभा।
म्यूजिक—पु० संगीत विद्या, गाना बजाना आदि। [आदि।
म्यूजिशियन—पु० संगीतज्ञ, गायक
म्यूजियम—पु० अजायबघर।

य

—एक अक्षर। पु० यश, योग, सवारी, संयम।
यंत्र—पु० औजार, कल, बन्दूक, बाजा, ताला, जंतर। [नियंत्रण।
यंत्रण—पु० रक्षा करना, बाँधना,
यंत्रणा—स्त्री० क्लेश, पीड़ा।
यंत्रमंत्र—पु० जादू टोना।
यंत्रशाला—स्त्री० वेधशाला, वह स्थान जहाँ बहुत से यंत्र रखे हों।
यंत्रालय—पु० छापाखाना, वह स्थान जहाँ कलें हों।
यंत्रित—यंत्र आदि के द्वारा रोका

या बंद किया हुआ, ताले में बंद ।
यंत्री—पु० तांत्रिक, बाजा बजानेवाला।
यकता—अद्वितीय ।
यकताई—स्त्री० एक होने का भाव ।
यकबयक—एकाएक, एक बारगी ।
यकबारगी—अचानक ।
यकसाँ—बराबर, एक समान ।
यकायक—अचानक, हठात ।
यकीन—पु० विश्वास ।
यकीनन्—जरूर, अवश्य, बेशक ।
यकृत—पु० पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है ।
यक्ष—पु० एक देवयोनि, कुवेर ।
यक्षपति—पु० कुवेर ।
यक्षपुर—पु० अलकापुरी ।
यक्षिणी—स्त्री० यक्ष की पत्नी, कुवेर की पत्नी ।
यक्ष्मा—पु० क्षयी रोग ।
यगाना—अपना, एक वंश का, अकेला ।
यजन—पु० यज्ञ करना ।
यजमान—पु० यज्ञ करनेवाला, ब्राह्मणों को दान देनेवाला ।
यजु—पु० यजुर्वेद ।
यजुर्वेद—पु० चार वेदों में एक जिसमें विशेषतः यज्ञकर्मों का विस्तृत विवरण है । [कृत्य ।
यज्ञ—पु० हवन पूजन आदि वैदिक
यज्ञपति—पु० यज्ञ करनेवाला, विष्णु ।
यज्ञपत्नी—स्त्री० दक्षिणा ।
यज्ञपुरुष—पु० विष्णु ।
यज्ञसूत्र—पु० जनेऊ ।
यज्ञेश्वर—पु० विष्णु ।
यज्ञोपवीत—पु० जनेऊ ।
यति—पु० संन्यासी, ब्रह्मचारी, विराम।
यतिभंग—पु० काव्य में विराम का यथास्थान न पड़ने का दोष ।
यती—पु० दे० "यति" ।
यतीम—पु० अनाथ ।
यतीमखाना—पु० अनाथालय ।
यत्किंचित—थोड़ा ।
यत्न—पु० उद्योग, उपाय, हिफाजत ।
यत्र—जहाँ ।
यत्रतत्र—जहाँ तहाँ ।
यथा—जैसे ।
यथाक्रम—क्रमानुसार ।
यथातथ्य—ज्यों का त्यों ।
यथापूर्व—पहले जैसा ।
यथामति—बुद्धि के अनुसार ।
यथायोग्य—जैसा चाहिये ।
यथार्थ—उचित । [वैसा ।
यथावत्—ज्यों का त्यों, जैसा चाहिये
यथाशक्ति—शक्ति के अनुसार ।
यथासंभव—जहाँ तक हो सके ।
यथासाध्य—यथाशक्ति ।
यथेच्छ—इच्छा के अनुसार ।
यथेच्छाचार—पु० स्वेच्छाचार ।
यथेष्ट—इच्छानुरूप, पर्याप्त ।

यथोक्त—जैसा कहा गया हो ।
यथोचित—जैसा उचित हो वैसा ।
यदा—जब, जहाँ ।
यदाकदा—कभी कभी ।
यदि—अगर । [श्रीकृष्ण ।
यदुनंदन, यदुपति, यदुराज—पु०
यद्यपि—अगरचे । [पर ।
यदृच्छया—अकस्मात्, मनमाने तौर
यदृच्छा—स्त्री० स्वेच्छाचार, आकस्मिक संयोग ।
यम—पु० यमज, मृत्यु के देवता, इंद्रिय-निग्रह, चित्त को धर्म में स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन, दो की संख्या । [का दूसरा दिन ।
यमघंट—पु० एक दुष्ट योग, दीपावली
यमज—पु० जौआँ ।
यमपुर—पु० यमलोक ।
यमयातना—स्त्री० नरक या मृत्यु काल की पीड़ा ।
यमराज—पु० यमों के राजा ।
यमल—पु० जोड़ा, यमज ।
यव—पु० जौ । [लमान ।
यवन—पु० यूनान देशवासी, मुस-
यवनिका—स्त्री० नाटक का परदा ।
यश—पु० कीर्ति, बड़ाई ।
यशस्वी—कीर्तिमान् ।
यशी—यशवाला ।
यष्टि—स्त्री० लाठी, डाल ।
यष्टिका—स्त्री० छड़ी ।
यहूदी—यहूद देशवासी ।
या—अथवा ।
याग—पु० यज्ञ ।
याचक—पु० माँगनेवाला, भिक्षुक ।
याचना—माँगना ।
याजक—पु० यज्ञकर्त्ता ।
याजन—पु० यज्ञ की क्रिया ।
याज्ञिक—पु० यज्ञ करने या करानेवाला ।
यातना—स्त्री० पीड़ा, यमलोक की पीड़ा ।
याता—स्त्री० देवरानी या जेठानी ।
यातायात—पु० आमदरफ्त ।
यातुधान—पु० राक्षस । [टन ।
यात्रा—स्त्री० सफर, प्रस्थान, तीर्था-
यात्री—पु० मुसाफिर, तीर्थाटन करनेवाला ।
याद—स्त्री० स्मृति ।
यादगार—स्त्री० स्मृति-चिन्ह ।
याददाश्त—स्त्री० स्मृति, स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात ।
यान—पु० गाड़ी, रथ आदि की सवारी, विमान, चढ़ाई । [कि ।
यानी, याने—अर्थात्, मतलब यह
यापन—पु० चलाना, बिताना, निब-टाना । [रात ।
याम—पु० पहर, समय । स्त्री०
यामल—पु० जुड़वाँ संतान ।
यामिनी—स्त्री० रात ।
याम्य—यम का, दक्षिण का ।

यास्योत्तर रेखा—स्त्री० वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से होती हुई भूगोल के चारो ओर मानी गयी है।
यार—पु० मित्र, उपपति, जार।
यारबाश—रसिक।
याराना—मित्रता का। मित्रता, स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।
यारी—स्त्री० मित्रता, स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।
याल—पु० घोड़े आदि की गर्दन पर के लम्बे बाल। [उचित।
युक्त—मिला हुआ, नियुक्त, साथ,
युक्ति—स्त्री० उपाय, चातुरी, चाल, नीति, तर्क, उचित विचार, मिलन।
युक्तियुक्त—युक्तिसंगत, वाजिब।
युग—पु० जोड़ा, जुआ, पाँसे की गोल गोटियाँ, बारह वर्ष का काल, समय, सत्ययुग आदि चार युग।
युगपत्—साथ साथ।
युगल—पु० जोड़ा। [समय।
युगांतर—पु० दूसरा युग, दूसरा
युग्म—पु० जोड़ा, द्वंद्व, मिथुन राशि।
युत—युक्त, मिला हुआ।
युति—स्त्री० योग, मिलाप।
युद्ध—पु० लड़ाई।
युरेशियन—वह जिसके माता पिता में से कोई एक यूरोप का और दूसरा एशिया का हो। [शत्रुता।
युयुत्सा—स्त्री० युद्ध करने की इच्छा,

युयुत्सु—लड़ने की इच्छा रखनेवाला।
युवक—पु० जवान।
युवति, युवती—स्त्री० जवान स्त्री।
युवराज—पु० राजा का वह सब से बड़ा लड़का जिसे आगे चल कर राज्य मिलनेवाला हो।
युवा—जवान।
यूत—पु० मिलावट।
यूथ—पु० समूह, दल, सेना।
यूथप, यूथपति—पु० सेनापति।
यूथिका—स्त्री० जूही का फूल।
युनाइटेड—मिला हुआ, संयुक्त।
युनाइटेड स्टेट्स—पु० अमेरिका।
युनाइटेड किंगडम—पु० ब्रृटिश साम्राज्य।
यूनानी—यूनान देश संबंधी। स्त्री० यूनान की भाषा, यूनान देशवासी, यूनान देश की चिकित्सा-प्रणाली।
यूनिवर्सिटी—स्त्री० विश्वविद्यालय।
यूनियन—पु० संघ, सभा।
यूनियन जैक—पु० ग्रेट ब्रृटेन का राष्ट्रीय झंडा, यूनियन फ्लैग।
यूप—पु० यज्ञ का वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
योंही—ऐसे ही, व्यर्थ ही।
योग—पु० मेल, मिलना, उपाय, ध्यान, संगति, प्रेम, छल, प्रयोग, औषध, धन, लाभ, कोई शुभ काल, नियम, साम दाम आदि चारो उपाय,

संबंध, धन-संपत्ति बढ़ाना, वैराग्य, जोड़, सुभीता, मुक्ति का उपाय, चित्त की वृत्तियों का निरोध ।

योगक्षेम—पु० जीवन-निर्वाह, कुशल-मंगल, राष्ट्र की सुव्यवस्था, नये पदार्थ की प्राप्ति और रक्षा ।

योगनिद्रा—स्त्री० युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा जो दुर्गा मानी जाती है ।

योगमाया—स्त्री० भगवती ।

योगरूढ़ि—स्त्री० दो शब्दों के मेल से बना हुआ वह शब्द जो सामान्य अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ को बतावे ।

योगात्मा—पु० योगी ।

योगिनी—स्त्री० रण-पिशाचिनी, तपस्विनी, योगमाया । [शिव ।

योगी—आत्मज्ञानी, योगाभ्यासी,

योगींद्र, योगीश, योगीश्वर—पु० बहुत बड़ा योगी ।

योगीश्वरी—स्त्री० दुर्गा ।

योगेंद्र—पु० बहुत बड़ा योगी । [योगी ।

योगेश्वर—पु० श्रीकृष्ण, शिव, बड़ा

योग्य—लायक, श्रेष्ठ, उचित, आदरणीय ।

योग्यता—स्त्री० क्षमता, लियाकत, बड़ाई, बुद्धिमानी, सामर्थ्य, अनुकूलता, औकात, गुण, इज्जत, उपयुक्तता ।

योजक—मिलानेवाला ।

योजन—पु० परमात्मा, योग, मिलान, एक दूरी ।

योजना—स्त्री० नियुक्ति, प्रयोग, मिलान, बनावट, रचना, आयोजन ।

योद्धा—पु० युद्ध करनेवाला ।

योनि—स्त्री० खान, उत्पत्ति-स्थान, स्त्रियों की जननेंद्रिय, प्राणियों का विभाग जिसकी संख्या ८४ लाख कही गयी है, देह ।

योषित्—स्त्री० नारी, स्त्री ।

यौगिक—मिला हुआ, दो शब्दों या प्रकृति और प्रत्यय से बना शब्द ।

यौतुक—पु० दहेज ।

यौवन—पु० युवावस्था, जवानी ।

यौवराज्य—पु० युवराज होने का भाव, युवराज का पद ।

र

र—एक अक्षर । पु० अग्नि, कामाग्नि ।

रंक—गरीब, कंजूस, सुस्त ।

रंग—पु० राँगा, नाचना-गाना, नृत्य या अभिनय का स्थान, रंगक्षेत्र, वर्ण, युवावस्था, शोभा, प्रभाव, धाक, क्रीड़ा, आनंद-उत्सव, युद्ध, मौज, मजा, हालत, दृश्य, प्रसन्नता, कृपा, प्रेम, ढंग, प्रकार, वह पदार्थ जिससे कुछ रंगा जाय । मु० रंग जमना = असर पड़ना । रंग बाँधना = प्रभाव

डालना। रंग लाना = गुण दिखाना। रंग में भंग होना = आनंद में विघ्न पड़ना। [हालत।

रंगत—स्त्री० रंग का भाव, मजा,

रँगना—रंगीन करना, अनुकूल करना, प्रेम में फँसना, आसक्त होना।

रंगबिरंगा—अनेक रंगों का, तरह तरह का।

रंगभवन—पु० रंग महल।

रंगभूमि—स्त्री० जलसे की जगह, खेल का स्थान, नाट्यशाला, अखाड़ा, युद्धक्षेत्र।

रंगमंच—पु० नाटक का स्टेज।

रंगमहल—पु० भोग-विलास का स्थान, आमोद-प्रमोद करने का भवन।

रंगरली—स्त्री० आमोद-प्रमोद।

रंगरस—पु० रंगरली।

रंगरसिया—पु० विलासी पुरुष।

रंगराता—अनुरागपूर्ण।

रँगरूट—पु० सेना या पुलिस में नया भर्ती होनेवाला सिपाही।

रंगरेज—पु० कपड़ा रंगनेवाला।

रंगरेली—स्त्री० दे० "रंगरली"।

रंगशाला—स्त्री० नाट्यशाला।

रंगसाज—पु० रंग बनानेवाला, चीजों पर रंग चढ़ानेवाला। [काम।

रंगसाजी—स्त्री० रंग बनाने का

रंगी—विनोदशील। [मजेदार।

रंगीन—रंगा हुआ, विलासप्रिय,

रंगीनी—स्त्री० रसिकता, सजावट।

रंगीला—रसिक, सुंदर, प्रेमी, आनंदी।

रंच, रंचक—थोड़ा।

रंज—पु० दुःख, शोक। [वाला।

रंजक—रँगनेवाला, प्रसन्न करने-

रंजन—पु० रँगने की क्रिया, प्रसन्न करने की क्रिया।

रंजित—रँगा हुआ, प्रसन्न, अनुरक्त।

रंजिश—स्त्री० रंज होने का भाव, मनमुटाव, शत्रुता।

रंजीदा—दुखित, नाराज।

रँडुवा—पु० वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गयी हो।

रंता—अनुरक्त।

रंदा—पु० बढ़ई का एक औजार।

रंधन—पु० रसोई बनाना।

रंध्र—पु० छेद। [भारी शब्द।

रंभ—पु० बाँस, एक प्रकार का बाण,

रंभा—स्त्री० केला, गौरी, उत्तर दिशा, वेश्या, एक अप्सरा।

रंभाना—गाय का बोलना।

रँहचटा—पु० चस्का, प्रीति की चाह।

रई—पगी हुई, डूबी हुई, अनुरक्त, संयुक्त। स्त्री० मथानी, दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण।

रईस—पु० रियासतदार, अमीर।

रउताई—स्त्री० स्वामित्व।

रकबा—पु० क्षेत्रफल।

रकम—स्त्री० लिखने की क्रिया या

भाव, छाप, धन, गहना, चालाक, प्रकार, तरह, लगान की दर।

रकाब--स्त्री० घोड़े की जीन का पाँवदान। मु० रकाब पर पैर रखना = चलने के लिये तैयार होना।

रकाबा--पु० बड़ी थाली, परात।

रकाबी--स्त्री० तश्तरी। [प्रेमी।

रकीब-पु० किसी प्रेमिका का दूसरा

रक्त--रँगा हुआ, लाल। पु० लहू, केसर, ताँबा, कमल, सिंदूर, इंगुर, लाल चंदन, लाल रंग।

रक्तकंठ--पु० कोयल, बैंगन।

रक्तपात--पु० खून-खराबी।

रक्तबीज--पु० अनार।

रक्तार्श--पु० खूनी बवासीर।

रक्तिका--स्त्री० घुँघची।

रक्ष--पु० रक्षक, रक्षा, राक्षस।

रक्षक-पु० रक्षा करनेवाला, पहरेदार।

रक्षण-पु० रक्षा करना, पालन-पोषण।

रक्षा--स्त्री० बचाव।

रक्षागृह--पु० सूतिका गृह।

रक्षाबंधन--पु० एक त्यौहार जिसमें राखी बाँधी जाती है।

रखवाली--स्त्री० हिफाजत।

रखेली--स्त्री० उपपत्नी।

रग--स्त्री० नस या नाड़ी।

रगड़--स्त्री० घर्षण, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, हुज्जत, भारी परिश्रम।

रगबत--स्त्री० चाह, इच्छा, रुचि।

रग रेशा--पु० पत्तियों की नसें, शरीर का प्रत्येक अंग।

रघुनंदन, रघुनाथ, रघुनायक, रघुपति, रघुराज, रघुवर, रघुवीर--पु० श्रीरामचंद्र।

रचना--बनाना, सिरजना, पद्य आदि लिखना, पैदा करना, ठानना, कल्पना करना, सजाना, रँगना, रंग चढ़ना, अनुरक्त होना। स्त्री० निर्माण, बनाने का कौशल, निर्मित वस्तु, चमत्कारपूर्ण गद्य या पद्य।

रचयिता--पु० बनानेवाला।

रचित--बनाया हुआ।

रज--पु० स्त्रियों के योनि-मार्ग से प्रति मास तीन चार दिन तक निकलनेवाला रक्त, रजोगुण, पाप, जल, पराग, आठ परमाणुओं का एक मान, चाँदी, धोबी। स्त्री० धूल, रात, ज्योति।

रजक--पु० धोबी। [सोना, लहू।

रजत--सफेद, लाल। स्त्री० चाँदी,

रजनी--स्त्री० रात, हल्दी।

रजनीकर--पु० चंद्रमा।

रजनीमुख--पु० संध्या।

रजनीश--पु० चंद्रमा। [राजा।

रजवाड़ा--पु० राज्य, देशी रियासत,

रजस्वला--स्त्री० जिसका रज प्रवाहित होता हो। [स्त्रीलिंग

रजा--स्त्री० मरजी, छुट्टी, अनुमति,

रजाइ—स्त्री० दे० "रजा"। आज्ञा।
रजामंद—सहमत। [सहमत होना।
रजामंदी—स्त्री० सहमति, राजी या
रजाय—स्त्री० आज्ञा, मरजी।
रजिस्टर—पु० अंगरेजी ढंग की बही किताब।
रजिस्टरी—स्त्री० किसी लिखित प्रतिज्ञा-पत्र को कानून के मुताबिक सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराने का काम। चिट्ठी वगैरह भेजने के समय डाकखाने के रजिस्टर में उन्हें दर्ज कराने का काम।
रजील—नीच।
रजोगुण—पु० प्रकृति के तीन गुणों में से एक जिससे भोग विलास आदि की रुचि होती है।
रजोदर्शन—पु० रजस्वला होना, स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोधर्म—पु० स्त्रियों का मासिक धर्म।
रज्जु—स्त्री० रस्सी, बागडोर।
रट—स्त्री० किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।
रण—पु० लड़ाई।
रणछोड़—पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।
रणरंग—पु० लड़ाई का उत्साह।
रणसिंघा—पु० तुरही।
रणस्तंभ—पु० विजय के स्मारक में बनाया हुआ स्तंभ। [मैदान।
रणांगण—पु० युद्धक्षेत्र, लड़ाई का
रत—अनुरक्त, लिप्त। पु० मैथुन, प्रीति, खून।
रतनार—कुछ लाल।
रतनारी—स्त्री० लाली।
रतालू—पु० सुथनी।
रति—स्त्री० कामदेव की पत्नी जो सौंदर्य्य की मूर्ति मानी जाती है, कामक्रीड़ा, संभोग, प्रीति, शोभा, शृंगार रस का स्थायी भाव।
रतिक—जरा सा।
रतिदान—पु० संभोग।
रतिनायक, रतिनाह, रतिपति—पु० कामदेव। [प्रकार
रतिबंध—पु० संभोग करने का
रतिरमण—पु० कामदेव, मैथुन।
रतिराज—पु० कामदेव।
रतिवंत—सुंदर।
रतिशास्त्र—पु० कामशास्त्र। [रोग।
रतौंधी—स्त्री० रात में नहीं सूझने का
रत्ती—स्त्री० आठ चावल का मान। मु० रत्ती भर=जरा सा।
रत्न—पु० मणि, मानिक, सर्वश्रेष्ठ।
रत्नगर्भा—स्त्री० पृथ्वी।
रत्ननिधि—पु० समुद्र। [का समूह।
रत्नाकर—पु० समुद्र, खान, रत्नों
रथ—पु० घोड़ागाड़ी की तरह एक पुरानी सवारी, शरीर, चरण।
रथयात्रा—स्त्री० एक त्यौहार।
रथवाह—पु० रथ चलानेवाला, घोड़ा।

रथांगपाणि—पु० विष्णु ।

रथिक—पु० रथी ।

रथी—रथ पर चढ़ा हुआ । पु० रथ पर चढ़ कर लड़नेवाला, एक हजार योद्धाओं से अकेला लड़नेवाला ।

रथ्या—स्त्री० रास्ता, नाली ।

रद—दे० "रद्द" । पु० दाँत ।

रदच्छद, रदछद—पु० ओष्ठ, रति काल में दाँत लगने का चिन्ह ।

रददान—पु० रति काल में दाँतों से दबाना ।

रदन—पु० दाँत ।

रदपट—पु० ओष्ठ ।

रद्द—जो काटछाट कर दिया या बदल दिया गया हो, जो निकम्मा हो गया हो । स्त्री० कै, वमन ।

रद्दबदल—पु० परिवर्तन ।

रद्दा—पु० दीवार की पूरी लम्बाई में एक बार रखी हुई मिट्टी या ईंट की जोड़ाई, नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह या खंड ।

रद्दी—निकम्मा ।

रद्दीखाना—पु० रद्दी और निकम्मी चीजें रखने का स्थान ।

रनित—झंकार करता हुआ ।

रनिवास—पु० रानियों के रहने का महल, जनानखाना ।

रफा—दूर किया हुआ, दबाया हुआ ।

रफादफा—निबटाया हुआ, शांत ।

रफीदा—पु० वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसा जाता है ।

रफू—पु० फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भर कर उसे बराबर करना ।

रफूगर—पु० रफू करनेवाला ।

रफूगरी—स्त्री० रफू करने का काम ।

रफूचक्कर—गायब ।

रफतनी—स्त्री० जाने की क्रिया या भाव, माल का बाहर जाना ।

रफ्तार—स्त्री० गति ।

रफ्ता रफ्ता—धीरे धीरे, क्रम क्रम से ।

रब—पु० ईश्वर ।

रबड़—पु० एक लचीला पदार्थ ।

रबाब—पु० सारंगी की तरह का एक बाजा ।

रबाबिया—रबाब बजानेवाला ।

रबी—स्त्री० वसंत ऋतु, वसंत ऋतु में काटी जानेवाली फसल ।

रब्त—पु० अभ्यास, संबंध ।

रब्तजब्त—मेलजोल, घनिष्टता ।

रब्ब—पु० दे० "रब" ।

रमक—स्त्री० झूले की पेंग, झकोरा ।

रमजान—पु० एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं ।

रमण—मनोहर, प्रिय, रमनेवाला । पु० विलास, क्रीड़ा, मैथुन, घूमना, पति, कामदेव ।

रमणी—स्त्री० नारी ।

रमणीक—सुंदर ।

रमणीयता—स्त्री० सुंदरता ।

रमता—घूमता फिरता।

रमना—भोगविलास के लिये कहीं रहना, मजा उड़ाना, व्याप्त होना, अनुरक्त होना, घूमना, चल देना। पु० चरागाह, बाग, रमणीक स्थान, वह सुरक्षित स्थान जहाँ पशु शिकार के लिये या पालने के लिये छोड़ दिये जाते हैं। [जानना।

रमल—पु० पासे फेंक कर शुभाशुभ

रमा—स्त्री० लक्ष्मी।

रमाकांत, रमानरेश—पु० विष्णु।

रमाना—लुभाना, मोहित करना, अपने अनुकूल बनाना, ठहराना, लगाना।

रमानिवास, रमारमण—पु० विष्णु।

रमूज—स्त्री० कटाक्ष, इशारा, पहेली, श्लेष, रहस्य।

रमैया—पु० राम, ईश्वर।

रम्माल—पु० पासा फेंक कर फलित कहनेवाला।

रम्य—सुंदर, रमणीय।

रम्हाना—गाय का बोलना।

रय—पु० रज, धूलि, तेजी, प्रवाह।

रयन—स्त्री० रात। [होना, मिलना।

रयना—रंग से भिगाना, अनुरक्त

रय्यत—स्त्री० प्रजा।

ररंकार—पु० रकार की ध्वनि।

ररकना—कसकना।

ररना—रटना।

रलना—एक में मिलना।

रली—स्त्री० क्रीड़ा, आनंद।

रव—पु० गुंजार, शब्द, शोरगुल, सूर्य।

रवताई—स्त्री० प्रभुत्व।

रवन—पु० रमण करनेवाला, पति।

रवनी—स्त्री० रमणी, पत्नी।

रवन्ना—पु० रवाना किये हुए माल का ब्योरा, राहदारी का परवाना। वह नौकर जो स्त्रियों के कामकाज करने या सौदा लाने को ड्योढ़ी पर रहता है।

रवाँ—बहता हुआ, जारी।

रवा—ठीक, उचित। पु० कण, बारूद का दाना, घुँघरुओं में शब्द करने के लिये डाले जानेवाले छर्रे।

रवाज—पु० रस्म, प्रथा। [कण हों।

रवादार—संबंध रखनेवाला, जिसमें

रवानगी—स्त्री० प्रस्थान, बिदाई, रुखसती। [करना।

रवाना—चल पड़ना, यात्रा आरम्भ

रवानी—स्त्री० बहाव, प्रवाह।

रवायत—स्त्री० कहानी, कहावत।

रवि—पु० सूर्य, आक, अग्नि, सरदार।

रवितनय—पु० यमराज, शनीश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।

रवितनया—स्त्री० यमुना।

रविनंदन—पु० दे० "रवितनय"।

रविनंदिनी—स्त्री० यमुना।

रविवार—पु० एतवार।

रविश—स्त्री० गति, तरीका, क्यारियों

के बीच का छोटा मार्ग ।
रवैया - पु० चाल चलन, तरीका ।
रश्क—पु० डाह, ईर्ष्या ।
रश्मि—पु० किरण, लगाम ।
रस—पु० खाने की चीज का स्वाद जो वैद्यक के अनुसार छः कहा गया है, शरीर की सात धातुओं में एक, तत्व, छः की संख्या, नौ की संख्या, मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद जो काव्य पढ़ने या अभिनय देखने से उत्पन्न होता है, मजा, प्रीति, मोज, कामक्रीड़ा, उमंग, गुण, कोई तरल पदार्थ, पानी, शरबत, पारा, धातुभस्म, तरह । मु० रस भीजना = यौवन का संचार होना ।
रसकेलि—स्त्री० क्रीड़ा, दिल्लगी ।
रसज्ञ—रस का ज्ञाता, काव्यमर्मज्ञ, निपुण । [कच्चा अनाज ।
रसद—सुखद, मजेदार । स्त्री० बखरा,
रसदार—रसयुक्त, स्वादिष्ट ।
रसन—पु० स्वाद लेना, ध्वनि, जीभ ।
रसना—धीरे धीरे बहना, रस में मग्न होना, तन्मय होना, स्वाद लेना, प्रेम में अनुरक्त होना । स्त्री० जीभ, वह स्वाद जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है, रस्सी, लगाम । मु० रस रस = धीरे धीरे ।
रसनेंद्रिय—स्त्री० जीभ ।
रसपति—पु० चन्द्रमा, राजा, पारा, श्रृंगार रस । [भरा ।
रसमसा—अनुरक्त, गीला, पसीने से
रसरंग—पु० प्रेमक्रीड़ा ।
रसराज—पु० पारा, श्रृंगार रस ।
रसवंत—रसीला । पु० रसिक ।
रसवाद—पु० प्रेम की बातचीत, प्रेमपूर्ण छेड़छाड़, बकवाद । [झोल ।
रसा-स्त्री० पृथ्वी, जीभ । पु० शोरबा,
रसाई—स्त्री० पहुँच ।
रसातल—पु० एक लोक । मु० रसातल में पहुँचाना = बरबाद कर देना ।
रसाभास—पु० साहित्य में किसी रस का अनुपयुक्त स्थान में वर्णन ।
रसायन—पु० वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बूढ़ा या बीमार न हो, पदार्थों के तत्त्वों का ज्ञान ।
रसायन शास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्त्वों और उनके परमाणुओं का विवेचन हो ।
रसाल—मधुर, रसीला, सुंदर । पु० ऊख, आम, कटहल, गेहूँ, कर ।
रसालस—पु० कौतुक ।
रसालिका—मधुर ।
रसिक—पु० वह जो रस या स्वाद लेता हो, सहृदय, काव्यमर्मज्ञ, रसिया, मर्मज्ञ, भावुक ।
रसिकविहारी—पु० श्रीकृष्ण ।
रसित—पु० ध्वनि ।

रसिया—पु० रसिक ।
रसीद—स्त्री० प्राप्ति, पहुँच, किसी चीज के मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पुर्जा ।
रसीला—रसयुक्त, स्वादिष्ट, रस या आनंद देनेवाला, सुन्दर ।
रसूम—पु० रस्म का बहुवचन, नियम, कानून, नेग । [स्टाम्प ।
रसूम अदालत—पु० कोर्ट फीस,
रसूल—पु० ईश्वरीय दूत, पैगंबर ।
रसेश्वर-पु० पारा ।
रसेश—पु० श्रीकृष्ण ।
रस्म—स्त्री० मेलजोल, रवाज, प्रथा ।
रहँचटा—दे० "रँहचटा" । [का यंत्र ।
रहँट—पु० कुएँ से पानी निकालने
रहनसहन—स्त्री० चालढाल ।
रहनि—स्त्री० रहना, प्रीति ।
रहम—पु० दया, करुणा ।
रहमत—स्त्री० दया, कृपा ।
रहमदिल—दयालु । [नाम ।
रहमान—दयालु, परमात्मा का एक
रहस—पु० गुप्त भेद, क्रीड़ा, आनंद, गूढ़ तत्त्व, एकांत स्थान ।
रहसना—प्रसन्न होना ।
रहसि—एकांत स्थान । [मजाक ।
रहस्य—पु० गुप्त भेद, गूढ़ तत्त्व, मर्म,
रहित—बिना ।
रहीम—कृपालु । पु० ईश्वर । [पकड़ना ।
राँचना-रंग चढ़ाना, प्रेम करना, रंग

राँजना—काजल लगाना, रँगना ।
राँड़—स्त्री० विधवा, रंडी ।
राँ[illegible]—पु० निकट, पास ।
राइ—पु० छोटा राजा, सरदार ।
राई—स्त्री० छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा, राजापन । पु० राजा । मु० राई से पर्वत करना = छोटी बात को बहुत बढ़ा देना ।
राइफल—स्त्री० बड़ी बंदूक ।
राउ—पु० राजा । [क्षत्रिय, वीर पुरुष ।
राउत—पु० राजवंश का व्यक्ति,
राउर-आपका । पु० रनिवास । [मासी
राका—स्त्री० पूर्णिमा की रात, पूर्ण-
राकेश—पु० चंद्रमा ।
राक्षस—पु० दैत्य, कुवेर के धनकोश के रक्षक, कोई दुष्ट प्राणी ।
राख—स्त्री० भस्म ।
राग—पु० सांसारिक सुखों की चाह, कष्ट, ईर्ष्या, द्वेष, अनुराग, प्रेम, अंगराग, रंग, लाल रंग, अलता, किसी खास धुन में बैठाये हुए स्वर । भारतीय आचार्यों ने राग छः माने हैं—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक । मु० अपना राग अलापना = अपनी ही बात कहना ।
रागना—अनुरक्त होना, रँग जाना, निमग्न होना, गाना ।
रागिनी—स्त्री० संगीत में किसी राग

की पत्नी, प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गयी हैं।

रागी--रँगा हुआ, लाल, रँगनेवाला, विषयवासना में फँसा हुआ। पु० प्रेमी।

राघव - पु० श्रीरामचंद्र।

राचना--रचना, रचा जाना, रँगा जाना, अनुरक्त होना, लीन होना, प्रसन्न होना, शोभा देना, चिन्ता में पड़ना।

राज-पु० राज्य, शासन, खूब चलती, अधिकार-काल, देश, राजा।

राजकन्या--स्त्री० राजा की पुत्री।

राजकर—पु० वह कर जो राजा प्रजा से लेता है। [रखनेवाला।

राजकीय--राजा या राज्य से संबंध

राजकुमार--पु० राजा का पुत्र।

राजगद्दी—स्त्री० राजसिंहासन, राज्याभिषेक, राज्याधिकार।

राजगीर—पु० मकान बनानेवाला कारीगर। [या कार्य।

राजगिरी—स्त्री० राजगीर का पद

राजतिलक—पु० राज्याभिषेक।

राजत्व--पु० राजा का भाव या कर्म, राजपद। [दिया जानेवाला दंड।

राजदंड—पु० राजा की आज्ञा से

राजदंत—पु० बीच का दाँत जो बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदूत—पु० वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से दूसरे राज्य में संदेशा लेकर जाय।

राजद्रोह-पु० राजा या राज्य के प्रति द्रोह। [न्यायालय।

राजद्वार—पु० राजा की ड्योढ़ी,

राजधानी--स्त्री० किसी देश या प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजना-उपस्थित होना, शोभित होना।

राजनीति-स्त्री० राज्यशासन की नीति

राजन्य--पु० क्षत्रिय, राजा।

राजपत्नी--स्त्री० राजा की स्त्री।

राजपथ--पु० बड़ी सड़क।

राजपाट—पु० राजसिंहासन।

राजपुरुष—पु० राज्य का कोई अफसर। [राजमहल।

राजवाड़ी—स्त्री० राजा की बाटिका,

राजभक्ति—स्त्री० राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम।

राजमार्ग-पु० राजपथ, बड़ी सड़क।

राजयक्ष्मा—स्त्री० क्षय रोग।

राजयोग—पु० एक योग, ग्रहों का ऐसा योग जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।

राजराजेश्वर—पु० राजाओं का राजा। [रोग।

राजरोग—पु० असाध्य रोग, क्षय-

राजर्षि—पु० राजवंश या क्षत्रिय कुल का ऋषि।

राजलक्ष्मी—स्त्री० राजवैभव, राजा की शोभा। [बगावत।
राजविद्रोह—पु० राजा के खिलाफ
राजश्री—स्त्री० राजलक्ष्मी।
राजस—रजोगुणी। पु० आवेश।
राजसत्ता—स्त्री० राजशक्ति, राज्य का अस्तित्व।
राजसिंहासन—पु० राजगद्दी, [मयी।
राजसी—राजा के योग्य, रजोगुण-
राजसूय—पु० वह यज्ञ जिसे सम्राट पद का अधिकारी राजा ही करता है।
राजस्व—पु० दे० "राजकर"।
राजहंस—पु० एक प्रकार का हंस।
राजा—पु० बादशाह, अधिपति, एक उपाधि जिसे अंगरेजी सरकार भारतीय रईसों को देती है।
राजाधिराज—पु० राजाओं का राजा।
राजि—स्त्री० पंक्ति, रेखा, राई।
राजित—शोभित, उपस्थित।
राजी—सहमत, नीरोग, खुश, सुखी। स्त्री० पंक्ति, रजामंदी।
राजीनामा—पु० संधिपत्र।
राजीव—पु० कमल।
राजेंद्र—पु० महाराज।
राजेश्वर—पु० राजाओं का राजा।
राज्ञी—स्त्री० रानी।
राज्य—पु० शासन, बादशाहत।
राज्यतंत्र—पु० राज्य की शासन प्रणाली।

राट्—पु० राजा, सरदार।
राणा—पु० राजा। [का समय।
रात—स्त्री० संध्या से प्रातःकाल तक
रातना—रँगा जाना, अनुरक्त होना।
राता—लाल, रँगा हुआ।
रातुल—लाल।
रात्रि—स्त्री० रात।
राधन—पु० साधना, पूजा, प्राप्ति, संतोष। [काम निकालना।
राधना—पूजा करना, सिद्ध करना,
राधा—स्त्री० वैशाख की पूर्णिमा, प्रीति, बिजली, श्रीकृष्ण की प्रेयसी।
राधारमण—पु० श्रीकृष्ण।
राधिका—स्त्री० राधा।
रान—स्त्री० जंघा। [किन।
रानी—स्त्री० राजा की स्त्री, माल-
राम—पु० परशुराम, बलराम, रामचंद्र, तीन की संख्या, ईश्वर।
रामकहानी—स्त्री० बड़ी कहानी, दुःखपूर्ण कथा। [नमः।
रामतारक—पु० राममंत्र—रां रामाय
रामदूत—पु० हनुमान।
रामरस—पु० नमक। [शासन।
रामराज्य—पु० अत्यंत सुखदायक
रामलीला—स्त्री० राम के चरित्र का अभिनय। [औषध।
रामबाण—तुरत प्रभाव दिखानेवाली
रामा—स्त्री० सुंदर स्त्री, नदी, लक्ष्मी, सीता, रुक्मिणी, राधा।

रामानंदी—पु० रामानंद के अनुयायी । [स्त्री० सलाह ।

राय--पु० राजा, सरदार, भाट ।

रायल—राजकीय, शाही, छापने की कलों तथा कागज की एक नाप ।

रायल्टी—स्त्री० किसी किताब के लेखक को प्रकाशक की ओर से स्थायी रूप से मिलनेवाला पारिश्रमिक; खान आदि के लिये राजा या जमींदार को दिया जानेवाला कर ।

रायज—प्रचलित ।

रार--पु० झगड़ा ।

राल—स्त्री० धूप, लार ।

राव - पु० दे० "राय" । [दरी ।

रावटी --स्त्री० कपड़े का घर, बारह-

रावत-पु० छोटा राजा,वीर, सरदार ।

रावल-पु० रनिवास, राजा, सरदार, राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि ।

राश--स्त्री० राशि, अनाज का ढेर ।

राशि—स्त्री० ढेर. संख्या, किसी का उत्तराधिकार, क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा-समूह जो बारह हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क. सिंह, कन्या, तुला,वृश्चिक,धेनु, मकर,कुंभ, मीन ।

राशिनाम —पु० जन्म-काल की राशि के अनुसार रखा हुआ नाम जो पुकार के नाम से भिन्न होता है ।

राशी [illegible]

राष्ट्र—पु० राज्य, देश, प्रजा, एक देश या राज्य में बसनेवाले जनसमुदाय ।

राष्ट्रपति—पु० आधुनिक प्रजातंत्र में निर्वाचित सर्वप्रधान शासक ।

राष्ट्रीय—राष्ट्र संबंधी, राष्ट्र का ।

रास –पु० एक नाच, लगाम, ढेर, झुंड, राशि, जोड़, सूद, गोद ।

रासधारी—पु० रासलीला आदि करनेवाला ।

रासभ—पु० गधा, खच्चर ।

रासमंडली—स्त्री० रासलीला करनेवालों की मंडली । [अभिनय ।

रासलीला—स्त्री० कृष्णलीला संबंधी

रासायनिक-रसायन शास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का ज्ञाता ।

रासो—पु० किसी राजा का पद्यमय जीवनचरित जिसमें उसके युद्ध और वीरता आदि का वर्णन हो ।[उचित ।

रास्त –सीधा, सरल, सही. ठीक,

रास्ता—पु० मार्ग, प्रथा, उपाय ।
मु० रास्ता देखना = प्रतीक्षा करना ।

राह--स्त्री० मार्ग, प्रथा, कायदा ।
मु० राह देखना = इंतजार करना ।

राहगीर—पु० मुसाफिर, पथिक ।

राहजन—डाकू, लुटेरा ।

राहजनी—स्त्री० डकैती, लूट ।

राहत—स्त्री० आराम, सुख ।

राहदानी—स्त्री० एक राज से दूसरे राज में जाने देने का आज्ञापत्र, पासपोर्ट ।

राहदारी—स्त्री० राह पर चलने का महसूल, चुंगी। [परिचय।
राहरीति—स्त्री० राहरस्म, व्यवहार,
राही—पु० यात्री, मुसाफिर।
राहु--पु० पुराणानुसार एक ग्रह।
रिंग—स्त्री० अंगुठी, छल्ला, चूड़ी, घेरा।
रिश्राया—स्त्री० प्रजा, रैयत।
रियायत--स्त्री० कोमल और दया-पूर्ण व्यवहार, नरमी, न्यूनता, कमी, ख्याल, ध्यान, विचार।
रिकाब—दे० "रकाब"।
रिक्त--खाली, निर्धन।
रिक्शा—पु० दो पहिये की कुर्सीनुमा गाड़ी जिसे आदमी खींचता है।
रिझकवार, रिझवार—किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला, रूप पर मोहित होनेवाला, अनुराग करनेवाला, गुण-ग्राहक।[प्रसन्न करना, अनुरक्त करना।
रिझाना--अपने ऊपर किसी को
रिजर्व—संरक्षित। [पन।
रिजालत—स्त्री० नालायकी, कमीना-
रिजेंट—पु० राजा की नाबालिगी में राजकाज चलाने के लिये सरकार की तरफ से नियुक्त प्रतिनिधि।
रिटायर्ड—जो नौकरी से अलग हो चुका हो।
रिपु—पु० दुश्मन।
रिपुता--स्त्री० दुश्मनी।
रिपोर्ट--स्त्री० किसी घटना का सविस्तर वर्णन, सूचना, विवरण।
रिपोर्टर—पु० रिपोर्ट करनेवाला, सम्बाददाता।
रिफार्म—पु० सुधार।
रिमझिम—स्त्री० वर्षा की छोटी छोटी बुंदों का लगातार गिरना।
रियासत--स्त्री० राज्य, अमलदारी, अमीरी।
रिवाज--दे० "रवाज"।
रिश्ता--पु० नाता, सम्बन्ध।
रिश्तेदार—पु० संबंधी, नातेदार।
रिश्तेदारी—स्त्री० नाता, सम्बन्ध।
रिश्तेमंद--संबंधी, नातेदार।
रिश्वत—स्त्री० घूस।
रिश्वतखोर - रिश्वत लेनेवाला।
रिश्वतखोरी—स्त्री० रिश्वत खाना।
रिस—स्त्री० क्रोध, गुस्सा।
रिसहा—पु० क्रोधी।
रिसाना--क्रुद्ध होना।[का अफसर।
रिसालदार—पु० घुड़सवार सेना
रिसाला—पु० घुड़सवार सेना, छोटी किताब, मासिक पत्र।
रिसौंहाँ--क्रुद्ध सा, क्रोध से भरा।
रिहननामा—पु० गिरवी रखे जाने की शर्तों का लेख।
रिहर्सल--पु० नाटक के अभिनय का अभ्यास, वह अभ्यास जो किसी काम को ठीक वक्त पर करने

से पहले किया जाय ।
रिहा--मुक्त, छूटा हुआ ।
रिहाई—स्त्री० छुटकारा ।
री—एक सम्बोधन—अरी ।
रीछ—पु० भालू ।
रीझना—प्रसन्न होना, मोहित होना ।
रीढ़ - स्त्री० पीठ के बीच की हड्डी, मेरुदंड ।
रीत—स्त्री० दे० "रीति" ।
रीतना--खाली होना या करना ।
रीता--खाली ।
रीति--स्त्री० ढंग, रस्म, नियम ।
रीम—पु० कागज की बीस दस्ते की गड्डी ।
रीस—स्त्री० डाह, बराबरी ।
रुंड—पु० बिना सिर का धड़, वह शरीर जिसके हाथ-पैर कटे हों ।
रुँधना—रुकना, उलझना, घेरा जाना ।
रु—और ।
रुआब – पु० रोब, धाक, भय ।
रुक्का—पु० परचा, चिट्ठी, वह लेख जो हुंडी या कर्ज लेनेवाला रुपया लेते समय लिख कर महाजन को देता है ।
रुक्म--पु० सोना, धतूरा ।
रुक्ष—रूखा, ऊबड़-खाबड़, नीरस, सूखा ।
रुख—तरफ, ओर, सामने । पु० मुख, आकृति, मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो, कृपादृष्टि, सामने का भाग, गाल ।
रुखसत—जो कहीं चल पड़ा हो । स्त्री० आज्ञा, रवानगी, प्रस्थान, छुट्टी ।
रुखसती – स्त्री० बिदाई ।
रुखाई--स्त्री० रूखापन, शुष्कता, बेमुरौवती, व्यवहार की कठोरता ।
रुग्न—रोगी, बीमार ।
रुचना—अच्छा लगना ।
रुचि—योग्य । स्त्री० प्रवृत्ति, तबीयत, अनुराग, चाह, किरण, शोभा, खाने की इच्छा, स्वाद ।
रुचिकर— अच्छा लगनेवाला ।
रुचिर—सुंदर, मीठा ।
रुचिवर्द्धक--रुचि उत्पन्न करनेवाला, भूख बढ़ानेवाला ।
रुज—पु० भाँग, कष्ट, घाव ।
रुजी—बीमार ।
रुजू—प्रवृत्त, मुखातिब ।
रुणित— झंकार करता हुआ ।
रुत--पु० कलरव, शब्द ।
रुतबा—पु० ओहदा, इज्जत ।
रुदन—पु० रोना ।
रुद्ध --घेरा हुआ, बंद ।
रुद्र—भयंकर । पु० एक प्रकार के गण देवता जो बारह हैं, ग्यारह की संख्या, शिव का एक रूप, रौद्र रस ।
रुद्रपति—पु० शिव ।
रुद्रपत्नी—स्त्री० दुर्गा, पार्वती ।
रुद्राणी--स्त्री० पार्वती ।

रुधिर--पु० लहू, खून ।

रुधिराशी—पु० लहू पीनेवाला ।

रुनझुन--स्त्री० नुपूर आदि का शब्द ।

रुपया—पु० भारतीय सिक्का, धन ।

रुपहला – चाँदी के रंग का ।

रुबाई--स्त्री० उर्दू या फारसी की एक प्रकार की कविता, एक प्रकार का गाना ।

रुराई – स्त्री० सुंदरता ।

रुरु—पु० कस्तूरी मृग ।

रुरुआ – पु० बड़ी जाति का उल्लू ।

रुरुक्षु—रूखा ।

रुलाना-दूसरे को रोने में प्रवृत करना, इधर उधर फिराना, खराब करना ।

रुष—पु० क्रोध ।

रुष्ट--क्रुद्ध, नाराज ।

रुस्तम – पु० फारस का एक प्राचीन प्रसिद्ध पहलवान, भारी वीर । मु० छिपा रुस्तम—जो देखने में सीधा-सादा पर वास्तव में बहुत वीर हो ।

रूँधना--घेरना, रोकना ।

रू—पु० चेहरा, द्वार, सामना ।

रूख - पु० पेड़, वृक्ष ।

रूखा--जो चिकना न हो, अस्वादिष्ट, सूखा, खुरदुरा. नीरस, कठोर, विरक्त।

रूठना—नाराज होना ।

रूढ़—चढ़ा हुआ, उत्पन्न, प्रसिद्ध, गँवार, कठोर, अकेला, अविभाज्य । पु० रूढ़ि ।

रूढ़यौवना-स्त्री० दे० आरूढ़ यौवना।

रूढ़ि—स्त्री० चढ़ाई, उभार, उत्पत्ति, प्रसिद्ध, प्रथा, विचार, रूढ़ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।

रूप--पु० शकल, सूरत, स्वभाव, सौंदर्य, शरीर, भेस, दशा, समान, लक्षण, रूपक, चाँदी ।

रूपक—पु० मूर्ति, दृश्य काव्य, एक अर्थालंकार, रुपया ।

रूपगर्विता--स्त्री० अपने रूप का अभिमान रखनेवाली नायिका ।

रूपमनी—रूपवती, सुन्दरी ।

रूपमय—अति सुंदर ।

रूपरेखा--स्त्री० चिन्ह, पता ।

रूपवंत—सुंदर ।

रूपा--पु० चाँदी, घटिया चाँदी ।

रूपी—रूपधारी, तुल्य ।

रूपोश--गुप्त, फरार ।

रूपोशी –स्त्री० छिपना ।

रूप्यक--पु० रुपया । [आज्ञापत्र।

रूबकार—पु० मुकदमे की पेशी,

रूबरू --सामने ।

रूम - पु० कमरा, कोठरी, जगह ।

रूमना--झूलना ।

रूमाल—पु० कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जो मुँह-हाथ पोंछने के काम में आता है ।

रूरना—चिल्लाना ।

रूरा – उत्तम, सुन्दर, बहुत बड़ा।
रूल—पु० लकीर खींचने का सीधा डंडा, लकीर, कायदा, कानून, शासन।
रूलर—पु० लकीर खींचने का डंडा, पैमाना, शासक।
रूलिंग—पु० लकीर खींचना।
रूलिंग चीफ—पु० अंगरेजी सरकार के अधीन अपने राज्य का स्वतन्त्र शासक।
रूसी—पु० रूस देश का रहनेवाला। स्त्री० रूस देश की भाषा। सिर के बालों में जमी हुई मैल। [भेद।
रूह—पु० आत्मा, सत्त, इत्र का एक
रेंकना – गदहे का बोलना।
रेंगना—चींटी, साँप आदि का चलना।
रेंड़ी—स्त्री० अंडी।
रेख—स्त्री० लकीर, चिह्न, गिनती, नयी निकलती हुई मूँछें।
रेखता—स्त्री० एक प्रकार का गाना, उर्दू का पुराना नाम। [आकार।
रेखा—स्त्री० लकीर, चिह्न, गिनती,
रेखांकित – रेखा से चिह्नित।
रेखागणित—पु० गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये जाते हैं।
रेग – स्त्री० बालू।
रेगिस्तान, रेगिस्थान—पु० बालू का मैदान, मरुभूमि।
रेचक—दस्तावर। पु० प्राणायाम में साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालने की क्रिया।
रेचन—पु० दस्त लाना, जुल्लाब।
रेजा—छोटा टुकड़ा, सुनारों का एक औजार, नग, अदद।
रेजीडेंट—पु० भारत के देशी राज्यों में अंगरेजी राज्य का प्रतिनिधि।
रेजीमेंट—स्त्री० सेना का एक भाग।
रेट—पु० भाव, निर्ख, चाल, गति।
रेडियम – पु० एक धातु।
रेणु—स्त्री० धूल, बालू, कणिका।
रेणुका—स्त्री० बालू, धूल, पृथ्वी।
रेत—पु० वीर्य्य, पारा, जल। स्त्री० बालू, मरुभूमि।
रेतना—रेती से रगड़ना। [का मैदान।
रेता—पु० बालू, मिट्टी, बालू
रेती—स्त्री० रेतने का औजार, नदी या समुद्र किनारे की बलुई जमीन।
रेतीला—बालूवाला।
रेफ – पु० हलंत रकार का वह रूप जो आगे के अक्षर के मस्तक पर रहता है।
रेफरी—पु० निर्णयकर्त्ता।
रेल – स्त्री० लोहे की पटरी जिसपर रेलगाड़ी चलती है, रेलगाड़ी, बहाव, आधिक्य, भरमार।
रेलठेल—स्त्री० दे० "रेलपेल"।
रेलना—धक्का देना, अधिक भोजन करना, ठसाठस भरा होना।

रेलपेल—स्त्री० भारी भीड़, भरमार ।
रेलवे—पु० रेलगाड़ी की सड़क, रेल का मुहकमा ।
रेला—पु० बहाव, धावा, धक्कमधक्का, बहुतायत । [नक्षत्र ।
रेवती—स्त्री० गाय, दुर्गा, एक
रेवतीरमण—स्त्री० बलराम ।
रेशम—पु० एक प्रकार का महीन चमकीला रेशा ।
रेशमी—रेशम का बना हुआ ।
रेशा—पु० तंतु, महीन सूत ।
रेह—स्त्री० खार मिली हुई मिट्टी ।
रेहन—पु० बंधक, गिरवी ।
रेहनदार—पु० वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो ।
रेहननामा—पु० वह कागज जिसपर रेहन की शर्त लिखी हो ।
रैन—स्त्री० रात्रि ।
रैयत—स्त्री० प्रजा ।
रोंगटा—पु० शरीर पर के बाल ।
रोआब—पु० रोब, प्रभाव, आतंक ।
रोक—स्त्री० अटकाव, मनाही, काम में बाधा, रोकने की वस्तु ।
रोकटोक—स्त्री० बाधा, मनाही ।
रोकड़—स्त्री० नगद रुपया पैसा आदि, जमा ।
रोकड़िया—पु० खजानची ।
रोग—पु० बीमारी ।
रोगन—पु० तेल, चिकनाई, पालिश, वह मसाला जो मिट्टी के बरतनों पर चढ़ाते हैं ।
रोगनी—रोगन किया हुआ, रोगन ··
रोगी—बीमार ।
रोचक—रुचिकारक, प्रिय, मनोरंजक ।
रोचन—अच्छा लगनेवाला, शोभा देनेवाला, लाल । पु० प्याज, रोली ।
रोचना—स्त्री० रक्त कमल, गोरोचन ।
रोचि—स्त्री० प्रभा, किरण, शोभा ।
रोचित—शोभित ।
रोज—दिन, प्रति दिन ।
रोजगार—पु० जीविका का कार्य, व्यवसाय, पेशा, व्यापार ।
रोजगारी—पु० व्यापारी, सौदागर ।
रोजनामचा—पु० डायरी, दिनचर्य्या की पुस्तक ।
रोजमर्रा—नित्य, बोलचाल ।
रोजा—पु० व्रत, उपवास, वह उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने में करते हैं । [जिविका, रोजगार ।
रोजी—स्त्री० नित्य का भोजन,
रोजीना—रोज का, नित्य का ।
रोट—पु० गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी । [टुकड़ा ।
रोड़ा—पु० इंट या पत्थर का बड़ा
रोदन—पु० रोना ।
रोदसी—स्त्री० स्वर्ग, भूमि ।
रोदा—पु० कमान की डोरी, सितार के परदे बाँधने की बारीक ताँत ।

रोधन-पु० अवरोध, रुकावट, दमन।

रोपण--पु० स्थापित करना, बैठाना, मोहित करना।

रोब--पु० दबदबा, प्रभाव।

रोबदार—प्रभावशाली।

रोम--पु० रोआँ, छेद, जल, ऊन।

रोमकूप--पु० शरीर के वे छेद जिनसे रोएँ निकलते हैं।

रोमपाट--पु० ऊनी कपड़ा।

रोमराजी, रोमलता--स्त्री० रोओं का समूह, रोमावली। [होना।

रोमहर्षण—भयंकर। रोओं का खड़ा

रोमन--पु० प्राचीन यूनान के रोम देश में प्रचलित।[प्राचीन समुदाय।

रोमन कैथोलिक--पु० ईसाइयों का

रोमांच —पु० आनंद या भय से रोंगटे खड़े होना।[भय से खड़े हो गये हों।

रोमांचित--जिसके रोंगटे आनंद या

रोमावली--स्त्री० रोओं की पंक्ति।

रोर-प्रचंड, उपद्रवी। स्त्री० शोरगुल, हलचल।

रोलर--पु० बेलन।

रोला-पु० शोरगुल, घमासान युद्ध।

रोशन— प्रकाशित, प्रकाशमान, प्रसिद्ध, जाहिर। [बाजा।

रोशनचौकी—स्त्री० शहनाई का

रोशनदान--पु० प्रकाश आने का छिद्र, या रास्ता।

रोशनाई--स्त्री० स्याही, रोशनी।

रो - - ० काश, दीपक।

रोष--पु० क्रोध, चिढ़, जोश, विरोध।

रोहण--पु० चढ़ना, पौधे का उगना।

रोहिणी—स्त्री० गाय, बिजली, नौ वर्ष की कन्या, एक नक्षत्र।

रोहित--लाल रंग का। पु० लाल रंग, रोहू मछली, इंद्र धनुष. केसर, लहू।

रोही—चढ़ने वाला।

रौंद—स्त्री० रौंदना, चक्कर।

रौ--स्त्री० गति, चाल, वेग, झोंक, पानी का बहाव, किसी बात की धुन।

रौगन—दे० "रोगन"।

रौजा--पु० कब्र, बाग, बगीचा।

रौताइन--स्त्री० ठकुराइन।

रौताई--स्त्री० सरदारी।

रौद्र--रुद्र संबंधी, प्रचंड, क्रोधपूर्ण।

रौनक—स्त्री० रूप, चमकदमक, कांति, प्रफुल्लता, शोभा।

रौप्य—रूपे का। पु० चाँदी।

रौरव-भयंकर। पु० एक भीषण नरक।

रौरा—आपका।

रौशन—दे० "रोशन"।

ल

ल—एक अक्षर । पु० इंद्र, पृथ्वी ।
लंक—स्त्री० कमर, लंका ।
लंग—लँगड़ा । स्त्री० लँगड़ापन । [हो ।
लंगड़ा—जिसका एक पैर बेकाम या टूटा
लंगर—भारी, नटखट, ढीठ । पु० लोहे का बहुत बड़ा काँटा जो बड़ी बड़ी नावें और जहाज एक जगह रोकने में काम आता है, कच्ची सिलाई, लटकती हुई कोई भारी चीज, दरिद्रों को बाँटा जानेवाला भोजन, दरिद्रों को भोजन बाँटने का स्थान ।
लंगरखाना—पु० वह जगह जहाँ दरिद्रों को भोजन बाँटा जाता है ।
लंगरगाह—पु० वह जगह जहाँ लंगर डालकर जहाज ठहराया जाता है।
लंगूर—पु० बंदर, पूँछ ।
लंगूरफल—पु० नारियल ।
लंगूल—पु० पूँछ । [क्रमण ।
लंघन—पु० उपवास, लाँघना, अति-
लंठ—उजड्ड, मूर्ख ।
लंप—पु० दीपक, चिराग ।
लंपट—व्यभिचारी, विषयी ।
लंब—लंबा । पु० एक रेखा पर गिरनेवाली दूसरी सीधी रेखा जो समकोण बनाती हो, अंग, पति ।
लंबान—स्त्री० लंबाई ।
लंबी—लंबा का स्त्रीलिंग रूप ।
मु० लंबी तानना = लेटकर सो जाना ।
लंबोतरा—लंबे आकारवाला ।
लंबोदर—पु० गणेश ।
लकदक—साफ सुथरा, वह मैदान जिसमें पेड़ आदि न हो ।
लकब—पु० उपाधि, पदवी ।
लकलक—बहुत दुबला पतला । पु० लबी गर्दन का एक जलपक्षी ।
लकवा—पु० पक्षाघात रोग ।
लकीर—स्त्री० रेखा, धारी, पंक्ति । मु० लकीर का फकीर = आँखें बंद कर पुराने ढंग पर चलनेवाला । लकीर पीटना = बेसमझे बूझे पुरानी प्रथा पर चलते रहना ।
लकुट—स्त्री० लाठी ।
लकुटी—स्त्री० लाठी, छड़ी ।
लक्ष—एक लाख ।
लक्षण—पु० किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय, चिह्न, नाम, परिभाषा, शरीर में एक विशेष प्रकार का काला दाग, तौरतरीका ।
लक्षणा—स्त्री० शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है ।
लक्षित—बतलाया हुआ, निर्दिष्ट, देखा हुआ, अनुमान से समझा हुआ।

पु० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

लक्ष्मी--स्त्री० विष्णु की पत्नी, धन-संपत्ति, शोभा, गृहस्वामिनी।

लक्ष्मीधर—पु० विष्णु।

लक्ष्य—पु० निशाना, जिस पर आक्षेप किया जाय, उद्देश्य, शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलने वाला अर्थ।

लक्ष्यभेद—पु० एक तरह का निशाना जिसमें चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं। [निकले।

लक्ष्यार्थ—पु० वह अर्थ जो लक्षणा से

लखना—ताड़ना, देखना।

लखपती—पु० जिसके पास लाखों की संपत्ति हो। [स्त्री० लगन, प्रेम।

लग—तक, निकट, वास्ते, साथ।

लगन—स्त्री० किसी ओर ध्यान लगाने की क्रिया, लौ, प्रेम, संबंध। पु० ब्याह का मुहूर्त्त।

लगनपत्री—स्त्री० विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

लगभग—करीब करीब।

लगवार—पु० उपपति।

लगान—पु० लगने या लगाने की क्रिया या भाव, राजस्व, मालगुजारी।

लगाम—स्त्री० घोड़े के मुँह में लगी हुई रस्सी, बाग। [भेदिया, संबंधी।

लगार—स्त्री० बंधेज, क्रम, प्रीति

लगालगी—स्त्री० लड़ना, प्रीति।

लगाव—पु० संबंध।

लगुड़—पु० लाठी।

लगूर—स्त्री० पूँछ।

लग्न—लगा हुआ, लज्जित, आसक्त। पु० ज्योतिष में दिन का उतना अंश जितने में किसी एक राशि का उदय होता है, कोई शुभ कार्य करने का मुहूर्त, विवाह का समय, विवाह। स्त्री० दे० "लगन"।

लग्नपत्र—पु० दे० "लगनपत्री"।

लघिमा—स्त्री० लघुत्व, एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।

लघु—छोटा, थोड़ा, शीघ्र, सुन्दर, निःसार, हलका। पु० एक ही मात्रा का स्वर। [सहज में पच जाय।

लघुपाक—पु० वह खाद्य पदार्थ जो

लघुशंका—स्त्री० पेशाब। [भाव।

लचक—स्त्री० लचकने की क्रिया या

लचकनि—स्त्री० लचीलापन, लचक।

लजीज—स्वादिष्ट।

लजीला—लज्जाशील, लज्जालु।

लजौहाँ—लजीला।

लज्जत—स्त्री० स्वाद।

लज्जतदार—स्वादिष्ट।

लज्जा—स्त्री० लाज, इज्जत।

लज्जाशील—जिसमें लज्जा हो।

लट—स्त्री० बालों का गुच्छा, लपट।

लटक—स्त्री० लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव, अंगभंगी । [चीज ।
लटकन—पु० लटक, लटकनेवाली
लटका—पु० गति, चाल, हावभाव, बातचीत का बनावटी ढंग, टोटका ।
लटना—थक कर गिर जाना, अशक्त या विकल होना, लुभाना, लीन होना ।
लटपटा—लड़खड़ाता हुआ, अस्त-व्यस्त, ढीलाढाला, अव्यवस्थित, अशक्त, न बहुत पतला न बहुत गाढ़ा, गिंजा हुआ ।
लटपटाना—लड़खड़ाना, डिगना, मोहित होना, अनुरक्त होना ।
लटी—स्त्री० बुरी बात, झूठी बात, भक्तिन, वेश्या । [कता हुआ गुच्छा ।
लटूरी—स्त्री० सिर के बालों का लट-
लट्टू—पु० एक खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर नचाते हैं । मु० (किसी पर) लट्टू होना = मोहित होना, प्राप्ति के लिये उत्कंठित होना ।
लट्ठमार—लाठी मारनेवाला, अप्रिय और कठोर ।
लठैत—पु० लट्ठबाज । [लता ।
लड़कपन—पु० बाल्यावस्था, चंच-
लड़का—पु० बालक, बेटा ।
लड़काबाला—पु० संतान, परिवार ।
लड़खड़ाना—डगमगाना ।
लड़ाई—स्त्री० युद्ध, झगड़ा, कुश्ती, बहस, विरोध, टक्कर ।
लड़ाका—योद्धा, झगड़ालू ।
लड़ैता—लाड़ला, दुलारा, शोख, योद्धा ।
लड्डू—पु० गोल मिठाई । मु० मन का लड्डू खाना = व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना ।
लत—स्त्री० बुरी आदत ।
लता—स्त्री० लत्तर, कोमल शाखा, सुन्दरी स्त्री ।
लतिका—स्त्री० छोटी लता ।
लतीफ—दिलचस्प, बढ़िया । [बात ।
लतीफा—चुटकुला, हँसी की बात, अनूठी
लत्ता—पु० चीथड़ा ।
लथपथ—भीगा हुआ, सना हुआ ।
लथेड़ना—कीचड़ आदि में लपेट कर गंदा करना, घसीटना, डाँटना डपटना ।
लदना—भार युक्त होना, पूर्ण होना, गाड़ी पर बोझा भरा जाना, कैद होना ।
लपक—स्त्री० ज्वाला, चमक, तेजी ।
लपकना—झपटना ।
लपट—स्त्री० आग की लौ, तपी हुई वायु, गंधपूर्ण वायु का झोंका, गंध ।
लपलपाना—लंबी कोमल वस्तु का इधर उधर हिलना या हिलाना, तलवार आदि का चमकना या चमकाना ।
लपसी—स्त्री० गीली गाढ़ी वस्तु, पानी में औटाया हुआ आटा ।
लपेट—स्त्री० लपटने की क्रिया या भाव, घुमाव, ऐंठन, घेरा, उलझन ।

लपेटन—पु० बाँधने का कपड़ा।
लफंगा—लंपट, अवारा।
लफ्ज—पु० शब्द।
लफ्जी—शाब्दिक।
लफ्फाज—बातूनी।
लफ्फाजी—स्त्री० डींग मारना।
लब—पु० ओष्ठ, ओंठ।
लबझना—उलझना।
लबड़धोंधों—स्त्री० झूठमूठ का हल्ला, गड़बड़ी, बेईमानी की चाल। [अबा।
लबादा—पु० चोगा, रूईदार चोगा,
लबार—झूठा गप्पी।
लबालब—मुँह तक, छलकता हुआ।
लब्ध प्राप्त।
लब्धप्रतिष्ठ—प्रतिष्ठित, इज्जतदार।
लभ्य—पाने योग्य, उचित।
लय—पु० एक पदार्थ का दूसरे में मिलना, विलीन होना, ध्यान में डूबना, अनुराग, कार्य का फिर कारण बन जाना, प्रलय, विनाश, मिल जाना, संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य की समता, गाने का तर्ज।
लरजा—पु० कँपकँपी, भूकंप, जूड़ी।
लरजना—काँपना, डरना।
ललक—स्त्री० प्रबल अभिलाषा।
ललकना—गहरी इच्छा रखना, चाह की उमंग से भरना। [या भाव।
ललकार—स्त्री० ललकारने की क्रिया
ललकारना—युद्ध के लिये आह्वान करना, लड़ने के लिये उकसाना।
ललचना—लालच करना, मोहित होना, अभिलाषा से अधीर होना।
ललचौहाँ—ललचाया हुआ।
ललन—प्यारा बालक, प्रिय नायक वा पति, क्रीड़ा।
ललना—स्त्री० स्त्री, कामिनी, जीभ।
लला—पु० दुलारा लड़का, प्रिय नायक या पति।
ललाट—पु० भाल, क़िस्मत का लिखा।
ललाट-पटल—पु० मस्तक की सतह।
ललाना—लालायित होना।
ललाम—रमणीय, लाल, श्रेष्ठ। पु० गहना, रत्न, चिह्न, घोड़ा। [हुआ।
ललित—सुंदर, प्यारा, हिलता डोलता
ललित कला—स्त्री० वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य्य की अपेक्षा हो जैसे संगीत, चित्रकला आदि।
लली—स्त्री० लड़की के लिये प्यार का शब्द, नायिका, प्रेमिका।
लल्लोचप्पो, लल्लोपत्तो—स्त्री० चिकनी चुपड़ी बात।
लवंग—पु० लौंग।
लव—पु० बहुत थोड़ी मात्रा, छत्तीस निमेष का अल्प समय, लवा पक्षी, लवंग।
लवण—पु० नमक। [की कटाई।
लवन—पु० काटना, छेदना, खेत

लवलासी—स्त्री० प्रेम की लगावट।

लवलीन—तल्लीन। [अल्प संसर्ग।

लवलेश—पु० अत्यंत अल्प मात्रा,

लवा—पु० लावा, एक पक्षी।

लवाजमत-स्त्री० सामग्री, उपकरण।

लवाजमा—पु० साथ में रहनेवाली भीड़, दलबल, साजसामान, आवश्यक सामग्री।

लशकर—पु० सेना, दल, छावनी।

लशकरी—सेना संबंधी, खलासी, सिपाही।

लस—पु० चिपकने या चिपकाने का गुण, वह वस्तु जिसके लगने से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय, आकर्षण। [विराजना।

लसना—चिपकाना, शोभित होना,

लसलसा—लसदार।

लसनि—स्त्री० स्थिति, शोभा, छटा।

लसी—स्त्री० लस, आकर्षण, फायदे का डौल, दूध और पानी मिला हुआ शरबत।

लसीला—लसदार, सुंदर।

लस्टम पस्टम—ज्यों त्यों।

लस्सी—स्त्री० चिपचिपाहट, मट्ठा।

लहँगा—पु० घँघरा।

लहक—स्त्री० लहकने की क्रिया या भाव, आग की लपट, शोभा, चमक।

लहकना—लहराना, हवा का बहना, दहकना, लपकना, उत्कंठित होना।

लहजा—पु० स्वर, लय, पल, क्षण।

लहना—प्राप्त करना, उधार दिया हुआ रुपया पैसा।

लहनी—स्त्री० प्राप्ति, फलभोग।

लहमा—पु० पल, क्षण।

लहर—स्त्री० हिलोर, उमंग, मन की मौज, झोंका, पीड़ा का वेग, टेढ़ी चाल। [खाता हुआ गया हो।

लहरदार—जो सीधा न जाकर बल

लहरपटोर—पु० एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहरबहर—पु० मौज, आनंद।

लहरा—पु० लहर, मौज।

लहराना—हवा के झोंके से इधर उधर हिलना डोलना, पानी में हिलोरें मारना, इधर उधर मुड़ते हुए चलना, मन की उमंग में होना, उत्कंठित होना, दहकना, शोभित होना।

लहरिया—पु० लहरदार चिह्न, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगबिरंगी टेढ़ीमेढ़ी लकीरें बनी रहती हैं।

लहरी-मनमौजी। स्त्री० लहर, तरंग, हिलोर, मौज, आनंद।

लहलहा-हराभरा, प्रफुल्ल, हृष्टपुष्ट।

लहाछेह—पु० नाच की एक गति।

लहालोट—हँसी से लोटता हुआ, खुशी से भरा हुआ, प्रेममग्न।

लहि—तक। पाकर।

लाँक—स्त्री० कमर।

लांगल—पु० हल । [साँप ।
लांगली—पु० बलराम, नारियल,
लांगूली—पु० बंदर ।
लांछन—पु० चिह्न, दाग, कलंक ।
लॉ—पु० राजनियम या कानून, व्यवहार शास्त्र ।
लाइट—पु० प्रकाश, हलका ।
लाइट हाउस—पु० प्रकाशस्तम्भ ।
लाइन—स्त्री० कतार, पेशा, लकीर, रेल की सड़क ।
लाइन क्लियर—पु० लाइन साफ होने का रेलवे में एक संकेत ।
लाइफ—पु० जीवन, जीवनचरित्र ।
लाइफ बोट—पु० आकस्मिक घटना के समय प्राणरक्षा के लिये जहाज के साथ की एक प्रकार की नाव ।
लाइब्रेरी—स्त्री० पुस्तकालय । [पत्र ।
लाइसेन्स—पु० आज्ञापत्र, अधिकार
लाकलाम—निस्सन्देह ।
लाकेट—पु० लटकन ।
लाक्षणिक-जिससे लक्षण प्रकट हो ।
लाक्षा—स्त्री० लाह ।
लाक्षारस—पु० महावर ।
लाख—सौ हजार । स्त्री० लाह ।
लाग—स्त्री० संबंध, लगाव, प्रेम, मन की तत्परता, युक्ति, प्रतियोगिता, जादू, शुभ अवसर पर ब्राह्मण आदि को दिया जानेवाला धन, लगान ।

लागडाँट—स्त्री० शत्रुता, तियो-
गिता, नृत्य की एक क्रिया । [खर्च ।
लागत—स्त्री० चीज तैयार करने का
लागि—कारण, लिये, द्वारा, तक ।
लागू—जो लगने योग्य हो ।
लाघव—सहज में । पु० लघुता, अल्पता, फुर्ती, आरोग्य ।
लाघवी—स्त्री० फुर्ती ।
लाचार—मजबूर ।
लाज—स्त्री० शर्म, लज्जा ।
लाजक—पु० धान का लावा ।
लाजवंत—जिसे लज्जा हो । [खामोश
लाजवाब—बेजोड़, निरुत्तर, चुप,
लाजा—स्त्री० चावल, लावा ।
लाजिम—जो अवश्य कर्त्तव्य हो, मुनासिब, उचित ।
लाजिमी—जरूरी ।
लाट—स्त्री० मोटा और ऊँचा स्तंभ, गवर्नर, किसी प्रांत या देश का सबसे बड़ा शासक ।
लाटरी—स्त्री० धन एकत्र करने का एक प्रकार का जूआ, चिट्ठी लगाना ।
लाटिका—स्त्री० साहित्य में एक प्रकार की रचना जिसमें छोटे छोटे पद और समास होते हैं ।
लाड़—पु० प्यार ।
लाड़ला—प्यारा ।
लात-स्त्री० पैर, पादप्रहार । [आँत ।
[illegible]—स्त्री० लादने की क्रिया, [illegible],
लादावा—जिसका कोई दावा या हक

न रह गया हो। [मैदान।

लॉन—पु० हरी घास का बड़ा

लानत—स्त्री० धिक्कार, फटकार।

लापता—गायब। [सावधान।

लापरवा, लापरवाह—बेफ़िक्र, अ-

लाभ—पु० प्राप्ति, नफा, भलाई।

लामा—पु० तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।

लाय—स्त्री० ज्वाला, आग।

लायक़—उचित, उपयुक्त, सुयोग्य, भला, समर्थ।

लायक़ी—स्त्री० सुयोग्यता।

लार—स्त्री० मुँह का लसदार थूक, पंक्ति, लसदार चीज़। मु० मुँह से लार टपकना = किसी चीज के पाने की अत्यंत लालसा होना।

लालच—स्त्री० लोभ। [उत्सुकता।

लालसा—स्त्री० बहुत अधिक चाह,

लालसिखी—पु० मुर्गा।

लालसी—लालसा रखनेवाला।

लाला—लाल रंग का। पु० महाशय, कायस्थ जाति का सूचक एक शब्द, छोटे और प्रिय बच्चे के लिये एक संबोधन, लार।

लालायित—ललचाया हुआ।

लालित—पालित, दुलारा।

लालित्य—पु० सुंदरता।

लालिमा—स्त्री० लाली।

लाली—स्त्री० ललाई, इज्जत।

लाले—पु० लालसा, मुसीबत। मु० किसी चीज के लाले पड़ना = किसी चीज के लिये बहुत तरसना।

लावक—पु० लवा पक्षी। [सुंदरता।

लावण्य—पु० नमकपन, अत्यंत

लावल्द—निःसंतान। [अवस्था।

लावल्दी—स्त्री० निःसंतान होने की

लावा—पु० एक पक्षी, भूना हुआ धान आदि।

लावारिस—पु० वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।

लाश—स्त्री० मुरदा।

लाशा—स्त्री० मुर्दा, कमजोर।

लास—पु० एक प्रकार का नाच, मटक।

लासा—पु० कोई लसदार चीज।

लासानी—बेजोड़, अनुपम।

लास्य—पु० नाच, वह नाच जो कोमल अंगों द्वारा हो और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।

लाह—स्त्री० लाख।

लाहु—पु० लाभ।

लिंग—पु० चिह्न, मूल प्रकृति, पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिवलिंग, व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है।

लिंगदेह, लिंगशरीर—पु० वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मफल भोगने के

लिये लगा रहता है।
लिंगी—पु० चिह्नवाला, आडंबरी ।
लिंगेंद्रिय--पु० पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।
लिक्खाड़—पु भारी लेखक।
लिक्विडेटर— हिसाब किताब साफ करनेवाला, किसी दिवालिया कम्पनी वगैरह का हिसाब किताब साफ करनेवाला।
लिक्विडेशन—पु० हिसाब किताब साफ करना, किसी दिवालिया कम्पनी आदि का हिसाब किताब साफ करना ।
लिक्षा—स्त्री० जूं का अंडा, लीख।
लिखाई—स्त्री० लिपि, लिखने का काम या ढंग, लिखने की मजदूरी ।
लिखापढ़ी—स्त्री० पत्र-व्यवहार, किसी विषय को लिख कर पक्का कर लेना। [ढंग।
लिखावट—स्त्री० लिपि, लिखने का
लिख्या—स्त्री० दे० "लिक्षा"।
लिटरेचर—पु० साहित्य।
लिटरेरी—साहित्यिक। [मजदूरी।
लिपाई—स्त्री० लिपने की क्रिया या
लिपि—स्त्री० लिखावट, अक्षर लिखने की प्रणाली, लेख।
लिपिबद्ध—लिखा हुआ।
लिप्त—लिपा हुआ, लीन।
लिप्सा—स्त्री० लालच।
लिफाफा--पु० कागज की वह थैली जिसमें चिट्ठी रख कर भेजी जाती है, दिखावटी कपड़ा-लत्ता, ऊपरी आडंबर, जल्दी नष्ट होनेवाली वस्तु।
लिबरल--उदार, उदार नीतिवाला, एक राजनीतिक दल।
लिबास—पु० पोशाक ।
लियाकत--स्त्री० योग्यता, गुण, सामर्थ्य, शील।
लिलार—पु० ललाट।
लिलोही—लालची ।
लिस्ट—स्त्री० फिहरिस्त, तालिका।
लिहाज—पु० बरताव में किसी बात का ध्यान, मुरव्वत, शीलसंकोच, कृपा दृष्टि, पक्षपात, मर्य्यादा का ध्यान, लज्जा। [निकम्मा।
लिहाड़ा—नीच, गिरा हुआ, खराब,
लिहाफ—पु० भारी रजाई।
लीक—स्त्री० लकीर, गहरी पड़ी हुई लकीर, मर्य्यादा, यश, लोक-नियम, प्रथा, हद, धब्बा, बदनामी, गिनती। मु० लीक पीटना = आँख मूँद कर पुरानी प्रथा का अनुसरण करना।
लीग—पु० संघ,।
लीगल—कानूनी ।
लीडर—पु० नेता, मुखिया।
लीथो—पु० पत्थर का छापा।
लीथोग्राफ—पु० पत्थर का छापा जिसपर हाथ से लिख कर छापा जाता है।

लीथोग्राफर—पु० लीथो का काम करनेवाला ।

लीथोग्राफी—स्त्री० लीथो की छपाई में पत्थर पर हाथ से अक्षर लिखने की कला । [का मल ।

लीद—स्त्री० घोड़े हाथी आदि पशुओं

लीन—समाया हुआ, तन्मय ।

लीनो टाइप मशीन—स्त्री० एक मशीन जिसमें कुल अक्षर कम्पोज होने के समय एक साथ ढलते जाते हैं ।

लीफलेट—पु० पुस्तिका, परचा ।

लीलना—निगलना ।

लीलया—खेल में, सहज में ही ।

लीला—स्त्री० खेल, प्रेम का खेल, प्रेम-विनोद, नायिका का एक हाव जिस में वह प्रिय के वेश आदि का अनुकरण करती है, विचित्र काम, ईश्वरावतारों का अभिनय, चरित्र ।

लीलापुरुषोत्तम—पु० श्रीकृष्ण ।

लीलावती—स्त्री० सुप्रसिद्ध ज्योतिषी भास्कराचार्य की पत्नी जिसने अपने नाम की गणित की एक पुस्तक बनायी थी ।

लीवर—पु० यकृत, जिगर ।

लीज—पु० पट्टा ।

लुँगाड़ा—पु० लुच्चा ।

लुंचन—पु० नोचना ।

लुंज—लँगड़ा लूला, ठूंठ ।

लुंठन—लुढकना, लूटना ।

लुंड—पु० रुंड ।

लुआठा—पु० सुलगती हुई लकड़ी ।

लुआब—पु० लासा, लसदार गूदा ।

लुक—पु० चमकदार रोगन, आग की लपट ।

लुकठी—स्त्री० दे० "लुआठा" ।

लुकना—छिपना ।

लुकमा—पु० कौर, ग्रास ।

लुगदी—स्त्री० छोटा लोंदा ।

लुगाई—स्त्री० औरत, स्त्री ।

लुच्चा—दुराचारी, बदमाश ।

लुटना—लूटा जाना, तबाह होना ।

लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा ।

लुठना—लोटना, लुढ़कना ।

लुढ़कना—ढुलकना ।

लुतरा—चुगलखोर, नटखट ।

लुत्फ—पु० मजा, रोचकता, स्वाद, खूबी, कृपा, भलाई ।

लुनना—फसल काटना, नष्ट करना ।

लुनाई—स्त्री० लावण्य, सुन्दरता ।

लुपना—छिपना ।

लुप्त—छिपा हुआ, गायब ।

लुबुधा—लोभी, इच्छुक, प्रेमी ।

लुब्ध—लुभाया हुआ, मोहित ।

लुब्धक—व्याध, एक तारा ।

लुब्बलुबाब—पु० गूदा, सारांश ।

लुभाना—मोहित होना या करना, ललचाना, सुध-बुध भूलना या भुलाना ।

लुरना—लहराना, ढल पड़ना, एक बारगी आ पड़ना, आकर्षित होना।
लू—स्त्री॰ तपी हुई हवा।
लूक—स्त्री॰ आग की लपट, जलती हुई लकड़ी, गर्म हवा, उल्का।
लूका—पु॰ आग की लपट, लुआठा।
लूगा—पु॰ कपड़ा।
लूट—स्त्री॰ डकैती, डकैती का माल।
लूता—स्त्री॰ मकड़ी।
लूला—लुंजा, असमर्थ।
लेक्चर—पु॰ भाषण, व्याख्यान।
लेक्चरबाजी—स्त्री॰ खूब लेक्चर देने का काम।
लेक्चरर—पु॰ वक्ता, व्याख्यान देने वाला। [निबंध, देव।
लेख—पु॰ लिपि, लिखावट, लेखा,
लेखक—पु॰ लिखनेवाला, ग्रंथकार।
लेखन—पु॰ लिखने का काम या कला, चित्र बनाना, हिसाब करना।
लेखनी—स्त्री॰ कलम।
लेखा—स्त्री॰ हिसाब-किताब, ठीक ठीक अंदाज, अनुमान, आय व्यय का विवरण। [बनानेवाली।
लेखिका—स्त्री॰ लिखनेवाली, ग्रंथ
लेख्य—लिखने योग्य। पु॰ लेख दस्तावेज।
लेजिस्लेटिव—व्यवस्था सम्बन्धी, कानून सम्बन्धी। [स्थापिका सभा।
लेजिस्लेटिव एसेम्बली—स्त्री॰ व्यव-
लेट—जिसे देर हुई हो, देर, विलम्ब।
लेटफीस—पु॰ देर करने के दंड में दी जानेवाली रकम।
लेटर पेपर—पु॰ चिट्ठी का कागज।
लेटर बाक्स—पु॰ चिट्ठी डालने का बक्स। [पावना।
लेन—पु॰ लेने की क्रिया या भाव,
लेनदार—पु॰ महाजन।
लेप—पु॰ लेपना, लेपने की चीज।
लेपालक—पु॰ दत्तक।
लेफ्टिनेन्ट—पु॰ एक सहायक कर्मचारी, सेना का एक अध्यक्ष।
लेबरर—पु॰ श्रमजीवी, मजदूर।
लेबुल—पु॰ चिट, पत्रक, नाम।
लेबोरेटरी—स्त्री॰ प्रयोगशाला।
लेमनेड—पु॰ नीबू का शरबत।
लेश—थोड़ा। पु॰ अणु, छोटाई, चिह्न, संसर्ग, संबंध।
लेस—पु॰ गोटा, बेल।
लेसना—जलाना, पोतना, कहगिल करना, चिपकाना, चुगली खाना।
लेहन—पु॰ चाटना।
लेहाजा—इसलिये।
लेह्य—चाटने योग्य।
लैंप—पु॰ दीपक, चिराग।
लै—तक।
लैन—स्त्री॰ सीधी लकीर, सीमा की लकीर, कतार, पंक्ति, पैदल सिपाहियों की सेना।

लैस—वर्दी और हथियारों से सजा हुआ, तैयार, कपड़े पर चढ़ाने का फीता।
लौं—दे० "लौं"। [अंश।
लौंदा—पु० गीले पदार्थ का बँधा
लौंई—पु० लोग। स्त्री० प्रभा। मुलायम कंबल।
लोअर—नीचे का। [लत।
लोअर कोर्ट—पु० नीचे की अदा-
लोक—पु० लोग, समाज, प्राणी, यश, संसार, निवास-स्थान, स्थान विशेष। उपनिषदों में दो लोक माने गये हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है—पृथ्वी, अंतरिक्ष, द्युलोक। पौराणिक काल में ऊपर सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपलोक और सत्यलोक। फिर नीचे सात लोक माने गये—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल और पाताल; इस तरह चौदह लोक हुए।
लोकध्वनि—स्त्री० अफवाह।
लोकप, लोपकति—पु० ब्रह्मा, लोकपाल, राजा।
लोकपाल—पु० दिक्पाल, राजा।
लोकल—स्थानीय, प्रान्तीय।
लोकलबोर्ड—पु० शिक्षा आदि का प्रबन्ध करनेवाली एक सभा, डिविजनल बोर्ड।
लोक लीक—स्त्री० लोक की मर्य्यादा।
लोकलोचन—पु० सूर्य।
लोक संग्रह—पु० संसार के लोगों को प्रसन्न करना, सब की भलाई।
लोकांतर—पु० दूसरा लोक।
लोकांतरित- मृत, मरा हुआ।
लोकाचार—पु० लोक व्यवहार।
लोकायत—पु० वह मनुष्य जो परलोक को न मानता हो, चार्वाक दर्शन।
लोकापवाद—पु० लोकनिंदा।
लोकोक्ति—स्त्री० कहावत [विलक्षण।
लोकोत्तर—अलौकिक, अद्भुत और
लोग—पु० मनुष्य।
लोगाई—स्त्री० स्त्री, औरत।
लोच—स्त्री० लचक, कोमलता।
लोचन—पु० आँख।
लोचना—प्रकाशित होना, रुचि उत्पन्न करना, अभिलाषा करना।
लोड़ना—दरकार होना।
लोढ़ना—चुनना, ओटना।
लोथ—स्त्री० लाश।
लोथड़ा—पु० मांसपिंड।
लोन—पु० नमक, लावण्य, कर्ज।
लोना—नमकीन, सुंदर, नमकीन मिट्टी, नोनी।
लोनिया—पु० नोनियाँ जाति जो नमक बनाने का व्यवसाय करती है।
लोप—पु० नाश, विच्छेद, अभाव, अदर्शन, अंतर्ध्यान होना।

लोपन-पु० लुप्त होना, छिपाना, मिटना।
लोपांजन—पु० वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।
लोभ—पु० लालच। [या करना।
लोभना, लोभाना—मोहित होना
लोभित—मुग्ध, लुभाया हुआ।
लोभी—लालची, लुभाया हुआ।
लोम—पु० रोम, बाल, लोमड़ी।
लोमश—अधिक और बड़े बड़े रोएँवाला, एक ऋषि।
लोमहर्षण—ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। [लपट।
लोय—पु० लोग, आँख। स्त्री०
लोयन—पु० लोचन, आँख।
लोर—स्त्री० आँसू। मु० लोर पोंछना = संतोष देना, धैर्य बँधाना।
लोरना—चंचल होना, ललकना, लिपटना, झुकाना, लोटना।
लोरी—स्त्री० एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिये गाती हैं। [भंगुर, उत्सुक।
लोल—चंचल, परिवर्तनशील, क्षण-
लोलना—हिलना।
लोला—स्त्री० जीभ, लक्ष्मी।
लौकी—स्त्री० एक प्रकार की तरकारी जो लता में फलती है।

लोलिनी—चंचल प्रकृतिवाली।
लोलुप—लोभी, चटोरा, परम उत्सुक।
लोवा—स्त्री० लोमड़ी।
लोष्ट—पु० पत्थर, ढेला।
लोह—पु० लोहा। [बनी हुई जंजीर।
लोहसार—पु० फौलाद, फौलाद की
लोहा—पु० एक धातु, अस्त्र। मु० लोहे के चने = अत्यंत कठिन काम। लोहा गहना = हथियार उठाना। लोहा बजना = युद्ध होना। किसी का लोहा मानना = प्रभुत्व स्वीकार करना, पराजित होना। लोहा लेना = युद्ध करना, लोहा बजना = लड़ाई शुरू होना।
लोहार—पु० एक जाति जो लोहे का काम करती है।
लोहित—लाल। पु० मंगल ग्रह।
लौं—तक, समान।
लौंकना—दिखाई देना, चमकना।
लौंग—स्त्री० एक प्रकार का मसाला।
लौंडा—पु० छोकरा।
लौंडी—स्त्री० दासी।
लौंद—पु० मलमास।
लौ—स्त्री० आग की लपट, दीयेकी टेम, लाग, चाह, चित्त की वृत्ति। आशा।
लौकना—दूर से दिखाई देना।
लौकिक—सांसारिक, व्यावहारिक।
लौह—पु० लोहा।

व

व—एक अक्षर। और। पु० वायु, बाण, वरुण, बाहु, कल्याण, समुद्र, वस्त्र, वंदन।
वंक—टेढ़ा।
वंकट—टेढ़ा, विकट।
वंकिम—टेढ़ा। [भस्म।
वंग—पु० बंगाल, राँगा, राँगे का
वंगज—पु० सिंदूर, पीतल।
वंचक—धूर्त, खल। [धोखा।
वंचना—धोखा देना, बाँचना। स्त्री०
वंचित—ठगा हुआ, अलग किया हुआ, अलग, हीन।
वंदन—पु० स्तुति।
वंदनमाला—स्त्री० वंदनवार।
वंदना—स्त्री० स्तुति, प्रणाम।
वंदनीय—वंदना करने योग्य।
वंदित—पूज्य।
वंदी—पु० दे० "बंदी"।
वंदीजन—पु० राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।
वंद्य—वंदनीय, पूजनीय।
वंश—पु० बाँस, पीठ की हड्डी, बाँसुरी, बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ।
वंशज—पु० बाँस का चावल, संतान।
वंशधर—पु० वंशज।
वंशावली—स्त्री० किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की क्रमसूची।
वंशी—स्त्री० बाँसुरी।
वंशीधर—पु० श्रीकृष्ण।
वंशीवट—पु० वृंदावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाते थे।
वक—पु० बगला पक्षी।
वकवृत्ति—स्त्री० धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।
वकालत—स्त्री० दूत-कर्म, दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना, मुकदमे में किसी फरीक की ओर से बहस करने का पेशा।
वकालतनामा—पु० वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा मुकदमे में किसी वकील को अपनी ओर से बहस करने को मुकर्रर किया जाता है।
वकील—पु० दूत, राजदूत, प्रतिनिधि, दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला, वकालत परीक्षा पास कर कचहरी में किसी की ओर से बहस करनेवाला।
वकुल—पु० अगस्त का पेड़, मौलसिरी का पेड़। [मृत्युकाल।
वक्त—पु० समय, मौका, फुरसत,
वक्तन् फौक्तन्—कभी कभी, यथासमय।

वक्तव्य—कहने योग्य। पु० कथन।

वक्ता—पु० बोलनेवाला, भाषण देनेवाला। [व्याख्यान, कथन।
वक्तृता—स्त्री० वाक्पटुता, भाषण,
वक्तृत्व—पु० दे० "वक्तृता"।
वक्त्र—पु० मुख।
वक्फ—पु० धर्मार्थ दान की हुई संपत्ति, किसी के लिये कोई चीज छोड़ देना।
वक्फनामा—पु० दान-पत्र।
वक्फा—स्त्री० छुट्टी।
वक्र—टेढ़ा, तिरछा, कुटिल।
वक्रतुंड—पु० गणेश। [की दृष्टि।
वक्रदृष्टि—स्त्री० टेढ़ी दृष्टि, क्रोध
वक्री—पु० वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों।
वक्रोक्ति—स्त्री० एक काव्यालंकार जिसमें श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है, बढ़िया उक्ति।
वक्ष, वक्षस्थल—पु० छाती।
वगैरह—इत्यादि।
वच—पु० वाक्य।
वचन—पु० वाणी, वाक्य, कथन, व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। [मर्य्यादा।
वजन—पु० भार, तौल, गौरव,
वजनी—भारी।
वजह—स्त्री० कारण।
वजूहात—वजह का बहुवचन।
वजा—स्त्री० बनावट, सजधज, दशा, रीति, मिनहा।
वजादार—दर्शनीय।
वजादारी—स्त्री० फैशन, मान-मर्य्यादा आदि का भलीभाँति निर्वाह।
वजारत—स्त्री० वजीर का काम।
वजीफा—पु० वृत्ति, जप या पाठ।
वजीर—पु० मंत्री।
वजू—पु० नमाज पढ़ने के पहले हाथ पैर धोने का कर्म।
वज्र—कड़ा, भीषण। पु० इंद्र का एक प्रधान अस्त्र, बिजली, हीरा, फौलाद, भाला।
वज्रसार—पु० हीरा। [आसन।
वज्रासन—पु० हठयोग का एक
वज्री—पु० इंद्र। [मुद्रा।
वज्रोली—स्त्री० हठयोग की एक
वट—पु० बरगद का पेड़।
वटिका, वटी—स्त्री० गोली।
वटु—पु० बालक, ब्रह्मचारी।
वटुक—पु० बालक, ब्रह्मचारी, एक भैरव।
वणिक्—रोजगार करनेवाला बनिया।
वतन-पु० जन्मभूमि, निवासस्थान।
वत्—तुल्य, समान।
वत्स—पु० बछड़ा, बालक।
वत्सर—पु० वर्ष।

वत्सल—बच्चे के प्रेम से भरा हुआ, अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान्, साहित्य में कुछ लोगों के मत से एक रस।
वदन पु० मुख, अगला भाग, कथन।
वदान्य—उदार, अतिशय दाता, मधुर भाषी।
वदि—पु० कृष्ण पक्ष।
वदुसाना—दोष देना।
वध—पु० हत्या।
वधक—पु० घातक, व्याध, मृत्यु।
वधू—स्त्री० नवविवाहिता स्त्री, पत्नी, पतोहू।
वधूटी—स्त्री० वधू।
वध्य—मार डालने योग्य।
वन—पु० जंगल, वाटिका, जल, घर।
वनचर—पु० वन में भ्रमण करने या रहनेवाला। [उत्पन्न हो, कमल।
वनज, वनजात—पु० जो वन में
वनद—पु० मेघ।
वनदाम—पु० वनमाला। [देवता।
वनदेव—पु० वन का अधिष्ठाता
वनप्रिया—स्त्री० कोयल।
वनमाला—वन के फूलों की माला, इन पांच चीजों की बनी माला—कुंद, तुलसी, मँदार, परजाता और कमल।
वनमाली—पु० श्री कृष्ण।
वनराज—पु० सिंह।
वनरुह—पु० कमल।
वनलक्ष्मी—स्त्री० वन की शोभा।
वनवसन—पु० वृक्षों की छाल का बना कपड़ा।
वनवास—पु० जंगल में रहना, प्राचीन काल में देशनिकाले का दंड।
वनस्थली—स्त्री० वनभूमि।
वनस्पति—स्त्री० पेड़ पौधे।
वनवाहन—पु० नाव।
वनाग्नि—स्त्री० दावानल।
वनिता—स्त्री० पत्नी, स्त्री।
वनी—स्त्री० जंगल, छोटा वन।
वन्य—जंगली।
वपन—पु० बीज बोना।
वपु—पु० शरीर।
वपुरा—तुच्छ, नीच।
वफा—स्त्री० निर्वाह, मुरौवत, सुशीलता, वादा पूरा करना।
वफात—स्त्री० मृत्यु।
वफादार—अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला, सच्चा।
वबाल—स्त्री० बोझ, आफत, पाप का फल, ईश्वरीय कोप। [पदार्थ।
वमन—पु० कै करना, कै किया हुआ
वमि—स्त्री० वमन का रोग।
वयःक्रम—पु० उम्र।
वयःसंधि—स्त्री० बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।
वय—स्त्री० उम्र।
वयस्क—उमर का, सयाना, बालिग।

वयोवृद्ध—बड़ा बूढ़ा। [परन्तु।
वरंच ऐसा न होकर ऐसा, बल्कि,
वर—श्रेष्ठ। पु० किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ, आशीष, शुभचिंतन, दुल्हा।
वरक—पु० पत्र, पन्ना, सोने चाँदी आदि के पतले पत्तर जो मिठाइयों पर लगाने और औषध के काम में आते हैं।
वरण—पु० किसी को किसी काम के लिये चुनना, कन्या के विवाह में वर अंगीकार करने की रीति, पूजा।
वरद—वर देनेवाला।
वरदान—पु० वर देना।
वरदी—स्त्री० वह पोशाक जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो।
वरन्—ऐसा नहीं, बल्कि।
वरना—नहीं तो। पु ऊँट।
वरयात्रा—स्त्री० बरात। [वती स्त्री०।
वरवर्णिनी—स्त्री० गुणवती और रूप-
वरही—पु० दे० "वर्ही"।
वराटिका—स्त्री० कौड़ी।
वरानना—स्त्री० सुंदर स्त्री।
वराह—पु० सूअर, विष्णु।
वराहक्रांता—स्त्री० लजालू।
वरिष्ठ—श्रेष्ठ।
वरुण—पु० जल का देवता, जल, सूर्य, एक ग्रह जिसे अंगरेजी में नेपचून कहते हैं। [या फँदा।
वरुणपाश—पु० वरुण का अस्त्र पाश
वरुणानी—स्त्री० वरुण की स्त्री।
वरुणालय—पु० समुद्र।
वरूथिनी—स्त्री० सेना।
वर्क—पु० काम। [कर्त्ता।
वर्कर—पु० काम करने वाला, कार्य-
वर्किंग कमिटी—स्त्री० कार्यकारिणी समिति।
वर्ग—पु० श्रेणी, कोटि, समान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह, एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह, परिच्छेद, अध्याय, दो समान अंकों का गुणनफल, वह चौखुटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारो कोण समकोण हो। [गुणनफल।
वर्गफल—पु० दो समान राशियों का
वर्गमूल—पु० किसी वर्गांक का वह मूल अंक जिसे उसी अंक से गुना करने से वह वर्गांक प्राप्त हुआ हो। जैसे २५ का वर्गमूल ५ होगा।
वर्जन—पु० त्याग, मनाही।
वर्जित—त्यागा हुआ, निषिद्ध। [रूप।
वर्ण—पु० रंग, जाति, भेद, अक्षर,
वर्णन—पु० कथन।
वर्णप्रस्तार—पु० छंद शास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह मालूम होता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने

भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे। [सूची।

वर्णमाला—स्त्री० अक्षरों की क्रमबद्ध

वर्णविचार—पु० व्याकरण का वह भाग जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि का वर्णन हो।

वर्णवृत्त—पु० वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णसंकर—पु० दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न व्यक्ति, व्यभिचार से उत्पन्न व्यक्ति।

वर्णिकवृत्त—पु० वर्णवृत्त।

वर्णित—कहा हुआ।

वर्ण्य—वर्णन योग्य।

वर्त्तन—पु० बरताव, व्यवहार, व्यवसाय, घुमाना, परिवर्तन, स्थापन, सिलबट्टे से पीसना, बरतन, पात्र।

वर्त्तमान—जो जारी हो, उपस्थित, आधुनिक, वृत्तांत, चलता व्यवहार, व्याकरण में क्रिया के तीन भेदों में से एक।

वर्त्तिका—स्त्री० वत्ती, सलाई। [हुआ।

वर्त्तित—संपादित किया हुआ, चलाया

वर्ती—बरतने वाला, स्थित रहनेवाला

वर्तुल—गोल। [पलक, आधार।

वर्त्म—पु० मार्ग, किनारा, आँख की

वर्दी—स्त्री० दे० "बरदी"।

वर्द्धक—बढ़ानेवाला। [काटना।

वर्द्धन—पु० बढ़ाना, वृद्धि, उन्नति,

वर्द्धमान—जो बढ़ता जा रहा हो, वर्द्धनशील।

वर्म—पु० कवच, घर।

वर्य्य—श्रेष्ठ।

वर्वर—पु० एक देश, इस देश के निवासी जो जंगली कहे गये हैं, नीच।

वर्ष—पु० वृष्टि, बादल, साल।

वर्षगाँठ—पु० जन्म दिन।

वर्षण—पु० वृष्टि।

वर्षा—स्त्री० वृष्टि।

वर्ही—पु० मोर पक्षी।

वल—पु० मेघ, सेना।

वलभ—पु० कंकण। [वेष्टन।

वलय—पु० मंडल, कंकड़, चूड़ी,

वलवला—पु० उमंग।

वला—स्त्री० सेना, लक्ष्मी, धरणी।

वलाका—स्त्री० बगुलों का समूह।

वलाहक—पु० मेघ, पर्वत।

वलि—पु० रेखा, पेट के सिकुड़ने से पड़ी रेखा, देवता को चढ़ाने की वस्तु, श्रेणी।

वलित—बल खाया हुआ, झुकाया हुआ, घेरा हुआ, लिपटा हुआ, ढका हुआ, जिसमें झुरियाँ पड़ी हों, सहित।

वली—स्त्री० झुर्री, श्रेणी, रेखा। पु० मालिक, शासक, साधू, फकीर।

वल्कल– पु० वृक्ष की छाल।

वल्द—पु० पुत्र। [परिचय।

वल्दियत– स्त्री० पिता के नाम का

वल्मीक–पु० दीमकों द्वारा लगाया हुआ मिट्टी का ढेर, दीमक।

वल्लकी–स्त्री० वीणा।

वल्लभ–प्रियतम। पु० प्रिय मित्र, पति, अध्यक्ष।

वल्लभा–स्त्री० प्रिय स्त्री।

वल्लरि, वल्लरी–स्त्री० लता, मंजरी।

वल्लव–पु० गोप।

वल्ली—स्त्री० लता।

वश–पु० इच्छा, अधिकार, काबू।

वशवर्ती—अधीन।

वशिता–स्त्री० अधीनता, मोहने की क्रिया या भाव। [में एक ऐश्वर्य्य।

वशित्व–स्त्री० वशिता, आठ ऐश्वर्य्यों

वशी—अपने को वश में रखनेवाला, अधीन। [क्रिया।

वशीकरण—पु० वश में लाने की

वशीभूत—अधीन।

वश्य—वश में आनेवाला।

वश्यता—स्त्री० अधीनता।

वसंत—पु० एक ऋतु जिसके अंदर चैत बैशाख के महीने माने गये हैं, एक राग, चेचक। [मास।

वसंतदूत—पु० आम, कोयल, चैत

वसंतदूती—स्त्री० कोयल, माधवी लता।

वसंती—वसंत ऋतु का, खुलते हुए पीले रंग का।

वसअत—स्त्री० विस्तार, समाई, चौड़ाई, शक्ति। [ग्राम।

वसति—स्त्री० वासस्थान, नगर,

वसन—पु० वस्त्र, आवरण, निवास।

वसवास—पु० संदेह, मोह।

वसह—पु० बैल।

वसीका—वक्फ अर्थात् धर्मकार्य में लगी हुई संपति का इकरारनामा।

वसीयत—स्त्री० मरने के समय अपनी संपत्ति के बटवारे के संबंध में लिखी हुई व्यवस्था। [पत्र, विल।

वसीयतनामा—पु० वसीयत का

वसीला–पु० संबंध, जरिया, आश्रय।

वसुंधरा—स्त्री० पृथ्वी।

वसु—पु० देवताओं का एक गण जिसके अंदर आठ देवता हैं, आठ की संख्या, रत्न, धन, अग्नि, किरण, जल, सोना, कुवेर, शिव, सूर्य, विष्णु, सज्जन, तालाब।

वसुदा, वसुधा—स्त्री० पृथ्वी।

वसुमती—स्त्री० पृथ्वी।

वसूल—प्राप्त, लब्ध।

वसूली—स्त्री० प्राप्ति।

वस्ति–स्त्री० पेड़, मूत्राशय, पिचकारी।

वस्तु—स्त्री० वह जिसका स्तित्व हो, सत्य चीज, कथावस्तु।

वस्तुतः—सचमुच।

वस्तुनिर्देश—पु० मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।

वस्तुवाद—पु० वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जगत् जैसा मालूम पड़ता है उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है।

वस्त्र—पु० कपड़ा।

वस्फ़—पु० गुण, विशेषता।

वस्ल—पु० मिलन, मिलाप, संयोग।

वह—कर्त्ताकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम।

वहन—पु० बेड़ा, ढोकर ले जाना, उठाना। [मिथ्या संदेह।

वहम—पु० मिथ्या धारणा, भ्रम,

वहमी—वहम करनेवाला, झूठे ख्याल में पड़ा रहनेवाला।

वहशत—स्त्री० असभ्यता, उजड़पन, पागलपन, अधीरता, उदासी, डरावनापन।

वहशी—जंगली, असभ्य, भड़कनेवाला।

वहाँ—उस जगह।

वहाबी—पु० अब्दुल वहाब का चलाया मुसलमानों का संप्रदाय, इसके अनुयायी।

वहिः—बाहर।

वहित्र—पु० जहाज। [आदमी।

वहिरंग—पु० बाहरी भाग, बाहरी

वहिर्गत—जो बाहर गया हो, बाहरी।

वहिर्भूत—वहिर्गत।

वहिर्मुख—विमुख।

वहिर्लापिका—स्त्री० पहेली। [व्यक्त।

वहिष्कृत—बाहर निकाला हुआ,

वहिष्प्राण—पु० जीवन, श्वास, हवा।

वह्नि—पु० अग्नि, तीन की संख्या।

वहीं—उसी जगह।

वही—पहले कहा हुआ व्यक्ति या वस्तु।

वांछा—स्त्री० इच्छा।

वांछित—चाहा हुआ, इच्छित।

वा—या, अथवा।

वाइज़—पु० उपदेशक।

वाइन—पु० शराब, मद्य।

वाइकौंट—पु० इंगलैंड के सामंतों की एक उपाधि।

वाइस चान्सेलर—पु० उपकुलपति, विश्वविद्यालय में चान्सेलर के बाद का पदाधिकारी।

वाइस चेअरमैन, वाइस प्रेसिडेन्ट—पु० उपाध्यक्ष, उपसभापति।

वाइसराय—पु० राजप्रतिनिधि, बड़ा लाट। [कागज, हिसाब का पुर्जा।

वाउचर—पु० हिसाब के ब्योरे का

वाक्—पु० वाणी, सरस्वती, बोलने की इंद्रिय।

वाकई—वास्तव। वास्तव में। [चय।

वाकफियत—स्त्री० जानकारी, परि-

वाकया—पु० घटना, वृत्तांत। [स्थित।

वाक़े—होने या घटनेवाला, [illegible]

वाक़िआ—पु० दुर्घटना, समाचार।

वाकिफ—जानकार, अनुभवी।
वाकिफकार—किसी बात को जानने या समझनेवाला।
वाक्‌पटु—बात करने में चतुर।
वाक्‌पति-पु० बृहस्पति, ब्रह्मा, विष्णु।
वाक्य—पु० वह पदसमूह जिससे पूरा मतलब समझ में आ सके।
वाक्‌सिद्धि—स्त्री० वाणी की सिद्धि।
वागीश—वक्ता। पु० बृहस्पति, ब्रह्मा, कवि।
वागीश्वरी—स्त्री० सरस्वती।
वागुरी—पु० फंदा।
वाग्जाल—पु० बातों का आडंबर।
वाग्दंड—पु० डाँटडपट।
वाग्दत्त—वचन दिया हुआ।
वाग्दत्ता—स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह की बात दे दी गयी हो।
वाग्दान—पु० बात देना।
वाग्देवी—स्त्री० सरस्वती।
वाग्मी—वाचाल, पंडित, बृहस्पति।
वाग्वज्र—पु० कठोर वाक्य, शाप।
वाग्विलास—पु० आनंदपूर्वक परस्पर बातचीत करना।
वाङ्‌मय—वचन संबंधी, वचन द्वारा किया हुआ। पु० साहित्य।
वाङ्‌मुख—पु० उपन्यास, गद्यकाव्य।
वाच्, वाच—स्त्री० वाणी।
वाच—स्त्री० जेब में रखने या कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी।
वाचमैन—पु० चौकीदार।
वाचक—बतानेवाला। पु० नाम, संज्ञा। [पादन।
वाचन—पु० पढ़ना, कहना, प्रति-
वाचनालय—पु० वह स्थान जहाँ लोग समाचार पत्र आदि पढ़ते हैं।
वाचस्पति—पु० बृहस्पति।
वाचा—स्त्री० वाणी, वाक्य।
वाचाल—बोलने में तेज, बकवादी।
वाचिक—वक्ता संबंधी, वाणी से किया हुआ।
वाची—प्रकट करनेवाला, सूचक।
वाच्य—कहने योग्य, अभिधेय। पु० अभिधेयार्थ, वाच्यार्थ।
वाच्यार्थ—पु० मूल शब्दार्थ।
वाज—उपदेश, शिक्षा, कथा, धार्मिक व्याख्यान।
वाजपेयी—पु० वाजपेय यज्ञ करने वाला, ब्राह्मणों की एक उपाधि।
वाजेह—मालूम, विदित।
वाजिब—उचित, ठीक।
वाजिबी—उचित।
वाजिबुल अदा—अदा करने योग्य धन, वह धन जिसके अदा करने का समय आ गया हो।
वाजिबुल अर्ज—पु० वह शर्त जो कानूनी बन्दोबस्त के वक्त जमींदारों और किसानों के बीच गाँव के रिवाज आदि के सम्बन्ध में लिखी

जाती है। [वसूली का वक्त आ गया हो।
वाजिबुल वसूल—वह धन जिसकी
वाजी—पु० घोड़ा, फटे दूध का पानी।
वाजीकरण—पु० वह आयुर्वेदिक योग जिससे मनुष्य में वीर्य्य की वृद्धि हो।
वाट—पु० मार्ग, रास्ता।
वाटर—पु० पानी। [न पड़े।
वाटरप्रूफ—जिसपर पानी का प्रभाव
वाटरवर्क्स—पु० नगर में पानी पहुँचाने का कारखाना या विभाग।
वाटरिंग—पु० पानी का छिड़काव।
वाटिका—स्त्री० बगीचा।
वाड़वाग्नि—स्त्री० समुद्र की आग।
वाण—पु० तीर।
वाणिज्य—पु० व्यापार।
वाणिज्य दूत—पु० वाणिज्य के काम से दूसरे देश में ठहरा हुआ राजदूत।
वाणी—स्त्री० सरस्वती, वाक्शक्ति, वचन, जीभ। [वाली वायु।
वात—पु० हवा, पक्वाशय में रहने
वातज—वायु द्वारा उत्पन्न।
वातजात—पु० हनुमान।
वातध्वज—पु० बादल।
वातपट—पु० ध्वजा, झंडा।
वातरोग—वायु की बीमारी।
वातव्याधि—स्त्री० गठिया।
वातायन—पु० झरोखा, खिड़की।
वातायु—पु० मृग।

वाति—पु० हवा, चंद्रमा, सूर्य।
वातुल—पु० बावला, पागल, वातरोगी।
वात्सरिक—पु० ज्योतिषी।
वात्सल्य—पु० स्नेह, माता पिता का संतति के प्रति स्नेह। [सिद्धांत।
वाद—पु० शास्त्रार्थ, दलील, बहस,
वादक—पु० बाजा बजानेवाला, वक्ता, शास्त्रार्थ करनेवाला।
वादन—पु० बाजा बजाना। [बहस।
वादप्रतिवाद, वादविवाद—पु०
वादा—पु० प्रतिज्ञा।
वादानुवाद—पु० बहस।
वादी—पु० वक्ता, मुद्दई, पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।
वाद्य—पु० बाजा।
वानप्रस्थ—पु० जीवन के चार आश्रमों में तीसरा आश्रम।
वानर—पु० बंदर।
वापस—लौटा हुआ।
वापसी—लौटा हुआ। स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव, प्रत्यागमन।
वापन—पु० बोना, मुंडन। [बावली।
वापिका, वापी—स्त्री० छोटा जलाशय,
वाम—बायाँ, प्रतिकूल, टेढ़ा, दुष्ट। पु० कामदेव, वरुण, धन।
वामदेव—पु० शिव।
वामन—बौना, ह्रस्व। पु० विष्णु, शिव, विष्णु का [illegible] अवतार।
वाममार्ग—पु० तांत्रिक मत जिसमें

मद्य-मांस आदि का विधान है।

वामा—स्त्री० स्त्री, दुर्गा।

वामावर्त—दक्षिणावर्त का उलटा, किसी वस्तु को बाईं ओर से आरंभ की जानेवाली (प्रदक्षिणा), जिसमें बाईं ओर से घुमाव हो।

वामोरु—सुंदर जंघावाली।

वायव्य—वायु संबंधी। पु० उत्तर-पच्छिम का कोना।

वायस—पु० कौआ।

वायु—स्त्री० हवा।

वायुकोण—पु० पच्छिमोत्तर कोण।

वायुमंडल—पु० आकाश।

वायुलोक—पु० आकाश।

वारंट—पु० अधिकार-पत्र।

वारंट गिरफ्तारी—स्त्री० किसी पुरुष को पकड़ कर अदालत में हाजिर करने का अधिकार पत्र।

वारंट तलाशी—स्त्री० तलाशी का आज्ञापत्र। [आज्ञापत्र।

वारंट रिहाई—स्त्री० रिहाई का

वारंवार—बारबार।

वार—पु० द्वार, रोक, आवरण, अवसर, मरतबा, क्षण, सप्ताह का दिन, बारी, चोट, आक्रमण, युद्ध।

वार लोन—पु० लड़ाई के लिये लिया हुआ कर्ज।

वार शिप—पु० जंगी जहाज।

वारण—पु० निषेध, मनाही, रुकावट, कवच।

वारदात—स्त्री० दुर्घटना, मारपीट, दंगाफसाद। [निछावर।

वारना—निछावर करना। पु०

वारनिंग—स्त्री० सूचना, हिदायत।

वारनिश—स्त्री० एक तरल पदार्थ जो लकड़ी वगैरह पर चमक लाने के लिये लगाया जाता है।

वारपार—इस किनारे से उस किनारे तक। पु० यह किनारा और वह किनारा।

वारफेर—स्त्री० निछावर।

वारमुखी, वारांगना—स्त्री० वेश्या।

वाराणसी—स्त्री० काशी।

वारान्यारा—पु० फैसला।

वाराह—पु० दे० "वराह"।

वारि-पु० जल। [कौड़ी, खरा सोना।

वारिज—पु० कमल, शंख, घोंघा,

वारित—निवारित।

वारिद, वारिधर—पु० मेघ।

वारिधि, वारिनिधि—पु० समुद्र।

वारिस—पु० उत्तराधिकारी।

वारींद्र—पु० समुद्र।

वारीश—पु० समुद्र, वरुण।

वारुण—पु० वरुण संबंधी। पु० जल।

वारुणी—स्त्री० मदिरा, वरुण की स्त्री, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा, गंगास्नान का एक पर्व।

वार्ड—पु० रक्षा, हिफाजत, किसी

खास काम के लिये घेर कर बनाया हुआ स्थान, अस्पताल या जेल आदि के अन्दर अलग अलग विभाग ।

वार्डर—पु० रक्षक, जेल आदि के अंदर का पहरेदार ।

वार्त्ता-स्त्री० अफवाह, संवाद, विषय, मामला, बातचीत, वैश्यवृत्ति ।

वार्त्तालाप—पु० बातचीत ।

वार्तिक—पु० अर्थों को स्पष्ट करने-वाला वाक्य या ग्रन्थ ।

वार्द्धक्य—पु० बुढ़ापा, वृद्धि ।

वार्षिक—सालाना ।

वार्ष्णेय—पु० श्रीकृष्ण ।

वालंटियर—पु० स्वयंसेवक ।

वालिद—पु० पिता ।

वालिदा—स्त्री० माता ।

वावैला—पु० विलाप, रोनापीटना, शोरगुल । [उपपुराण ।

वाशिष्ठ—वशिष्ठ संबंधी । पु० एक

वाष्प—पु० भाप, आँसू ।

वासंतिक—वसंत संबंधी । पु० भाँड़, विदूषक, नर्त्तक ।

वास—पु० निवास, गृह, सुगंध ।

वासक—पहनने का वस्त्र ।

वासकशय्या—स्त्री० शय्या तैयार कर नायक के आने की प्रतीक्षा में रहनेवाली नायिका । [वास ।

वासन—पु० सुगंधित करना, [illegible]

वासना—स्त्री० प्रत्याशा, ज्ञान, भावना, कामना ।

वासर—पु० दिन ।

वासव—पु० इंद्र ।

वासा—पु० डेरा, ठहराव ।

वासित—सुगंधित किया हुआ । कपड़े से ढका हुआ, बासी ।

वासिता—स्त्री० स्त्री ।

वासिल—प्राप्त, जो वसूल हुआ हो ।

वासी—पु० रहनेवाला ।

वासुकी—पु० एक नागराज ।

वासुदेव—पु० श्रीकृष्ण ।

वास्कट—स्त्री० फतूही, वेस्टकोट ।

वास्तव—यथार्थ, सत्य, ठीक ।

वास्तविक—यथार्थ, ठीक ।

वास्तव्य—वसने योग्य, पु० वस्ती ।

वास्ता—पु० संबंध ।

वास्तु—पु० डीह, घर, इमारत ।

वास्तुविद्या—स्त्री० इमारत संबंधी विद्या ।

वास्ते—लिये, हेतु । [सूचक शब्द ।

वाह—प्रशंसा, आश्चर्य और घृणा

वाहक-पु० बोझ ढोनेवाला, सारथी ।

वाहन—पु० सारथी, सवारी ।

वाहवाही—स्त्री० लोगों की प्रशंसा ।

वाहिद—ईश्वर का नाम, एक ।

वाहित—चला या बहा हुआ ।

वाहिनी—स्त्री० सेना, एक निश्चित संख्या की सेना ।

वाहियात—व्यर्थ, बुरा ।

वाही—सुस्त, ढीला, निकम्मा, मूर्ख, अवारा।

वाही तबाही—बेहूदा, अवारा, बे सिर पैर का। स्त्री० गाली गलौज।

वाह्य—बाहर। पु० रथ, सवार।

वाह्यांतर—भीतर और बाहर का।

वाह्येंद्रिय—स्त्री० पाँचो ज्ञानेंद्रियाँ—आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा।

विंजन—पु० व्यंजन, तरकारी।

विजन—पु० दे० "व्यंजन"।

विंदक—ज्ञाता, प्राप्त करनेवाला।

विंदु—पु० बूँद, बिंदी, अनुस्वार, शून्य, बहुत छोटा टुकड़ा।

विंदुर—पु० बुँदकी।

विंध्य—पु० विंध्याचल।

विंशति—बीस।

वि—एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लग कर 'विशेष', 'वैरूप्य' और 'निषेध' अर्थ का बोध कराता है।

विकट—विशाल, भयंकर, कठिन, टेढ़ा, दुर्गम, दुस्साध्य।

विकंटक—काँटा या शत्रुरहित।

विकंपन-पु० काँपना। [भुजा, केतु।

विकच—खिला, केशरहित। पु०

विकर—पु० रोग, व्याधि।

विकराल—डरावना।

विकर्षण—पु० आकर्षण।

विकल—व्याकुल, कलाहीन, खंडित।

विकलांग-जिसका कोई अङ्ग टूटा हो।

विकला-स्त्री० कला का साठवाँ भाग, समय का एक बहुत छोटा भाग।

विकलेंद्रिय—कम इंद्रियाँवाला।

विकल्प—पु० भ्रम, एक बात मन में बैठा कर फिर उसके विरुद्ध सोच-विचार, किसी विषय में कई प्रकार की विधियों का मिलना, कई में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण।

विकल्मष—निष्पाप।

विकसन—पु० खिलना, फूटना।

विकार—पु० किसी वस्तु के रूप रंग आदि का बदल जाना, खराबी, दोष, वासना। [मनोविकारों से युक्त।

विकारी—जिसमें विकार हो, क्रोधादि

विकाल—पु० दुःसमय।

विकाश, विकास-पु० प्रसार, फैलाव, खिलना, क्रमशः उन्नत होना।

विकीर्ण—चारो ओर फैला हुआ, मशहूर, प्रसिद्ध।

विकृत—बिगड़ा हुआ, जो भद्दा या कुरूप हो गया हो, अस्वाभाविक।

विकृति—स्त्री० विकार, बिगड़ा हुआ रूप, रोग, परिवर्त्तन, मन में होने वाला क्षोभ, मूल धातु से बिगड़ कर बना हुआ शब्द रूप।

विकृष्ट—खींचा हुआ।

विक्टोरिया-स्त्री० एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी, इंग्लैण्ड की एक महारानी।

विक्रम—श्रेष्ठ। पु० पराक्रम, बल,

गति, विष्णु।
विक्रमाब्द--पु० विक्रम संवत्।
विक्रमी--पु० पराक्रमी, विष्णु।
विक्रय--पु० बिक्री।
विक्रांत--पु० वीर।
विक्रेता--पु० बेचनेवाला।
विक्रेय--बिकनेवाला।
विक्षत--घायल। [पागल, विकल।
विक्षिप्त--फेंका या छितराया हुआ,
विक्षुब्ध-जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।
विक्षेप--पु० फेंकना, इधर उधर हिलाना, मन को इधर उधर भटकाना, बाधा। [उद्विग्नता।
विक्षोभ--पु० मन की चंचलता या
विखरना--फैलना, छितराना।
विख्यात--प्रसिद्ध।
विख्याति--स्त्री० प्रसिद्धि।
विगंध--गंधयुक्त, बदबूदार।
विगत--बीत हुआ, अन्तिम से पहले का, रहित।
विगर्हण--पु० डाँटना डपटना।
विगर्हित--जिसे डाँट फटकार पड़ी हो, खराब। [हो, शिथिल, बिगड़ा हुआ।
विगलित--जो गल या गिर गया
विगुण--गुणरहित।
विगूढ़--गुप्त, निंदित। [बाँटा हुआ।
विगृहीत--पकड़ा हुआ, रोका हुआ,
विग्रह--पु० विभाग, दूर या अलग करना, झगड़ा, युद्ध, विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना, शकल, आकृति, शरीर, मूर्ति।
विग्रही--झगड़ा या युद्ध करनेवाला।
विघट्टन--पु० तोड़ना फोड़ना, नष्ट करना। [छोटा मान।
विघटिका--स्त्री० समय का एक
विघन--पु० नाश, चोट, हथौड़ा।
विघात--पु० नाश, प्रहार, बाधा।
विघ्न--पु० बाधा। [पु० गणेश।
विघ्न विनायक, विघ्न विनाशक,
विघ्नेश--पु० गणेशजी।
विचक्षण--पु० चमकता हुआ, निपुण, पंडित, चतुर, बुद्धिमान।
विचरण--पु० चलना, घूमना फिरना।
विचरना--घूमना। [हुआ।
विचल--अस्थिर, स्थान से हटा
विचलित--अस्थिर, प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।
विचार--पु० ख्याल, मुकदमे की सुनवाई और फैसला। [न्यायकर्त्ता।
विचारक--पु० विचार करनेवाला,
विचारणीय--विचारने योग्य।
विचारपति--पु० न्यायाधीश।
विचारशील--विचारवान्।
विचारशीलता--स्त्री० बुद्धिमत्ता।
विचारालय--पु० न्यायालय, अदालत।
विचारी--विचार करनेवाला।
विचार्य्य--विचारणीय।

विचिकित्सा—स्त्री० संदेह, शक।
विचित्र—कई तरह के रंगों या वर्णों वाला, अद्भुत, विस्मित या चकित करनेवाला। [अद्भुतपन।
विचित्रता—स्त्री० विलक्षणता,
विच्छित्ति—स्त्री० विच्छेद, कमी, शरीर को चित्रित करना, कविता में की यति।
विच्छिन्न—विभक्त, अलग।
विच्छेद—पु० काट या छेद कर अलग करने की क्रिया, क्रम का बीच से टूट जाना, टुकड़े टुकड़े करना, नाश, विरह, कविता में की यति।
विच्छेदन—पु० काट या छेद कर [illegible] करना, नष्ट करना।
विछोह—पु० वियोग।
विजन—एकांत। पु० पंखा।
विजय—स्त्री० जीत।
विजययात्रा—स्त्री० विजय प्राप्त करने के लिये की हुई यात्रा।
विजयलक्ष्मी, विजयश्री—स्त्री० जीत की अधिष्ठात्री देवी।
विजया—स्त्री० दुर्गा, भाँग।
विजयी—पु० विजेता, जीतनेवाला।
विजातीय—दूसरी जाति का।
विजारत—स्त्री० वजीर का पद, मंत्रित्व। [इच्छा।
विजिगीषा—स्त्री० विजय पाने की
विजीगिषु—स्त्री० विजय पानेके इच्छुक।

विजिट—स्त्री० भेंट, मुलाकात।
विजिटर्स बुक—पु० निरीक्षण बही।
विजिटिंग कार्ड—पु० मुलाकात के लिये भेजा जानेवाला कार्ड। [गया हो।
विजित—पु० वह जो जीत लिया
विजृंभण—पु० जँभाई लेना।
विजेता—पु० जीतनेवाला।
विजोग—पु० वियोग, विरह।
विज्जु, विज्जुलता—स्त्री० बिजली।
विज्ञ—जानकार, बुद्धिमान्, विद्वान्।
विज्ञता—स्त्री० जानकारी, विद्वत्ता।
विज्ञप्त—सूचित। [क्रिया, विज्ञापन।
विज्ञप्ति—स्त्री० सूचित करने की
विज्ञात—प्रसिद्ध।
विज्ञान—पु० ज्ञान, शास्त्र, ब्रह्म, आत्मा, निश्चयात्मिका बुद्धि।
विज्ञानमय कोष—पु० ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह।
विज्ञानवाद—पु० वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो, वह सिद्धांत जिसमें आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य हों। [वाला, वैज्ञानिक।
विज्ञानी—पु० अच्छा ज्ञान रखने-
विज्ञापन-पु० सूचना देना, इश्तहार।
विज्ञापक—पु० सूचना देनेवाला।
विज्ञेय—विशेष जानने योग्य।
विट—पु० कामुक, वेश्यागामी, धूर्त, मल, साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी

नायक जो विषय भोग में सारी सम्पत्ति नष्ट कर चुका हो ।
विटप--पु० कोंपल, वृक्ष ।
विटपी--स्त्री० वृक्ष, पेड़ ।
विडंब—पु० आडंबर ।
विडंबना—स्त्री० किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसको नकल उतारना, हँसी उड़ाना ।
विडरना—तितर बितर होना, भागना ।
विडारना—तितर बितर करना, नष्ट करना, भगाना ।
विड़ाल—पु० बिलार, मार्जार ।
विड़ालाक्ष—पु० बिड़ाल की तरह आँखवाला ।
विड़ौजा—पु० इंद्र ।
विलंड—पु० हाथी ।
वितंडा--स्त्री० दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना, व्यर्थ का झगड़ा । [लगे हों ।
वितंत-पु० वह बाजा जिसमें तार न
वितत—विस्तार हुआ ।
वितथ—झूठ, असत्य ।
वितद्रु--पु० झेलम नदी ।
वितरण - पु० अर्पण करना, बाँटना ।
वितरित--बाँटा हुआ ।
वितर्क—पु० एक तर्क के बाद होनेवाला दूसरा तर्क, संदेह, शंका ।
वितल—पु० पाताल ।
वितस्ता-स्त्री० झेलम नदी ।

वितान--पु० यज्ञ, विस्तार, फैलाव, बड़ा चँदोआ, समूह, शून्य ।
वितानना-शामियाना आदि तानना ।
वितीर्ण--पु० बाँटना ।
वितुंड--पु० हाथी ।
वितृष—तृषारहित ।
वितृष्ण--तृष्णारहित । [संपत्ति, धन ।
वित्त--विचारा हुआ, ख्यात, पु०
वित्ता--पु० बिलस्त ।
वित्रप—निर्लज्ज ।
वित्राश--पु० डर, भय ।
विथकना—शिथिल होना, मोहित या चकित होकर चुप हो जाना ।
विथुर--थोड़ा, पीड़ित । पु० चोर राक्षस ।
विथुरा--स्त्री० विरहिणी । [चतुर ।
विदग्ध--पु० रसिक पुरुष, विद्वान्,
विदग्धता—स्त्री० विद्वत्ता, पांडित्य ।
विदग्धा—स्त्री० एक नायिका, चतुर स्त्री ।
विदथ—पु० योगी, यज्ञ ।
विदरना—फटना, फाड़ना । [नाम ।
विदर्भ—पु० बरार प्रदेश का प्राचीन
विदल —पु० अनारदाना, चना, दाल ।
विदलन--पु० मलने दलने आदि की क्रिया, फाड़ना ।
विदलित—रौंदा हुआ, फाड़ा हुआ ।
विदा—स्त्री० प्रस्थान, कहीं से चलने की अनुमति ।

विदाई—स्त्री० प्रस्थान रुखसती, विदा होने की आज्ञा या अनुमति, विदा होनेके समय मिला हुआ धन।
विदारक—फाड़नेवाला।
विदारण—पु० फाड़ना, मार डालना।
विदारी फाड़नेवाला।
विदाह—पु० जलन।
विदाही—पु० जलन पैदा करनेवाला [पदार्थ।
विदित—ज्ञात, जाहिर।
विदिश्, विदिशा—पु० कोना।
विदीर्ण—फाड़ा हुआ, मार डाला हुआ।
विदुर—पु० जानकार, पंडित।
विदुष—पु० विद्वान्।
विदुषी—स्त्री० पंडिता स्त्री।
विदूर—जो बहुत दूर हो।
विदूषक—पु० विषयी, कामुक, मसखरा, भाँड़।
विदूषना—सताना, दोष लगाना।
विदेश—दूसरा देश, परदेश।
विदेशी—विदेश का।
विदेह—बेसुध। पु० शरीररहित, वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो, राजा जनक, प्राचीन मिथिला।
विदेह कुमारी—स्त्री० सीता।
विदेही—पु० ब्रह्म।
विद्—जानकार, पंडित, बुध ग्रह।
विद्ध—बीच में छेद किया हुआ, फेंका हुआ, जिसको चोट लगी हो, टेढ़ा, सटा हुआ।

विद्यमान—उपस्थित।
विद्यमानता—स्त्री० उपस्थिति।
विद्या—स्त्री० इल्म, वे शास्त्र जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सके, दुर्गा।
विद्यागुरु—पु० शिक्षक।
विद्याधर—पु० एक प्रकार की देव-योनि जिसके अंतर्गत गंधर्व और किन्नर आदि माने जाते हैं, विद्वान्।
विद्याधरी—स्त्री० विद्याधर नामक देवता की स्त्री।
विद्यार्थी—पु० जो विद्या पढ़ता हो, [छात्र।
विद्यालय—पु० पाठशाला।
विद्यावान्—पु० विद्वान्।
विद्युत्—पु० बिजली।
विद्युन्माला—स्त्री० बिजली की पंक्ति।
विद्युल्लता, विद्युल्लेखा — स्त्री० बिजली।
विद्र—पु० छेद।
विद्रव—पु० युद्ध, नाश, निंदा, [बुद्धि, भागना।
विद्रावण—पु० भागना, पिघलना, उड़ना, फाड़ना, नष्ट करनेवाला।
विद्रुम—पु० मूँगा।
विद्रोह—पु० द्वेष, बलवा।
विद्रोही—उपद्रवी, बागी।
विद्वत्ता—स्त्री० पांडित्य।
विद्वान्—पु० पंडित।
विद्वेष—पु० शत्रुता।
विद्वेषण—पु० शत्रुता, द्वेष उत्पन्न

करना, शत्रु, दुष्टता ।
विधन—निर्धन, धनरहित ।
विधना—पु० विधि, ब्रह्मा । स्त्री० भवितव्यता । [धर्म का अनुयायी ।
विधर्मी—धर्मभ्रष्ट, किसी दूसरे
विधवा—स्त्री० राँड़, बेवा ।
विधाता—पु० विधान करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, सृष्टि करनेवाला, ब्रह्मा । [पिका ।
विधात्री—स्त्री० ब्रह्माणी, व्यवस्था-
विधान—पु० किसी कार्य्य का आयोजन, अनुष्ठान, व्यवस्था प्रबन्ध, विधि, रचना, ढंग, उपाय, आज्ञा करना ।
विधायक—पु० विधान करनेवाला, बनानेवाला, प्रबन्ध करनेवाला ।
विधि—स्त्री० ढंग, प्रणाली, व्यवस्था, योजना, शास्त्रोक्त विधान, चालढाल, भाँति, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है, ब्रह्मा ।
विधिवत्—विधिपूर्वक, यथायोग्य ।
विधु—पु० चंद्रमा, ब्रह्मा, विष्णु, कपूर, पवन । [रोहिणी ।
विधुदार—पु० चंद्रमाकी स्त्री,
विधुबंधु—पु० कुमुद का फूल ।
विधुर—दुःखी, व्याकुल, असमर्थ । पु० रंडुआ, स्त्रीहीन । [विरहिणी ।
विधुरा—विकल । स्त्री० पीड़िता,

विधेय—जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो, कर्त्तव्य, जिसका विधान होनेवाला हो, जो विधि या नियम द्वारा जाना जाय, वशीभूत । पु० वह शब्द या वाक्य, जिसके द्वारा किसी को कुछ कहा जाय ।
विध्वंस—पु० नाश ।
विध्वंसक—नाश करनेवाला ।
विध्वस्त—नष्ट किया हुआ ।
विनत—झुका हुआ, नम्र, शिष्ट ।
विनति—स्त्री० झुकाव, नम्रता, विनय ।
विनती—दे० "विनति" ।
विनम्र—झुका हुआ, विनीत ।
विनय—स्त्री० नम्रता, शिक्षा, प्रार्थना, शासन, नीति । [करनेवाला ।
विनयशील, विनयी—नम्र, विनय
विनशन—पु० नाश ।
विनश्वर—अनित्य, नाशवान् ।
विनष्ट—नाश किया हुआ, बरबाद, भ्रष्ट, पतित ।
विनसना—नष्ट होना ।
विना—बगैर, छोड़ कर ।
विनायक—पु० गणेश ।
विनाश—पु० नाश, लोप, खराबी ।
विनाशन—पु० नष्ट करना, वध, खराब करना ।
विनिद्र—निद्रारहित ।
विनिपात—पु० पतन, विनाश ।
विनिमय—पु० परिवर्तन ।

विनियोग—पु० प्रयोग, भेजना।
विनियोजित—विनियोग किया हुआ, प्रयुक्त।
विनिर्मुक्त—बंधन से रहित।
विनीत—विनययुक्त, सुशील, नम्र, धार्मिक। [दिल्लगी, परिहास, हर्ष।
विनोद—पु० तमाशा, खेलकूद, हँसी
विनोदी—कुतूहल करनेवाला, चुहलबाज, आनंदी। [जड़ना।
विन्यास—पु० स्थापन, सजना,
विन्यस्त—स्थापित, अंकित।
विन्यास—पु० रखना, स्थापन, धरोहर, समूह। [क्रीड़ा।
विपंची—स्त्री० एक प्रकार की वीणा,
विपक्ष—पु० विरुद्धपक्ष, विरोधी, प्रतिवादी या शत्रु, विरोध, अपवाद।
विपक्षी—विरुद्ध पक्ष का, शत्रु, बिना पंख का। [कठिनाई।
विपत्ति—स्त्री० आफत, बुरे दिन,
विपथ—पु० बुरा रास्ता।
विपद्—स्त्री० विपत्ति।
विपदा—स्त्री० विपत्ति। [दुःखी।
विपन्न—जिसपर विपत्ति पड़ी हो,
विपरीत—उलटा, प्रतिकूल, रुष्ट।
विपर्य्यय, विपर्य्यास—पु० उलटपलट, और का और, गलती, गड़बड़ी।
विपल—पु० एक पल का साठवाँ भाग।
विपाक—पु० परिपक्व होना, पूर्ण दशा को पहुँचना, परिणाम, कर्मफल, पचना, दुर्गति।
विपादिका—स्त्री० पहेली।
विपासा—स्त्री० व्यास नदी।
विपिन—भयानक। पु० वन, वाटिका।
विपिनपति—पु० सिंह।
विपिनविहारी—पु० वन में विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण।
विपुल—बहुत अधिक, बड़ा।
विपुला—स्त्री० पृथ्वी।
विप्र—पु० ब्राह्मण।
विप्रलंभ—पु० चाही हुई वस्तु का न मिलना, प्रिय का न मिलना, वियोग, अलग होना, धोखा।
विप्रलब्ध—रहित, वंचित, वियोग विशेष दशा को प्राप्त। [नायिका।
विप्रलब्धा—स्त्री० एक विरहिणी
विप्लव—पु० उपद्रव, विद्रोह, उथलपुथल, विपत्ति, जल की बाढ़।
विफल—जिसमें फल न लगा हो, निष्फल, व्यर्थ, असफल।
विबुध—पु० पंडित, देवता, चंद्रमा।
विबुधविलासिनी—स्त्री० देवता की स्त्री, अप्सरा।
विबुधवेलि—स्त्री० कल्पलता।
विबुधा—स्त्री० विदुषी, देवी।
विबुधान—पु० आचार्य।
विबुधावास—पु० स्वर्ग, देवमंदिर।
विबोध—पु० जागरण, अच्छा ज्ञान, सचेत होना।

विबोधन—पु० समझाना, बुझाना ।

विभंग—पु० दे० 'उपल' । [हुआ ।

विभक्त—बँटा हुआ, अलग किया

विभक्ति—स्त्री० विभाग, पार्थक्य, शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे उस शब्द का क्रिया-पद के साथ संबंध सूचित होता है ।

विभव—पु० धन, ऐश्वर्य, बहुतायत, मोक्ष ।

विभाँति—अनेक प्रकार का । अनेक प्रकार से । पु० भेद, प्रकार ।

विभा—स्त्री० किरण, प्रकाश, शोभा ।

विभाकर—पु० सूर्य, आक, आग, राजा । [अध्याय, मुहकमा ।

विभाग—पु० बँटवारा, हिस्सा,

विभाजक—बाँटनेवाला । [हो ।

विभाजित—विभक्त, जो बाँटा गया

विभात—पु० सवेरा ।

विभाति—स्त्री० शोभा ।

विभाव—पु० साहित्य में वह वस्तु जो रति आदि भावों को उद्दीप्त करने वाली हो ।

विभावरी—स्त्री० रात, वह रात जिसमें तारे चमकते हों, दूती, वेश्या ।

विभावसु—पु० सूर्य, अग्नि, चंद्रमा । [गीत ।

विभास—पु० चमक, तेज, प्रभाती

विभासित—प्रकाशित, शोभित, प्रकट ।

विभिन्न—पृथक्, अनेक प्रकार का ।

विभीति—स्त्री० भय, शंका ।

विभीषिका—स्त्री० डर दिखाना, भयानक दृश्य ।

विभु—पु० प्रभु ।

विभूत—शक्तिशाली, प्रकट ।

विभूति—स्त्री० धन, संपत्ति, महिमा, बुद्धि, राख ।

विभूषण—पु० अलंकार, गहना ।

विभूषित—अलंकृत, शोभित ।

विभेद—फरक, अन्तर ।

विभ्रंश—पु० विनाश, अधःपतन ।

विभ्रांत—भ्रम में पड़ा हुआ ।

विमत—पु० विपरीत सिद्धांत, प्रतिकूल सम्मति ।

विमत्सर—पु० अधिक अहंकार ।

विमन—अनमना, बेमन का ।

विमर्दित—पीसा या मारा हुआ ।

विमर्श, विमर्ष—पु० विवेचन, विचार, आलोचना, परीक्षा, परामर्श ।

विमल—निर्मल, स्वच्छ, साफ ।

विमलापति—पु० ब्रह्मा ।

विमाता—स्त्री० सौतेली मा ।

विमान—पु० वायुयान, रथ, घोड़ा ।

विमुक्त—छूटा हुआ, स्वतंत्र, बचा हुआ, अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ ।

विमुक्ति—स्त्री० छुटकारा, मोक्ष ।

विमुख—मुखरहित, विरत, उदासीन, विरुद्ध, विराग ।

विमुग्ध—मोहित, आसक्त, बेसुध ।

विसुद—उदास, खिन्न।
विमूढ़—अत्यंत मोहित, भ्रम में पड़ा हुआ, बेसुध, मूर्ख।
विमूढ़गर्भ—पु० वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनता हो।
विमोचन—पु० बंधन आदि खोलना, मुक्त करना, निकालना, छोड़ना।
विमोह-पु० भ्रम, बेहोशी, आसक्ति।
वियु—दो, दूसरा।
वियुक्त-बिछुड़ा हुआ, अलग, रहित।
वियोग-पु० विच्छेद, विरह, जुदाई।
वियोगी—पु० विरही।
वियोगिनी—स्त्री० विरहिणी स्त्री।
वियोगांत—जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।　　[से अलग हो।
वियोगिनी—जो अपने पति या प्रिय
वियोगी—जो प्रिय से दूर हो, विरही।
वियोजक-पु० दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक करनेवाला, गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो।
वियोजित—अलग किया हुआ।
विरंग-बदरंग, फीका, कई रंगों का।
विरंच, विरंचि—पु० ब्रह्मा।
विरंचिसुत—पु० नारद।
विरक्त-विमुख, उदासीन, अप्रसन्न।
विरक्ति—स्त्री० विराग।
विरचन—पु० निर्माण।
विरचित—बनाया हुआ।　　[लीन।
विरत—विमुख, निवृत्त, विरक्त, बहुत
विरति—स्त्री० चाह का न होना, उदासीनता, वैराग्य।　[न हो, पैदल।
विरथ—जिसके पास रथ या सवारी
विरद-पु० प्रसिद्धि, यश, यशकीर्त्तन।
विरदावली—स्त्री० यश की कथा।
विरदैत—बड़े विरदवाला, यशस्वी।
विरमना—रम जाना, मन लगाना, विराम करना, मोहित होकर रुक जाना, थमना, कम होना।
विरल-जो घना न हो, दुर्लभ, पतला, निर्जन, थोड़ा।
विरला—कोई ही।
विरस—नीरस, अप्रिय।
विरह—पु० किसी वस्तु से रहित होने का भाव, वियोग, जुदाई, वियोग का दुःख।
विरहिणी—दे० "वियोगिनी"।
विरहित—रहित, बिना।
विरही—वियोगी।　　[वैराग।
विराग—पु० अनुराग का न होना,
विराजना—शोभना, उपस्थित होना, बैठना।　　[बैठा हुआ।
विराजमान-चमकता हुआ, उपस्थित,
विराट्—बहुत बड़ा। पु० ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है, क्षत्रिय, कांति।
विराध—पु० पीड़ा, सतानेवाला।

विराम-पु० रुकना, ठहरना, विश्राम करना, छंद के चरण में यति, वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पड़ता हो।
विराव—पु० शब्द, कलरव, शोरगुल।
विरुज—नीरोग।
विरुझना—उलझना।
विरुद—पु० यश, यशकीर्तन, यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजालोग धारण करते थे।
विरुदावली—स्त्री० यशवर्णन।
विरुद्ध—खिलाफ, अप्रसन्न, विपरीत, अनुचित।
विरूप—कई रंग रूप का, कुरूप, शोभाहीन, विरुद्ध, बदला हुआ।
विरूपाक्ष—पु० शिव।
विरेचक-दस्तावर, दस्त लानेवाला।
विरेचन—पु० दस्त लाना, जुलाब।
विरोचन—पु० चमकना, किरण, सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, विष्णु।
विरोध—पु० मेल न रहना, अनबन, शत्रुता, उलटी स्थिति, नाश।
विरोधाभास—पु० एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है।
विलंब—देर।
विलंबना—विलंब करना, मन लगने के कारण बस जाना, लटकना, सहारा लेना।
विलक्षण—अनोखा, अनूठा, अद्भुत।
विलग—अलग।
विलगाना—अलग होना या करना।
विलज्ज—निर्लज्ज, बेशर्म।
विलपना—रोना।
विलय—पु० लोप, नाश, मृत्यु।
विलसन—पु० चमकना, प्रमोद, क्रीड़ा।
विलसना—शोभा पाना, विलास करना, आनंद मनाना।
विलाप—पु० रोना।
विलायत-पु० विदेश, दूर का देश।
विलायती—विदेशी, परदेशी।
विलास—पु० प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाली क्रिया, मनोरंजन, आनंद, नाज नखरा, किसी अङ्ग की मनोहर चेष्टा, हिलना डोलना, हावभाव, अतिशय सुखभोग।
विलासिनी—स्त्री० सुंदर स्त्री, विलास में रत स्त्री, वेश्या।
विलासी—पु० सुखभोग में अनुरक्त पुरुष, क्रीड़ाशील, आरामतलब।
विलीन—लुप्त, लीन, छिपा हुआ।
विलोकना—देखना।
विलोचन—पु० आँख।
विलोम-विपरीत। पु० ऊंचे से नीचे की ओर आना।
विलोल—चंचल, सुंदर।
विलोकी—स्त्री० उपनयन आदि के अवसर पर का भिक्षाटन।

विल्व—पु० बेल का पेड़। [अनिश्चय।
विवक्षा—कहने की इच्छा, अर्थ,
विवक्षित—अपेक्षित, इच्छित।
विवर—पु० छिद्र, बिल, दरार, गुफा।
विवरण—पु० व्याख्या, टीका, वृत्तांत। [उपेक्षा।
विवर्जन—पु० परित्याग, अनादर,
विवर्जित—निषिद्ध, त्यागा हुआ।
विवर्ण—बदरंग, कांतिहीन, कुजाति, नीच। पु० साहित्य में एक भाव जिससे डर और क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है।
विवर्त—पु० समूह, आकाश, भ्रम।
विवर्तन—घूमना।
विवर्द्धन—पु० बढ़ती या बढ़ौतरी।
विवश—लाचार, पराधीन।
विवस्वत्—पु० सूर्य।
विवाद—पु० बहस, झगड़ा।
विवादास्पद—विवादयोग्य।
विवाह—पु० ब्याह।
विवि—दो, दूसरा।
विविक्त—त्यागा हुआ। पु० संन्यासी।
विविध—अनेक तरह का।
विविर—दे० "विवर"।
विबुध—पु० देवता, पंडित।
विबुधेश—पु० देवराज, इंद्र।
विवृत—विस्तृत, खुला हुआ।
विवृति—[illegible]
विवेक—पु० भली बुरी वस्तु का ज्ञान, बुद्धि।
विवेचन—पु० जाँच, निर्णय, तर्क-वितर्क, मीमांसा।
विवेचनीय—विवेचन करने योग्य।
विशंक—निडर। [मनुष्य।
विश—पु० कमल की नाल, चाँदी,
विशद—स्वच्छ, विमल, स्पष्ट, व्यक्त, सफेद, सुंदर।
विशांपति—पु० राजा। [केय, शिव।
विशाख—बिना शाखा का। पु० कार्ति-
विशाखा—स्त्री० एक नक्षत्र।
विशारद—पंडित, दक्ष।
विशाल—बहुत बड़ा और विस्तृत, सुंदर और भव्य, प्रसिद्ध।
विशालाक्ष—पु० शिव, विष्णु, गरुड़।
विशालाक्षी—स्त्री० बड़ी और सुंदर आँखवाली।
विशिख—पु० वाण, तीर।
विशिष्ट—मिला हुआ, जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो, विलक्षण।
विशिष्टाद्वैत—पु० यह सिद्धांत कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं। [हो, सत्य।
विशुद्ध—जिसमें मिलावट आदि न
विशुद्धि—स्त्री० शुद्धता।
विशूचिका—स्त्री० हैजा। [न हो।
विशृंखल—जिसमें शृंखला या क्रम
विशेष—पु० भेद, अंतर, ज्यादती, वस्तु।

विशेषज्ञ—विशेष जाननेवाला।
विशेषण-पु० वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो, व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है।
विशेषता-स्त्री० खासपन, खसूसियत।
विशेष्य—पु० व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।
विश्रब्ध—निडर, विश्वास के योग्य।
विश्रांति—स्त्री० विश्राम, आराम।
विश्राम—पु० श्रम मिटाना, आराम करना, ठहरने का स्थान, आराम।
विश्राव—पु० झरना, ध्वनि, शोहरत।
विश्रुत—प्रसिद्ध, मशहूर।
विश्रुति-स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि।
विश्लिष्ट—जिसका विश्लेषण हो चुका हो, विकसित, प्रकट।
विश्लेष-पु० थकावट, वियोग, विकार।
विश्लेषण-पु० किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग अलग करना।
विश्वंभर—पु० परमेश्वर, विष्णु।
विश्वंभरा—स्त्री० पृथ्वी।
विश्व-पु० संसार, समस्त ब्रह्माण्ड।
विश्वकर्मा—पु० ईश्वर, ब्रह्मा, सूर्य, शिव, एक देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता माने जाते हैं, लोहार, बढ़ई, राज।
विश्वकाय—पु० विष्णु।
विश्वकोश—पु० वह ग्रन्थ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो। [पु० विष्णु।
विश्वगर्भ, विश्वगुरु, विश्वगोल—
विश्वचक्षु, विश्वतनु, विश्वतृप्त,
विश्वधाम—पु० ईश्वर, परमात्मा।
विश्वनाथ—पु० शिव, विष्णु।
विश्वपा, विश्वभाव, विश्वभावन,
विश्वमोहन—पु० विष्णु, परमात्मा।
विश्वरूप—पु० विष्णु, शिव, श्रीकृष्ण का विराट् रूप।
विश्वलोचन—पु० सूर्य और चंद्रमा।
विश्वविद्यालय—पु० वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है, यूनिवर्सिटी। [करने योग्य।
विश्वसनीय, विश्वस्त—विश्वास
विश्वस्ता—स्त्री० विधवा, राँड़।
विश्वात्मा—पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
विश्वाधार—पु० परमेश्वर।
विश्वा—स्त्री० भगवती।
विश्वातीत—पु० ईश्वर।
विश्वात्मा—पु० ब्रह्मा, विष्णु।
विश्वाधार, विश्वाधिप-पु० विष्णु।
विश्वामित्र—संसार के हितैषी। पु० एक ऋषि।
विश्वास—पु० यक़ीन।
विश्वासघात—पु० अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना

जो उसके विश्वास के विपरीत हो।

विश्वासपात्र—पु० विश्वसनीय।

विश्वासी—जिसपर विश्वास किया जाय, एतबारी।

विश्वेदेव—पु० अग्नि।

विश्वेश, विश्वेश्वर—पु० ईश्वर।

विष—पु० जहर।

विषकन्या—स्त्री० बचपन से ही थोड़ा थोड़ा विष खिला कर इस उद्देश्य से तैयार की हुई कन्या कि जो उसके साथ संभोग करे वह मर जाय।

विषण्ण—विषादयुक्त।

विषदंड—पु० कमल की नाल।

विषधर—पु० साँप।

विषमंत्र—पु० विष उतारने का मंत्र जाननेवाला, सँपेरा।

विषम—असमान, (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे, बहुत कठिन, बहुत तेज, भीषण। पु० संकट। [वाण।

विषमायुध, विषमवाण—पु० काम-

विषमवृत्त—पु० वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों।

विषय—पु० वह जिसपर विचार किया जाय, मजमून, स्त्रीसंभोग, संपत्ति, बड़ा प्रदेश या राज्य।

विषयक—विषय का, संबंधी।

विषयी—विलासी, कामी, कामदेव, धनवान।

विषांगना—स्त्री० विषकन्या।

विषाक्त—जहरीला। [का दाँत।

विषाण—पु० पशु का सींग, सूअर

विषाद—पु० दुःख, जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव।

विषुव—पु० सूर्य के विषुवत रेखा पर पहुँचने का समय जब कि दिन-रात बराबर होते हैं।

विषुवत रेखा—स्त्री० वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के मध्य भाग में पूर्व पश्चिम चारों ओर गयी हुई मानी जाती है।

विषूचिका—स्त्री० दे० "विसूचिका"।

विष्कंभ, विष्कंभक—पु० ज्योतिष में एक प्रकार का योग, विस्तार, विघ्न।

विष्टप—पु० भुवन।

विष्ठा—स्त्री० मल, पैखाना।

विष्णु—पु० तीन सर्वश्रेष्ठ देवों में एक जो सृष्टि के पालक माने जाते हैं।

विष्णुक्रांता—स्त्री० नीली अपराजिता लता।

विष्णुपद—पु० आकाश, कमल।

विष्णुपदी—स्त्री० गंगा।

विष्णुलोक—पु० बैकुंठ।

विष्णुवल्लभा—स्त्री० तुलसी।

विष्फार—पु० धनुष की टंकार, विस्तार, विकास। [पु० कमल।

विसकुसुम, विसज, विसप्रसून—

विसदृश—विपरीत, विलक्षण।

विसर्ग—पु० दान, त्याग, मोक्ष, मृत्यु, प्रलय, वियोग, व्याकरण में एक वर्ण जिसमें ऊपर नीचे दो विंदु होते हैं।

विसर्जन—पु० परित्याग, विदा होना, समाप्ति। [उत्पत्ति।

विसार—पु० मछली, निर्गम, प्रवाह,

विसाल—पु० संयोग, प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप।

विसूचिका—स्त्री० हैजा।

विस्तर—पु० प्रेम, विछौना, आसन, संख्या, आधार।

विस्तार—पु० फैलाव, गुच्छा, विष्णु।

विस्तीर्ण—विस्तृत, विशाल, बहुत अधिक।

विस्तृत—फैला हुआ।

विस्फार—पु० धनुष की टंकार, विस्तार, विकास।

विस्फुलिंग—पु० आग की चिनगारी।

विस्फूर्जित—पु० दहाड़, चीख, परिणाम।

विस्फोट—पु० किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना, जहरीला या खराब फोड़ा।

विस्फोटक—पु० जहरीला फोड़ा, गरमी के कारण भभकने वाला पदार्थ, चेचक।

विस्मय—पु० आश्चर्य्य।

विस्मरण—पु० भूल जाना।

विस्मित—चकित।

विस्मृत—भूला हुआ।

विस्मृति—स्त्री० विस्मरण।

विहंग, विहंगम, विहग—पु० पक्षी, वाण, मेघ, चंद्रमा, सूर्य। [विरह।

विहरण—पु० घूमना, विहार करना,

विहसित—पु० वह हास्य जो न बहुत उच्च हो न बहुत मधुर।

विहार—पु० घूमना, रति क्रीड़ा, संभोग, बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ। [श्रीकृष्ण।

विहारी—पु० विहार करनेवाला,

विहित—जिसका विधान किया गया हो।

विहीन—बगैर, त्यागा हुआ।

विह्वल—व्याकुल।

वीक्षण—पु० देखना।

वीचि—स्त्री० लहर, तरंग।

वीचिमाली—पु० समुद्र।

वीची—स्त्री० लहर, तरंग।

वीज—पु० मूल कारण, वीर्य्य, तेज, बीआ, अंकुर, तत्त्व, बीजगणित।

वीजकोष—पु० बीज रहने का थैला।

वीजगणित—पु० एक प्रकार का गणित जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये कुछ सांकेतिक चिन्हों से सहायता ली जाती है।

वीजपुरुष—पु० आदि पुरुष।

वीटी—पु० नामंजूरी, रोक।

वीणा—स्त्री० एक बाजा।

वीणापाणि—स्त्री० सरस्वती।

वीत—छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, बीता हुआ। [बुद्ध।

वीतराग—राग रहित। पु० वैरागी,

वीतिहोत्र—पु० सूर्य, अग्नि।

वीथिका, वीथी—स्त्री० दृश्य काव्य का एक भेद, मार्ग, रविमार्ग।

वीप्सा—स्त्री० विस्तार, फैलाव।

वीर—पु० बहादुर, योद्धा, पुत्र, पति, भाई।

वीरकाम—पुत्र की इच्छा रखनेवाला।

वीरगति—स्त्री० रणक्षेत्र में वीरों का मरण।

वीरधन्वा—पु० कामदेव।

वीरबाहु—पु० विष्णु।

वीरमार्ग—पु० वीरता, स्वर्ग।

वीरभद्र—पु० अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, उशीर, शिव के एक गण।

वीरव्रत—वीरता का नियम करनेवाला।

वीरशय्या—स्त्री० रणभूमि।

वीरा—स्त्री० मदिरा, वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।

वीरान—उजड़ा हुआ।

वीरानी—स्त्री० वीर की स्त्री।

वीरासन—पु० बैठने का एक आसन।

वीर्य—पु० शरीर के सात धातुओं में एक धातु जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है, शुक्र, बल, बीज।

वृंत—पु० स्तन का अगला भाग।

वृंद—समूह।

वृंदा—स्त्री० तुलसी। [देवता।

वृंदारक—प्रधान, सुंदर। पु०

वृक—पु० भेड़िया, गीदड़, कौवा, क्षत्रिय।

वृकोदर—पु० भीमसेन, ब्राह्मण।

वृक्ष—पु० पेड़, गाछ। [का छाता।

वृक्षादन—पु० कुल्हाड़ी, मधुमक्खी

वृज—पु० दे० "व्रज"।

वृत्त—पु० चरित्र, आचार, समाचार, जीविका का साधन, वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो, मंडल, वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक विंदु उसके भीतर के मध्यविंदु से समान अंतर पर हो।

वृत्तांत—पु० समाचार।

वृत्ति—स्त्री० जीविका, वह धन जो किसी छात्र आदि को नियमित रूप से दिया जाय, सूत्रों आदि की व्याख्या, व्यापार, स्वभाव, योग के अनुसार चित्त की अवस्था।

वृत्र—पु० अँधेरा, मेघ, शत्रु।

वृथा—व्यर्थ, बेफायदा।

वृद्ध—पु० बुढ़ापा, बूढ़ा, पंडित।

वृद्धश्रवा—पु० इंद्र।

वृद्धा—स्त्री० बूढ़ी।

वृद्धि—स्त्री० बढ़ती, सूद, समृद्धि।

वृश्चन, वृश्चिक—पु० बिच्छू, ज्योतिष में एक राशि।

वृष—पु० साँड़, ज्योतिष में एक राशि। श्रीकृष्ण, कामशास्त्र में चार प्रकार के पुरुषों में से एक।

वृषकेतन, वृषकेतु—पु० शिव।

वृषण—पु० इंद्र, कर्ण, विष्णु, साँड़, घोड़ा, अंडकोश।

वृषध्वज—पु० शिव, गणेश।

वृषभ—पु० बैल, साँड़, कामशास्त्र में चार प्रकार के पुरुषों में एक।

वृषभध्वज—पु० शिव।

वृषल—पु० शूद्र, पापी, घोड़ा।

वृषली—स्त्री० वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गयी हो, कुलटा, रजस्वला स्त्री, नीच जाति की स्त्री।

वृषवाभी—पु० शिव।

वृषी—पु० मोर पक्षी।

वृषेन्द्र—पु० साँड़, बैल।

वृषोत्सर्ग—पु० साँड़ पर चक्र दाग कर उसे छोड़ देने का धार्मिक कृत्य।

वृष्टि—स्त्री० वर्षा, ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना।

वृष्टिमान—पु० वृष्टि नापने का यंत्र।

वृष्टिजीवन—पु० चातक।

वृष्णि—पु० मेघ, यादव वंश, श्रीकृष्ण, इंद्र, अग्नि, वायु।

वृष्य—पु० वह चीज जिससे वीर्य बल और आनंद बढ़ता है।

वृहत्—बड़ा। [वेद।

वृहदथ—पु० इंद्र, यज्ञपात्र, साम-

वृहद्भानु—पु० आग, सूर्य, चिता।

वृहद्रथ—पु० इंद्र, सामवेद का एक भाग, यज्ञपात्र।

वृहस्पति—पु० देवगुरु, एक ग्रह।

वेग—पु० प्रवाह, तेजी, जल्दी, खुशी।

वेटेरिनरी—बैल घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा सम्बन्धी।

वेटेरिनरी हास्पिटल—पु० पशु-चिकित्सालय।

वेणी—स्त्री० स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी, गंगा-यमुना और सरस्वती का संगम।

वेणु—पु० बाँस, बाँस की वंशी।

वेत—पु० एक पेड़, आकाश।

वेतन—पु० पारिश्रमिक, दरमाहा।

वेतस—पु० बेंत, बड़वानल।

वेताल—पु० द्वारपाल, शिव के एक गणाधिप, भूतों की एक प्रकार की योनि।

वेत्ता—जाननेवाला।

वेत्र—पु० बेंत।

वेत्रधर—पु० द्वारपाल।

वेद—आध्यामिक विषय का वास्तविक ज्ञान, वृत्त, वित्त, यज्ञांग, भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान धार्मिक ग्रन्थ।

वेदना—स्त्री० पीड़ा।

वेदमाता—स्त्री० गायित्री, दुर्गा, सरस्वती ।

वेदवदन—पु० ब्रह्मा, व्याकरण ।

वेदवाक्य—पु० पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात ।

वेदवास—पु० ब्रह्मा, व्याकरण ।

वेदांग—पु० वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद ।

वेदांत—पु० उपनिषद् आदि वेद के अंतिम भाग, ब्रह्मविद्या, उत्तरमीमांसा, अद्वैतवाद ।

वेदांती—पु० वेदांत का ज्ञाता ।

वेदी—स्त्री० किसी धार्मिक या शुभ कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि, सरस्वती ।

वेध—पु० छेदना, यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना ।

वेधक—वेधनेवाला ।

वेधशाला—स्त्री० वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के देखने के यंत्र आदि रखे हों ।

वेधा—पु० ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य ।

वेपथु, वेपन—पु० कंप ।

वेला—स्त्री० समय, समुद्र की लहर, दिन और रात का चौबीसवाँ भाग ।

वेश—पु० रूप और पहनावा, पोशाक, खेमा, घर ।

वेश्म—पु० घर ।

वेश्या—स्त्री० रंडी ।

वेष—पु० दे० "वेश", नेपथ्य ।

वेस्ट—पु० पश्चिम । [रेजी कुरती ।

वेस्टकोट—पु० एक प्रकार की अंग-

वेष्टन—पु० कोई चीज लपेटने का कपड़ा आदि, घेरना या लपेटना, पगड़ी ।

वैकल्य—पु० विकलता, बेचैनी ।

वैकल्पिक—एकांगी, संदिग्ध, जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके ।

वैकारिक—विकारवाला ।

वैकुंठ—पु० विष्णु, स्वर्ग ।

वैकृत—पु० विकार, खराबी, वीभत्स रस, दुःसाध्य, विकार से उत्पन्न ।

वैक्रमीय—विक्रम संबंधी ।

वैखरी—स्त्री० वह स्वर जो उच्च और गंभीर हो, वाक्‌शक्ति, वाग्देवी ।

वैखानस—पु० वानप्रस्थी, एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे ।

वैचित्र, वैचित्र्य—पु० विचित्रता ।

वैजनन—पु० प्रसव मास ।

वैजन्य—पु० एकांत ।

वैजयंत—पु० इंद्र, इंद्रपुरी ।

वैजयंती—स्त्री० पताका ।

वैज्ञानिक—विज्ञान संबंधी । पु० वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो ।

वैडाल व्रत—पु० दुष्टाचार, कपट व्यवहार। [करनेवाला।
वैतनिक—पु० वेतन लेकर काम
वैतरणी—स्त्री० एक पौराणिक नदी।
वैतालिक—पु० वह स्तुति पाठक जो राजाओं को स्तुति करके जगाता था।
वैदग्ध—पु० पांडित्य।
वैदर्भी—स्त्री० काव्य की वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है, दमयंती, रुक्मिणी। [कृत्य करनेवाला।
वैदिक—वेद संबंधी। वेदज्ञ, वैदिक
वैदुष—विद्वान, पंडित।
वैदुष्य—पु० विद्वत्ता, पांडित्य।
वैदूर्य—एक प्रकार का रत्न।
वैदेशिक—विदेश संबंधी।
वैदेही—स्त्री० सीता।
वैद्य—पु० चिकित्सक, पंडित।
वैद्यक-पु० चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद।
वैद्यराज—पु० महावैद्य।
वैध—विधि या नियम के अनुसार।
वैधर्म्य-पु० विचित्र धर्म, नास्तिकता।
वैधव्य—पु० रँडापा, विधवापन।
वैधूर्य—पु० हताश का भाव, भ्रम।
वैधेय—विधि संबंधी, नासमझी।
वैनतेय—पु० विनता की संतान, गरुड़।
वैपरीत्य—पु० प्रतिकूलता।
वैपुल्य—पु० विपुलता।
वैफल्य—पु० विफलता।
वैभव—पु० धन-संपत्ति, महत्व।
वैमनस्य—पु० दुश्मनी, द्वेष।
वैमात्र—विमाता से उत्पन्न।
वैमात्रेय—सौतेला।
वैमानिक—पु० विमान पर चढ़ कर आकाश में विहार करनेवाला, आकाश चारी।
वैमुख्य—पु० विमुखता।
वैयाकरण-पु० व्याकरण का पंडित।
वैर—पु० शत्रुता।
वैराग—पु० त्याग, विरक्ति।
वैरागी—पु० विरक्त।
वैराग्य—पु० विरक्ति।
वैराज्य—पु० एक ही देश में दो राजाओं का शासन, वह देश जहाँ इस प्रकार की शासनप्रणाली हो।
वैरी—पु० शत्रु।
वैरूप्य—पु० विरूपता।
वैलक्षण्य—पु० विलक्षणता।
वैवस्वत—पु० एक रुद्र, एक मनु, वर्तमान मन्वंतर का नाम।
वैवाहिक—विवाह संबंधी। पु० समधी।
वैशाखनंदन—पु० गधा।
वैशिक—पु० वेश्यागामी नायक।
वैशेषिक—पु० छः दर्शनों में से एक, पदार्थ विद्या।
वैश्वजनीन-सारे संसार के लोगों का।
वैश्वानर-पु० परमात्मा, अग्नि, चेतन।

वैषम, वैषम्य—पु० विषमता।
वैषयिक—विषय संबंधी। पु० विषयी। [करनेवाला, एक संप्रदाय।
वैष्णव—पु० विष्णु की उपासना
वैष्णवी—स्त्री० विष्णु की शक्ति, दुर्गा, गंगा, तुलसी।
वैहासिक—पु० विदूषक, भाँड़।
वोट—पु० राय, मत।
वोटर—वोट या सम्मति देनेवाला।
वोटर लिस्ट—पु० वोट देनेवालों की सूची।
वोद—पु० गीलापन।
वोदा—स्त्री० गीला।
वोहित्थ—पु० बड़ी नाव।
व्यंग—पु० मेढ़क, बेंग।
व्यंग्य—पु० शब्द का वह गूढ़ अर्थ जो उसकी व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो, ताना, चुटकी।
व्यंजक—पु० बतलानेवाला।
व्यंजन—पु० व्यक्त या प्रगट होने या करने की क्रिया, अंग, तरकारी पका हुआ भोजन, वह वर्ण जो बिना स्वर के न बोला जा सके।
व्यंजना—स्त्री० प्रकट करने की क्रिया, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़ कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।
व्यक्त—प्रकट, स्पष्ट।
व्यक्तगणित—पु० अंकगणित।

व्यक्ति—[illegible]क्त या प्रकट होने की क्रिया या भाव, व्यष्टि, एक वस्तु। पु० मनुष्य। [फँसा हुआ।
व्यग्र—व्याकुल, भयभीत, काम में
व्यतिकर, व्यतिकार—पु० व्यसन, विनाश, संबंध, झुंड। [बाधा।
व्यतिक्रम—पु० क्रम में उलटफेर,
व्यतिक्रमण—पु० क्रम बदलना।
व्यतिरिक्त—अतिरिक्त। [अतिक्रम।
व्यतिरेक—पु० अभाव, अंतर,
व्यतिषंग—पु० बदला।
व्यतिषक्त—मिला हुआ, आसक्त।
व्यतिहार—पु० बदला, मारपीट।
व्यतीत—बीता हुआ।
व्यतिपात—पु० बहुत बड़ा उत्पात।
व्यथन—पु० पीड़ा, पीड़ाकारक।
व्यथा—स्त्री० पीड़ा, दुःख।
व्यथित—पीड़ित, कंपित।
व्यभिचार—पु० दूषित आचार। पर स्त्री या पर पुरुष गमन।
व्यभिचारी—पु० बदचलन, पर स्त्री-गामी, दे० "संचारी" (भाव)।
व्यय—पु० खर्च, खपत, नाश।
व्यर्थ—निरर्थक, अर्थरहित। फजूल।
व्यलीक—अपराध, डाँट डपट, दुःख, अद्भुत।
व्यवकलन—पु० घटाना।
व्यवच्छिन्न—अलग, [illegible]
व्यवच्छेद—पु० पार्थक्य, विभाग,

विराम ।

व्यवदान—पु० संस्कार, सफाई ।

व्यवधान—पु० परदा, विभाग, विच्छेद ।

व्यवधि—स्त्री० आड़, ओट ।

व्यवसर्ग—पु० बाँट, मुक्ति ।

व्यवसाय—पु० जीविका, व्यापार, कामधंधा । [रोजगारी ।

व्यवसायी—व्यवसाय करने वाला,

व्यवस्था—स्त्री० शास्त्रों आदि द्वारा निर्धारित विधान, इंतजाम, स्थिति, स्थिरता ।

व्यवस्थात—पु० व्यवस्था ।

व्यवस्थापक—शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला, व्यवस्था या कानून बनाने वाला, प्रबंधकर्त्ता ।

व्यवस्थित—व्यवस्थायुक्त ।

व्यवहार—पु० काम, वरताव, व्यापार, महाजनी झगड़ा, मुकदमा ।

व्यवहृत—जो काम में लाया गया हो ।

व्यष्टि—स्त्री० समष्टि का अंश, एक वस्तु ।

व्यसन—पु० विषयों के प्रति आसक्ति, काम क्रोध आदि से उत्पन्न दोष, किसी प्रकार का शौक, कोई बुरी बात, विपत्ति ।

व्यसनी—विषयों से आसक्ति रखनेवाला, जिसे व्यसन हो, शौकीन, वेश्यागामी । [व्यसन ।

व्यस्त—काम में लगा हुआ, व्याकुल,

व्याकरण—पु० किसी भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र ।

व्याकार—पु० व्याख्या, परिवर्तित रूप ।

व्याकुल—विकल, अत्यंत उत्कंठित ।

व्याकृति—स्त्री० धोखा ।

व्याकोश—पु० खिलना ।

व्याक्रोश—पु० तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना, चिल्लाना ।

व्याख्या—स्त्री० टीका, वर्णन ।

व्याख्याता—पु० व्याख्या करनेवाला, भाषण करनेवाला ।

व्याख्यान—पु० भाषण ।

व्याघात—पु० विघ्न, आघात, ज्योतिष में एक अशुभ योग ।

व्याघ्र—पु० बाघ ।

व्याज—पु० छल, बाधा, देर, सूद ।

व्याजनिंदा—स्त्री० ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े ।

व्याजस्तुति—स्त्री० वह स्तुति जो व्याज या बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े ।

व्याजोक्ति—स्त्री० कपट भरी बात ।

व्याध—पु० एक प्राचीन जाति जो जँगली पशुओं को मार कर निर्वाह करती थी ।

व्याधि—स्त्री० रोग, आफत ।

व्यान—पु० शरीर की पाँच वायु

में से एक। [घेरने या ढकनेवाला।
व्यापक—चारों ओर फैला हुआ,
व्यापद्—स्त्री० आफ़त, मृत्यु।
व्यापना—व्याप्त होना।
व्यापन्न—पु० मरा हुआ। [विक्री।
व्यापार—पु० काम, रोजगार, खरीद
व्याप्ति—स्त्री० व्याप्त होने की क्रिया या भाव।
व्याप्य—व्याप्त करने के योग्य।
व्यायाम—पु० कसरत, परिश्रम।
व्यायोग—पु० एक प्रकार का दृश्य काव्य।
व्यारोष—पु० क्रोध।
व्याल—पु० साँप, बाघ, राजा, विष्णु।
व्यालमृग—पु० बाघ।
व्यालू—स्त्री० पु० रात का भोजन।
व्यावर्तन—पु० मोड़ने या लौटाने की क्रिया।
व्यावहारिक—व्यवहार संबंधी।
व्यासंग—पु० बहुत आसक्ति।
व्यास—पु० कथावाचक, विस्तार, फैलाव, वह रेखा जो किसी वृत में उसके मध्यबिंदु होते हुए एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाय।
व्याहार—पु० वाक्य।
व्याहत—घबराया हुआ।
व्युत्थान—पु० बाधक होना।
व्युत्पत्ति—स्त्री० उत्पत्ति स्थान, शब्द का मूल रूप, किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान। [अच्छा ज्ञाता हो।
व्युत्पन्न—जो किसी शास्त्र आदि का
व्युत्पादन—पु० व्युत्पत्ति। [तुल्य।
व्यूढ़—विवाहित, मोटा, उत्तम, दृढ़,
व्यूह—पु० समूह, रचना, शरीर, सेना, युद्ध के समय की जाने वाली सेना की स्थापना।
व्योम—पु० आकाश, जल, बादल।
व्योमकेशी—पु० शिव। [काशचारी।
व्योमगामी, व्योमचारी—पु० आ-
व्योमधूम—पु० बादल।
व्योमयान—पु० विमान। [लता।
व्योमवल्ली, व्योमलता-स्त्री० अमर-
व्रज—पु० जाना, गमन, समूह, मथुरा वृंदावन के आसपास का स्थान। [भाषा।
व्रजबोली, व्रजभाषा—स्त्री० व्रजकी
व्रजमोहन, व्रजराज, व्रजेंद,
व्रजेश्वर—पु० श्री कृष्ण। [क्रमण।
व्रज्या—स्त्री० घूमना, गमन, आ-
व्रण—पु० फोड़ा।
व्रत-पु० भोजन करना, भक्षण, किसी पुण्य तिथि को नियमपूर्वक उपवास।
व्रतादेश-पु० उपनयन व्रत की आज्ञा।
व्राज—पु० कुत्ता, गमन, झुंड।
व्रात—पु० समूह, दल, मनुष्य, उजरत। [न हुए हों, दोगला।
व्रात्य—पु० वह जिसके दस संस्कार
व्रीड़ा—स्त्री० लज्जा।
व्रीहि—पु० धान।

श

शा—एक अक्षर। पु० शिव, कल्याण, शास्त्र। [वैराग्य।

शं—शुभ। पु० कल्याण, सुख, शांति,

शंक—पु० भय।

शंकना—शंका करना, डरना।

शंकर—मंगल करने वाला, शुभ, लाभदायक। पु० शिव।

शंकरा, शंकरी—स्त्री० पार्वती, दुर्गा।

शंका—स्त्री० संदेह, डर।

शंकित—डरा हुआ।

शंकु—पु० कोई नुकीली वस्तु, कील, भाला, गाँसी, दस लाख करोड़ की संख्या, कामदेव, शिव, सूर्य आदि की छाया नापने की खूंटी।

शंख—पु० दस खर्व की संख्या, हाथी का गंडस्थल, घोंघे की तरह एक सामुद्रिक जंतु जिसका कोष देव-पूजा में बजाया जाता है।

शंखज—पु० शंख से पैदा हुआ मोती।

शंखनख—पु० घोंघा, बघनख।

शंखपाणि—पु० विष्णु।

शंखभस्म—पु० चूना।

शंखविष्य—पु० संखिया।

शंखिनी—स्त्री० कामशास्त्र में स्त्रियों के चार भेदों में से एक, दुर्भगा स्त्री।

शंठ—पु० नपुंसक, मूर्ख।

शंड—पु० नपुंसक, साँड, वह जिसे संतान न होती हो।

शंबल—पु० राह खर्च, जलन, डाह।

शंबरारि—पु० कामदेव।

शंबूक—पु० घोंघा, शंख।

शंभु—पु० शिव।

शंभुबीज—पु० पारा।

शंभुभूषण—पु० चंद्रमा।

शंभुलोक—पु० कैलाश।

शंसा—स्त्री० प्रशंसा, इच्छा, कथन।

शअबान—पु० अरबी का आठवां महीना।

शऊर—ढंग, अकल।

शऊरदार—समझदार।

शक—पु० संदेह, एक प्राचीन जाति, वह राजा जिसके नाम से कोई संवत् चले, एक संवत जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।

शकट—बैलगाड़ी, बोझ, शरीर।

शकठ—पु० मचान।

शकर—पु० चीनी।

शकल—स्त्री० आकृति, चेहरा, चेष्टा, बनावट, उपाय, टुकड़ा, चमड़ा, दालचीनी, खाँड।

शकाब्द—पु० शक संवत्।

शकारि—पु० विक्रमादित्य।

शकील—[illegible], खूब-सूरत, सुंदर।

शकुंत—पु॰ पक्षी।
शकुन-पु॰ लक्षण, शुभ मुहुर्त, पक्षी।
शकुनि—पु॰ पक्षी।
शक्कर—स्त्री॰ खाँड़, चीनी।
शक्की—जिसे हर बात में शक हो।
शक्त—पु॰ समर्थ।
शक्ति—स्त्री॰ बल, अधिकार, बड़ा और पराक्रमी राज्य, प्रकृति, माया, देवी, दुर्गा, गौरी, लक्ष्मी, तलवार, साँग।
शक्तु—पु॰ सत्तू।
शक्य—किया जाने योग्य, संभव, जिसमें शक्ति हो। पु॰ शब्द शक्ति के द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ।
शक्र—पु॰ इंद्र।
शक्रगोप—पु॰ वीरवहूटी।
शक्रचाप—पु॰ इंद्रधनुष।
शक्रप्रस्थ—पु॰ इंद्रप्रस्थ।
शक्रवाहन—पु॰ मेघ।
शक्राणी—पु॰ इंद्राणी।
शक्ल—दे॰ "शकल"।
शख्त—कड़ा, कठोर।
शख्स—पु॰ व्यक्ति, आदमी।
शख्सियत—स्त्री॰ व्यक्तित्व।
शख्सी—शख्स का, मनुष्य का।
शगल—पु॰ काम, मनोविनोद।
शगाल—पु॰ गीदड़, सीयार।
शगुन—पु॰ विवाह की एक रस्म, दे॰ "शकुन"।

शचान—पु॰ बाज।
शचि, शची—स्त्री॰ इंद्र की स्त्री।
शचीपति—पु॰ इन्द्र।
शजर—पु॰ वृक्ष, पेड़।
शजरा—पु॰ वंशावली, पुश्तनामा, पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।
शठ—धूर्त, बदमाश, मूर्ख।
शत—पु॰ सौ की संख्या।
शतक—पु॰ सौ का समूह, एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह, शताब्दी।
शतकुंभ—पु॰ सोना, सफेद कनेर।
शतकुसुमा, शतपुष्पी-स्त्री॰ सौंफ।
शतक्रतु—पु॰ इंद्र।
शतखंड—पु॰ सोना।
शतघ्नी—पु॰ प्राचीन काल का एक [शस्त्र, विच्छू।
शतदल—पु॰ पद्म, कमल।
शतद्रु—स्त्री॰ सतलज नदी।
शतधा—सौ तरह से। स्त्री॰ दूब।
शतधामा—पु॰ विष्णु, इंद्र, ब्रह्मा, स्वर्ग।
शतपत्र—पु॰ कमल, मोर।
शतपद—पु॰ गोजर, च्यूँटी।
शतरंज—स्त्री॰ एक खेल।
शतरंजबाज—शतरंज का खिलाड़ी।
शतरंजबाजी—स्त्री॰ शतरंज खेलने का व्यसन।
शतरंजी—स्त्री॰ रंग विरंगे सतों से

बनी दरी, वह कपड़ा या कूट वगैरह जिस पर शतरंज खेला जाता है, शतरंज का खिलाड़ी।

शतानंद—पु० ब्रह्मा, विष्णु, कृष्ण, गौतम मुनि, जनक के पुरोहित।

शतानक—पु० श्मशान, मरघट।

शताब्दी—स्त्री० सौ वर्षों का समय।

शतायुध—पु० सौ अस्त्रोंवाला।

शतायु—पु० सौ वर्ष की आयुवाला।

शतावधान—पु० वह मनुष्य जो बहुत सी बातें एक साथ याद रख सकता हो या बहुत से काम एक साथ कर सकता हो।

शती—स्त्री० सैकड़ा।

शत्रुंजय—शत्रु को जीतने वाला। पु० शिव, परमेश्वर।

शत्रु—पु० बैरी। [उत्पन्न करने वाला।

शत्रुसाल—शत्रु के हृदय में शूल

शदीद—बहुत ज्यादा, भारी, सख्त।

शद्रि-पु० मेघ, हाथी। स्त्री० बिजली।

शनि—पु० एक ग्रह, दुर्भाग्य।

शनिश्चर—पु० शनि।

शनैः—धीरे।

शपथ—स्त्री० कसम।

शपन—पु० सौगंध, गाली।

शफक—स्त्री० प्रातःकाल या संध्याकाल के समय आकाश में दिखाई पड़ने वाली ललाई।

शफकत-स्त्री० कृपा, दया, प्यार, प्रेम।

शफतालू—पु० सताल्रू।

शफरी—स्त्री० मछली।

शफा—स्त्री० तंदुरुस्ती। [अस्पताल।

शफाखाना—पु० चिकित्सालय,

शब—स्त्री० रात।

शबनम—ओस, बढ़िया कपड़ा।

शबनमी—स्त्री० मशहरी।

शबबरात—स्त्री० मुसलमानों के आठवें मास की चौदहवीं या पन्द्रहवीं रात।

शबल—चितकबरा।

शबाब-पु० जवानी, अधिक सौंदर्य्य।

शबाहत—स्त्री० समानता, सूरत।

शबीह—स्त्री० चित्र, समानता, अनुरूपता।

शबोरोज-पु० रात दिन, हर समय।

शब्द—पु० ध्वनि, आवाज, सार्थक ध्वनि, किसी साधु या महात्मा के बनाये पद। [वाला।

शब्दकार—पु० पद्य या गीत बनाने

शब्द ब्रह्म—पु० वेद।

शब्दभेदी, शब्दवेधी—केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को वेधने वाला।

शब्दशास्त्र—पु० व्याकरण। [शब्द।

शब्दश्लेष—पु० अनेक अर्थों वाला

शब्दाडंबर—पु० बड़े बड़े शब्दों का प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो।

शब्दाधिष्ठान—पु० कान।

शब्दानुशासन—पु० व्याकरण।

शब्दालंकार—पु० वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्प. किया जाय।

शम—पु० शांति, मोक्ष, उपचार, अंतःकरण तथा वाह्य इन्द्रियों का निग्रह, क्षमा।

शमन—पु० यज्ञ में पशुओं का बलिदान, यम, हिंसा, शांति, दमन, चोट, रात।

शमशेर—स्त्री० तलवार।

शमांतक—पुं० कामदेव।

शमा—स्त्री० मोमवत्ती।

शमादान—पु० वह आधार जिसमें मोम की वत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमित—शांत, ठहरा हुआ।

शयन—पु० सोना, विछौना, मैथुन, संभोग।

शयित—सोया हुआ।

शय्या—स्त्री० विछावन, पलंग।

शर पु० वाण, सरकंडा, भलाई, भाले का फल, चिता, पाँच की संख्या।

शरअ—स्त्री० कुरान में दी हुई आज्ञा मजहब, दस्तूर, तरीक, मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरई—मुसलमानी धर्म के अनुसार। पु० शरअ पर चलनेवाला मनुष्य।

शरण—स्त्री० आश्रय, रक्षा, आड़, रक्षा का स्थान, अधीन। [हुआ।

शरणागत, शरणापन्न—शरण में आया

शरण्य—शरग में आये हुए की रक्षा करने वाला।

शरत्—स्त्री० वर्ष, एक ऋतु जिसमें आश्विन और कार्तिक मास पड़ते हैं।

शरद—स्त्री० दे० "शरत्"।

शरधि—पु० तरकश।

शरफ—स्त्री० योग्यता। [रस्म।

शरबत—पु० मीठा रस, सगाई की

शरबती—रसीला, रसदार। स्त्री० एक प्रकार का हलका पीला रंग, एक प्रकार का नगीना, एक प्रकार का नीबू, एक प्रकार का बढिया कपड़ा। [विष्णु, शेर।

शरभ—पु० टिड्डी, हाथी का बच्चा,

शरम—स्त्री० लज्जा, लिहाज, इज्जत।

शरमसार—जिसे शरम हो, शरमिंदा, लज्जित।

शरमसारी—स्त्री० लज्जा, शरमिंदगी।

शरमाऊ—जिसे बहुत लज्जा मालूम होती हो, शरमीला।

शरमाना—लज्जित होना या करना।

शरमाशरमी—लज्जा के कारण, शरमिंदा होकर।

शरमिंदगी—स्त्री० लाज।

शरमिंदा—लज्जित।

शरमीला—लज्जालु।

शरह—स्त्री० व्याख्या, दर, भाव।
शरह लगान—स्त्री० लगान की शरह।
शराकत—स्त्री० शरीक होने का भाव, हिस्सेदारी।
शराफत--स्त्री० सज्जनता।
शराब--स्त्री० मदिरा, हकीमों की परिभाषा में शरबत। [स्थान।
शराबखाना—पु० शराब मिलने का
शराबखोरी—स्त्री० मदिरापान।
शराब ख्वार--शराबी।
शराबी— शराब पीने वाला।
शराबोर—भींगा हुआ, तरबतर।
शरायत—स्त्री० शर्तें।
शरार—पु० चिनगारियाँ।
शरारत--स्त्री० पाजीपन, [illegible]।
शरारा--पु० चिनगारी।
शरारोप—पु० कमान।
शरावर--पु० कवच, ढाल।
शरासन--पु० धनुष। [धर्म शास्त्र।
शरीअत—स्त्री० मुसलमानों का
शरीक—शामिल। पु० साथी, साझी, सहायक। [सभ्य पुरुष।
शरीफ--पवित्र। पु० कुलीन पुरुष,
शरीर--नटखट। पु० देह।
शरीरत्याग, शरीरपात--पु० मृत्यु।
शरीरी—पु० शरीरवाला, आत्मा, प्राणी।
शर्करा—स्त्री० शक्कर, बालू का कण।
शर्करा प्रमेह—पु० एक प्रकार का प्रमेह।
शर्ट--पु० कमीज।
शर्त--स्त्री० दाँव, किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये आवश्यक बात।
शर्तिया--निश्चित। शर्त बद कर।
शर्म—स्त्री० दे० "शरम"
शर्मसार--लज्जित।
शर्म्मा—पु० ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्य्या—स्त्री० रात।
शर्व—पु० शिव। [हल्दी।
शर्वरी—स्त्री० रात, संध्या, स्त्री,
शर्वरीश—पु० चंद्रमा।
शर्वाणी—स्त्री० पार्वती।
शल—पु० भाला, ऊँट, ब्रह्मा।
शलभ—पु० टिड्डी, पतंग। [पासा।
शलाका—स्त्री० लंबी सलाई, वाण,
शलप—पु० बाढ़, बौछार।
शल्य—पु० अस्त्र चिकित्सा, चीड़-फाड़, हड्डी, शलाका, साँग, दुर्वाक्य।
शल्यक्रिया—स्त्री० चीरफाड़ का इलाज।
शव—पु० लाश।
शश—पु० खरहा, चंद्रमा का लांछन, कामशास्त्र में पुरुष के चार भेदों में एक।
शशक—पु० खरगोश।
शशधर—पु० चंद्रमा।
शशमाही—छः माही, अर्द्धवार्षिक।
शशमौलि—पु० शिव।
शशश्रृंग—पु० वैसा ही असंभव

कार्य जैसा खरगोश का सिंह होना।
शशांक—पु० चंद्रमा, कपूर।
शशा—पु० दे० "शश"
शशि—पु० चंद्रमा।
शशिकुल—पु० चंद्रवंश।
शशिज—पु० बुध ग्रह।
शशिधर, शशिभाल, शशिभूषण, शशिमौलि, शशिशेखर—पु० शिव।
शशिहीरा—पु० चंद्रकांत मणि।
शस्ति—स्त्री० प्रशंसा।
शस्त्र—पु० हथियार, औजार।
शस्त्रक्रिया—स्त्री० फोड़ों आदि की चीड़ फाड़।
शस्त्रविद्या—स्त्री० हथियार चलाने की विद्या। [स्थान, शस्त्रालय।
शस्त्रागार—पु० शस्त्रों के रखने का
शस्य—पु० अन्न, फसल, वृक्षों का फल, नयी घास। [महाराजाधिराज।
शहंशाह-पु० बादशाहों का बादशाह,
शहंशाही—शाही, राजसी। स्त्री० शहंशाह का पद।
शह—श्रेष्ठता। पु० बादशाह, दुल्हा, शतरंज के खेल में बादशाह के घात में किसी मोहरे को रखना, गुप्त रूप से भड़काना।
शहजादा—पु० राजकुमार।
शहजोर—बलवान, ताकतवर।
शहतीर—पु० बड़ा और लंबा लट्ठा।
शहतूत—पु० तूत का पेड़ और फल।

शहद—पु० मधु।
शहना—पु० खेत की चौकसी करनेवाला, कोतवाल।
शहनाई—स्त्री० एक प्रकार का बाजा।
शहबाला—पु० वह छोटा बालक जो विवाह में दुल्हे के साथ जाता है।
शहमात—स्त्री० शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।
शहर—पु० नगर। [दीवारी।
शहरपनाह—पु० शहर की चार-
शहवत—स्त्री० कामातुरता, भोग-विलास, मैथुन। [शहीद होना।
शहादत—स्त्री० गवाही, सबूत,
शहाब—पु० एक प्रकार का गहरा लाल रंग।
शहाबी—गहरा लाल।
शहीद—पु० धर्म के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति।
शांकरि—पु० कार्त्तिकेय।
शांत—रुका हुआ, नष्ट, स्थिर, मृत, धीर, गंभीर, मौन, जितेंद्रिय, शिथिल, विघ्नबाधा रहित, स्वस्थ-चित्त। पु० काव्य में एक रस।
शांति—स्त्री० क्षोभ आदि का अभाव, सन्नाटा, स्वस्थता, गंभीरता, धीरता, विराग, मृत्यु, दुर्गा, अमंगल दूर करने का उपचार। [शिक्षित।
शाइस्ता—सभ्य, तहजीबवाला, नम्र,
शाइस्तगी—स्त्री० सभ्यता, शिष्टता,

मनुष्यता ।

शाक—पु० तरकारी ।

शाकटिक—पु० गाड़ीवान ।

शाकद्वीप—पु० पुराणानुसार ईरान और तुर्किस्तान के बीच का प्रदेश ।

शाकल्य—पु० हवन की सामग्री ।

शाकाहार—पु० मांसाहार का उलटा, अन्न का भोजन ।

शाकाहारी—पु० केवल अनाज या साग भाजी खानेवाला ।

शाकिनी—स्त्री० चुड़ैल ।

शाकिर—कृतज्ञ ।

शाकी—शिकायत करनेवाला, नालिश या चुगली करनेवाला । [उपासक ।

शाक्त—शक्ति संबंधी । पु० शक्ति का

शाक्य—पु० बुद्धदेव ।

शाख—स्त्री० डाल, खंड, नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा ।

शाखदार—जिसमें बहुत सी शाखाएँ हों, टहनीदार, सींगवाला ।

शाखा—स्त्री० डाल, हाथ और पैर, हिस्सा, अंग, मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद ।

शाखामृग—पु० बंदर, गिलहरी ।

शाखोच्चार—पु० विवाह के समय वंशावली का कथन ।

शागिर्द—पु० शिष्य, चेला ।

शागिर्दपेशा—पु० मातहत, अहलकार, कर्मचारी, खिदमतगार, बड़ी कोठी के पास नौकरों के लिये अलग बने हुए घर ।

शागिर्दी—स्त्री० शिष्यता । [दूब ।

शाद—प्रसन्न, खुश, भरापूरा, पतन,

शादमान—प्रसन्न, खुश ।

शादमानी—स्त्री० प्रसन्नता, खुशी ।

शादाब—हराभरा, तरोताजा ।

शादियाना—पु० खुशी का बाजा, बधाई । [विवाह ।

शादी—स्त्री० खुशी, आनंदोत्सव,

शाद्वल—हराभरा । पु० दूब, बैल, रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती ।

शान—स्त्री० ठाटबाट, गर्वीली चेष्टा, विशालता, शक्ति, करामात, प्रतिष्ठा । पु० हथियार पिजाने का पत्थर ।

शानदार—ठाठबाटवाला, भड़कीला, भव्य, विशाल, वैभवपूर्ण । [वट ।

शानशौकत—स्त्री० ठाठबाट, सजा-

शाना—पु० कँधा ।

शाप—पु० बददुआ, फटकार ।

शापग्रस्त—जिसे शाप दिया गया हो, शापित । [रहो ।

शाबाश—धन्य, वाह वाह, खुश

शाबशी—स्त्री० साधुता, वाहवाही ।

शाब्दिक—शब्द संबंधी, वैयाकरण ।

शाम—स्त्री० संध्या, साँझ ।

शामत—दुर्भाग्य, आफत, दुर्दशा ।

शामतजदा—अभागा, बदनसीब।
शामती—जिसकी शामत आयी हो, जिसकी दुर्दशा होने की हो।
शामियाना—पु० बड़ा तम्बू।
शामिल—सम्मिलित।
शामिलहाल—पु० साथी, शरीक।
शामिलात—स्त्री० हिस्सेदारी, साझा, सम्मिलित। [पु० बाण, तलवार।
शायक—शौकीन, इच्छुक, आकांक्षी।
शायद—कदाचित्, सम्भव है।
शायर—पु० कवि।
शायरी—स्त्री० कविता, काव्य।
शाया—प्रकट, जाहिर, प्रकाशित, छपा हुआ।
शायी—सोनेवाला।
शारंग—पु० दे० "सारंग"। [राम।
शारंगपाणि—पु० विष्णु, कृष्ण,
शारद—शरद् काल का।
शारदा—स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, एक प्राचीन लिपि।
शारदीय—शरद् काल का।
शारिका—स्त्री० मैना।
शारिवा—स्त्री० अनंतमूल, सालसा।
शारीर—शरीर संबंधी।
शारीरक सूत्र—पु० वेदांत सूत्र।
शारीरिक-शरीरसम्बन्धी, जिस्मानी।
शार्ङ्ग—पु० धनुष। [श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि-पु० विष्णु,
शार्दूल—सर्वश्रेष्ठ। पु० बाघ, राक्षस, सिंह।
शाल—पु० एक वृक्ष, दुशाला।
शालग्राम—पु० विष्णु की एक प्रकार की पत्थर की मूर्त्ति।
शाला—स्त्री० घर, जगह, पाठशाला।
शालामृग—पु० कुत्ता, सियार।
शालि—पु० जड़हन धान, बासमती चावल, गन्ना।
शालिहोत्र—पु० घोड़ा, पशुचिकित्सा।
शालिहोत्री—विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला।
शालीन—नम्र, लज्जालु, समान, अच्छे आचार विचारवाला, धनवान्, चतुर।
शालीनता—स्त्री० नम्रता, अधीनता।
शाल्मलि—पु० सेमल का पेड़।
शावक—पु० बच्चा, विशेषतः पशु या पक्षी का बच्चा।
शाश्वत—जो सदा स्थायी रहे, नित्य।
शासक—पु० शासनकर्त्ता, हाकिम।
शिशिरांत—पु० वसंत।
शिशु—पु० छोटा बच्चा।
शासन—पु० हुकूमत, दंड, आज्ञा, हुक्म, वश में रखना, पट्टा, परवाना, शास्त्र, इंद्रिय-निग्रह। [प्रजा।
शासित—शासन किया हुआ। पु०
शास्ता—पु० शासक, राजा, पिता, गुरु।
शास्ति—स्त्री० शासन, दंड।

शास्त्र—पु० वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाये गये हैं, किसी विषय का वह ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह कर के रखा गया हो, विज्ञान।

शास्त्रकार—पु० शास्त्र बनानेवाला।

शास्त्रज्ञ—शास्त्र जाननेवाला।

शास्त्रदर्शी—वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। [वाला।

शास्त्रवक्ता—शास्त्रों का उपदेश देने-

शास्त्रविद्—शास्त्रों का जाननेवाला।

शास्त्री—पु० शास्त्र जाननेवाला।

शास्त्रीय—शास्त्र संबंधी।

शास्त्रोक्त—शास्त्र में कहा हुआ।

शाहंशाह—पु० बादशाहों का बादशाह।

शाहंशाही—स्त्री० शाहंशाह का कार्य्य वा पद, व्यवहार का खरापन।

शाह—भारी। पु० बादशाह, मुसलमान फकीरों की उपाधि।

शाहजादा—पु० राजकुमार।

शाहजादी—स्त्री० राजकुमारी।

शाहदरा—पु० वह आबादी जो किसी महल या किले के नीचे बसी हुई हो।

शाहराह—स्त्री० बड़ी सड़क, राजमार्ग।

शाहाना—बादशाहों के योग्य, राजसी, जामा। [साक्षी, गवाह।

शाहिद—सुंदर, खूबसूरत। पु०

शाही—शाहों का, राजसी। [का यंत्र।

शिकंजा—पु० दबाने या निचोड़ने

शिकन—स्त्री० सिकुड़न।

शिकम—पु० पेट, उदर।

शिकमी काश्तकार—पु० वह काश्तकार जो दूसरे काश्तकार से जोतने के लिये जमीन ले। [जैसा पक्षी।

शिकरा—पु० एक प्रकार का बाज

शिकवा—पु० शिकायत, उलाहना।

शिकस्त—स्त्री० पराजय, हार।

शिकस्ता—टूटा हुआ। स्त्री० उर्दू या फारसी की घसीट लिखावट। [रोग।

शिकायत—स्त्री० चुगली, उलाहना,

शिकार—पु० आखेट, आखेट में मरा जानवर, मांस, भोजन। [स्थान।

शिकारगाह—पु० शिकार खेलने का

शिकारबंद—पु० वह तस्मा जो घोड़े की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिये लगाया जाता है।

शिकारी—पु० शिकार करनेवाला।

शिक्षक—पु० गुरु, अध्यापक।

शिक्षण—पु० शिक्षा, पढ़ाने का काम।

शिक्षा—स्त्री० तालीम, उपदेश, एक वेदांग, शासन, दंड।

शिक्षालय—पु० पाठशाला, विद्यालय।

शिक्षित—शिक्षाप्राप्त, विद्वान्।

शिखंड—पु० मोर की पूंछ, चोटी,

काकपक्ष ।
शिखंडी—पु० मोर, मो, मुर्गा, बाण, विष्णु, कृष्ण, शिव, शिखा ।
शिखर—पु० चोटी, सिरा, पहाड़, की चोटी, कलश, गुंबद ।
शिखरिणी—स्त्री० रसाल, नारीरत्न, रोमावली, दही और चीनी का रस ।
शिखा—स्त्री० चोटी, ज्वाला, दीपक की टेम, प्रकाश की किरण, नुकीला छोर, डाल ।
शिखाबंधन—पु० चोटी बाँधना ।
शिखाभरण—पु० मुकुट, ताज ।
शिखि—पु० मोर, कामदेव, अग्नि, तीन की सँख्या । [मयूरध्वज ।
शिखिध्वज—पु० धुआँ, कार्तिकेय,
शिखी—शिखावाला । पु० मोर,मुर्गा, बैल, घोड़ा, अग्नि, तीन की संख्या, पुच्छल तारा, बाण ।
शिगाफ—पु० नश्तर, दरार, छेद, कलम या नीब के बीच का चिराव ।
शिगूफा—पु० कली ।
शिजरा—पु० वंश, वंशावली ।
शिताव—जल्द, शीघ्र ।
शिताबी—स्त्री० शीघ्रता, जल्दी ।
शिति—सफेद, काला । [मोर, शिव ।
शितिकंठ—पु० मुर्गाबी, चातक,
शिति पच्च—पु० हंस ।
शिथिल—ढीला, सुस्त, थका हुआ ।
शिद्दत—स्त्री० तेजी, जोर, अधिकता ।
शिनाख्त—स्त्री० पहचान, परख ।
शिफा—स्त्री० कमल की जड़, चोटी ।
शिफाकत—स्त्री० साझा, हिस्सा ।
शिफर—पु० ढाल ।
शिमाल—स्त्री० उत्तर दिशा ।
शिया—पु० मददगार, मुसलमानों का एक सम्प्रदाय । [शिखर ।
शिर—पु० सिर, मस्तक, सिरा,
शिरकत—स्त्री० साझा, हिस्सा ।
शिरमौर—पु० शिरोभूषण, प्रधान ।
शिरस्त्राण—पु० लोहे की टोपी ।
शिरा—स्त्री० रक्त की छोटी नाड़ी, धारा । [कार्य्य का योग ।
शिराकत—स्त्री० साझा, हिस्सेदारी,
शिराकतनामा—पु० वह कागज जिसपर साझे की शर्तें लिखी हों ।
शिरि—पु० खड्ग, शर, टिड्डी ।
शिरीष—पु० एक पेड़ ।
शिरोधार्य्य—आदरपूर्वक शिर पर धारण करने योग्य । [सिर का मणि ।
शिरोभूषण,शिरोमणि—श्रेष्ठ । पु०
शिला—स्त्री० पत्थर, चट्टान ।
शिलालेख—पु० पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख ।
शिलास्तम्भ—पु० पत्थर का खंभा जिस पर कुछ खुदा हो ।
शिलाहरि—पु० शालिग्राम ।
शिलिंग—पु० इंगलैण्ड का चाँदी का एक सिक्का ।

शिली—स्त्री० भाला, बाण, केंचुआ, भोजपत्र, देहली, मेढ़क ।

शिलीमुख—पु० भ्रमर, बाण ।

शिलोच्चय—पु० पर्वत, पहाड़ ।

शिल्प—पु० दस्तकारी, कला संबंधी व्यवसाय ।

शिल्पकला—स्त्री० दस्तकारी ।

शिल्पकार, शिल्पजीवी, शिल्पी—पु० कारीगर ।

शिव—पु० मंगल, जल, पारा, मोक्ष, वेद, देव, रुद्र, वसु, लिंग, परमेश्वर, सृष्टि का संहार करनेवाले देव ।

शिवनंदन—पु० गणेश । [कैलाश ।

शिवपुरी, शिवलोक—स्त्री० काशी,

शिवरात्रि—स्त्री० शिव-विवाह की रात, फाल्गुन बदी चतुर्दशी ।

शिवा—स्त्री० दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, सियारिन ।

शिवालय—पु० शिवजी का मंदिर ।

शिविका—स्त्री० पालकी, डोली ।

शिविर—पु० डेरा, खेमा, छावनी, किला ।

शिवेश—पु० गीदड़, शिव ।

शिशिर—पु० एक ऋतु जिसमें माघ और फाल्गुन मास पड़ते हैं ।

शिशुता—स्त्री० बचपन । [साँस ।

शिशुमार—पु० श्रीकृष्ण, नक्षत्रमंडल,

शिशुमार चक्र—पु० सब ग्रहों के सहित सूर्य, सौर जगत् ।

शिश्न—पु० पुरुष का लिंग ।

शिष्ट—पु० धर्मशील, धीर, सुशील, बुद्धिमान, सभ्य, भला ।

शिष्टाचार—पु० सभ्य आचरण, आदर, खातिरदारी, आवभगत, नम्रता, दिखावटी सभ्य व्यवहार ।

शिष्य—पु० वह जो शिक्षा देने योग्य हो, विद्यार्थी, चेला ।

शीकर—पु० कण, फुहार ।

शीघ्र—जल्द, तुरंत ।

शीघ्रता—स्त्री० जल्दी, फुर्ती ।

शीत—ठंढा । पु० जाड़ा, ओस, जाड़े का मौसम, सरदी ।

शीत कटिबंध—पु० भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के और २३½ अंश दक्षिण के बाद का भूखंड ।

शीतप्रभ—पु० कपूर ।

शीतल—ठंढा, शांत ।

शीतला—स्त्री० चेचक ।

शीतांशु—पु० चंद्रमा ।

शीताद्रि—पु० हिमालय पहाड़ ।

शीर—पु० दूध, क्षीर ।

शीरखोरा—पु० दूध पीता बच्चा, अनजान बालक ।

शीरा—पु० चाशनी, शरबत ।

शीराजा—पु० प्रबंध, इंतजाम, सिलसिला, वह फीता जो किताबों की सिलाई की ओर लगाया जाता है ।

शीरीं—मीठा, प्रिय, प्यारा मधुर।
शीरीनी—स्त्री० मिठाई, मीठापन।
शीर्ण—टूटाफूटा हुआ, मुरझाया हुआ, पतला। [सामना।
शीर्ष—पु० सिर, माथा, सिरा,
शीर्षक—पु० शीर्ष, किसी लेख के ऊपर उसके परिचय के लिये दिया हुआ शब्द या वाक्य। [का स्थान।
शीर्षबिंदु—पु० सिरे पर सबसे ऊपर
शील—पु० स्वभाव, आचरण, उत्तम स्वभाव, उत्तम आचरण, संकोच का भाव, मुरौवत।
शीश—पु० दे० "शीर्ष"।
शीशमहल—पु० वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा—पु० काँच, दर्पण, झाड़ फानूस आदि काँच के बने सामान।
शीशी—स्त्री० काँच की लम्बी कुप्पी।
शुंठी—स्त्री० सोंठ।
शुंड—पु० हाथी की सूँड़।
शुंडी—पु० हाथी, मद्य बनानेवाला।
शुक—पु० सुग्गा, वस्त्र।
शुक्त—खट्टा, कड़ा, अप्रिय, उजाड़।
शुक्ति—स्त्री० सीप।
शुक्र—पु० एक ग्रह, अग्नि, वीर्य्य, बल, एक दिन, धन्यवाद, कृतज्ञता-प्रकाश,
शुक्रगुजार—कृतज्ञ। [सानमंदी।
शुक्रगुजारी—स्त्री० कृतज्ञता, एह-
शुक्रज—पु० पुत्र।
शुक्रप्रमेह—पु० धातुक्षीणता।
शुक्रांग—पु० मोर।
शुक्रा—स्त्री० वंशलोचन। [प्रकाश।
शुक्रिया—पु० धन्यवाद, कृतज्ञता-
शुक्ल—सफेद।
शुक्लपक्ष—पु० अमावस्या के बाद से पूर्णिमा तक का समय।
शुक्ला—स्त्री० सरस्वती।
शुक्लाभिसारिका-स्त्री० चाँदनी रात में उज्वल वेश बना कर नायक के निकट जानेवाली नायिका।
शुचि—शुद्ध, स्वच्छ, निर्दोष, स्वच्छ हृदयवाला। स्त्री० पवित्रता।
शुजा—बहादुर, शूरवीर।
शुजाअत—स्त्री० बहादुरी, वीरता।
शुतुर—पु० ऊँट।
शुतुरमुर्ग—पु० एक पक्षी।
शुदनी—स्त्री० भावी, होनहार।
शुद्ध—पवित्र, स्वच्छ, सफेद, जिसमें गलती न हो, सही, ठीक, निर्दोष, जिसमें मिलावट न हो, खालिस।
शुद्धपक्ष—पु० शुक्लपक्ष। [भाव।
शुद्धि—स्त्री० सफाई, शुद्ध होने का
शुद्धिपत्र—पु० वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।
शुनि—पु० कुत्ता।
शुबहा—पु० संदेह, धोखा, भ्रम।
शुभंकर—कल्याणकारी। पु० शिव।

शुभ–भला, कल्याणकारी। पु० कल्याण।

शुभचिंतक–भला चाहनेवाला, हितैषी।

शुभदर्शन—सुंदर, खूबसूरत।

शुभांगी—स्त्री० सुन्दरी, रति।

शुभा–स्त्री० शोभा, दूब, वंशलोचन।

शुभ्र—सफेद।

शुरू—पु० आरंभ, उद्गमस्थान।

शुल्क—पु० महसूल, फीस, दाम, भाड़ा, बाजी, दहेज।

शुश्रूषा—स्त्री० सेवा। [निर्मोही।

शुष्क—सूखा, नीरस, निरर्थक,

शुष्ण, शुष्म–गरम। पु० आग, सूर्य, शक्ति, पवन, पक्षी।

शूकर—सूअर।

शूक्त—पु० सिरका।

शूद्र—निकृष्ट। पु० चार वर्णों में चौथा वर्ण।

शूद्रा—स्त्री० दासी।

शूद्राणी—स्त्री० शूद्र की स्त्री, दासी।

शून्य–खाली, निराकार, विहीन। पु० खाली स्थान, आकाश, एकांत स्थान, विंदु, अभाव, स्वर्ग, विष्णु, ईश्वर।

शून्यवादी—पु० वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व को न मानता हो, बौद्ध, नास्तिक।

शूर—पु० वीर, योद्धा, सूर्य, सिंह, विष्णु।

शूर्प—पु० सूप।

शूल—पु० बरछे के आकार का एक अस्त्र, सूली, त्रिशूल, नोकीला काँटा, छड़, टीस, पीड़ा, ज्योतिष में एक अशुभ योग, मृत्यु, झंडा।

शूलपाणि, शूलि—पु० शिव।

शूली—पु० शिव। स्त्री० पीड़ा।

शृंखल–पु० मेखला, सिक्कड़, हथकड़ी।

शृंखला—स्त्री० क्रम, सिलसिला, जंजीर। कटिवस्त्र, करधनी, श्रेणी।

शृंखलाबद्ध—सिलसिलेवार, शृंखला से बँधा हुआ।

शृंग—पु० शिखर, चोटी, सींग, कँगूरा, सिंगी बाजा, कमल।

शृंगी—पु० हाथी, पर्वत, पेड़।

शृंगाट—पु० चौराहा, सिंघाड़ा।

शृंगार—पु० शोभा की वस्तु, सजावट, साहित्य के नौ रसों में एक रस जिसमें नायक-नायिका के पारस्परिक प्रेम का वर्णन रहता है, स्त्रियों के रूप सजाने की वस्तु जो सोलह कहे गये हैं—उबटन, स्नान, वस्त्रादि, केशविन्यास, काजल, सिंदूर, महावर, तिलक, तिल बनाना, मेंहदी, सुगंधि, भूषण, फूलों की माला, पान, होंठ रंगना, मिस्सी।

शृंगार हाट—स्त्री० वेश्याओं का बाजार। [सींगवाला पशु, शिव।

शृंगी—पु० हाथी, वृक्ष, पर्वत,

शृगाल—पु० गीदड़, सियार।

शेख—पु० पैगंबर मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि, मुसलमानों का

एक वर्ग, पीर, बड़ा बूढ़ा ।
शेखर—पु० सिर, मुकुट, चोटी, उत्तम व्यक्ति या वस्तु ।
शेखी—स्त्री० अहंकार, शान, डींग ।
शेखीबाज—पु० डींग मारनेवाला व्यक्ति, अभिमानी ।
शेयर—पु० हिस्सा, भाग ।
शेयर होल्डर—पु० हिस्सेदार ।
शेर—पु० बाघ, अत्यंत वीर पुरुष, उर्दू कविता के दो चरण । [हो ।
शेरदहाँ—जिसका मुँह शेर का सा
शेरबब्बर—पु० सिंह । [अंगरखा ।
शेरवानी—स्त्री० एक प्रकार का
शेष—बाकी, समाप्त । पु० बाकी, अंत, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम, परमेश्वर ।
शेषधर—पु० शिव ।
शेषशायी—पु० विष्णु ।
शेषोक्त—अंत में कहा हुआ ।
शैकत—बालू संबंधी ।
शैतान—पु० दुष्ट, एक दुष्ट देव-योनि । मु० शैतान की आँत = बहुत लंबी वस्तु ।
शैतानी—स्त्री० दुष्टता, शरारत ।
शैथिल्य—पु० शिथिलता ।
शैल—शिला संबंधी, कठोर । पु० पर्वत, चट्टान । [स्त्री० पार्वती ।
शैलकुमारी, शैलजा, शैलसुता—
शैली—स्त्री० प्रथा, रीति, वाक्य-रचना का प्रकार, तरीका, चाल, ढंग ।
शैलेंद्र—पु० हिमालय ।
शैव—शिव संबंधी, शिव का उपासक, पाशुपत अस्त्र, धतूरा ।
शैवल—पु० सिवार ।
शैवलिनी—स्त्री० नदी ।
शैवाल—पु० सेवार ।
शैशव—शिशु संबंधी । पु० बचपन ।
शोक—पु० गम, दुःख । [विकल ।
शोकातुर, शोकार्त्त—शोक से
शोकोपहत—शोक से पीड़ित ।
शोख—ढीठ, नटखट, चंचल । [तेज़ी ।
शोखी—स्त्री० ढिठाई, चंचलता,
शोच—पु० अफसोस, चिंता ।
शोच्य, शोचनीय—जिसकी दशा देख कर दुःख हो, बहुत हीन या बुरा ।
शोण—पु० लाल रंग, लाली, अग्नि,
शोणभद्र—पु० सोन नदी ।
शोणित—लाल । पु० रक्त ।
शोथ—पु० सूजन, फूलने का रोग ।
शोध—पु० शुद्धि संस्कार, दुरुस्ती, अदा होना, जाँच, खोज ।
शोभन—शोभायुक्त, सुंदर, उत्तम, शुभ । पु० अग्नि, शिव, मंगल, सौंदर्य्य, आभूषण ।
शोभना—शोभित होना । स्त्री० सुंदरी स्त्री, हलदी । [सजावट, रंग ।
शोभा—स्त्री० कांति, सुंदरता, छटा,
शोभायमान—सोहता हुआ ।

शोभित--सुन्दर, शोभता हुआ।

शोर—पु० कोलाहल, प्रसिद्धि।

शोरबा—पु० रस, जूस। [दंगा।

शोरिश—पु० हलचल, खलबली, बलवा,

शोला—स्त्री० आग की लपट।

शोषक—पु० सोखने या सुखानेवाला।

शोषण—पु० सोखना, सुखाना, क्षीण करना, नाश करना।

शोहदा--पु० बदमाश, लंपट।

शोहरत--स्त्री० धूम, प्रसिद्धि।

शोहरा--पु० शोहरत।

शौंडिक--पु० कलवार।

शौंडीर—पु० मदिरा, शराब।

शौक—पु० प्रबल लालसा, हौसला, चसका, झुकाव। मु० शौक करना = किसी वस्तु का भोग करना। शौक से = प्रसन्नता पूर्वक।

शौकत--स्त्री० शान, ठाठबाट।

शौकिया—शौक के कारण, शौक से भरा हुआ। [बनाठना रहनेवाला।

शौकीन—पु० शौक करनेवाला, सदा

शौकीनी--स्त्री० सजावट, शौक करने का भाव।

शौच--पु० पवित्रता, पैखाना जाना।

शौनिक—पु० वधिक।

शौरसेनी--स्त्री० शौरसेन प्रदेश की एक प्राचीन भाषा।

शौर्य--पु० शूरता।

शौहर—पु० पति।

श्मशान—पु० मरघट, मसान।

श्मशानपति—पु० शिव।

श्मश्रु--पु० दाढ़ी-मूँछ।

श्मश्रुकर्म—पु० दाढ़ी-मूँछ मुड़ाना।

श्याम—पु० काला, साँवला, काला और नीला मिला हुआ। पु० श्रीकृष्ण, मेघ।

श्यामकर्ण—पु० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद पर एक कान काला हो।

श्यामल—साँवला। [पार्वती।

श्यामला--स्त्री० कस्तूरी, साँवली,

श्यामसुंदर—पु० श्रीकृष्ण।

श्यामा--काली। स्त्री० राधा, एक पक्षी, सोलह वर्ष की तरुणी, काली गाय, तुलसी, कोयल, यमुना, रात, स्त्री।

श्यामांग--साँवला। पु० बुध।

श्याल—पु० साला, बहनोई, सियार।

श्येन—पु० बाज। [भक्ति।

श्रद्धा—स्त्री० बड़े के प्रति पूज्य भाव,

श्रद्धालु--श्रद्धावान्। [पूजनीय।

श्रद्धास्पद, श्रद्धेय-श्रद्धा करने योग्य,

श्रम—पु० परिश्रम, थकावट, तकलीफ, परेशानी, प्रयास, कसरत, पसीना।

श्रमकण—पु० पसीने की बूँदे।

श्रमजल--पु० पसीना। [भरनेवाला।

श्रमजीवी—पु० मेहनत करके पेट

श्रमण--पु० बौद्ध संन्यासी, पति, मजदूर।

श्रमबिंदु, श्रमवारी—पु० पसीना।

श्रमविभाग—पु० काम का विभाग

श्रमसहिष्णु—मेहनती, परिश्रमी।

श्रमसाध्य—श्रम से सिद्ध होनेवाला।

श्रमसीकर—पु० पसीना।

श्रमित—थका हुआ।

श्रमी—पु० मेहनती, मजदूर।

श्रव—पु० कान।

श्रवण—पु० कान, सुनना, नवधा, भक्ति में एक भक्ति।

श्रव्य—सुनने योग्य।

श्रव्य काव्य—पु० नाटक।

श्रांत—थका हुआ, दुःखी, शांत, जितेंद्रिय।

श्रांति—स्त्री० परिश्रम, थकावट, विश्राम।

श्राद्ध—पु० श्रद्धापूर्वक किया गया कार्य, पितरों के उद्देश्य से किया गया कार्य, पितृपक्ष।

श्राप—पु० शाप।

श्राव—पु० श्रवण, सुनना, गंधविरोजा।

श्रावक—सुननेवाला। पु० बौद्ध संन्यासी, जैनी, नास्तिक।

श्रावग—पु० दे० "श्रावक"।

श्रावण—पु० सावन। [पूर्णमासी।

श्रावणी—स्त्री० सावन मास की

श्राव्य—सुनने योग्य, कान का विषय।

श्रिय—स्त्री० कल्याण, शोभा।

श्री—स्त्री० लक्ष्मी, सरस्वती, कमल, सफेद चंदन, संपत्ति, विभूति, यश, शोभा, प्रभा, कीर्ति, आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है, त्रिवर्ग—धर्म्म, अर्थ और काम।

श्रीकंठ—पु० शिव।

श्रीकांत—पु० विष्णु।

श्रीक्षेत्र—पु० जगन्नाथ पुरी।

श्रीखंड—पु० हरिचंदन।

श्रीखंड शैल—पु० मलय पर्वत।

श्रीगेह—पु० कमल।

श्रीदाम—पु० सुदामा।

श्रीधर—पु० विष्णु, तेजस्वी।

श्रीधाम—पु० समुद्र, कमल।

श्रीनिकेतन—पु० बैकुंठ, लाल कमल, सोना।

श्रीनिवास—पु० विष्णु, बैकुंठ।

श्रीपंचमी—स्त्री० वसंत पंचमी।

श्रीपति—पु० विष्णु, रामचन्द्र, कृष्ण कुबेर, राजा।

श्रीपथ—पु० राजमार्ग।

श्रीपाद—पु० पूज्य।

श्रीफल—बेल, नारियल, खिरनी, आँवला, धनसंपत्ति।

श्रीमंत—श्रीमान्।

श्रीमत्—धनवान्, शोभायुत, सुंदर।

श्रीमती—स्त्री० "श्रीमान्" का स्त्री लिंग, लक्ष्मी, राधा।

श्रीमान्—श्रीयुत, धनवान्।

श्रीमुख-पु० सुंदर मुख, वेद, सूर्य्य।

श्रीयुक्त, श्रीयुत—जिसमें श्री या

शोभा हो। पु० एक आदर सूचक शब्द जो नाम के पहले लगाया जाता है। [विष्णु।

श्रीरंग, श्रीरमण, श्रीवत्स—पु०

श्रील--श्रीमान्।

श्रीवास,श्रीवासक-पु० गंध विरोजा, देवदारु,चंदन, कमल, विष्णु, शिव।

श्रीश – पु० विष्णु।

श्रीहत--शोभा रहित, प्रभाहीन।

श्रुत—सुना हुआ, प्रसिद्ध।

श्रुति—स्त्री० सुनना, कान, सुनी हुई बात, शब्द, खबर, वेद, चार की संख्या, नाम, विद्या, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा।

श्रुतिकटु—जो कान को प्रिय न लगे।

श्रुतिपथ—पु० कान का रास्ता। वेद विहित मार्ग।

श्रुतिमधुर—जो कान को प्रिय लगे।

श्रुतिहारी—सुनने में मधुर।

श्रेणि, श्रेणी—स्त्री० पंक्ति, क्रम, दल, सेना, कंपनी, जंजीर, सीढ़ी।

श्रेय—श्रेष्ठ, शुभ, बेहतर। पु० कल्याण, अच्छापन, यश, पुण्य।

श्रेयस्कर—कल्याणकारक।

श्रेष्ठ--सर्वोत्तम, प्रधान, पूज्य, वृद्ध।

श्रेष्ठी--पु० सेठ।

श्रोत--पु० कान।

श्रोता—सुननेवाला।

श्रोत्र—पु० कान, वेदज्ञान।

श्रोत्रिय, श्रोती—पु० वेद-वेदांग में पारंगत, ब्राह्मणों का भेद।

श्लथ—शिथिल, मंद, दुर्बल।

श्लाघनीय—प्रशंसनीय, श्रेष्ठ।

श्लाघा—स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, खुशामद, चाह।

श्लाघ्य—प्रशंसनीय।

श्लिषा—स्त्री० आलिंगन।

श्लिष्ट—मिला हुआ, श्लेष युक्त, दो अर्थ वाला।

श्लील–उत्तम, जो भद्दा न हो, शुभ।

श्लेष--पु० मिलना, संयोग, साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिये जाते हैं।

श्लेषण–पु० मिलना,जोड़ना,आलिंगन

श्लेष्मा—पु० कफ।

श्लोक--पु० शब्द, पुकार, स्तुति, यश, संस्कृत का पद्य।

श्वपच--पु० कुत्ते का मांसपकाकर खानेवाला, चांडाल, डोम।

श्वसुर--पु० ससुर।

श्वश्रू--स्त्री० सास।

श्वा, श्वान—पु० कुत्ता।

श्वापद – पु० हिंसक जीव।

श्वास—पु० साँस, हाँफना, दमा।

श्वासकास—पु० दमा और खाँसी।

श्वासा—स्त्री० साँस, प्राण।

श्वासी—श्वास रोगवाला।

श्वासोच्छ्वास--पु० तेजी से साँस

खींचना और निकालना ।
शिवत्र--उजला । पु० कुष्ट रोग ।
श्वेत--सफेद, साफ, निर्दोष, गोरा । पु० सफेद रंग, चाँदी ।
श्वेतनील--पु० मेघ, बादल ।
श्वेतपत्र-पु० हंस, उजले पत्तेवाला ।
श्वेतमाला--पु० बादल, धूआं ।
श्वेतवाह--पु० अर्जुन, इंद्र ।
श्वेतांबर--पु० जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक, उजला कपड़ा पहनने वाला ।
श्वेता--स्त्री० कौड़ी, दूब, खाँड़ ।

ष

ष--एक अक्षर ।
षंड--पु० नपुंसक, शिव ।
षट्--छः ।
षट्क--पु० ६ की संख्या, ६ वस्तुओं का समूह ।
षट्कर्म--पु० आडंबर, ब्राह्मणों के छः कर्म--पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दानलेना, दानदेना ।
षट्कर्मी-षट्कर्म करनेवाला, आडंबरी ।
षट् चरण, षट्पद--छः पैर वाला । पु० भौंरा, छप्पय छंद ।
षट् पदी--स्त्री० भ्रमरी, छप्पय ।
षट्मुख--पु० कार्त्तिकेय ।
षट्रस--पु० दे० "षड्रस" ।
षट्राग--पु० बखेड़ा, संगीत के छः राग दे० "राग" ।
षट्रिपु--पु० दे० "षड्रिपु" ।
षडंग-पु० वेद के छः अंग-दे० "वेदांग" ।
षडानन--पु० कर्तिकेय ।
षड्दर्शन-पु० छः शास्त्र-संख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत ।
षड्यंत्र--पु० किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की हुई कार्रवाई, कपटपूर्ण आयोजन, साजिश ।
षड्रस--पु० छः रस--खट्टा, मीठा, तीता, कड़आ, कसैला और नमकीन ।
षड्रिपु--पु० छः शत्रु--काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर ।
षण्मासिक, षाण्मासिक-छः माही ।
षष्ठ--छठा ।
षष्टि--साठ की संख्या ।
षष्टिक--पु० साठी अन्न ।
षष्ठी--स्त्री० छठी तिथि, दुर्गा, संबंध कारक, बालक उत्पन्न होने के छठे दिन का उत्सव ।
षोड़श--सोलहवाँ, सोलह ।
षोड़शकला--स्त्री० चंद्रमा के सोलह अंश ।
षोड़श श्रृंगार--पु० सोलह श्रृंगार । दे० "श्रृंगार" ।
षोड़श संस्कार--पु० सोलह संस्कार [दे० "संस्कार" ।
षोड़शी--स्त्री० सोलहवीं, सोलह वर्ष

की बालिका ।

षोड़शोपचार-पु० पूजन के सोलह उपचार या विधान—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताँबूल, परिक्रमा, बंदना ।

ष्ठीवन--पु० थूकना ।

स

स—एक अक्षर । सहित आदि सूचक एक उपसर्ग । पु० शिव,ईश्वर, साँप, पक्षी, वायु, जीवात्मा, चँद्रमा, ज्ञान, संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर, 'सगण' का संक्षिप्त रूप ।

सं—एक अव्यय जो शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में आता है ।

संक—पु० शंका ।

संकट—तंग । पु० विपत्ति, दुःख, पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता ।

संकना—शंका करना, डरना ।

संकर—पु० दो चीजों का आपस में मिलना, दोगला, दे० "शंकर" ।

सँकरा—पतला और तंग । पु० कष्ट ।

संकरीकरण—पु० दो पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया ।

संकर्षण—पु० खींचना, जोतना ।

संकलन—पु० संग्रह करना, संगूह, जोड़ ।

संकलित—संगृहीत, चुना हुआ ।

संकल्प—पु० इरादा, दृढ़ निश्चय, कोई देवकार्य करने से पहले एक निश्चित मंत्र पढ़ते हुए अपना दृढ़ निश्चय प्रकट करना ।

संकाश—समान, समीप । पु० [प्रकाश ।

संकीर्ण—संकुचित, मिश्रित, छोटा । पु० संकट ।

संकीर्तन—पु० कीर्ति का वर्णन [करना, देवता का भजन ।

संकुचित—लज्जित, सिकुड़ा हुआ, तंग, क्षुद्र, उदार का उलटा ।

संकुल—घना, भरा हुआ । पु० युद्ध, समूह, भीड़, परस्पर विरोधी वाक्य ।

संकेत—पु० इशारा, चिह्न, पते की बातें, दे० "सहेट"

सँकेत—सँकरा । [भय,हिचकिचाहट ।

संकोच-पु० सिकुड़ने की क्रिया,लज्जा,

संक्रंदन—पु० इंद्र ।

संक्रमण—पु० गमन, सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करना ।

सँक्रांति—स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय ।

संक्रमण—पु० चलना ।

संक्रामक—संसर्ग या छूत आदि से फैलनेवाला ।

संक्षिप्त-जो संक्षेप में हो, थोड़ा, अल्प ।

संक्षिप्त लिपि—स्त्री० एक लेखन प्रणाली जिसमें थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं । [कहना, घटाना ।

संक्षेप—पु० थोड़े में कोई बात

संखिया—पु० एक जहर ।

संख्य—संख्यावाला, युद्ध ।

संख्यक—संख्यावाला ।

संख्या—स्त्री० अदद, तादाद ।

संग—बहुत कड़ा, साथ, सहित । पु० मिलन, सोहबत, वासना, सहवास, विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग, पत्थर ।

संग असवद—पु० काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर जो काबे की एक दीवार पर लगा हुआ है । [पत्थर ।

संगजराहत—पु० एक प्रकार का

संगठन—पु० बिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को मिलाकर एक करना जिससे नवीन बल आ जाय, संगठित संस्था ।

संगत—स्त्री० सोहबत, साथी, संबंध, उदासियों के रहने का मठ ।

संगतराश—पु० पत्थर काटनेवाला ।

संगति—स्त्री० संग, साथ, मिलाप, मैथुन, संबंध, ज्ञान, आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान ।

संगथ—पु० युद्ध ।

संग दिल—कठोर हृदय ।

संगदिली—स्त्री० निर्दयता ।

संगम, संगमन—पु० मिलाप, दो नदियों के मिलने का स्थान, साथ ।

संगमरमर - पु० एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर । [चिकना पत्थर ।

संगमूसा—पु० एक प्रकार का काला

संगयशब—पु० एक कीमती पत्थर ।

संगर-युद्ध, प्रतिज्ञा, विष । [कंकड़ ।

संगरेजा-पु० पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े,

संगसुलेमानी-पु० एक रंगीन नग ।

संगाती—पु० साथी, मित्र ।

संगिनी—स्त्री० सहचरी, पत्नी ।

संगी—पु० साथी, मित्र, एक प्रकार का कपड़ा ।

संगीत-पु० वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों ।

संगीन—पत्थर का बना, मोटा, टिकाऊ, मजबूत, विकट । पु० लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है ।

संगीनी—हथियारबंद ।

संगृहीत—संग्रह किया हुआ ।

संगृहीता—संग्रह करनेवाला ।

संग्रह—पु० संचय, रक्षा, ग्रहण करना, पाणिग्रहण ।

संग्रही—संग्रह करने वाला ।

संग्रहणी—स्त्री० दस्त की बीमारी ।

संग्राम—पु० युद्ध ।

संघ—पु० समूह, दल, सभा, मठ, बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज, प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य ।

संघट—पु० संघटन, युद्ध, समूह ।

संघटन, संघट्ट, संघट्टन-पु० मेल, बनावट, रचना, मिलाप, संगठन ।

संघट्टिनी—मेल करानेवाली (दूती) ।

संघरना—संहार करना ।

संघर्ष, संघर्षण—पु० रगड़ खाना, प्रतियोगिता, रगड़ना ।

संघात—पु० समूह, आघात, हत्या, शरीर, निवासस्थान ।

संघाती—पु० साथी, मित्र ।

संघाराम—पु० बौद्धों का मठ ।

संच—धीरे ।

संचय—पु० समूह, संग्रह ।

संचयी—संचय करनेवाला ।

संचरण—पु० चलना ।

संचार—पु० चलना, फैलना ।

संचारिका—स्त्री० दूती ।

संचारी—गतिशील । पु० वायु, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं ।

संचारिका—स्त्री० दूती, नाक ।

संचालक—पु० चलानेवाला, [illegible]

संचालन—पु० चलाना, काम जारी रखना ।

संचित—जमा किया हुआ ।

संजय—पु० ब्रह्मा, शिव ।

संजात—उत्पन्न, प्राप्त ।

संजाफ—स्त्री० झालर, मगजी ।

संजाफी—झालरदार, किनारेदार ।

संजीदा—गंभीर, समझदार ।

संजीदगी—स्त्री० गंभीरता ।

संजीवन—पु० जीवन देनेवाला, भलीभाँति जीवन व्यतीत करना ।

संजीवनी—जीवन देनेवाली । स्त्री० मृत व्यक्ति को जीवन देनेवाली एक कल्पित औषधि ।

संज्ञक—संज्ञावाला ।

संज्ञा—स्त्री० होश, बुद्धि, ज्ञान, नाम, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का बोध हो । [आदि ।

संझला—चार में तीसरा भाई या बेटा

सांझ—स्त्री० संध्या ।

संड—पु० साँड़ ।

संडमुसंड—हट्टाकट्टा ।

संडास—पु० कुएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पैखाना । [पुरुष ।

संत—पु० साधु संन्यासी, धार्मिक

संतत—सदा, निरंतर ।

संतति—स्त्री० संतान, प्रजा ।

संतप्त—जला हुआ, दुःखी ।

संतरण—पु० पार होना, तारनेवाला ।

संतरा—पु० एक प्रकार का मीठा नीबू ।

संतरी—पु० पहरेदार, द्वारपाल।

संतान—पु० बालबच्चा, कल्पवृक्ष।

संताप—पु० जलन, दुःख, मानसिक पीड़ा।

संतापी—पु० संताप देनेवाला, सतानेवाला।

संति--स्त्री० दान, अन्त।

संतुष्ट—तृप्त, जो मान गया हो।

संतोष—पु० सब्र, तृप्ति, प्रसन्नता।

संतोषी—संतोष करनेवाला।

संदर्भ—पु० रचना, लेख, कोई छोटी पुस्तक।

संदर्शन--पु० अवलोकन, ज्ञान, देखभाल।

संदल—पु० चंदन।

संदली—संदल का, हलका पीला रंग।

संदिग्ध—संदेहपूर्ण, जिसपर संदेह हो।

संदीपन—पु० उद्दीपन।

संदूक—पु० पेटी, बक्स।

संदूकची, संदूकड़ी—स्त्री० छोटा संदूक।

संदेश—पु० समाचार, एक बंगला मिठाई।

संदेसी--पु० दूत।

संदेह—पु० शंका, शक।

संदोह--पु० समूह, झुण्ड।

संधान--पु० निशाना लगाना, मिलाना, खोज, संधि, काँजी।

संधि--स्त्री० मेल, मिलने की जगह या जोड़, सुलह, मैत्री, गाँठ, व्याकरण में दो अक्षरों के मिलने से होनेवाला विकार, सेंध, वयःसंधि, बीच की खाली जगह।

संधिभंग--पु० हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना।

संधिपत्र—सुलहनामा।

संध्या—स्त्री० सायंकाल, आर्यों की एक उपासना।

संध्याराग—पु० सिंदूर।

संध्याराम—पु० ब्रह्मा।

संन्यास—पु० चार आश्रमों में अंतिम आश्रम, त्याग, वैराग्य।

संन्यासी—पु० वह जो संन्यास आश्रम में हो, विरक्त।

संपत्ति—स्त्री० ऐश्वर्य्य, धन।

संपद्, संपदा—स्त्री० सिद्धि, ऐश्वर्य्य, सौभाग्य।

संपन्न—पूरा किया हुआ, सहित, धनी।

संपर्क—पु० संसर्ग, स्पर्श, मिलावट।

संपा—स्त्री० बिजली।

संपात—पु० एक साथ गिरना, संसर्ग, समागम, वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े।

संपादक—पु० कोई काम संपन्न करनेवाला, किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगा कर निकालने वाला।

संपादकीय—संपादक का। पु० समाचार पत्र का अग्रलेख।

संपादन—पु० काम को पूरा करना,

प्रदान करना, ठीक करना, दुरुस्त करना, किसी पुस्तक या संवादपत्र को क्रम आदि लगाकर प्रकाशित करना।

संपादित—पूर्ण किया हुआ, प्रस्तुत, क्रम आदि लगाकर ठीक किया हुआ।

संपुट—पु० खप्पर, दोना, डिब्बा, अंजली, फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो, कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा वह वर्तन जिसके भीतर कोई औषधि फूँकते हैं।

संपूर्ण—सब, समाप्त। पु० वह राग जिसमें सातो स्वर लगते हों।

संपूर्णतः, संपूर्णतया—पूरी तरह से, भलीभाँति।

सँपेरा—पु० साँप दिखानेवाला।

सँपोला—पु० साँप का बच्चा।

संप्रति—अभी, मुकाबले में।

संप्रतीति—स्त्री० दृढ़ विश्वास, यश।

संप्रदान—पु० दान देने की क्रिया, दीक्षा, व्याकरण में एक कारक।

संप्रदाय—पु० कोई विशेष धर्म संबंधी मत, फिरका, परिपाटी, गुरुमंत्र।

संप्रमोद—पु० अधिक हर्ष।

संप्राप्त—उपस्थित, पाया हुआ, घटित। [समूह।

संप्लव—पु० बाढ़, हल्लागुल्ला, भारी

संबंध—पु० लगाव, रिश्ता, मेल, विवाह, एक साथ बँधना, व्याकरण में एक कारक।

संबंधी—संबंध रखनेवाला, विषयक। पु० रिश्तेदार, समधी। [युक्त।

संबद्ध—बँधा हुआ, बंद, संबंध-

संबल—पु० फर का खर्च, रास्ते का भोजन। [जिन।

संबुद्ध—पु० ज्ञानी, ज्ञात, बुद्ध,

संबोधन—पु० जगाना, पुकारना, समझाना बुझाना, व्याकरण में एक कारक।

सँभलना—थामा जा सकना, आधार पर ठहरे रहना, होशियार होना, बुरी दशा को फिर सुधार लेना।

संभव—पु० उत्पत्ति, मेल, होना, हो सकने के योग्य होना।

संभवतः—हो सकता है, मुमकिन है।

संभवनीय—मुमकिन। [पालन।

संभार—पु० संचय, तैयारी, धन,

सँभाल—स्त्री० रक्षा, पोषण का भार, निगरानी, तनबदन की सुध।

संभावना—स्त्री० अनुमान, हो सकना, प्रतिष्ठा।

संभावित—मुमकिन।

संभाव्य—संभव, होने योग्य।

संभाष, संभाषण—पु० बातचीत।

संभाष्य—बातचीत करने योग्य।

संभूत—एक साथ उत्पन्न, उत्पन्न,

सहित। [मात, मेल।
संभूति—स्त्री० उत्पत्ति, बढ़ती, करा-
संभूय—साझे में। [कारबार।
संभूय समुत्थान—पु० साझे का
संभोग—पु० सुखपूर्वक व्यवहार, रतिक्रीड़ा, संयोग श्रृंगार। [आदर।
संभ्रम—पु० घबराहट, सिटपिटाना,
संभ्रांत—घबराया हुआ, प्रतिष्ठित, तेजस्वी।
संमत—अनुमत, सहमत।
संयत—बँधा हुआ, दबाव में रखा हुआ, वशीभूत, बंद किया हुआ, क्रमबद्ध, निग्रही, उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।
संयतात्मा—जितेन्द्रिय।
संयम—पु० रोक, इंद्रियनिग्रह, परहेज, बंधन, बंद करना।
संयुक्त, संयुत—लगा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध, सहित।
संयोग—पु० मेल, मिलाप, संबंध, मैथुन, विवाह संबंध, जोड़। मु० संयोग से=इत्तफाक से।
संयोगी—संयोग करनेवाला, वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो।
संयोजक—पु० मिलानेवाला, व्याकरण में दो शब्दों या वाक्यों को मिलानेवाला शब्द। [की क्रिया।
संयोजन—पु० जोड़ने या मिलाने
संरंभ—पु० आरंभ, लालसा, आवेग।

संरक्त—प्रेममग्न, क्रोध से लाल।
संरक्ष—पु० सहायता।
संरक्षक—पु० रक्षक, पालन पोषण करनेवाला, आश्रय देनेवाला।
संरक्षण—पु० हिफाजत, निगरानी, अधिकार।
संरक्षित—भली भाँति रक्षित।
संराधन—पु० आराधना, ध्यान।
संराव—पु० हलचल, हल्ला।
संरुद्ध—घेरा हुआ।
संरोधन—पु० बाधा डालना।
संलग्न—सटा हुआ, संबद्ध।
संलाप—पु० बातचीत।
संलिप्त—भली भाँति लिप्त।
संवत्, संवत्सर—पु० साल, सन्, विक्रमी संवत्।
संवरण—पु० हटाना, बंद करना, आच्छादित करना, छिपाना, निग्रह, चुनना, कन्या का पति चुनना।
संवर्त—पु० लपेट, चक्कर, प्रलय, गोला, एक मेघ।
संवल—पु० राह-खर्च, संखिया।
संवलित—भिड़ा हुआ, सहित।
संवाद—पु० बातचीत, खबर, चर्चा, मामला।
संवाददाता—पु० अखबार का रिपोर्टर। [से रखना, काम ठीक करना।
सँवारना—सजाना, ठीक करना, क्रम
संवाहन—पु० ढोना, ले जाना,

चलाना।
संविद्—स्त्री० ज्ञानशक्ति, चेतना, बोध, बुद्धि, अनुभूति, संकेत-स्थल, वृत्तांत, नाम, युद्ध, संपत्ति।
संवृत्त—आया हुआ, उत्पन्न, घटित।
संवेद—पु० अनुभव, बोध।
संशय—पु० संदेह, डर।
संशयात्मा—शक्की, संदेह करनेवाला।
संशोधक—सुधारनेवाला।
संशोधन—पु० शुद्ध करना, दुरुस्त करना, चुकता करना।
संश्रय—पु० मेल, संबंध, शरण, सहारा, मकान।
संश्रित—अधीन, आश्रित।
संश्लिष्ट—सम्मिलित, आलिंगित।
संश्लेषण—मिलाना, अटकाना।
संस—पु० आशंका।
संसक्त—लिप्त, प्रवृत्त।
संसक्ति—स्त्री० लगाव, प्रवृत्ति।
संसरण—पु० चलना, संसार, सड़क। [मैथुन।
संसर्ग—पु० संबंध, साथ, मिलाप,
संसार—पु० लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता रहना, बार बार जन्म लेने की परंपरा, दुनिया, इहलोक, गृहस्थी।
संसारी—संसार संबंधी, लौकिक, संसार में रहनेवाला, लोक व्यवहार में कुशल, दुनियादार।

संसिद्धि—स्त्री० कार्य की सफलता।
संसृति—स्त्री० संसार, बार बार जन्म लेने की परंपरा, संसारी दुःख।
संसृष्ट—मिश्रित, संबद्ध, शामिल।
संसृष्टि—स्त्री० एक साथ उत्पत्ति, मिश्रण, संबंध, घनिष्ठता, संग्रह।
संस्करण—पु० संस्कार करना, सुधारना, दुरुस्त करना, पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति।
संस्कार—पु० सुधार, परिष्कार, पिछले जन्म की बातों का असर, शिक्षा और संगति आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव, धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना, मृतक की क्रिया, सजाना, जन्म से लेकर मृत्यु तक का सोलह कृत्य—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंत, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्ण, कर्णबेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्द्ध-देहिक।
संस्कारी—संस्कारवाला।
संस्कार्य्य—संस्कार करने योग्य।
संस्कृत—संस्कार या शुद्ध किया हुआ, परिष्कृत, साफ किया हुआ, सुधारा हुआ, सजाया हुआ। स्त्री० देववाणी। [सजावट, सभ्यता।
संस्कृति—स्त्री० संस्कार, शुद्धि,
संस्थ—पु० स्वदेशवासी, दूत।

संस्था-स्त्री० स्थिति, व्यवस्था, जत्था, संघटित समुदाय, सभा ।

संस्थान—पु० ठहराव, डटा रहना, स्थापन, अस्तित्व, घर, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, समष्टि, नाश ।

संस्थापक—पु० स्थापन करनेवाला।

संस्थापन—पु० कायम करना, स्थापित करना, खड़ा करना ।

संस्पर्श—पु० छू जाना ।

संस्मरण—पु० पूर्ण स्मरण ।

संस्मरणीय—याद करने योग्य ।

संस्मारक—याद दिलानेवाला, यादगार ।

संस्रव,संस्राव—पु० बहाव ।

संहत-खूब मिला हुआ, संयुक्त, कड़ा, घना, मजबूत, एकत्र ।

संहति—स्त्री० मिलाव, जुटाव, ढेर, समूह, ठोसपन, जोड़ ।

संहर्त्ता—नाश करनेवाला ।

संहार—पु० नाश, अंत, निवारण, (केशों को) गूँथना, बटोरना, छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना ।

संहारक—संहार करनेवाला, नाशक ।

संहित—मिलाया हुआ, जुड़ा हुआ ।

संहिता-स्त्री० मिलावट, संधि, ऋषिप्रणीत ग्रंथ ।

संहृत—समेटा हुआ ।

संहृति—स्त्री० संग्रह, नाश, समाप्ति ।

संहृष्ट—आनंदित ।

संह्लाद—पु० हल्ला ।

सक—पु० धाक, शक्ति ।

सकट—पु० गाड़ी ।

सकपकाना—आश्चर्ययुक्त होना, हिचकना, लज्जित होना, हिलना डोलना, लज्जा या शंका के कारण उत्पन्न एक प्रकार की चेष्टा ।

सकपकाहट—स्त्री० संकोच ।

सकरुण—दयावान ।

सकर्मक-कर्मवाला, कर्म करनेवाला

सकल—सब, कुल ।

सकलाधार—पु० परमेश्वर ।

सकाना—शंका करना, हिचकना, दुखी होना ।

सकाम—कामी, संतुष्ट ।

सकारना—मंजूर करना ।

सकारे—सबेरे ।

सकील—जो जल्द हजम न हो ।

सकुचाना—संकोच करना, सिकोड़ना, लज्जित करना ।

सकुचौहाँ—लजीला ।

सकुन—पु० पक्षी ।

सकूनत—स्त्री० निवास-स्थान ।

सकृत्—सदा, एकबार, साथ ।

सकेत—पु० दे० "संकेत" ।

सकेतना—सिकुड़ना ।

सकेलना—जमा करना ।

सकोचना—सिकोड़ना ।

सकोरा—पु० मिट्टी का प्याला ।

सक्का—पु० भिश्ती ।

सक्थि—पु० जांघ ।

सक्र—पु० इंद्र ।

सक्रिय—क्रियाशील ।

सक्षम—समर्थ, योग्य ।

सखा—पु० साथी, मित्र, सहचर ।

सखावत-स्त्री० दानशीलता, उदारता ।

सखी—स्त्री० संगिनी, सहेली । पु० दानी, दाता, दानशील । [कविता ।

सखुन—पु० बातचीत, कथन, कौल,

सखुनचीन—चुगलखोर ।

सखुनचीनी—स्त्री० चुगलखोरी ।

सखुनतकिया—पु० वह शब्द या वाक्यांश जो बोलते समय कुछ लोगों के मुँह से बार बार निकलता रहता है ।

सखुनदाँ—काव्य का रसिक ।

सखुनदानी—स्त्री० काव्य रसिकता, बातचीत की समझदारी ।

सखुन परबर—वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो ।

सखुन शनास—वह जो सखुन या काव्य अच्छी तरह समझता हो ।

सखुनसाज—पु० कवि, शायर, अपने मन से झूठी बातें बनाकर कहनेवाला । [गढ़ने का गुण ।

सखुनसाजी—स्त्री० झूठी बातें

सख्य—पु० सखापन, दोस्ती, वह भाव जिसमें ईश्वरावतार को भक्त अपना सखा मानता है ।

सग—पु० कुत्ता ।

सगज़ुबान—पु० वह घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते के समान पतली और लंबी हो । [तेजी से ।

सगबग—सराबोर, द्रवित, परिपूर्ण ।

सगबगाना—लथपथ होना, सकपकाना ।

सगा—सहोदर, अपने ही कुल का ।

सगाई—स्त्री० संबंध, विवाह संबंधी निश्चय ।

सगाही—सगाई की हुई (स्त्री) ।

सगुण—पु० साकार ब्रह्म ।

सगुन—पु० दे० "शकुन", सगुण ।

सगोती—पु० सगोत्र, भाईबंधु ।

सगोत्र—पु० एक गोत्र के लोग, कुल ।

सघन—घना, ठोस ।

सच—सत्य, ठीक ।

सचमुच—वास्तव में, अवश्य ।

सचराचर—पु० सभी चर और अचर वस्तुएँ ।

सचाई—स्त्री० सत्यता ।

सचान—पु० बाज ।

सचिक्कण-पु० बहुत अधिक चिकना ।

सचित्र—चित्रयुक्त ।

सचिव—पु० मित्र, मंत्री, सहायक ।

सचु—पु० सुख, खुशी ।

सचेत, सचेतन—सावधान, चेतनायुक्त, समझदार । पु० चेतन ।

सचेष्ट–जिसमें चेष्टा हो, जो चेष्टा करे।

सच्चरित्र—नेक चालचलनवाला।

सच्चा—सत्यवादी, यथार्थ, असली, बिलकुल ठीक।

सच्चिदानंद—पु० सत् चित् और आनंद से युक्त परमात्मा।

सजग—सावधान।

सजधज—स्त्री० सजावट।

सजन—पु० सज्जन, पति, प्रियतम।

सजना–सज्जित करना, शोभा देना।

सजल—जल से युक्त, आँसुओं से पूर्ण। [दंड।

सजा—स्त्री० दंड, जेल में रखने का

सजातीय—एक जाति या गोत्र का।

सजाना—वस्तुओं को यथास्थान रखना, सँवारना, शृंगार करना।

सजावार—दंडनीय।

सजायाफ्ता—पु० वह जो कैद की सजा भोग चुका हो, दंडित।

सजायाब—दंडनीय।

सजावल–पु० तहसीलदार, सिपाही।

सजीला—सजासजाया, सुंदर।

सजीव—जिसमें प्राण हो, फुरतीला, ओज से भरा हुआ।

सज्जन—पु० भला आदमी, प्रियतम।

सज्जनता—स्त्री० भलमनसाहत, सौजन्य। [आदि की गद्दी।

सज्जादा—जानमाज, आसन, फकीरों

सज्जादानशीन—पु० मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।

सज्जित—सजा हुआ। [धान।

सज्ञान—ज्ञान युक्त, बुद्धिमान्, साव-

सटक—स्त्री० धीरे से चंपत होना, लम्बा लचीला नैचा, लचनेवाली पतली छड़ी। [चल देना, कूटना।

सटकना—धीरे से खिसक जाना,

सटकारना—छड़ी से मारना।

सटपटाना—दब जाना, स्तब्ध हो जाना, सकुचाना।

सटीक—व्याख्या सहित।

सट्टा—इकरारनामा।

सट्टाबट्टा—पु० हेलमेल, चालबाजी।

सठियाना—साठ बरस का होना, वृद्धावस्था के कारण बुद्धि और विवेक का मंद पड़ना।

सड़क—स्त्री० चौड़ा रास्ता।

सड़किया—पु० सड़क ठीक करने-वाला, ठीकेदार। [रद्दी।

सड़ियल—सड़ा हुआ, गला हुआ,

सत—दे० "सत्"। पु० सभ्यतापूर्ण धर्म, मूलतत्त्व, जीवनी शक्ति।

सतगुरु—पु० अच्छा गुरु, परमेश्वर।

सतत—सदा, हमेशा।

सतर—स्त्री० टेढ़ा, क्रुद्ध। स्त्री० लकीर, पंक्ति, ओट।

सतरौहाँ—क्रोधयुक्त, क्रोधसूचक।

सतर्क—तर्कयुक्त, सावधान।

सतर्ष—प्यासा।

सतवंती--सती ।
सतसई—स्त्री० वह ग्रन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों । [भाग, तल ।
सतह—स्त्री० किसी वस्तु का ऊपरी
सताना--दुःख देना ।
सती—स्त्री० पतिव्रता स्त्री, पति के शव के साथ जलनेवाली स्त्री ।
सतीत्व—पु० पातिव्रत । [बलात्कार ।
सतीत्वहरण—पु० पर स्त्री के साथ
सत्—सत्य, सज्जन, धीर, स्थायी, विद्वान, शुद्ध, श्रेष्ठ । पु० ब्रह्म ।
सत्कर्म—पु० अच्छा काम, पुण्य ।
सत्कार—पु० आदर ।
सत्त—पु० किसी पदार्थ का सार भाग, रस, तत्त्व, काम की वस्तु ।
सत्तम—उत्तम । [कार ।
सत्ता—स्त्री० अस्तित्व, शक्ति, अधि-
सत्ताधारी--पु० अधिकारवाला व्यक्ति । [ग्रंथ ।
सत्पथ—पु० श्रेष्ठ मार्ग, एक ब्राह्मण
सत्पात्र—पु० दान आदि देने योग्य उत्तम व्यक्ति, श्रेष्ठ और सदाचारी ।
सत्पुरुष—पु० भला आदमी ।
सत्फल—पु० अनार । [युग, लोक ।
सत्य—ठीक, यथार्थ, असल । पु० ठीक बात, उचित पक्ष, विष्णु, एक
सत्यकाम—पु० सत्य का प्रेमी ।
सत्यनारायण—पु० विष्णु । [युग ।
सत्ययुग—पु० चार युगों में पहला

सत्यसंध—सत्यप्रतिज्ञ । पु० श्री रामचंद्र । [रहनेवाला ।
सत्यसंकल्प—प्रतिज्ञा में अटल
सत्या—स्त्री० शक्ति, बल ।
सत्याग्रह—पु० किसी सत्य या न्याय-पूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शांति-पूर्वक निरंतर हठ करना ।
सत्यानाश—पु० सर्वनाश ।
सत्र—पु० यज्ञ, घर, धन, सदावर्त ।
सत्व—पु० अस्तित्व, तत्त्व, चित्त की प्रवृत्ति, चैतन्य, प्राण ।
सत्वर—शीघ्र, तुरंत ।
सत्संग—पु० भली संगत ।
सदका—पु० खैरात, निछावर ।
सदवर्ग—पु० एक फूल, हजारा गेंदा ।
सदन—पु० घर, विराम ।
सदमा—पु० आघात, दुःख ।
सदय—दयालु ।
सदर—प्रधान । पु० केंद्रस्थल ।
सदरआला—पु० छोटा जज ।
सदरनशीन—पु० किसी सभा का सभापति ।
सदरी—स्त्री० बिना आस्तीन की कुरती, सीनाबंद ।
सदस्य—पु० सभासद, यज्ञकर्त्ता ।
सदहा—सैकड़ों ।
सदा--हमेशा, लगातार । पु० गूँज, प्रतिध्वनि, आवाज, शब्द, पुकार
सदाचरण, सदाचार--पु० अच्छा

आचरण, भलमनसाहत । [आदमी ।

सदाचारी—अच्छे चाल चलन का

सदातन—पु० विष्णु । [परमेश्वर ।

सदानंद-पु० सदा प्रसन्न रहनेवाला,

सदाफल—सदा फलनेवाला । पु० गूलर, बेल, नारियल ।

सदावर्त—पु० नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना, बाँटा जानेवाला भोजन । [हरा रहे ।

सदाबहार—जो सदा फूले, जो सदा

सदाशय—पु० सज्जन, भलामानस ।

सदाशिव—पु० महादेव ।

सदासुहागिन—स्त्री० वेश्या (विनोद) ।

सदी—स्त्री० सैकड़ा, शताब्दी ।

सदुपदेश—पु० अच्छा उपदेश ।

सदृश—समान ।

सदेह—देहयुक्त, मूर्तिमान ।

सदैव--हमेशा ।

सद्गति—स्त्री० मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति ।

सद्गुण-पु०अच्छा गुण । [शिक्षक ।

सद्गुरु—पु० अच्छा गुरु, धर्म-

सद्भाव—पु० अच्छा भाव मेलजोल, मैत्री । [अकाश ।

सद्मः—पु० घर, युद्ध, पृथ्वी और

सद्य, सद्यः—आज ही, अभी, शीघ्र ।

सद्वृत्ति—स्त्री० उत्तम व्यवहार, सच्चरित्रता ।

सधना—पूरा होना, काम होना, मतलब निकलना ।

सधवा--स्त्री० सुहागिन ।

सधोरा—पु० गर्भिणी के खाने योग्य पौष्टिक पदार्थ ।

सन्—पु० वर्ष, संवत् । [पौधा ।

सन--स्तब्ध, मौन, से । पु० एक

सनक—स्त्री० धुन, खब्त ।

सनकना--पागल होना ।

सनत्—पु० ब्रह्मा ।

सनद—स्त्री० प्रमाण, प्रमाणपत्र ।

सनदयाफ्ता—जिसे सनद मिली हो

सनम—प्यारा प्रियतम ।

सनसनाहट—पु० हवा बहने का शब्द, हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द, खौलते हुए पानी का शब्द, सनसनी । [घबड़ाहट ।

सनसनी—स्त्री० झुनझुनी, स्तब्धता,

सनहकी--स्त्री० मिट्टी का एक बरतन जिसे मुसलमान लोग काम में लाते हैं । [परंपरा, ब्रह्मा, विष्णु ।

सनातन—अत्यंत प्राचीन, परंपरागत, शाश्वत । पु० प्राचीन काल, प्राचीन

सनातनधर्म--पु० प्राचीन धर्म, परंपरागत धर्म, जनता में प्रचलित हिन्दू धर्म ।

सनातन पुरुष—पु० विष्णु ।

सनातनी—पु० सनातन धर्म का अनुयायी ।

सनाथ—जिसकी रक्षा करनेवाला कोई हो।
सनाह—पु० कवच।
सनीड़—निकटवर्ती, पड़ोस में।
सन्न—स्तब्ध, भौचक, डर से चुप।
सन्नद्ध—बँधा हुआ, तैयार, लगा हुआ। [उदासी।
सन्नाटा—नीरव, निर्जन। पु० नीरवता, निर्जनता, स्तब्धता, चुप्पी,
सन्नाह—पु० कवच।
सन्निकट—समीप।
सन्निकर्ष—पु० समीपता, संबंध।
सन्निधान—पु० निकटता स्थापित करना।
सन्निधि—स्त्री० समीपता।
सन्निपात-पु० एक ही साथ गिरना, संयोग, इकट्ठा होना, त्रिदोष।
सन्निभ—मिलता जुलता।
सन्निविष्ट—एक साथ बैठा हुआ, रखा हुआ, स्थापित, समीप का।
सन्निवेश—पु० एक साथ बैठना, स्थित होना, रखना, लगाना, समाना, घर, एकत्र होना, समूह, गठन। [समीपस्थ, ठहराया हुआ।
सन्निहित—एक साथ रखा हुआ,
सपक्ष—तरफदार, समर्थक।
सपत्र—पत्रयुक्त। पु० सपथ।
सपत्नी—स्त्री० सौतिन, सौत।
सपत्नीक—पत्नी सहित।
सपदि—शीघ्र, तुरंत।
सपना—पु० वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखायी पड़े।
सपरदाई—पु० तवायफ के साथ तबला आदि बजानेवाला।
सपरना—समाप्त होना, हो सकना।
सपाट—समतल, बराबर। [गति।
सपाटा—पु० दौड़ने का बेग, तीव्र
सपाद—चरण सहित, सवाया।
सपिंड—पु० एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो।
सपिंडी—स्त्री० मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।
सपूत—पु० अच्छा पुत्र।
सपोला—पु० साँप का छोटा बच्चा।
सप्त—सात।
सप्तक—पु० सात वस्तुओं का समूह।
सप्तद्वीप—पु० पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े मुख्य विभाग—जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक, और पुष्कर द्वीप।
सप्तपदी—स्त्री० विवाह में वर वधू का अग्नि के चारो ओर सात परिक्रमाएँ करना, भाँवर।
सप्तपाताल—पु० सात पाताल—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, पाताल।

सप्तम—सातवाँ ।

सप्तमी—सातवीं । स्त्री० सातवीं तिथि, व्याकरण में अधिकरण कारक ।

सप्तर्षि—पु० सात ऋषि, कश्यप, अत्रि भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वशिष्ठ, ध्रुव के चारो ओर फिरनेवाले सात तारे ।

सप्तशती—स्त्री० सतसई ।

सप्तसागर—पु० सात समुद्रः—लवण, इक्षु, दधि, मधु, मदिरा, घृत ।

सप्तस्वर—पु० सात स्वरः—षड्ज, गांधार, ऋषभ, निषद, मध्यम, धैवत, पंचम ।

सप्ताह—पु० सात दिनों का समय ।

सप्लाई—स्त्री० पहुँचाना ।

सप्लायर—पु० किसी को चीजें देने या पहुँचाने का काम करनेवाला ।

सप्लिमेंट—अतिरिक्त वस्तु, क्रोड़पत्र ।

सफ—स्त्री० पंक्ति, कतार ।

सफर—पु० यात्रा, रास्ते में चलने का समय या दशा ।

सफरा—पु० पित्त, भूसा आदि ढोने के लिये बड़ा बोरा ।

सफरी—सफर में का, सफर में काम आनेवाल । पु० राहखर्च, अमरूद ।

सफल—फलयुक्त, सार्थक, कामयाब ।

सफलीभूत—जो सफल हुआ हो ।

सफहा—पु० पन्ना, पृष्ठ ।

सफा—साफ, पवित्र, चिकना ।

सफाई—स्त्री० स्वच्छता, मैल या कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया, स्पष्टता निर्दोष, निर्णय ।

सफाचट—बिलकुल साफ ।

सफीना—पु० सम्मन, इत्तलानामा ।

सफीर—स्त्री० चिड़ियों की आवाज ।

सफील—स्त्री० शहरपनाह ।

सफूफ—पु० चूर्ण, बुकनी, फक्की ।

सफेद—उजला, सादा ।

सफेदपोश—पु० साफ कपड़ा पहननेवाला, भलामानस ।

सफेदा—पु० जस्ते का चूर्ण या भस्म ।

सफेदी—स्त्री० उजलापन, चूने की पोताई । [अप्रधान ।

सब—कुल, सारा, छोटा, गौण,

सबक—पु० पाठ, शिक्षा ।

सबकत—स्त्री० विशेषता प्राप्त करना ।

सबजज—पु० छोटा जज ।

सबब—पु० कारण, साधन ।

सबल—बलवान ।

सबसिडियरी जेल—पु० हवालात ।

सबा—स्त्री० वह हवा जो प्रातःकाल के समय चलती है ।

सबोर्डिनेट जज—पु० छोटा जज ।

सबील—स्त्री० मार्ग, उपाय, प्याऊ ।

सबू—पु० मिट्टी का घड़ा, गगरी ।

सबूत—प्रमाण ।

सब्ज—कच्चा और ताजा, हरा, [illegible] ।

मु० सब्ज बाग दिखलाना = काम

निकालने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना ।

सब्ज कदम—पु० जिसके चरण अशुभ हों, जिसके कहीं पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो । [नामक रत्न ।

सब्जा—पु० हरियाली, भाँग, पन्ना

सब्जी–स्त्री० हरियाली, हरी तरकारी, भाँग ।

सब्जेक्ट--पु० प्रजा, रैयत, विषय ।

सब्जेक्ट कमिटी—स्त्री० विषय निर्वाचिनी समिति ।

सब्र—पु० संतोष ।

सभर्तृका--स्त्री० पतियुक्ता स्त्री ।

सभा--स्त्री० परिषद्, समिति ।

सभागा—भाग्यवान्, सुंदर ।

सभापति—पु० सभा का मुखिया ।

सभासद—पु० सदस्य ।

सभीक—भययुक्त ।

सभ्य—पु० सदस्य, भला आदमी ।

सभ्यता--स्त्री० सभ्य होने का भाव, सदस्यता, भलमनसाहत, सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था ।

समंजस--उचित, ठीक ।

समंत--पु० सीमा ।

सम--समान, सब, चौरस, वह (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे ।

समकक्ष—बराबरी का, समान ।

समकालीन–जो एक ही समय में हो ।

समकोण--पु० एक सीधी रेखा पर दूसरी सीधी रेखा के लंब रूप गिरने से बननेवाला कोण ।

समक्ष--सामने ।

समग्र--कुल, सब ।

समचतुर्भुज--पु० वह चतुर्भुज जिसके चारो भुजाएँ समान हों ।

समझ--स्त्री० बुद्धि ।

समझौता—आपस का निपटारा ।

समतल—जिसकी सतह बराबर हो ।

समता—बराबरी ।

समत्रिभुज—पु० वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ समान हों ।

समदम—स्त्री० भेंट, नजर ।

समदर्शी—पु० सब को एक सा देखनेवाला ।

समदिया--पु० संवाद दे जानेवाला ।

समन्वय--पु० संयोग, मिलन, कार्यकारण का निर्वाह ।

समन्वित—मिला हुआ, संयुक्त ।

समपाद--पु० वह कविता जिसके चारों चरण समान हों ।[अंतिम काल ।

समय—पु० वक्त, अवसर, फुरसत,

समर--पु० युद्ध । [भूमि ।

समरांगण, समरोद्देश--पु० समर-

समर्थ--योग्य ।

समर्थक—समर्थन करनेवाला ।

समर्थन—पु० किसी के मत का पोषण करना, विवेचन ।

समर्थ्य--समर्थन करने योग्य।
समर्थक--समर्थन करनेवाला।
समर्पण-पु० आदरपूर्वक भेंट करना, दान देना। [हमजोली।
समवयस्क--बराबर आयुवाले,
समवर्ती--जो समान रूप से स्थित हो, जो पास में स्थित हो।
समवाय--पु० समूह, अवयव के साथ अवयव का या गुण के साथ गुण का संबंध।
समवेत--एकत्र, संचित।
सनवेदना--स्त्री० किसीके दुःख में समान रूप से साथ देना।
समष्टि--स्त्री० सब का समूह।
समस्त--सब, संयुक्त, समासयुक्त।
समस्थली--स्त्री० गंगा यमुना के बीच का देश।
समस्या--स्त्री० संघटन, मिश्रण, कठिन अवसर या प्रसंग, किसी छन्द के अन्तिम कई शब्द जिसके अनुसार उस छन्द के शेष भंश की पूर्ति की जाती है।
समस्यापूर्ति--स्त्री० किसी छंद के एक टुकड़े को लेकर पूरा छंद बनाना।
समाकुल--विशेष घबड़ाया हुआ।
समागम--पु० आगमन, भेंट, मैथुन, संभोग।
समागत--आया हुआ।
समाघात--पु० युद्ध।
समाचार--पु० खबर।
समाचारपत्र--पु० अखबार।
समाज--पु० समूह, दल, सभा, समुदाय।
समाद--पु० संवाद, समाचार।
समादर--पु० आदर।
समाधान--पु० समाधि, किसीके मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम, किसी प्रकार का विरोध दूर करना, निराकरण।
समाधि--स्त्री० समर्थन, अंगीकार, ध्यान, प्रतिज्ञा, निद्रा, योग, योग का चरम फल, किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव गाड़ने का स्थान।
समाधिस्थ--समाधि में लगा हुआ।
समान--बराबर।
समानता--स्त्री० बराबरी।
समानाधिकरण--पु० वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करता हो।
समानार्थ--पु० वे शब्द जिनका अर्थ एक ही हो, पर्य्याय। [डालना।
समापन--पु० समाप्त करना, मार
समापिका--स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।
समाप्त--जो पूरा हो गया हो।
समारंभ--पु० समारोह, अच्छी तरह आरंभ होना।

समारोह—पु० धूमधाम, ऐसा कार्य जिसमें बहुत धूमधाम हो। [वाला।
समालोचक—पु० समालोचना करने-
समालोचना—स्त्री० किसी पदार्थ के गुण दोष का विचार, खूब देख-भाल करना।
समावर्तन—पु० लौटना, विद्याध्यन समाप्त कर गुरुकुल से घर लौटते समय का संस्कार।
समाविष्ट—समाया हुआ।
समावेश—पु० एक साथ रहना, प्रवेश, मनोनिवेश।
समास—पु० संक्षेप, समर्थन, संग्रह, सम्मिलन, व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिल कर एक होना। [समूह, मिलना।
समाहरण, समाहार—पु० संग्रह,
समिति—स्त्री० सभा।
समिध—पु० अग्नि। [लकड़ी।
समिधा—स्त्री० हवन या यज्ञ की
समिधि—स्त्री० अग्नि।
समीकरण—पु० बराबर करना, गणित में एक क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगता है।
समीक्षा—स्त्री० अच्छी तरह देखना, समालोचना, बुद्धि, कोशिश, मीमांसा शास्त्र।
समीचीन—यथार्थ, उचित।
समीप—पास।
समीपवर्ती—पास का।
समीपस्थ—जो पास में हो, पास का।
समीर—पु० वायु, प्राणवायु।
समीरण—पु० हवा, गंध, बटोही।
समुचित—उचित, उपयुक्त।
समुच्चय—पु० मिलन, समूह।
समुच्छेद—पु० जड़ से उखाड़ना।
समुज्ज्वल—खूब उजला या चमकता हुआ। [आरंभ।
समुत्थान—पु० उन्नति, उत्पत्ति,
समुदाय—पु० समूह, झुण्ड।
समुद्भव—पु० उत्पत्ति।
समुद्यत—बिलकुल तैयार रहनेवाला।
समुद्र—पु० वह जलराशि जो पृथ्वी को चारो ओर से घेरे हुए है, किसी विषय का बहुत बड़ा आगार।
समुद्रयान—पु० जहाज।
समुद्वाह—पु० विवाह। [हुई हो।
समुन्नत—जिसकी यथेष्ट उन्नति
समुन्नति—स्त्री० अच्छी उन्नति।
समुपस्थित—मौजूद।
समुल्लास—पु० आनंद, परिच्छेद।
समूल—जड़ सहित, कारण सहित।
समूह—पु० ढेर, झुंड।
समृद्ध—संपन्न, धनी।
समृद्धि—स्त्री० संपन्नता।
समेटना—बटोरना।
समेत—साथ, संयुक्त।

समोह—पु० युद्ध, लड़ाई।
सम्मत—सहमत। [अभिप्राय।
सम्मति-स्त्री० सलाह, आदेश,
सम्मद्—हर्षयुक्त। पु० हर्ष।
सम्मन—पु० अदालत में हाजिर होने का हुक्मनामा।
सम्माद्—पु० उन्माद।
सम्मान—पु० प्रतिष्ठा।
सम्मिलित-मिला हुआ। [मिलावट।
सम्मिश्रण—पु० मिलने की क्रिया,
सम्मुख—सामने।
सम्मूढ़—अज्ञान।
सम्मेलन-पु० सभा, जमघट, मिलाप।
सम्मोह—पु० मोह, संदेह, मूर्छा।
सम्मोहन—पु० मोहित करना, मोह उत्पन्न करनेवाला, कामदेव का एक बाण, शत्रु को मोहित करने का एक प्राचीन अस्त्र। [तरह।
सम्यक्—पूरा, सब प्रकार से, अच्छी
सम्राज्ञी—स्त्री० सम्राट् की पत्नी।
सम्राट्—पु० शहंशाह। [चालाक।
सयाना—पु० वयस्क, होशियार,
सर—दमन किया हुआ, जीता हुआ। पु० ताल, चिता, सिर, चोटी।
सरअंजाम—पु० सामग्री। [चलना।
सरकना—खिसकना, टलना, काम
सरकश—उद्दण्ड, उद्धत, शरारती।
सरकशी—स्त्री० उद्दण्डता, शरारत।
सरकार—स्त्री० मालिक, राज्यसंस्था, रियासत।
सरकारी—सरकार का, राजकीय।
सरखत—पु० मकान आदि किराये पर देने का दस्तावेज।
सरगना—पु० सरदार।
सरगम—पु० स्वरग्राम, संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम।
सरगर्म—पु० जोशीला, उत्साही।
सरगर्मी-स्त्री० जोश, आवेश, उमंग।
सरघा—पु० मधुमक्खी।
सरजा—पु० सरदार, सिंह।
सरजोर—जबरदस्त, उद्दंड।
सरजोरी—स्त्री० जबरदस्ती।
सरणी—स्त्री० पगडंडी, मार्ग, ढर्रा, लकीर।
सरदर—एक सिरे से, औसत में।
सरदार—पु० अगुआ, श्रेष्ठ व्यक्ति, शासक, रईस।
सरदारी—स्त्री० सरदार का पद।
सरनदीप—पु० सिंहल द्वीप।
सरना—सरकना, हिलना, काम चलना, किया जाना।
सरनाम—प्रसिद्ध, मशहूर।
सरनामा-पु० शीर्षक, पत्र का आरंभ या संबोधन, पत्र पर लिखा जानेवाला पता।
सरपंच—पु० पंचायत का सभापति।
सरपट—घोड़े की बहुत तेज दौड़।
सरपरस्त—पु० संरक्षक।

सरपरस्ती—स्त्री० संरक्षा।
सरपेंच—पु० पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।
सरपोश--पु० थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।
सरफ़राज--महत्वप्राप्त, धन्य।
सरबराह--पु० इन्तजाम करनेवाला, कारिंदा। [माल असबाब की निगरानी।
सरबराही—स्त्री० प्रबंध, इंतजाम,
सरल—सीधा, निष्कपट, सहज।
सरलता-स्त्री० सीधापन, निष्कपटता, आसानी, सुगमता, सादगी, भोलापन।
सरवर—पु० सरोवर, सुन्दर तालाब।
सरवरि—स्त्री० बराबरी।
सरविस - स्त्री० नौकरी।
सरवेंट—पु० नौकर, कर्मचारी।
सरस—रसयुक्त, गीला, हरा, सुंदर, मधुर, भावपूर्ण, उत्तम, रसिक।
सरसना—हरा होना, बढ़ना, शोभित होना, रसपूर्ण होना, भाव की उमंग से भरना।
सरसब्ज—हराभरा।
सरसर—पु० जमीन पर रेंकने का शब्द, वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। [काम चलाने भर को।
सरसरी—जल्दी में, मोटे तौर पर,
सरसाई—शोभा, अधिकता।
सरसाम—पु० सन्निपात।
सरसिज—पु० कमल।
सरसिरुह—पु० कमल।
सरसी-स्त्री० छोटा सरोवर, बावली।
सरसीरुह—पु० कमल।
सरस्वती—स्त्री० शारदा, विद्या, ब्राह्मी बूटी, सोम लता।
सरहद—स्त्री० सीमा।
सरहदी—सीमा संबंधी, सीमा का।
सराना—कार्य संपादित करना, कराना।
सरापना--शाप देना।
सराफ-पु० सोने चाँदी का व्यापारी।
सराफा—पु० रुपये पैसे या सोने चाँदी के लेनदेन का काम, सराफों का बाजार, बंक। [महाजनी।
सराफी—स्त्री० सराफ़ का काम,
सराबोर—बिलकुल भीगा हुआ।
सराय—स्त्री० घर, मुसाफिरखाना।
सरावगी—पु० जैन, जैन धर्म माननेवाला।
सरासर—एक सिरे से दूसरे सिरे तक, बिलकुल, पूर्णतया, प्रत्यक्ष।
सरासरी—जल्दी में, मोटे तौर पर। स्त्री० आसानी, जल्दी, मोटा अंदाज।
सराहना—प्रशंसा करना। स्त्री० प्रशंसा, तारीफ, बड़ाई।
सराहनीय—प्रशंसा के योग्य।
सरि—समान। स्त्री० बराबरी, नदी।
सरित्, सरिता—स्त्री० नदी।
सरित्पति—पु० समुद्र।
सरिश्ता—पु० कचहरी, दफ्तर।

सरिश्तेदार--पु० किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी, अदालत में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी—स्त्री० सरिश्तेदार का काम या पद।

सरिस, सरीखा--समान।

सरुज—रोगी।

सरुष—क्रोध से भरा हुआ।

सरूप—आकारवाला, समान, सुन्दर। पु० दे० "स्वरूप"।

सरेआम--सब के सामने।

सरेदस्त—अभी, इस समय के लिये, फिलहाल। [सामने।

सरेबाजार—बाजार में, सब के

सरेस—पु० एक लसदार वस्तु।

सरोकार—पु० लगाव, संबंध।

सरोज--पु० कमल।

सरोजिनी—स्त्री० कमल, कमलों का समूह, कमलों से भरा ताल। [बाजा।

सरोद—पु० बीन की तरह का एक

सरोरुह--पु० कमल।

सरोवर—पु० तालाब, झील।

सरोसामान--पु० सामग्री।

सर्कस--पु० पशुओं और नटों का खेल तमाशा।

सर्का--पु० चोरी।

सर्कार--स्त्री० दे० "सरकार"

सर्क्युलर--पु० गश्ती, चिट्ठी, सरकारी आज्ञापत्र।

स्वर्ग--पु० गमन, गति, संसार, प्रवाह, छोड़ना, उद्गम, प्राणी, संतान, स्वभाव, अध्याय।

सर्जेंट--पु० हवलदार, पुलिस के सिपाहियों का जमादार।

सर्ज--स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा।

सर्जन--पु० छोड़ना, निकलना, सृष्टि।

सर्जरी--स्त्री० चीरफाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या।

सर्टिफिकेट—पु० प्रमाणपत्र, सनद।

सर्द--ठण्ढा, सुस्त, मंद, नपुंसक।

सर्दमिजाज--मुर्दादिल, बेमुरौवत, रूखा।

सर्दी—स्त्री० ठण्ढ, जाड़ा, जुकाम।

सर्प—पु० रेंगना, साँप।

सर्पिणी—स्त्री० साँपिन।

सर्फ—खर्च किया हुआ।

सर्फा—पु० खर्च, व्यय।

सर्राफ—पु० दे० "सराफ"।

सर्व—सब। पु० शिव, विष्णु, पारा।

सर्वकाम--पु० सब इच्छाएँ रखनेवाला, सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला, शिव।

स्वर्ग, सर्वगत—व्यापक।

सर्वग्रास--पु० सूर्य्य या चंद्र का पूर्ण ग्रहण।

सर्वज्ञ--सब कुछ जाननेवाला। पु०

ईश्वर, देवता, बुद्ध, शिव ।

सर्वजनीन-सार्वजनिक, संसार व्यापी।

सर्वतः—सब ओर, सब प्रकार से ।

सर्वतोभद्र—सब ओर से मंगल, जिसके सिर और दाढ़ी मूँछ सब मुड़े हों। पु० वह चौखुटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों, एक प्रकार की पहेली, विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव—अच्छी तरह ।

सर्वतोमुख--जिसका मुँह चारों ओर हो, जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो, व्यापक ।

सर्वत्र--सब जगह ।

सर्वथा--सब तरह से, सब।

सर्वदा—सदा, हमेशा ।

सर्वनाम—पु० व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त हो।

सर्वनाश--पु० पूरी बरबादी ।

सर्वमंगला--स्त्री० दुर्गा, लक्ष्मी ।

सर्वव्यापक--सब में रहनेवाला, ईश्वर।

सर्वशः--समूचा, पूर्ण रूप से ।

सर्वश्रेष्ठ--सब से श्रेष्ठ ।

सर्वसाधारण—पु० जनता ।

सर्वसामान्य—मामूली ।

सर्वस्व—पु० सब कुछ ।

सर्वहर—पु० सब कुछ हरनेवाला, शिव, काल, यमराज। [परमात्मा।

सर्वात्मा—पु० सारे विश्व की आत्मा,

सर्वे—पु० भूमि की नाप, पैमाइश, वह सरकारी विभाग जो भूमि को नाप कर उसका नक्शा बनाता है।

सर्वेश, सर्वेश्वर—पु० सब का स्वामी, ईश्वर, चक्रवर्ती राजा ।

सलतनत—स्त्री० राज्य साम्राज्य, इन्तजाम, सुभीता ।

सलना—छिदना, छेद में डाला जाना।

सलमा—पु० सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेलबूटे के काम में आता है ।

सलाई—० स्त्री पतला छोटा छड़, दियासलाई ।

सलाख—स्त्री० सलाका, सलाई।

सलाद—पु० अंगरेजी ढंग का बना मूली प्याज आदि के पत्तों का आचार ।

सलाम—पु० प्रणाम, बंदगी ।

सलामत-रक्षित, जीवित और स्वस्थ, कायम । खैरियत से ।

सलामती—स्त्री० तंदुरुस्ती, कुशल ।

सलामी—स्त्री० सलाम करना, सैनिकों की सलाम करने की प्रणाली, माननीय व्यक्ति के आनेपर तोपों का दगना ।

सलाह—स्त्री० परामर्श ।

सलाहकार-पु० परामर्श देनेवाला।

सलिल—पु० जल ।

सलिलपति—पु० वरुण, समुद्र ।
सलीका—पु० ढंग, तमीज, हुनर, तहजीब । [मोटा कपड़ा ।
सलीता—पु० एक प्रकार का बहुत
सलीस—सहज, आसान, मुहावरे की (भाषा) ।
सलूक—बरताव, मेल, भलाई ।
सलोना—नमकीन, सुंदर ।
सलौनी—स्त्री० सावन की पूर्णिमा ।
सवन—पु० प्रसव, यज्ञस्नान, यज्ञ, चंद्रमा, अग्नि ।
सवर–पु० पानी, शिव ।[जाति का ।
सवर्ण—समान, समान वर्ण या
सवा—स्त्री० चौथाई भाग ।
सवाई—स्त्री० ऋण का एक प्रकार, सवा, जयपुर के। महाराजाओं की एक उपाधि ।
सवाब—पु० पुण्य, भलाई ।
सवार—पु० वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो, अश्वारोही, अश्वरोही सैनिक ।
सवारी—स्त्री० घोड़े आदि पर चढ़ने की क्रिया, चढ़ने की चीज, जलूस ।
सवाल—पु० प्रश्न, माँग, प्रार्थना ।
सवाल जवाब–उत्तर प्रत्युत्तर, बहस तकरार, झगड़ा । [संख्या ।
सविता—पु० सूर्य, आक, बारह की
सवितासुत—पु० शनैश्चर ।
सविध—निकट ।
सविनय अवज्ञा—स्त्री० राज्य की किसी आज्ञा या कानून को नम्रतापूर्वक न मानना । [श्रेष्ठ ।
सविशेष—विशेषतायुक्त, अद्भुत,
सवेरा–पु० प्रातःकाल,सुबह, निश्चित समय के पूर्व का समय ।
सवेश—निकट । [पहाड़ा ।
सवैया—पु० एक बाट, छन्द या
सशंक—भयभीत, भयानक ।
ससुर–पु० पति या पत्नि का पिता ।
ससुराल—स्त्री० ससुर का घर ।
सस्ता—जो महँगा न हो, मामूली, घटिया । [जब चीजें सस्ती मिलतीहों ।
सस्ती—स्त्री० सस्तापन, वह समय
सस्त्रीक—पत्नी सहित ।
सस्मित—मुस्कराता हुआ ।
सस्पेंड—मुअत्तल, कुछ समय के लिये काम से हटाना । [समर्थ ।
सह—सहित, उपस्थित, सहनशील,
सहकार—पु० सुगंधित पदार्थ, आम का पेड़, सहायक, सहयोग ।
सहकारता—स्त्री० सहायता ।
सहकारी—पु० साथी, सहायक ।
सहगमन—पु० पति के शव के साथ जलना ।
सहगामिनी—स्त्री० पत्नी, सहचरी, पति के शव के साथ जलनेवाली स्त्री ।
सहगामी—पु० साथी ।

सहचर—पु० साथी, सेवक, मित्र ।
सहचार—पु० सोहबत, साथ, चलना ।
सहचारिणी—स्त्री० सखी, पत्नी ।
सहज—स्वाभाविक, साधारण, सरल, साथ उत्पन्न होनेवाला । पु० स्वभाव, सहोदर भाई ।
सहजा—स्त्री० बहन ।
सहजात—सहोदर, यमज ।
सहदानी—स्त्री० निशानी ।
सहधर्म्मचारिणी—स्त्री० पत्नी ।
सहन—पु० सहने की क्रिया, क्षमा, आँगन ।
सहनक—पु० रकाबी । [संतोषी ।
सहनशील—बरदास्त करने वाला,
सहना—बरदास्त करना, झेलना, फल भोगना, उपवास करना ।
सहपाठी—पु० वह जो साथ में पढ़ा हो ।
सहभोज—पु० साथ खाना ।
सहम—पु० डर, संकोच ।
सहमत—एक मत का ।
सहयोग—पु० साथ मिल कर काम करने का भाव, साथ, मदद ।
सहयोगी—पु० सहायक, सहयोग करनेवाला, साथी, मिलकर काम करनेवाला, समकालीन ।
सहर—पु० प्रातःकाल, जादू, टोना ।
सहरा—पु० जंगल, वन ।
सहरी—स्त्री० सफरी, मछली ।
सहल—सहज, सरल ।
सहलाना—मलना, गुदगुदाना, धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना ।
सहवास—पु० संग, मैथुन ।
सहस—पु० हजार ।
सहसा—एकाएक ।
सहस्र—पु० हजार
सहस्रकर—पु० सूर्य्य ।
सहस्रकिरण—पु० सूर्य्य ।
सहस्रचक्षु—पु० इंद्र ।
सहस्रदल—पु० कमल ।
सहस्रनेत्र—पु० इंद्र ।
सहस्रपाद—पु० सूर्य्य, विष्णु ।
सहस्ररश्मि—पु० सूर्य्य ।
सहस्रशीर्ष—पु० विष्णु ।
सहस्राक्ष—पु० इंद्र, विष्णु ।
सहाध्यायी—पु० सहपाठी ।
सहानुभूति—स्त्री० किसी को दुःखी देख कर दुःखी होना, हमदर्दी ।
सहाय—प० सहायता, आश्रय, सहायक ।
सहायक—मददगार ।
सहायता—स्त्री० मदद ।
सहायी—पु० मदद, मददगार ।
सहारा—पु० मदद, आश्रय, भरोसा, इतमीनान ।
सहिजन—पु० एक पेड़, सोहजाना ।
सहित—समेत, संग ।
सहिदानी—स्त्री० निशानी ।

सहिष्णु—सहनशील।
सही-सत्य, यथार्थ, शुद्ध, हस्ताक्षर।
सही सलामत—भलाचंगा, जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आयी हो।
सहूलियत—स्त्री० आसानी, अदब, शऊर।
सहृदय—जो दूसरे के सुख दुःख आदि समझता हो, दयालु, रसिक, सज्जन।
सहेजना—सँभालना, अच्छी तरह कह सुन कर सपुर्द करना।
सहेट, सहेत—पु० वह स्थान जहां प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करें। [या मतलब हो।
सहेतुक—जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य
सहेली—स्त्री० संगिनी, दासी।
सहोदर—सगा, अपना। पु० एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान।
सह्य—सहने योग्य।
साईं—पु० स्वामी, ईश्वर, पति।
साँकर—संकीर्ण, दुःखमय। पु० संकट। स्त्री० जंजीर। [वाला।
सांकेतिक—संकेत संबंधी, संकेत-
साँख्य—पु० एक प्रसिद्ध दर्शन।
साँग—पु० बरछी, शक्ति।
सांग—संपूर्ण। [संपूर्ण।
सांगोपांग—अंगों और उपांगों सहित,
साँच—सत्य, ठीक।
साँचला—सत्यवादी।
साँचा—पु० फरमा, ठप्पा।
साँझ—स्त्री० संध्या, शाम।
साँट—पु० छड़ी, कोड़ा।
साँठ—पु० गन्ना।
साँड़—पु० वह बैल या घोड़ा जो केवल जोड़े खिलाने के लिये पाला जाता है, मृतक की स्मृति में दागा हुआ बैल, बदचलन।
साँड़नी—स्त्री० ऊँटनी।
साँड़िया—पु० तेज चलनेवाला ऊँट, साँड़नी पर सवारी करनेवाला।
साढ़—पु० दे० "साँड़"।
सांत्वना—स्त्री० ढाढ़स।
सांध्य—संध्या का
साँप—पु० एक विषधर जंतु। मु० कलेजे पर साँप लोटना=अत्यंत दुःख होना। साँप छछूँदर की दशा =भारी असमंजस की दशा।
सांपत्तिक—आर्थिक, संपत्ति संबंधी।
सांप्रत—अभी। [संबंधी।
सांप्रदायिक—संप्रदाय का, संप्रदाय
साँभर—पु० राजपुताने का एक झील, वहाँ से निकला नमक।
सामुहे—सामने।[पु० श्री कृष्ण, पति
साँवर, साँवला—श्याम वर्ण का।
साँवा—पु० एक अन्न।
साँस—स्त्री० श्वास, फुरसत, गुंजाइश, दमा रोग।
साँसत—स्त्री० दम घुटने का सा

कष्ट, बहुत कष्ट या पीड़ा, झंझट।

साँसतघर—पु० काल कोठरी।

साँसना—दंड देना, डाँटना, दुःख देना।

साँसा—पु० साँस, जिंदगी, प्राण, शक, डर।

सांसारिक--संसार का, संसार संबंधी।

साँसी—स्त्री० दमे का रोग।

सा—समान।

साइक्लोपीडिया—पु० विश्वकोष।

साइत—स्त्री० एक घंटे का समय, पल, मुहूर्त्त।

साइन—पु० हस्ताक्षर, दस्तखत।

साइनबोर्ड—पु० वह तख्ता जिस पर किसी व्यक्ति या दूकान आदि का नाम पता लिखाकर जाकर बाहर टँगा रहता है।

साइन्स—पु० विज्ञान।

साइर—ऊपरी आमदनी।

साई—स्त्री० बयाना, पेशगी।

साईस--पु० घोड़े की खबरदारी करनेवाला नौकर।

साकट—पु० शाक्त मत का अनुयायी, वह जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो, दुष्ट।

साकांक्ष—इच्छुक, चाहभरा।

साका—पु० संवत, ख्याति, यश, कीर्ति का स्मारक, रोब, मौका।

साकार—जिसका कोई आकार हो, मूर्तिमान्, स्थूल। पु० ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना—स्त्री० मूर्तिपूजा।

साकिन--निवासी।		[माशूक।

साकी—पु० शराब पिलानेवाला,

साकेत—पु० अयोध्या।

साक्षर--शिक्षित।		[देखादेखी।

साक्षात्—सामने। साकार। पु०

साक्षात्कार—पु० मुलाकात, पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षी--पु० चश्मदीद गवाह, दर्शक। स्त्री० गवाही।

साक्ष्य—पु० गवाही।

साख—पु० गवाह, गवाही, धाक, मर्य्यादा, लेन देन का विश्वास।

साखी—पु० गवाह, वृक्ष। स्त्री० गवाही, ज्ञान संबंधी पद।

साखू—पु० शाल का पेड़।

साग--पु० शाक, भाजी, तरकारी।

सागर—पु० समुद्र, झील।

सागू—पु० एक पेड़		[साबूदाना।

सागूदाना—सागू पेड़ का दाना,

साज—पु० ठाठ बाट, सामग्री, बाजा, मेलजोल, लड़ाई का हथियार।

साजन--पु० पति, प्रेमी, ईश्वर, सज्जन।

साजबाज--पु० तैयारी, मेलजोल।

साज सामान—पु० असबाब,

ठाठ-बाट। [सपर-दाई।

साजिंदा--बाजा बजानेवाला,

साजिश—स्त्री० मेल, षड्यंत्र।

साझा—पु० हिस्सेदारी, हिस्सा, शराकत।

साझेदार—पु० हिस्सेदार।

साझेदारी—स्त्री० हिस्सेदारी।

साठा—पु० गन्ना।

साठी--स्त्री० एक प्रकार का धान।

साठसाती, साढ़साती—स्त्री० शनिग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा।

साढ़ी—स्त्री० मलाई।

साढ़ू--पु० साली का पति।

सात—पु० एक संख्या। मु० सात पाँच = चालाकी। सात समुद्र पार = बहुत दूर।

सातफेरी—स्त्री० सप्तपदी।

सात्म्य—पु० सरूपता।

सात्विक—सत्त्वगुणवाला, सत्त्वगुण से उत्पन्न, शारीरिक।

साथ—पु० सहित, संग, मेलमिलाप।

साथी—पु० संगी, दोस्त। [चटाई

साथरी—स्त्री० बिछौना, कुश की

सादगी--स्त्री० सादापन, सीधापन।

सादा—बिना मिलावट का, जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो, सीधा, मूर्ख।

सादृश्य—पु० समानता, बराबरी।

साध—पु० लालसा,

साधक—पु० साधना करनेवाला, योगी, जरिया, वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो।

साधन--पु० सिद्धि, सामग्री, उपाय, उपासना, शोधन, कारण।

साधना—स्त्री० कोई कार्य सिद्ध करना, नापना, अभ्यास करना, शोधना, पक्का करना, एकत्र करना, वश में करना। स्त्री० सिद्धि, उपासना।

साधर्म्य—पु० एकधर्मता।

साधारण—मामूली, सहज, समान, सार्वजनिक।

साधारणतः—मामूली तौर पर, प्रायः।

साधित—जो सिद्ध किया या साधा गया हो।

साधु—अच्छा, सच्चा, उचित, प्रशंसनीय। पु० कुलीन, संत, सज्जन।

साधुवाद—पु० 'साधु साधु' कह कर प्रशंसा करना।

साधु साधु—धन्य धन्य।

साधू, साधो—पु० संत, साधु।

साध्य—सिद्ध करने योग्य, जो सिद्ध हो सके, आसान। पु० देवता, सामर्थ्य, न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय।

साध्वी—स्त्री० पतिव्रता, शुद्ध चरित्रवाली।

सानंद—आनंदपूर्वक । [पत्थर ।

सान—पु० अस्त्र आदि तेज करने का

सानी—स्त्री० दूसरा, बराबरी का ।

सान्निध्य—पु० समीपता, एक प्रकार की युक्ति । [लड़का ।

सापत्न्य—पु० सौतपन, सौत का

सापेक्ष—अपेक्षा सहित, आश्रित ।

साफ़—स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, स्पष्ट, उज्ज्वल, निष्कपट, सादा, समतल, चुकती, नितांत ।

साफ़ा—पु० पगड़ी, मुरेठा ।

साफ़ी—स्त्री० रूमाल, छनना, गांजे की चिलम लपेटने का कपड़ा ।

साफल्य—पु० सफलता ।

साबिक़—पहले का ।

साबिक़ा—पु० जान पहचान, संबंध, व्यवहार । [दुरुस्त ।

साबित—प्रमाणित, सिद्ध, पूरा,

साबुत—संपूर्ण, दुरुस्त ।

साबू—पु० साबूदाना । [अनुकूलता ।

सामंजस्य—पु० औचित्य, उपयुक्तता,

सामंत—पु० योद्धा, सरदार ।

साम—पु० वे वेदमंत्र जो यज्ञ आदि के समय गाये जाते हैं, सामवेद, मधुर भाषण, राजनीति में अपने वैरी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना, सामान । [विष्णु ।

सामग—सामगान करनेवाला, ब्राह्मण,

सामग्री—स्त्री० सामान, जरूरी चीज, साधन । [मुकाबला ।

सामना—पु० मुलाकात, अगला भाग,

सामने—सम्मुख, आगे, मौजूदगी में विरुद्ध ।

सामयिक—समय संबंधी, वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला, समय के अनुसार ।

सामयिक पत्र—पु० समाचार-पत्र ।

सामरिक—समर संबंधी ।

सामर्थ्य—पु० स्त्री० शक्ति, योग्यता ।

सामवादिक—समूह संबंधी ।

सामवेद—पु० एक वेद ।

सामसाली—पु० राजनीतिज्ञ ।

सामाजिक—समाज का, समाज संबंधी ।

सामान—पु० सामग्री ।

सामान्य—साधारण । पु० समानता ।

सामान्या—स्त्री० गणिका ।

सामिष—मांस मत्स्य आदि के साथ, निरामिष का उलटा ।

सामीप्य—पु० निकटता, वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा के पास रहता है ।

सामीची—स्त्री० वंदना ।

सामुदायिक—समुदाय संबंधी ।

सामुद्रिक—समुद्र संबंधी । पु० हस्तरेखा आदि देख कर जीवन की घटनाएँ जानने की विद्या, इस विद्या का ज्ञाता ।

सामुहें—सामने।
सामूहिक--समूह संबंधी।
साम्मुख्य—पु० सम्मुखता, सामना।
साम्य—पु० समानता।
साम्यवाद—पु० समाज में समानता स्थापित करने का एक पाश्चात्य सिद्धांत। [माननेवाला।
साम्यवादी--पु० साम्यवाद
साम्राज्य--पु० वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों, आधिपत्य।
साम्राज्यवाद—पु० साम्राज्य कायम रखने और उसे बराबर बढ़ाते रहने का सिद्धांत।
सायं—पु० शाम। [संबंधी।
सायंटिफिक—वैज्ञानिक, विज्ञान
सायंसंध्या--स्त्री० संध्याकाल की उपासना।
सायक—पु० बाण, तलवार।
सायत--स्त्री० एक घंटे का समय, पल, शुभ मुहूर्त। [प्रकार की गति।
सायन--अयनयुक्त। पु० सूर्य की एक
सायबान—पु० बरामदा।
सायर—पु० वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। [प्रार्थी।
सायल—पु० सवाल करनेवाला,
साया--पु० छाया, परछाईं, असर, भूत प्रेत आदि, यूरोपियन स्त्रियों का घाँघरे की तरह का एक पहनावा।
सायाह्न—पु० संध्या।

सायुज्य—पु० वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो।
सारंग--रंगीन, सरस, सुंदर। पु० एक प्रकार का मृग, कोयल, बाज, सूर्य, सिंह, हंस, मयूर, चातक, हाथी, घोड़ा, छाता, शंख, कमल, स्वर्ण, आभूषण, तालाब, भौंरा, एक प्रकार की मधुमक्खी, विष्णु का धनुष, कपूर, श्रीकृष्ण, चंद्रमा, समुद्र, जल, बाण, दीपक, पपीहा, शिव, साँप, चंदन, भूमि, केश, शोभा, स्त्री, रात, दिन, तलवार, मेघ, हिरन, हाथ, ग्रह, खंजन पक्षी, मेढक, आकाश, पक्षी, सारंगी बाजा, ईश्वर, कामदेव, बिजली, फूल, संपूर्ण जाति का एक राग।
सारंगपाणि, सारंगधर--पु० विष्णु।
सारंगिक--पु० बहेलिया।
सारंगी—स्त्री० एक बाजा।
सार--श्रेष्ठ, दृढ़। पु० तत्त्व, मुख्य, अभिप्राय, रस, जल, गूदा, मलाई, लकड़ी का हीर, परिणाम, धन, मक्खन, अमृत, बल, मज्जा, जूआ खेलने का पासा, तलवार, सारिका, पालन पोषण, शय्या, साला।
सारगर्भित—तत्त्वपूर्ण।
सारजंट--पु० दे० "सर्जंट"
सारथि, सारथी—पु० रथ चलाने-

वाला, समुद्र ।

सारद—स्त्री० शरद ऋतु, सरस्वती ।

सारना—पूरा करना, दुरुस्त करना, सुंदर बनाना, रक्षा करना, आँखों में अंजन लगाना, अस्त्र चलाना ।

सारभूत—सर्वोत्तम, असलियत ।

सारमेय—पु० कुत्ता ।

सारल्य—पु० सरलता, आसानी ।

सारस—पु० पक्षी विशेष, हंस, चंद्रमा, कमल ।

सारसुता—स्त्री० यमुना ।

सारस्वत—सरस्वती संबंधी । पु० सरस्वती नदी के तट पर का देश, इस देश के ब्राह्मण ।

सारांश-पु० संक्षेप, मतलब, परिणाम।

सारा—संपूर्ण । [पासा खेलने वाला ।

सारि—पु० जूआ खेलने का पासा,

सारिक—पु० दे० "सारिका" ।

सारिका—स्त्री० मैना ।

सारी—स्त्री० पासा, सारिका ।

सारूप्य—पु० एकरूपता, वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा का रूप प्राप्त कर लेता है ।

सार्टिफिकेट-पु० प्रमाणपत्र, सनद।

सार्थ—अर्थ सहित । [कारी ।

सार्थक—अर्थ सहित, सफल, गुण-

सार्द्ध—अर्द्ध सहित । [रण संबंधी ।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—सर्वसाधा-

सार्वत्रिक—सर्वत्रव्यापी ।

सार्वदेशिक—संपूर्ण देशों का ।

सार्वभौम—समस्त भूमि संबंधी । पु० चक्रवर्ती राजा, हाथी ।

सार्वराष्ट्रीय—सभी राष्ट्र संबंधी ।

सार्षप—सरसों का तेल या साग ।

साल—स्त्री० सालने की क्रिया, छेद, घाव, दुःख । पु० जड़, वृक्ष, वर्ष ।

साल अमोनिया—पु० नौसादर ।

सालक—सालने वाला, दुःख देने वाला ।

सालगिरह—स्त्री० बरसगांठ ।

सालग्रामी—स्त्री० गंडक नदी ।

सालन—पु० मसालेदार तरकारी ।

सालना-दुःख देना, चुभना, चुभाना, खाट के पौआ को छेद कर उसमें पाटी बैठाना ।

सालस—पु० पंच ।

सालसा—पु० खून साफ करने का अंगरेजी ढंग का काढ़ा ।

सालसी—स्त्री० पंचायत ।

साला—पु० पत्नी का भाई ।

सालाना, सालियाना—वार्षिक ।

सालिम—संपूर्ण ।

साली—स्त्री० पत्नी की बहन ।

सालोक्य—पु० वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव भगवान के साथ एक लोक में वास करता है । [मौका ।

सावकाश—पु० अवकाश, छुट्टी,

सावज—पु० एक जंगली जानवर ।

साबधान—सचेत, सजग ।

सावन—पु० एक महीना, एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय ।

सावर—पु० शिवकृत, एक प्रकार का सिद्ध मंत्र, एक औजार, एक प्रकार का हिरन ।

सावर्ण—सजातीय ।

सावित्र—सविता संबंधी । पु० सूर्य, शिव, वसु, ब्राह्मण, यज्ञोपवीत ।

सावित्री—स्त्री० गायत्री, सरस्वती, ब्रह्मा की पत्नी, सधवा स्त्री, यमुना नदी, सरस्वती नदी ।

साष्टांग—आठो अंग सहित ।

साष्टांग प्रणाम—पु० मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेट कर प्रणाम करना । [शाह ।

साह—पु० साधु, व्यापारी, धनी,

साहचर्य—पु० संग ।

साहनी—स्त्री० सेना, साथी, परिषद ।

साहब—पु० मित्र, स्वामी, परमेश्वर, महाशय, गोरी जाति का व्यक्ति ।

साहबजादा—पु० भले आदमी का लड़का, पुत्र । [अभिवादन ।

साहब सलामत—स्त्री० परस्पर

साहबी—साहब का, साहब संबंधी । स्त्री० प्रभुता, बड़ाई ।

साहस—पु० हिम्मत, दंड, जुरमाना, लूटना, कोई बुरा काम ।

साहसिक, साहसी—साहस करने वाला, दिलेर, पराक्रमी ।

साहस्र, साहस्रिक—सहस्र संबंधी ।

साहाय्य—पु० सहायता ।

साहित्य—पु० एकत्र होना, उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनिक हित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं । [साहित्य सेवी ।

साहित्यिक—साहित्य संबंधी । पु०

साही—स्त्री० एक जंतु । [महाजन ।

साहु—पु० सज्जन, भलामानस, धनी,

साहूकार-पु० बड़ा महाजन, धनाढ्य ।

सिंकोना—पु० एक पेड़ जिससे कुनैन तैयार होता है ।

सिंगार—पु० शृंगार ।

सिंगारदान—पु० ऐना कंघी आदि शृंगार सामग्री रखने की पिटारी ।

सिंगारहाट—स्त्री० वेश्याओं के रहने का स्थान ।

सिंगिया—[illegible] क विष ।

सिंगी—स्त्री० एक बाजा या मछली ।

सिंघाड़ा—पु० एक कंद या पकवान ।

सिंचन—पु० जल छिड़कना, सिंचना ।

सिंचाई—स्त्री० सींचने का काम, कर या मजदूरी ।

सिंदूर—पु० इंगूर, एक तरह की लाल बुकनी जिसे सधवा स्त्रियां अपनी माँग में लगाती हैं ।

सिंदूरदान—पु० विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।
सिंदूरिया—सिंदूर के रंग का।
सिंदोरा—पु० सिंदूर रखने का बरतन।
सिंधव—पु० दे० "सैंधव"।
सिंधी—स्त्री० सिंध की बोली। पु० सिंध निवासी।
सिंधु—पु० नदी, पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी, समुद्र, सिंध प्रदेश, चार की संख्या, सात की संख्या।
सिंधुज—पु० सेंधा नमक।
सिंधुजा—स्त्री० लक्ष्मी।
सिंधुपुत्र—पु० चंद्रमा।
सिंधुमाता—स्त्री० सरस्वती।
सिंधुर—पु० हाथी, आठ की संख्या।
सिंधुरमणि—पु० गजमुक्ता।
सिंधुसुतासुत—पु० मोती।
सिंधोरा—पु० सिंदूर रखने के लिये लकड़ी का पात्र।
सिंह—पु० एक प्रसिद्ध जंतु, ज्योतिष में एक राशि, बीरता या श्रेष्ठता वाचक शब्द।
सिंहद्वार—पु० सदर फाटक।
सिंहनाद—पु० सिंह की गरज, घोर गर्जना।
सिंहनी—स्त्री० सिंह की मादा।
सिंहली—सिंहल द्वीप का, सिंहल द्वीपवासी। स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा, लंका की बोली।
सिंहवाहिनी—स्त्री० दुर्गा।
सिंहावलोकन—पु० सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना, आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन, पद्यरचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।
सिंहासन—पु० राजा या देवता के बैठने का आसन।
सिंहोदरी—सिंह के समान पतली कमरवाली।
सिअरा—ठंढा। पु० छाया।
सिआर—पु० गीदड़।
सिकंजबीन—स्त्री० सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।
सिकंदरा—पु० रेलवे का सिगनल।
सिकड़ी—स्त्री० जंजीर, करधनी।
सिकता—स्त्री० बालू, बलुई जमीन, चीनी।
सिकली—स्त्री० धारदार हथियारों पर सान चढ़ाने की क्रिया।
सिकलीगर—सान धरनेवाला।
सिकुड़न—स्त्री० शिकन, सिलवट।
सिकुड़ना—सिमट कर थोड़े स्थान में होना, संकीर्ण होना, बल पड़ना।
सिकोड़ना—समेट कर थोड़े स्थान में करना, समेटना।
सिक्का—पु० मुहर, ठप्पा, मुद्रा,

तमगा।

सिक्ख—पु० एक जाति, नानकपंथी।

सिक्त—सींचा हुआ, गीला।

सिख--पु० शिक्षा, सीखो।

सिखरन—स्त्री० दही मिला हुआ चीनी का शरबत।

सिखावन—पु० उपदेश।

सिगरा, सिगरो--सारा, सब।

सिजदा—पु० आदाब, प्रणाम।

सिटपिटाना—सकुचाना, दब जाना, किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना।

सिड़—स्त्री० पागलपन, सनक।

सिड़ी—पागल, सनकी।

सित--श्वेत, उज्ज्वल, साफ। पु० शुक्लपक्ष, चीनी, चाँदी।

सितकंठ--पु० शिव।

सितकर—पु० चंद्रमा, कपूर।

सितपक्ष—पु० हंस।

सितभानु--पु० चंद्रमा।

सितम--पु० गजब, जुल्म।

सितमगर—पु० जालिम।

सित बराह--पु० श्वेत बाराह।

सितवराहपत्नी--स्त्री० पृथ्वी।

सितसागर--पु० क्षीरसागर।

सिता—स्त्री० चीनी, शुक्लपक्ष, शराब।

सिताखंड--पु० शहद से बनायी हुई शक्कर, मिस्री।

सितार--पु० एक बाजा।

सितारिया--पु० सितार बजानेवाला।

सितारा—पु० तारा, भाग्य, सोने चाँदी के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी।

सितारेहिंद--पु० अंगरेज सरकार की ओर से भारतीयों को दी जानेवाली एक उपाधि जिसका अर्थ है "हिंद का सितारा"

सितासित—सफेद और काला।

सितिकंठ—पु० शिव।

सितुही—स्त्री० सीपी।

सितोपल—पु० खरिया मिट्टी, एक प्रकार का पत्थर, मिसरी।

सिद्ध—संपन्न, प्राप्त, सफल, जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो, योग की विभूतियाँ दिखानेवाला, मोक्ष का अधिकारी, प्रमाणित, आग पर पका हुआ। पु० वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो, ज्ञानी, महात्मा, ज्योतिष में एक योग।

सिद्धकाम—जिसकी कामना पूरी हुई हो, सफल।

सिद्ध गुटिका—स्त्री० वह मंत्रसिद्ध गोली जिसके मुँह में लेने से अदृश्य होने आदि की शक्ति आना कहा जाता है।

सिद्धपथ—पु० आकाश।

सिद्धपीठ--पु० वह स्थान जहाँ शीघ्र

सिद्धि प्राप्त हो ।

सिद्धरस--पु० पारा ।

सिद्धहस्त--जिसका हाथ किसी काम में सँजा हो, निपुण ।

सिद्धांजन—पु० वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से कहते हैं कि भूमि में गड़ी वस्तुएँ दिखाई देती हैं ।

सिद्धांत--पु० भलीभाँति सोच-विचार कर स्थिर किया हुआ मत, उसूल, मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय, मत, तत्त्व की बात ।

सिद्धार्थ—जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गयी हों ।

सिद्धि—स्त्री० काम का पूरा होना, सफलता, साबित होना, निश्चय, निर्णय, पकना, मुक्ति, दक्षता, भाँग, तप या योग के पूरे होने का अलौकिक फल । योग की ये अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति,प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ।

सिद्धिदाता—पु० गणेश ।

सिद्धेश्वर—पु० महायोगी, शिव ।

सिधारना—प्रस्थान करना, मरना ।

सिन—पु० उम्र, अवस्था, पाप ।

सिनेट—पु० विश्वविद्यालय का प्रबन्ध करनेवाली सभा, शासन समिति ।

सिपर—स्त्री० ढाल ।

सिपहगिरी-स्त्री० सिपाही का काम ।

सिपहसालार—पु० सेनापति ।

सिपास—पु० धन्यवाद, शुक्रिया, प्रशंसा ।

सिपाह—स्त्री० फौज, सेना ।

सिपाहगिरी—स्त्री० सिपाही का काम या पेशा ।

सिपाहीयाना—सिपाहियों का सा ।

सिपाही—पु० सैनिक । [धाक ।

सिप्पा--पु० युक्ति, तदबीर, डौल,

सिप्रा—स्त्री० भैंस । [स्वभाव ।

सिफत—स्त्री० विशेषता, लक्षण,

सिफर--पु० शून्य, बिंदी ।

सिफला--नीच, छिछोरा ।

सिफारिश--स्त्री० किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना ।

सिफारिशी--सिफारिश वाला, जिसकी सिफारिश की गयी हो ।

सिफारिशी टट्टू--पु० वह जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो ।

सिमटना-सिकुड़ना, शिकन पड़ना, बटुरना, व्यवस्थित होना, पूरा होना, लज्जित होना, सहमना ।

सिमेंट—पु० एक प्रकार का लसदार गारा ।

सियरा—ठंढा, कच्चा ।

सियापा—पु० मरे हुए मनुष्य के

शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।

सियार, सियाल—पु० गीदड़।

सियासत—स्त्री० देश का शासन या व्यवस्था। [वनबिलाव।

सियाहगोश—काले कानवाला। पु०

सियाहा—पु० आयव्यय की बही।

सियाहानवीस—पु० सियाहा का लिखनेवाला।

सिर—पु० कपाल, खोपड़ी, चोटी। मुहा० सिर आँखों पर होना = सहर्ष स्वीकार करना। सिर आँखों पर बैठाना = बहुत आदर सत्कार करना, सिर उठाना = विरोध में खड़ा होना। सिर ऊँचा करना = प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना। सिर के बल जाना = बहुत आदर पूर्वक किसी के पास जाना। सिर खाना = बकवाद करके जीव उबाना, सिर खपाना = सोचने बिचरने में हैरान होना। सिर पर पाँव रखना = बहुत जल्द भाग जाना। सिर पर खून सवार होना = जान लेने पर उतारू होना। सिर पर होना = कोई काम बहुत निकट होना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना = प्रारंभ में ही कार्य्य बिगड़ना।

सिरका—पु० धूप में पका कर खट्टा किया हुआ ईख या अंगूर आदि का रस। [एक यंत्र।

सिरकाकश—पु० अरक खींचने का

सिरकी—स्त्री० सरकंडा, सरकंडे की बनी टट्टी।

सिरखपी—स्त्री० हैरानी। [मेश्वर।

सिरजनहार—पु० रचने वाला, पर-

सिरताज—पु० मुकुट, शिरोमणि, सरदार।

सिर-ता-पा—सिर से पाँव तक।

सिरनामा—दे० "सरनामा।"

सिरनेत, सिरपेच—पु० पगड़ी, पगड़ी पर का एक आभूषण। [टोप।

सिरपोश—पु० सिर पर का आवरण,

सिरफेंटा—पु० साफा, पगड़ी, मुरेठा।

सिरबंद—पु० साफा। [सिरताज।

सिरमौर—पु० सिर का मुकुट,

सिरस—पु० एक पेड़।

सिरहाना—पु० चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा—पु० छोर, ऊपर का भाग, आरंभ का या अंत का भाग, नोक। स्त्री० रक्त नाड़ी, सिंचाई की नाली।

सिराना—ठंढा होना या करना, मंद पड़ना, खतम होना या करना, मिटना, बीत जाना।

सिरिश्ता—पु० दे० "सरिस्ता"।

सिरोपाव—पु० सिर से पैर तक का पहनावा।

सिर्फ़—केवल, एक मात्र, शुद्ध।

सिल—स्त्री० पत्थर, मसाला पीसने का पत्थर। पु० तपेदिक, क्षयरोग।
सिलखड़ी—स्त्री० खरिया मिट्टी।
सिलपट—साफ़, चौरस, घिसा-हुआ, चौपट।
सिलवट—स्त्री० सिकुड़न।
सिलसिला—पु० क्रम, परंपरा, श्रेणी, शृंखला, व्यवस्था।
सिलसिला बंदी—स्त्री० तरतीब, कतारबंदी।
सिलसिलेवार-क्रमानुसार, क्रमशः।
सिलह—पु० हथियार, शस्त्र।
सिलहखाना—पु० अस्त्रागार।
सिलाई—स्त्री० सीने का काम या मजदूरी, टाँका, सीवन।
सिलाजीत—पु० एक दवा।
सिलावट—पु० संगतराश।
सिलाह—पु० जरहवख्तर, कवच, हथियार।
सिलहवंद—हथियार बंद। [वाला।
सिलहसाज—पु० हथियार बनाने-
सिलौटी—स्त्री० मसाला आदि पीसने की सिल।
सिल्ला—पु० खेत या खलियान में गिरा हुआ अनाज।
सिल्ली—स्त्री० पु० सान, हथियार चोखा करने का पत्थर, सिल।
सिवई—स्त्री० दे० "सेंवई"।
सिवा—अतिरिक्त, अधिक।
सिवान—पु० सीमा।
सिवाय—दे० "सिवा"। [एक तृण।
सिवार—स्त्री० पानी में फैलनेवाला
सिविल—नगर संबंधी, नागरिक, माली, सभ्य, मिलनसार।
सिविल सर्जन-सरकारी बड़ा डाक्टर।
सिविल सर्विस-पु० मुल्की नौकरी की एक सरकारी परीक्षा।
सिविल सूट-पु० दीवानी मुकदमा।
सिविल कोर्ट-पु० दिवानी अदालत।
सिविलियन—पु० सिविल सर्विस परीक्षा पास व्यक्ति।
सिविल ला—पु० दिवानी कानून।
सिविलिजेशन—पु० सभ्यता।
सिसकना—रोने से रुक रुक कर निकलती हुई साँस छोड़ना, भीतर ही भीतर रोना, जी धड़कना, उलटी साँस लेना, तरसना।
सिसकारी-स्त्री०मुँह से निकलनेवाला सीटी का सा शब्द, सी सी शब्द।
सिसकी—स्त्री० खुलकर न रोने का शब्द, सिसकारी। [डरना।
सिहरना—ठंढ से काँपना, काँपना,
सिहाना—डाह करना, स्पर्द्धा करना, पाने के लिये ललचना, मोहित होना, ईर्ष्या की दृष्टि से देखना।
सींक—स्त्री० मूँज आदि की पतली लंबी डंटल, तिनका।
सींका—स्त्री० रंगना।

सींगी—स्त्री० हिरन के सींग का बना बाजा। [सिंगौना।
सींचना—पानी देना, छिड़कना,
सी—समान। स्त्री० सिसकारी।
सीकर—पु० जलकण, पसीना। स्त्री० जंजीर।
सीक्रेट-पु० गुप्तभेद, रहस्य। [छड़।
सीख—स्त्री० शिक्षा, सलाह, लोहे की
सीखचा—पु० लोहे की सीख जिस पर मांस लपेट कर भुनते हैं।
सीज़न—पु० मौसम।
सीटना—सजना, डींग मारना।
सीटी—स्त्री० एक बाजा, मुँह से निकला हुआ एक बारीक स्वर।
सीठ—पु० शिक्षा।
सीठना—पु० अश्लील गीत।
सीठा—नीरस, फीका।
सीठी—स्त्री० फल आदि से रस निकलने पर बचा हुआ अंश, सारहीन पदार्थ, फीकी चीज़।
सीड़—स्त्री० तरी, नमी।
सीत—ठंढक। [कपड़ा।
सीतलपाटी—स्त्री० बढिया चिकनी चटाई, एक प्रकार का धारीदार
सीत्कार—पु० सिसकारी।
सीताध्यक्ष—पु० वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता हो।
सीताफल—पु० शरीफा, कुम्हड़ा।

सीत्कार—पु० पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकलनेवाला सी सी शब्द।
सीद—पु० सूदखोरी।
सीदना—दुःख पाना।
सीधा—जो टेढ़ा न हो, जो ठीक लक्ष्य की ओर हो, भोलाभाला, शांत और सुशील, आसान, दहिना, सम्मुख। पु० बिना पका हुआ अन्न।
सीधे—बिना कहीं मुड़े या रुके, शिष्ट व्यवहार से, नरमी से, शांति से।
सीन—पु० दृश्य, थियेटर के रंगमंच का परदा।
सीनरी-स्त्री० प्राकृतिक दृश्य। [छाती।
सीना—सूई तागों से जोड़ना। पु०
सीनाबंद—पु० अँगिया।
सीनियर—उच्च।
सीप—पु० एक सामुद्रिक जंतु जिससे मोती निकलता है, सितुआ।
सीपसुत, सीपिज—पु० मोती।
सीपी—स्त्री० दे० "सीप"।
सीबी—स्त्री० सीत्कार।
सीमंत-पु० स्त्रियों की माँग, हड्डियों का संधि स्थान, दे० 'सीमंतोन्नयन'।
सीमंतिनी—स्त्री० स्त्री, नारी।
सीमंतोन्नयन—पु० एक संस्कार जो प्रथम गर्भ के चौथे छठे या आठवें महीने होता है।
सीमांत—पु० सरहद।

सीमा—स्त्री० सरहद, माँग।

सीमाबद्ध—रेखा या सीमा से घिरा हुआ।

सीमित–मर्य्यादित, हद बाँधा हुआ।

सीमाब—पु० पारा।

सीर— ठंढा। पु० हल, हल जोतने वाले बैल, सूर्य्य, वह जमीन जिसे भूस्वामी स्वयं जोतता आ रहा हो, वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्से-दारों में बँटती हो।

सीरनी—स्त्री० मिठाई।

सीरा—ठंढा, शांत। पु० चाशनी।

सील—स्त्री० नमी, तरी।

सीला—गीला। पु० अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या गरीब चुनते हैं, खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।

सीवन—स्त्री० सिलाई, दरार।

सीस—पु० सिस, माथा, धान की बाल।

सीसक—पु० सीसा। [आभूषण।

सीसफूल—पु० माथे का एक

सीस महल—पु० वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

सीसा—पु० एक धातु।

सीसी-स्त्री० सीसकार, सिसकारी।

सुंघनी—स्त्री० सूँघने की तंबाकू।

सुंडभुसुंड—पु० हाथी जिसका अग्र सूँड़ है।

सुंडाल—पु० हाथी।

सुंदर—खूबसूरत, अच्छा।

सुंदरता—स्त्री० खूबसूरती। [स्त्री।

सुंदरी—स्त्री० सुंदर स्त्री, रूपवती

सु—एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लग कर श्रेष्ठ, सुंदर और बढ़िया आदि का अर्थ देता है। उत्तम, शुभ।

सुअटा—पु० सुग्गा।

सुअन—पु० पुत्र।

सुआ—पु० सुग्गा।

सुआर—पु० रसोइया।

सुआसिन—स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री।

सुकंठ—जिसका कंठ सुंदर हो, सुरीला। पु० सुग्रीव।

सुकनासा—जिसकी नाक सुग्गे की ठोर के समान सुंदर हो।

सुकर—सुसाध्य, सहज।

सुकरता—स्त्री० सहज में होने का भाव, सुंदरता।

सुकर्म, सुकाम—पु० अच्छा काम।

सुकाल—पु० उत्तम समय, वह समय जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो, अकाल का उलटा।

सुकुमार—जिसके अंग बहुत कोमल हों, नाजुक। पु० कोमलांग बालक।

सुकुमारता— स्त्री० कोमलता, नजाकत। [चमेली।

सुकुमारी—स्त्री० कन्या, कोमलांगी,

सुकुल—पु० श्रेष्ठ वंश, ब्राह्मणों की

एक पदवी। [धार्मिक।
सुकृत्—शुभ कार्य करनेवाला,
सुकृत—भाग्यवान्, धर्मशील, पु० पुण्य, दान।
सुकृतात्मा—धर्मात्मा।
सुकृति—स्त्री० सत्कर्म। [मान्।
सुकृती—धार्मिक, भाग्यवान्, बुद्धि-
सुकृत्य—पु० पुण्य।
सुकेशी—स्त्री० उत्तम केशोंवाली स्त्री।
सुख—स्वभावतः। पु० दुःख का उलटा, आराम, आरोग्य, स्वर्ग, जल।
सुख आसन—पु० पालकी।
सुखकंद—सुखद।
सुखकंदर—सुख का घर।
सुखकर—सुख देनेवाला, जो सहज में किया जा सके।
सुखकारक, सुखकारी—सुखद।
सुखजननी—सुख देनेवाली।
सुखछरन—सुखद।
सुखद—सुख देनेवाला।
सुखदगीत—प्रशंसनीय।
सुखदायक, सुखदायी—सुखद।
सुखधाम—पु० सुख का घर, वैकुंठ।
सुखपाल—पु० एक किस्म की पालकी।
सुखप्रद—सुख देनेवाला।
सुखमा—स्त्री० शोभा।
सुखरास, सुखरासी—जो सुख का ढेर हो, जो सर्वथा सुखमय हो।

सुखवंत—सुखी।
सुखसाध्य—सहज।
सुखसार—पु० मोक्ष। [सुखमय हो।
सुखांत—पु० वह जिसका अंत
सुखारी—सुखी, सुखद।
सुखाला—सुखदायक, सहज।
सुखावह—सुख देनेवाला। [पालकी।
सुखासन—पु० सुखद आसन,
सुखित—प्रसन्न।
सुखी—आनंदित, खुश। [यश।
सुख्याति—स्त्री० प्रसिद्धि, कीर्ति,
सुगंध—सुगंधित। स्त्री० खुशबू, चंदन। [आम।
सुगंधि—स्त्री० खुशबू, परमात्मा,
सुगंधित—सुगंधयुक्त।
सुगत—पु० बुद्धदेव, बौद्ध।
सुगति—स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।
सुगम—जिसमें गमन करने में कठिनता न हो, सरल।
सुगमता—स्त्री० आसानी, सरलता।
सुगम्य—जिसमें सहज में प्रवेश हो सके। [पु० इंद्र, शंख।
सुग्रीव—जिसकी ग्रीवा सुंदर हो।
सुघट—सुंदर, जो सहज में बन सकता हो। [प्रवीण।
सुघड़, सुघर—सुंदर, सुडौल,
सुचरित, सुचरित्र—पु० नेकचलन।
सुचाना—सोचने में प्रवृत्त करना, दिखलाना, ध्यान आकृष्ट करना।

सुचारु—अत्यंत सुंदर।
सुचाल—पु० अच्छी चाल, सदाचार।
सुचित—जो किसी काम से निवृत्त हो गया हो, निश्चिंत।
सुचिस्मंत—सदाचारी।
सुचेत—चौकन्ना।
सुजन—पु० सज्जन।
सुजनी—स्त्री० पुराने या नये कपड़ों को मोटी तह में सी कर बनाया हुआ बिछावन।
सुजल्प—पु० उत्तम भाषण।
सुजागर—सुशोभित।
सुजात—विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न, अच्छे कुल में उत्पन्न, सुंदर।
सुजाति—स्त्री० उत्तम जाति।
सुजान—चतुर, निपुण, पंडित, सज्जन। पु० पति या प्रेमी, ईश्वर।
सुठार—सुडौल, सुन्दर।
सुठि—सुन्दर, अत्यंत, बिलकुल।
सुडौल—सुन्दर आकार का।
सुढर—प्रसन्न और दयालु।
सुढार, सुढारु—सुन्दर।
सुत—उत्पन्न, पार्थिव। पु० बेटा।
सुतनु—जिसका शरीर सुन्दर हो।
सुतरां—अतः, और भी, लाचार।
सुतरी—स्त्री दे० "सुतली"।
सुतल—पु० एक पाताल।
सुतली—स्त्री० पतली डोरी, रस्सी।
सुता—स्त्री० पुत्री।
सुतार—पु० बढ़ई, कारीगर।
सुतुही—स्त्री० सीपी।
सुत्रामा—पु० इन्द्र।
सुथना—पु० पायजामा।
सुथनी—स्त्री० स्त्रियों का ढीला पायजामा, एक कंद।
सुथरा—साफ।
सुथरापन—पु० सफाई, स्वच्छता।
सुथरेशाही—पु० नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय या उसका अनुयायी।
सुदती—सुन्दर दाँतोंवाली स्त्री।
सुदर्शन—सुन्दर। पु० शिव, सुमेरु, विष्णु का चक्र।
सुदावन—पु० सुदामा।
सुदी—स्त्री० शुक्ल पक्ष।
सुदूर—बहुत दूर।
सुदृढ़—खूब मजबूत।
सुदृष्टि—स्त्री० उत्तम दृष्टि।
सुदेश—सुन्दर। पु० सुन्दर देश, उपयुक्त स्थान।
सुध—याद, होश, खबर।
सुधन्वा—पु० अच्छा धनुर्धर, विष्णु, विश्वकर्मा, अंगिरस।
सुधरना—बिगड़े हुए का बनना।
सुधांग, सुधांशु—पु० चंद्रमा।
सुधा—स्त्री० अमृत, मकरंद, गंगा, जल, दूध, रस, पृथ्वी, विष।
सुधाकर, सुधागेह, सुधाधर—पु०

चन्द्रमा। [हो। पु० चन्द्रमा।
सुधाधर—जिसके अधरों में अमृत
सुधाधाम, सुधाधार–पु० चन्द्रमा।
सुधाधी—सुधा के समान।
सुधानिधि—पु० चन्द्रमा, समुद्र।
सुधापाणि—पु० धन्वंतरी।
सुधार—पु० संशोधन, सुधारने की क्रिया या भाव।
सुधारक—सुधारनेवाला।
सुधासदन—पु० चन्द्रमा।
सुधि—स्त्री० दे० "सुध"।
सुधित–सुव्यवस्थित, सुधा के समान।
सुधिति—स्त्री० कुल्हाड़ी।
सुधी–बुद्धिमान्, धार्मिक। पु० विद्वान्।
सुनंद—आनन्ददायक। पु० बलराम।
सुनंदा—स्त्री० स्त्री, औरत।
सुनत, सुनति—स्त्री० दे० "सुन्नत"।
सुनबहरी–स्त्री० एक प्रकार का रोग।
सुनयना—स्त्री० सुन्दर नेत्रवाली।
सुनवाई—स्त्री० सुनने की क्रिया या भाव, मुकदमे आदि का सुना जाना।
सुनसान—निर्जन, उजाड़। पु० सन्नाटा। [का सा।
सुनहला—सोने के रंग का, सोने
सुनाम—पु० यश, कीर्ति।
सुनीति—स्त्री० अच्छी नीति।
सुनु—पु० जल।
सुन्न—निर्जीव, सुनसान, नीरव।
सुन्नत—स्त्री० मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है, खतना।
सुन्ना—पु० बिंदी। [संप्रदाय।
सुन्नी—पु० मुसलमानों में एक
सुपक्व—अच्छी तरह पका हुआ।
सुपच—पु० डोम।
सुपत—प्रतिष्ठायुक्त।
सुपथ—पु० अच्छा रास्ता। [वाला।
सुपरवाइजर—पु० देख भाल करने
सुपरवीजन—पु० देखभाल।
सुपरिन्टेन्डेन्ट—पु० निरीक्षक, निगरानी करनेवाला।
सुपर्ण—पु० गरुड़, पक्षी, किरण, विष्णु, घोड़ा।
सुपात्र—पु० योग्य, अच्छा पात्र।
सुपास—पु० आराम, सुख।
सुपासी—सुख देनेवाला।
सुपीरियर—बढ़कर, श्रेष्ठतर।
सुपुर्द—दे० "सपुर्द"।
सुपूत—अच्छा पुत्र, सुपुत्र।
सुप्त–सोया हुआ, ठिठुरा हुआ, बंद।
सुप्ति—स्त्री० निद्रा, ऊँघाई।
सुप्रज्ञ—बहुत बुद्धिमान्।
सुप्रतिष्ठ–उत्तम प्रतिष्ठावाला, प्रसिद्ध।
सुप्रतिष्ठा—स्त्री० प्रसिद्धि।
सुप्रतिष्ठित—विशेष माननीय।
सुप्रतीक—पु० कामदेव, शिव।
सुप्रभात—पु० मंगलसूचक प्रभात।

सुप्रीम कोर्ट—प्रधान न्यायालय।
सुबड़ा-पु० ताँबा मिली हुई चाँदी।
सुफल—सफल, सुंदर फलवाला। पु० सुन्दर फल, अच्छा परिणाम।
सुबल-अत्यंत बलवान। पु० शिव।
सुबह—स्त्री० सबेरा।
सुबहान—पु० अरबी का एक पद।
सुवासिक—सुगंधित। [पु० सेना।
सुबाहु—दृढ़ या सुंदर बाहोंवाला।
सुबुक—हलका, सुन्दर।
सुबुकरंदा-पु० लोहे का एक औज़ार।
सुबुद्धि—स्त्री० उत्तम बुद्धि।
सुबू—पु० सुबह।
सुबूत—पु० प्रमाण।
सुबोध-अच्छी बुद्धिवाला, जो कोई बात सहज में समझ सके।
सुब्रह्मण्य—पु० शिव, विष्णु।
सुभग—सुन्दर, भाग्यवाला, प्रिय, सुखद।
सुभगा—सुंदरी, सौभाग्यवती। स्त्री० वह स्त्री जो अपने पति की प्रिय हो, पाँच वर्ष की कुमारी।
सुभट—पु० भारी योद्धा।
सुभद्र—भाग्यवान्, सज्जन। पु० विष्णु, सौभाग्य, कल्याण।
सुभद्रा—स्त्री० दुर्गा।
सुभाई, सुभाउ—सहज भाव से। पु० दे० "स्वभाव"।

सुभागी—भाग्यवान्।
सुभाय—पु० स्वभाव। [पु० सूक्ति।
सुभाषित—सुंदर रूप से कहा हुआ।
सुभाषी—मिष्टभाषी।
सुभास—अधिक चमकीला।
सुभिक्ष—पु० सुकाल।
सुभीता—पु० आसानी, सुयोग।
सुभूषित—भली भाँति अलंकृत।
सुम—पु० टाप, खुर।
सुमंगली—स्त्री० विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा। [सुबुद्धि, मेलजोल, भक्ति।
सुमत, सुमति—बुद्धिमान्। स्त्री०
सुमधुर—बहुत मीठा। [पंडित, पुष्प।
सुमन—दयालु, सुंदर। पु० देवता,
सुमनचाप—पु० कामदेव। [फूल।
सुमनस—प्रसन्न चित्त। पु० देवता,
सुमरनी—स्त्री० नाम जपने की सत्ताइस दानों की एक छोटी माला।
सुमार्ग—पु० अच्छा रास्ता।
सुमित्र—पु० अच्छा मित्र।
सुमुख—सुन्दर मुखवाला, सुन्दर, प्रसन्न, कृपालु। पु० शिव, गणेश, पंडित।
सुमुखी—स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री, आइना।
सुमृत, सुमृति—स्त्री० स्मृति।
सुमेध, सुमेधा—बुद्धिमान्।
सुमेरु—बहुत ऊँचा, सुन्दर। पु० एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कह।

गया है, जपमाला के बीच का बड़ा दाना, उत्तरी ध्रुव, शिव।

सुयश—पु० अच्छा यश।

सुयोग—पु० अच्छा मौका।

सुयोग्य—बहुत योग्य।

सुयोधन—पु० दुर्योधन।

सुरंग—सुन्दर रंग का, सुन्दर, रसपूर्ण, लाल, स्वच्छ। स्त्री० जमीन या पहाड़ खोद कर बनाया हुआ रास्ता। [स्वर, ध्वनि।

सुर—पु० देवता, सूर्य, विद्वान्, मुनि,

सुरकंत—पु० सुन्दर।

सुरक—पु० नाक पर का एक प्रकार का तिलक।

सुरकरी—पु० दिग्गज।

सुरकेतु—पु० इंद्र, देवताओं या इंद्र की ध्वजा।

सुरक्षण—पु० हिफाजत। [हुआ।

सुरक्षित—अच्छी तरह हिफाजत किया।

सुरखाब—पु० चकवा। मु० सुरखाब का पर लगना = अनोखापन होना।

सुरखुरू—दे० "सुर्खरू"।

सुरगिरि—पु० सुमेरु।

सुरगुरु—पु० बृहस्पति।

सुरचाप—इंद्रधनुष।

सुरत—पु० संभोग। स्त्री० ध्यान।

सुरतरंगिणी—स्त्री० गंगा।

सुरतरु—पु० कल्पवृक्ष।

सुरता—चतुर। स्त्री० चिंता, सुध, देवत्व, देवसमूह।

सुरतान—पु० सुलतान।

सुरति—स्त्री० सुधि, भोग विलास।

सुरतिवंत—कामातुर।

सुरती—स्त्री० खैनी।

सुरदीर्घिका—स्त्री० आकाश गंगा।

सुरद्रुम—पु० कल्पवृक्ष।

सुरधाम—पु० स्वर्ग।

सुरधुनी—स्त्री० गंगा।

सुरधेनु—स्त्री० कामधेनु।

सुरनदी—स्त्री० गंगा, आकाश गंगा।

सुरनाह—पु० इंद्र।

सुरनिलय—पु० सुमेरु पर्वत।

सुरप, सुरपति—पु० इंद्र, विष्णु।

सुरपथ—पु० आकाश।

सुरपाल—पु० इंद्र।

सुरपुर—पु० स्वर्ग। [एक बाजा।

सुरबहार—पु० सितार की तरह का

सुरबेल—स्त्री० कल्पलता।

सुरभान—पु० इंद्र, सूर्य।

सुरभि—सुगन्धित, सुन्दर, श्रेष्ठ। पु० बसंत काल, चैत्र मास, स्वर्ण। स्त्री० पृथ्वी, गौ, गायों की अधिष्ठात्री देवी, शराब, तुलसी, सुगन्धि।

सुरभित—सुगन्धित।

सुरभी—स्त्री० सुगन्धि, गाय, चंदन।

सुरभीपुर—पु० गोलोक।

सुरभूप—पु० इंद्र, विष्णु।

सुरभोग—पु० अमृत । [नीला ।
सुरमई—सुरमे के रंग का, हलका
सुरमणि—पु० चिंतामणि ।
सुरमा—पु० नीले रंग का प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं । [पात्र ।
सुरमादानी—स्त्री० सुरमा रखने का
सुरमौर—पु० विष्णु ।
सुरम्य—सुंदर ।
सुरराज—पु० इंद्र, विष्णु ।
सुरलोक—पु० स्वर्ग । [देवी ।
सुरवधू—स्त्री० देवताओं की स्त्री,
सुरवल्ली—स्त्री० तुलसी ।
सुरवृक्ष—पु० कल्पवृक्ष ।
सुरशाखा—स्त्री० कल्पवृक्ष ।
सुरस—सरस, मधुर, सुन्दर ।
सुरसदन—पु० स्वर्ग ।
सुरसर—पु० मानसरोवर । स्त्री० दे० "सुरसरी" ।
सुरसरसुता—स्त्री० सरयू नदी ।
सुरसरि, सुरसरी, सुरसरिता—स्त्री० गंगा ।
सुरसा—स्त्री० तुलसी, ब्राह्मणी, दुर्गा, नागमाता ।
सुरसाईं—पु० इन्द्र, शिव ।
सुरसुन्दरी—स्त्री० अप्सरा, दुर्गा, देवकन्या ।
सुरसुरभी—स्त्री० कामधेनु ।
सुरस्वामी—पु० इंद्र ।

सुरांगना—स्त्री० देवपत्नी, अप्सरा ।
सुरा—स्त्री० शराब, जल, साँप ।
सुराख—पु० छेद । [राग, पता ।
सुराग—पु० अत्यन्त प्रेम, सुन्दर
सुरा गाय—स्त्री० एक किस्म की गाय ।
सुराचार्य—पु० बृहस्पति ।
सुराजीवी—पु० मदिरा से जीविका चलानेवाला, कलाल ।
सुराज—पु० अच्छा राज्य ।
सुराधिप—पु० इंद्र ।
सुरानीक—पु० देवताओं की सेना ।
सुरापगा—स्त्री० गंगा ।
सुरारि—पु० राक्षस ।
सुराल, सुरालय—पु० स्वर्ग, सुमेरु, देवमंदिर, शराबखाना । [बर्तन ।
सुराही—स्त्री० जल रखने का एक
सुरी—स्त्री० देवांगना ।
सुरीला—मीठे सुरवाला ।
सुरुचि—स्त्री० उत्तम रुचि, सुस्वाद ।
सुरुचिकर—स्वादिष्ट ।
सुरूप—सुन्दर, खूबसुरत ।
सुरूपता—स्त्री० सुंदरता ।
सुरूपा—सुन्दरी ।
सुरेंद्र—पु० इन्द्र, राजा ।
सुरेश—पु० इन्द्र, शिव, विष्णु, कृष्ण, लोकपाल । [रुद्र ।
सुरेश्वर—पु० इन्द्र, ब्रह्मा, शिव,
सुरेश्वरी—स्त्री० दुर्गा, लक्ष्मी, स्वर्गगंगा ।

सुरैत—स्त्री० रखेली।

सुरोचि—सुंदर।

सुर्ख—लाल। पु० गहरा लाल रंग।

सुर्खरू—तेजस्वी, प्रतिष्ठित, सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गयी हो।

सुर्खरूई—स्त्री० यश, मान, प्रतिष्ठा।

सुर्खी—स्त्री० लाली, लेख आदि का शीर्षक, लहू, ईंट का चूर्ण।

सुलक्षण—अच्छे लक्षणोंवाला, भाग्यवान्। पु० शुभ लक्षण।

सुलग—पास, निकट।

सुलगना—जलना, संताप होना।

सुलच्छ—सुन्दर।

सुलझना—उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना, जटिलताओं का दूर होना।

सुलटा—सीधा। जो उलटा न हो।

सुलतान—पु० बादशाह।

सुलतानी—सुलतान का। स्त्री० बादशाही।

सुलफा—पु० वह तमाखू जो चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाता है, चरस।

सुलफेबाज—पु० सुलफा पीनेवाला।

सुलभ—सहज में मिलनेवाला, सुगम, साधारण।

सुललित—अत्यंत सुन्दर।

सुलह—स्त्री० मेल, लड़ाई के अंत में होनेवाला मेल।

सुलहनामा—पु० संधिपत्र।

सुलोचन—सुन्दर नेत्रवाला।

सुलोचना, सुलोचनी—सुन्दर नेत्रोंवाली।

सुवक्ता—उत्तम व्याख्यान देनेवाला।

सुवचन—मिष्टभाषी।

सुवटा—पु० दे० "सुअटा"।

सुवन—पु० सूर्य, अग्नि, चंद्रमा, दे० "सुअन", दे० "सुमन"।

सुवर्ण—उज्ज्वल, पीला। पु० सोना, धन, धतूरा, एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा।

सुवह—सहज में उठाने योग्य, पु० धैर्यवान्, धीर, एक हवा।

सुवहा—स्त्री० वीणा।

सुवार—पु० रसोइया, अच्छा दिन।

सुवास—पु० सुगंध, सुन्दर घर।

सुवासिका—स्त्री० सुगंध करनेवाली।

सुवासित—खुशबूदार।

सुवासिनी—स्त्री० युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री, सधवा स्त्री।

सुविधा—स्त्री० सुभीता।

सुवीर्य—महा बलवान, बड़ा बहादुर।

सुवेश, सुवेष—सुन्दर वेशयुक्त, सुन्दर।

सुव्यवस्थित—सुप्रबन्धयुक्त।

सुव्रत—दृढ़ता से व्रत पालन करने-वाला।

सुशिक्षित—अच्छी शिक्षा पाया हुआ।
सुशीतल—बहुत ठंढा।
सुशील—उत्तम स्वभाववाला, सुचरित्र, नम्र।
सुशीला—उत्तम स्वभाववाली, भोली।
सुशोभित—अत्यंत शोभायमान।
सुश्राव्य—जो सुनने में अच्छा लगे।
सुश्री—बहुत सुन्दर, बहुत धनी।
सुश्रुत—अच्छी तरह सुना हुआ। पु० चिकित्सा की एक प्रसिद्ध पुस्तक।
सुषमा—स्त्री० अत्यंत सुन्दरता।
सुषिर—छेदवाला। पु० बाँस, बेत, आग, वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो।
सुषुप्त—गहरी नींद में सोया हुआ।
सुषुप्ति—स्त्री० घोर निद्रा, अज्ञान।
सुषुम्ना—स्त्री० हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्य भाग में बतायी जाती है, वैद्यक के चौदह प्रधान नाड़ियों में एक जो नाभि के मध्य में है।
सुषेण—पु० विष्णु।
सुष्ट—अच्छा।
सुष्ठ—सुंदर। अच्छी तरह।
सुष्ठता—स्त्री० सौभाग्य, सुन्दरता।
सुसंगति—सत्संग।

सुसंस्कृत—खूब शुद्ध किया हुआ।
सुसज्जित—भली भाँति सजाया हुआ।

सुसताना—विश्राम करना।
सुसमय—पु० सुकाल।
सुसरित—स्त्री० गंगा।
सुसाध्य—जो सहज में किया जा [सके।
सुस्त—दुर्बल, उदास, आलसी, धीमी चालवाला।
सुस्तना—स्त्री० सुन्दर स्तनवाली स्त्री।
सुस्ती—स्त्री० शिथिलता, आलस्य।
सुस्थ—नीरोग, भली भाँति स्थित।
सुस्थिति—स्त्री० अच्छी अवस्था।
सुस्मित—पु० हँसमुख।
सुहटा—सुहावना।
सुहाग—पु० अहिवात, सौभाग्य, [सधवापन।
सुहागिन, सुहागिनी—स्त्री० सधवा स्त्री, सौभाग्यवती।
सुहाना—शोभा देना, अच्छा लगना।
सुहावना—सुन्दर।
सुहारी—स्त्री० सादी पूरी।
सुहाल—पु० एक नमकीन पकवान।
सुहावना—सुन्दर, मनोहर।
सुहास—पु० मधुर मुसकान।
सुहासिनी—मधुर मुसकानवाली।
सुहृत्, सुहृद्—पु० अच्छे हृदयवाला, मित्र।
सूँड़—स्त्री० हाथी की लंबी नाक।
सूअर, सूकर—पु० एक प्रसिद्ध बनजंतु, एक प्रकार की गाली।
सूक्त—भली भाँति कहा हुआ। पु० वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह।

उत्तम कथन।
सूक्ति—स्त्री० सुन्दर पद या वाक्य।
सूक्ष्म-बहुत छोटा, बारीक या महीन। पु० परमाणु, परब्रह्म, लिंग शरीर।
सूक्ष्मदर्शक यंत्र—पु० खुर्दबीन, वह यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं।
सूक्ष्मदर्शिता-स्त्री० सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी—बारीक बात सोचने समझने वाला।
सूक्ष्म दृष्टि—स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जाँय। सूक्ष्मदर्शी।
सूक्ष्मशरीर—पु० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समूह।
सूखना—जल का न रहना, उदास होना, नष्ट होना, डरना, दुबला होना।
सूखा—जिसका पानी निकल गया हो, उदास, हृदयहीन, कोरा, केवल। पु० अनावृष्टि, सूखा स्थान।
सूचक—बतानेवाला। पु० सूई, सीनेवाला, नाटककार, सूत्रधार, कुत्ता। [विज्ञापन, छेदना।
सूचना—स्त्री० नोटिस, विज्ञप्ति,
सूचनापत्र—पु० विज्ञापन, विज्ञप्ति।
सूचा—स्त्री० सूचना।
सूचिका—स्त्री० सूई, सूँड़।
सूचित—बतलाया हुआ।
सूची—पु० भेदिया, चुगुलखोर, दुष्ट। स्त्री० सूई, दृष्टि, सेना का एक प्रकार का व्यूह। तालिका। [काम
सूचीकर्म—पु० सिलाई या सूई का
सूचीपत्र—पु० वह पत्र या पुस्तिका जिसमें किसी चीज की फेहरिस्त हो।
सूच्यार्थ—पु० वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता हो।
सूजन—स्त्री० फुलाव, शोथ।
सूजना—फूलना।
सूजा—पु० मोटी सूई। [युक्त रोग।
सूजाक—पु० मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाह-
सूजी—स्त्री० गेहूँ का दरदरा आटा।
सूझ—स्त्री० नजर, अनूठी कल्पना।
सूझना-दिखाई देना, ख्याल में आना।
सूझबूझ—स्त्री० समझ, अक्ल।
सूट—पु० पहनने के सब कपड़े।
सूटकेस—पु० कपड़े रखने का एक प्रकार का बक्स।
सूत—प्रसूत, उत्पन्न। पु० सूता, तागा, सारथि, भाट, चारण, पौराणिक, बढ़ई, सूत्रधार, सूर्य।
सूतक—पु० जन्म, वह अशौच जो संतान होने या किसीके मरने पर परिवारवालों को होता है।
सूतक गेह—पु० दे० "सूतिकागार।"
सूत्रधार—पु० बढ़ई।
सूतपुत्र—पु० सारथि।

सूति—स्त्री० जन्म, प्रसव, उद्गम ।

सूतिका—स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो । [पु०सौरी ।

सूतिकागार, सूतिकागृह, सूतीघर–

सूत्तर—बहुत श्रेष्ठ, बहुत बढ़कर ।

सूत्थान—चतुर । होशियार ।

सूत्र—पु० सूत, जनेऊ, रेखा, करधनी, नियम, पता, थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे ।

सूत्रकंठ—पु० ब्राह्मण, खंजन ।

सूत्रकार—पु० सूत्र रचयिता, बढ़ई, जुलाहा ।　　　[में हो ।

सूत्रग्रन्थ—पु० वह ग्रन्थ जो सूत्रों

सूत्रधर, सूत्रधार—पु० नाट्यशाला का व्यवस्थापक, बढ़ई ।

सूत्रपात—पु० प्रारम्भ, शुरू ।

सूत्रशाख—पु० शरीर ।

सूत्रात्मा—पु० जीवात्मा ।

सूथन—स्त्री० पायजामा ।

सूथनी—स्त्री० स्त्रियों के पहनने का पायजामा, एक प्रकार का कंद ।

सूद—पु० लाभ, ब्याज ।

सूदन—विनाश करनेवाला । पु० विनाशन, अङ्गीकरण, फेंकना । [पुत्र ।

सून—पु० प्रसव, कली, फूल, फल,

सूना—सुनसान । पु० एकांत । स्त्री० पुत्री, कसाईखाना, हत्या, गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा चक्की आदि जिनसे जीवहिंसा की संभावना रहती है ।

सूनापन—पु० एकांत ।

सूनृत—पु० सत्य और प्रिय वचन ।

सूनु—पु० पुत्र, छोटा भाई, नाती, सूर्य ।

सूनू—स्त्री० बेटी, लड़की ।

सूप—पु० पकी हुई दाल या उसका रसा, रसे की तरकारी, रसोइया वाण, अनाज फटकने की एक चीज ।

सूपक, सूपकार—पु० रसोइया ।

सूपशास्त्र—पु० पाकशास्त्र ।

सूफी—पु० मुसलमान में एक वेदान्ती सम्प्रदाय ।

सूबा—पु० प्रांत, प्रदेश ।

सूबेदार—पु० प्रान्त का शासक ।

सूबेदार मेजर—पु० फौज का एक छोटा अफसर ।　　　[या पद ।

सूबेदारी—स्त्री० सूबेदार का काम

सूम—कंजूस ।　　　[वीर, सूअर ।

सूर—पु० सूर्य्य, आक, पंडित, अन्धा,

सूरकांत—पु० सूर्य्यकांत ।

सूरज—पु० सूर्य्य, शनि, सुग्रीव । पु० सूर्य पर थूकना = निर्दोष या साधु व्यक्ति पर कलंक लगाना । सूरज को दीपक दिखाना = जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना ।

सूरजमुखी—स्त्री० एक फूल ।

सूरजसुता—स्त्री० यमुना ।

सूरत--स्त्री० रूप, उपाय, अवस्था,
सूरति—स्त्री० सुध।
सूरपुत्र--पु० सुग्रीव।
सूरमा—पु० योद्धा।
सूरमुखी--पु० सूर्यमुखी, शीशा।
सूर सावंत--पु० युद्धमंत्री, सरदार।
सूरसुत--पु० शनि, सुग्रीव।
सूरसुता—स्त्री० यमुना।
सूराख—पु० छेद। [सूर्य, कृष्ण।
सूरि—पु० यज्ञ करानेवाला, पंडित,
सूरी—पु० विद्वान्। स्त्री० विदुषी।
सूर्य्य—पु० सूरज, आक, बारह की संख्या। [स्फटिक, सूरजमुखी शीशा।
सूर्य्यकांत—पु० एक प्रकार का
सूर्य्यतनय--दे० "सूर्यपुत्र"।
सूर्य्यतनया—स्त्री० यमुना।
सूर्य्यपुत्र—पु० शनि, यम, वरुण, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनी कुमार।
सूर्य्यपुत्री—स्त्री० यमुना, बिजली।
सूर्य्यप्रभ-सूर्य्य के समान दीप्तिमान्।
सूर्य्यमंडल—पु० सूर्य्य का घेरा।
सूर्य्यमणि—पु० सूर्य्यकांत मणि।
सूर्य्य संक्रांति—स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
सूर्य्यावर्त्त—पु० अधकपाली।
सूर्य्यास्त-पु० सूर्य्य का डूबना, संध्या।
सूर्य्योदय—पु० सूर्य्य का उगना, प्रातःकाल।
सूर्य्योपासक—सूर्य्य की उपासना करनेवाला पारसी।
सूल—पु० बरछा, काँटा, कसक, पीड़ा भाला का उपरी भाग।
सूलना—भाले से छेदना या छिदना, पीड़ित होना या करना।
सूली—स्त्री० एक प्रकार का काँटा जिसपर चढ़ा कर अपराधी को प्राणदण्ड दिया जाता था।
सृक—पु० भाला, तीर, हवा, माला।
सृकाल—दे० "श्रृगाल"
सृग—पु० दे० "सृक"
सृजक—पु० सृष्टि करनेवाला।
सृजन—पु० सृष्टि।
सृजना—उत्पन्न करना। [निर्बाध।
सृति—स्त्री० रास्ता, जन्ममरण,
सृष्ट—उत्पन्न, मुक्त।
सृष्टि—स्त्री० उत्पत्ति, निर्माण, संसार की उत्पत्ति, संसार, प्रकृति। [ईश्वर।
सृष्टिकर्त्ता—पु० सृष्टि करनेवाला,
सृष्टिविज्ञान—पु० वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि का विचार हो।
सेंक—स्त्री० सेंकने की क्रिया।
सेंट—पु० सुगंधित पदार्थ, संत।
सेंटीमेंटल—भावुक।
सेंटर—पु० केन्द्र, मध्य विंदु।
सेंन्ट्रल—केन्द्रीय, मध्य का।
सेंटीमीटर—पु० एक नाप।
सेंत-स्त्री० कुछ खर्च न होना, मुफ्त।

सँतमेंत—व्यर्थ, मुफ्त में।
सँति, सँती—स्त्री० दे० "सँत"।
सँदुर—पु० दे० "सिंदूर"।
सेंद्रिय—जिसमें इंद्रियाँ हों।
सेंध—स्त्री० चोरी करने के लिये दीवार में किया गया छेद।
सेंधा—पु० एक नमक।
सेंवई—स्त्री० मैदे के सूत का लच्छा जो दूध में पकाया जाता है।
से—करण और अपादान कारक का चिह्न, समान, सदृश।
सेक—पु० सिंचाई, छिड़काव।
सेकेंड—एक मिनट का साठवाँ भाग।
सेकेंड क्लास—पु० दूसरा दर्जा।
सेक्रेटरी—पु० मन्त्री, मुंशी।
सेक्रेटरियट—पु० शासक या गवर्नर का दफ्तर।
सेक्शन—पु० विभाग।
सेचक—सींचनेवाला। [अभिषेक।
सेचन—पु० सिंचाई, छिड़काव,
सेज—स्त्री० शय्या, बिछौना, खाट।
सेजपाल—पु० शयनागार रक्षक।
सेजरिया—स्त्री० सेज, शय्या।
सेट—पु० एक ही प्रकार की कई चीजों का समूह।
सेटना—समझना, मानना।
सेठ—पु० महाजन, बड़ा साहूकार, बड़ा या थोक व्यापारी, मालदार आदमी, सुनार।
सेतु—पु० बंधन, बाँध, मेंड़, पुल, सीमा, नियम या व्यवस्था, ओंकार, व्याख्या। [स्त्री० सेना।
सेन—पु० शरीर, जीवन, बाज पक्षी।
सेनजित्—सेना को जीतनेवाला।
सेनय, सेनपति—पु० सेनापति।
सेना—सेवा करना, पूजना, नियमपूर्वक व्यवहार करना, पड़ा रहना, लिये बैठे रहना, मादा चिड़िया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठना। स्त्री० फौज, बरछी, इंद्र का वज्र, इंद्राणी।
सेनाजीवी—पु० सैनिक।
सेनाध्यक्ष—पु० सेनापति।
सेनानायक—पु० सेनापति। [रुद्र।
सेनानी—पु० सेनापति, कार्त्तिकेय, एक,
सेनापति, सेनापाल—पु० फौज का अफसर, कार्त्तिकेय, शिव।
सेनामुख—पु० सेना का अग्रभाग, सेना का एक खंड।
सेनावास—पु० छावनी, खेमा।
सेनाव्यूह—पु० सेना की भिन्न भिन्न स्थानों पर नियुक्ति, सैन्यविन्यास।
सेनिका—स्त्री० मादा बाज पक्षी।
सेनी—स्त्री० तश्तरी, मादा बाज पक्षी, पंक्ति, सीढ़ी।
सेनेट—दे० "सिनेट"।
सेनेटर—पु० सेनेट का मेम्बर।
सेब—पु० एक फल।

सेमल—पु० एक पेड़।
सेमेटिक—पु० मनुष्यों का एक वर्ग विभाग।
सेमीकोलन—पु० एक विराम चिन्ह [(;) ।
सेर—तृप्त। एक तौल।
सेराना—ठण्ढा होना, तृप्त होना, जीवित न रहना, समाप्त होना, चुकना, मूर्ति आदि को जल में समाधि देना।
सेल—पु० बरछा। स्त्री० भाला।
सेलना—मर जाना।
सेला—पु० साफा।
सेली—स्त्री० छोटा भाला, छोटा दुपट्टा, वह बद्धी या माला जिसे योगी गले में डालते या सिर में लपेटते हैं।
सेवक—पु० नौकर, भक्त, काम में लानेवाला, वास करनेवाला, सीने वाला।
सेवकाई—स्त्री० सेवा। [गुलाब।
सेवती—स्त्री० सफेद गुलाब, चैती
सेवन—पु० खिदमत, उपासना, प्रयोग, छोड़ कर न जाना, उपयोग, सीना, गूँथना।
सेवनी—स्त्री० दासी।
सेवनीय—सेवा योग्य, पूजा के योग्य, व्यवहार के योग्य, सीने योग्य।
सेवा—स्त्री० खिदमत, टहल, नौकरी, पूजा, आश्रय, रक्षा, संभोग।
सेवा टहल—पु० खिदमत।
सेवार, सेवाल—स्त्री० पानी में फैलने वाली एक घास।
सेवावृत्ति—स्त्री० नौकरी।
सेविंग बैंक—पु० वह बैंक जो छोटी छोटी रकमें व्याज पर ले।
सेविका—स्त्री० दासी।
सेवित—जिसकी सेवा की गयी हो, पूजित, व्यवहृत।
सेवी—सेवा, पूजा, संभोग या व्यवहार करने वाला।
सेव्य—जिसकी सेवा करना उचित हो, पूजा योग्य, काम में लाने योग्य, रक्षण के योग्य, संभोग के योग्य। पु० स्वामी, पीपल, जल।
सेव्य-सेवक—पु० स्वामी और सेवक।
सेशन—पु० लगातार कुछ दिन चलने-वाली बैठक, दौरा अदालत।
सेशन कोर्ट—पु० दौरा अदालत।
सेशन जज—पु० दौरा जज।
सेश्वर—ईश्वर युक्त, जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गयी हो।
सेस रंग—पु० सफेद रंग।
सेसर—पु० जालसाजी, जाल।
सेसरिया—जालिया।
सेहत—स्त्री० रोग से छुटकारा।
सेहतखाना—पु० पेशाब आदि करने और हवा खाने के लिये जहाज पर बनी हुई कोठरी।

सेहरा--पु० मौर, वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाये जाते हैं। मु० किसीके सिर सेहरा बँधना = किसी का कृतकार्य्य होना।
सेहुआँ-पु० एक प्रकार का चर्मरोग।
सैंतना-सँभाल कर रखना, बटोरना।
सैंधव—सिंध देश का, समुद्र संबंधी पु० सेंधा नमक, सिंधदेश वासी, सिंध देश का घोड़ा।
सैंपुल—पु० नमूना।
सै—सौ। स्त्री० तत्व, वीर्य, बढ़ती।
सैकड़ा--पु० सौ का समूह।
सैकड़े—फी सदी, प्रतिशत।
सैकड़ों—कई सौ, बहुत।
सैकत—बलुआ, बालू का बना।
सैकल—पु० हथियारों को साफ करने और उनपर सान चढ़ाने का काम।
सैकलगर—सान धरनेवाला।
सैथी—स्त्री० बरछी।
सैद्धांतिक—सिद्धांत संबंधी। पु० सिद्धांत जाननेवाला, तांत्रिक।
सैन—स्त्री० संकेत, चिह्न, सेना। पु० शयन, बाज पक्षी।
सैनापत्य—पु० सेनापतित्व। [संतरी।
सैनिक—सेना संबंधी। पु० सिपाही
सैनी—स्त्री० सेना। पु० हज्जाम।
सैनेश—पु० सेनापति।
सैन्य—फौज का। पु० सैनिक, सेना, छावनी।
सैफ—स्त्री० तलवार।
सैमंतिक—पु० सिंदूर।
सैयद—पु० मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी, मुसलमानों की एक जाति। [द्रौपदी।
सैरंध्री—स्त्री० अंतःपुर की दासी,
सैर—स्त्री० मन बहलाने के लिये घूमना फिरना, मौज, तमाशा।
सैरिक-- हल संबंधी। पु० किसान, खेती का बैल। [मनमौजी।
सैलानी—मनमना घूमनेवाला,
सैलाब--पु० बाढ़।
सोंचर—पु० एक नमक। [डंडा।
सोंटा—पु० डंडा, भाँग घोटने का
सोंठ—स्त्री० सुखाई अदरक।
सो—वही।
सोआ—पु० एक साग। [कागज।
सोख्ता—पु० स्याही सोखनेवाला
सोग--पु० दुःख।
सोच--पु० चिंता, दुःख, पछतावा।
सोचविचार-पु० समझ बूझ, गौर।
सोज—स्त्री० सूजन
सोजन—पु० सूई, काँटा।
सोजिश--स्त्री० सूजन, शोथ।
सोडा—पु० एक प्रकार का क्षार पदार्थ। [हुआ पाचक पानी।
सोडा वाटर—पु० सोडे से बनाया

सोता—पु० झरना, नहर ।
सोत्कंठ—उत्कंठा सहित ।
सोत्कर्ष—उत्कर्षयुत, उत्तम ।
सोदर—एक गर्भ से उत्पन्न । पु० सगा भाई । [होना, महल ।
सोध—पु० खोज, संशोधन, चुकता
सोधन—पु० खोज ।
सोधना—शुद्ध करना, दोष दूर करना, निर्णय करना, खोजना, दुरुस्त करना, ऋण चुकाना ।
सोन—पु० सोना, एक नदी ।
सोनजूही—स्त्री० पीली जूही ।
सोना—नींद लेना । पु० एक धातु । मु० सोने में सुगंध = किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना ।
सोपान—पु० सीढ़ी । [बहुत भला लगे ।
सोफियाना—जो देखने में सादा पर
सोम—पु० प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था, वैदिक काल के एक देवता, चंद्रमा, सोमवार, कुबेर, यम, वायु, अमृत, जल, सोमयज्ञ, स्वर्ग ।
सोमकर—पु० चंद्रमा की किरण ।
सोमनाथ—पु० प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से एक । [वाला ।
सोमयाजी—पु० सोमयाग करने-
सोमरस—पु० सोमलता का रस ।
सोमराज—पु० चंद्रमा ।
सोमरोग—पु० एक स्त्री रोग ।
सोमलता—स्त्री० ब्राह्मी लता ।
सोमवंश—पु० चंद्रवंश ।
सोमवती अमावस्या—स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या ।
सोमवल्लरी—स्त्री० ब्राह्मी ।
सोमसुत—पु० बुद्ध ।
सोमेश्वर—पु० सोमनाथ ।
सोरठा—पु० एक छंद ।
सोरा—पु० एक क्षार ।
सोलह—पु० एक संख्या । मु० सोलह आना = संपूर्ण । [वादी ।
सोशलिस्ट—पु० साम्यवादी, समाज-
सोशल—समाज संबंधी, समाज का ।
सोशलिज्म—पु० साम्यवाद, समाजवाद ।
सोसाइटी—स्त्री० समाज ।
सोहगी—स्त्री० सिंदूर आदि सुहाग की वस्तुएँ ।
सोहगैला—पु० सिंदूर रखने की डिबिया, सिंदूरा ।
सोहन—सुंदर । पु० सुंदर पुरुष ।
सोहना—शोभित होना, अच्छा लगना, सुंदर ।
सोहनी—सुंदर । स्त्री० झाड़ू ।
सोहबत—स्त्री० संगत, संयोग ।
सोहर, सोहला—पु० एक प्रकार का गीत जिसे घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं ।

सोहीं, सोहैं--सामने ।
सौंघा—अच्छा, उचित ।
सौंचना—मलत्याग करना ।
सौंदर्य—पु० सुंदरता, खूबसूरती ।
सौंध—पु० दे० "सौध"। स्त्री० सुगंध ।
सौंधना—सुगंधित करना ।
सौंपना—सुपुर्द करना, जिम्मे करना।
सौंह—स्त्री० शपथ ।
सौ—पु० एक संख्या । मु० सौ बात की एक बात = सारांश, तात्पर्य्य ।
सौकुमार्य--सुकुमारता, जवानी का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना जाता है ।
सौख-पु० दे० "शौक"। [आराम ।
सौख्य—पु० सुख का भाव, सुख,
सौगंद—स्त्री० शपथ ।
सौगंध—पु० सुगंध, सुगंधित तेल आदि बेचनेवाला । स्त्री० शपथ ।
सौगात—स्त्री० वह वस्तु जो परदेश से इष्टमित्रों को देने के लिये लायी जाय, उपहार ।
सौजन्य—पु० सुजनता ।
सौत, सौतिन—स्त्री० अपने पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका ।
सौतेला—सौत से उत्पन्न, सौत का।
सौदा—पु० क्रयविक्रय की वस्तु, लेन देन, क्रय विक्रय ।
सौदाई—पागल ।
सौदागर—पु० व्यापारी । [गार ।
सौदागरी—स्त्री० तिजारत, रोज-
सौदामनी—स्त्री० बिजली ।[पत्थर ।
सौध—पु० भवन, चाँदी, दूधिया
सौधर्म्य—पु० साधुता ।
सौभ—पु० आकाश में राजा हरिश्चंद्र की कल्पित नगरी ।
सौभग—पु० सौभाग्य, सुख, ऐश्वर्य्य, सुंदरता ।
सौभद्र—पु० अभिमन्यु ।
सौभागिनी—स्त्री० सधवा स्त्री ।
सौभाग्य—पु० अच्छा भाग्य, सुख, कल्याण, सुहाग, ऐश्वर्य, सुंदरता ।
सौभाग्यवती—सधवा, सुहागिन ।
सौभाग्यवान्—अच्छे भाग्यवाला, सुखी और संपन्न । [आनंद ।
सौमनस—फूलों का, मनोहर । पु०
सौमनस्य—पु० प्रसन्नता ।
सौमित्र—पु० सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण, मित्रता ।
सौम्य—सोमलता संबंधी, चंद्रमा संबंधी, शीतल और स्निग्ध, सुशील, शुभ, सुंदर । पु० सोमयज्ञ, बुध, ब्राह्मण, अगहन, सज्जनता ।
सौम्य—सुंदर ।
सौर--सूर्य्य संबंधी, सूर्य्य से उत्पन्न। पु० शनि, सूर्य्य का उपासक ।
सौर दिवस—पु० एक सूर्योदय से

दूसरे सूर्योदय तक का समय।
सौरभ—पु० सुगंध, केसर, आम।
सौरभित—सुगंधित।
सौर मास—पु० एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।
सौर वर्ष—पु० एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।
सौरी—स्त्री० वह कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने।
सौर्य—सूर्य संबंधी।
सौवीरांजन—पु० सुरमा।
सौष्ठव—पु० सुडौलपन, सुंदरता।
सौहार्द, सौहार्द्य—पु० मित्रता।
सौहित्य—पु० पूर्णता, सुंदरता, संतोष।
सौहीं—सामने।
सौहृद—पु० मित्रता, मित्र। [देह।
स्कंद—पु० निकलना, विनाश, शिव,
स्कंदन—पु० रेचन, निकलना।
स्कंध—पु० कंधा, वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती हैं, डाल, समूह, सेना का अंग, ग्रंथ का विभाग, शरीर, मुनि, युद्ध, दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। [वाला।
स्कंधधार—पु० कहार, भार ढोने-
स्कंधावार—पु० शिविर, छावनी, सेना।
स्कंभ—पु० खंभा, ईश्वर।
स्कालर—पु० वह जो स्कूल या कालेज में पढ़ता हो, छात्र, उच्च कोटि का विद्वान्।
स्कालरशिप—पु० छात्रवृत्ति, वजीफा।
स्कीम—पु० योजना।
स्कूल—पु० विद्यालय, पाठशाला।
स्कूली—स्कूल संबंधी, स्कूल का।
स्क्रू—पु० पेंच।
स्खलन—पु० गिरना। [चूका हुआ।
स्खलित—गिरा हुआ, फिसला हुआ,
स्टांप—पु० एक प्रकार का सरकारी कागज, डाक का टिकट, मोहर, छाप।
स्टाइल—स्त्री० ढंग, तरीका, शैली, पद्धति, लेखन शैली।
स्टाक—पु० बिक्री का माल, रसद, सामान, भंडार, गुदाम, सरकारी कर्ज की हुंडी।
स्टाक एक्सचेंज—पु० वह मकान या स्थान जहाँ स्टाक या शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं, स्टाक का काम करनेवालों या दलालों की संघटित सभा।
स्टाक ब्रोकर—पु० स्टाक का दलाल।
स्टिचिंग मशीन—किताब आदि सीने की कल।
स्टीम—पु० भाप। [वाला एंजिन।
स्टीम एंजिन—पु० भाप से चलने-
स्टीमर—पु० स्टीम अर्थात भाप से चलनेवाला जहाज।
स्टूल—पु० तिपाई।

स्टेज—पु० रंगमंच ।

स्टेट—पु० रियासत, राष्ट्र ।

स्टेटमेंट—पु० बयान ।

स्टेशन—पु० रेलगाड़ियों के ठहरने और उनपर मुसाफिरों के चढ़ने उतरने के लिये बनी हुई जगह ।

स्ट्राइक—पु० हड़ताल ।

स्तंभ—पु० खंभा, पेड़ का तना, जड़ता, अचलता, रुकावट ।

स्तंभक-रोकनेवाला, कब्ज करनेवाला, वीर्य रोकनेवाला ।

स्तंभन—पु० रुकावट, वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब । वीर्यपात रोकने की दवा, निश्चेष्ट करना, कब्ज ।

स्तंभित—निश्चल, अवरुद्ध ।

स्तन—पु० स्त्रियों की छाती जिसमें दूध रहता है ।

स्तनपान—पु० स्तन का दूध पीना ।

स्तनपायी–माता के स्तन से दूध पीनेवाला ।

स्तब्ध—स्तंभित, निश्चेष्ट, स्थिर, मंद ।

स्तर-पु० तह, शय्या ।

स्तरण—पु० फैलाना ।

स्तव—पु० स्तुति, स्तोत्र ।

स्तवक-पु० फूलों का गुच्छा, समूह, परिच्छेद, स्तुति करनेवाला ।

स्तवन—पु० गुणकीर्तन ।

स्तीर्ण—विस्तृत ।

स्तुत—प्रशंसित ।

स्तुति—स्त्री० प्रशंसा, दुर्गा ।

स्तुत्य—प्रशंसनीय ।

स्तूप—पु० ऊँचा टीला, वह टीला जिसके नीचे बुद्ध या बौद्ध महात्माओं के अस्थि आदि स्मृतिचिह्न संरक्षित हों ।

स्तेय—पु० चोरी ।

स्तोक—पु० बूँद, पपीहा ।

स्तोता—स्तुति करनेवाला ।

स्तोत्र—पु० किसी देवता का छंदोबद्ध गुणकीर्तन, स्तुति ।

स्तोम—पु० स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ, समूह ।

स्त्री—स्त्री० नारी, पत्नी, मादा ।

स्त्रीगमन—पु० संभोग, मैथुन ।

स्त्रीधन-पु० वह धन जिसपर स्त्रियों का विशेष रूप से अधिकार हो ।

स्त्रीधर्म—पु० रजोदर्शन ।

स्त्रीप्रसंग, स्त्रीसमागम-पु० संभोग, मैथुन ।

स्त्रीरत्न—पु० श्रेष्ठ स्त्री, लक्ष्मी ।

स्त्रीराज्य—पु० स्त्री के अधीन राज्य ।

स्त्रीलिंग—पु० स्त्रीवाचक लिंग ।

स्त्रीव्रत—पु० पत्नीव्रत ।

स्त्रैण—स्त्री संबंधी, स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला ।

स्थ—एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है स्थित, उपस्थित, लीन, रहनेवाला ।

स्थकित—थका हुआ।
स्थगित—ढका हुआ, रोका हुआ, मुलतवी।
स्थपति—पु० शासक, बढ़ई।
स्थल—पु० जमीन, अवसर। [वाला।
स्थलचारी—पु० जमीन पर चलने-
स्थलज—स्थल में उत्पन्न।
स्थली—स्त्री० भूमि, स्थान।
स्थलीय—स्थल संबंधी, स्थल का, स्थानीय। [पूज्य बौद्ध भिक्षु।
स्थविर—पु० वृद्ध, ब्रह्मा, वृद्ध और
स्थाणु—स्थिर। पु० स्तंभ, ठूंठ, शिव।
स्थान—पु०, टिकाव, जमीन, जगह, डेरा, पद, ओहदा, मंदिर, मौका।
स्थानच्युत, स्थानभ्रष्ट—अपनी जगह से गिरा हुआ।
स्थानांतर—दूसरा स्थान।
स्थानांतरित—जो एक स्थान से हट कर दूसरे स्थान पर गया हो।
स्थानापन्न—दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप के काम करनेवाला, एवजी।
स्थानिक, स्थानीय—उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो।
स्थापक—स्थापनकर्त्ता, मूर्त्ति बनाने-वाला। [निर्माण-विद्या।
स्थापत्य—पु० भवन-निर्माण, भवन-
स्थापन—पु० खड़ा करना, रखना, नया काम जारी करना, निरूपण, साबित करना।
स्थापना—स्त्री० दे० "स्थापन"।
स्थापित—जिसकी स्थापना की गयी हो, व्यस्थित, ठहरा हुआ।
स्थायित्व—टिकाऊपन, स्थिरता, मजबूती। [वाला, टिकाऊ।
स्थायी—ठहरनेवाला, बहुत दिन चलने-
स्थायी भाव—पु० साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जिसकी सदा रस में स्थिति रहती है।
स्थाली—स्त्री० हँडिया।
स्थावर—अचल, जंगम से उलटा। पु० अचल संपत्ति, पर्वत।
स्थित—अपने स्थान पर ठहरा हुआ, बैठा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ, मौजूद, खड़ा हुआ, रहनेवाला।
स्थितप्रज्ञ—जिसकी विवेक बुद्धि स्थिर हो, समस्त मनोविकारों से रहित।
स्थिति—स्त्री० रहना, टिकाव, निवास, अवस्था, पद, एक स्थान या अवस्था में रहना, अस्तित्व, पालन, स्थिरता।
स्थितिस्थापक—किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था में प्राप्त कराने-वाला, लचीला। पु० वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय।
स्थिर—निश्चल, निश्चित, शांत,

दृढ़, स्थायी, नियत। पु० शिव, पहाड़, देवता, ज्योतिष में एक योग।

स्थूल—मोटा, सूक्ष्म का उलटा, सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य। पु० वह पदार्थ जिसका इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके।

स्थैर्य्य—पु० स्थिरता, दृढ़ता।

स्नात—नहाया हुआ।

स्नातक—पु० वह जिसने ब्रह्मचर्य्य व्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान—पु० नहाना। [घर।

स्नानागार—पु० स्नान करने का

स्नायविक—स्नायु संबंधी।

स्नायु—स्त्री० शरीर के अंदर की वे नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है। [चिकना, शीतल।

स्निग्ध—जिसमें स्नेह या तेल हो,

स्निग्धता—स्त्री० चिकनापन, प्रिय होने का भाव।

स्नेह—पु० प्रेम, चिकना पदार्थ, विशेषतः तेल, कोमलता।

स्नेहपात्र—प्यारा।

स्नेही—पु० प्रेमी, मित्र।

स्पंज—पु० पानी सोखनेवाला एक सामुद्रिक पदार्थ, मुरदा बादल।

स्पंदन—पु० धीरे धीरे हिलना, फड़कना।

स्पंदित—फड़का हुआ।

स्पर्द्धा—स्त्री० संघर्ष, होड़, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ने की इच्छा, साहस, बराबरी।

स्पर्द्धी—स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्श—पु० छूना, त्वगिंद्रिय अर्थात त्वचा का वह गुण जिसके कारण ऊपर पड़नेवाले दबाव का ज्ञान होता है, त्वगिंद्रिय का विषय।

स्पर्शजन्य—जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो, संक्रामक।

स्पर्शन—पु० छूना। [त्वच।

स्पर्शनेंद्रिय—स्त्री० छूने की इंद्रिय,

स्पर्शमणि—पु० पारस पत्थर।

स्पर्शी—छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय—दे० "स्पर्शनेंद्रिय"।

स्पष्ट—साफ।

स्पष्टतया—स्पष्ट रूप से।

स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी—स्पष्ट कहनेवाला। [क्रिया।

स्पष्टीकरण—पु० स्पष्ट करने की

स्पिरिट—स्त्री० आत्मा, रूह, जीवन-शक्ति, शराब। [वक्तृता।

स्पीच—पु० व्याख्यान, लेक्चर,

स्पृश—स्पर्श करनेवाला।

स्पृश्य—छूने लायक।

स्पृष्ट—छूआ हुआ।

स्पृहणीय—वांछनीय, गौरवशाली।

स्पृहा—स्त्री० इच्छा।

स्पृही—इच्छा करनेवाला।

स्पेशल—खास।

स्प्रिंग—स्त्री० कमानी।

स्प्रिंगदार—कमानीवाला।

स्प्रिचुअलिज्म—पु० भूतविद्या, आत्मविद्या।

स्फटिक—पु० एक तरह का सफेद कीमती पत्थर जो काँच की तरह पारदर्शी होता है, सूर्य्यकांत मणि, शीशा, फिटकिरी।

स्फार—बहुत, विकट।

स्फाल—पु० स्फूर्ति। [समृद्ध।

स्फीत—बढ़ा हुआ, फूला हुआ,

स्फुट—व्यक्त, खिला हुआ, स्पष्ट, फुटकर। [गया हो, हँसता हुआ।

स्फुटित—विकसित, जो स्पष्ट किया

स्फुरण—पु० जरा जरा हिलना, अंग का फड़कना, स्फूर्ति।

स्फुरित—जिसमें स्फुरण हो।

स्फुलिंग—पु० चिनगारी।

स्फूर्त्ति—स्त्री० धीरे धीरे हिलना, फुर्ती, तेजी, कोई काम करने के लिये मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना।

स्फोट—पु० किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेद कर बाहर निकलना। फोड़ा फुंसी आदि।

स्फोटक—पु० फोड़ा, फुंसी।

स्फोटन—पु० अंदर से फोड़ना, फाड़ना।

स्मर—पु० कामदेव, स्मरण।

स्मरण—पु० याद आना।

स्मरणीय—याद करने लायक।

स्मरारि—पु० महादेव।

स्मारक—पु० स्मरण करानेवाला, स्मृति बनाये रखने के लिये प्रस्तुत की हुई या दी हुई वस्तु, यादगार।

स्मार्त्त—स्मृति संबंधी, स्मृति का। पु० वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हुए हैं, वह जो स्मृतियों में लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो, स्मृति शास्त्र का पंडित।

स्मित—खिला हुआ। पु० धीमी हँसी।

स्मृत—याद किया हुआ।

स्मृति—स्त्री० स्मरण, याद, हिन्दुओं के धर्मशास्त्र, अठारह की संख्या।

स्यंदन—पु० टपकना, गलना, जाना, रथ, वायु।

स्यात्—शायद।

स्याद्वाद—पु० जैन दर्शन।

स्यानप, सयानपन—पु० चतुरता, चालाकी।

स्याना—चतुर, चालाक, बालिग। पु० वृद्ध पुरुष, ओझा, हकीम।

स्यापा—पु० मरे हुए मनुष्य के लिये शोक मनाने की रीति।

स्याल—पु० साला, सियार।

स्याह—काला।

स्याहा—रोजनामचा, बहीखाता।

स्याही—स्त्री० रोशनाई, कालापन।

स्यों, स्यों—सहित, पास ।
स्रक्, स्रज्—स्त्री० फूलों की माला ।
स्रव—पु० बहना, मूत्र । [पेशाब ।
स्रवण—पु० बहाव, गर्भपात, मूत्र,
स्रवना—बहना, बहाना, गिरना, गिराना । [विष्णु, शिव ।
स्रष्टा—पु० सृष्टि करनेवाला, ब्रह्मा,
स्राव—पु० बहना, गर्भपात, रस ।
स्रावक, स्रावी—बहानेवाला ।
स्रुतिमाथ—पु० विष्णु ।
स्रुवा—स्त्री० लकड़ी की करछी जिससे हवन में घी की आहुति देते हैं ।
स्त्रोत—पु० धारा ।
स्त्रोतस्विनी—स्त्री० नदी । [चट्टी ।
स्लीपर—पु० एक प्रकार की जूती,
स्लेट—पु० लिखने के लिये पत्थर की पतली पटरी ।
स्वः—स्वर्ग ।
स्व—अपना ।
स्वकर्मी—स्वार्थी, खुदगरज ।
स्वकीया—स्त्री० अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री । [से ।
स्वगत—आप ही आप, अपने आप
स्वच्छंद—जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य करे, स्वतंत्र, मनमाना काम करनेवाला, निरंकुश, स्वतंत्र, आजाद, बेधड़क ।
स्वच्छंदता—स्त्री० मनमानापन, निरंकुशता ।
स्वच्छ—साफ, उज्ज्वल, स्पष्ट, शुद्ध ।
स्वज—पु० बेटा, खून, पसीना ।
स्वजन—पु० अपने परिवार के लोग, रिश्तेदार ।
स्वजात—अपने से उत्पन्न । पु० पुत्र ।
स्वजाति—स्त्री० अपनी जाति ।
स्वतंत्र—स्वाधीन, स्वेच्छाचार, अलग, बंधन या नियम आदि से रहित ।
स्वतंत्रता—स्त्री० स्वाधीनता, आजादी ।
स्वतः—अपने आप । [का भाव ।
स्वत्व—पु० अधिकार, अपना होने
स्वदेश—पु० अपना देश, मातृभूमि, वतन । [उत्पन्न या बना हुआ ।
स्वदेशी—स्वदेश का, अपने देश में
स्वधर्म—पु० अपना धर्म-कर्म ।
स्वधा—स्त्री० पितरों की हवि या अन्न, पितरों के मंत्र में आनेवाला शब्द, दक्ष की कन्या ।
स्वधाधिप—पु० अग्नि ।
स्वन—पु० शब्द ।
स्वनामधन्य—जो अपने नाम के कारण धन्य हो ।
स्वप्न—पु० निद्रा, निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना, मन में उठनेवाली ऊँची या असंभव कल्पना
स्वप्नगृह—पु० शयनागार ।
स्वप्नदोष—पु० निद्रावस्था में बीर्य्यपात होना जो एक प्रकार का

रोग है। [आदत, तासीर।

स्वभाव—पु० मिजाज, प्रकृति,

स्वभावज—स्वाभाविक।

स्वभावतः—स्वभाव से, सहज ही।

स्वभावसिद्ध—स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति—स्त्री० सहज स्वभाव से कही जानेवाली उक्ति।

स्वभू—आप से आप होनेवाला। पु० ब्रह्मा, विष्णु।

स्वयं—खुद, आप से आप।

स्वयंप्रकाश—पु० वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता से प्रकाशित हो, परमात्मा।

स्वयंभू—जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो। पु० ब्रह्मा, कामदेव, विष्णु, शिव।

स्वयंवर—पु० कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से कन्या के पति चुनने का विधान, वह स्थान जहाँ यह विधान होता हो।

स्वयंवरण—पु० दे० "स्वयंवर"।

स्वयंवरा—स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति चुननेवाली स्त्री।

स्वयंसेवक—पु० वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे।

स्वयमेव—खुद ही।

स्वर्—पु० स्वर्ग, परलोक।

स्वर—पु० शब्द, वह वर्ण जिसका उच्चारण आप से आप होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है, वेदपाठ में शब्दों का चढ़ाव उतार, सुर। संगीत में स्वर सात हैं—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद जिनके संक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध, और नि हैं।

स्वरभंग—पु० आवाज बैठ जाना।

स्वरस—पु० पत्ती आदि को कूट, पीस और छान कर निकाला हुआ रस।

स्वराज्य—पु० अपना राज्य।

स्वराट्—पु० ब्रह्मा, ईश्वर, ऐसे राज्य का स्वामी जिसमें स्वराज्य शासन प्रणाली प्रचलित हो। [राष्ट्र।

स्वराष्ट्र—पु० अपना राज्य या

स्वरित—स्वर से युक्त, गूँजता हुआ। पु० वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से और न बहुत धीरे से हो।

स्वरूप—खूबसूरत, समान। तौर पर। पु० आकार, मूर्त्ति, चित्र, सारूप्य।

स्वरूपज्ञ—पु० परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचाननेवाला।

स्वरूपवान्—खूबसूरत।

स्वरोदय—पु० वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्ग—पु० पुराणानुसार सात लोकों में एक लोक जहाँ मरने पर सत्कर्म

करनेवालों की आत्माएँ सुखपूर्वक निवास करती हैं, ईश्वर, सुख, आकाश, सुखप्रद स्थान।
स्वर्गगमन--पु० मृत्यु।
स्वर्गत—मरा हुआ।
स्वर्गगामी—स्वर्ग गया हुआ, भूत।
स्वर्गतरु—पु० कल्पवृक्ष।
स्वर्गनदी—स्त्री० आकाश गंगा।
स्वर्गवधू--स्त्री० अप्सरा।
स्वर्गवास--पु० मरना।
स्वर्गवासी--स्वर्ग में रहनेवाला, जो मर गया हो।
स्वर्गारोहण--पु० मरना।
स्वर्गीय—स्वर्ग संबंधी, मृत।
स्वर्ण--पु० सोना, धतूरा।
स्वर्णकमल—पु० लाल कमल।
स्वर्णकार—पु० सोनार।
स्वर्णगिरि--पु० सुमेरु पर्वत।
स्वर्णभूमि--स्त्री० अच्छी भूमि, सुख-संपन्न भूमि।
स्वर्णसंयोग—पु० अच्छा अवसर।
स्वर्धुनी--स्त्री० गंगा, स्वर्ग की गंगा।
स्वर्नगरी--स्त्री० अमरावती।
स्वर्नदी--स्त्री० गंगा, स्वर्गगंगा।
स्वर्लोक--पु० स्वर्ग।
स्वर्वेश्या—स्त्री० अप्सरा।
स्वर्वैद्य--पु० अश्विनी कुमार।
स्वल्प—बहुत थोड़ा। [जितेंद्रिय।
स्ववश--जो अपने वश में हो,
स्वसा--स्त्री० बहिन। [सुख
स्वस्ति—कल्याण हो, स्त्री० कल्याण,
स्वस्तिक-पु० हठयोग में एक प्रकार का आसन, चावल पीस कर और पानी में मिला कर बनाया हुआ एक मंगल द्रव्य, एक मंगल चिह्न।
स्वस्तिवाचन--पु० मंगल कार्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें पूजन और मंगलसूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।
स्वस्त्ययन--पु० मंगलपाठ।
स्वस्थ—नीरोग, सावधान।
स्वाँग—पु० बनावटी वेष, मजाक का खेल, नकल, धोखा देने को बनाया हुआ रूप।
स्वांत—पु० अंतःकरण।
स्वाँस—स्त्री० दे० "साँस"।
स्वाक्षर—पु० हस्ताक्षर।
स्वागत—पु० अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना।
स्वातंत्र्य—पु० स्वतंत्रता।
स्वाति--स्त्री० एक नक्षत्र।
स्वातिपंथ—पु० आकाश गंगा।
स्वातिसुत—पु० मोती।
स्वाती—दे० "स्वाति"
स्वाद—पु० खाने पीने से जीभ को होनेवाला अनुभव, रसानुभूति, चाह।

स्वादक--पु० चखनेवाला।
स्वादन—पु० चखना, मज़ा लेना।
स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ—जिसका स्वाद अच्छा हो। [लेनेवाला।
स्वादी—स्वाद चखनेवाला, मज़ा
स्वादु--मीठा, स्वादिष्ट, सुंदर। पु० मीठा रस, गुड़, दूध।
स्वाद्य--स्वाद लेने योग्य। [समर्पण।
स्वाधीन--आजाद, निरंकुश। पु०
स्वाधीनता, स्वाधीनी-स्त्री० आजादी
स्वाध्याय--पु० वेदाध्ययन, अध्ययन, वेद।
स्वान—पु० आवाज, शब्द।
स्वाप—पु० सो जाना।
स्वापन-नींद लानेवाला। पु० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किये जाते थे।
स्वाभाविक—जो आप ही आप हो, प्राकृतिक।
स्वामिनी--स्त्री० मालकिन, गृहिणी।
स्वामित्व--पु० प्रभुता।
स्वामी—पु० मालिक, पति, राजा, भगवान्, कार्तिकेय, साधु संन्यासियों की उपाधि।
स्वायंभुव, स्वायंभू—पु० चौदह मनुओं में पहला।
स्वायत्त—जो अपने अधीन हो।
स्वायत्त शासन—पु० स्थानीय स्वराज्य।
स्वारस्य-पु० सरसता, स्वभाविकता।
स्वाराज्य—पु० स्वाधीन राज्य, स्वर्ग का राज्य। [लाभ।
स्वार्थ—पु० अपना मतलब, अपना
स्वार्थत्याग—स्वार्थ छोड़ना।
स्वार्थपर—स्वार्थी।
स्वार्थपरता-स्त्री० स्वार्थ, खुदगरजी।
स्वार्थपरायण—स्वार्थी, खुदगरज।
स्वार्थसाधक—पु० अपना मतलब साधनेवाला।
स्वार्थी—मतलबी।
स्वास्थ्य—पु० तंदुरुस्ती।
स्वास्थ्यकर—तंदुरुस्त करनेवाला।
स्वाहा—स्त्री० एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।
स्वीकरण-पु० अपनाना, राजी होना।
स्वीकार—पु० अंगीकार, लेना।
स्वीकार्य—स्वीकार करने योग्य।
स्वीकृत—मंजूर।
स्वीकृति—स्त्री० मंजूरी।
स्वीय—अपना। पु० स्वजन।
स्वेच्छा—स्त्री० अपनी इच्छा।
स्वेच्छाचार—पु० जो जी में आवे वही करना।
स्वेच्छाचारिता—स्त्री० निरंकुशता।
स्वेच्छाचारी—मनमाना करनेवाला, निरंकुश।
स्वेच्छासेवक—पु० स्वयंसेवक।

स्वेद—पु० पसीना, भाप, गरमी।
स्वेदक—पसीना लानेवाला।
स्वेदज—पसीने से उत्पन्न होनेवाला।
स्वेदन—पु० पसीना निकलना।
स्वेदित-पसीने से युक्त, सेंका हुआ।
स्वैर—स्वच्छंद, मंद, मनमाना।
स्वैरचारी—स्वेच्छाचारी, व्यभिचारी।
स्वैरिणी—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वैरिता—स्त्री० स्वेच्छाचारिता।

—

ह

ह—एक अक्षर। पु० हँसी, शिव, जल, शून्य, शुभ, आकाश, ज्ञान, घोड़ा।
हँकड़ना—ललकारना।
हँकारना—हाँक देकर बुलाना, पुकारना, बुलवाना।
हँकाना—हाँकना, पुकारना, हँकवाना।
हँकार—स्त्री० पुकार, बुलावा। पु० प्रसन्नता।
हँकारा—पु० दे० "हँकार"।
हँकारी—बुला कर लानेवाला, दूत।
हंगामा—पु० उपद्रव, शोरगुल।
हंटर—पु० लंबा चाबुक, कोड़ा।
हंडना—घूमना फिरना, इधर उधर ढूँढ़ना। वस्त्र आदि का पहनना या ओढ़ा जाना।
हंडा—पु० बड़ी हाँड़ी।
हंत—शोक सूचक शब्द।
हंता—बध करनेवाला।
हंस—सूर्य्य, ब्रह्म, परमात्मा, माया से निर्लिप्त आत्मा, जीव, विष्णु, संन्यासियों का एक भेद, प्राणवायु, घोड़ा, शिव।
हंसगामिनी—हंस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।
हंसनादिनी—स्त्री० मधुरभाषिणी स्त्री।
हँसमुख—प्रसन्नमुख, हास्यप्रिय।
हँसली—स्त्री० गले की धनुषाकार हड्डी, गले का एक गहना।
हंसवंश—पु० सूर्यवंश।
हंसवाहन—पु० ब्रह्मा।
हंसवाहिनी—स्त्री० सरस्वती।
हंससुता—स्त्री० यमुना।
हँसाई—स्त्री० हँसने की क्रिया या भाव, निंदा, बदनामी।
हंसिनी, हंसी—स्त्री० हंस की मादा।
हँसी—स्त्री० हँसने की क्रिया या भाव, दिल्लगी, उपहास, बदनामी।

हँसोड़—पु० हँसनेवाला, मसखरा।
हँसौहाँ—कुछ हँसी लिये हुए, मज़ाक से भरा।
हई—आश्चर्य। पु० घुड़सवार।
हक—सत्य, उचित। पु० स्वत्व, अधिकार, इख्तियार, कर्त्तव्य, दस्तूरी, वाजिब बात, उचित पक्ष, खुदा।
हकदार—पु० अधिकार रखनेवाला।
हकनाहक—जबरदस्ती, व्यर्थ।
हकपरस्त-पु० ईश्वरभक्त, सत्यप्रेमी।
हकबकाना—घबड़ाना।
हकमालिकाना—पु० किसी चीज या जायदाद के मालिक का हक।
हकमौरूसी—पु० बाप दादों से चला आता हुआ हक।
हकलाना—रुक रुक कर बोलना।
हकशफा—पु० किसी जमीन को खरीदने का औरों से अधिक हक।
हकीकत—स्त्री० असलियत, तथ्य, असल हाल। मु० हकीकत में = वास्तव में। [ईश्वरोन्मुख।
हकीकी—खास अपना, सगा,
हकीम—पु० आचार्य्य, यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला।
हकीमी—स्त्री० यूनानी चिकित्सा शास्त्र, हकीम का पेशा।
हकीयत—पु० अधिकार।
हकीर—तुच्छ।
हकूक—पु० हक का बहुवचन।
हक्काबक्का—भौचक।
हज—पु० मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना।
हजम—पेट में पचा हुआ, बेईमानी से अधिकार किया हुआ। पु० पाचन।
हजरत—पु० महात्मा, महाशय, नटखट आदमी।
हजरत सलामत—पु० बादशाहों या नवाबों के लिये संबोधन का शब्द, बादशाह।
हजामत—स्त्री० बाल बनाने का काम या मजदूरी, सिर या दाढ़ी का बढ़ा हुआ बाल। मु० हजामत बनाना = लूटना, मारना पीटना।
हजार—पु० सहस्र, बहुत से, अनेक।
हजारहा—हजारों, बहुत से।
हजारा—(फूल) जिसमें हजार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हों। पु० फौव्वारा, एक प्रकार की अतिशबाजी।
हजारी—पु० एक हजार सिपाहियों का सरदार, दोगला।
हजारों—सहस्रों, बहुत से।
हजो—स्त्री० निंदा, बुराई।
हज्ज—पु० दे० "हज"।
हज्जाम—हजामत बनानेवाला, नाई।
हटकना—मना करना, रोकना। मु० हटकि = जबरदस्ती, बिना कारण।
हटना—टलना, जी चुराना, दूर होना, मना करना।

हटवाई—स्त्री० क्रयविक्रय ।
हटवार—पु० दूकानदार ।
हट्ट—पु० बाजार, दूकान ।
हट्टाकट्टा—हृष्टपुष्ट ।
हट्टी—स्त्री० दूकान । [जबरदस्ती ।
हठ—पु० जिद, आग्रह, अटल संकल्प,
हठधर्म—पु० अपने मत पर सत्य असत्य का विचार छोड़ कर अड़ा रहना । [दुराग्रह ।
हठधर्मी—पु० दुराग्रही । स्त्री०
हठयोग—पु० वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिये कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है । [अवश्य ।
हठात्—हठपूर्वक, जबरदस्ती से,
हठी—जिद्दी ।
हठीला—हठी, दृढ़प्रतिज्ञ, धीर ।
हड़कंप—पु० तहलका ।
हड़काना—तरसाना, आक्रमण करने या तंग करने के लिये पीछे लगा देना, कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना ।
हड़काया—पागल (कुत्ता) ।
हड़गील—पु० एक पक्षी ।
हड़ताल—स्त्री० किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकानें बंद करना । [हुआ ।
हड़प—निगला हुआ, गायब किया
हड़पना—खा जाना, अनुचित रीति से ले लेना, गायब करना ।
हड़फूटन—स्त्री० हड्डियों की पीड़ा ।
हड़बड़—स्त्री० जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गतिविधि ।
हड़बड़ाना—जल्दी करना, जल्दी कराना, उतावलापन करना ।
हड़बड़िया—जल्दबाज,हड़बड़ी करनेवाला, आतुरता प्रकट करनेवाला ।
हड़बड़ी—स्त्री० जल्दी, उतावली, जल्दी के कारण घबराहट ।
हड़ावरि, हड़ावल—स्त्री० हड्डियों का ढाँचा, हड्डियों की माला ।
हड्डा—पु० बड़ी मधुमक्खियाँ ।
हत—मारा हुआ, पीटा हुआ, खोया हुआ, नष्ट किया हुआ, पीड़ित, गुणा किया हुआ ।
हतक—स्त्री० बेइज्जती ।
हतकइज्जती—स्त्री० बेइज्जती ।[हुआ ।
हतचित्त, हतज्ञान—बेसुध, घबड़ाया
हतदैव—अभागा । [मानना ।
हतना—बध करना, मारना, न
हतबुद्धि—मूर्ख ।
हतभागा,हतभागी—अभागा ।
हतभाग्य—भाग्यहीन ।
हताश—निराश ।
हताहत—मारे हुए और घायल ।
हतोत्साह—जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो । [दैव ।
हत्था—पु० मूठ, केले के फलों का

हत्थे—हाथ में ।

हत्या - स्त्री० बध, झंझट ।

हत्यारा—पु० हत्या करनेवाला ।

हत्यारी—स्त्री० हत्या करनेवाली, हत्या का पाप ।

हथकंडा—पु० हाथ की सफाई, गुप्त चाल । [बांधने की कड़ी ।

हथकड़ी – स्त्री० कैदियों के हाथ

हथछुट--जिसको मार बैठने की आदत हो । [पर चलती थी ।

हथनाल—स्त्री० वह तोप जो हाथी

हथपैंचा—पु० वह कर्ज जो थोड़े दिनों के लिये बिना लिखापढ़ी के लिया जाय । [समान ।

हथवांस--पु० नाव चलाने के

हथसार--स्त्री० हाथीशाला ।

हथाहथी—हाथोंहाथ, तुरंत ।

हथिनी--स्त्री० हाथी का मादा ।

हथियाना--हाथ में करना, धोखा देकर ले लेना ।

हथियार--पु० औजार, अस्त्र शस्त्र ।

हथियारबंद--सशस्त्र ।

हथेली—स्त्री० करतल । मु० हथेली में आना = वश में होना । हथेली पर जान होना = ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो ।

हथौटी--स्त्री० हस्तकौशल । [औजार ।

हथौड़ा--पु० ठोंकने पीटने आदि का

हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

हद--स्त्री० सीमा ।

हदसमाअत--पु० वह मुकर्रर वक्त जिसके भीतर अदालत में दावा करना चाहिये ।

हदसियासत--पु० किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा ।

हदीस—स्त्री० वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है । [गुणा करना ।

हनन—मार डालना, आघात करना,

हनफी—पु० मुसलमानों में सुन्नियों का एक संप्रदाय ।

हनु—स्त्री० जबड़ा, ठुड्डी ।

हनुमंत, हनुमान्—दाढ़ या जबड़ेवाला, बहुत बड़ा वीर । पु० महावीर ।

हनू—स्त्री० दे० "हनु" ।

हनूमान्—पु० दे० "हनुमान्" ।

हनोज--अभी तक, अभी ।

हफ्त--सात ।

हफ्ता--पु० सप्ताह ।

हफ्ती—स्त्री० एक प्रकार की जूती ।

हबर हबर—जल्दी जल्दी ।

हबशी—पु० अफ्रिका की एक जाति जो रंग में अत्यंत काली होती है ।

हबाब--पु० पानी का बुलबुला ।

हब्बा--पु० दाना, गोली, रत्ती का वजन । [बीमारी ।

हब्बा डब्बा—पु० बच्चों की एक

हबीब—माशूक, दोस्त, प्रेमी ।

हब्बुलआस—पु० एक प्रकार की मेंहदी ।
हब्स—पु० कैद, कारावास ।
हब्सबेजा—पु० अनुचित रीति से बंदी करना ।
हम—मैं का बहुवचन । साथ, संग समान । पु० अहंकार ।
हमअसर—वे जिनपर एक ही प्रकार का असर पड़ा हो । [बोलनेवाले ।
हमजबान—पु० एक ही भाषा के
हमजिंस—पु० एक ही वर्ग या जाति के प्राणी । [संगी ।
हमजोली, हमदम—पु० साथी,
हमदर्द—पु० सहानुभूति रखनेवाला ।
हमदर्दी—स्त्री० सहानुभूति ।
हमनिवाला—पु० एक साथ बैठ कर भाजन करनेवाले ।
हमपेशा—समान व्यवसाय के व्यक्ति ।
हमबिस्तर—पु० एक बिस्तर पर सोनेवाला ।
हमराह—साथ, संग में ।
हमराही—पु० साथी, संगी ।
हमल—पु० गर्भ ।
हमला—पु० चढ़ाई, आक्रमण, प्रहार ।
हमवतन—एक देशवासी, देशभाई ।
हमवार—समतल ।
हमशीर—स्त्री० सगी बहन ।
हमसबक—पु० सहपाठी ।
हमसर—पु० बराबरी का आदमी ।
हमसरी—स्त्री० बराबरी ।
हमसाज—पु० मित्र, दोस्त ।
हमसाया—पु० पड़ोसी ।
हमाम—पु० दे० "हम्माम" ।
हमाल—पु० कुली, बोझा ढोने वाला ।
हमाहमी—स्त्री० स्वार्थपरता, अहंकार ।
हमें—हमको ।
हमेशा—सदा ।
हम्माम—पु० नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है ।
हयंद—पु० बड़ा या अच्छा घोड़ा ।
हय—पु० घोड़ा, इंद्र ।
हयना—बध करना, मारना पीटना, ठोंक कर बजाना, नष्ट करना ।
हयनाल—स्त्री० वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं ।
हयमेध—पु० अश्वमेध ।
हया—स्त्री० लज्जा ।
हयात—स्त्री० जिंदगी ।
हयादार—पु० वह जिसे हया हो, लज्जाशील, शर्मदार ।
हयादारी—स्त्री० लज्जाशीलता ।
हर—प्रत्येक । हरण करनेवाला, ले जानेवाला, बध या नाश करनेवाला । पु० शिव, भाजक, अग्नि ।
हरकत—स्त्री० गति, हिलना डोलना, चाल, चेष्टा, क्रिया, दुष्ट व्यवहार ।
हरकना—हटकना । [डाकिया ।
हरकारा—पु० चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला,

हरखना—प्रसन्न होना ।
हरगाह—जब कभी ।
हरगिज—कदापि, कभी । [यद्यपि ।
हरचंद—कितना ही, बहुत बार,
हरज—पु० दे० "हर्ज" ।
हरजा—पु० हर्ज, हरजाना ।
हरजाई—पु० हर जगह घूमनेवाला, अवारा । स्त्री० व्यभिचारणी स्त्री ।
हरजाना—नुकसान पूरा करना, हानि के बदले में दिया जानेवाला धन ।
हरट्ठ—हृष्टपुष्ट ।
हरण—पु० छीनना, लूटना, चुराना, दूर करना, नाश, ले जाना, भाग देना ।
हरता धरता—पु० पूर्ण अधिकारी ।
हरताल—स्त्री० एक खनिज पदार्थ ।
हरनी—स्त्री० हिरन की मादा ।
हरनौटा—पु० हिरन का बच्चा ।
हरफ—पु० अक्षर, वर्ण ।
हरबा—पु० हथियार ।
हरबोंग—गँवार, मूर्ख । पु० अंधेर, उपद्रव ।
हरम—पु० अंतःपुर, शाही जनानखाना । स्त्री० रखेलीस्त्री, दासी, पत्नी ।
हरमसरा—पु० अंतःपुर, रनिवास ।
हरमजदगी—स्त्री० बदमाशी ।
हरवल—दे० "हरावल" ।
हरवली—स्त्री० [illegible] ।
हरसू—हर तरफ ।

हरहाई—स्त्री० नटखट गाय ।
हरहार—पु० शिव का हार अर्थात साँप, शेषनाग ।
हरा—सब्ज, प्रसन्न, जो मुरझाया न हो, दाना या फल जो पका न हो । पु० घास का सा रंग । स्त्री० पार्वती ।
हराना—परास्त करना ।
हराम—निषिद्ध, दूषित । पु० वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो, सूअर, बेईमानी, पाप, व्यभिचार । मु० (कोई बात) हराम होना = किसी बात का मुश्किल हो जाना ।
हरामखोर—पु० पाप की कमाई खानेवाला, मुफ्तखोर, आलसी ।
हरामजादा—पु० दोगला, पाजी ।
हरामी—व्यभिचार से उत्पन्न, पाजी ।
हरारत—स्त्री० गर्मी हलका ज्वर, थकावट । [पु० दे० "हरावल" ।
हरावरि—स्त्री० दे० "हड़ावरि" ।
हरावल—पु० सिपाहियों का सबसे अगला दल । [नाउम्मेदी ।
हरास—पु० डर, खटका, दुःख,
हरि—भूरा या बादामी, पीला, हरा । पु० विष्णु, इंद्र, घोड़ा बंदर, सिंह, सूर्य्य, चंद्रमा, मोर, साँप, वायु, श्रीकृष्ण, श्रीराम, शिव ।
हरिअर—हरा ।

हरिश्ररी, हरिश्राली—स्त्री० हरेपन का विस्तार, घास और पेड़ पौधों का फैला हुआ समूह। मु० हरिआली सूझना = चारों ओर आनन्द ही आनन्द दिखाई पड़ना।
हरिकीर्त्तन-पु० भगवान का भजन।
हरिचंदन—पु० एक प्रकार का चंदन, ज्योत्सना।
हरिचर्म—पु० बाघंबर।
हरिचाप—पु० इंद्रधनुष।
हरिजन-पु० ईश्वर का भक्त, अछूत।
हरिण—पु० हिरन, हंस, सूर्य्य।
हरिणाक्षी—स्त्री० हिरन के समान सुंदर आँखोंवाली।
हरिणी—स्त्री० हिरन की मादा, स्त्रियों के चार भेदों में एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं।
हरित्—भूरे या बादामी रंग का, हरा। पु० मरकत, सिंह, सूर्य्य।
हरित—भूरे या बादामी रंग का, पीला, हरा।
हरितमणि—पु० मरकत, पन्ना।
हरितालिका—स्त्री० तीज।
हरिद्रा—स्त्री० हलदी, जंगल, मंगल, सीसा।
हरिन—पु० दे० "हरिण", मृग।
हरिनग—पु० साँप का मणि।
हरिनाथ—पु० हनुमान्।
हरिनी—स्त्री० मादा हिरन।
हरिपद—पु० बैकुंठ। [लाल चंदन।
हरिप्रिया—स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी,
हरियान—पु० गरुड़।
हरियाली—दे० "हरिआली"।
हरिवंश—पु० कृष्ण का वंश।
हरिवर्ष—पु० जंबू द्वीप का एक खंड, यूरोप का प्राचीन नाम।
हरिवल्लभा—स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।
हरिवास—पु० पीपल।
हरिवासर—पु० रविवार, एकादशी, जन्माष्टमी, रामनवमी।
हरिहित—पु० बीरबहूटी।
हरी—सब्ज।
हरीकेन-पु० एक प्रकार की लालटेन।
हरीतकी—स्त्री० हर्रें।
हरीफ—पु० दुश्मन, शत्रु, विरोधी।
हरीश—पु० हनुमान, सुग्रीव।
हरुश्रा—हलका।
हरुश्राई—स्त्री० हलकापन, फुर्ती।
हरुए-धीरे धीरे, चुपचाप। [अक्षर।
हरुफ—पु० ('हरफ' का बहुवचन)
हरे—धीरे से, (शब्द) जो ऊँचा और जोर का न हो, हलका। [जाति।
हरेव—पु० मंगोलों का देश, मंगोल
हरौज—पु० दे० "हरावल"।
हर्ज—पु० काम में रुकावट, बाधा, हानि। [नाश करनेवाला।
हर्त्ता, हर्त्तार—पु० हरण करनेवाला,
हर्द—पु० हल्दी।

हर्बा—पु० लड़ाई का हथियार ।
हर्फ़—पु० दे० "हरफ" ।
हर्म्य—पु० अटारी ।
हर्ष—पु० प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना, आनंद ।
हर्षण—पु० प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना, प्रसन्न होना या करना ।
हर्षाना—प्रसन्न होना या करना ।
हर्षित—प्रसन्न । [प्रेमी ।
हर्षुल—प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज,
हर्षोत्फुल्ल—हर्ष से फूला हुआ ।
हल, हलंत—पु० शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो ।
हल—पु० खेत जोतने का औजार, एक अस्त्र, हिसाब लगाना, किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना ।
हलकंप—पु० हड़कंप ।
हलक—पु० गले की नली ।
हलकई—स्त्री० हलकापन, ओछापन अप्रतिष्ठा ।
हलकना—हिलोरें लेना, झिलमिलाना।
हलका—जो भारी न हो, जो गाढ़ा न हो, जो गहरा न हो, जो उपजाऊ न हो, थोड़ा, मंद, तुच्छ, आसान, निश्चिन्त, प्रफुल्ल, ताजा, पतला, घटिया, खाली । पु० तरंग, लहर, गोलाई, मंडल, घेरा, दल, हाथियों का झुण्ड, कई गाँवों का समूह । मु० हलका करना = अपमानित करना । हलके हलके = धीरे धीरे ।
हलकाई—स्त्री० हलकापन ।
हलकान—हैरान । [अप्रतिष्ठा ।
हलकापन—पु० लघुता, ओछापन,
हलकारा—पु० दे० "हरकारा" ।
हलकोरा—पु० तरंग । [उपद्रव ।
हलचल-कंपायमान । स्त्री० खलबली,
हलधर—पु० बलरामजी, बैल ।
हलना—हिलना डोलना, घुसना ।
हलफ—पु० कसम । मु० हलफ उठाना = कसम खाना ।
हलफनामा—पु० वह कागज जिसपर कोई बात शपथपूर्वक लिखी गयी हो ।
हलफा—पु० लहर, तरंग ।
हलबल—पु० हलचल ।
हलबी, हलब्बी—हलब देश का (शीशा), बढिया (शीशा) ।
हलराना—हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना ।
हलवा—पु० मोहनभोग ।
हलवाई—पु० मिठाई बनाने और बेचनेवाला । [सखी ।
हला—स्त्री० मदिरा, भूमि, जल,
हलाक-मारा हुआ, नष्ट किया हुआ ।
हलाकत—स्त्री० हत्या, बध, मृत्यु ।
हलाकान—परेशान ।

हलाकी—घातक। [करनेवाला।
हलाकू—पु० हलाक याने बध
हलायुध—पु० बलरामजी।
हलाल—जो मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो, जायज। पु० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्मपुस्तक में आज्ञा हो। मु० हलाल करना = खाने के लिये मुसलमानी शरअ के मुताबिक पशुओं को गला रेत कर मारना। हलाल का=ईमानदारी से पाया हुआ।
हलालखोर—पु० मिहनत करके जीविका करनेवाला, मेहतर, भंगी।
हलालखोरी—स्त्री० हलालखोर का काम, हलालखोर का भाव या धर्म, हलालखोर की स्त्री।
हलाहल—पु० समुद्रमंथन के समय निकला हुआ प्रचंड विष, भारी जहर।
हली—पु० हलधारी, किसान, बलरामजी।
हलीम—सीधा, शांत। पु० एक प्रकार का खाना जो मुहर्रम में बनता है।
हलोरना—मथना, अनाज फटकना, संग्रह करना।
हलोरा—पु० हिलोरा।
हल्ला—पु० शोरगुल, लड़ाई के समय की ललकार, धावा। [का चमचा।
हवन—पु० होम, अग्नि, हवन करने
हवलदार—पु० बादशाही जमाने में राज्य-कर वसूल करने और फसल की निगरानी करनेवाला अफसर, फौज में एक सबसे छोटा अफ़सर।
हवस—स्त्री० लालसा, तृष्णा।
हवा—स्त्री० वायु, भूत, प्रसिद्धि, साख, धुन। मु० हवा के घोड़े पर सवार = बहुत उतावली में। हवा खाना = शुद्ध वायु सेवन करना, अकृतकार्य होना। हवा बताना = टालना। हवा बाँधना = लंबी चौड़ी बातें हाँकना। हवा बिगड़ना = संक्रामक रोग फैलना। हवा से बातें करना = बहुत तेज दौड़ना। किसी की हवा लगना = संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना = झटपट चल देना, गायब हो जाना।
हवाई—हवा का, हवा संबंधी, हवा में चलनेवाला, कल्पित या झूठ। मु० मुँह पर हवाइयाँ उड़ना = चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।
हवाचक्की—स्त्री० हवा से चलनेवाली चक्की।
हवादार—जिसमें हवा आ जा सके।
हवाल—पु० समाचार, दशा, गति, परिणाम।
हवाला—पु० उल्लेख, उदाहरण, सुपुर्दगी। मु० हवाले करना = सौंपना।
हवालात—स्त्री० पहरे के भीतर रखने

की क्रिया या भाव, नजरबंदी, हाजत।
हवास—पु० इंद्रियाँ, संवेदन, होश।
हवि—पु० हवन की वस्तु।
हविष्मती—स्त्री० कामधेनु। [हवि।
हविष्य—हवन करने योग्य। पु०
हविष्यान्न—पु० वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय, हवि, पवित्र अन्न। [पत्नी।
हवेली—स्त्री० पक्का बड़ा मकान,
हव्य—पु० हवन की सामग्री।
हशमत—स्त्री० गौरव, वैभव।
हसद—पु० डाह, ईर्ष्या।
हसन—पु० हँसना, परिहास, विनोद।
हसब—अनुसार, मुताबिक। [कामना।
हसरत—स्त्री० अफसोस, हार्दिक
हसित—जिसपर लोग हँसते हों, जो हँसा हो। पु० हँसना, हँसी ठट्टा, कामदेव का एक धनुष।
हसीन—खूबसूरत। [एक नक्षत्र।
हस्त—पु० हाथ, सूँड़, लिखावट,
हस्तकौशल—पु० किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता, हाथ की सफाई। [इंद्रिय संचालन।
हस्तक्रिया—स्त्री० दस्तकारी, हाथ से
हस्तक्षेप—पु० दखल देना।
हस्तगत—प्राप्त, मिला हुआ।
हस्तत्राण—पु० अस्त्रों के आघात से बचने के लिये पहना जानेवाला दस्ताना।

हस्तमैथुन—पु० हाथ के द्वारा इंद्रिय संचालन। [हाथ की रेखा।
हस्तरेखा—स्त्री० शुभाशुभसूचक
हस्तलाघव—पु० हाथ चलाने की निपुणता, हाथ की सफाई।
हस्तलिखित-हाथ का लिखा हुआ।
हस्तलिपि-स्त्री० हाथ की लिखावट।
हस्तसूत्र—पु० विवाह के समय बर के हाथ का कंगण।
हस्ताक्षर—पु० दस्तखत।
हस्तामलक—पु० हाथ का आँवला, वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो।
हस्ति—पु० हाथी।
हस्तिकर्ण—पु० रेंड, पलास, मान।
हस्तिनी—स्त्री० हथिनी, कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में एक भेद। [पाला, धूल का ढेर।
हस्तिमल्ल—पु० ऐरावत, गणेश,
हस्ती—पु० हाथी। स्त्री० अस्तित्व।
हस्ते—हाथ से, मारफत।
हहर—स्त्री० कँपकँपी, भय।
हहरना—काँपना, दहलना, दंग रह जाना, डाह करना।
हहा—स्त्री० हँसने का शब्द, दीनता-सूचक शब्द, हाहाकार।
हाँ—स्वीकृतिसूचक शब्द। [दुहाई।
हाँक—स्त्री० पुकार, हुंकार, बढ़ावा,
हाँकना—पुकारना, हुंकार करना,

बढ़ बढ़ कर बोलना, जनावरों या गाड़ी आदि को चलाना।

हाँगी—स्त्री० हामी।

हाँड़ी—स्त्री० मिट्टी का मझोला बर्तन।

हाँपना, हाँफना—जोर से साँस लेना।

हाँसी—स्त्री० हँसी, दिल्लगी, उपहास।

हाँ हाँ—रोकने का शब्द, स्वीकृति-सूचक शब्द।

हा—शोक, आह्लाद, आश्चर्य या भयसूचक शब्द। पु० मारनेवाला।

हाइड्रोसील—पु० अंडवृद्धि, फोता बढ़ना।

हाइफेन—पु० एक संयोजक चिह्न (-)।

हाईकोर्ट—पु० बड़ा न्यायालय।

हाईस्कूल—पु० अंगरेजी की बड़ी पाठशाला।

हाउस—पु० घर, बड़ी दूकान, सभा।

हाउस आफ कामन्स—पु० इंगलैण्ड की कामन्स सभा।

हाउस आफ लार्ड्स—पु० इंगलैण्ड की लार्ड सभा।

हाऊ—पु० हौवा।

हाकिम—पु० हुकूमत करनेवाला, शासक, बड़ा अफ़सर।

हाकिमी—हाकिम का, हाकिम संबंधी। हुकूमत, शासन।

हाकी—पु० एक अंगरेजी खेल।

हाजत—स्त्री० जरूरत, चाह, हिरासत। [क्रिया।

हाजमा—पु० पाचन शक्ति पाचन

हाजिम—पाचक।

हाजिर—उपस्थित।

हाजिरजवाब—बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार।

हाजिरजवाबी—स्त्री० चटपट उत्तर देने की निपुणता।

हाजिरवाश—पु० सामने मौजूद रहनेवाला, बराबर सेवा में रहनेवाला।

हाजिरवाशी—स्त्री० खुशामद।

हाजी—पु० वह जो हज कर आया हो।

हाट—स्त्री० दूकान, बाजार लगने का दिन।

हाटक—पु० सोना, स्वर्ण।

हाटकपुर—पु० लंका

हाटकलोचन—पु० हिरण्याक्ष।

हाड़—पु० हड्डी, कुलीनता।

हातव्य—त्यागने योग्य।

हाता—अलग, नष्ट। पु० घेरा हुआ स्थान, हलका या सूबा, सीमा, मारनेवाला।

हातिम—पु० एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी और परोपकारी था, निपुण, उस्ताद, अत्यंत दानी मनुष्य।

हाथ—पु० बाहु से पंजे तक का अंग, कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की नाप, ताश आदि के खेल में एक

आदमी के खेलने की बारी। मु० हाथ में आना = अधिकार या वश में आना। (किसी पर) हाथ उठाना = मारना। हाथ की मैल = तुच्छ वस्तु। हाथ खाली होना = पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खींचना = किसी काम से अलग हो जाना। हाथ छोड़ना = मारना। हाथ तंग होना = खर्च के लिये रुपया पैसा न रहना। (किसी वस्तु से) हाथ धोना = खो देना। हाथ धोकर पीछे पड़ना = किसी काम में जी जान से लग जाना। हाथ पकड़ना = किसी काम से रोकना, आश्रय देना, विवाह करना। हाथ पसारना = कुछ माँगना। हाथ पैर जोड़ना = बिनती करना। (किसी काम में) हाथ बँटाना = शामिल होना। हाथ मलना = पछताना। हाथ में करना = वश में करना। [हाथी।

हाथा—पु० दस्ता, एक औजार, बड़ा

हाथापाई, हाथाबाँही—स्त्री० लड़ने के लिये हाथ पैर से भिड़ जाना।

हाथी—पु० एक प्रसिद्ध पशु।

हाथीखाना—पु० वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। [पाँव नामक रोग।

हाथीपाँव—पु० पैर फूलने का फिल-

हादसा—पु० दुर्घटना, बुरी दशा।

हादी—हिदायत करनेवाला, मार्ग बतानेवाला।

हानि—स्त्री० नाश, क्षति, स्वास्थ्य में बाधा, बुराई [करनेवाला।

हानिकर, हानिकारक—हानि

हाफ़िज—पु० वह मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो।

हाफ़िज़ा—स्त्री० स्मरणशक्ति।

हामी—स्त्री० स्वीकृति। पु० वह जो हिमायत करता हो, सहायक। मु० हामी भरना = मंजूर करना।

हाय—शोक सूचित करनेवाला शब्द। स्त्री० पीड़ा।

हाय हाय—अफ़सोस करना।

हायल—घायल, शिथिल, रोकनेवाला।

हार—स्त्री० पराजय, शिथिलता, हानि, जबती। विरह। पु० माला, ले जानेवाला, मनोहर, भाजक, नाशक।

हारक—पु० हरण करनेवाला, मनोहर, चोर, माला, गणित में भाजक।

हारना—पराजित होना, शिथिलता, असमर्थ होना, गँवाना, छोड़ देना, दे देना।

हारी—हरण करनेवाला, ले जानेवाला, चुरानेवाला, दूर करनेवाला, नाश करनेवाला, मोहित करनेवाला।

हारीत—पु० चोर, चोरी।

हार्द—हृदय का। पु० प्रेम।

हार्दिक—हृदय संबंधी, हृदय से निकला हुआ, सच्चा।

हार्य—हरण करने योग्य ।

हाल—इस समय, तुरंत । पु० दशा, परिस्थिति, संवाद, ब्योरा, कथा, ईश्वर में तन्मयता । स्त्री० कंप, लोहे का वह बंद जो पहिये पर चढ़ाया जाता है । [भाव, हलचल ।

हालडोल—पु० हिलने की क्रिया या

हालत—स्त्री० दशा, आर्थिक दशा, परिस्थिति ।

हालना—हिलना, काँपना ।

हालरा—बच्चों को लेकर हिलाना डोलाना, झोंका, हिलोर ।

हालाँ कि—यद्यपि ।

हालाहल—दे० "हलाहल" ।

हालिक—नष्ट करनेवाला ।

हाली—जल्दी, शीघ्र ।

हाल्ट—पु० ठहराव ।

हाव—पु० संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं ।

हावभाव—पु० नाजनखरा ।

हाशिया—पु० किनारा, मगजी, किनारे पर का लेख ।

हास—पु० हँसी, दिल्लगी, उपहास ।

हासना—पु० हँसाना ।

हासिद—ईर्ष्यालु ।

हासिल—प्राप्त । पु० पैदावार, लाभ, जमा, गणित की क्रिया का फल ।

हासी—हँसनेवाला ।

हास्य—उपहास के योग्य । पु० हँसी दिल्लगी, उपहास । [हँसी उड़ावें ।

हास्यास्पद—पु० वह जिसकी लोग

हास्योत्पादक—पु० हँसी उत्पन्न करनेवाला, उपहास के योग्य ।

हा हंत—अत्यंत शोकसूचक शब्द ।

हाहाकार—पु० घबराहट की पुकार ।

हाही—स्त्री० कुछ पाने के लिये हाय हाय करना ।

हाहू—पु० कोलाहल, हलचल ।

हिंडन—घूमना । [झूला, पालना ।

हिंडोरा, हिंडोल, हिंडोला—पु०

हिंद—पु० हिंदुस्तान ।

हिंदवाना—पु० तरबूज ।

हिंदवी—स्त्री० हिंदी भाषा ।

हिंदी—हिंदुस्तान का । पु० हिंद का वासी । स्त्री० हिंद की भाषा, उत्तर भारत की भाषा ।

हिंदुस्तान—पु० भारतवर्ष ।

हिंदुस्तानी—हिंदुस्तान का । पु० हिंदुस्तान का निवासी । स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा, बोलचाल या व्यवहार की वह हिन्दी जिसमें न बहुत अरबी फारसी के और न बहुत संस्कृत के शब्द हों ।

हिंदुस्थान—पु० हिंदुस्तान ।

हिंदू—पु० भारतीय आर्यधर्म का अनुयायी ।

हिंव, हिंवार—पु० बर्फ ।

हिंसक—पु० घातक, हानि करनेवाला, शत्रु। [अनिष्ट करना।
हिंसन—पु० बध करना, सताना,
हिंसा—स्त्री० बध, दुःख देना।
हिंसात्मक—जिसमें हिंसा हो।
हिंसालु—हिंसा करनेवाला।
हिंस्र—हिंसक। [लासा।
हिआव—पु० साहस, हिम्मत, दि-
हिकमत—स्त्री० विद्या, कलाकौशल, युक्ति, तदवीर, चतुराई का ढंग, हकीमी।
हिकमती—कार्यपटु, चतुर, किफायती।
हिकायत—स्त्री० कथा, कहानी।
हिक्का—पु० हिचकी।
हिचक—स्त्री० आगापीछा।
हिचकना, हिचकिचाना—हिचकी लेना, आगापीछा करना।
हिचकी—स्त्री० पेट की वायु का कंठ से धक्का देते हुए निकलना।
हिज एक्सेलेंसी—स्त्री० वायसराय की प्रतिष्ठासूचक उपाधि।
हिजड़ा—पु० नपुंसक। [एक उपाधि।
हिज मजेस्टी—स्त्री० बादशाह की
हिजरत—स्त्री० देशत्याग, छोड़ना।
हिज रायल हाइनेस—पु० युवराजों तथा राजपरिवारों के नाम के आगे लगनेवाली एक उपाधि।
हिजरी—पु० मुसलमानी संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख ६२२ ई० से शुरू हुआ।
हिज हाइनेस—पु० राजा महाराजाओं के नाम के आगे लगनेवाली एक उपाधि।
हिज होलीनेस—पु० पोप तथा ईसाई मत के प्रधान आचार्यों के नाम के आगे लगनेवाली उपाधि।
हिजाब—पु० परदा, शर्म।
हिजो—पु० बुराई करना।
हिज्जे—पु० किसी शब्द में आये हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना।
हिज्र—पु० जुदाई।
हित—भलाई करने या चाहनेवाला। प्रसन्नता के लिये, वास्ते। पु० लाभ, कल्याण, प्रेम, मित्रता, मित्र, नातेदार।
हितकर, हितकर्त्ता, हितकारक, हितकारी—भलाई करनेवाला, फायदेमंद, स्वास्थ्यकर। [खाह।
हितचिंतक—भला चाहनेवाला, खैर-
हितवादी—हित की बात कहनेवाला।
हिताई—स्त्री० नाता।
हिताना—हितकारी होना, प्रेमयुक्त होना, अच्छा लगना। [हानि।
हिताहित—पु० भलाई बुराई, लाभ
हिती, हितू—पु० भलाई चाहनेवाला, संबंधी, स्नेही।
हितेच्छु—भला चाहनेवाला, खैरखाह।

हितैषिता—स्त्री० भलाई चाहनेकी वृत्ति।
हितैषी—हितचिंतक।
हितोपदेश—पु० भलाई का उपदेश।
हिदायत—स्त्री० आदेश, शिक्षा।
हिनहिनाना—घोड़े का बोलना।
हिनहिनाहट—स्त्री० घोड़े की बोली।
हिना—स्त्री० मेंहदी।
हिपोक्रिट—पु० कपटी, पाखंडी।
हिपोक्रिसी—स्त्री० छल।
हिफाजत—स्त्री० रक्षा, देखरेख।
हिब्बा—पु० दाना, दो जौ की एक तौल, दान।
हिब्बानामा—पु० दानपत्र।
हिमंचल—दे० "हिमाचल"।
हिम—ठंढा। पु० पाला, बर्फ, जाड़ा, जाड़े की ऋतु, चंद्रमा, चंदन, कपूर, मोती, कमल।
हिमउपल—पु० ओला।
हिमकर, हिमकिरण, हिमभानु—पु० चंद्रमा। [हिमालय पर्वत।
हिमगिरि, हिमवान—पु० कैलाश,
हिमर्त्तु—स्त्री० हेमंत ऋतु।
हिमवत्, हिमवान्—बर्फवाला। पु० हिमालय, कैलाश पर्वत, चंद्रमा।
हिमवल—पु० मोती।
हिमांशु—पु० चंद्रमा।
हिमाकत—स्त्री० बेवकूफी, मूर्खता।
हिमाचल, हिमाद्रि—पु० हिमालय
हिमानी—स्त्री० बर्फ का ढेर।

हिमायत—स्त्री० पक्षपात, समर्थन।
हिमायती—समर्थक, सहायक।
हिम्मत—पु० साहस।
हिम्मती—साहसी, पराक्रमी। [छाती।
हिय, हियरा, हिया—पु० हृदय,
हियाव—पु० साहस।
हिरकना—सटना, पास होना।
हिरण—पु० सोना, कौड़ी, वीर्य।
हिरण्य—पु० स्वर्ण, वीर्य, कौड़ी, धतूरा, अमृत।
हिरण्यगर्भ—पु० वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी, ब्रह्मा, सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा, विष्णु। [पर्वत।
हिरण्यनाभ—पु० विष्णु, मैनाक
हिरण्यमय—सुनहरा। पु० ब्रह्मा।
हिरण्यकशिपु—पु० प्रह्लाद का पिता।
हिरण्यरेता—पु० अग्नि, सूर्य्य, शिव।
हिरन—पु० हरिन। [चालाकी, धूर्तता।
हिरफत—स्त्री० दस्तकारी, हुनर,
हिरफतबाज—चालबाज, धूर्त।
हिरमजी—स्त्री० लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।
हिराना—खो जाना, न रह जाना, मिटना, चकित होना, भूला जाना।
हिरावल—दे० "हरावल"।
हिरास—स्त्री० भय, खेद, नाउम्मेदी।
हिरासत—स्त्री० पहरा, चौकी, कैद नजरबंदी।

हिरासाँ—निराश, नाउम्मेद, हिम्मत हारा हुआ।
हिर्स—स्त्री० लालच, स्पर्द्धा, किसी की देखादेखी कुछ करने की इच्छा।
हिलकी—स्त्री० हिचकी, सिसक।
हिलकोर, हिलकोरा-पु० हिलोर।
हिलग—स्त्री० लगाव, प्रेम, परिचय।
हिलगना-अटकना, फँसना, हिलमिल जाना, सटना।
हिलना—डोलना, टलना, काँपना, झूमना, पैठना (विशेषतः पानी में), परिचित और अनुरक्त होना।
हिलाल—पु० दूज का चाँद।
हिलोर—पु० तरंग, लहर,।
हिल्लोल—पु० हिलोर, आनंद की तरंग, मौज।
हिवर—पु० बर्फ।
हिस—पु० होश, चेतना।
हिसका—स्त्री० ईर्ष्या, स्पर्द्धा, देखादेखी किसी बात की इच्छा।
हिसाब—पु० गणित, लेखा, दर, नियम, विचार, दशा, चाल, ढंग, किफायत। मु० हिसाब चुकाना = बाकी चुकाना। हिसाब = अत्यंत।
हिसाब किताब—पु० आमद खर्च का लेखा, चाल।
हिसाब बही-स्त्री० वह बही जिसमें आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है।
हिस्सा—पु० भाग, खंड, बखरा, अंग, साझा।
हिस्सेदार—पु० साझेदार।
हिस्टीरिया—पु० मूर्च्छा रोग।
हींग—स्त्री० एक पौधा और उसका जमाया हुआ दूध या गोंद।
हींसना—घोड़े या गधे का बोलना।
ही—थी। एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिये या निश्चय, अल्पता, परिमिति या स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है। पु० हृदय।
हीक—स्त्री० हिचकी, हलकी अरुचिकर गंध।
हीठना—पास जाना।
हीन—परित्यक्त, रहित, वंचित, निकृष्ट, नीच, तुच्छ, अल्प, दीन, नम्र। पु० बुरा गवाह, अधम नायक।
हीनयान-पु० बौद्धों का एक संप्रदाय।
हीन हयात—पु० जीवन भर।
हीनांग—अंगभंग, कम अंगवाला।
हीनोपम-स्त्री० बड़े की छोटे से उपमा।
हीर—पु० हीरा, वज्र, साँप, किसी वस्तु के भीतर का सार भाग, वीर्य, बल।
हीरक, हीरा—पु० एक रत्न।
हीरा—पु० एक रत्न, बहुत ही अच्छा आदमी।
हीरा कसीस—पु० लोहे का वह विकार जो गंधक के रासायनिक योग से बनता है।
हीरामन—पु० तोते की एक कल्पित

जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

हीला—पु० बहाना, निमित्त।

हीला हवाला—पु० बहाना।

हुंकार—पु० ललकार, गर्जन, चीत्कार।

हुँकारी—स्त्री० 'हुँ' करने की क्रिया, स्वीकृतिसूचक शब्द, हामी।

हुंडावन—स्त्री० हुंडी की दर, हुंडी की दस्तूरी।

हुंडी—स्त्री० वह कागज जिसपर एक महाजन दूसरे महाजन को कुछ रुपया देने के लिये लिख कर किसीको रुपये के बदले में देता है।

हुंडी बही—स्त्री० वह बही जिसमें हुंडियों की नकल रहती है।

हुँत—से, लिये, द्वारा।

हुक—पु० कँटिया, अँकुसी, नाव में वह लकड़ी जिसमें डाँड़ को ठहरा या फँसा कर चलाते हैं।

हुकना—वार या निशाना चूकना।

हुकूमत—स्त्री० शासन, प्रभुत्व, अधिकार, राज्य।

हुक्का पानी—पु० एक दूसरे के हाथ का हुक्का और पानी पीने का व्यवहार।

हुक्काम—पु० अधिकारी वर्ग, हाकिम लोग, बड़े अफसर।

हुक्म—पु० आज्ञा, इजाजत, अधिकार, शासन, नियम।

हुक्मनामा—पु० आज्ञापत्र।

हुक्मबरदार—पु० आज्ञाकारी।

हुक्मबरदारी—स्त्री० आज्ञापालन।

हुक्मी—पराधीन, अचूक, जरूरी, लाजिमी।

हुचकी—स्त्री० दे० "हिचकी"।

हुजूम—पु० भीड़, जमावड़ा।

हुजूर—पु० किसी बड़े का सामीप्य, कचहरी, बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुजूरी—हुजूर का, सरकारी। पु० खास सेवा में रहनेवाला नौकर, मुसाहब।

हुज्जत—स्त्री० व्यर्थ का तर्क, विवाद।

हुज्जती—हुज्जत करनेवाला।

हुड़दंग—पु० उपद्रव।

हुत—था। हनन क्रिया हुआ।

हुतभक्षी, हुतवहन, हुताशन—पु० आग।

हुति, हुते—से, द्वारा, तरफ से।

हुतो—था।

हुदकाना—उसकाना।

हुदना—सकना।

हुद हुद—पु० एक प्रकार की चिड़िया।

हुन—पु० अशरफी, सोना। [कौशल।

हुनर—पु० कला, कारीगरी, गुण,

हुनरमंद—कलाकौशल जाननेवाला।

हुनरमंदी—स्त्री० निपुणता।

हुब्ब—पु० खुशी, प्रेम, प्यार।

हुब्बेवतन—पु० देशप्रेम।

हुमकना—उछलना, ठुमकना, दबाने

के लिये जोर लगाना।

हुमा--स्त्री० एक कल्पित पक्षी।

हुरमत—स्त्री० इज्जत, मर्यादा।

हुलसना—आनंद से फूलना, उमड़ना, उभरना।

हुलसी—स्त्री० उल्लास।

हुलास—पु० उल्लास, आह्लाद, हौसला, उमगना। स्त्री० सुंघनी।

हुलासी—उत्साही, प्रसन्न।

हुलिया—पु० शकल, आकृति, किसी मनुष्य के रंगरूप आदि का विवरण। मु० हुलिया कराना=किसी आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शकल सूरत पुलिस में दर्ज कराना।

हुल्लड़-पु० शोरगुल, उपद्रव, हलचल।

हुश-एक निषेधवाचक शब्द।

हुस्न—पु० सौंदर्य्य, सुंदरता, खूबी, उत्कर्ष।

हुस्नपरस्त—पु० सौंदर्य्योपासक।

हुस्नपरस्ती—स्त्री० सौंदर्य्योपासना।

हूँकना—हुंकार शब्द करना।

हूँस-स्त्री० डाह, बुरी नजर, फटकार।

हूक—स्त्री० छाती या कलेजे का दर्द, पीड़ा, कसक, संताप, खटका।

हूकना—सालना, दर्द करना, पीड़ा से चौंक उठना।

हूटना—हटना, मुड़ना।

हूठा—पु० अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा, भद्दी चेष्टा।

हूण—पु० एक प्राचीन मंगोल जाति।

हूत—निमन्त्रित।

हूति—स्त्री० निमंत्रण, न्योता।

हूबहू—ज्यों का त्यों।

हूय—पु० आवाहन, बुलावा।

हूर—स्त्री० मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा, परी, सुंदरी।

हूल—स्त्री० भाले आदि भोंकना, पीड़ा, कोलाहल, हर्षध्वनि, ललकार, खुशी।

हूलना—गड़ाना।

हूश—असभ्य, अशिष्ट।

हूह—स्त्री० हुंकार।

हृत-पहुँचाया हुआ, हरण किया हुआ।

हृति—स्त्री० हरण, नाश, लूट।

हृत्कंप—पु० हृदय की कँपकँपी, अत्यंत भय।

हृत्पिंड—पु० कलेजा।

हृदयंगम—समझ में आया हुआ, मन में बैठा हुआ।

हृदय—पु० कलेजा, छाती, अंतःकरण, मन, अंतरात्मा, प्रेम और शोक आदि मनोविकारों का स्थान।

हृदयग्राही—पु० मन को मोहित करनेवाला।

हृदयनिकेत—पु० कामदेव।

हृदयविदारक—अत्यंत शोक या करुणा उत्पन्न करनेवाला।

हृदयवेधी—चित्त को मोहित या

शोकित करनेवाला । [वाली ।
हृदयस्पर्शी—हृदय पर प्रभाव डालने-
हृदयहारी—मन को लुभानेवाला ।
हृदयेश, हृदयेश्वर—पु० प्रियतम, पति ।
हृदि—हृदय में ।
हृद्गत—हृदय का, आंतरिक, मन में बैठा या जमा हुआ, प्रिय ।
हृद्य—हृदय का, भीतरी, अच्छा लगनेवाला, लुभावना, स्वादिष्ट ।
हृषि—स्त्री० हर्ष । [महीना ।
हृषिकेश—पु० विष्णु, श्रीकृष्ण, पूस
हृष्ट—हर्षित ।
हृष्टपुष्ट—मोटाताजा ।
हेंगा—पु० जुते खेत की मिट्टी बराबर करने का औजार ।
हें हें—पु० धीरे से हँसने का शब्द, दीनतासूचक शब्द ।
हे—थे । संबोधन का शब्द ।
हेकड़—मोटाताजा, जबरदस्त, अक्खड़ ।
हेकड़ी—स्त्री० अक्खड़पन, जबरदस्ती ।
हेच—तुच्छ, निःसार ।
हेठा—नीचा, घटकर, तुच्छ ।
हेठी—स्त्री० मानहानि ।
हेड—प्रधान । पु० सिर ।
हेड आफिस—पु० प्रधान कार्यालय ।
हेड क्वार्टर—पु० सदर मुकाम ।
हेड मास्टर—पु० प्रधान अध्यापक ।
हेडेक—पु० सिरदर्द ।

हेडिंग—पु० शीर्षक, विषय ।
हेति—स्त्री० वज्र, हड्डी, यंत्र ।
हेतु—पु० कारण, अभिप्राय, उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु, दलील, वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो, प्रेम, प्रेमसंबंध ।
हेतुवाद—पु० तर्कविद्या, नास्तिकता ।
हेतुशास्त्र—पु० तर्कशास्त्र ।
हेतुहेतुमद्भाव—पु० कार्य्य और कारण का संबंध ।
हेतुहेतुमद्भूत काल—पु० क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिससे ऐसी दो बातों का होना सूचित होता है जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है ।
हेत्वाभास—पु० किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो ।
हेमंत—पु० एक ऋतु जिसमें अगहन और पूस मास पड़ते हैं ।
हेम—पु० पाला, सोना ।
हेमगिरि, हेमपर्वत, हेमाद्रि—पु० सुमेरु पर्वत ।
हेय—छोड़ने योग्य, बुरा ।
हेरंब—पु० गणेश, भैंसा ।
हेरना—देखना, खोजना, जाँचना ।
हेरफेर—पु० घुमाव, बातों का आडंबर, दावपेंच, अन्तर, अदलबदल ।

के लिफेरी—स्त्री० अदलबदल, हाथ की सफाई, चालाकी

हेराना—न रह जाना, खो जाना, मंद पड़ जाना, सुधबुध भूलना, खोजवाना ।

हेरिक – पु० गुप्तचर, दूत ।

हेरी—स्त्री० पुकार ।

हेल—पु० कीचड़, गोबर का लेप ।

हेलन-पु० अवहेलना, कील, अपराध ।

हेलना-क्रीड़ा करना, हँसीठट्ठा करना, तुच्छ समझना, प्रवेश करना, तैरना ।

हेलमेल-पु० मित्रता, संग, परिचय ।

हेला—स्त्री० तिरस्कार, क्रीड़ा, प्रेमक्रीड़ा, नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास, पुकार, धावा, ठेलने की क्रिया या भाव, मेहतर ।

हेली-हे सखी ! स्त्री० सहेली, सखी ।

हेल्थ—पु० स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती ।

हैं- "है" का बहुवचन, एक आश्चर्य या निषेधादिसूचक शब्द ।

हैंगिंग लैंप—पु० छत में लटकाने का लैंप ।

हैंड—पु० हाथ ।

हैंडबेग--पु० हाथ में लटकाने लायक छोटा बेग

हैंडबिल—पु० विज्ञापन, पर्चा ।

हैंडराइटिंग – पु० हस्तलिपि ।

हैंडिल – मुठिया, दस्ता ।

हैंडी—जो हाथ में आसानी से उठाया जा सके, हलका ।

हैजा-पु० दस्त और कै की बीमारी ।

हैतुक—कारणवाला ।

हैट—पु० अंगरेजी टोप ।

हैफ—अफसोस, हाय, हा ।

हैबत—स्त्री० भय ।

हैबतनाक—भयानक, डरावना ।

हैम—सोने का, स्वर्णमय, सुनहरे रंग का, हिम संबंधी, जाड़े या बर्फ में होनेवाला ।

हैमन—सुनहरा ।

हैमवत—हिमालय का, हिमालय संबंधी । पु० हिमालय का निवासी ।

हैमवती—स्त्री० पार्वती, गंगा ।

हैमी—सोने का ।

हैरण्य—सोना संबंधी, सोने का ।

हैरत—स्त्री० आश्चर्य ।

हैरान—चकित, परेशान ।

हैवान—पु० पशु, बेवकूफ, उजड्ड आदमी ।

हैवानी—पशु का, पशु के करने योग्य ।

हैसियत—स्त्री० योग्यता, आर्थिक दशा, श्रेणी, धन, जायदाद ।

हैहै—हाय, अफसोस ।

होंठ—पु० ओष्ठ । मु० होंठ चबाना = भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना ।

होटल--पु० वह स्थान जहाँ चार्ज लेकर रहने और खाने का प्रबन्ध किया जाता है, भोजनालय ।

होठ--पु० ओष्ठ, ठोर ।

होड़—स्त्री० शर्त, बाजी, एक दूसरे से बढ़ जाने की कोशिश, बराबरी, हठ। [उपरी, शर्त, बाजी।
होड़ाबादी, होड़ाहोड़ी—स्त्री० चढ़ा
होत—स्त्री० संपन्नता, सामर्थ्य।
होतब, होतव्य—पु० होनहार।
होतव्यता—स्त्री० होनहार।
होता—पु० आहुति देनेवाला।
होनहार—जो अवश्य होगा, भावी, जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो। पु० होनी, भविष्यता।
होना—अस्तित्व रखना, मौजूद रहना, किया जाना, बीतना।
होनी—स्त्री० उत्पत्ति, हाल, वृत्तांत, भावी, भवितव्यता, वह बात जिसका होना संभव हो।
होम—पु० हवन, यज्ञ, घर।
होम डिपार्टमेंट—पु० स्वराष्ट्र विभाग।
होमना—हवन करना, उत्सर्ग करना, नष्ट करना।
होम मिनिस्टर—पु० स्वराष्ट्र मंत्री।
होम मेम्बर—पु० स्वराष्ट्र मेम्बर।
होम सेक्रेटरी—पु० स्वराष्ट्र सचिव।
होमि—पु० आग, पानी, घी।
होमियोपैथी—स्त्री० चिकित्सा की एक पद्धति।
होमियोपैथिक—होमियोपैथी का, होमियोपैथी संबंधी। [की चौकी।
होरसा—पु० चंदन घिसने का पत्थर
होरा—पु० एक घंटा या एक... का समय, एक राशि या लग्न का आधा भाग, जन्मकुण्डली।
होरिल—पु० नवजात बालक।
होरी—स्त्री० होली।
होलसेल—पु० थोक खरीद या बिक्री।
होला—स्त्री० होली, सिक्खों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है। पु० आग में भूने हुए चने आदि की फलियाँ, चने आदि का हरा दाना।
होलिका, होली—स्त्री० एक प्रसिद्ध त्योहार, घास फूस आदि का वह ढेर जो इस त्योहार में जलाया जाता है।
होल्डर—पु० अंगरेजी कलम।
होश—पु० चेतना, बोध या ज्ञान की वृत्ति, स्मरण, बुद्धि।
होशमंद—समझदार, बुद्धिमान।
होशियार—चतुर, निपुण, सावधान, चालाक, सयाना। [सावधानी
होशियारी—स्त्री० समझदारी,
होस्टल, होस्टेल—पु० छात्रावास।
हौं—मैं। हूँ, होना क्रिया का वर्त्तमान कालिक उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।
हौंकना—हुंकार करना, हाँफना।
हौंस—स्त्री० दे० "हौस"।
हौ—स्वीकृतिसूचक शब्द। होना क्रिया का मध्यम पुरुष एक वचन का वर्तमानकालिक रूप है। होना का भूत काल, 'था'।

हुमा]

के लि

